उवंगसुत्ताणि

४

[खण्ड २]

पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरयावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञापर्व वर्ष के उपलक्ष्य में

निग्गंथं पावयणं

उवंगसुत्ताणि

४

(खण्ड २)

पण्णवणा • जंबुद्दीवपण्णत्ती • चंदपण्णत्ती •
सूरपण्णत्ती • उवंगा निरयावलियाओ •
कप्पवडिंसियाओ • पुप्फियाओ •
पुप्फचूलियाओ • वण्हिदसाओ

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

सम्पादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं [राजस्थान]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं [राजस्थान]

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचंद रामपुरिया

अर्थ सौजन्य :
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम सम्वत् २०४५ (मर्यादा महोत्सव)
ईस्वी सन् १९८९

पृष्ठांक : ११७०

: जैन विश्व भारती
मूल्य ६००/-

मुद्रक :
मित्र परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

On the occasion of Pragyaprav Year

Nigganthaṁ Pāvayaṇam

UVAṄGA SUTTĀNI
IV
(PART II)

PAṆṆAVAṆĀ . JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ .
CANDAPAṆṆATTĪ . SŪRAPAṆṆATTĪ .
NIRAYĀVALIYĀO . KAPPAVAḌIṂSIYĀO .
PUPPHIYĀO . PUPPHACŪLIYĀO . VAṆHIDASĀO

(Original Text Critically Edited)

Vācanā-pramukha :
ĀCĀRYA TULSI

Editor :
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI.
Ladnun—**341 306**

Managing Editor :
Shrichand Rampuria,

By Munificence :
Shri Ramlal Hansraj Golchha
Viratnagar (Nepal)

Year of Publication :
Vikram Saṁvat 2045 (Maryada Mahotsava)
1989 A.D.

Pages : **1170**

जैन विश्व भारती
मूल्य ६००/-

Printers :
JAIN VISHVA BHARATI PRESS,
[Established through the financial co-operation of
Mitra Parishad, Calcutta)
Ladnun (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोधपूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :	**युवाचार्य महाप्रज्ञ**
पाठ-संशोधन सहयोगी :	**मुनि सुदर्शन**
,,	**मुनि हीरालाल**
शब्दकोश	**मुनि श्रीचन्द्र 'कमल'**

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ।।

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय-सज्झाण-रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ।।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ।।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ उवांगसुत्ताणि ४ का द्वितीय खण्ड है। इस में नौ आगम समाहित हैं—

१. पण्णवणा २. जंबुद्दीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सूरपण्णत्ती ५. निरयावलियाओ ६. कप्पवडिंसियाओ ७. पुप्फियाओ ८. पुप्फचूलियाओ ९. वण्हिदसाओ।

आगम संपादन एवं प्रकाशन की योजना इस प्रकार है—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला—मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसंधान ग्रन्थमाला—मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रंथमाला—आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला—आगमों से संबंधित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला—आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।
६. आगमों के केवल हिंदी अनुवाद के संस्करण।

प्रथम आगम-सुत्त ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं[1]—

(१) अंगसुत्ताणि (१)—इसमें आयारो, सुयगडो, ठाणं, समवाओ—ये चार अंग समाहित हैं।
(२) अंगसुत्ताणि (२)—इसमें पंचम अंग भगवई प्रकाशित है।
(३) अंगसुत्ताणि (३)—इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं—ये ६ अंग हैं।
(४) उवंगसुत्ताणि (४) (खं० १))—इसमें (१) ओवाइयं (२) रायपसेणियं और (३) जीवाजीवाभिगमे—ये तीन आगम ग्रन्थ हैं।
(५) उवंगसुत्ताणि (४) (खण्ड २)—प्रस्तुत ग्रन्थ। इसमें पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरयावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ प्रकाशित हो रहे हैं।
(६) नवसुत्ताणि (५)—इसमें आवस्सयं, दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं—ये नौ आगम ग्रन्थ हैं।

द्वितीय आगम अनुसंधान ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

(१) दसवेआलियं

---

१. इस ग्रंथमाला के अन्तर्गत (१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयरो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) ओवाइयं, (५) समवाओ—ये ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा भी प्रकाशित हुए थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और २)
(३) ठाणं
(४) समवाओ
(५) सूयगडो (भाग १ और भाग २)

उक्त में से द्वितीय ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तीसरी आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला में निम्न दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

(१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन।
(२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी आगम-कथा ग्रन्थमाला में अभी तक कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया है।

पांचवीं वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं।

(१) दसवैकालिक वर्गीकृत (धर्म प्रज्ञप्ति खं० १)
(२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० २)

छठी केवल आगम हिंदी अनुवाद ग्रन्थमाला में एक 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

उक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त दसवैकालिक एवं उत्तराध्ययन (मूल पाठ मात्र) गुटकों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

उक्त विवरण से पाठकों को विदित होगा कि मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित ३२ आगम ग्रंथ आगमसुत्त ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हो चुके हैं। ३२ आगमों का इस प्रकार का आलोचनात्मक प्रकाशन आगम प्रकाशन के इतिहास में प्रथम बार ही सम्मुख आया है।

आगम प्रकाशन कार्य की योजना में निम्न महानुभावों का सहयोग रहा—

(१) सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदालालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी)।
(२) रामलालजी हंसराजजी गोलछा, विराटनगर।
(३) स्व० जयचंदलालजी गोठी, सरदारशहर।
(४) रामपुरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, कलकत्ता।
(५) बेगराज भंवरलाल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट।

यह ग्रन्थ जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रहा है। मुद्रणालय के स्थापना में मित्र-परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक-सहयोग का सौजन्य रहा, जिसके लिए उक्त संस्था को अनेक धन्यवाद।

आगम-संपादन के विविध आयामों के वाचना-प्रमुख हैं आचार्य श्री तुलसी और प्रधान संपादक तथा विवेचक हैं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी। इस कार्य में अनेक साधु-साध्वी सहयोगी रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस तरह अथक परिश्रम के द्वारा प्रस्तुत इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सुयोग पाकर जैन विश्व भारती अत्यंत कृतज्ञ है।

जैन विश्व भारती
२६-६-८७
लाडनूं (राज०)

श्रीचंद रामपुरिया
कुलपति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ उपांग हैं—

१. पण्णवणा २. जंबुद्दीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सूरपण्णत्ती ५. निरयावलियाओ ६. कप्पवडिंसियाओ ७. पुप्फियाओ ८. पुप्फचूलियाओ ९. वण्हिदसाओ।

उपांग बारह हैं। उवंगसुत्ताणि भाग ४ खण्ड १ में तीन उपांग प्रकाशित हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में शेष नौ उपांगों का मूल-पाठ पाठान्तरसहित सम्मिलित है। अंगसुत्ताणि की शब्दसूची एक स्वतन्त्र पुस्तक (आगम शब्दकोश) में मुद्रित है। पाठक और शोधकर्त्ताओं की सुविधा की दृष्टि से इस खण्ड में उपर्युक्त नौ आगमों की संयुक्त शब्दसूची संलग्न है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन के साथ बत्तीस आगमों के प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हो जाता है। इस आगम सुत्त ग्रन्थमाला के सात ग्रन्थ सम्पन्न हो रहे हैं:—

१. अंगसुत्ताणि भाग-१
आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ।

२. अंगसुत्ताणि भाग-२
भगवई।

३. अंगसुत्ताणि भाग-३
नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं।

४. उवंगसुत्ताणि भाग-४, खण्ड १
ओवाइयं, रायपसेणियं, जीवाजीवाभिगमे।

५. उवंगसुत्ताणि भाग-४, खण्ड २
पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरियावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ।

६. नवसुत्ताणि भाग-५
आवस्सयं, दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं।

७. आगम शब्दकोश (अंगसुत्ताणि शब्दसूची)

इस मूलपाठ की ग्रन्थमाला के अन्तर्गत अन्य ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य अभी चल रहा है। उनमें प्रकीर्णक, निर्युक्ति और भाष्य सम्भावित हैं।

विक्रम संवत् २०१२ (सन् १९५५) महावीर जयन्ती के दिन आचार्य श्री ने आगम-सम्पादन की घोषणा की। सम्पादन का कार्य उसी वर्ष चतुर्मास में प्रारम्भ हुआ। शुद्ध पाठ के बिना सम्पादन-कार्य में अवरोध आए। तब पाठ-शोधन की ओर ध्यान गया। पाठ-शोधन का कार्य वि० सं०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०१४ (सन् १९५७) में प्रारम्भ हुआ। यह कार्य वि० सं० २०३७ (सन् १९८०) में सम्पन्न हुआ। इसका विवरण इस प्रकार है:—

दसवेआलियं	वि० सं० २०१४
उत्तरज्झयणाणि	वि० सं० २०१६
नंदी, अनुओगदाराइं	वि० सं० २०१८
ओवाइयं, रायपसेणियं	वि० सं० २०१८
ठाणं	वि० सं० २०१८
समवाओ	वि० सं० २०१८
सूयगडो	वि० सं० २०१९
नायाधम्मकहाओ	वि० सं० २०२०
आयारो, आयारचूला	वि० सं० २०२२
उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ	वि० सं० २०२६
अनुत्तरोववाइयदसाओ	वि० सं० २०२६
विपाक	वि० सं० २०२८
पण्हावागरणाइं	वि० सं० २०२८
निरयावलियाओ	वि० सं० २०२९
भगवई	वि० सं० २०३०
पण्णवणा	वि० सं० २०३१
दसाओ, पज्जोसवणाकप्पो	वि० सं० २०३२
कप्पो	वि० सं० २०३३
ववहारो	वि० सं० २०३३
जीवाजीवाभिगमे	वि० सं० २०३४
जंबुद्दीवपण्णत्ती	वि० सं० २०३५
निसीहज्झयणं	वि० सं० २०३५
चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती	वि० सं० २०३७

सम्पादन का कार्य सरल नहीं है—यह उन्हें सुविदित है, जिन्होंने इस दिशा में कोई प्रयत्न किया है। दो-ढाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से बहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार में आरब्ध होता है, वह उसी आकार में स्थिर नहीं रहता। या तो वह बड़ा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नहीं है, जो कृत है और परिवर्तनशील नहीं है। परिवर्तनशील घटनाओं, तथ्यों, विचारों और आचारों के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सब परिवर्तनशील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है जहां परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व में जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द की परिधि में बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है जो तीनों कालों में समान रूप से प्रकाशित रह सके ? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है —भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नहीं रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है। 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रंथों और अशोक के शिलालेखों में है, वह आज के श्रमण-साहित्य में नहीं है। आज उसका अपकर्ष हो चुका है। आगम साहित्य के सैंकड़ों शब्दों की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नहीं दे रहे हैं। इस स्थिति में हर चिन्तनशील व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है।

मनुष्य अपनी शक्ति में विश्वास करता है और अपने पौरुष से खेलता है, अतः वह किसी भी कार्य को इसलिए नहीं छोड़ देता कि वह दुरूह है। यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नहीं हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है, वह अतीत के किसी भी क्षण में विलुप्त हो जाता। आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयां थीं। उन्होंने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :—

१. सत् सम्प्रदाय (अर्थबोध की सम्यक् गुरु-परम्परा) प्राप्त नहीं है।

२. सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नहीं है।

३. अनेक वाचनाएं (आगमिक अध्यापन की पद्धतियां) हैं।

४. पुस्तकें अशुद्ध हैं।

५. कृतियां सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गंभीर हैं।

६. अर्थ विषयक मतभेद भी हैं।

इन सारी कठिनाइयों के उपरान्त भी उन्होंने अपना प्रयत्न नहीं छोडा और वे कुछ कर गए। कठिनाइयां आज भी कम नहीं हैं। किन्तु उनके होते हुए भी आचार्यश्री तुलसी ने आगम-सम्पादन के कार्य को अपने हाथों में ले लिया। उनके शक्तिशाली हाथों का स्पर्श पाकर निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वयं प्राणवान् है, उसमें प्राण-संचार करना क्या बडी बात है ? बडी बात यह है कि आचार्यश्री ने उसमें प्राण-संचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अंगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है। संपादन कार्य में हमें आचार्यश्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है। आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है। उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का संबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओं का पार पाने में समर्थ हुए हैं।

पाठ सम्पादन-पद्धति

पण्णवणा

प्रज्ञापना के पाठ-शोधन में चार हस्त-लिखित आदर्श काम में लिए गए। आचार्य मलयगिरि की वृत्ति का भी उसमें उपयोग किया गया। मुनि पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादित प्रज्ञापना भी हमारे सामने रही। किन्तु हम किसी एक प्रति को आधार मानकर नहीं चलते। टीका की व्याख्या, अन्य आगम तथा शब्दों का अर्थ—ये सब पाठ-शोधन के महत्त्वपूर्ण आधार-बिन्दु रहे हैं। इसलिए हमारे सम्पादन में पाठ-शुद्धि के अनेक विशेष विमर्श उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए गण्ठी शब्द प्रस्तुत है : —"वत्थुल कच्छुल सेवाल गण्ठी"। यहां 'गण्ठी' पद अशुद्ध है। शुद्ध पाठ है 'गत्थी'। पाठ-शोधन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में प्रयुक्त हस्तलिखित आदर्शों तथा मुनिश्री पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादित आगमों में 'गण्ठी' पाठ ही उपलब्ध है। इस पाठ का शोधन जीवाजीवाभिगम और जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के आधार पर किया गया है। इसके लिए प्रस्तुत आगम का १।३८ का पाद-टिप्पण द्रष्टव्य है।

दूसरा उदाहरण है—'तिट्ठाणवडिते'। इसके स्थान पर कुछ आदर्शों में 'चउट्ठाणवडिते' पाठ मिलता है। मुनिश्री पुण्यविजयजी ने भी 'चउट्ठाणवडिते' पाठ स्वीकार किया है। किन्तु हमने 'तिट्ठाणवडिते' पाठ वृत्ति के आधार पर मान्य किया है। इसका समर्थन पण्णवणा ५।११५, ११६, की वृत्ति से होता है। प्रज्ञापनावृत्ति पत्र १९५-१९६ तथा पण्णवणा ५।११५ का पाद-टिप्पण द्रष्टव्य है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

इसके पाठ-शोधन में सात प्रतियों और तीन टीकाओं का उपयोग किया गया है। उपाध्याय शान्तिचन्द्र की वृत्ति तथा हीरविजय वृत्ति में अनेक पाठान्तर और उनकी टिप्पणियां मिलती हैं। देखें—४।१५९ का पाद-टिप्पण। यह पाठान्तर-बहुल आगम है। उपाध्याय शान्तिचन्द्र ने वाचना-भेद की विस्तृत चर्चा की है।[1] उदाहरण के लिए २।१२ का पाद-टिप्पण द्रष्टव्य है। कहीं-कहीं अशुद्ध पाठ के कारण व्याख्या भी अशुद्ध हुई है। देखें—४।४९ का पाद-टिप्पण।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति

इनके पाठ-शोधन में पांच हस्तलिखित आदर्शों तथा चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्तियों का उपयोग किया गया है। एक आदर्श का क्वचित् प्रयोग किया गया है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति का पूर्ण रूप उपलब्ध नहीं है। उसका सूर्यप्रज्ञप्ति से जो भेद है वह एक परिशिष्ट में दिया गया है। कुछ हस्तलिखित आदर्श चन्द्रप्रज्ञप्ति के नाम से उपलब्ध हैं। उनके पाठ-भेद सूर्यप्रज्ञप्ति के पाद-टिप्पण में दिए हुए हैं।

निरयावलिका

निरयावलिका आदि पांच वर्गों के पाठ-शोधन में तीन हस्तलिखित आदर्शों तथा श्रीचन्द्रसूरिकृत वृत्ति का प्रयोग किया गया है।

---

१. शान्तिचन्द्रीयवृत्ति पत्र ८७ :

पाठान्तरं—वाचनाभेदस्तद्गतपरिमाणान्तरमाह—मूले द्वादश योजनानि विष्कम्भेन मध्येऽष्ट योजनानि विष्कम्भेन उपरि चत्वारि योजनानि विष्कम्भेन, अत्रापि विष्कम्भायामतः साधिकत्रिगुणं मूलमध्यान्तपरिधिमानं सूत्रोक्तं सुबोधं। अत्राह परः—एकस्य वस्तुनो विष्कम्भादिपरिमाणे द्वैरूप्यासम्भवेन प्रस्तुतग्रन्थस्य च सातिशयस्थविरप्रणीतत्वेन कथं नान्यतरनिर्णयः ? यदेकस्यापि ऋषभकूटपर्वतस्य मूलादावष्टादियोजनविस्तृतत्वादि पुनस्तत्रैवास्य द्वादशादियोजनविस्तृतत्वादीति, सत्यं, जिनभट्टारकाणां सर्वेषां क्षायिकज्ञानवतामेकमेव मतं मूलतः पश्चात्तु कालान्तरेण विस्मृत्यादिनाऽयं वाचनाभेदः, यदुक्तं श्रीमलयगिरिसूरिभिर्ज्योतिष्करण्डकवृत्तौ—"इह स्कन्दिलाचार्य प्रवृ (तिप) त्तौ दुष्षमानुभावतो दुर्भिक्षप्रवृत्त्या साधूनां पठनगुणनादिकं सर्वमप्यनेशत्, ततो दुर्भिक्षातिक्रमे सुभिक्षप्रवृत्तौ द्वयोः संघमेलापकोऽभवत्, तद्यथा—एको वलभ्यामेको मथुरायां, तत्र च सूत्रार्थसंघटने परस्परं वाचनाभेदो जातः, विस्मृतयोर्हि सूत्रार्थयोः स्मृत्वा संघटने भवत्यवश्यं वाचनाभेद" इत्यादि, ततोऽत्रापि दुष्करोऽन्यतरनिर्णयः द्वयोः पक्षयोरुपस्थितयोरनतिशायिज्ञानिभिरनभिनिविष्टमतिभिः प्रवचनाशातनाभीरुभिः पुण्यपुरुषैरिति न काचिदनुपपत्तिः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दान्तर और रूपान्तर

पण्णवणा

१।१४	बेंदिय°	बेइन्दिय	(क,ख)
१।१४	तेंदिय°	तेइन्दिय	(ख)
१।२३	ओसा	उस्सा	(क,ग)
१।२६	वायमंडलिया	वाउमंडलिया	(क)
१।३५	अंकोल्ल	अंकुल्ल	(घ)
१।३८	कोरंटय	कोरिंटय (क); कोरेंट	(घ)
१।४८।४७	बलिमोडओ	पलिमोडओ	(क,घ)
१।९३।४	वीइभयं	बीयभयं	(क,घ)
२।१०	पडीण	पयीण (क); पईण	(ख,ग,घ)
२।१३	तडागेसु	तलागेसु	(क)
२।४०	चोवट्ठि	चोसट्ठि	(क)
३।१	विसेसाहिया	विसेसाधिया	(घ,पु)
३।७	दाहिणेणं	दक्खिणेणं	(क,ख,घ)
३।१०२	विभंगणाणीण	विहंगणाणीण	(क,ग,घ)
३।१२७	अहेलोए	अहोलोए (ग); अधेलोए	(घ)
३।१७४	अस्साता°	असाता°	(ख,ग)
३।१८२	जहा	जधा	(ख,घ)
३।१८३	सकसाई	सकसादी	(क)
४।२५५	एगूणवीसं	एकूणवीसं (क,घ); एक्कूणवीस	(ख)
४।२७५	पणुवीसं	पंचवीसं (ख,घ); पणवीसं	(ग)
५।५	जदि	जइ (ख,ग,घ); जति	(पु)
५।५	महुर°	मधुर°	(क,ख)
५।५	अब्भहिए	अब्भइए (क); अब्भतिए	(पु)
५।७	°वडिए	°पडिए	(क)
५।१०१	मणुस्से	मणूसे	(क,ख,घ)
५।१७९	वड्ढिज्जंति	वुड्ढिज्जंति	(क,ग,घ)
५।२४२	एएणट्ठेणं	एणट्ठेणं	(क,ख)
६।४६	अभिलावो	अहिलावो	(ख,घ)
८।८	ओसण्ण°	उस्सण्ण°	(क)
११।६	°आणमणी	°आणवणी	(ख,ग,घ)
११।२१	वगे	विगे	(क,ख,ग,घ)
११।२५	सयणं	सतणं	(क)
११।३०	सरीरपहवा	सरीरप्पभवा	(क,ख,ग,घ)
११।३७	वोयड अब्वोयडा	वोगड अब्वोगडा	(क)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११।३७	आणमणी	याणमणी	(घ)
११।७२	परिवड्ढमाणाइं	परिवड्ढेमाणाइं	(ख,घ)
११।७५	कदलीथंभाण	कदलीखंभाण	(ग)
११।८४	णिसरति	णिस्सरति (ख) ; णिस्सिरति (ग) ; निसरति	(घ)
११।८८	बितियं	बीयं	(क,ग)
११।८८	भासज्जायं	भासजाय	(ग)
१२।७	बद्धेल्लया मुक्केल्लया	बद्धिल्लया मुक्किल्लया	(क,ख,ग,घ)
१२।७	ओसप्पिणीहि	अवसप्पिणीहि	(ग)
१३।८	अणागारो°	अणायारो°	(क,ख)
१५।३५	णग्गोह°	णिग्गोह°	(ग)
१५।३५	सादी	साती	(पु)
१५।५०	पेहमाणे पेहति	पेहेमाणे पेहेति	(ग)
१५।५३	°थिग्गले	°थिग्गिले	(ख)
१५।५८	°ओवचए	°ओवचते	(ख,घ)
१६।१५	अहवेगे	अहवेते	(क,ख)
१६।३४	पच्चत्थिमिल्लं	पच्छिमिल्लं	(पु)
१६।५१	आयरियं	आयरितं	(क)
१६।५४	सेयंसि	सेइंसि	(क,ग)
१६।५५	माउलुंगाण	मातुलिंगाण	(ग)
१६।५५	तिंदुयाण	तिंडुयाण	(ग)
१७।२४	इणट्ठे	इणमट्ठे (क) ; तिणट्ठे	(ख,घ)
१७।१०६	समभिलोएमाणे	समभिलोतेमाणे	(क)
१७।११६	किण्ह°	कण्ह°	(क,घ)
१७।१२४	हलधर°	हलहर°	(क,ग,घ)
१७।१२५	कइरसारे	कयरसारए (ख,ग) ; कतरसारए	(घ)
१७।१२६	बालिंदगोवे	बालेंदगोपे	(ग)
१७।१२८	°बलाहए	°बलाहते	(घ)
१७।१३२	अपिक्काणं	अपक्काणं	(क,ख,घ)
१७।१५०	आगारभावमाताए	आगारभावमायाए	(क,ग)
१८।१	वेदे	वेए (क,ग) ; वेते	(ख,घ)
१८।५६	वइजोगी	वयजोगी	(ख,घ,पु)
१८।६४	सकसाई	सकसादी (क) ; सकसाती	(घ)
२०।२८	सवणताए	सवणयाते	(ख)
२१।२५	सूई°	सूयी°	(क,घ)
२१।४७	धणुपुहत्तं	धणुहपुहत्तं	(ख)
२१।६२	सगाइं	सगाति (क,घ) ; सयाइं	(ग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३।३	णियच्छति	निगच्छति (क,घ) निग्गच्छति	(क)
२३।१३	कडस्स	कतस्स (क,घ) ; कयस्स	(ख,ग)
२३।२२	णीयागोयस्स	णीतागोतस्स	(क,घ)
२३।१६१	खवए	खमए	(ख)
२८।४४	अफासाइज्ज°	अप्फासाइज्ज°	(क,घ)
३३।१	अपडिवाई	अपडिवादी	(क,घ)
३३।१७	सगाइं	सताइं (क,घ) सयाति	(ख)
३४।१	परियाइयणया	परियादिणया (ख) ; परियायणया	(क,ग)
३४।६	जाणंति	याणंति	(क,ख,ग,घ)
३४।१५	सपरियारा	सपरिचारा	(ख,ग)

जंबुद्दीवपण्णत्ती

१।८	विच्छिण्णा	विस्थिण्णा	(अ,ख)
१।१८	°णउय°	°णओत°	(अ,क,ब)
१।२३	धणुपट्ठं	धणुवट्ठं (अ) ; धणुपुट्ठं	(ख)
१।२६	°पडोयारे	°पडोगारे	(त्रि,ब)
१।२८	पासिं	पस्सिं	(अ,त्रि,ब)
१।४८	दुहा	दुधा	(ख,स)
२।४	हट्ठुस्स	हिट्ठुस्स	(क,ख)
२।४	उड्डू	उड्डू (त्रि) ; उऊ	(प)
२।१४	°पडोयारे	°पडोकारे	(ब)
२।१५	मेइणि	मेतिणि	(त्रि,ब)
२।२०	वेइया	वेइगा	(अ,ब)
२।२०	इत्थ	यत्थ (अ,ब) ; एत्थ	(क,ख,स)
२।३२	कहग	कधक	(अ,ख,ब)
२।७०	°हास	हस्स	(अ,ख,ब)
२।७८	वाकरेमाणाणं	वागरमाणाणं	(प)
२।१३१	हाहाभूए	हाहाब्भूते	(अ,क,ख,ब,स)
२।१३३	वलीविगय	पलीविगय	(अ)
२।१३३	टोलाकिति	डोलाकिति (अ) ; डोलागिति	(क,ख)
		टोलागित्ति (त्रि, स) ; टोलागति	(प)
२।१३३	सीउण्ह	सीयउण्ह	(क,ख,त्रि,ब,स)
३।३	जूव	जूय	(क,ख,प,स)
३।११	पउसियाओ	वउसीयाओ	(क,ख,प,स)
३।११	बब्बरी	पप्परी	(अ,ब)
३।११	बहलि	पहलि	(अ,ब)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३।११	°कडुच्छुय°	°कडिच्छुय° (ख) ; °कडेच्छुय	(अ,ब,स)
३।२०	दुरुहइ	द्रुहइ	(अ,ब)
३।२०	बंभयारी	पम्हचारी	(अ,त्रि,ब)
३।२१	दुरूढे	रूढे (अ) ; द्रुढे	(ब)
३।२२	बोल	पोल	(अ,ब)
३।२३	°बालचंद	°बालयंद	(स)
३।२४	°तुंडं	°तोंडं	(क,प,स)
३।२६	अंतवाले	अंतपाले (अ,त्रि,ब) ; अंतेवाले	(क,ख)
३।३५	°पट्टसंगहिय	°वट्टसंगहिय	(अ,ब)
३।३५	°खिखिणी°	°किंकिणी°	(क,ख,स)
३।३५	अयोज्झं	अजोज्झं (अ,ब) ; अओज्झं	(क,ख,प,स) ;
		अवोज्झं	(त्रि)
३।३५	सोयामणि	सोतामणि (क) ; सोदामणि	(ख,स)
३।३५	°प्पगासं°	°प्पकासं	(अ,क,ख,त्रि,ब,स)
३।३५	वीसुतं	विस्सुतं	(क,स)
३।७७	°चिंधपट्टे	°चिंधवट्टे	(ब)
३।११७	°मिरीई°	°मरीई°	(त्रि)
३।११७	उऊण	उदूण (अ,ख,ब) ; रिदूण	(क,स)
३।१३८	°हिदय°	°हियय° (अ,त्रि,प,ब) ; °हितय°	(क,स) ;
		°हृदय°	(ख)
३।१७८	°निहिओ	°निहितो (अ,त्रि,ब) ; °निहओ	(ख,स)
३।१९४	अभिसेयपीढं	अभिसेयपेढं	(अ,ब)
३।२११	गंथिम	गंठिम	(त्रि,प)
३।२१४	तिसोवाण°	तिसोमाण°	(अ,ब)
३।२२०	कागणि°	काकिणि° (अ) ; कागिणि° (ब) ; काकणि°	(स)
३।२२१	पुव्वकय°	पुव्वकड°	(क,स)
३।२२३	ईहापोह	ईहापूह (अ,क,ख,स) ; ईहावूह	(पुवृ)
४।३६	बावट्ठि	बासट्ठि	(प)
४।५४	ह्रस्सतराए	हस्सतराए	(प)
४।५५	दक्खिणेणं	दाहिणेणं	(त्रि)
४।७७	हरिवासं	हरिवस्सं	(अ,प,ब)
४।८५	संखतल°	संखदल°	(प,शावृ,पुवृपा)
४।८६	बायाले	पायाले (अ,ब) बायालीसे	(त्रि)
४।८७	णिसहस्स	णिसअस्स	(अ,ब)
४।९१	सीतोदा	सीओता (अ,ब) ; सीओदा (त्रि) ; सीओआ	(प)
४।९३	विउत्तरे	पिउत्तरे	(ब)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।९६	णिसढ°	णिसभ° (अ,ब); णिसह°	(क,ख,स)
४।१०२	हेमवय-हेरण्णवय	हेमवएरण्णवय	(क,ख,ब,स);
		हेमवय एरण्णवय	(त्रि)
४।१०३	णीलवंतस्स	णेलवंतस्स	(अ,क,ख,ब,स)
४।१०६	सणिच्चारी	सणिच्चारी	(प)
४।१४०	उववायसभाए	ओतावसभाए	(क)
४।१४०	जमगाओ	जवगाओ (अ,ब); जमिगाओ	(ख)
४।१४२	दस	दह	(अ,क,ख,ब,स)
४।१५७	णियया	णितिया	(अ,क,ख,त्रि,ब,स)
४।१८०	परुप्परंति	परोप्परंति	(अ,त्रि,ब)
४।२१०	सयज्जल°	सयंजल°	(त्रि)
४।२३१	पलासो	वलास	(ब)
५।२५	घंटापडेंसुया°	घंटापडेंसुका° (अ,ब); घंटापडिंसुका°	(क,ख);
		घंटापडिस्सुया° (त्रि); घंटापडंसुया°	(स)
५।५८	गायाइं	गत्ताइं (क,ख); गताइं	(ब)
५।५८	जण्णु°	जाणु°	(त्रि)
७।३१	उड्ढीमुह°	उड्ढंमुह° (अ,ब); उद्धीमुह°	(क,ख,प)
७।१२२	भावियप्पा	भावियाया	(ख)
७।१२६	अभिजियाइया	अभिजिदाइया (अ,ब); अभिजादिया	(क,स);
		अभिजादीया	(ख)
७।१२८	सवणो	समणे	(अ,ब)
७।१२८	मियसर°	मगसिर°	(ब)
७।१२९	अभिई	अभिती (अ,ब,स); अभिवी	(क,ख)
७।१३०	वहस्सई	पहस्सती (अ,ब); वहप्फई	(त्रि)
७।१५५	कत्तिगी	कत्तिकी (अ); कित्तिकी (ख,ब); कित्तिगी	(स)
७।१५९	अस्सिणी	आसिणी	(ब)
७।१७८	णंगूलाणं	लांगूलाणं	(प)

सूरपण्णती

२।३	इहगतस्स	इदगतस्स	(ग,घ)
२।३	चउरुत्तरे	चउत्तरे	(ट)
४।३	पिहुला	पिधुला (क); पुहुलो	(ट)
६।१	पोग्गला	पुग्गला	(क,ग,घ)
६।१	ओयसंठिती	तोतसंठिती	(ट,व)
६।१	ओयाए	ओताए	(ट)
६।१	रयणिखेत्तस्स	रतणिखेत्तस्स (क,ग,घ); रातिखेत्तस्स	(ट)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८।१	सदा	सता	(ग,घ,ट,व)
९।३	वयं....वदामो	वतं....वतामो	(व)
१०।२	सवणे	समणो	(ग,घ)
१०।५	सायं	सागं	(व)
१०।७	आसोई	अस्सोती	(व)
१०।१०	असोइण्णं	अस्सोदिण्णं	(ग,घ)
१०।७७	आदिच्चेहिं	आतिच्चेहिं	(व)
१०।७८	बम्हु°	बंभ°	(क,ग,घ)
१०।७९	सवणे	समणे	(ट,व)
१०।८७	बितिया°	बिदिया°	(क,घ)
१०।८९	दुविहा तिही	दुविधा तिधी	(क)
१०।१३६	पातो	पादो	(क,घ,व)
१०।१४७	उवाइणावेत्ता	उवादिणावेत्ता (क,ग,घ); उवातिणावेत्ता	(ट,व)
१०।१७३	सयावि	सताधि (क,ग,घ,व); सदावि	(ग)
१४।२	कहं	कधं	(क,ग,घ)
१५।३१	अहियं	अधियं (क,ग,घ); अहितं	(ट)
१८।३४	मेहुणवत्तियं	मेधुणवत्तियं	(क,ग,घ)
२०।१	अहे	अधो	(क)
२०।२	वइयरिए	वतिचरिए	(ट)

निरयावलियाओ

१।४२	अण्णया	अण्णदा (क); अण्णता	(ख)
१।६६	जणवदं	जणवयं	(ख)
१।७२	ऊसए	ऊसवे	(ख)
१।९१	पिइसोएणं	पितसोएणं	(ख)
१।९७	पट्ठे	प्पिट्ठे (क); पुट्ठे	(ग)
१।९७	अंदोलावेइ	अंदोडावेइ	(क)
१।११७	निच्छुहावेइ	निच्छुभावेइ	(क)
१।१२७	लेच्छइ	लेच्छती	(क)
३।११५	सुव्वयाओ	सुव्वदाओ	(क)
३।१३४	जुयलं	जुवलं (ख); जुगलं	(ग)
४।१९	इट्ठा	तिट्ठा	(क)
४।२१	°वाओसिया	°पाओसिया	(क,ग)
५।६	सव्वोउय	सव्वोदुय	(क,ग)
५।१०	आहेवच्चं	आधेवच्चं	(ख)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णवणा प्रति-परिचय

(क) पण्णवणा मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति पूनमचन्दजी बुधमलजी दूधोड़िया 'छापर' के संग्रहालय की है। इसकी पत्र संख्या ३०२ है। इसकी लम्बाई १०। इन्च व चौड़ाई ४॥ इन्च है। लगभग प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३३ से ४१ अक्षर हैं। प्रति सुन्दरतम व शुद्ध है। यह प्रति लगभग १५ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। प्रति के अन्त में केवल ग्रन्थाग्र ७७८७ लिखा हुआ है।

(ख) पण्णवणा टब्बा (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रंथालय, लाडनूं की है। इसमें मूल पाठ तथा स्तबक लिखा हुआ है। इसकी पत्र संख्या ४६५ है। इसकी लम्बाई ९॥ इंच तथा चौड़ाई ४ इंच है। प्रत्येक पत्र में मूल पाठ की पंक्तियां ७ व प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ३९ अक्षर हैं। प्रति अति सुन्दर लिखी हुई है। प्रति के अन्त में 'प्रत्यक्षरगणनया अनुष्ठपच्छंदः समानमिदं ग्रन्थाग्रं ७७८७ प्रमाणं' लिखा हुआ है। आगे स्तबककर के ६ श्लोक हैं। संवत् १७७८ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ रविवारे पंडित ईश्वरेण लिपी चक्रे श्री वेन्नातट नगर मध्ये...... श्री रस्तु कल्याणमस्तुः शुभं भूयाल्लेषक पाठकयोः।

(ग) पण्णवणा त्रिपाठो (हस्तलिखित) मूलपाठ सहित वृत्ति

यह प्रति हमारे संघीय हस्तलिखित ग्रंथ-भंडार 'लाडनूं' की है। इसमें मध्य में मूल पाठ व ऊपर नीचे वृत्ति लिखी हुई है। इसकी पत्र संख्या ४४८ है। इसकी लम्बाई ९॥। इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में मूल पाठ की पंक्तियां १ से १६ तक है। कुछ पत्रों में केवल वृत्ति ही है। प्रत्येक पंक्ति में ३७ से ४५ तक अक्षर हैं। ग्रंथाग्र -मूल पाठ ७७८७ तथा वृत्ति का ग्रन्थाग्र १६०००। प्रति सुन्दर व शुद्ध है। लगभग १७ वीं शताब्दी की प्रति होनी चाहिए।

(घ) पण्णवणा मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्दजी गणेशदासजी गधैया संग्रहालय 'सरदारशहर' की है। इसकी पत्र सख्या १३८ है। इसकी लम्बाई १३॥ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में बीच में तथा हासिए के बाहर चित्र सा किया हुआ है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ के लगभग अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा शुद्ध है। यह १६ वीं शताब्दी की लिखी हुई प्रतीत होती है। ग्रंथाग्रं ७७८७ के सिवाय अन्त में कुछ लिखा हुआ नहीं है।

(गवृ) 'ग' संकेतित प्रति में लिखित वृत्ति के पाठान्तर

(वृ) हस्तलिखित वृत्ति

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया 'सरदारशहर' की है। इसकी पत्र संख्या १५९। लिपि संवत् १५७७। वैशाख शुक्ला १०।

(मवृ) मलयगिरि वृत्ति--प्रकाशक आगमोदय समिति

(मवृपा) मलयगिरि द्वारा गृहीत पाठान्तर

(हवृ) श्री हरिभद्र सूरि सूत्रित प्रदेश व्याख्या संकलितं

प्रकाशक श्री ऋषभदेव केशरीमलजी रतलाम पूर्व भाग पद ११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवपण्णत्ती प्रति-परिचय

(अ) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मदनचन्द जी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १६४ और पृष्ठ ३२८ हैं। प्रत्येक पत्र में २ से ६ तक पंक्तियां हैं। कहीं-कहीं पंक्तियां अधूरी लिखी हुई हैं। प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ३० से ३५ तक हैं। अन्त में ग्रंथाग्र ४१४६ इतना ही लिखा हुआ है। इसके साथवाली प्रति के आधार पर यह प्रति १४ वीं शती की होनी चाहिए।

(ब) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार ताडपत्रीय (फोटोप्रिन्ट) मदनचन्दजी गोठी 'सरदारशहर' द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ९७ व पृष्ठ १९४ हैं। प्रत्येक पत्र में २ से ६ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४७ से ५० तक अक्षर हैं। लिपि सं० १३७८ लिखा हुआ है।

(स) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार पत्राकार (फोटोप्रिन्ट) मदनचन्दजी गोठी 'सरदारशहर' द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४६ व पृ. ९२ हैं। प्रत्येक पत्र में २० पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ७० से ७४ तक अक्षर हैं। लिपि सं. १६४६ लिखा हुआ है। प्रति बहुत महीन लिखी हुई है।

(क) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

पत्र संख्या ७३ श्रीचंद गणेशदास गधैया संग्रहालय (सरदारशहर)

(ख) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रंथालय 'लाडनूं' की है। इसके पत्र १०१ व पृष्ठ २०२ हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ५० से ५५ तक अक्षर हैं। प्रति प्राचीन व सुंदर लिखी हुई है। लिपि संवत् नहीं है।

(ग) जंबुद्दीवपण्णत्ती त्रिपाठी, मूलपाठ व वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रन्थालय 'लाडनूं' की है। इसके पत्र ३५८ व पृष्ठ ७१६ है। प्रति के मध्य में मूलपाठ व ऊपर नीचे टीका लिखी हुई है। लिपि संवत् १९१३ अंकित है। प्रति सुंदर लिखी हुई है। इसके ६९-७० दो पत्र प्राप्त नहीं हैं।

(हीवृ) हीरविजयसूरि विरचित वृत्ति त्रिपाठी (हस्तलिखित)

(हीवृपा) हीरविजय सूरि द्वारा गृहीत पाठान्तर

यह प्रति शासन ग्रंथ भंडार 'लाडनूं' की है। इसकी पत्र संख्या ५८२ है। बीच में मूलपाठ व ऊपर नीचे वृत्ति लिखी हुई है। लिपि संवत् १९१९।

(पुवृ) खरतरगच्छीय जिनहंसगणि शिष्य महोपाध्याय पुण्यसागर विरचित वृत्ति (हस्तलिखित)

(पुवृपा) पुण्यसागर द्वारा गृहीत पाठान्तर

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया संग्रहालय 'सरदारशहर' की है। इसके पत्र २४३ व पृष्ठ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८६ हैं। लिपि सं. १५७५। प्रति सुन्दर लिखी हुई है।

(शावृ) तपागच्छीय हीरविजयसूरि परशिष्य शान्त्याचार्य विरचित वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया संग्रहालय 'सरदारशहर' की है। लिपि सं. १५५१

(शावृपा) शान्त्याचार्य द्वारा गृहीत पाठान्तर

सूरपण्णत्तो प्रति-परिचय

(क) सूरपण्णत्ती मूल

यह प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर 'अहमदाबाद' की है। इसकी क्रमांक डा. २-५७ है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १२ ।।। × ५ इंच है। इसकी पत्र संख्या ६२ है। प्रथम पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्ति व प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ७० तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर व सुवाच्य है। प्रति के बीच में हरी व लाल स्याही से चित्र-चित्रण किया हुआ है। लिपि संवत् नहीं दिया है। परन्तु प्रति प्राचीन है लगभग १७ वी शताब्दी की होनी चाहिए। प्रति के अन्त में प्रशस्ति के २५ श्लोक प्राकृत में लिखे हुए हैं।

(ग) सूरपण्णत्ती मूल नंबर ६० (हस्तलिखित)

यह प्रति भी पूर्व उल्लिखित 'अहमदाबाद' की है। इसकी पत्र संख्या ८७ व इसकी लम्बाई चौड़ाई १०।×४। इंच है। प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ३३ से ४१ तक है। प्रति की लिपि सुन्दर है पर अशुद्धि बहुल प्रति है। लिपि सं. १५७०।

(घ) सूरपण्णत्ती मूल नम्बर ६०७ (हस्तलिखित)

यह प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर 'अहमदावाद' की है। इसकी पत्र संख्या ६६ व इसकी लम्बाई चौड़ाई १० × ४ इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां है। प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ३४ से ४२ तक हैं। प्रति की लिपि सुंदर पर अशुद्धि बहुल है। लिपि सं. १६७३ है।

उपर्युक्त तीनों प्रतियों के बीच में बावड़ी है।

(सूवृ) सूरपण्णत्तो टीका नं. ४८

यह प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, 'अहमदावाद' की है। इसकी लम्बाई चौडाई १२॥१ × ५ इंच है। पत्र संख्या २२४ है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४४-६० अक्षर हैं। प्रति सुन्दर व स्पष्ट लिखी हुई है। लिपि सम्वत् १५७४ है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति प्रति-परिचय

(क) चंदपण्णत्ती मूल नं. ६०० (हस्तलिखित)

यह प्रति भी लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर 'अहमदावाद' की है। इसकी पत्र संख्या ६८ व इसकी लम्बाई चौड़ाई १०।× ४। इंच है। प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ४१ तक अक्षर है। यह प्रति भी सुन्दर है पर अशुद्धि बहुल है। इसमें पत्र के बीच में बावडी है। लिपि संवत् १५७० है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(चंवृ) चंदपण्णत्ती टीका (हस्तलिखित)

यह प्रति हमारे संघीय हस्तलिखित भण्डार 'लाडनूं' की है इसकी पत्र संख्या १७९ है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १०×४ ॥ इंच की है। प्रत्येक पत्र में पंक्ति ६ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ५० करीब है। प्रति सुन्दर है। लिपि संवत् १७६२।

(ट) चंदपण्णत्ती टब्बा (हस्तलिखित)

जैन विश्व भारती लाडनूं हस्तलिखित ग्रंथालय। पत्र ५७।

निरयावलियाओ प्रति-परिचय

(क) निरयावलियाओ मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिन्ट) मदनचन्दजी गोठी 'सरदारशहर' द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र २५ व पृष्ठ ५० हैं। फोटो प्रिंट के पत्र ९ है। एक पत्र में ६ पृष्ठों के फोटो है। किसी में न्यूनाधिक भी है। प्रत्येक पत्र १२ इंच लम्बा व ¾ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पांच पंक्तियां हैं, किसी पत्र में दो-दो तीन-तीन पंक्तियां भी हैं। कहीं-कहीं पंक्तियां अधूरी भी हैं। प्रत्येक पंक्ति में करीब ४५ से ५० तक अक्षर है। प्रति के अंत में प्रशस्ति नहीं है।

(ख) निरयावलियाओ मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय 'सरदारशहर' की है। इसके पत्र १९ तथा पृष्ठ ३८ हैं। प्रति १३½ इंच लम्बी व ५ इंच चौड़ी है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ७१ से ७५ तक अक्षर हैं। प्रति काली स्याही से लिखी हुई है। प्रति के मध्य भाग में बावड़ी व उसके बीच में लाल स्याही का टीका लगा हुआ है। लेखन संवत् नहीं है। परन्तु उसके साथ की प्रति के आधार पर अनुमानित १६ वीं शताब्दी की है। प्रति सुंदर, स्पष्ट तथा शुद्ध लिखी हुई है।

(ग) निरयावलियाओ टब्बा (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रन्थालय, लाडनूं की है। इसके पत्र ६३ तथा पृष्ठ १२६ है। प्रत्येक पत्र में पाठ की ७ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में अक्षर करीब ३५ से ४५ तक हैं। यह प्रति १०½ इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। लिपि सं० १८३३।

(वृ) निरयावलियाओ वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय 'सरदारशहर' की है। इसके पत्र ८ हैं। यह १३½ इंच लंबी ५ इंच चौड़ी है। लिपि संम्वत् १५७५ है।

(मुवृ) मुद्रित वृत्ति

ए. एस. गोपाणी एण्ड वी. जे. चोकसी। प्रकाशित—शंभूभाईजगसीशाह, गुर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, गांधी रोड़ अहमदाबाद प्रकाशन १९३४।

सहयोगानुभूति

जैन परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणि के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। अनेक वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था। परंतु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम उसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसंधानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य आरंभ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन कर्म के अनेक अंग हैं - पाठ का अनुसंधान, भाषान्तर, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में हमें आचार्य श्री का सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा गुरुतर कार्य में प्रवृत होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत नौ उपांगो के पाठ-शोधन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी, का पर्याप्त योग रहा है।

पण्णवणा में मुनि बालचंदजी, निरयावलियाओ में मुनि मधुकरजी का भी योग रहा है। प्रतिलिपि शोधन में स्व. मन्नालालाजी बोरड़ भी इसमें सहयोगी रहे हैं।

पण्णवणा की शब्दसूची मुनि श्रीचन्द जी, जंबुद्दीवपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती की मुनि सुदर्शन जी तथा निरयावलियाओ की मुनि हीरालालजी ने तैयार की है। इस ग्रन्थ के प्रथम परिशिष्ट व इसका ग्रन्थ परिमाण मुनि हीरालालजी ने तैयार किया है। पण्णवणा व जंबुद्दीवपण्णत्ती की शब्दसूची में क्रमशः साध्वी जिनप्रभाजी व साध्वी चन्दनबालाजी का भी योग रहा है।

प्रूफ निरीक्षण में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी, मुनि दुलहराजजी तथा समणी कुसुम-प्रज्ञा संलग्न रही है। कहीं मुनि विमलकुमारजी, मुनि सम्पतमलजी भी सहयोगी रहे हैं। पाठ के पुन-र्निरीक्षण के समय मुनि हीरालालजी विशेषतः संलग्न रहे हैं।

आगम बत्तीसी के पाठ-सम्पादन कार्य में नामोल्लेख के अतिरिक्त जिनका यत्किञ्चित् योग रहा है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हैं। सम्पादन कार्य में संघीयभंडार के अति-रिक्त एल० डी० इन्स्टीट्यूट अहमदाबाद, श्रीचंद गणेशदास गधैया पुस्तक भंडार सरदाशहर, तेरापंथी सभा सरदारशहर, पूनमचंद बुद्धमल दूधोडिया छापर, घेवर पुस्तकालय सुजानगढ़, जैन विश्व भारती ग्रंथालय लाडनूं, जेसलमेर भंडार, इन सब संस्थानों से प्राप्त हस्तलिखित आदर्शों का हमने प्रयोग किया। मुनिश्री पुण्यविजयजी ने 'नन्दी' की संशोधित प्रति भी हमें उपलब्ध कराई थी। इन सबका योग हमारे कार्य में मूल्यवान बना।

आचार्य श्री के वाचना-प्रमुखत्व में आगम-वाचना का जो कार्य प्रारंभ हुआ था उसका एक पर्व संशोधित पाठयुक्त आगम बत्तीसी के साथ सम्पन्न हो रहा है। बत्तीस आगमों का संशोधित पाठ पहली बार विद्वान् पाठकों के लिए सुलभ हो रहा है। यह हमारे लिए उल्लास का विषय है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि. सं. २०१२ उज्जैन में आगम-सम्पादन का कार्य प्रारंभ हुआ। उसी वर्ष प्रायः बत्तीस आगमों की शब्द सूचियां तैयार हो गईं। इस कार्य में अनेक साधु और साध्वियां संलग्न हुए। चार-चार या तीन-तीन साधु-साध्वियों के वर्ग बने और उन्होंने इस कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न किया। मुनि चौथमलजी, सोहनलालजी (चूरू) जैसे प्रौढ़ सन्त इस कार्य में लगे, वहां उनके सहयोगी के रूप में छोटे-छोटे साधु भी जुट गए। एक अभियान जैसा कार्य चला और सब में एक नयी भावना जागृत हो गई। पहले पाठ-शोधन नहीं हुआ था इसलिए उनका पूरा उपयोग नहीं हो सका। शब्द-सूचियां फिर से बनानी पड़ीं, किन्तु जो काम हुआ वह अत्यंत श्लाघनीय है। इस सम्पादन की एक उल्लेखनीय बात यह है कि यह सारा कार्य साधु-साध्वियों के द्वारा ही सम्पादित हुआ, किसी गृहस्थ विद्वान् का इसमें योग नहीं रहा। आचार्यश्री का नेतृत्व और तेरापंथ धर्मसंघ का संगठन ही इसके लिए श्रेयोभागी बनता है।

आगमविद् और संपादन के कार्य में सहयोगी स्व. श्री मदनचंदजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया (कुलपति, जैन विश्व भारती) प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालात कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर वे अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचंदजी सेठिया और मंत्री श्रीचंद बेंगानी का भी इस कार्य में योग रहा है। संपादकीय और भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद डा. नथमल टाटिया ने तैयार किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की सम प्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत भवन (दिल्ली)
२२ अक्टूबर, १९८७

युवाचार्य महाप्रज्ञ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

पण्णवणा

नाम-बोध

प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ उपांग हैं। उसमें पहला है पण्णवणा (प्रज्ञापना)।

इसमें जीव और अजीव इन दो तत्त्वों का विस्तार से प्रज्ञापन किया गया है।[1] इसके प्रथम पद का नाम प्रज्ञापना है। संभवतः इस आदि पद के कारण ही इसका नाम प्रज्ञापना रखा गया है। प्रज्ञापना का एक कार्य प्रश्नोत्तर के माध्यम से तत्त्व का प्रतिपादन करना है। प्रस्तुत आगम में प्रश्नोत्तर के द्वारा तत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। इसलिए भी इसका नाम प्रज्ञापना हो सकता है। प्रारंभिक गाथाओं में इस आगम को "अध्ययन" भी कहा गया है। इससे प्रतीत होता है कि इसका एक नाम "अध्ययन" रहा है। इसका संबंध दृष्टिवाद (बारहवें अंग) से है इसलिए इसे दृष्टिवाद का निःस्यन्द या सार कहा गया है।[2]

विषयवस्तु

प्रस्तुत आगम के ३६ पद हैं। उनमें जीव और अजीव के विभिन्न पर्यायों का प्रतिपादन किया गया है। यह तत्त्व-विद्या का अर्णव-ग्रन्थ है। इसके अध्ययन से भारतीय तत्त्व-विद्या के गहन स्वरूप को समझा जा सकता है। प्रथम पद में वनस्पति जीवों के दो वर्गीकरण उपलब्ध हैं:—प्रत्येकशरीरी और साधारणशरीरी।[3] साधारणशरीरी का चित्र समाजवाद का ऐसा अनूठा चित्र है जिसकी मनुष्य-समाज में कल्पना नहीं की जा सकती। इसमें आर्य और म्लेच्छ का विशद वर्णन है।

प्रस्तुत आगम तत्त्व-ज्ञान का आकर-ग्रन्थ है। भगवती अंगप्रविष्ट आगम है और यह उपांग कोटि का आगम है। ये दोनों तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से परस्पर जुड़े हुए हैं। देवर्धिगणी ने भगवती में प्रज्ञापना के अधिकांश भाग का समावेश किया है। वहां बार-बार "जहा पण्णवणाए" का उल्लेख है। प्रस्तुत आगम के प्रत्येक पद में गूढ़ तत्त्वों की एक व्यूह-रचना सी उपलब्ध है। इसमें लेश्या और कर्म के विषय में अनेक महत्त्वपूर्ण सूत्र मिलते हैं।

नन्दीसूत्र में आगमों के दो वर्गीकरण किए गए हैं—अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य। अंगबाह्य के दो प्रकार हैं—आवश्यक और आवश्यकव्यतिरिक्त। आवश्यकव्यतिरिक्त के फिर दो प्रकार बतलाए गए हैं—कालिक और उत्कालिक। प्रस्तुत आगम अंगबाह्य, आवश्यकव्यतिरिक्त और उत्कालिक है।[4] नंदी में अंग और अंगबाह्य के संबंध की कोई चर्चा नहीं है। आगम-व्यवस्था के उत्तरकाल में अंग और

---

१. पण्णवणा, गा० २

२. वही, „ ३

३. वही, १।३२

४. नन्दी, ७३-७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगबाह्य की संबंध-योजना निर्धारित की गई। उसके अनुसार प्रज्ञापना समवायांग का उपांग है। यह सम्बन्ध-योजना किस आधार पर की गई, यह अन्वेषण का विषय है। यदि प्रज्ञापना को "भगवती" का उपांग माना जाता तो अधिक बुद्धिगम्य होता।

रचनाकार और रचनाकाल

प्रस्तुत आगम "दृष्टिवाद" का निःस्यन्द है, इस उक्ति से यह अनुमान किया जा सकता है कि इसका विषय "दृष्टिवाद" से संगृहीत किया गया है। इसके रचनाकार आर्यश्याम हैं।[1] वे सुधर्मा-स्वामी के तेवीसवें पट्टधर थे। वे वाचकवंश की परंपरा के शक्तिशाली वाचक थे। उनका अस्तित्व-काल वीर-निर्वाण की चौथी शताब्दी है।

प्रस्तुत आगम का रचनाकाल वीर-निर्वाण के ३३५ से ३७५ के बीच का संभव है। नंदी में महाप्रज्ञापना का उल्लेख किया गया है। वह अभी अनुपलब्ध है। महाप्रज्ञापना और प्रज्ञापना दोनों स्वतंत्र हैं। प्रज्ञापना महाप्रज्ञापना का अवतरण है अथवा इसमें कोई नया विषय है, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। बारह उपांगों में प्रज्ञापना का एक विशिष्ट स्थान है। इससे प्रतीत होता है कि इसका रचनाकाल वह है जब पूर्वों की विस्मृति हो रही थी और उसके अवशिष्ट अंशों की स्मृति शेष थी। वैसे ही समय में "षट्खण्डागम" की रचना हुई थी। शेष उपांग प्रज्ञापना की रचना के उत्तरकाल में लिखे गए थे। उनकी विषयवस्तु के आधार पर यह संभावना की जा सकती है। उमास्वाति का अस्तित्व-काल वीर निर्वाण की पांचवी शताब्दी है। उन्होंने तत्त्वार्थसूत्र में "आर्या म्लेच्छाश्च" सूत्र लिया है।[2] उसका आधार प्रज्ञापना का पहला पद हो सकता है। वहां जो आर्य और म्लेच्छ की स्पष्ट अवधारणा एवं परिभाषा है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस आधार पर इसका रचनाकाल उमास्वाति से पूर्ववर्ती है।

व्याख्या-ग्रंथ

प्रस्तुत आगम के व्याख्या-ग्रंथ अनेक हैं। सबसे पहला ग्रन्थ हरिभद्रसूरि का है। व्याख्या-ग्रन्थ की तालिका इस प्रकार है:—

व्याख्या-ग्रंथ	ग्रन्थाग्र	ग्रन्थकर्ता	समय (वि० सं०)
१. प्रदेशव्याख्या	३७२८	हरिभद्रसूरि	८ वीं शताब्दी
२. तृतीय पद संग्रहणी	१३३	अभयदेवसूरि	१२ वीं शताब्दी का पूर्वार्ध
३. विवृति	१४५००	मलयगिरि	१३ वीं शताब्दी
४. अभयदेवसूरि कृत तृतीयपद संग्रहणी अवचूर्णि		कुलमण्डनगणी	१८ वीं शताब्दी
५. वृत्ति	—	अज्ञात	—

१. प्रज्ञापना, वृ० प० ४७—१. आर्यश्यामो यदेव ग्रन्थान्तरेषु आसालिगा प्रतिपादकं गौतमप्रश्न भगवन्निर्वचनरूपं सूत्रमस्ति तदेवागम बहुमानतः पठति।
प्रज्ञापना, वृ० प० ७२—भगवान् आर्यश्यामोऽपि इत्थमेव सूत्रं रचयति।"

२. तत्त्वार्थ सूत्र ३।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. वनस्पति सप्ततिका अथवा वनस्पति विचार	७१	मुनिचन्द्र	१२ वीं शताब्दी
७. अवचूरी	—	पद्मसूरि	—
८. बालावबोध	—	धनविमल	अनुमानित १७ वीं शताब्दी
९. बालावबोध	—	जीवविजय	१७८४
१०. स्तबक	—	परमानन्द	१८७६
११. पण्णवणानी जोड़	५५०	जयाचार्य	१८७८

इनके अतिरिक्त प्रज्ञापना से संबद्ध कुछ लघुकाय ग्रन्थों का विवरण मिलता है। मुनि पुण्यविजयजी ने हर्षकुलगणी द्वारा विरचित "बीजक" का उल्लेख किया है।[1] मुनिपुण्यविजयजी द्वारा लिखित प्रज्ञापना की प्रस्तावना तथा "जिनरत्नकोश" में "पर्याय" का भी उल्लेख मिलता है। "जिनरत्नकोश" में 'प्रज्ञापना सूत्र सारोद्धार' का भी उल्लेख मिलता है।

आचार्य मलयगिरि ने अपनी विवृति में चूर्णि और 'वृद्धव्याख्या' का उल्लेख किया है।[2] चूर्णि अभी अनुपलब्ध है। उपलब्ध व्याख्याओं में सबसे बड़ी व्याख्या आचार्य मलयगिरि की है। मौलिक और आधारभूत व्याख्या आचार्य हरिभद्रसूरि की है।

जंबुद्दीवपण्णत्ती

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम का नाम जंबुद्दीवपण्णत्ती (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति) है। प्रज्ञप्ति का अर्थ है व्याकरण, उत्तर या निरूपण। इसमें जम्बूद्वीप का व्याकरण है इसलिए इसका नाम जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति है। स्थानांग में चार अंगबाह्य प्रज्ञप्तियों का उल्लेख है, १. चन्द्रप्रज्ञप्ति, २. सूरप्रज्ञप्ति, ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ४. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति।[3] 'कसायपाहुड' में प्रज्ञप्तियों को 'दृष्टिवाद' के प्रथम भेद 'परिकर्म' के पांच अर्थाधिकार माना गया है—१. चन्द्रप्रज्ञप्ति, २. सूरप्रज्ञप्ति, ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, ४. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति।[4] नंदी में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति को कालिक आगम के वर्गीकरण में रखा गया है।[5]

---

१. पण्णवणा सुत्तं, भाग २, प्रस्तावना पृ० १५८

२. वृत्ति प० २६९ —आह च चूर्णिकृत्।
वृ० प० २७१ —आह च चूर्णिकृतोऽपि।
वृ० प० २७२ - यत आह चूर्णिकृत्।
वृ० प० २७७ - आह च चूर्णिकृत्।
वृ० प० ५१७—'प्रज्ञापनायाश्चूर्णौ।
वृ० प० ६००—तत्रैवं वृद्धव्याख्या।

३. ठाणं, ४।१८९

४. कसायपाहुड, प्रथम अधिकार —पेज्जदोसविहत्ती, पृ० १३७—
"परियम्मे पंच अत्थाहियारा—चंदपण्णत्ती सूरपण्णत्ती जंबुद्दीवपण्णत्ती दीवसायरपण्णत्ती वियाहपण्णत्ती चेदि।"

५. नन्दी, ७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-वस्तु

इसका मुख्य प्रतिपाद्य जम्बूद्वीप है। पारिपार्श्विक विषयों की सूची बहुत लंबी है। भगवान् ऋषभ, कुलकर, भरत चक्रवर्ती, कालचक्र, सौरमण्डल आदि अनेक विषय इसमें प्रतिपादित हैं। इनमें भरत चक्रवर्ती का वर्णन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चक्रवर्ती के चौदह रत्नों और नौ निधियों का वर्णन बहुत ही सजीव है।

कालचक्र के वर्णन में वर्तमान अवसर्पिणी के छठे अर का जो वर्णन है वह बहुत रोमाञ्चक है। प्रलय की जितनी भविष्य वाणियां उपलब्ध हैं, उनमें यह सर्वाधिक ध्यानाकर्षण करने वाली है। इसे पढ़ते-पढ़ते अणुयुद्ध की विभीषिका सामने आ जाती है।[1]

भगवान् ऋषभ और भगवान् महावीर में बहुत एकरूपता रही है। भगवान् ऋषभ को आदि-काश्यप और भगवान् महावीर को अन्त्यकाश्यप कहा जाता है।[2] भगवान् ऋषभ और भगवान् महावीर दोनों ने पंच महाव्रत धर्म का प्रतिपादन किया था। भगवान् महावीर की भांति भगवान् ऋषभ भी एक वर्ष से कुछ अधिक समय तब सवस्त्र रहे. फिर अचेल हो गए।[3]

भरत चक्रवर्ती काच के महल में बैठे थे। वे काच में अपना प्रतिबिंब देख रहे थे। देखते-देखते उन्हें कैवल्य प्राप्त हो गया।[4] उत्तरवर्ती ग्रन्थों में इस कथा का विकास हुआ है। अंगुली की अंगूठी गिर जाने पर सौन्दर्य की कमी का अनुभव हुआ और उस चिंतन की गहराई में गए, अन्ततः केवली हो गए।[5]

यौगलिक व्यवस्था की समाप्ति, समाज और राज्य-व्यवस्था के प्रारंभ का सुन्दर चित्र प्रस्तुत आगम में उपलब्ध है। भगवान् ऋषभ के सर्वतोमुखी व्यक्तित्व को समझने के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसका "श्रीमद्भागवत" में वर्णित ऋषभ के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत आगम सात अध्यायों में विभक्त है। इन अध्यायों को "वक्खारो" या "वक्षस्कार" कहा गया है। उनके विषय इस प्रकार हैं—

१. जम्बूद्वीप

२. कालचक्र और ऋषभ-चरित

३. भरत-चरित

---

१. जंबुद्दीवपण्णत्ती, २।१३०-१३७

२. धनञ्जय नाममाला, ११४, पृ० ५७

वर्षीयान् वृषभो ज्यायान् पुनराद्यः प्रजापतिः।
ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा गौतमो नाभिजोऽग्रजः॥

धनञ्जय नाम माला, ११५, पृ० ५८

सन्मतिर्महतीर्वीरो महावीरोऽन्त्यकाश्यपः।
नाथान्वयो वर्धमानो यत्तीर्थमिह साम्प्रतम्॥

३. जंबुद्दीवपण्णत्ती, २।६६

४. वही, ३।२१२, २२२

५. आवश्यक चूर्णि, पृ० २२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. जम्बूद्वीप का विस्तृत वर्णन
५. तीर्थंकर का जन्माभिषेक
६. जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति
७. ज्योतिश्चक्र

रचनाकार और रचनाकाल

प्रस्तुत आगम उपांग के वर्गीकरण का ग्रन्थ है। इससे यह स्पष्ट है कि इसकी रचना भगवान् महावीर के निर्वाणोत्तर काल में हुई है। इसके रचनाकार कोई स्थविर थे। उनका नाम अज्ञात है। रचना का काल भी ज्ञात नहीं है। जीवाजीवाभिगम स्थविरों द्वारा कृत है। उसमें कल्पवृक्षों का विस्तृत वर्णन है। इसमें उनका संक्षिप्त रूप उपलब्ध है। विस्तार की सूचना 'जाव' पद के द्वारा दी गई है।

इससे प्रतीत होता है कि यह जीवाजीवाभिगम के उत्तरकाल की रचना है। संभवतः श्वेताम्बर और दिगम्बर का स्पष्ट भेद होने के पूर्वकाल की रचना है। जंबूद्वीप के विषय में दोनों परंपराओं में प्रायः ऐकमत्य है। इस आधार पर इसका रचनाकाल वीर निर्वाण की चौथी-पांचवीं शताब्दी के आस-पास अनुमित किया जा सकता है।

व्याख्या-ग्रन्थ

प्रस्तुत आगम पर नौ व्याख्याएं उपलब्ध हैं। उनमें केवल शांतिचन्द्रीयवृत्ति मुद्रित है, शेष अप्रकाशित हैं। शान्तिचन्द्र ने यह उल्लेख किया है कि मलयगिरि की टीका काल-दोष से विच्छिन्न हो गई है।[1] किन्तु आधुनिक विद्वानों ने उसे खोज निकाला है। वह जैसलमेर के भण्डार में उपलब्ध है।[2] शान्तिचन्द्रीय और पुण्यसागरीय वृत्ति में चूर्णि का भी उल्लेख है।[3]

इन व्याख्या-ग्रन्थों की तालिका इस प्रकार है—

ग्रन्थ	ग्रन्थाग्र	कर्ता	रचनाकाल
१. चूर्णि	—	अज्ञातकर्तृक	—
२. टीका (प्राकृतभाषा)		हरिभद्रसूरि	—
३. टीका	—	मलयगिरि	—
४. वृत्ति	१४२५२	हीरविजयसूरि	वि० सं० १६३६
५. वृत्ति	१३२७५	पुण्यसागर	" १६४५
६. टीका (प्रमेयरत्नमञ्जूषा)	१८०००	शान्तिचन्द्र	" १६६०

---

१. शान्तिचन्द्रीया वृत्ति पत्र २—तत्र प्रस्तुतोपाङ्गस्य वृत्तिः श्रीमलयगिरिकृताऽपि संप्रति काल-दोषेण व्यवच्छिन्ना।

२. द्रष्टव्य, जैन रत्नकोश, पृ० १३०

३. शान्तिचन्द्रीया वृत्ति, पत्र १६, परिध्यानयनोपायस्त्वयं चूर्णिकारोक्तः।
वृ० प० ५३, २५२, २७८।
पुण्यसागरीयवृत्ति, पत्र १२२—"एतच्चूर्णौ च।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. टीका	१५०००	ब्रह्ममुनि		—
८. वृत्ति	१८३५२	धर्मसागर और वानरऋषि	"	१६३६
६. वृत्ति	—	अज्ञातकर्तृक		—

गुजराती भाषा में धर्मसीमुनि ने इस पर स्तबक (टब्बा या बालावबोध) भी लिखा है। इन व्याख्या-ग्रन्थों की अधिकता से प्रतीत होता है कि प्रस्तुत आगम बहुत पठनीय रहा है।

चन्दपण्णत्ती और सूरपण्णत्ती

नाम बोध

स्थानांग में चार अंगबाह्य प्रज्ञप्तियां बतलाई गई हैं। उनमें प्रथम प्रज्ञप्ति का नाम चन्द्रप्रज्ञप्ति और दूसरी का सूरप्रज्ञप्ति है।[1] कषायपाहुड में भी इसी क्रम से नामोल्लेख मिलता है।[2] प्रथम प्रज्ञप्ति में चन्द्र की वक्तव्यता है, इसलिए उसका नाम चन्द्रप्रज्ञप्ति है और द्वितीय प्रज्ञप्ति में सूर्य की वक्तव्यता है, इसलिए उसका नाम सूरप्रज्ञप्ति है।

विषय-वस्तु

आगम की प्राचीन सूचियों से पता चलता है कि चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूरप्रज्ञप्ति दो आगम हैं। 'नन्दी' की आगम सूची में चन्द्रप्रज्ञप्ति को कालिक और सूरप्रज्ञप्ति को उत्कालिक बतलाया गया है।[3] इस भेद का हेतु क्या है, यह अभी अन्वेषणीय है। चन्द्रप्रज्ञप्ति वर्तमान में प्रायः उपलब्ध नहीं है। उसका थोड़ा-सा प्रारंभिक भाग मिलता है। यद्यपि कुछ हस्तलिखित आदर्श 'चन्द्रप्रज्ञप्ति' के नाम से उपलब्ध होते हैं और कुछ आदर्श सूर्यप्रज्ञप्ति के नाम से मिलते हैं, किन्तु प्रारंभिक सूत्र को छोड़कर इनका पाठ एक जैसा है। आचार्य मलयगिरि ने इन दोनों की व्याख्याएं लिखी हैं, उनमें भी प्रायः समानता है। वर्तमान धारणा के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति आज उपलब्ध नहीं है। जो उपलब्ध है, वह सूरप्रज्ञप्ति है। डा० वाल्टर शुब्रिंग ने एक प्रकल्पना प्रस्तुत की है—सूरप्रज्ञप्ति के १० वें पाहुड़ से आगे सूर्य की अपेक्षा चन्द्र और ताराओं को अधिक महत्त्व दिया गया है अतः हम यह अनुमान करते हैं कि दसवें 'पाहुड़' से चन्द्रप्रज्ञप्ति का प्रारम्भ हुआ है।[4] किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति की समग्र विषयवस्तु की जानकारी के अभाव में शुब्रिंग के निष्कर्ष को सहसा निर्णायक नहीं माना जा सकता। फिर भी उसमें विचार के लिए अवकाश है।

व्याख्या-ग्रंथ

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूरप्रज्ञप्ति दोनों पर मलयगिरि-कृत टीकाएं उपलब्ध हैं। दोनों टीकाएं प्रायः समान हैं। उनमें जो अन्तर है, वह परिशिष्ट में दिया हुआ है। 'जिनरत्नकोश' के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति की टीका का ग्रन्थाग्र ९५००[5] तथा सूरप्रज्ञप्ति की टीका का ग्रन्थाग्र ६००० है।[6] भद्रबाहु-कृत

---

१. ठाणं, ४।१८६

२. कषायपाहुड़, प्रथम अधिकार, पेज्जदोसविहत्ती, पृ० १३७

३. नंदी, ७७, ७८

४. Doctrine of the Jains P. 102

५. जिनरत्नकोश, पृ० ११८

६. वही पृ० ४५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्युक्तियों में सूरप्रज्ञप्ति की निर्युक्ति का उल्लेख है।[१] किन्तु वह मलयगिरि के समय में अनुपलब्ध थी।[२] उन्होंने अपनी टीका में पूर्वाचार्यों के मत का भी उल्लेख किया है।[३]

निरयावलियाओ

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम एक श्रुतस्कन्ध है। इस का प्राचीनतम नाम उपांग प्रतीत होता है। जम्बूस्वामी ने उपांग का क्या अर्थ है, यह प्रश्न पूछा। सुधर्मा स्वामी ने इसके उत्तर में कहा—उपांग के पांच वर्ग हैं—निरयावलिका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा।[४]

'उपांग' शब्द का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। उपांग पांच वर्गों का एक श्रुतस्कन्ध है। इसलिए संभवतः बहुवचन का प्रयोग किया गया है। इसका मूल अंग कौन-सा है, इसके बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। वर्तमान में प्रस्तुत श्रुतस्कन्ध के लिए 'उपांग' शब्द प्रचलित नहीं है। अभी 'उपांग' शब्द के द्वारा बारह आगमों का संग्रहण है।

'नन्दी' सूत्र की आगमसूची में 'उपांग' शब्द का उल्लेख नहीं है। वहां 'निरयावलिया' आदि पांचों स्वतंत्र आगम के रूप में उल्लिखित हैं। अनुमान किया जा सकता है कि 'नन्दी' सूत्र की रचना के उत्तरकाल में पांचों आगमों की एक श्रुतस्कन्ध के रूप में व्यवस्था की गई और श्रुतस्कन्ध का नाम 'उपांग' रखा गया। प्रो० विन्टरनित्ज के अनुसार ये पांचों आगम निरयावलिका के नाम से प्रसिद्ध थे। अंग और उपांग की व्यवस्था के समय से वे अलग-अलग गिने जाने लगे।[५]

'निरयावलिया' का दूसरा नाम 'कल्पिका' मिलता है। नंदी के कुछ आदर्शों में वह उपलब्ध है। आचार्य हरिभद्रसूरि और आचार्य मलयगिरि ने नंदी की वृत्ति में 'कल्पिका' का ही उल्लेख किया है।[६] यह संभावना की जा सकती है कि 'उवंगा' के प्रथम वर्ग का नाम 'कल्पिका' था, किन्तु नरक-परिणाम वाले कर्मों का वर्णन होने के कारण इसका दूसरा नाम 'निरयावलिका' रख दिया गया। इस प्रकार प्रथम वर्ग के दो नाम हो गए—निरयावलिका और कल्पिका।

विषय-वस्तु

निरयावलिका श्रुतस्कन्ध का प्रतिपाद्य विषय है—शुभ-अशुभ आचरण, शुभ-अशुभ कर्म और उनका विपाक।

---

१. आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ८५

२. सूर्यप्रज्ञप्ति, वृत्ति पत्र, १, गाथा ५—

अस्या निर्युक्तिरभूत् पूर्वं श्रीभद्रबाहुसूरिकृता।
कलिदोषात् साऽनेशद्, व्याचक्षे केवलं सूत्रम्॥

३. सूर्यप्रज्ञप्ति, वृ० प० १६८—"तदेवं यथा पूर्वाचार्यैरिदमेव पर्वसूत्रमवलम्ब्य पर्वविषयं व्याख्यानं कृतं तथा मया विनेयजनानुग्रहाय स्वमत्यनुसारेणोपदर्शितम्।"

४. निरयावलियाओ १।४, ५

५. History of Indian Literature, Second edition, Vol II PP. 457-458

६. नन्दी, सूत्र ७८

प्रथम वर्ग में चेटक और कोणिक के भयंकर युद्ध का वर्णन है। इसका उल्लेख भगवती[1] और आवश्यक चूर्णि[2] में भी मिलता है। बौद्ध साहित्य में भी इस युद्ध का उल्लेख मिलता है। यह आश्चर्य का विषय है कि इतिहास में इस युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है।

युद्ध आत्मरक्षा से लिए अनिवार्य हो सकता है। उस हिंसा को एक गृहस्थ के लिए आवश्यक कहा जा सकता है। फिर भी हिंसा हिंसा है, उसे अहिंसा नहीं माना जा सकता। प्रस्तुत वर्ग में यह युद्धविरोधी स्वर उभरकर सामने आया है और वह युद्ध को धार्मिक रूप देने के प्रतिपक्ष में एक सशक्त उद्‌घोष है।

दूसरे वर्ग में धर्म की आराधना करने वाले श्रेणिक के दस पौत्रों की सद्‌गति का वर्णन है। तीसरे वर्ग में संयम और सम्यक्त्व की आराधना और विराधना का प्रतिपादन है। चौथे वर्ग में पार्श्वनाथ की दश शिष्याओं का निरूपण है। पांचवें वर्ग में वृष्णि-वंश के बारह राजकुमारों की चारित्र-आराधना और 'सर्वार्थसिद्धि' में उत्पत्ति का निरूपण है।

इस प्रकार इस लघुकाय उपांग या निरयावलिका श्रुतस्कन्ध में अनेक रुचिपूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन हुआ है।

रचनाकार और रचनाकाल

प्रस्तुत श्रुतस्कन्ध के रचनाकार और रचनाकाल के बारे में कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है। यह अंगबाह्य श्रुतस्कन्ध है। इससे यह निश्चित है कि यह किसी स्थविर की रचना है। इसमें भगवती, ज्ञाता, उपासकदशा, औपपातिक और राजप्रश्नीय से संबंधित विषयों की चर्चा मिलती है। किन्तु इस आधार पर रचनाकाल का निर्णय नहीं किया जा सकता। आगमसूत्रों के व्यवस्थाकाल में पूर्ववर्ती आगमों में उत्तरवर्ती आगमों के नाम उल्लिखित किए गए हैं, अतः वे रचनाकाल के पौर्वापर्य के निर्णायक नहीं बनते।

व्याख्या-ग्रन्थ

प्रस्तुत श्रुतस्कन्ध पर एक संस्कृत व्याख्या उपलब्ध है। विक्रम संवत् १२२८ में श्री चन्द्रसूरि ने इसकी व्याख्या लिखी थी। वह बहुत संक्षिप्त है। मुनि धर्मसी (धर्मसिंह) ने इस पर गुजराती में एक टब्बा (स्तबक) लिखा था।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत ग्रन्थ के संपादन का बहुत कुछ श्रेय युवाचार्य महाप्रज्ञ को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य संपन्न हो सका है, अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रमपरायणता, और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्यक्षमता और कर्तव्यपरता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

---

१. भगवती, ७।१७३, २१०

२. आवश्यकचूर्णि, भाग २, पृ० १७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बलबूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया था।

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

यह बृहत् कार्य सम्यग् रूप से सम्पन्न हो सका, इसका मुझे परम हर्ष है।

—आचार्य तुलसी

अणुव्रत भवन (नई दिल्ली)
२२ अक्टूबर, १९८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Editorial

The present volume consists of nine āgamas :—1. Paṇṇavaṇā, 2. Jambuddīvapaṇṇattī, 3. Candapaṇṇattī, 4. Sūrapaṇṇattī, 5. Nirayāvaliyāo, 6. Kappavaḍiṁsiyāo, 7. Pupphiyāo, 8. Pupphacūliyāo, and 9. Vaṇhidasāo.

The upāṅgas are twelve in number. Three upāṅgas have already been included in the 'Uvaṅgasuttāṇi', Part 4, Volume I. The original text of the remaining nine upāṅgas, with variant readings, has been incorporated in the present volume. The word-index of Aṅgasuttāṇi has already been published as a separate book (Āgama-śabda-kośa). To provide convenience to readers as well as the research scholars a joint word-index of the above-mentioned nine āgamas is appended in this volume.

With the publication of this volume, the publication work of all the 32 canons is now over. This Āgama-sūtra series at present contains seven volumes as under :—

1. *Aṅgasuttāṇi*, Part I :
   Āyāro, Sūyagaḍo, Ṭhāṇam, Samavāo.
2. *Aṅgasuttāṇi*, Part II :
   Bhagavaī.
3. *Aṅgasuttāṇi*, Part III :
   Nāyādhammakahāo, Uvāsagadasāo, Antagaḍadasāo, Aṇuttarovavāiyadasāo, Paṇhāvāgaraṇāim, Vivāgasuyam.
4. *Uvaṅgasuttāṇi*, Part IV, Volume I :
   Ovāiyaṁ, Rāyapaseṇiyam, Jīvājīvābhigame.
5. *Uvaṅgasuttāṇi*, Part IV, Volume II :
   Paṇṇavaṇā, Jambuddīvapaṇṇattī, Candapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī, Nirayāvaliyāo, Kappavaḍiṁsiyāo, Pupphiyāo, Pupphacūliyāo, Vaṇhidasāo.
6. *Navasuttāṇi*, Part V :
   Āvassayam, Dasaveāliyam, Uttarajjhayaṇāṇi, Nandī, Aṇuogadārāim, Dasāo, Kappo, Vavahāro, Nisīhajjhayaṇam.
7. *Āgama Śabda Kośa* (Aṅgasuttāṇi Śabdasūcī).

Under this series of original texts, the work of editing the other canons too is in progress. They are likely to contain *prakīrṇaka*, *niryukti* and *bhāṣya*.

On Mahāvīra Jayantī of 2012 Vikram Saṁvat (1955 A.D.), Ācāryaśrī

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

declared his intention to edit the āgamas, and the assignment was taken up in the caturmāsa of the same year. Many obstacles were faced in the work of editing for want of the correct versions. Consequently we thought of correcting the text to begin with. The work was actually started in 2014 V.S. (1957 A D.) and brought to completion in 2037 V.S. (1980 A D.) as follows :—

Dasaveāliyam	Vikram Saṁvat	2014
Uttarajjhayaṇāṇī	,,	2016
Nandī, Aṇuogadārāim	,,	2018
Ovāiyam, Rāyapaseṇiyam	,,	2018
Ṭhāṇam	,,	2018
Samavāo	,,	2018
Sūyagaḍo	,,	2019
Nāyādhammakahāo	,,	2020
Āyāro, Āyāracūlā	,,	2022
Uvāsagadasāo, Antagaḍadasāo	,,	2026
Anuttarovavāiyadasāo	,,	2026
Vipāka	,,	2028
Paṇhāvāgaraṇāim	,,	2028
Nirayāvaliyāo	,,	2029
Bhagavaī	,,	2030
Paṇṇavaṇā	,,	2031
Dasāo, Pajjosavaṇākappo	,,	2032
Kappo	,,	2033
Vavahāro	,,	2033
Jīvājīvābhigame	,,	2034
Jambuddīvapaṇṇattī	,,	2035
Nisīhajjhayaṇam	,,	2035
Candapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī	,,	2037

It is well known to all working in this field that editing is the most difficult job, specially when the texts to be edited are separated by a gap of several millennia in respect of language, style and thought. It is unexceptionally true that a thought or a custom does not continue in its original shape through the ages. It invariably expands or contracts. The story of expansion and contraction is the story of change. 'What is made up' is necessarily amenable to change. The insistence on the eternality of events, facts, thoughts and customs that are subject to change leads one to untruth and false imagination. The truth is 'what is made up' is necessarily transient. Whether 'made up' or 'eternal', it must needs be susceptible of change. Whatever there is must be of a nature that is not absolutely divorced from the stream of eternity and change.

It is possible that an idea or truth expressed by a particular word is capable

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of being expressed with its original connotation at all times? The semantic change is a necessary phenomenon and so no one with a knowledge of linguistics will insist that a word continues to have the same connotation through a period of two thousand years. For example, the expression *pāṣaṇḍa* has not the same meaning in modern *śramaṇic* literature as it had in the times of the *Āgamas* and Ashoka's inscriptions. It has acquired a derogatory nuance. Hundreds of words in the ancient *Āgama* literature have shared the same fate. Under the circumstances, any thoughtful person will appreciate the difficulties in the task of an editor of ancient literature.

Self-confidence is an innate virtue of human beings who take great pride in the exercise of their courage, and do not shirk from responsibility however ardous. Were escapism a human virtue, not only the achievement of any enduring value would have been impossible, but whatever had been achieved in the past would have been lost at any time. About a millennium ago, Abhayadevasūri, the great commentator of the nine *Aṅgas* was confronted with a great many obstacles which he had detailed as follows :

(i) Absence of authentic tradition (*sampradāya*, about the meaning of the texts).

(ii) Lack of authentic ratiocination (*ūhā*).

(iii) Conflicting modes of recitation (*vācanā*).

(iv) Vitiated manuscripts.

(v) Unfathomable depth of the *sūtras*.

(vi) Differences of opinion (about the readings and the meaning).

In spite of all these difficulties and hurdles, he did not draw back from the Herculean task, but on the contrary achieved something that was of a permanent value.

Even today the difficulties are not fewer, but as the work of editing has been taken up by Ācāryaśrī Tulsī himself, the task has acquired a new dimension. Any programme that is undertaken by him opens up new vistas, what to speak of the editing of the canonical literature which is by itself full of new possibilities. What is most conspicuous is that Ācāryaśrī has infused life in the programme through me and my colleagues, monks and nuns, who were quite tyros in the field. Not only are his inarticulate blessings with us but also his concrete guidance and active co-operation are always available to us. He has given priority to the work and devoted plenty of time to it. Under his direction, deliberative counsel and encouragement, we could solve the problems, however formidable, that cropped up from time to time in the course of our difficult enterprise.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Procedure adopted in editing the text

Paṇṇavaṇā

In editing the text of Prajñāpana, four Ms. ādarśas were consulted, Ācārya Malayagiri's Vṛtti was also used for this purpose. Muni Puṇyavijaya's edition was also before us. But we do not take for granted a single particular edition or manuscript for our work. The important basic points for us are the critical exposition of the commentary, other parallel āgamic texts and the meanings of words. Accordingly, the reader will find many a deliberation in our edition for the purpose of arriving at correct readings. For example, take the word "gaṇṭhī" in 'vatthula kacchula sevāla gaṇṭhī'. Here 'gaṇṭhī' is incorrect. The correct version should be 'gatthī'. We have come across the reading 'gaṇṭhī' alone in all the available manuscripts as also in the āgamas edited by Muni Puṇyavijayaji. This reading has been revised on the basis of Jīvājīvābhigama and Jambūdvīpaprajñapti. Please refer to the footnote of 1/38 of this āgama.

Another instance is 'tiṭṭhāṇavaḍite', in place of which some ādarśas contain the reading as "cauṭṭhāṇavaḍite", and Muni Puṇyavijayaji too has accepted the latter reading. But on the basis of the Vṛtti, we have preferred 'tiṭṭhāṇavaḍite', which is endorsed by the vṛtti of Paṇṇavaṇā, 5/115,116. Please refer to Prajñāpanā Vṛtti patra 195-196 as also the footnote of Paṇṇavaṇā, 5/115.

Jambūdvīpaprajñapti

Seven different texts and three commentaries were consulted in the revision of the text. We find many variant readings and notes thereon in the vṛttis of Upādhyāya Śānticandra and Hīravijaya. Please refer to the footnote of 4/159. This āgama abounds in variant readings. Upādhyāya Śānticandra has described in detail the variant readings, as is evident from the footnote of 2/12. At other

---

1. Śānticandrīyavṛtti, patra 87 :

Variation of text—vācanābhedastadgatapariṇāmāntaramāha—mūle dvādaśa yojanāni viṣkambhena madhye'ṣṭayojanāni viṣkambhena upari catvāri yojanāni viṣkambhena, atrāpi viṣkambhāyāmataḥ sādhikatriguṇaṃ mūlamadhyāntaparidhimānaṃ sūtroktaṃ subodham. atrāha paraḥ—ekasya vastuno viṣkambhādiparimāṇe dvairupyāsambhavena prastutagranthasya ca sātiśayasthavirapraṇītatvena kathaṃ nānyataranirṇayaḥ ? yadekasyāpi ṛṣabhakūṭaparvatasya mūlādāvaṣṭādiyojanavistṛtatvādi punastraivāsya dvādaśādiyojanavistṛtatvāditi, satyam jinabhaṭṭārakaṇāṃ sarveṣāṃ kṣāyikajñānavatāmekameva mataṃ mūlataḥ paścāttu kālāntareṇa vismṛtyādinā'yaṃ vācanābhedaḥ, yaduktaṃ śrīmalayagirisūribhirjyotiṣkaraṇḍakavṛttau—"iha skandilācārya pravṛ (tipa)ttau duṣṣamānubhāvato durbhikṣapravṛttyā sādhūnām paṭhanaguṇanādikam sarvamapyaneśat, tato durbhikṣātikrame subhikṣapravṛttau dvayoḥ saṅghamelāpako' bhavat, tadyathā—eko valabhyāmeko mathurāyām, tatra ca sūtrārthasaṃghaṭane parasparaṃ vācanābhedo jātaḥ, vismṛtayorhi sūtrārthayoḥ smṛtvā saṅghaṭane bhavatyavaśyaṃ vācanābheda" ityādi, tato'trāpi duṣkaro'nyataranirṇayaḥ dvayoḥ pakṣayorupasthitayoranatiśāyijñānibhiranabhiniviṣṭamatibhiḥ pravacanāśātanābhīrubhiḥ puṇyapuruṣairiti na kācidanupapattiḥ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

places we come across incorrect explanation due to faulty text, as is given in footnote 4/49.

Candraprajñapti and Sūryaprajñapti

In order to revise the text, we consulted five manuscripts and the vṛttis of these āgamas. We rarely depended on a particular ādarśa.

The complete text of Candraprajñapti is not available. Its variation from Sūryaprajñapti has been given in an Appendix. We come across some manuscripts which have passed for Candraprajñapti. Their variant readings are contained in the footnotes of Sūryaprajñapti.

Nirayāvalikā

Three manuscripts and the Vṛtti by Śrīcandrasūri have been consulted in revising the text of the five chapters of Nirayāvalikā.

Transformation of Words and Metamorphosis

PAṆṆAVAṆĀ

1/14	bendiya°	beindiya	(ka, kha)
1/14	tendiya°	teindiya	(kha)
1/23	osā	ussā	(ka, ga)
1/29	vāyamaṇḍaliyā	vāumaṇḍaliyā	(ka)
1/35	aṅkolla	aṅkulla	(gha)
1/38	koranṭaya	korinṭaya	(ka)
		korenṭa	(gha)
1/48/47	balimoḍao	palimoḍao	(ka, gha)
1/93/4	vīibhayaṁ	vīyabhayam	(ka, gha)
2/10	paḍīṇa	payīṇa	(ka)
		paīṇa	(kha, ga, gha)
2/13	taḍāgesu	talāgesu	(ka)
2/40	covaṭṭhiṁ	cosaṭṭhim	(ka)
3/1	visesāhiyā	visesādhiyā	(gha, pu)
3/7	dāhiṇeṇaṁ	dakkhiṇeṇam	(ka, kha, gha)
3/102	vibhaṅgaṇāṇīṇa	vihaṅgaṇāṇīṇa	(ka, ga, gha)
3/127	aheloe	aholoe	(ga)
		adheloe	(gha)
3/174	assāṭā°	asāṭā°	(kha, ga)
3/182	jahā	jadhā	(kha, gha)
3/183	sakasāī	sakasādī	(ka)
4/255	egūṇavīsaṁ	ekūṇavīsam	(ka, gha)
		ekkūṇavīsam	(kha)
4/275	paṇuvīsam	pañcavīsam	(kha, gha)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		paṇavīsaṃ	(ga)
5/5	jadi	jai	(kha, ga, gha)
		gati	(pu)
5/5	mahura°	madhur°	(ka, kha)
5/5	abbhahie	abbhaie	(ka)
		abbhatie	(pu)
5/7	°vaḍie	°paḍie	(ka)
5/101	maṇusse	maṇūse	(ka, kha, gha)
5/179	vaḍḍhijjanti	vuḍḍhijjanti	(ka, ga, gha)
5/242	eeṇaṭṭheṇaṃ	eṇaṭṭheṇaṃ	(ka, kha)
6/46	abhilāvo	ahilāo	(kha, gha)
8/8	osaṇṇa°	ussaṇṇa°	(ka)
11/6	°āṇamaṇī	°āṇavaṇī	(kha, ga, gha)
11/21	vage	vige	(ka, kha, ga, gha)
11/25	sayaṇaṃ	sataṇaṃ	(ka)
11/30	sarīrapahavā	sa:īrappabhavā	(ka, kha, ga, gha)
11/37	voyaḍa avvoyaḍā	vogaḍa avvogaḍā	(ka)
11/37	āṇamaṇī	yāṇamaṇī	(gha)
11/72	parivaḍḍhamāṇāiṃ	parivaḍḍhemāṇāiṃ	(kha, gha)
11/75	kadalīthambhāṇa	kadalīkhambhāṇa	(ga)
11/84	ṇisarati	ṇissarati	(kha)
		ṇissirati	(ga)
		nisarati	(gha)
11/88	bitiyaṃ	bīyaṃ	(ka, ga)
11/88	bhāsajjāyaṃ	bhāsajāya	(ga)
12/7	baddhellayā mukkellayā	baddhillayā mukkillayā	(ka, kha, ga, gha)
12/7	osappiṇīhi	avasappiṇihi	(ga)
13/8	aṇāgāro°	aṇāyāro°	(ka, kha)
15/35	ṇaggoha°	ṇiggoha°	(ga)
15/35	sādī	sātī	(pu)
15/50	pehamāṇe pehati	pehemāṇe peheti	(ga)
15/53	°thiggale	°thiggile	(kha)
15/58	°ovacaye	°ovacate	(kha, gha)
16/15	ahavege	ahavete	(ka, kha)
16/34	paccatthimillaṃ	pacchimillaṃ	(pu)
16/51	āyariyaṃ	āyaritaṃ	(ka)
16/54	seyaṃsi	seiṃsi	(ka, ga)
16/55	māuluṅgāṇa	mātuliṅgāṇa	(ga)
16/55	tinduyāṇa	tiṇḍuyāṇa	(ga)
17/24	iṇaṭṭhe	iṇamaṭṭhe	(ka)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		tiṇaṭṭhe	(kha, gha)
17/106	samabhiloemāṇe	samabhilotemāṇe	(ka)
17/119	kiṇha°	kaṇha°	(ka, gha)
17/124	haladhara°	halahara°	(ka, ga, gha)
17/125	kairasāre	kayarasārae	(kha, ga)
		katarasārae	(gha)
17/126	bālindagove	bālendagope	(ga)
17/128	°balāhae	°balāhate	(gha)
17/132	apikkāṇam	apakkāṇam	(ka, kha, gha)
17/150	āgārabhāvamātāe	āgārabhāvamāyāe	(ka, ga)
18/1	vede	vee	(ka, ga)
		vete	(kha, gha)
18/56	vaijogī	vayajogī	(kha, gha, pu)
18/64	sakasāī	sakasādī	(ka)
		sakasātī	(gha)
20/28	savaṇatāe	savaṇayāte	(kha)
21/25	sūī°	sūyī°	(ka, gha)
21/47	dhaṇupuhattam	dhaṇuhapuhattam	(kha)
21/92	sagāim	sagāti	(ka, gha)
		sayāim	(ga)
23/3	ṇiyacchati	nigacchati	(ka, gha)
		niggacchati	(ka)
23/13	kaḍassa	katassa	(ka, gha)
		kayassa	(kha, ga)
23/22	ṇīyāgoyassa	ṇītāgotassa	(ka, gha)
23/191	khavae	khamae	(kha)
28/44	aphāsāijja°	apphāsāijja°	(ka, gha)
33/1	apaḍivāī	apaḍivādī	(ka, gha)
33/17	sagāim	satāim	(ka, gha)
		sayātim	(kha)
34/1	pariyāiyaṇayā	pariyādiṇayā	(kha)
		pariyāyanayā	(ka, ga)
34/6	jāṇanti	yāṇanti	(ka, kha, ga, gha)
34/15	sapariyārā	saparicārā	(kha, ga)

JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ

1/8	vicchiṇṇā	vitthiṇṇā	(a, kha)
1/18	°ṇauya°	°ṇaota°	(a, ka, ba)
1/23	dhaṇupaṭṭham	dhaṇuvaṭṭham	(a)
		dhaṇupuṭṭham	(kha)
1/26	°paḍoyāre	°paḍogāre	(tri, ba)
1/28	pāsim	passim	(a, tri, ba)
1/48	duhā	dudhā	(kha, sa)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2/4	haṭṭhassa	hiṭṭhassa	(ka, kha)
2/4	udū	uḍū	(tri)
		ūu	(pa)
2/14	°paḍoyāre	°paḍokāre	(ba)
2/15	meiṇi	metiṇi	(tri, ba)
2/20	ittha	yattha	(a, ba)
		ettha	(ka, kha, sa)
2/32	kahaga	kadhaka	(a, kha, ba)
2/70	°hāsa	hassa	(a, kha, ba)
2/78	vākaremāṇāṇam	vāgaramāṇāṇam	(pa)
2/131	hāhābhūe	hāhābbhūte	(a, ka, kha, ba, sa)
2/133	valīvigaya	palīvigaya	(a)
2/133	ṭolākiti	ḍolākiti	(a)
		ḍolāgiti	(ka, kha)
		ṭolāgitti	(tri, sa)
		ṭolagati	(pa)
2/133	sīuṇha	sīyauṇha	(ka, kha, tri, ba, sa)
3/3	jūva	jūya	(ka, kha, pa, sa)
3/11	pausiyāo	vausīyāo	(ka, kha, pa, sa)
3/11	babbarī	papparī	(a, ba)
3/11	bahali	pahali	(a, ba)
3/11	°kaḍucchuya°	°kaḍicchuya°	(kha)
		°kaḍecchuya	(a, ba, sa)
3/20	duruhai	druhai	(a, ba)
3/20	bambhayārī	paṁhacārī	(a, tri, ba)
3/21	durūḍhe	rūḍhe	(a)
		druḍhe	(ba)
3/22	bola	pola	(a, ba)
3/23	°bālacanda	°bālayanda	(sa)
3/24	°tuṇḍam	°toṇḍam	(ka, pa, sa)
3/26	antavāle	antapāle	(a, tri, ba)
		antevāle	(ka, kha)
3/35	°paṭṭasaṅgahiya	°vaṭṭasaṅgahiya	(a, ba)
3/35	°khiṅkhiṇī°	°kiṅkiṇī°	(ka, kha, sa)
3/35	ayojjham	ajojjham	(a, ba)
		aojjham	(ka, kha, pa, sa)
		avojjham	(tri)
3/35	soyāmaṇi	sotāmaṇi	(ka)
		sodāmaṇi	(kha, sa)
3/35	°ppagāsam°	°ppakāsam	(a, ka, kha, tri, ba, sa)
3/35	vīsuṭam	vissuttam	(ka, sa)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3/77	°cindhapaṭṭe	°cindhavaṭṭe	(ba)
3/117	°mirīī°	°marīī°	(tri)
3/117	uūṇa	udūṇa	(a, kha, ba)
		riduṇa	(ka, sa)
3/138	°hidaya°	°hiyaya°	(a, tri, pa, ba)
		°hitaya°	(ka, sa)
		°hadaya°	(kha)
3/178	°nihio	°nihito	(a, tri, ba)
		°nihao	(kha, sa)
3/194	abhiseyapīḍham	abhiseyapeḍham	(a, ba)
3/211	ganthim	ganṭhim	(tri, pa)
3/214	tisovāṇa°	tisomāṇa°	(a, ba)
3/220	kāgaṇı	kākiṇi°	(a)
		kāgiṇi°	(b)
		kākaṇi°	(sa)
3/221	puvvakaya°	puvvakaḍa°	(ka, sa)
3/223	īhāpoha	īhāpūha	(a, ka, kha, sa)
		īhāvūha	(pu, vṛ)
4/36	bāvaṭṭhim	bāsaṭṭhim	(pa)
4/54	hrassatarāe	hassatarāe	(pa)
4/55	dakkhiṇeṇam	dāhiṇeṇam	(tri)
4/77	harivāsam	harivassam	(a, pa, ba)
4/85	saṅkhatala°	saṅkhadala°	(pa, śāvṛ, puvṛpā)
4/86	bāyāle	pāyāle	(a, ba)
		bāyālīse	(tri)
4/87	ṇisahassa	ṇisaassa	(a, ba)
4/91	sītodā	sīotā	(a, ba)
		sīodā	(tri)
		sīoā	(pa)
4/93	viuttare	piuttare	(ba)
4/96	ṇisaḍha°	ṇisabha°	(a, ba)
		ṇisaha°	(ka, kha, sa)
4/102	hemavaya-heraṇṇavaya	hemavaeraṇṇavaya	(ka, kha, ba, sa)
		hemavaya eraṇṇavaya	(tri)
4/103	ṇīlavantassa	ṇelavantassa	(a, ka, kha, ba, sa)
4/109	saṇiccārī	saṇiṁccārī	(pa)
4/140	uvavāyasabhāe	otāvasabhāe	(ka)
4/140	jamagāo	javagāo	(a, ba)
		jamigāo	(kha)
4/142	dasa	daha	(a, ka, kha, ba, sa)
4/157	ṇiyayā	ṇitiyā	(a, ka, kha, tri, ba, sa)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

4/180	parupparanti	paropparanti	(a, tri, ba)
4/210	sayajjala°	sayañjala°	(tri)
4/231	palāso	valāsa	(ba)
5/25	ghanṭāpaḍensuyā°	ghanṭāpaḍensukā°	(a, ba)
		ghanṭāpaḍmsukā°	(ka, kha)
		ghanṭāpaḍissuyā°	(tri)
		ghanṭāpaḍansuyā°	(sa)
5/58	gāyāim	gattāim	(ka, kha)
		gatāim	(ba)
5/58	jaṇṇu°	jāṇu°	(tri)
7/31	uḍḍhīmuha°	uḍḍhaṁmuha	(a, ba)
		uddhīmuha°	(ka, kha, pa)
7/122	bhāviyappā	bhāviyāyā	(kha)
7/126	abhijiyāiyā	abhijidāiyā	(a, ba)
		abhijādiyā	(ka, sa)
		abhijādīyā	(kha)
7/128	savaṇo	samaṇe	(a, ba)
8/128	miyasara°	magasira°	(ba)
7/129	abhiī	abhitī	(a, ba, sa)
		abivī	(ka, kha)
7/130	vahassaī	pahassatī	(a, ba)
		vahapphaī	(tri)
7/155	kattigī	kattikī	(a)
		kittikī	(kha, ba)
		kittigī	(sa)
7/159	assiṇī	āsiṇī	(ba)
7/178	ṇaṅgūlāṇam	lāṅgūlāṇam	(pa)

SŪRAPAṆṆATTĪ

2/3	ihagatassa	idagatassa	(ga, gha)
2/3	cauruttare	cauttare	(ṭa)
4/3	pihulā	pidhulā	(ka)
		puhulo	(ṭa)
6/1	poggalā	puggalā	(ka, ga, gha)
6/1	oyasanṭhitī	totasanṭhitī	(ṭa, va)
6/1	oyāe	otāe	(ṭa)
6/1	rayaṇikhettassa	ratanikhettassa	(ka, ga, gha)
		rātikhettassa	(ṭa))
8/1	sadā	satā	(ga, gha, ṭa, va)
9/3	vayam...vadāmo	vatam...vatāmo	(va)
10/2	savaṇe	samaṇo	(ga, gha)
10/5	sāyam	sāgam	(va)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

10/7	āsoī	assotī	(va)
10/10	asoiṇṇam	assodiṇṇam	(ga, gha)
10/77	ādiccehim	āticcehim	(va)
10/78	baṁha°	bambha°	(ka, ga, gha)
10/79	savaṇe	samaṇe	(ṭa, va)
10/87	bitiyā°	bidiyā°	(ka, gha)
10/89	duvihā tihī	duvidhā tidhī	(ka)
10/136	pāto	pādo	(ka, gha, va)
10/147	uvaiṇāvettā	uvādiṇāvettā	(ka, ga, gha)
		uvātiṇāvettā	(ṭa, ba)
10/173	sayāvi	satāvi	(ka, ga, gha, va)
		sadāvi	(ga)
14/2	kaham	kadham	(ka, ga, gha)
15/31	ahiyam	adhiyam	(ka, ga, gha)
		ahitam	(ṭa)
18/34	mehuṇavattiyam	medhuṇavattiyam	(ka, ga, gha)
20/1	ahe	adho	(ka)
20/2	vaiyarie	vaticarie	(ṭa)

NIRAYĀVALIYĀO

1/42	aṇṇayā	aṇṇadā	(ka)
		aṇṇatā	(kha)
1/66	jaṇavadam	jaṇavayam	(kha)
1/72	ūsae	ūsave	(kha)
1/91	piisoeṇam	pitasoeṇam	(kha)
1/97	paṭṭhe	ppiṭṭhe	(ka)
		puṭṭhe	(ga)
1/97	andolāvei	andoḍāvei	(ka)
1/117	nicchuhāvei	nicchubhāvei	(ka)
1/127	lecchai	lecchatī	(ka)
3/115	suvvayāo	suvvadāo	(ka)
3/134	juyalaṁ	juvalam	(kha)
		jugalam	(ga)
4/19	iṭṭhā	tiṭṭhā	(ka)
4/21	°bāosiyā	°pāosiyā	(ka, ga)
5/6	savvouya	savvoduya	(ka, ga)
5/10	āhevaccam	ādhevaccam	(kha)

DESCRIPTION OF MANUSCRIPTS AND PRINTED VERSIONS

PAṆṆAVAṆĀ

(क) PAṆṆAVAṆĀ Text (manuscript)

Place — Punamchand Budhmal Dudhoria, Chhāpar.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Size	$10\frac{1}{4}''$ x $4\frac{1}{2}''$
No. of folios	302 patras
Lines per page	11
No. of letters per line	33 to 41
Script	Most beautiful and correct.
Special information	It belongs to 15th century approximately. It ends only with the mention of granthāgra 7787.

(ख) PAṆṆAVAṆĀ Ṭabbā (Manuscript)

Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
Size	$9\frac{1}{2}''$ x $4''$
No. of folios	465 patras
Lines per page	7
No. of letters per line	35 to 39
Script	Beautiful
Colophon	"Pratyakaṣaragaṇanayā anuṣṭhapacchandaḥ samānamidaṁ granthāgram 7787 pramāṇam". Six verses of stabaka :— "Samvat 1778 varṣe phālguna māse śuklapakṣe pratipadā tithau ravivāre paṇḍita īśvareṇa lipī cakre śrī vennātaṭa nagara madhye···śrīrastu kalyāṇamastu : śubham bhūyāllekhakapāṭhakayoḥ."
Special Information	It contains the text and stabaka.

(ग) Ms. PAṆṆAVAṆĀ TRIPĀṬHĪ with Text and Vṛtti

Place	Order's Ms. Grantha Bhaṇḍāra, Ladnun,
Size	$9\frac{3}{4}''$ x $4\frac{1}{2}''$
No. of folios	448 patras
Lines per page	1 to 16
No. of letters per line	37 to 45
Special Information	Text is given in the middle, with vṛtti up and down. Some pages have vṛtti alone. Granthāgra of text is 7787 and that of vṛtti is 16000. The Ms. is beautiful and faultless. It must belong to 17th cen. approximately.

(घ) PAṆṆAVAṆĀ Text (Manuscript)

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
Size	$13\frac{1}{2}''$ x $5''$

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

No. of folios	138 patras.
Lines per page	15
No. of letters per line	60 to 65
Script	Beautiful and correct.
Special Information	Every patra is illustrated in the middle and out of the margin too. It appears to belong to 16th cen. Nothing else is mentioned at the end except 'granthāgram 7787'.

(गवृ) Variations of Vṛtti written in Ms. bearing ग sign.

(वृ) Vṛtti (Manuscript)

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
No. of folios	159 patras.
Special Information	Manuscript, Scribing year 1577, Vaiśākha Śukla 10

(मवृपा) Variation as approved by Malayagiri.

(हवृ) Compliled with 'Pradeśa' commentary by Harībhadra sūri'.

Publisher—Shri Ṛṣabhadeva Keśarīmal, Ratlam,

Part I; verses 11

JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ

(अ) Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)

Place	Palm-leaf (photoprint) Ms. of Jaisalmer. Bhaṇḍāra, belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.
No. of folios & pages	164, 328
Lines per page	2 to 6
No. of letters per line	30 to 35
Special Information	Some of the lines are incomplete. The Ms. ends only with the mention of Granthāgra 4146. It must be belonging to 14th century in view of its accompanying ms.

(ब) Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)

Place	Palm-leaf (Photoprint) Ms. belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.
No. of folios & pages	97 and 194
Lines per page	2 to 6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	Letters per line	47 to 50
	Script year	Saṁvat 1378
(स)	Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)	
	Place	Palm-leaf (Photoprint) of Jaisalmer Bhaṇḍāra, belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.
	No. of folios & pages	46 & 92
	Lines per page	20
	Letters per lines	70 to 74
	Script year	Samvat 1646
	Special Information	The size of letters is very small.
(क)	Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)	
	Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
	No. of patras	73
(ख)	Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)	
	Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun
	No. of folios & pages	101 & 202
	Lines per page	13
	Letters per line	50 to 55
	Special Information	Ms. is antiquated and beautifully scribed. Script year is not mentioned.
(ग)	Jambuddīvapaṇṇattī Tripāṭhī, Text and Vṛtti (Manuscript)	
	Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
	No. of folios & pages	358 & 716 Pages 69-70 missing.
	Scribing year	Samvat 1913
	Special Information	Original text scribed in the middle, with commentary at top and bottom margin. Script beautifully written.
(ही वृ)	Vṛtti Tripāṭhi by Hīravijaya Sūri (Manuscript)	
(हीवृपा)	Variant readings as approved by Hīravijaya Sūri	
	Place	Order's Library, Ladnun.
	No. of patras	582
	Scribing year	Samvat 1919
	Sepecial Information	Original text scribed in the middle and Vṛttī at top and bottom margin
(पु वृ)	Vṛtti by Mahopādhyāya Puṇyasāgara, the disciple of Jinahansagaṇi of Kharataragaccha (Manuscript).	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पुवृपा) Variant readings as approved by Puṇyasāgara.

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
No. of folios & pages	243 and 486
Scribing year	Samvat 1575
Special Information	Beautifully scribed.

(शा वृ) Vṛtti by Śāntyācārya, the disciple of Hīravijaya Sūri of Tapāgaccha Order (Manuscript).

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
Scribing year	Saṁvat 1551

(शावृपा) Variant readings as approved by Śāntyacārya.

SŪRAPAṆṆATTĪ

(क) Sūrapaṇṇattī Text

Place	L D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Serial No. of Ms.	Ḍā 2/57
Size	12¾" x 5"
No. of folios	62 [The first leaf is missing].
Lines in each page	13
Letters in each line	48 to 70
Ink	Picture drawing in Green and Red ink in the centre of each page.
Scribing year	Not mentioned.
Special Information	It is beautiful and easily legible. It is a very antiquated Ms. belonging to about 17th century. It ends with 25 verses in Prakrit language.

(ग) Sūrapaṇṇattī, Original, No. 60 (Manuscript)

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	10¼" x 4¼"
No. of patras	87
Line in each page	11
Letters in each line	33 to 41
Scribing year	Saṁvat 1570
Special Information	Script is beautiful, but abounds in mistakes.

(घ) Sūrapaṇṇattī, Original, No. 607 (Manuscript)

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	10" x 4"
No. of patras	66

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Lines per page	13
Letters per line	34 to 42
Scribing year	Saṁvat 1673
Special Information	Beautiful script but abounds in mistakes.

(सूवृ) Sūrapaṇṇattī, Commentary, No. 48.

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	12½" x 5"
No. of patras	224
Lines per page	13
Letters per line	44 to 60
Scribing year	Saṁvat 1574
Special Information	Script beautiful and distinct.

CANDRAPRAJÑAPTĪ

(क) Candapaṇṇattī Original No. 600 (Manuscript)

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	10½" x 4¼"
No. of patras	68
Lines per page	11
Letters per line	32 to 41
Scribing year	Saṁvat 1570
Special Information	Beautiful script, but abounds in errors. A bāvaḍī in the middle of the page.

(चं वृ) Candapaṇṇattī Commentary (Manuscript)

Place	Order's Ms. Library, Ladnun.
Size	10" x 4½"
No. of patras	179
Lines per page	6
Letters per line	about 50
Scribing year	Saṁvat 1762
Special Information	Script beautiful

(ट) Candapaṇṇattī Ṭabbā (Manuscript)

Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
No. of patras	57

NIRAYĀVALIYĀO

(क) Nirayāvaliyāo Text (Manuscript)

Place	Palm-leaf (Photoprint) copy of Jaisalmer Bhaṇḍāra, belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	No. of folios & pages	25 & 50. Nine patras are photoprinted. Each page contains photos of six pages. Somewhere it is less or more.
	Size	12" x $\frac{3}{4}$"
	Lines per page	5 lines of the text. Some patra contains 2 or 3 lines also. Some lines are even incomplete.
	Letters per line	45 to 50
	Special Information	No colophon at the end.
(ख)	Nirayāvaliyāo Text (Manuscript)	
	Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
	Size	13$\frac{1}{3}$" x 5"
	No. of folios & pages	19 & 38
	Lines per page	15
	Letters per line	71 to 75
	Ink	Black colour. A bāvaḍī in the middle portion and a टीका in Red ink in its centre.
	Scribing year	Not mentioned
	Special Information	It should belong to 16th cen. approximately on the basis of the copy accompanying it.
(ग)	Nirayāvaliyāo Ṭabbā (Manuscript)	
	Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
	No. of folios & pages	63 and 126
	Lines per page	7
	Letters per line	35 to 45
	Size	10$\frac{1}{2}$" x 4$\frac{1}{2}$"
	Scribing year	Saṁvat 1833
(वृ)	Nirayāvaliyāo Vṛtti (Manuscript)	
	Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar
	No. of patras	8
	Size	13$\frac{1}{2}$" x 5"
	Scribing year	Saṁvat 1575
(मुवृ)	Printed Vṛtti	
	Editors	A.S. Gopani & V.J. Choksi
	Publisher	Shambubhai J. Shah, Gurjar Granthratna Karyalaya, Gandhi Road, Ahmedabad.
	Year of publication	1934 A.D.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Acknowledgement of Collaboration

The tradition of councils in Jainism is very old. As many as four councils had been held before the period that ended ere a millennium and a half from now. After the time of Devardhigaṇi no well-organised council was held. The Āgamas committed to writing in his time were disorganised to a very great extent in this long interval. A fresh council was therefore a desideratum. Ācārya Śrī Tulsī made an attempt at holding a Comprehensive Consentaneous Council, but could not succeed. Ultimately we arrived at the view that our Council will serve the same purpose, if it was based on impartial research and complete dedication to the cause of truth. We started our work in accordance with this resolution.

The chief inspiration to this council is the Ācārya Śrī. The council is a deliberative assembly headed by an eminent personality who combines in himself a variety of functions, the chief among them being teaching and instruction, translation, investigation, critical study, sorting out correct reading and so on.

We enjoyed the active cooperation, guidance and encouragement in all these activities from the Ācārya Śrī. This indeed was our strength and support for undertaking such an arduous task.

Instead of feeling relieved of the burden by expressing my gratitude to the Ācārya Śrī, it would be better for me to feel more burdened by the support of his blessing for the future work and responsibility.

In editing the text of the nine upāṅgas in the present volume I received sufficient cooperation from Muni Sudarshanji and Muni Hiralalji.

In the work of ascertaining the readings in Paṇṇavaṇā and Nirayāvaliyāo, Muni Balchandji and Muni Madhukarji respectively offered assistance. In preparing the press copy, Late Mannalalji Borad also proved helpful.

The work index of Paṇṇavaṇā has been prepared by Muni Śrīchandji, of Jambuddīvapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī and Candapaṇṇattī by Muni Sudarshanji and of Nirayāvaliyāo by Muni Hiralalji. The first Appendix and the extent of the text was determined by Muni Hiralalji. In preparing the word indexes of Paṇṇavaṇā and Jambuddīvapaṇṇattī, Sādhvī Jinaprabhā and Sādhvī Chandanbālā respectively contributed a lot.

In proof-reading Muni Sudarshanji, Muni Hiralalji, Muni Dulaharajji and Samaṇī Kusumprajñā actively cooperated. At certain stages Muni Vimalkumarji and Muni Sampatmalji also proved helpful. Muni Hiralalji was specially engaged in revising the text again.

I express sentiments of gratitude for all those, in addition to the names already mentioned, who contributed whatever little they could in editing the text of the 32 āgamas. In this task we utilised the mss. belonging to the institutions such as L.D. Institute of Indology, Ahmedabad, Shrichand Ganeshdass Gadhaiya

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Pustak Bhaṇḍāra, Sardarshahar, Terapantha Sabha, Sardarshahar, Punamchand Buddhamal Dudhoriya, Chhapar, Ghewar Pustakalaya, Sujangarh, Jain Vishva Bharti, Ladnun and Jaisalmer Bhaṇḍāra, in addition to Order's Bhaṇḍāra. The text of Nandī revised by Muni Puṇyavijayaji was also made available to us. All this proved a valuable assistance to us.

An important stage of the publication of the revised text of 32 āgamas, which began under the able stewardship of Ācārya Śrī Tulsi as Vācanā-pramukha, is completing today. For the first time the revised and authorised version of the 32 āgamas is being made available to the scholars. It is a matter of ineffable joy for us.

The work of the editing of āgamas first started in V.S. 2012 at Ujjain. In that year the word indexes of almost all the 32 āgamas had been prepared. Several monks and nuns were actively engaged in it. Groups, each containing three or four monks or nuns, were formed and they finished the assignment without any loss of time. On the one hand the aged monks like Muni Chauthmalji, Muni Sohanlalji (Churu) etc. were actively engaged in it while on the other hand the younger monks too devoted themselves wholeheartedly to this job, which was like a campaign and every participant was full of the awakening of a new spirit. The text was unrevised so far, so it could not be utilised fully well. Word-indexes had got to be prepared anew, but whatever line of action was chalked out, was quite commendable. One special and worth-mentioning characteristic of this editing is that everything was done by the monks themselves and no external help from any scholar-householder was required. The whole credit goes to the leadership of Ācārya Śrī as also to the Terapanth Religious Order.

I cannot afford to forget on this occasion the services rendered by the late Madanchandji Goṭhi who had a very sound knowledge of āgamas and was exceedingly helpful in revising the text of āgamas. Had he been alive, he would have felt satisfied on the publication of this volume.

The Managing Director of the Āgama series, Śrī Śrīchand Rampuria (Vice-Chancellor, Jain Vishva Bharti) has been taking interest in this work since its inception. He is ever devoted to the task of popularising the Āgamic lore. After retiring completely from his well-established profession, he has been devoting a major part of his time to the service of Āgama literature. Śrī Khemchand Sethia and Śrī Śrīchand Bengani, the President and the Secretary respectively of Jain Vishva Bharti have cooperated a lot towards the successful completion of this task. The English rendering of 'Editorial' and 'Introduction' has been made by Dr. Nathmal Tatia.

The mention of the cooperation of the co-workers in a common enterprise is only a formality. In fact it was a sacred duty of all of us and that we have fulfilled.

Anuvrata Bhawan, Delhi. —Yuvācārya Mahāprajña

22nd Oct., 1987.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

The present volume consists of nine āgamas —uvaṅgas—Paṇṇavaṇā, Jambuddīvapaṇṇattī, Candapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī, Nirayāvaliyāo (five in number).

PAṆṆAVAṆĀ

The canon under review is *Paṇṇavaṇā* (*Prajñāpanā*). It treats extensively the two substances—sentient being *(jīva)* and insentient being (*ajīva*).[1] The term used in the beginning is '*prajñāpanā*', hence the whole canon bears the name '*Prajñāpanā*'. One of its aims is to interpret the Reality through Question-Answer method, and the same thing has been done in this canonical text. That also justifies its nomenclature as *Prajñāpanā*. In the opening gāthās, this āgama has been named as '*Adhyayana*' which shows that one of its names is '*Adhyayana*' also. It relates to *Dṛṣṭivāda*, the twelfth aṅga, so it has been called as the essence or *niḥsyanda* of *Dṛṣṭivāda*.[2]

Subject-Matter

It contains 36 topics (*padas*) which discuss the various aspects (*paryāyas*) of soul *(jīva)* and non-soul (*ajīva*). It is like an ocean of the Science of Reality (*tattva vidyā*) through which the deeper meaning of Indian Science of Reality can be appreciated. The first topic (*pada*) provides two classifications of vegetable-bodied beings—the individual-bodied (*pratyekaśarīrī*) and common-bodied (*sādhāraṇaśarīrī*).[3] The common-bodied presents such a unique picture of Socialism which cannot even be imagined in human society. It deals in greater details with the *āryas* and the *mlecchas*.

This canon is the source book of the Science of Truth (*tattvajñāna*). Whereas the *Bhagavatī* is an *aṅga-praviṣṭa* canon, the *Paṇṇavaṇā* is an *Upāṅga*. Both these Āgamas are inter-related on account of their common theme of the Science of Truth. Most of the Prajñāpanā has been included in Bhagavatī by Devarddhigaṇī, as is evident from the use of '*jahā paṇṇavaṇāe*' time and again. Its every *pada* is like the embodiment of abstruse metaphysical problems. It contains various important *sūtras* about *leśyā* and *karma*.

Nandisūtra gives us the two classifications of Āgamas—*aṅgapraviṣṭa* and

1. *Paṇṇavaṇā*, *gāthā* 2
2. " " 3
3. " " 1/32

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

aṅgabāhya. The former is again twofold—*Āvaśyaka* and *Āvaśyaka-vyatirikta*.

The latter is again classified as *kālika* and *utkālika*. Thus *Paṇṇavaṇā* is *Aṅgabāhya*, *Āvaśyaka-vyatirikta* and *Utkālika*.[1] *Nandī* does not contain any reference to *Aṅga* and *Aṅgabāhya*. In the latter part of the Āgama age the interrelation between *Aṅga* and *Aṅgabāhya* was determined. Accordingly, *Prajñāpanā* turns to be the *upāṅga* of *Samavāyāṅga*. On what basis this interrelationship was determined is a matter of research. It would have been all the more intelligible if *Prajñāpanā* had been recognised as *Upāṅga* of *Bhagavatī*.

Author and the Period of Composition

Paṇṇavaṇā is the sum and substance (*niḥsyanda*) of *Dṛṣṭivāda*. We can thus infer that its subject-matter has been derived from *Dṛṣṭivāda*. Its author is Ārya Śyāma[2] He was the 23rd in lineage from Ācārya Sudharmāsvāmī He was a powerful *vācaka* in the tradition of the lineage of *vācakas*. He flourished in the 4th century of *Vīra-nirvāṇa*.

The date of composition of *Paṇṇavaṇā* is probably between the year 335 and 375 of *Vīra-nirvāṇa*. *Nandī* mentions the '*Mahāprajñāpanā*' which is now extinct. Both *Mahāprajñāpanā* and *Prajñāpanā* are independent works. It cannot be said definitely whether the former is the progenitor of the latter or the latter contains any new topic. Among the twelve *upāṅgas*, *Prajñāpanā* holds a unique position. We can guess from this that it was composed at the period when the *Pūrvas* were passing into oblivion and their remaining portions alone were in memory Ṣaṭkhaṇḍāgama too came into existence at such a period. The remaining *upāṅgas* were composed in the period subsequent to the composition of *Prajñāpanā*. All this conjecture has been made on the basis of their subject-matter. Umāsvāti flourished in 5th century of Vīra-nirvāṇa. His Tattvārtha-sūtra mentions the sūtra "āryā mlecchāśca",[3] which must be based on the first '*pada*' of *Prajñāpanā*. The clearcut idea and definition of '*ārya*' and '*mleccha*' appearing there is not to be found elsewhere. On this basis *Paṇṇavaṇā* precedes the period of Umāsvāti.

Commentaries

Many commentaries of *Paṇṇavaṇā* are available. They are as follows :—

Commentaries	Granthāgra	Author	Date
1. *Pradeśa-commentary*	3728	Haribhadrasūri	8th Cen.
2 *Tṛtīya-pada-Saṅgrahaṇī*	133	Abhayadevasūri	First half of 12th Cen.

1. *Nandī*, 73-77
2. *Prajñāpanā Vṛ, patra*, 47/1, *āryaśyāmo yadeva granthāntareṣu āsāligā pratipādakam gautama-praśnabhagavannirvacanarūpam sūtramasti tadevāgama bahumānataḥ paṭhati.*
Prajñāpanā Vṛ. Patra, 72; *bhagavān āryaśyāmo'pi itthameva sūtram racayati.*
3. *Tattvārthasūtra*, 3/36

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3.	*Vivṛti*	14500	Malayagiri	13th Cen.
4.	Abhayadeva's *Tṛtīya-pada-saṅgrahaṇī avacūrṇi*	—	Kulamaṇḍanagaṇī	15th Cen.
5.	*Vṛtti*	—	Anonymous	—
6.	*Vanaspati-saptikā* or *Vanaspati-Vicāra*	71	Municandra	12th Cen
7	*Avacūri*	—	Padmasūri	—
8.	*Bālāvabodha*	—	Dhanavimala	17th Cen.
		—	Jīvavijaya	Year 1785
10.	*Stabaka*	—	Parmānanda	" 1876
11.	*Paṇṇavaṇā nī Joḍa*	550	Jayācārya	" 1878

In addition to this, we also find some smaller commentaries of *Paṇṇavaṇā*. Muni Puṇyavijaya has mentioned the commentary named '*Bījaka*' by Harṣakulagaṇī'.[1] In Muni Puṇyavijaya's "*Introduction to Prajñāpanā*" and in '*Jinaratnakośa*' we find mention of '*paryāya*'. "*Prajñāpanā-sūtra-sāroddhāra*" is also mentioned in '*Jinaratnakośa*'.

Acarya Malayagiri mentions *cūrṇi* and *Vṛddhavyākhyā* in his *Vṛtti*.[2] *Cūrṇi* is untraceable at present. Malayagiri's commentary is the most elaborate among all the available commentaries. Ācārya Haribhadra Sūri's commentary is the most original and basic too.

JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ

Nomenclature

This canon is known as *Jambuddīvapaṇṇattī* (*Jambūdvīpaprajñapti*). *Prajñāpti* means exposition, information or treatment. It contains the exposition of Jambūdvīpa, hence it is called *Jambūdvīpaprajñapti*. *Sthānāṅga sūtra* mentions four *aṅgabāhya prajñaptis*—(1) *Candraprajñapti*, (2) *Sūryaprajñapti*, (3) *Jambūdvīpaprajñapti*, and (4) *Dvīpasāgaraprajñapti*.[3] In *Kasāyopāhuḍa*, *prajñaptis* have been classified as the five *arthādhikāras* of '*parikarma*' which is the first division of *Dṛṣṭivāda*—(1) *Candraprajñapti*, (2) *Sūryaprajñapti*, (3) *Jambūdvīpaprajñapti*, (4) *Dvīpasāgara prajñapti* and (5) *Vyākhyāprajñapti*.[4] In *Nandī*, *Jambūdvīpaprajñapti*

1. *Paṇṇavaṇā Suttam*, Part II, Introduction, p. 158
1. *Vṛtti patra*, 269 : *āha ca cūrṇikṛt*.
   " " 271 : *āha ca cūrṇikṛto'pi*.
   " " 272 : *yadāh cūrṇikṛt*.
   " " 277 : *āha ca cūrṇikṛt*.
   " " 517 : *prajñāpanāyāścūrṇo*.
   " " 600 : *tatrāivaṃ vṛddhavyākhyā*.
1. *Ṭhāṇam*, 4/189
2. *Kasāyapāhuḍa*, *Adhikāra I*, *pejjadosavihattī*, p. 137; *parivamme pañca atthāhivārā—candapaṇṇattī sūrapaṇṇattī jambūddivapaṇṇattī dīvasāyarapaṇṇattī viyāhapaṇṇattī cedi*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

has been categorised as *Kālika āgama*.[1]

Subject-matter

Its main theme is Jambūdvīpa. The list of peripheral and incidental topics is very long. Lord Ṛṣabha, Kulakara, Bharata Cakravartī, Kālacakra, Sauramaṇḍala, and many others are the subjects dealt with in it. The description about Bharata Cakravartī's fourteen jewels and nine treasures has been described here in a lively manner.

Under the 'wheel of eternity' (*kālacakra*), thrilling account has been given about the sixth spoke of the present descending cycle. Of all the available forecasts about the universal annihilation, it invites our attention most effectively. By going through it one is confronted with the horrors of the atomic warfare.[2]

Both Lord Ṛṣabha and Lord Mahāvīra have similarity in various respects. The former is called Ādi Kāśyapa while the latter is called Antyakāśyapa.[3] Both propounded the path of five Great Vows. Like Lord Mahāvīra, Lord Ṛṣabha also put on garment for more than a year, followed by absolute nudity.[4]

Bharata Cakravartī was seated in his palace of glass. While he was looking at his reflection in the mirror, he attained liberation.[5] In later literature this incident is developed in a number of ways. At the loss of his finger-ring he felt the diminution of his beauty, which led him to deeper thought culminating into the attainment of a kevalihood.[6]

The canon gives us a beautiful picture of the termination of the '*yaugalika*' state, and the beginning of social life and political administration, It is a very important document to get a clear idea of the multifaceted personality of Lord Ṛṣabha. A comparative study of the delineation of Ṛṣabha in the present text with that in the *Śrīmadbhāgavata* is bound to be very fruitful.

The canon is divided into seven chapters which are called '*vakkhāro*' or '*vakṣaskāra*'. Some of the topics are :—

1. Jambūdvīpa
2. Kālacakra & Ṛṣabha-carita
3. Bharata-Carita
4. Jambūdvīpa : detailed description

1. *Nandī*, 78
2. *Jambuddīvapaṇṇattī*, 2/130-137
3. *Dhanañjaya-nāmamālā*, 114, page 57 : *vḥarsīyān vṛṣabho jyāyān punarādyaḥ prajāpatiḥ | aikṣvākuḥ kāśyapo brahmā gautamo nābhijo'grajaḥ ||*
   Ibid, 115, p. 58 : *sanmatirmahatīrvīro mahāvīro'ntyakāśyapaḥ | nāthānvayo vardhamāno yattīrthamiha sāmpratam ||*
4. *Jambuddīvapaṇṇattī*, 2/66
5. *Ibid*, 3/221,222
6. *Āvaśyakacūrṇi*, p. 227

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

5 Birth Celebration of Tīrthaṅkara

6. Geographical condition of Jambūdvīpa

7. Jyotiścakra.

Author and Date

This canon has been categorised as *Upāṅga* which shows that it was composed at a later period after Lord Mahāvīra's *nirvāṇa*. Its author must be some anonymous elderly monk. The date of composition too is unknown. *Jīvājīvābhigame*, containing detailed accounts of the *Kalpavṛkṣas*, was also composed by the elders. *Jambūdvīpaprajñapti* gives only a brief account of them indicating the details through '*jāva*'. This shows that *Jambūdvīpaprajñapti* was composed at a later period than that of *Jīvājīvābhigame*. Possibly we may ascribe it to an earlier date than the emergence of a clear-cut distinction between Śvetāmbara and Digambara schools which are mostly unanimous about the contents of *Jambūdvīpaprajñapti*. On this basis we can guess it to belong to the 4th-5th century of Vīranirvāṇa.

Commentaries

About nine commentaries are available on this canon. Out of them, the *Vṛtti* by Śānticandra alone, has been printed; the remaining ones are unpublished. Śānticandra has mentioned that Malayagiri's commentary was lost with the passage of time,[1] but modern scholars have traced it out in the Jaisalmer Bhaṇḍāra.[2] The *Vṛttis* by Śānticandra and Puṇyasāgara bear the mention of *Cūrṇi*.[3] These Commentaries are as follows :—

S N. Canon	Granthāgra	Author	Date
1. *Cūrṇi*	--	Anonymous	—
2. *Ṭīkā* (in Prakrit)	—	Haribhadrasūri	—
3. ”	—	Malayagiri	—
4. *Vṛtti*	14252	Hīravijayasūri	1639 (Vikram Saṁ)
5. *Vṛtti*	13275	Puṇyasāgara	1645
6. *Ṭīkā* (*Prameyaratnamañjūṣā*)	18000	Śānticandra	1660
7. *Ṭīkā*	15000	Brahma Muni	
8. *Vṛtti*	18352	Dharmasāgara and Vānara Ṛṣi	1639
9. *Vṛtti*	—	Anonymous	—

1. Śānticandra : *Vṛtti patra* 2 : "*tatra prastuto'pāṅgasya vṛttiḥ śrīmalayagirikṛtā'pi sampratikāladoṣeṇa vyavacchinnā.*"

2. See, *Jinaratnakośa*, p. 130.

3. (a) *Śānticandra, Vṛtti patra*, 19 : "*paridhyānayanopāyastvayaṃ cūrṇikāroktaḥ.*"
   (b) *Vṛ. p.* 53,252,278.
   (c) *Puṇyasāgarī vṛtti, patra*, 122 : "*etaccūrṇo ca.*"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Muni Dharmasī has composed *stabaka* (ṭabbā or bālāvabodha) on it in Gujarati. The abundance of commentaries reveals that this canon was studied very frequently.

CANDAPAṆṆATTĪ AND SŪRAPAṆṆATTĪ

Nomenclature

Sthānāṅga mentions four aṅgabāhya prajñaptis, of which the first is *Candraprajñapti* and the second is *Sūryaprajñapti*.[1] *Kasāyapāhuḍa* also mentions them in the same order.[2] As the name connotes, the first *prajñapti* deals with the moon while the second one deals with the sun, so they are named as *Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti* respectively.

Subject-Matter

The list of *āgamas* contains both these *āgamas*--*Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti*. *Nandī's* Āgama-list too tells of *Candraprajñapti* as *Kālika* and *Sūryaprajñapti* as *Utkālika*.[3] The cause of this distinction demands investigation. The former is not available at present but for a very small portion of its beginning. We come across some manuscripts entitled *Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti* but their text throughout is identical except the initial sūtra. Ācārya Malayagiri has composed commentaries on both of them, and they are almost identical The general impression prevailing at present is that *Candraprajñapti* is not at all available these days. Whatever is available is *Sūryaprajñapti* alone. Dr. Walter Schubring has put forward a conjecture—*Sūryaprajñapti*, from its 7th *pāhuḍa* onwards, ascribes more importance to the moon and the stars, so we imagine that *Candraprajñapti* begins from the 10th *pāhuḍa*.[4] But in the absence of the whole subject-matter of *Candraprajñapti*, Schubring's conclusions cannot be taken as authoritative outright. Even then there is much room for consideration.

Commentaries

Malayagiri's commentaries are available on both—*Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti*. The commentaries are identical and whatever their difference is has been noted in the Appendix. According to *Jinaratnakośa*, the *granthāgra* of the commentaries of these *āgamas* is 9500[5] and 9000[6] respectively. Bhadrabāhu's *Niryuktis* mention the *Niryukti* on *Sūryaprajñapti*,[7] which was, however, not

1. *Ṭhāṇaṃ*, 4/189.
2 *Kasāyapāhuḍa*, Chapter I—"*pejjadosa vihatti*", p. 137
3. *Nandī*, 77,78
4. Schubring : *The Doctrine of the Jaina*, p. 102
5. *Jinaratnakośa*, p. 118
6 *Ibid*, p 452
7. *Āvaśyaka-niryukti*, *gāthā*, 85

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

traceable in Malayagiri's period.[1] He has mentioned the views of his foregoing *ācāryas* also in his commentary.[2]

NIRAYĀVALIYĀO

Nomenclature

This āgama is a *śrutaskandha*. Its oldest name seems to be *upāṅga* Jambūsvāmī enquired of Sudharmāsvāmī the meaning of *upāṅga*, whereon the latter replied—"*Upāṅga* is fivefold—*Nirayāvalikā*, *Kalpāvataṁśikā*, *Puṣpikā*, *Puṣpacūlikā*, *Vṛṣṇidaśā*."[3]

The term '*upāṅga*' is here used in plural number. It is a *śrutaskandha* consisting of five sections. The plural number is probably used on this reason. We do not know about its original *aṅga*. The term '*upāṅga*' is not in vogue at present for the text. *Upāṅga* stands for the 'collection of twelve āgamas.'

Nandī's list of canons does not mention the term '*upāṅga*', but only '*Nirayāvaliyāo*' etc. are mentioned as five independent āgamas. It may be supposed that the five canons were regarded as a *śrutaskandha* in later times after the composition of the *Nandī*, and the *śrutaskandha* was named as *upāṅga*. According to Prof. Winternitz, these five āgamas were earlier known as '*Nirayāvalikā*'. They were regarded as separate entities when the contents of *aṅgas* and *upāṅgas* were determined.[4]

Nirayāvaliyāo is also known as *kalpikā*, as we find this in some manuscripts of *Nandī*. The same term has been used in the *vṛtti* of *Nandī* by Ācārya Haribhadrasūri and Ācārya Malayagiri [5] It is just possible that the first group of the '*uvaṅgā*' was named as '*kalpikā*', but as it related to the karmas leading to hell, it was given the second name *Nirāyāvalikā*. In this way, the two names viz. '*Nirayāvalikā*' and '*kalpikā*' originated.

Subject-matter

The main theme of the *Nirayāvalikā śrutaskandha* is the auspicious and inauspicious conduct and karma, and their *vipāka*.

In the first section we find the description of fierce battle between Ceṭaka

1. *Vṛtti* p. 1, *gāthā* 5

asyā niryuktirabhūtpūrvaṁ śrībhadrabāhusūrikṛtā |
kalidoṣāt sā'neśada vyācakṣe kevalam sūtram ||

2. *Sūryaprajñapti*, *Vṛtti* p 168 :

tadevaṁ yathā pūrvācāryairidameva pūrvasūtramavalambya pūrvaviṣayam vyākhyānam kṛtam tathā mayā vineyajanānugrahāya s‹amatyanusārenopadarśitam ||

3. *Nirayāvaliyāo*, 1/4,5
4. *History of Indian Literature*, II Edn, Vol. II, pp. 457-458
5. *Nandī*, 78

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and Śreṇika, which has been referred to not only in the *Bhagavatī*[1] and the *Āvaśyaka cūrṇi*[2], but in the Buddhist literature too. It is surprising that history does not record this battle.

Battle may be indispensable for self-protection, and the consequent violence may be regarded as inevitable for a householder. Even then none can deny that violence is, for all purposes, but violence and it can never masquerade as non-violence. In the section under review, this anti-war attitude has come to the forefront, and it is a spiritual edict against the religious justification of holy wars.

The second section contains the description of the salvation of Śreṇika's ten grandchildren, who adopted the path of religious austerities. The third section propounds the observance and non-observance of restraint and equanimity. The fourth section contains the description of the ten nuns (disciples) of Pārśvanātha. We find the description of the observance of conduct by the twelve princes of Vṛṣṇi dynasty and their birth in '*Sarvārthasiddhi*' in the fifth section.

Thus various interesting and important topics have been propounded in this small-sized *upāṅga*, that is, *Nirayāvalikā śrutaskandha*.

Author and Date of Composition

No definite information is available about the author and the date of composition of this *aṅgabāhya śrutaskandha*. It is, however, certain that some elderly monk composed it. It deals with the topics related with *Bhagavatī*, *Jñātā*, *Upāsakadasā*, *Aupapātika* and *Rājapraśnīya*, but this is not a sufficient ground to determine the date of its composition. When the Āgamas were analysed, it was found that the earlier āgamas contain the names of the later āgamas, so they cannot determine which āgamas were composed earlier and which at a later date.

Commentaries

A Sanskrit commentary is available on this *śrutaskandha*. Śrīcandrasūri wrote its commentary, a very abridged piece of composition, in the Vikram era 1228. A *ṭabbā* (*stabaka*) was composed on it in Gujarati by Muni Dharmasī (Dharmasingh).

Completion of the Assignment

The overall credit of its editing goes to Yuvācārya Mahāprajña. The work has come to successful completion due to the single-mindedness with which he applied himself to the task day and night, without which this gigantic task would have been insurmountable Being a yogi basically, he is able to ever maintain concentration of mind. Engaged as he has been in the editing of the āgamas for a

1. *Bhagavatī*, 7/173,210
2. *Āvaśyaka cūrṇi*, part II, p. 174

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

very long period, he is eminently endowed with the power to penetrate into the deeper mysteries of the canonical texts. Modesty, perseverance and complete dedication to the guru have contributed to the development of these merits in him. Such merits were inherent in him since childhood. Since the time he came to me, I have found gradual intensification of these merits. I have derived utmost satisfaction from his capability and wholehearted devotion to duty.

Many other monks also contributed towards the editing of the text of these canons I bless them all with the wish that their working capacity may be all the more developed.

I had embarked upon this Herculean work of āgamas, having complete faith in my disciples—the monks and nuns of the Order.

I feel highly satisfied that this gigantic task has been accomplished successfully in a right way.

Anuvrata Bhawan,
New Delhi,
22nd October, 1987

—Acharya Tulsi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरपण्णत्ती

पढमं पाहुडं	सू० १ से ३१	पृ० ५९४ से ६०९
बीयं पाहुडं	सू० १ से ३	पृ० ६१० से ६१५
तच्चं पाहुडं	सू० १ से २	पृ० ६१६ से ६१७
चउत्थं पाहुडं	सू० १ से १०	पृ० ६१८ से ६२२
पंचमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२२
छट्ठं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२३ से ६२५
सत्तमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२५
अट्ठमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२६ से ६२९
नवमं पाहुडं	सू० १ से ५	पृ० ६३० से ६३३
दसमं पाहुडं	सू० १ से १७३	पृ० ६३४ से ६६१
एक्कारसमं पाहुडं	सू० १ से ६	पृ० ६६२ से ६६३
बारसमं पाहुडं	सू० १ से ३०	पृ० ६६४ से ६६८
तेरसमं पाहुडं	सू० १ से १७	पृ० ६६९ से ६७१
चउद्दसमं पाहुडं	सू० १ से ८	पृ० ६७२
पण्णरसमं पाहुडं	सू० १ से ३७	पृ० ६७३ से ६७५
सोलसमं पाहुडं	सू० १ से ६	पृ० ६७६
सत्तरसमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६७७
अट्ठारसमं पाहुडं	सू० १ से ३७	पृ० ६७८ से ६८३
एगूणवीसइमं पाहुडं	सू० १ से ३८	पृ० ६८३ से ६९३
वीसइमं पाहुडं	सू० १ से ९	पृ० ६९३ से ७०५
परिसिट्ठं		पृ० ७०६ से ७१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरपण्णत्ती

पढमं पाहुडं

पढमं पाहुडपाहुडं

उक्खेव-पदं

१. तेणं[1] कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नयरी होत्था—रिद्ध[2]-त्थिमिय-समिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव[3] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

२. तीसे णं मिहिलाए नयरीए बहिया 'उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए'[4], एत्थ णं माणिभद्दे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[5] ॥

३. तीसे णं मिहिलाए नयरीए जियसत्तू नामं राया, धारिणी नामं देवी, वण्णओ[6] ॥

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं तम्मि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे[7], परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ जाव[8] राया जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं[9] अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जाव[10] एवं वयासी—

पाहुडसंखा-पदं

६ 'कइ मंडलाइ वच्चइ'[11] ? तिरिच्छा किं व[12] गच्छइ ?
ओभासइ केवइयं ? सेयाइ[13] किं ते संठिई ? ॥१॥

---

१. अतः पूर्वं आदर्शेषु 'णमो अरिहंताणं' इत्येकपदमेव लिखितं दृश्यते। वृत्तौ तद् नास्ति व्याख्यातम्। अतो नास्माभिस्तन्मूले स्वीकृतम्।
२. रिद्धि (ग,घ)।
३. ओ० सू० १।
४. एकारो मागधभाषानुरोधतः प्रथमैकवचनप्रभवः, यथा 'कयरे आगच्छइ दित्तरूवे' (उत्त० १२।६) इत्यादौ [सूवृ]।
५. ओ० सू० २-१३।
६. ओ० सू० १४,१५।
७. समोसढो (ख)।
८. ओ० सू० ७९,८०।
९. नामंति प्राकृतत्वात् विभक्तिपरिणामेन नाम्नेति द्रष्टव्यम् (सूवृ)।
१०. ओ० सू० ८२,८३।
११. किति मंडलाइं चरति (ग,घ)।
१२. वा (ग,घ)।
१३. सेयाए (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहिं पडिहया लेसा ? कहं ते ओयसंठिती ?
के सूरियं वरयंती ? कहं ते उदयसंठिती ? ॥२॥
कतिकट्ठा पोरिसिच्छाया ? जोगे किं ते आहिए ?
के ते संवच्छराणादी ? कइ संवच्छराइ य ॥३॥
कहं चंदमसो वुड्ढी ? कया ते दोसिणा बहू ?
के सिग्घगई वुत्ते ? कहं[1] दोसिणलक्खणं ? ॥४॥
चयणोववाते ? उच्चत्ते ? सूरिया कति आहिया ?
अणुभावे के व से वुत्ते ? एवमेयाइं वीसई ॥५॥

पढमे पाहुडे पाहुडपाहुड-पडिवत्तिसंखा-पदं

७. वड्ढोवुड्ढी मुहुत्ताणमद्धमंडलसंठिई।
के ते चिण्णं परियरइ ? अंतरं किं चरंति य ? ॥१॥
ओगाहइ केवइयं ? केवइयं[2] च विकंपइ ?
मंडलाण य संठाणे, विक्खंभो अट्ठ पाहुडा ॥२॥
छप्पंच य सत्तेव य, अट्ठ य तिण्णि य हवंति पडिवत्ती।
पढमस्स पाहुडस्स उ, हवंति एयाओ पडिवत्ती ॥३॥

बीच्चे पाहुडे पाहुडपाहुड-पडिवत्तिसंखा-पदं

८. पडिवत्तीओ उदए, तह[3] अत्थमणेसु य।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥१॥
निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य।
चूलसीइसयं पुरिसाणं 'तेसिं च'[4] पडिवत्तीओ ॥२॥
उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयघाए[5] दुवे य पडिवत्ती।
चत्तारि मुहुत्तगईए[6], हुंति तइयम्मि[7] पडिवत्ती ॥३॥

दसमे पाहुडे पाहुडपाहुड संखा-पदं

९. आवलिय मुहुत्तग्गे, एवंभागा य जोगसा।
कुलाइं पुण्णमासी य, सण्णिवाए य संठिई ॥१॥
तारग्गं[8] च णेया य, चंदमग्गत्ति यावरे।
देवताण[9] य अज्झयणे[10] मुहुत्ताण नामयाइ[11] य ॥२॥

---

१. कधं (ग,घ)।
२. कतियं (ख)।
३. तधा (ख); तहा (ग,घ)।
४. तेसि व णं (ग,घ)।
५. भेदग्घाए (सूवृ)।
६. मुहुत्तारिमुहुत्तगतीए (ग,घ)।
७. वितिआइ (ख); वित्ताथाए (ग,घ)।
८. तारग्गं (ख); तारसं (ग,घ)।
९. देवाण (ख)।
१०. अज्झयणा (ख,ग,घ)।
११. नामधेज्जाइं (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिवसा राइ वुत्ता य, तिहि गोत्ता भोयणाणि[1] य ।
आइच्च-चार[2] मासा य, पंच संवच्छराइ य ।।३।।
जोइसस्स दाराइं, णक्खत्तविजएवि य ।
दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ।।४।।

१०. ता कहं ते वड्ढोवुड्ढी मुहुत्ताणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीसं च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा ।।

११. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, सव्वबाहिराओ वा[3] मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, एस णं अद्धा केवइयं राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ।।

१२. ता एयाए णं अद्धाए सूरिए 'कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ[4] ? ता चुलसीयं[5] मंडलसयं चरइ---बासीतं[6] मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तं जहा--- निक्खममाणे चेव पविसमाणे चेव, दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तं जहा---सव्वब्भंतरं चेव मंडलं सव्वबाहिरं चेव मंडलं ।।

१३. जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं[7] अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति । पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राती[8] । दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राती, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे[9] । पढमे वा[10] छम्मासे दोच्चे वा[11] छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे[12], णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती[13] ।।

१४. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा[14] ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं

---

१. आयणाणि (ख); तोयणाणि (घ) ।
२. अष्टादशे आदित्यानामुपलक्षणमेतच्चन्द्रमसां च चारा वक्तव्याः (सूवृ) ।
३. × (घ,ट,व, चंवृ) ।
४. चिन्हाङ्कितः पाठः द्वयोरपि वृत्योराधारेण स्वीकृतः । आदर्शेषु केचिद् भेदा लभ्यन्ते---कति मंडलाइं चरति (क,ग,घ,व); कइ मंडलाइं चरति कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ (ट) । कति वा मंडलान्येकवारमिति शेषः (सूवृ, चंवृ) ।
५. चूलसिति (ट); चूलसीती (व) ।
६. बयासीयं (ट) ।
७. सयं (ग,घ) ।
८. राती भवति (क,ग,घ,ट,व); वृत्योरेतत्पदं नास्ति व्याख्यातम्, अस्ति क्रियापदस्य विद्यमानतायां नावश्यकमपि विद्यते ।
९. दिवसे भवइ (क,ग,घ,ट,व) ।
१०,११. × (क,ग,घ); प्रथमे षण्मासे द्वितीये वा षण्मासे (सूवृ, चवृ) ।
१२. दिवसे भवति (क,ग,घ,ट,व,सूवृ); चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ एतत् क्रियापदं नास्ति ।
१३. राती भवति (क,ग,घ,ट,वृ) ।
१४. को हेतूं वदेज्जा (क); के हेतुं वदेज्जा (ग,घ,व); को हेउ (ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वब्भंतराए[1] *सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं° परिक्खेवेणं पण्णत्ते। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे[2] पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, 'ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ'[3], तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया[4]। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया[5] णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ[6] तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो 'एगट्ठिभागे मुहुत्तस्स'[7] एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे-अभिवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं[8] राइंदियसएणं तिण्णिछावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्ते सए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं 'पढमस्स छम्मासस्स'[9] पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे[10] पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालस-

---

१. सं० पा०—सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं।
२. अयमीणे (क,ग,घ)।
३. × (क,घ)।
४. अधिया (क)।
५. जदा (क,घ)।
६. द्रष्टव्यम्—जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः ७।६९ सूत्रस्य पाठः पाठान्तरं च।
७. एगट्ठिभागमुहुत्ते (क,ट,व)।
८. तेसीतेणं (क,ट)।
९. पढमछम्मासस्स (क,ग,घ)।
१०. अयमीणे (क,व); अजमीणे (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो एगट्ठिभाग-मुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे[1]-अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं[2] राइंदियसएणं तिण्णिछावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्ते सए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता[3] चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे।

इति खलु तस्सेवं आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारस-मुहुत्ता राती भवति, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति। पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालस-मुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राती। दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राती, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे। पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती। णण्णत्थ राइंदियाणं वड्ढोवुड्ढीए[4] मुहुत्ताण वा चयोवचएणं, णण्णत्थ अणुवायईए, 'गाहाओ भाणियव्वाओ'[5]॥

बीयं पाहुडपाहुडं

१५. ता कहं ते अद्धमंडलसंठिती आहितेति[6] वएज्जा? तत्थ खलु 'इमे दुवे'[7] अद्धमंडलसंठिती पण्णत्ता, तं जहा— दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिती उत्तरा चेव अद्धमंडल-संठिती॥

१६. ता कहं ते दाहिणा अद्धमंडलसंठिती आहितेति[8] वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[9] परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए

---

१. अभिवड्ढेमाणे (क,ग,घ,ट,व)।

२. तीयसीएणं (ट))।

३. अभिवड्ढित्ता (क,ग,घ,ट,व)।

४. वड्ढोवड्ढीए (क,ग,घ,ट,व)।

५. 'गाहाओ भणितव्वाओ' त्ति अत्र अनन्तरोक्तार्थसंग्राहिका अस्या एव सूर्यप्रज्ञप्तेर्भद्रबाहुस्वामिना या निर्युक्तिः कृता तत्प्रतिबद्धा अन्या वा काश्चन ग्रन्थान्तरसुप्रसिद्धा गाथा वर्त्तन्ते ता 'भणितव्याः' पठनीयाः, ताश्च सम्प्रति क्वापि पुस्तके न दृश्यन्ते इति व्यवच्छिन्नाः सम्भाव्यन्ते ततो न कथयितुं व्याख्यातुं वा शक्यन्ते, यो वा यथा सम्प्रदायादवगच्छति तेन तथा शिष्येभ्यः कथनीयाः व्याख्यानीयाश्चेति (सूवृ)।

६. आहिताति (क,ग,घ,व)।

७. इमा दुविहा (ट,व)।

८. आहिताति (क,ग,घ)।

९. सू० १।१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं आयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे-संकममाणे दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिरंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे-संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे॥

१७. ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिती आहितेति वएज्जा? ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[1] परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस-

१. सू० १।१४।

मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। जहा दाहिणा तहा[1] चेव, णवरं—उत्तरट्ठिओ अब्भितराणंतरं दाहिणं उवसंकमति, दाहिणाओ अब्भितरं तच्चं उत्तरं उवसंकमति। एवं खलु एएणं उवाएणं जाव[2] सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमति, सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमित्ता दाहिणाओ बाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमति, उत्तराओ बाहिरं तच्चं दाहिणं, तच्चाओ दाहिणाओ संकममाणे-संकममाणे जाव सव्वब्भंतरं उवसंकमति तहेव। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ॥

१.२. तहा उत्तरा (क)। वृत्तौ (पत्र २०) अस्य विषयस्य पूर्णालापको लिखितो दृश्यते। कोष्ठकवर्ती पाठो वृत्तौ नोपलब्धः, किन्तु पूर्णपाठानुसारेण युज्यते, इत्यस्माभिर्लिखितः। सूत्रालापको यथावस्थितः परिभावनीयः, सच्चैवं—से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरमयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भितराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति, जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे-संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिरं दाहिणमद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासमयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहि य एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। [से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिरंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए]। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे-संकममाणे दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति (सू॰)।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

तच्चं पाहुडपाहुडं

१८. ता के ते चिण्णं पडिचरइ आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए। ता एते णं दुवे सूरिया तीसाए तीसाए मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरंति, सट्ठीए-सट्ठीए मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघातेंति। ता निक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया नो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, तं सतमेगं चोयालं॥

१९. तत्थ णं[1] को हेतुति[2] वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स 'पाईणपडिणायताए उदीणदाहिणायताए'[3] जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं[4] जाइं अप्पणा चेव[5] चिण्णाइं पडिचरइ, उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं[6] पडिचरइ। तत्थ अयं भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरइ, दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काउणतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ।
तत्थ[7] अयं एरवए सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ, दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ। तत्थ अयं एरावतिए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरइ, उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ। ता निक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया नो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति। पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति। सतमेगं चोयालं, गाहाओ॥

---

१. × (क,ग,घ)।
२. हेऊ (क,ग,घ,ट,व)।
३. पाईणपडिणाययउदीणदाहिणायताए (क,ग,घ,व)।
४. सूरियमताइं (ग,घ,ट,व)।
५. × (क,घ,व)।
६. चिण्णं (ग,घ,ट,व) प्रायः सर्वत्र।
७. तत्थ णं (ग,ट,व)।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

चउत्थं पाहुडपाहुडं

२०. ता केवतियं एते[1] दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितातिं[2] वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितातिं वएज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितातिं[3] वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितातिं वएज्जा—एगे एवमाहंसु ३ [4]•एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितातिं वएज्जा—एगे एवमाहंसु° ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता दो दीवे दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितातिं वएज्जा—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहितातिं वएज्जा—एगे एवमाहंसु ६

वयं पुण एवं वयामो—ता 'पंच पंच'[5] जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति आहितातिं वएज्जा ॥

२१. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं 'नवणउतिं जोयणसहस्साइं'[6] छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितातिं वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

ते निक्खममाणा सूरिया नवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं नवणवतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणवीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितातिं वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं नवणवतिं जोयणसहस्साइं छच्च

---

१. ते (क,ग,घ,व)।

२. आहितेति (ट,व); अत्र कर्तृपदे द्विवचनमस्ति तेन 'आहितातिं' (आख्याताविति) इति पाठो मूले स्वीकृतः।

३. आहियंति (ग,घ,व)।

४. सं० पा०—एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु।

५. पंच (क,ग,घ,ट,व)।

६. णवणवइजोयणसहस्साइं (ग,घ,ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्कावण्णे[1] जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एतेणुवाएणं निक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा-संकममाणा पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्ण-मण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा-अभिवड्ढेमाणा सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उव-संकमित्ता चारं चरंति, तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं[2] च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठि-भागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा-संकममाणा पंच-पंच जोयणाइं पणतीसे एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले 'अण्णमण्णस्स अंतरं'[3] निवुड्ढेमाणा-निवुड्ढेमाणा सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, तया णं नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥

पंचमं पाहुडपाहुडं

२२. ता केवतियं ते दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति[4] वएज्जा ?

---

१. इक्कावणे (ग,घ,ट,व)।

२. छत्तीसं (ग,घ); वृत्तिद्वयेपि 'षड्विंशतिं चैकषष्टिभागान् योजनस्य इति लभ्यते। तेन 'छत्तीसं' इति पदं नास्ति सम्मतम्।

३. अण्णमण्णस्संतरं (क,ग,घ)।

४. आहिताति (क,ग,घ)।

तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ[1]। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं[2] समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ 'आहितेति वएज्जा'[3]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता अवड्ढं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता किंचि दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ५ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं जंबुद्दीवं दीवं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १ एवं चोत्तीसं जोयणसयं २ एवं पणतीसं जोयणसयं ३ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अवड्ढं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अवड्ढं जंबुद्दीवं दीवं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एवं सव्वबाहिरएवि, नवरं—अवड्ढं लवणसमुद्दं, तया णं राइंदियं तहेव ४ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता नो किंचि दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं नो किंचि दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तहेव। एवं सव्वबाहिरए मंडले, नवरं—नो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता चारं चरइ, राइंदियं तहेव, एगे एवमाहंसु ५

वयं पुण एवं वयामो—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं जंबुद्दीवं दीवं असीतं जोयणसतं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एवं सव्वबाहिरेवि,[4] णवरं—लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठ-

---

१. प्रज्ञप्तस्तद्यथा (सूवृ, चंवृ)।

२. दीवं वा (क,ग,घ,ट,व)।

३. 'क,ग,घ' आदर्शेषु अयं पाठो नैव दृश्यते, वृत्त्योरपि नास्ति व्याख्यातः 'ट' प्रतौ क्वचित्-क्वचित् लिखितोस्ति शेषप्राभृतानां प्रतिपत्तिष्वपि एवमेव दृश्यते।

४. क्वचित्तु 'सव्वबाहिरेवी' व्यतिदेशमन्तरेण सकलमपि सूत्रं साक्षाल्लिखितं दृश्यते (सूवृ, चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणियव्वाओ ॥

छट्ठं पाहुडपाहुडं

२३. ता केवतियं[1] ते एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। 'तत्थ एगे'[2] एवमाहंसु--ता दो जोयणाइं अद्धबायालीसं तेसीतिसतभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु--ता अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु--ता तिभागूणाइं तिण्णि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु--ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीतालीसं[3] च तेसीतिसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु--ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु--ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु--ता चत्तारि जोयणाइं अद्धबावण्णं च तेसीतिसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ७

वयं पुण एवं वयामो--ता दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ ॥

२४. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[4] परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं

---

१. कत्तियं (ग,घ)।
२. तत्थेगे (ग,घ)।
३. अद्धसीतालं (क,व)।
४. सू० १।१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे-विकंपमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरजोयणसए विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दो-दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चंसि मंडलंसि उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरइ, [1]•तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए°। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे-विकंपमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरे जोयणसते विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे॥

सत्तमं पाहुडपाहुडं

२५. ता कहं ते मंडलसंठिती आहितेति[2] वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता[3] समचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता

१. सं० पा०—राइंदिए तहेव।

२. आहितातिं (क,ग,घ,व)।

३. मंडलवत्ता (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वावि मंडलवता विसमचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचक्कवालसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचक्कवालसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—तासव्वावि मंडलवता चक्कद्धचक्कवालसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ८ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता, एतेणं नएणं नायव्वं, नो चेव णं इतरेहिं, पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ॥

अट्ठमं पाहुडपाहुडं

२६. ता सव्वावि णं मंडलवता केवतियं बाहल्लेणं, केवतियं आयाम-विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं अहितातित वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं तिण्णि य नवणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता[1]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च चउतीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि बिउत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता[2]—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि य पंचुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३

वयं पुण एवं वयामो—ता सव्वावि णं मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, अणियता आयाम-विक्खंभ-परिक्खेवेणं आहितातित वएज्जा ॥

२७. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य जोयणसहस्साइं एगूणणउतिं जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं च सत्तुत्तरं जोयणसयं किंचिविसेसूणं

---

१. आहितेति वएज्जा (ट); आहियाति वएज्जा (व)।
२. आहितेति वएज्जा (ट); आहियाति वएज्जा (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिक्खेवेणं, तया णं दिवसराइप्पमाणं तहेव[1]। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च एक्कावण्णे[2] जोयणसए नव य एगट्ठिभागा जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं, तया णं दिवसराई तहेव[3]। एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं 'संकममाणे-संकममाणे'[4] पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे 'अट्ठारस-अट्ठारस'[5] जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं, तया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं, तया णं राइंदियं तहेव[6]। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सा

---

१. तच्चेवम्—तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया (सूवृ)।

२. एक्काप्पणे (ट,व)।

३. तच्चेवं—तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवालस-मुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहि अहिया (सूवृ)।

४. उवसंकममाणे-उवसंकममाणे (ट,व)।

५. अट्ठारस-अट्ठारस किंचूणाइं (क); वृत्तौ निश्चयव्यवहारनययोश्चर्चा कृतास्ति—'अष्टादश अष्टादश' योजनानि परिरयवृद्धि-मभिवर्द्धयन्नभिवर्द्धयन् इहाष्टादशेति व्यवहारत उक्तम्, निश्चयनयेन तु सप्तदश सप्तदश योजनानि अष्टात्रिंशतं चैकषष्टिभागा योजनस्येति द्रष्टव्यं, एतच्च प्रागेव भावितं, न चैतत् स्वमनीषिकाविजृम्भितं, यत उक्तं तद्विचार-प्रक्रमे एव करणविभावनायां—'सत्तरस जोयणाइं अट्ठतीसं च एगट्ठिभागा $17\frac{38}{61}$ एयं निच्छएणं, संववहारेणं पुण अट्ठारस जोयणाइं (सूवृ)।

६. तौ चवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे हवइ दोहि एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहि अहिए (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य अउणासीते जोयणसए परिक्खेवेणं, दिवसराई तहेव[1]। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे अट्ठारस[2] जोयणाइं परिरयवुड्ढि निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं अउणाउतिं[3] च जोयणाइं किंचिविसेसाहियाइं परिक्खेवेणं, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे। ता सव्वावि णं मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, सव्वावि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं, एस णं अद्धा तेसीयसयपडुप्पण्णो पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिताति वएज्जा॥

२८. ता[4] अब्भिंतराओ मंडलवताओ बाहिरा मंडलवता, बाहिराओ वा मंडलवताओ अब्भिंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहिलेति वएज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहितेति वएज्जा॥

२६. अब्भिंतराए मंडलवताए बाहिरा मंडलवता, बाहिराए वा मंडलवताए अब्भिंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा॥

३०. ता अब्भंतराओ मंडलवताओ बाहिरा मंडलवता, बाहिराओ वा मंडलवताओ अब्भंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा ? ता पंचणवुत्तरे जोयणसए तेरस य एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा॥

३१. ता अब्भिंतराए मंडलवताए बाहिरा मंडलवता, बाहिराए वा मंडलवताए अब्भिंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहितेति वएज्जा॥

---

१. ते चैवम्—तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए (सूवृ)।

२. अट्ठारस किंचूणाइं (क)।

३. अउणाणउतिं (क,ट,व)।

४. चन्द्रप्रज्ञप्त्यादर्शयोः सूत्रचतुष्कस्य (१।२६-३२) पाठो भिन्नोस्ति। द्रष्टव्यं परिशिष्टम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीयं पाहुडं

पढमं पाहुडपाहुडं

१. ता कहं[1] ते तिरिच्छगती[2] आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ[3] लोयंताओ[4] पादो मिरीची[5] आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं[6] लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि[7] लोयंतंसि सायं मिरीयं[8] आगासंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता, 'पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता'[9] अहे पडियागच्छइ, पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ, पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमिल्लाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि पाओ सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए

---

१. कधं (क)।
२. तिरच्छगती (ट)।
३. पुरत्थमिल्लातो (ट)।
४. लोगंतातो (ट)।
५. सूरिए (ट); मिरी (व)।
६. × (ग,घ,ट,व)।
७. पच्चत्थिमिल्लंसि (ट,व)।
८. सूरिए (क,ट,व)।
९. चिन्हाङ्कितः पाठः 'क,ग,घ' आदर्शेषु नोपलभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि अणुपविसइ[1], अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ, पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता उत्तरड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरड्ढलोयं तिरियं करेइ, करेत्ता दाहिणड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिणुत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ, करेत्ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ[2] सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ८।

वयं पुण एवं वयामो—ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स 'पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए'[3] जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमंसि उत्तरपच्चत्थिमंसि य चउब्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया[4] उत्तिट्ठंति। ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेत्ता पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव राओ, ते णं इमाइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेत्ता दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव राओ, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाणि य जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेत्ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि य चउभागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति॥

बीयं पाहुडपाहुडं

२. ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे[5] सूरिए चारं चरति आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंडलओ मंडलं संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकमति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेति २ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकमति, तेसि णं अयं दोसे, ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकमति एवतियं च णं अद्धं पुरतो न गच्छति, पुरतो अगच्छमाणे[6]

---

१. पविसइ (ग,घ)।
२. पातो (क,ग,घ,ट,व)।
३. पाईणपाडिणायतउदीणदाहिणायताए (क,ग,घ,ट,व)।
४. सूरिया आगासातो (ट,व)।
५. संकममाणे २ (क,ग,घ,व)।
६. निगच्छमाणे (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडलकालं परिहवेति[1], तेसि णं अयं दोसे। तत्थ जेते एवमाहंसु—ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेति, 'तेसि णं अयं विसेसे'[2], ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेति एवतियं च णं अद्धं पुरतो गच्छति, पुरतो गच्छमाणे मंडलकालं न परिहवेति, तेसि णं अयं विसेसे। तत्थ जेते एवमाहंसु—ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेइ, एतेणं नएणं नेयव्वं, नो चेव णं इतरेणं॥

तच्चं पाहुडपाहुडं

३. ता केयतियं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति आहितातिवएज्जा?[3] तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता छ छ जोयण-सहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति[3]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति—एगे एवमाहंसु ४

तत्थ जेते एवमाहंसु—ता छ-छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तंसि च णं दिवसंसि एगं जोयणसयसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते[4] पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, 'तया णं'[5] छ-छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति १

तत्थ जेते एवमाहंसु—ता पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तहेव दिवसराइप्पमाणं[6], तंसि च णं दिवसंसि नवति जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया

१. परिहावति (ख); 'परिभ्रमति' यावता कालेन मण्डलं परिपूर्णं भ्रम्यते तस्य हानिरुपजायते (सूवृ,चंवृ)। हस्तलिखितवृत्त्योः 'परिभ्रमति' इति लिखितं दृश्यते। किन्तु अग्रेतने 'परिहवेति' क्रियापदस्य 'परिभवति' इति लिखितं विद्यते, तेन 'परिभवति' इति पदमेव शुद्धं सम्भाव्यते 'परिहावति' इति पदमपि 'परिहाणि' अर्थं द्योतयति।

२. तेणं एवमाहंसु (ट,व)।

३. गच्छति आहितेति वदेज्जा (ट,व) सर्वत्र।

४. तावक्खित्ते (क)।

५. तेसिणं (क); तेसिणमित्यादि, तेषां हि तीर्थान्तरीयाणाम् (सूवृ,चंवृ)। वृत्तिकृता अग्रेतन प्रतिपत्तिषु 'ता जया णं' इति व्याख्यातमस्ति।

६. अत्र प्रस्तावे दिवसरात्रिप्रमाणं तथैव प्रागिव द्रष्टव्यम्, 'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ, जहण्णिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवती' ति (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं तं चेव राइंदियप्पमाणं[1] तंसि च णं दिवसंसि सट्ठिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति २

तत्थ जेते एवमाहंसु —ता चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु —ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं दिवसराई तहेव,[2] तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं राइंदियं तहेव,[3] तंसि च णं दिवसंसि अडतालीसं जोयसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ३

तत्थ जेते एवमाहंसु —ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, ते एवमाहंसु —ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगती[4] भवति तया णं छ-छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमतावक्खेत्तं समासादेमाणे-समासादेमाणे सूरिए मज्झिमगती भवति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमं तावक्खेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगती भवति तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति। तत्थ को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं दिवसराई तहेव,[5] तंसि च णं दिवसंसि एक्काणउतिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं राइंदियं तहेव,[6] तंसि च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेते पण्णत्ते, तया णं छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति —एगे एवमाहंसु ४

वयं पुण एवं वयामो —ता सातिरेगाइं पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति। तत्थ को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स[7] मणुस्सस्स सीतालीसाए

---

१. तदेव प्रागुक्तं रात्रिदिवसप्रमाणं—रात्रिदिवसप्रमाणं वक्तव्यम्, तद्यथा 'उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई हवई, जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवती' ति (सूवृ)।

२. ते चैवम् 'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ, जहन्निया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ' इति (सूवृ)।

३. तच्चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई, जहन्नए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवति' (सूवृ)।

४. सिग्घागति (ग,घ)।

५. ते चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालस-मुहुत्ता राई भवई' (सूवृ)।

६. तच्चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई, जहन्नए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ' (सूवृ)।

७. इदगतस्स (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए[1] य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं दिवसे राई तहेव[2]।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे[3] पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे[4] जोयणसए सीतालीसं च सट्ठिभागे[5] जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तया णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं अउणासीते[6] य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभागेहिं[7] जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता अउणावीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिएचक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं दिवसराई तहेव[8]। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरतच्चं[9] मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पंच य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउतीए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं दिवस-राई तहेव[10]। एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे अट्ठारस-अट्ठारस सट्ठिभागे[11] जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं अभिवुड्ढेमाणे-अभिवुड्ढेमाणे चुलसीतिं सीताइं[12] जोयणाइं पुरिसच्छायं निवुड्ढे-माणे-निवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्व-बाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य पंचुत्तरे जोयणसते पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसतेहिं तीसाए य सट्ठि-भागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

---

१. एक्कवीसाए (क)।

२. ते चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवाल-समुहुत्ता राई भवइ' (सूवृ)।

३. अयमीणे (क,ग,घ)।

४. एकापणे (ट)।

५. एगट्ठिभागे (ग,घ)।

६. एगुणासीते (ट)।

७. एगसट्ठिभागेहिं (ग,घ); एयसट्ठिभागे (ट,व)।

८. ते चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया' (सूवृ)।

९. अब्भंतरं तच्चं (ट)।

१०. ते चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया' (सूवृ)।

११. सट्ठिरस- सट्ठिरस सट्ठिभागे (ग,घ)।

१२. शीतानि किञ्चिन्न्यूनानीत्यर्थः (सूवृ); सीया इति किञ्चिन्न्यूनानि (चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से पविसमाण सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे[1] जोयणसते सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं इहगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोलेहिं जोयणसतेहिं एगूणतालीसाए[2] सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा[3] छेत्ता सट्ठिए चुण्णियाभागे सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तया णं राइंदियं तहेव[4]। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउत्तरे जोययणसए ऊतालीसं[5] च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स एगाहिगेहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए[6] य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, राइंदियं तहेव[7]। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे अट्ठारस-अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे सातिरेगाइं पंचासीतिं-पंचासीतिं जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे-अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अउणतीसं[8] च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसतेहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे॥

---

१. चउत्तरे (ट)।

२. इगुणतालीसाए (क); अगुणतालीसाए (घ); एगुणचत्तालिसाए (ट); चउआलीसाए (व)।

३. एगट्ठिधा (क,ग,ध)।

४. तच्चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे हवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए' (सूवृ)।

५. उणयालिसं (ट)।

६. चक्कावण्णाए (क,ख,घ,व); वृत्तौ 'एकोनपञ्चाशता' इति व्याख्यातमस्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि (७।२५) 'एगूणपण्णाए' इति पाठो लभ्यते। गणनयापि एतदेव लभ्यते।

७. तधेव (क,ग,घ); तच्चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे हवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, (सूवृ)।

८. एगुणतीसं (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चं पाहुडं

१. ता केवतियं खेत्तं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु--ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति[1] १ एगे पुण एवमाहंसु--ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु ता अद्धट्ठे[2] दीवे अद्धट्ठे समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु--ता दस दीवे दस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु--ता बारस दीवे बारस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु--ता बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु--ता बावत्तरिं दीवे बावत्तरिं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु--ता बायालीसं दीवसतं बायालं[3] समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ९ एगे पुण एवमाहंसु--ता बावत्तरिं दीवसतं बावत्तरिं समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु १० एगे पुण एवमाहंसु--ता बायालीसं दीवसहस्सं बायालं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ११ एगे पुण एवमाहंसु--ता बावत्तरिं दीवसहस्सं बावत्तरिं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु १२
वयं पुण एवं वयामो--ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[4] परिक्खेवेणं पण्णत्ते, से णं एगाए जगतीए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, सा णं जगती तहेव

---

१. पगासेंति आहितेति वदेज्जा (ट,व) सर्वत्र।
२. आउट्ठे (ग,घ); 'ट,व' प्रत्योः पाठस्त्रुटितोस्ति। सूर्यप्रज्ञप्तेर्हस्तलिखितवृत्तौ 'अद्धट्ठे' इति अर्द्धं चतुर्थं येषां से अर्द्धचतुर्थाः, तत्र परिपूर्णाश्चतुर्थस्य चार्द्धमित्यर्थः। चन्द्रप्रज्ञप्तेर्वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यातमस्ति।
३. बातालं (क)।
४. सू० १।१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव[1] एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दससलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति मक्खाता ।।

२. जंबुद्दीवे णं दीवे पंचचक्कभागसंठिते[2] आहितेति वएज्जा, ता कहं जंबुद्दीवे दीवे पंचचक्कभागसंठिते आहितेति वएज्जा ? ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स तिण्णि पंचचक्कभागे ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, 'तं जहा'[3] --एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, एगेवि[4] एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति । ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स दोण्णि चक्कभागे[5] ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, तं जहा एगेवि सूरिए एगं पंचचक्कवालभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, एगेवि एगं पंचचक्कवालभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।।

---

१. जं० १।७से ६।२६ ।

२. °संठिता (ग,घ) ।

३. वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

४. एकोपि अपरोपि द्वितीयोपीत्यर्थः (सूवृ) ।

५. द्वौ चक्रवालपञ्चमभागौ (सूवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं पाहुडं

१. ता कहं ते सेयताए[1] संठिती आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविधा संठिती पण्णत्ता, तं जहा —चंदिमसूरियसंठिती य तावक्खेत्तसंठिती य ।।

२. ता कहं[2] ते चंदिमसूरियसंठिती आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु —ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता[3]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु —ता विसमचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता —एगे एवमाहंसु २ एवं[4] समचउक्कोणसंठिता ३ विसमचउक्कोणसंठिता ४ समचक्कवालसंठिता ५ विसमचक्कवालसंठिता ६ चक्कद्धचक्कवालसंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता —एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु ता छत्तागारसंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ८ एवं[5] गेहसंठिता[6] ९ गेहावणसंठिता १० पासादसंठिता ११ गोपुरसंठिता १२ पेच्छाघरसंठिता १३ वलभीसंठिता १४ हम्मियतलसंठिता[7] १५ एगे पुण एवमाहंसु ता वालग्गपोतियासंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता —एगे एवमाहंसु १६ तत्थ जेते एवमाहंसु— ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता, एतेणं नएणं नेयव्वं नो चेव णं इतरेहिं ।।

३. ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु ता गेहसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता[8] 'एवं जाव वालग्गपोतियासंठिता'[10] तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु—ता जस्संठिते[11] जंबुद्दीवे दीवे तस्संठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता— एगे एवमाहंसु ९ 'एगे पुण एवमाहंसु'[12]—ता जस्संठिते भारहे वासे तस्संठिता

१. सेयाए (ग); सेयाते (ट,व)।
२. कधं (क,ग)।
३. आहिताति वदेज्जा (ट,व); आहियत्ति वएज्जा (चंवृ) सर्वत्र ।
४. एवं एतेणं अभिलावेणं (ट,व)।
५. द्वयोरपि वृत्त्योः पूर्णः पाठो लभ्यते ।
६. गेहागारसंठिता (ट,व)।
७. हम्मियनवसंठिता (ग,घ)।
८. गेहागारसंठिया (ट,व)।
९. आहियाति वएज्जा (ट,व,चंवृ) सर्वत्र ।
१०. एवं ताओ चेव अट्ठपडिवत्तीओ णेयव्वाओ जाव ता वालग्गपोतियासंठिया (ट,व,चंवृ)।
११. जस्संठिए णं (ट,व); 'णं' इति वाक्यालङ्कारे (चंवृ)।
१२. एवं एएणं अभिलावेणं (ट,व,चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १० 'एवं उज्जाणसंठिता'[1] ११ निज्जाणसंठिता १२ एगतो निसहसंठिता १३ दुहतो निसहसंठिता १४ सेयणगसंठिता—एगे एवमाहंसु १५ एगे पुण एवमाहंसु—ता सेणगपट्ठसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १६

वयं पुण एवं वदामो ता उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—अंतो संकुया[2] बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला[3], अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थीमुहसंठिता[4], उभओ पासेणं[5] तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, 'दुवे य णं तीसे'[6] बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा ॥

४. तत्थ को[7] हेतूति वएज्जा ? ता[8] अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा, अंतो संकुया[9] बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला[10], अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थीमुहसंठिता, उभओ[11] पासेणं तीसे[12] •दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा° सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं नव जोयणसहस्साइं चत्तारि य छलसीए[13] जोयणसए नव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वएज्जा । 'ता से'[14] णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स 'परिक्खेवे, तं'[15] परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा । तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणउतिं जोयण-सहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति

---

१. 'ट,व' प्रत्योः किञ्चिद् विस्तृतः पाठो विद्यते —ता उज्जाणसंठिया णं तावखेत्ता । एवं सर्वत्रापि । द्वयोरपि वृत्त्योः पूर्णः पाठो विद्यते । सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'पण्णत्ता' इति पदमस्ति, चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ तस्य स्थाने 'आहियत्ति वएज्जा' इति पाठो विद्यते ।

२. संकुडा (क,ग,घ,ट,व); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।३१) 'संकुया' इति पाठः स्वीकृतोस्ति । द्वयोरपि वृत्त्योः 'संकुचा संकुचिता' इति व्याख्यातमस्ति, तेन 'संकुया' इति पाठो मूले स्वीकृतः ।

३. पिधुला (क), पुहुलो (ट) ।

४. सत्थिमुहसंठिया (ट); चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'बाहिं सत्थियमुहसंठियत्ति' पाठो लभ्यते । सगडुद्धीमुह° (जंबुद्दीवपण्णत्ती ७.३१) ।

५. पासिं (ट,व) ।

६. तीसे णं दुवे (ट,व) ।

७. के (क) ।

८. ताव (क); तो (व) ।

९. संकुडा (क,ग,घ,ट,व) ।

१०. पिधुला (ग,घ) ।

११. दुहतो (ग) ।

१२. सं० पा०—तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया ।

१३. चुलसीए (ट) ।

१४. तीसे (ग,घ,ट,व) ।

१५. परिक्खेवे णं (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वएज्जा। ता से[1] णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा ॥

५. ता से णं तावक्खेत्ते केवतियं[2] आयामेणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे य आयामेणं आहितेति वएज्जा ॥

६. तया णं किंसंठिया अंधयारसंठिती आहिताति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुया-पुप्फसंठिता[3] •अंधयारसंठिती पण्णत्ता-अंतो संकुया बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थीमुहसंठिता, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा-सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा ॥

७. तत्थ को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भं-तराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता अंधयारसंठिती आहिताति वएज्जा अंतो संकुया बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थीमुहसंठिता, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्व°बाहिरिया चेव बाहा। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वएज्जा। तीसे णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता[4], [5]•दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा°। तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेवट्ठिं जोयणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले[6] जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खे-वेणं आहितेति वएज्जा। ता से णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा ॥

---

१. एस (ग,घ)।

२. केतियं (ग,घ)।

३. सं० पा०—उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तहेव जाव बाहिरिया। उद्धीमुहकलंबुयापुप्फसंठिया आहितेति वदेज्जा अंतो संकुता बाहिं वित्थडा तं चेव जाव तीसे णं दुवे बाहातो अणवट्ठिता भवंति तं सव्वब्भंरिता चेव बाहा सव्वबाहि-रिया (ट,व)।

४. गुणिया (ट)।

५. सं० पा०—सेसं तहेव। चन्द्रप्रज्ञप्तौ एष पाठः पूर्ण एव विद्यते, तद्वृत्तावपि पाठसंक्षेपः सूचितो नास्ति। सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'सेसं तं चेव' त्ति शेषं तदेव प्रागुक्तं वक्तव्यं तच्चेदं दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेव-विसेसे आहियत्ति वइज्जा' इति सूचितमस्ति।

६. वाताले (ग); वाणाले (घ); बायाले (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. ता से णं अंधयारे केवतियं आयामेणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठत्तरिं जोयण-सहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च आयामेणं आहितेति वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ।।

९. ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं किंसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा। एवं जं अब्भितरमंडले अंधयारसंठितीए पमाणं तं बाहिरमंडले तावक्खेत्तसंठितीए, जं तहिं तावक्खेत्तसंठितीए तं बाहिरमंडले अंधयार-संठितीए भाणियव्वं जाव[1] तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।।

१०. ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवयंति[2] ? केवतियं खेत्तं अहे

---

१. सू० ४।४-८। सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ पूर्णपाठो लिखितोस्ति—तच्चैवं सूत्रतो भणनीयं अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिहुला अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थिमुहसंठिया, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—अब्भितरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छ जोयणसहस्साइं तिन्नि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियत्ति वएज्जा। ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ आहियत्ति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे ते णं दोहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहियत्ति वएज्जा। ता से णं तावक्खेत्ते केवइयं आयामेणं आहियत्ति वएज्जा ? ता तेसीइ जोयणसहस्साइं तिन्नि तेतीसे जोयणसए जोयणतिभागं आहियाति वएज्जा। तया णं किंसंठिया अंधकारसंठिई आहियत्ति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठाण-संठिया आहियत्ति वएज्जा अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिहुला अंतो अंकमुह-संठिया बाहिं सत्थिमुहसंठिया, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं नव जोयणसह-स्साइं चत्तारि य छलसीए जोयणसए नव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियत्ति वएज्जा। ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीर-माणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहियत्ति वएज्जा। तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणउइं जोयणसहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिए इति वएज्जा। ता एस णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिए इति वएज्जा ? ता जे णं जंबु-द्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहिए इति वएज्जा। ता से णं अंधकारे केवइए आयामेणं आहिए इति वएज्जा ? ता तेसीइं जोयणसहस्साइं तिन्नि य तित्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं आहिए इति वएज्जा।

२. तवंति (क,ट,व); तावंति (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तवयंति[1] ? केवतियं खेत्तं तिरियं तवयंति[2] ? ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसयं उड्ढं तवयंति[3] अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवयंति[4], सीयालीसं[5] जोयणसहस्साइं दुण्णि य तेवट्ठे जोयणसए एगवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवयंति ।।

पंचमं पाहुडं

१. ता कस्सि[6] णं सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितातित्ति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंदरंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितातित्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता मेरुंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितातित्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एवं एएणं अभिलावेणं भाणियव्वं—ता मणोरमंसि णं पव्वतंसि ३ ता सुदंसणंसि णं पव्वतंसि ४ ता सयंपभंसि णं पव्वतंसि ५ ता गिरिरायंसि णं पव्वतंसि ६ ता रयणुच्चयंसि णं पव्वतंसि ७ ता सिलुच्चयंसि णं पव्वतंसि ८ लोयमज्झंसि णं पव्वतंसि ९ ता लोयणाभिंसि णं पव्वतंसि १० ता अच्छंसि णं पव्वतंसि ११ ता सूरियावत्तंसि णं पव्वतंसि १२ ता सूरियावरणंसि णं पव्वतंसि १३ ता उत्तमंसि णं पव्वतंसि १४ ता दिसादिसि णं पव्वतंसि १५ ता अवतंसंसि णं पव्वतंसि १६ ता धरणिखीलंसि णं पव्वतंसि १७ ता धरणिसिंगंसि णं पव्वतंसि १८ ता पव्वतिंदंसि णं पव्वतंसि १९ ता पव्वयरायंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहितातित्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २०

वयं पुण एवं वदामो—ता मंदरेवि पवुच्चइ जाव पव्वयरायावि पवुच्चइ, ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति, ते णं पोग्गला[7] सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, चरिमलेस्संतरगतावि[8] णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति[9] ।।

---

१. तविंति (क); तवंति (ग,घ,ट,व)।
२. तवंति (क,ग,घ,ट,व)।
३. तवंति (क,ग,घ,ट) प्रायः सर्वत्र।
४. अधे य (क,ग,घ)।
५. सीताले (व)।
६. संकि (ग,घ); किस (ट); कीस (व)।
७. पुग्गला (क,ग,घ)।
८. चरम° (ट,व)।
९. पडिहणंति आहितेति वदेज्जा (ट); पडिहणंति आहिआति वदेज्जा (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं पाहुडं

१. ता कहं ते ओयसंठिती[1] आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं[2] पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव[3] सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा वेअति[4]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा वेअति[5]—एगे एवमाहंसु २ एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वा—ता अणुराइंदियमेव ३ ता अणुपक्खमेव ४ ता अणुमासमेव ५ ता अणुउडुमेव ६ ता अणुअयणमेव ७ ता अणुसंवच्छरमेव ८ ता अणुजुगमेव ९ ता अणुवाससयमेव १० ता अणुवाससहस्समेव ११ ता अणुवाससयसहस्समेव १२ ता अणुपुव्वमेव १३ अणुपुव्वसयमेव १४ ता अणुपुव्वसहस्समेव १५ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव १६ ता अणुपलिओवममेव[6] १७ ता अणुपलिओवमसयमेव १८ ता अणुपलिओवमसहस्समेव १९ ता अणुपलिओवमसय-सहस्समेव २० ता अणुसागरोवममेव २१ ता अणुसागरोवमसयमेव २२ ता अणुसागरोवम-सहस्समेव २३ ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव २४ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुओसप्पिणिउस्सप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा वेअति[7]—एगे एवमाहंसु २५

वयं पुण एवं वदामो—ता तीसं-तीसं मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिता भवइ, तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिता भवइ, छम्मासे सूरिए ओयं निवुड्ढे, छम्मासे सूरिए ओयं अभिवुड्ढेइ, निक्खममाणे सूरिए देसं निवुड्ढेइ, पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ। तत्थ को[8] हेतूति वदेज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

---

१. तोतसंठिती (ट,व)।
२. पणुवीसं (ग,घ,व)।
३. अणुसमतमेव (ट,व)।
४. अवेति (क); वेती (ट,व); अपैति (सूवृ); उपैति (चंवृ)।
५. अवेति (क); वेति (ट,व); अपैति (सूवृ); उपैति (चंवृ)।
६. अणुपलितोवममेव (ग,घ,व)।
७. वेति आहिताति वदेज्जा (ट,व)।
८. के (क,ग,घ); णं के (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे[1] पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं[2] मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[3] छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं[4] तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[5] छेत्ता तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एतेणुवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे 'एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए'[6] दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढे-माणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिधाय[7] एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए[8] दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स[9] अभिवड्ढेता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[10] छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे[11] पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं 'एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रयणिक्खेत्तस्स'[12] निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[13] छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि 'बाहिरं तच्चं'[14] मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं

---

१. अयमीणे (क)।
२. अब्भंतराणंतरं (ट,व)।
३. अट्ठारसहिं तीसेहिं सतेहिं मंडलं (ट,व)।
४. अब्भंतरं (ग,घ,ट,व)।
५. अट्ठारसहिं तीसेहिं सतेहिं मंडलं (ट,व)।
६. एगमेगं भागं ओयाए एगमेगे मंडले एगमेगेणं रातिदिएणं (ट,व)।
७. पणिहाए (ट,व)।
८. ओताए (ट)।
९. रतणिखेत्तस्स (क,ग,घ); रातिखेत्तस्स (ट)।
१०. अट्ठारसहिं तीसेहिं मंडलं (ट,व)।
११. अयमीणे (क,ग,घ,व)।
१२. एगं भागं ओयाए एगेणं राइंदिएणं राति-खेत्तस्स (ट,व)।
१३. अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं मंडलं (ट,व)।
१४. बाहिरतच्चं (क,ग,घ,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स'[1] निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[2] छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे 'एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स'[3] निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[4] छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥

सत्तमं पाहुडं

१. ता के ते सूरियं वरयति[5] आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरयति आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु— ता मेरु णं पव्वए सूरियं वरयति आहितेति वएज्जा— एगे एवमाहंसु २ एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव[6] पव्वयराए णं पव्वए सूरियं वरयति आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २०

वयं पुण एवं वदामो—ता मंदिरेवि पवुच्चइ तहेव जाव पव्वयराएवि पवुच्चइ ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला सूरियं वरयंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति, चरमलेसंतरगतावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ॥

---

१. दो भाए ओयाए दोहिं राइंदिएहिं रातिखेत्तस्स (ट,व)।
२. अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं मंडलं (ट,व)।
३. एगमेगं भागं ओयाए एगमेगेणं राइंदिएणं रातिखेत्तस्स (ट,व)।
४. अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं मंडलं (ट,व)।
५. वरति (ट,व)।
६. सू ५।१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं पाहुडं

१. ता कहं ते उदयसंठिती आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु--ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उतरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एवं परिहावेतव्वं सोलसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ते दिवसे जाव ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं सदा[1] पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सदा पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, अवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु--ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, एवं परिहावेतव्वं--सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णो सदा पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सदा पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, अणवट्ठिता णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता[2] राती

१. सता (ग,घ,ट,व)।   २. बारसमुहुत्ता (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति, ता जया णं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता[1] राती भवति, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता[2] राती भवति। 'एवं णेतव्वं सगलेहि य अणंतरेहि य एक्केक्के दो दो आलावगा[3] सव्वेहिं दुवालसमुहुत्ता राती भवति जाव'[4] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता जया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, वोच्छिण्णा णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो! एगे एवमाहंसु ३।

वयं पुण एवं वदामो ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[5] पाईण-दाहिणमागच्छंति पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति पडीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण-पाईणमागच्छंति, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि[6] दिवसे भवइ। जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमे णवि दिवसे भवइ। ता जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं राती भवति। ता जया णं दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ। ता जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे णवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ। ता जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एवं एएणं गमेणं णेतव्वं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगदुवालसमुहुत्ता राती भवति, सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तेरसमुहुत्ता राती भवति, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राती भवति, सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चोद्दसमुहुत्ता राती भवति, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगचोद्दसमुहुत्ता राती भवति, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगपण्णरसमुहुत्ता राती

१,२. बारसमुहुत्ता (ग,घ)।

३. आलावका (क,ग,घ)।

४. एवं सत्तरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे सोलसमुहुत्ते सोलसमुहुत्ताणंतरे पणरसमुहुत्ते पणरसमुहुत्ताणंतरे चउदसमुहुत्ते चउदसमुहुत्ताणंतरे तेरसमुहुत्ते तेरसमुहुत्ताणंतरे बारसमुहुत्ते बारसमुहुत्ताणंतरे (ट,व)।

५. °मुग्गच्छंति (क,ग,घ,ट,व) सर्वत्र।

६. उत्तरड्ढे (क,ग,घ,ट,व) द्वयोरपि वृत्त्योः 'उत्तरार्धेपि' इति व्याख्यातमस्ति। भगवत्या (५।४) मपि 'उत्तरड्ढे वि' इति पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति, चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सोलसमुहुत्ता राती भवति, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगसोलसमुहुत्ता राती भवति, तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सत्तरसमुहुत्ता राती भवति, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगसत्तरसमुहुत्ता राती भवति, 'जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति। एवं भणितव्वं'[१]। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे कालसमयंसि[२] वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं पच्चत्थिमे णवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति जया णं पच्चत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स उत्तरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि[३] वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवइ। जहा समओ एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे उडू[४]। एते[५] दस आलावगा[६] जहा[७] वासाणं,[८] एवं हेमंताणं गिम्हाणं च भाणियव्वा। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं दाहिणड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे कालसमयंसि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं पच्चत्थिमे णवि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं पच्चत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि पढमे अयणे 'पडिवण्णे भवइ'[९]। 'जहा अयणे तहा संवच्छरे जुगे वाससए'[१०] वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे एवं जाव[११] सीसपहेलिया पलिओवमे

---

१. ता जया णं जंबूद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ता रातीभवति तता णं उत्तरड्ढे जहण्णं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति। जया णं उत्तरड्ढे जहण्णए दुवालस दिवसे तता णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राति भवति। ता जया णं जंबूद्दीवमंदरपुरत्थिमे णं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं पच्चत्थिमे णं वि जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति। जया णं पच्चत्थिमे णं जहण्णं दुवाल-समुहुत्ते दिवसे तता णं जंबूद्दीवे दीवे मदरस्स उत्तरे णं दाहिणे णं उक्कोस अट्ठारसमुहुत्ता राति भवति॥ (ट,व)।

२. समयंसि (भ० ५।१३)।

३. अणंतरपच्छाकयकालसमयंसि (ग,घ); अणं-तरपच्छाकडसमयंसि (ट)।

४. उडुए (ट,व)।

५. एवं (ग,घ); ए (ट,व)।

६. आलावका (क,ग,घ)।

७. जधा (क,ग,घ)।

८. तासा णं (ग,घ)।

९. पडिवज्जति (क,ग,घ)।

१०. जहा अयणे तधा संवच्छरे जुगे वाससते एवं (क,ग,घ); एवं संवच्छरे जुगे वाससए (ट,व)।

११. भ० ५।१८ 'ट, व' आदर्शयोः एष पाठः साक्षाल्लिखितो दृश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सागरोवमे। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमा[1] ओसप्पिणी पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति, ता जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णेवत्थि ओसप्पिणी णेव अत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिते णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो! एवं उस्सप्पिणीवि। ता[2] लवणे णं समुद्दे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ तहेव[3]। ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणसमुद्दे उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति। जहा[4] जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव उस्सप्पिणी। तहा धायइसंडे णं दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ तहेव। ता जया णं धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति। एवं जंबुद्दीवे दीवे जहा तहेव जाव उस्सप्पिणी। कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेव। ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ तहेव। ता जया णं अब्भंतरपुक्खरद्धे णं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति, सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ॥

---

१. सूर्यप्रज्ञप्तेः 'क,ग,घ' संकेतितादर्शेषु एतत् पदं नैव लभ्यते। द्वयोरपि वृत्त्योरेतत्पदं नास्ति व्याख्यातम्। किन्तु तयोरुद्धृते आलापकपाठे एतत्पदं दृश्यते, भगवत्या (५।१९) मपि एतत्पदं विद्यते, 'पढमे समए' इति प्रस्तुते क्रमेऽपि अपेक्षितमस्ति, तेनात्र एतन्मूले स्वीकृतम्।

२. अतः परं 'ट,व' आदर्शयोः संक्षिप्तपाठो विद्यते—एवं लवणसमुद्दे धातीसंडे कालोए ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति पातीणदाहिणमागच्छंति एवं जंबुद्दीवं वत्तव्वता।

३. 'तहेव' त्ति यथा जम्बूद्वीपे उद्गमविषये आलापक उक्तः तथा लवणसमुद्रेपि वक्तव्यः, स चैवम्—'लवणे णं सूरिया उईणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपाईणमागच्छंति, दाहिणपाईणमुग्गच्छ पाईणउईणमागच्छंति पाईणउईणमुग्गच्छ उईणपाईणमागच्छंति,' इदं च सूत्रं जम्बूद्वीपगतोद्गमसूत्रवत् स्वयं परिभावनीयं, नवरमत्र सूर्याश्चत्वारो वेदितव्याः (सूवृ)।

४. यथा जम्बूद्वीपे द्वीपे 'पुरच्छिमपच्चच्छिमे णं राई भवइ' इत्यादिकं सूत्रमुक्तं यावदुत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिण्यालापकस्तथा लवणसमुद्रेप्यन्यूनातिरिक्तं समस्तं भणितव्यं, नवरं जम्बूद्वीपे द्वीपे इत्यस्य स्थाने लवणसमुद्रे इति वक्तव्यमिति शेषः (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं पाहुडं

१. ता कतिकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते—एगे एवामहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला णो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंतीति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला अत्थेगतिया संतप्पंति अत्थेगतिया णो संतप्पंति, तत्थ अत्थेगतिया संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगतियाइं संतावेंति अत्थेगतियाइं णो संतावेंति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते—एगे एवमाहंसु ३।

वयं पुण एवं वदामो—ता जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहिया[1] अभिणिस्सढाओ पतावेंति, एतासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति, तए णं ताओ छिण्णलेसाओ संमुच्छियाओ समाणीओ तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते ॥

२. ता कतिकट्ठे ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वएज्जा २ एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, ता जाओ चेव ओयसंठितीए पणवीसं पडिवत्तीओ ताओ चेव णेयव्वाओ जाव[2] अणुओसप्पिणिउस्सप्पिणिमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहिताति वदेज्जा—एगे एवमाहंसु २५।

वयं पुण एवं वयामो—ता सूरियस्स णं उच्चत्तं च लेसं च पडुच्च छाउद्देसे, उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे, लेसं च छयं च पडुच्च उच्चत्तुद्देसे, तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं[3] दिवसंसि सूरिए

---

१. बहिता (क,ग,घ,व)।
२. सू० ६।१
३. च णं (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति २ तत्थ जेते एवमाहंसु ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं[1] णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं[2] णिव्वत्तेति ते एवमाहंसु, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति,तं जहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य[3] अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तं जहा उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवुड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे १ तत्थ णं जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तं जहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, णो चेव णं लेसं अभिवड्ढेमाणे वा णिवुड्ढेमाणे वा २ ॥

३. ता कतिकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ छण्णउतिं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति[4]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ २ एवं एएणं अभिलावेणं णेतव्वं जाव छण्णउतिं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति। तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहीओ[5] बहिया अभिणिस्सढाहिं[6] लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावतियं सूरिए

१. चउपोरिसियं छायं (क,ग,घ)।
२. दो पोरिसियं छायं (क,ग,घ)।
३. या (क,ग,घ) अग्रेऽपि।
४. निव्वत्तति आहितेति वएज्जा (ट,व)।
५. सूरिपडिहाओ (ट)।
६. अभिणिसडाहिं (क,घ,ट,)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाए एगाए अद्धाए एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेणं ओमाए[1], 'एत्थ णं'[2] से सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति १ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहीओ बहिया अभिणिस्सिताहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं ओमाए, एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति २ एवं[3] एक्केक्काए पडिवत्तीए णेयव्वं[4] जाव छण्णउतिमा पडिवत्ती—एगे एवमाहंसु ६६ ।

वयं[5] पुण एवं वदामो[6]—ता सातिरेगअउणट्ठिपोरिसीणं[7] सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति, ता अवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता तिभागे गते वा सेसे वा, ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता चउब्भागे गते वा सेसे वा, ता दिवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता पंचमभागे गते वा सेसे वा, एवं अद्धपोरिसिं छोढुं-छोढुं पुच्छा दिवसस्स भागं छोढुं-छोढुं वागरणं जाव[8] ता अद्धअउणट्ठिपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता एगूणवीससतभागे गते वा सेसे वा, ता अउणट्ठिपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता बावीस-सहस्सभागे गते वा सेसे वा, ता सातिरेगअउणट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता णत्थि किंचि गते वा सेसे वा ।।

४. तत्थ खलु इमा पणवीसतिविधा छाया पण्णत्ता, तं जहा खंभच्छाया रज्जुच्छाया पागारच्छाया पासादच्छाया उवग्गच्छाया उच्चत्तच्छाया अणुलोमच्छाया पडिलोमच्छाया आरुभिता उवहिता समा पडिहता खीलच्छाया पक्खच्छाया[9] पुरओउदग्ग[1] पिट्ठओउदग्गा[10]

---

१. इमाए (ट,व) ।

२. तत्थ (क,ग,घ) ।

३. असौ स्वीकृतः पाठः द्वयोरपि वृत्योर्व्याख्यातोस्ति तथा चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितादर्शयोरपि लभ्यते, सूर्यप्रज्ञप्तेरादर्शेषु किञ्चिद् विस्तृतः पाठो दृश्यते—एवं णेयव्वं जाव तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए छण्णउतिपोरिसियछायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहिया अभिणिस्सडाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाहिं छण्णवतीए अद्धाहिं छायाणुमाणप्पमाणाहिं ओमाए, एत्थ णं से सूरिए छण्णउतिं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति—एगे एवमाहंसु ।

४. भाणियव्वं (ट,व) ।

५. वतं (व) ।

६. वतामो (व) ।

७. °अणुगट्ठि° (ट) ।

८. 'दिवसभागं' ति पूर्वपूर्वसूत्रापेक्षया एकैकमधिकं दिवसभागं क्षिप्त्वा-क्षिप्त्वा व्याकरणं—उत्तरसूत्रं ज्ञातव्यं, तच्चैवम्—'बिपोरिसी णं छाया किं गए वा सेसे वा ? ता छब्भागगए वा सेसे वा, ता अड्ढाईपोरिसी णं छाया किं गए वा सेसे वा ? ता सत्तभागगए वा सेसे वा' इत्यादि, एतच्च एतावत् तावत् यावत् 'ता अगुणट्ठी' इत्यादि सुगमम् (सूवृ) ।

९. पंथच्छाया (ट); पंकच्छाया (व) ।

१०. पिट्ठिउग्गा (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिमकंठभाओवगता पच्छिमकंठभाओवगता छायाणुवादिणी कंठाणुवादिणी छाया छायच्छाया छायाविकंपे[1] वेहासकडच्छाया गोलच्छाया ॥

५. तत्थ खलु इमा अट्ठविहा गोलच्छाया पण्णत्ता, तं जहा—गोलच्छाया अवड्ढ-गोलच्छाया गोलगोलच्छाया अवड्ढगोलगोलच्छाया गोलावलिच्छाया अवड्ढगोलावलिच्छाया गोलपुंजच्छाया अवड्ढगोलपुंजच्छाया ॥

१. × (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं पाहुडं

पढमं पाहुडपाहुडं

१. ता जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहितेति वदेज्जा, ता कहं ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा[1] पण्णत्ता[2]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु ता सव्वेवि णं णक्खत्ता महादिया अस्सेसपज्जवसाणा[3] पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु ता सव्वेवि णं णक्खत्ता धणिट्ठादिया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अस्सिणीआदिया रेवइपज्जवसाणा पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ५।

वयं पुण एवं वदामो—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिईआदिया उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तं जहा—अभिई सवणो जाव[4] उत्तरासाढा॥

बीयं पाहुडपाहुडं

२. ता कहं ते मुहुत्तग्गे आहितेति वदेज्जा? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसे मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जे णं णव-मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति? कयरे णक्खत्ता

---

१. °पज्जवसिया (ट,व) सर्वत्र।

२. × (क,ग,घ); आहितेति वदेज्जा (ट,व) सर्वत्र।

३. असिलेस° (ट)।

४. चन्द्रप्रज्ञप्तेरादर्शयोः 'ट,व' संकेतितयोः पूर्णः पाठोपि लभ्यते—अभीयी समणो धणिट्ठा सतविसता पुव्वभद्दवता उत्तराभद्दवता रेवति अस्सिणि भरणि कित्तिया रोहिणि मिगसिरं अद्दा पुणव्वसो पुसो असिलेस मघा पुव्वफग्गुणि उत्तराफग्गुणि हत्थो चित्ता साति विसाहा अणुराधा जिट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जेसे णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति से णं एगे अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—सतभिसया[1] भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तं जहा—सवणे[2] धणिट्ठा पुव्वाभद्दवया रेवती अस्सिणी कत्तिया मिगसिरं[3] पुस्सो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा-- उत्तराभद्दपदा[4] रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥

३. ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण[5] सद्धिं जोयं जोएति। अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते दुवालस[6] य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति ? कयरे णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जेसे णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति से णं एगे[7] अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—सतभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तं जहा—सवणो धणिट्ठा पुव्वाभद्दवया रेवती अस्सिणी कत्तिया मिगसिरं पूसो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—उत्तराभद्दवया[8] रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥

तच्चं पाहुडपाहुडं

४. ता कहं ते एवंभागा आहितातिं वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[9] पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता। अत्थि

१. सतभिसता (ट,व)।
२. समणो (ग,घ)।
३. महरिर (ग,घ)।
४. उत्तराभद्दपादा (ग); उत्तरभद्दवया (ट); उत्तराभद्दपता (व)।
५. सूरिएण (ट,व) सर्वत्र।
६. बारस (क,ग,घ)।
७. × (क,ग,घ)।
८. उत्तराभद्दवता (क,ग,घ,ट,व)।
९. × (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[१] पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता। अत्थि णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[२] णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता। अत्थि णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[३] उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसइमुहुत्ता पण्णत्ता। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[४] पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमहुत्ता पण्णत्ता ? कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[५] पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ? कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[६] णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता ? कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[७] उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसइमुहुत्ता पण्णत्ता। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ते णं छ, तं जहा—पुव्वापोट्ठवया कत्तिया महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ते णं दस, तं जहा—अभिई सवणो[८] धणिट्ठा रेवती अस्सिणी मिगसिर[९] पूसो हत्थो चित्ता अणुराहा। तत्थ जेते णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता ते णं छ, तं जहा— सतभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ते णं छ, तं जहा—उत्तराभद्दवया[१०] रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥

चउत्थं पाहुडपाहुडं

५. ता कहं ते जोगस्स आदी आहितेति[११] वदेज्जा ? ता अभीई-सवणा खलु दुवे णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता सातिरेगऊतालीसइमुहुत्ता[१२] तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धि जोयं जोएंति, ततो पच्छा अवरं सातिरेगं दिवसं—एवं खलु अभिई-सवणा दुवे णक्खत्ता एगं रातिं एगं च सातिरेगं दिवसं चंदेण सद्धि जोयं जोएंति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टंति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पेंति। ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धि जोयं जोएति, जोएत्ता ततो पच्छा रातिं अवरं च दिवसं—एवं खलु धणिट्ठा णक्खत्ते एगं रातिं एगं च दिवसं चंदेण सद्धि जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सतभिसयाणं[१३] समप्पेति। ता सतभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं[१४] चंदेण सद्धि जोयं जोएति, णो लभति अवरं दिवसं—एवं खलु सतभिसया णक्खत्ते एगं रातिं चंदेण सद्धि जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं पुव्वाणं पोट्ठवयाणं समप्पेति। ता पुव्वापोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेण सद्धि जोयं जोएति, तओ पच्छा अवरं रातिं—एवं खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते एगं दिवसं एगं च रातिं चंदेण सद्धि जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो

१-७. × (क,ग,घ)।
८. समणो (ग,घ,व); सवणे (ट)।
९. मिगसिरासिरं (ग,घ); मगसिरं (ट)।
१०. उत्तरापोट्ठवता (क,ग,घ)।
११. आहितातिं (क,ग,घ)।
१२. °उणतालीसइ° (ट,व)।
१३. सततिसयाणं (घ); सतभिसताणं (ट); सतविसताणं (व)।
१४. सागं (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदं उत्तराणं पोट्ठवयाणं समप्पेति। ता उत्तरापोट्ठवया खलु णक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढक्खेत्ते पणयालीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, अवरं च रातिं ततो पच्छा अवरं दिवसं--एवं खलु उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते दो दिवसे एगं च रातिं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं रेवतीणं समप्पेति। ता[1] रेवती खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा अवरं दिवसं--एवं खलु रेवती णक्खत्ते एगं रातिं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टिता सायं चंदं अस्सिणीणं समप्पेति। ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ततो पच्छा अवरं दिवसं—एवं खलु अस्सिणी णक्खत्ते एगं रातिं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं भरणीणं समप्पेति। ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, णो लभति अवरं दिवसं--एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं रातिं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं कत्तियाणं समप्पेति। ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो[2] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा रातिं--एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते एगं दिवसं एगं च रातिं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं रोहिणीणं समप्पेति। रोहिणी जहा उत्तरभद्दवया। मिगसिरं जहा धणिट्ठा। अद्दा[3] जहा सतभिसया। पुणव्वसू जहा उत्तरभद्दवया। पुस्सो जहा धणिट्ठा। अस्सेसा जहा सतभिसया। मघा जहा पुव्वाफग्गुणी। पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया। उत्तराफग्गुणी जहा उत्तरभद्दवया। हत्थो चित्ता य जहा धणिट्ठा। साती जहा सतभिसया। विसाहा जहा उत्तरभद्दवया। अणुराहा जहा धणिट्ठा। जेट्ठा जहा सतभिसया। मूलो पुव्वासाढा य जहा पुव्वभद्दवया। उत्तरासाढा जहा उत्तरभद्दवया॥

पंचमं पाहुडपाहुडं

६. ता कहं ते कुला आहितातिं वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता। बारस कुला तं जहा—धणिट्ठा कुलं उत्तराभद्दवया[4] कुलं

---

१. अतः 'व' प्रतौ भिन्नावाचना लभ्यते—तथा देवा रेवति खलु णक्खत्ते पच्छंभागे सम जहा धणिट्ठा जाव भागं चंदं अस्सिणी णं समप्पेति, भरणी खलु णक्खत्ते णंतरं भागे अवड्ढ जहा सतविसता जाव पादो चंदं कतिताणी समप्पेति, एवं जहा पुव्वाभद्दवता तहा पुव्वंभागा छप्पि णेयव्वा, जहा धणिट्ठा तहा 'पच्छंभागा' अट्ठ णेयव्वा जाव एवं खलु उत्तरासाढा दो दिवसे एगं च रातिं ग चंदेण सद्धिं जोगं जोएति जोगं २ अणुपरियट्टंति जोगं २ अतिति समणं समप्पेति।

२. सायं (क); सागं (च,व)।

३. अतः 'ट' प्रतौ भिन्न वाचना लभ्यते—एवं जहा सतभिसया तहा नत्तंभागा णेयव्वा, जहा पुव्वाभद्दवया तहा पुव्वंभागा छप्पि नेयव्वा, जहा धणिट्ठा तहा पच्छाभागा नेयव्वा, अभिति समणं समप्पिति।

४. उत्तरापोट्ठवता (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्सिणी कुलं कत्तिया कुलं संठाणा[1] कुलं पुस्सो कुलं महा कुलं उत्तराफग्गुणी कुलं चित्ता कुलं विसाहा कुलं मूलो कुलं उत्तरासाढा कुलं। बारस उवकुला, तं जहा– सवणो उवकुलं पुव्वभद्दवया[2] उवकुलं रेवती उवकुलं भरणी उवकुलं रोहिणी उवकुलं पुण्णवसू उवकुलं अस्सेसा उवकुलं पुव्वाफग्गुणी उवकुलं हत्थो उवकुलं साती उवकुलं जेट्ठा उवकुलं पुव्वासाढा उवकुलं। चत्तारि कुलोवकुला, तं जहा—अभीई कुलोवकुलं सतभिसया कुलोवकुलं अद्दा कुलोवकुलं अणुराहा कुलोवकुलं ॥

छट्ठं पाहुडपाहुडं

७. ता कहं ते पुण्णिमासिणी[3] आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ 'बारस पुण्णिमासिणीओ बारस अमावासाओ'[4] पण्णत्ताओ, तं जहा— साविट्ठी पोट्ठवली आसोई[5] कत्तिया मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेत्ती वइसाही[6] जेट्ठामूली आसाढी ॥

८. ता साविट्ठिणं पुण्णिमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— अभिई सवणो धणिट्ठा ॥

९. ता पोट्ठवतिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—सतभिसया[7] पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया ॥

१०. ता आसोइण्णं[8] पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— रेवती अस्सिणी य ॥

११. ता कत्तियण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—भरणी कत्तिया य ॥

१२. ता 'मग्गसिरण्णं पुण्णिमं'[9] कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा –रोहिणी मिगसिरो[10] य।

१३. ता पोसिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अद्दा पुण्णवसू पुस्सो ॥

१४. ता माहिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अस्सेसा महा य ॥

१५. ता फग्गुणिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य ॥

१६. ता चेत्तिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा –हत्थो चित्ता य ॥

१७. ता वइसाहिण्णं[11] पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति,

---

१. मिगसिरं (ट,व)।
२. पुव्वपुट्ठवता (क,ग,घ)।
३. पुणमासी (ट,व)।
४. दुवालस अमावसातो दुवालस पुण्णिमातो (व)।
५. अस्सोती (घ)।
६. विसाही (क,ग,घ,ट,व)।
७. सततिसया (ग,घ); सतविसया (व)।
८. अस्सोदिण्णं (ग,घ)।
९. मग्गसिरी पुण्णिमं (क,ग,घ)।
१०. मग्गसिरो (ग,घ)।
११. विसाहिण्णं (ग,घ); विसाहि (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा—साती विसाहा य ॥

१८. ता जेट्ठामलिण्णं पुण्णिमासिणिं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अणुराहा जेट्ठा मूलो ॥

१९. ता आसाढिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दो णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—पुव्वासाढा उत्तरासाढा ॥

२०. ता साविट्ठिण्णं पुण्णिमासिणिं किं कुलं जोएति ? उवकुलं वा जोएति ? कुलोवकुलं वा[1] जोएति ? ता कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति। कुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे सवणे[2] णक्खत्ते जोएति, कुलोवकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएति। साविट्ठिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति। कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ॥

२१. ता पोट्ठवतिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएति ? उवकुलं जोएति ? कुलोवकुलं वा जोएति ? ता कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति। कुलं जोएमाणे उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएति, कुलोवकुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएति। पोट्ठवतिण्णं पुण्णमासिणिं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवती पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ॥

२२. ता आसोइण्णं[3] पुण्णिमासिणिं किं कुलं जोएति ? 'उवकुलं वा जोएति ? कुलोवकुलं वा जोएति ?'[4] ता कुलंपि जोएति, उवकुलंपि जोएति, णो लभति कुलोवकुलं। कुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे रेवती णक्खत्ते जोएति। आसोइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति। कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता आसोई णं पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया। 'एवं णेयव्वाओ—पोसिं पुण्णिमं जेट्ठामूलिं पुण्णिमं च कुलोवकुलंपि जोएति, अवसेसासु णत्थि कुलोवकुलं'[5] 'जाव आसाढी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया'[6] ॥

२३. ता[7] सविट्ठिण्णं अमावासं[8] कति णक्खत्ता जोएति ? ता दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अस्सेसा[9] महा य। एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं पोट्ठवतिं[10] दो णक्खत्ता जोएंति,

---

१. × (क,ग,घ)।
२. समणे (ट,व)।
३. आसोदिण्णं (क,ग,घ.ट); अस्सोहण्णं (व)।
४. पुच्छा (व)।
५. एवं एएणं अभिलावेणं पोसपुण्णिमाए जेट्ठमूल-पुण्णिमाए य कुलोवकुलं भाणियव्वा सेसा कुलोवकुला णत्थि (ट,व)।
६. × (क,ग,घ)।
७. अतः पूर्वं 'टव' प्रत्योः एतावान् अतिरिक्तः पाठो विद्यते—दुवालस अमावसाओ (अवामंसातो—व) पं तं साविट्ठि पोट्ठवति जाव आसाढी। वृत्तिद्वयेपि एष पाठो व्याख्यातोस्ति, किन्तु प्रस्तुतप्राभृतप्राभृतस्य प्रारम्भसूत्रे 'बारस अमावासाओ' इति पाठो विद्यते, तेनात्र नासौ मूले स्वीकृतः।
८. अमावसं (ग,घ); अवामंसं (ट) सर्वत्र।
९. अस्सिलेसा (ट)।
१०. पोट्ठवतं (ग,घ,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी । अस्सोइं[1] हत्थो चित्ता य । कत्तियं साती विसाहा य । मग्गसिरिं अणुराधा जेट्ठा मूलो । पोसिं पुव्वासाढा उत्तरासाढा । माहिं अभीई सवणो[2] धणिट्ठा । 'फग्गुणि सतभिसया पुव्वापोट्ठवया । चेत्तिं उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी य'[3] ।

१. अतः 'ट,व' प्रत्योः किञ्चिद्विस्तृतः पाठो लभ्यते ।

२. समणो (व) ।

३. फग्गुणि सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया । चेत्ति रेवती अस्सिणी य (क,ग,घ); फगुणी दोण्णि तं जहा सतभिसता पुव्वाभद्दवया य । चेत्ति तिण्णि तं जहा उत्तरभद्दवया रेवती असणि य (ट,सूवृ.चंवृ); चन्द्रप्रज्ञप्तेः सूर्यप्रज्ञप्तेश्च वृत्त्योराधारेण पाठः स्वीकृतोस्ति । सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति (पत्र १२५, १२६) —'ता फग्गुणीं णं अमावासं कइ नक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि नक्खत्ता जोएंति, तंजहा—सयभिसया पुव्वभद्दवया य । एतदपि व्यवहारतो, निश्चयतः पुनरमूनि त्रीणि नक्षत्राणि फाल्गुनीममावास्यां परिसमापयन्ति, तद्यथा—धनिष्ठा शतभिषक् पूर्वभद्रपदा च, तत्र प्रथमां फाल्गुनीममावास्यां पूर्वभद्रपदानक्षत्रं षट्सु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्यैकत्रिंशति द्वाषष्टिभागेषु एकस्य च द्वाषष्टिभागस्य नवसु सप्तषष्टिभागेषु गतेषु । ६।३१।६, द्वितीयां फाल्गुनीममावस्यां धनिष्ठानक्षत्रं विंशतौ मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य चतुर्षु द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य द्वाविंशतौ सप्तषष्टिभागेषु व्यतिक्रान्तेषु २०।४,२२, तृतीया फाल्गुनीममावास्यां पूर्वाषाढानक्षत्रं चतुर्दशसु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य चतुश्चत्वारिंशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य षट्त्रिंशति सप्तषष्टिभागेषु गतेषु १४।४४।३६, चतुर्थी फाल्गुनीममावास्यां शतभिषक् नक्षत्रं त्रिषु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य सप्तदशसु द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य एकोनपञ्चाशति सप्तषष्टिभागेषु गतेषु ३।१७।४६, पञ्चमीं फाल्गुनीममावास्यां धनिष्ठानक्षत्रं षट्सु मुहूर्त्तेषु एकस्य च मुहूर्त्तस्य द्विपञ्चाशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य सप्तकेषु द्वाषष्टौ सप्तषष्टिभागेषु गतेषु ६।५२।६२ । परिणमयति ।

'ता चित्तिन्नं अमावासं कइ नक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि नक्खत्ता जोएंति, तंजहा—उत्तरभद्दवया रेवई अस्सिणी य' एतदपि व्यवहारतो, निश्चयतः पुनरमूनि त्रीणि नक्षत्राणि चैत्रीममावस्यां परिसमापयन्ति, तद्यथा—पूर्वभद्रपदा उत्तरभद्रपदा रेवती च, तत्र प्रथमां चैत्रीममावास्यामुत्तरभद्रपदानक्षत्रं सप्तविंशतौ मुहूर्त्तेष्कवेस्य च मुहूर्त्तस्य षट्त्रिंशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य दशसु सप्तषष्टिभागेषु गतेषु २३।३६।१०, द्वितीयां चैत्रीममावास्यामुत्तरभद्रपदानक्षत्रमेकादशसु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य नवसु द्वाषष्टिभागेषु एकस्य च द्वाषष्टिभागस्य त्रयोविंशतौ सप्तषष्टिभागेषु गतेषु ११।६।२३, तृतीयां चैत्रीममावास्यां रेवतीनक्षत्रं पञ्चसु मुहूर्त्तेषु एकस्य च मुहूर्त्तस्यैकोनपञ्चाशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य सप्तत्रिंशति सप्तषष्ठिभागेष्वतिक्रान्तेषु ५।४६।३७, चतुर्थी चैत्रीममावास्यामुत्तरभद्रपदानक्षत्रं त्रयोविंशतौ मुहूर्त्तेषु एकस्य च मुहूर्त्तस्य द्वाविंशतौ द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य पञ्चाशति सप्तषष्टिभागेषु गतेषु २३।२२।५०, पञ्चमी चैत्रीममावास्यां पूर्वभद्रपदानक्षत्रं सप्तविंशतौ मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य सप्तपञ्चाशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य त्रिषष्टौ सप्तषष्टिभागेष्वतिक्रान्तेषु २७।५७।६३ परिसमापयति ।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि (७।१४६) स्वीकृतपाठाद्

वइसाहिं[1] भरणी कत्तिया य । जेट्ठामूलिं रोहिणी मिगसिरं च ।।

२४. ता आसाढिण्णं अमावासिं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा· अद्दा पुणव्वसू पुस्सो ।।

२५. ता सावट्ठिण्णं अमावासं किं कुलं जोएति ? 'उवकुलं वा जोएति ? कुलोवकुलं वा जोएति'[2] ? ता कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, णो लभति कुलोवकुलं । कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे 'अस्सेसा णक्खत्ते'[3] जोएति, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्ताति वत्तव्वं सिया । एवं णेतव्वं, णवरं— मग्गसिरीए माहीए फग्गुणीए आसाढीए य 'अमावासाए कुलोवकुलंपि जोएति, सेसेसु णत्थि'[4] ।।

सत्तमं पाहुडपाहुडं

२६. ता कहं ते सण्णिवाते आहितेति वदेज्जा ? ता जया[5] णं साविट्ठी पुण्णिमा भवति तया[6] णं माही अमावासा[7] भवति, जया णं माही पुण्णिमा भवइ तया णं साविट्ठी अमावासा भवइ, जया णं पोट्ठवती पुण्णिमा भवति तया णं फग्गुणी अमावासा भवति, जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवति तया णं पोट्ठवती अमावासा भवति, जया[8] णं आसोई पुण्णिमा भवति तया णं चेत्ती अमावासा भवति, जया णं चेत्ती पुण्णिमा भवति तया णं आसोई[9] अमावासा भवति, जया[10] णं कत्तिई पुण्णिमा भवति तया णं वइसाही अमावासा भवति, जया णं वइसाही पुण्णिमा भवति तया णं कत्तिई अमावासा भवति, जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवति तया णं जेट्ठामूली अमावासा भवति, जया णं जेट्ठामूली पुण्णिमा भवति तया णं मग्गसिरी अमावासा भवति, जया णं पोसी पुण्णिमा भवति तया णं आसाढी अमावासा भवति, जया णं आसाढी पुण्णिमा भवति तया णं पोसी अमावासा भवति ।।

अट्ठमं पाहुडपाहुडं

२७. ता कहं ते णक्खत्तसंठिती आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता गोसीसावलिसंठिते पण्णत्ते ।।

भिन्ना वाचना दृश्यते—फग्गुणिण्णं तिण्णि— सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया । चेतिण्णं दो—रेवई अस्सिणी य ।

१. वेसाहिं (क); विसाहिं (ग,घ) ।

२. पुच्छा (व) ।

३. अस्सिलेसाणक्खत्ते (व) ।

४. अमावसाए कुलोवकुलं भाणियव्वं, सेसाणं कुलोवकुलं णत्थि जाव कुलोवकुलेण वा जुत्ता आसाढी अमावसं(अवामंसा—व) जुत्ताति वत्तव्वं सिया (ट,व); कुलोपकुलं भणितव्यं, शेषाणां स्वमावस्यानां कुलोपकुलं नास्ति, तेन न वक्तव्यम् (चंवृ) ।

५. जता (क,ग,घ,व) ।

६. तता (क,ग,घ,ट,व) ।

७. अवमंसा (ग,घ,व) सर्वत्र ।

८. अतः 'व' प्रतौ सङ्क्षिप्तः पाठो विद्यते—एवं एएणं अभिलावेणं आसोईए चेतीए य कत्तिइए वतिसाहीए य, मग्गसिरीए जेट्ठामूले य ।

९. अस्सोइ (ट) ।

१०. अतः 'ट' प्रतौ संक्षिप्तः पाठो विद्यते—एवं कत्तिय वतिसाहियाए य मगसिरीए जेट्ठामूलीए य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. ता सवणे[1] णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता काहारसंठिते पण्णत्ते ।।
२९. ता[2] धणिट्ठा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता सउणिपलीणगसंठिते पण्णत्ते ।।
३० ता सतभिसया णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता पुप्फोवयारसंठिते पण्णत्ते ।।
३१. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता अवड्ढवाविसंठिते पण्णत्ते ।।
३२. एवं उत्तरावि ।।
३३. ता रेवती णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता णावासंठिते पण्णत्ते ।।
३४. ता अस्सिणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता आसक्खंधसंठिते पण्णत्ते ।।
३५. ता भरणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता भगसंठिते पण्णत्ते ।।
३६. ता कत्तिया णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता छुरघरगसंठिते पण्णत्ते ।।
३७. ता रोहिणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता सगडुद्धिसंठिते पण्णत्ते ।।
३८. ता मिगसिरा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता मगसीसावलिसंठिते पण्णत्ते ।।
३९. ता अद्दा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता रुहिरबिंदुसंठिते पण्णत्ते ।।
४०. ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता तुलासंठिते पण्णत्ते ।।
४१. ता पुस्से णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता वद्धमाणगसंठिते पण्णत्ते ।।
४२. ता अस्सेसा[3] णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता पडागसंठिते पण्णत्ते ।।
४३. ता महा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता पागारसंठिते पण्णत्ते ।
४४. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता अद्धपलियंकसंठिते पण्णत्ते ।।
४५. एवं उत्तरावि ।।
४६. ता हत्थे णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता हत्थसंठिते पण्णत्ते ।।
४७. ता चित्ता णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता मुहफुल्लसंठिते पण्णत्ते ।।
४८. ता साती णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता खीलगसंठिते पण्णत्ते ।।
४९. विसाहा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता दामणिसंठिते पण्णत्ते ।।
५०. ता अणुराधा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता एगावलिसंठिते पण्णत्ते ।।
५१. ता जेट्ठा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता गयदंतसंठिते पण्णत्ते ।।
५२. ता मूले णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता विच्छुयनंगोलसंठिते[4] पण्णत्ते ।।
५३. ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता गयविक्कमसंठिते पण्णत्ते ।।
५४. ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता सीहणीसाइसंठिते पण्णत्ते ।।

नवमं पाहुडपाहुडं

५५. ता कहं ते तारग्गे आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई[5] णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता तितारे पण्णत्ते ।।

---

१. समणे (व) ।
२. 'ट,व' प्रत्योः अतः परं संक्षिप्तः पाठो विद्यते यथा—'धणिट्ठाणक्खत्ते सउणिपलीणगसंठिते, सयभिसयाणक्खत्ते पुप्फोवयारसंठिते' एवं सर्वत्र ।
३. असिलेसा (व) ।
४. विच्छुयलंगोल° (ग,घ,ट,व) ।
५. 'ट,व' प्रत्योः अतः परं संक्षिप्तपाठो विद्यते, यथा—'अभीयीणक्खत्ते तितारे प सवणे णक्खत्ते तितारे प धणिट्ठा पंचतारे प सयभि-

५६. ता सवणे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता तितारे पण्णत्ते ॥

५७. ता धणिट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता पणतारे पण्णत्ते ॥

५८. ता सतभिसया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता सततारे[1] पण्णत्ते ॥

५९. ता पुव्वापोट्ठवता णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता दुतारे पण्णत्ते ॥

६०. एवं उत्तरावि ॥

६१. ता रेवती णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता बत्तीसतितारे पण्णत्ते ॥

६२. ता अस्सिणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता तितारे पण्णत्ते। एवं सव्वे पुच्छिज्जंति -भरणी तितारे पण्णत्ते, कत्तिया छत्तारे पण्णत्ते, रोहिणी पंचतारे पण्णत्ते, संठाणा[2] तितारे पण्णत्ते, अद्दा एगतारे पण्णत्ते, पुणव्वसू पंचतारे पण्णत्ते, पुस्से तितारे पण्णत्ते, अस्सेसा छतारे पण्णत्ते, मघा सत्ततारे पण्णत्ते, पुव्वाफग्गुणी दुतारे पण्णत्ते, एवं उत्तरावि, हत्थे पंचतारे पण्णत्ते, चित्ता एगतारे पण्णत्ते, साती एगतारे पण्णत्ते, विसाहा पंचतारे पण्णत्ते, अणुराहा चउतारे[3] पण्णत्ते, जेट्ठा तितारे पण्णत्ते, मूले एगतारे पण्णत्ते, पुव्वासाढा चउतारे पण्णत्ते, उत्तरासाढा चउतारे पण्णत्ते ॥

दसम पाहुडपाहुडं

६३. ता कहं ते णेता आहितेति वदेज्जा ? ता वासाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा--उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा। उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अभिई सत्त अहोरत्ते णेति, सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेति, धणिट्ठा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं[4] चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

६४. ता वासाणं दोच्चं[5] मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—धणिट्ठा सतभिसता पुव्वपोट्ठवया[6] उत्तरपोट्ठवया[7]। धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते

सया दसतारे प पुव्वभद्दवया दुतारे प उत्तरभद्दवया दुतारे प रेवती बत्तीसतारे प' एवं सर्वत्र।

१. चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट' प्रतौ 'दसतारे' इति पाठो विद्यते 'व' प्रतौ एष पाठः त्रुटितोस्ति। चन्द्रप्रज्ञप्तेवृत्तौ उद्धृतायां जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिगाथायामपि 'दस' इति पदस्य उल्लेखोस्ति। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।१३१) 'पंचेक्कसय' इति पाठो लभ्यते, समवायाङ्गे (१००।२) पि शतसंवादी पाठो लभ्यते—'सयभिसयाणक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते'।

२. मिगसिरे (ट,व)।

३. पंचतारे (ग,घ)।

४ पादाइं (ग,घ); पयाणि (ट)।

५. बितियं (ट)।

६. पुव्वभद्दवया (ट)।

७. उत्तरभद्दवया (ट); अतः परं 'ट' प्रतौ संक्षिप्तपाठो लभ्यते—एवं एएणं अभिलावेणं जहेव जंबुदीवपण्णत्तीए तहेव एत्थपि भाणियव्वं जाव तेसि च णं मासंसि वट्टीए समचउरंससंठियाए। णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीयाए च्छायाए सूरिय अणुपरियट्टति। तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे लेहट्ठाति दोपयाति पोरसी भवति। चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव संक्षिप्तपाठो व्याख्यातोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेति, सतभिसता सत्त अहोरत्ते णेति, पुव्वपोट्ठवया[1] अट्ठ अहोरत्ते णेति, उत्तरपोट्ठवया एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

६५. ता वासाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति, ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा— उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी। उत्तरापोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेति, रेवती पण्णरस अहोरत्ते णेति, अस्सिणी एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुल-पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पदाइं पोरिसी भवति ॥

६६. ता वासाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा अस्सिणी भरणी कत्तिया। अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेति, भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेति, कत्तिया एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

६७. ता हेमंताणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा। कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेति, रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेति, संठाणा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

६८. ता हेमंताणं दोच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो। संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अद्दा सत्त[2] अहोरत्ते णेति, पुणव्वसू अट्ठ[3] अहोरत्ते णेति, पुस्से एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि चउवीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं[4] चत्तारि पदाइं पोरिसी भवति ॥

६९. ता हेमंताणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा पुस्से अस्सेसा महा। पुस्से चोद्दस अहोरत्ते णेति, अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेति, महा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

७०. ता हेमंताणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी। महा चोद्दस अहोरत्ते णेति, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेति, उत्तराफग्गुणी एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि सोलसं-गुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

---

१. पुव्वाभद्दवया (क,ग,घ)।
२. अट्ठ (जं० ७।१६१)।
३. सत्त (जं० ७।१६१)
४. लेहट्ठाणि (क,ग,ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१. ता गिम्हाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा— उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता। उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेति, हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेति, चित्ता एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पदाइं पोरिसी भवति॥

७२. ता गिम्हाणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—चित्ता साती विसाहा। चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेति, साती पण्णरस अहोरत्ते णेति, विसाहा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति॥

७३. ता गिम्हाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो। विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अणुराहा सत्त[1] अहोरत्ते णेति, जेट्ठा अट्ठ[2] अहोरत्ते णेति, मूलो एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाणि चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति॥

७४. ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा। मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेति, पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेति, उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठिताए णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पदाइं पोरिसी भवति॥

एक्कारसमं पाहुडपाहुडं

७५. ता कहं ते चंदमग्गा आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ? तहेव जाव कयरे णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं जे णं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—संठाणा अद्दा पुस्सो अस्सेसा हत्थो मूलो। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा—अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी भरणी पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी साती। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ते णं सत्त, तं जहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोएस्संति वा। तत्थ जेसे णक्खत्ते

१. अट्ठ (जं० ७।१६६)। २. सत्त (जं० ७।१६६)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति सा णं एगा जेट्ठा ॥

७६. ता कति ते चंदमंडला पण्णत्ता[1] ? ता पण्णरस चंदमंडला पण्णत्ता[2] ॥

७७. ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया। अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया। अत्थि चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति। अत्थि चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया। ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया जाव कयरे चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ? ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थ जेते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ते णं अट्ठ, तं जहा— पढमे चंदमंडले ततिए चंदमंडले छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले एक्कारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले। तत्थ जेते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया ते णं सत्त, तं जहा— बितिए चंदमंडले चउत्थे चंदमंडले पंचमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले बारसमे चंदमंडले तेरसमे चंदमंडले चउद्दसमे चंदमंडले। तत्थ जेते चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ते णं चत्तारि, तं जहा— पढमे चंदमंडले बीए चंदमंडले इक्कारसमे[3] चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले। तत्थ जेते चंदमंडला जे णं सया 'आदिच्चेहिं विरहिया'[4] ते णं पंच, तं जहा—छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले ॥

बारसमं पाहुडपाहुडं

७८. ता कहं ते देवयाणं अज्झयणा आहितातिं[5] वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता बम्हदेवयाए[6] पण्णत्ते ॥

७९. ता[7] सवणे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता विण्हुदेवयाए पण्णत्ते ॥

८०. ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता वसुदेवयाए पण्णत्ते ॥

८१. ता सतभिसया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता वरुणदेवयाए पण्णत्ते ॥

८२. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता अयदेवयाए पण्णत्ते ॥

८३. ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता अभिवड्ढिदेवयाए पण्णत्ते। एवं सव्वेवि पुच्छिज्जंति—रेवती पुस्सदेवयाए[8], अस्सिणी अस्सदेवयाए, भरणी जमदेवयाए, कत्तिया अग्गिदेवयाए, रोहिणी पयावइदेवयाए, संठाणा सोमदेवयाए, अद्दा रुद्ददेवयाए, पुणव्वसू अदितिदेवयाए, पुस्सो बहस्सइदेवयाए, अस्सेसा सप्पदेवयाए, महा पिइदेवयाए[9], पुव्वाफग्गुणी भगदेवयाए, उत्तराफग्गुणी अज्जमदेवयाए, हत्थे सवियादेवयाए[10], चित्ता

१,२. आहिताति वदेज्जा (ट,व)।
३. इग्यारसमे (ट)।
४. आदिच्चविरहिया (ग,घ,ट); आतिच्चेहिं विरहिया (व)।
५. अभिहिताति (व)।
६. बंभ° (क,ग,घ)।
७. अत: 'ट,व' प्रत्यो: संङ्क्षिप्तपाठो लभ्यते, यथा—समणे ण विण्हदेवताए पण्णत्ते एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते विस्सदेवताए पण्णत्ते।
८. पूसदेवयाए (क)।
९. पिऊ (जं० ७।१२९)।
१०. सवितिदेवयाए (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तट्ठदेवयाए, साती वायुदेवयाए, विसाहा इंदग्गिदेवयाए, अणुराहा मित्तदेवयाए, जेट्ठा इंददेवयाए, मूले णिरइदेवयाए, पुव्वासाढा आउदेवयाए, उत्तरासाढा विस्सदेवयाए पण्णत्ते ।।

तेरसमं पाहुडपाहुडं

८४. ता कहं ते मुहुत्ताणं नामधेज्जा आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा –

गाहा–
रोद्दे सेते मित्ते, वाउ सुपीए[1] तहेव अभिचंदे ।
माहिंद[2] बलव[3] बंभे[4], बहुसच्चे चेव ईसाणे ।।१।।
तट्ठे[5] य भावियप्पा, वेसमणे बारुणे[6] य आणंदे ।
विजए य वीससेणे[7], पायावच्चे चेव उवसमे[8] ।।२।।
गंधव्व अग्गिवेसे, सयरिसहे आयवं च अममे य ।
अणवं च भोमे रिसहे, सव्वट्ठे[9] रक्खसे चेव ।।३।।

चउद्दसमं पाहुडपाहुडं

८५. ता कहं ते दिवसा[10] आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तं जहा– पडिवादिवसे बितियादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे ।।

८६. ता एतेसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता तं जहा—

गाहा—
पुव्वंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो मणोहरे[11] चेव ।
जसभद्दे य जसोधरे सव्वकामसमिद्धे[12] ।।२।।
इंदमुद्धाभिसित्ते य , सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे ।
अत्थसिद्धे अभिजाते, अच्चसणे[13] य सयंजए[14] ।।२।।
अग्गिवेसे उवसमे, दिवसाणं णामधेज्जाइं ।।३।।

८७. ता कहं ते रातीओ आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस रातीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पडिवाराती बितियाराती[15] जाव पण्णरसीराती ।।

---

१. सुठिए (ट); सुट्ठीजे (द); स्थपीति (चवृ) ।
२. माहिंदे (ट,व) ।
३. बलवं (ट,व); पलंवे (सम० ३०।३) ।
४. पम्हे (ट); नवमः पक्ष्मः (चवृ); अतः परं समवायांगे (३०।३) नाम्नां व्यत्ययो भेदश्च दृश्यते—सच्चे आणंदे विजए वीससेणे वायावच्चे उवसमे ईसाणे तिट्ठे भावियप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवं आवधं तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ।
५. त्वष्टा (चवृ) ।
६. वावरे (ट); अपरः (चवृ) ।
७. विजयसेणे (ट) ; विजयसेनः (चवृ) ।
८. ववसमे (क) ।
९. सत्यवान् (चवृ) ।
१०. दिवसाणं णामधेज्जा (ट); दिवसानां नामधेयानि व्याख्यातानीति वदेत् (चवृ) ।
११. मणरहः (चवृ) ।
१२. सव्वकामसमिद्धेति (ग,घ,ट,व); छट्ठे सव्वकामसमिद्धे (जं० ७।११७) ।
१३. अच्चासणे (ग,घ,ट,त्र) ।
१४. सयंजए चेव (जं० ७।११७) ।
१५. बिदियाराई (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८८. ता एतासि णं पण्णरसण्हं रातीणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा— उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोधरा ।
सोमणसा चेव तहा, सिरिसंभूया य बोद्धव्वा ॥१॥
विजया य वेजयंति, जयंति अपराजिया य इच्छा य ।
समाहारा चेव तहा, तेया य तहा य अतितेया[1] ॥२॥
देवाणंदा राती[2], रयणीणं णामधेज्जाइं ॥३॥

पण्णरसमं पाहुडपाहुडं

८९. ता कहं ते तिही आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमा 'दुविहा तिही'[3] पण्णत्ता, तं जहा दिवसतिही य रातीतिही य ॥

९०. ता कहं ते दिवसतिही आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस-पण्णरस दिवसतिही पण्णत्ता, तं जहा णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पंचमी, पुणरवि—णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी, पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पण्णरसी । एवं एते[4] तिगुणा तिहीओ सव्वेसि दिवसाणं ॥

९१. ता कहं ते रातीतिही आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस-पण्णरस रातीतिही पण्णत्ता, तं जहा उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, पुणरवि—उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, पुणरवि—उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा । एवं[5] एते तिगुणा तिहीओ सव्वासि रातीणं ॥

सोलसमं पाहुडपाहुडं

९२. ता कहं ते गोत्ता आहिताति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९३. ता सवणे[6] णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता संखायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९४. ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता अग्गभावसगोत्ते[7] पण्णत्ते ॥

९५. ता सतभिसया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कण्णिलायणसगोत्ते[8] पण्णत्ते ॥

९६. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता जाउकण्णियसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९७. ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता धणंजयसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९८. ता रेवती णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता पुस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९९. ता अस्सिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता अस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१००. ता भरणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता भग्गवेससगोत्ते पण्णत्ते ॥

---

१. अभितेया (ग,घ,ब) ।

२. णिरती (ग,घ,ट); णिरिती (ब); निरतीति पंचदश्या एव द्वितीयं नाम (जं० ही़वृ) ।

३. दुविधा तिधी (क) ।

४. 'एते' इति स्त्रीत्वेपि प्राप्ते पुंस्त्वनिर्देशः प्राकृतत्वात् (सूवृ) ।

५. × (क,ग,घ,ट,ब) ।

६. समणे (ग,घ,ब); अतः 'ट,ब' प्रत्योः संक्षिप्त-पाठो लभ्यते-यथा—'सवणे णक्खत्ते संखायण-गोत्ते धणिट्ठा अग्गिवेसायणगोत्ते पण्णत्ते' एवं सर्वत्र ।

७. अग्गताव° (ग,घ); अग्गिवेसायण° (ट) ।

८. कत्तेलायण° (ग,घ); कंडिल्लायण° (ट,ब); कण्णिल्ले (जं० ७।१३२) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०१. ता कत्तिया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता अग्गिवेससगोत्ते[1] पण्णत्ते ॥
१०२. ता रोहिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता गोयमसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०३. ता संठाणा[2] णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता भारद्दायसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०४. ता अद्दा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता लोहिच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०५. ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता वासिट्ठसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०६. ता पुस्से णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता ओमज्जायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०७. ता अस्सेसा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता मंडव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०८. ता महा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता पिंगायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१०९. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता गोवल्लायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
११०. ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कासवसगोत्ते पण्णत्ते ॥
१११. ता हत्थे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कोसियसगोत्ते पण्णत्ते ॥
११२. ता चित्ता णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता दब्भियायणसगोत्ते[3] पण्णत्ते ॥
११३. ता साती णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता चामरच्छायणसगोत्ते[4] पण्णत्ते ॥
११४. ता विसाहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता सुंगायणसगोत्ते[5] पण्णत्ते ॥
११५. ता अणुराहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता गोलव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
११६. ता जेट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता तिगिच्छायणसगोत्ते[6] पण्णत्ते ॥
११७. ता मूले णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
११८. ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता वज्झियायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥
११९. ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता वग्घावच्चसगोत्ते पण्णत्ते ॥

सत्तरसमं पाहुडपाहुडं

१२०. ता कहं ते भोयणा आहिताहि वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधेति । रोहिणीहिं वसभमंसं[7] भोच्चा कज्जं साधेति । संठाणाहिं[8] मिगमंसं[9] भोच्चा कज्जं साधेति । अद्दाहिं णवणीतेण भोच्चा कज्जं साधेति । पुणव्वसुणा घतेण भोच्चा कज्जं साधेति । पुस्सेण खीरेण भोच्चा कज्जं साधेति । अस्सेसाहिं[10] दीवगमंसं[11] भोच्चा कज्जं साधेति । महाहिं कसरिं[12] भोच्चा कज्जं साधेति । पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेंढकमंसं[13] भोच्चा कज्जं साधेति । उत्तराहिं फग्गुणीहिं णखीमंसं[14] भोच्चा कज्जं साधेति । हत्थेणं वच्छाणीएण[15] भोच्चा कज्जं साधेति । चित्ताहिं मुग्गसूवेणं

---

१. अग्गिवेसायण° (ट,व) ।
२. मगसिरं (ग,ट,व) ।
३. दभियाण° (ग,व); दभियण° (ट); दब्भिय° (व); दब्भा (जं० ७।१३२) ।
४. चामरच्छगोत्ते (क,ग,घ) ।
५. अंगायण° (ट,व) ।
६. तिगिच्छायण° (क,ग,घ) ।
७ वसभमंसेणं (ट,व) ।
८. मिगसिरेणं (ट,व) ।
९. मिगमंसेणं (ट,व) ।
१०. असिलेसाहिं (ट,व) ।
११. दीवगमंसेणं (ट,व) ।
१२. कसोरि (ट); कासारी (व) ।
१३. मेंढगमंसेणं (ट) ।
१४. नखीमसं (क); णखीमंसेणं (ट,व) ।
१५. वच्छाणी (पण्ण० १।४०) एका वल्ली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोच्चा कज्जं साधेति । सादिणा[1] फलाइं भोच्चा कज्जं साधेति । विसाहाहिं आसित्तियाओ[2] [अगत्थियाओ ?] भोच्चा कज्जं साधेति । अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेति । जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साधेति । मूलेणं मूलापण्णेणं[3] भोच्चा कज्जं साधेति । पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलगसारिएणं[4] भोच्चा कज्जं साधेति । उत्तराहिं आसाढाहिं बिल्लेहिं[5] भोच्चा कज्जं साधेति । अभीइणा पुप्फेहिं[6] भोच्चा कज्जं साधेति । सवणेणं[7] खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेति । धणिट्ठाहिं जूसेणं भोच्चा कज्जं साधेति । सतभिसयाए तुवरीओ[8] भोच्चा कज्जं साधेति । पुव्वाहिं पोट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्जं साधेति । उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं वराहमंसं भोच्चा कज्जं साधेति । रेवतीहिं जलयरमंसं भोच्चा कज्जं साधेति । अस्सिणीहिं तित्तिरमंसं भोच्चा कज्जं साधेति 'अहवा वट्टगमंसं'[9] । भरणीहिं तिलतंदुलगं भोच्चा कज्जं साधेति ॥

अट्ठारसमं पाहुडपाहुडं

१२१. ता कहं ते चारा आहितांति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे[10] दुविहा चारा पण्णत्ता, तं जहा आदिच्चचारा य चंदचारा य ॥

१२२. ता कहं ते चंदचारा आहितांति वदेज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभीई णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, सवणे[11] णं णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति । एवं जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ॥

१२३. ता कहं ते आदिच्चचारा आहितांति वदेज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभीई णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति । एवं जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति ॥

एगूणवीसइमं पाहुडपाहुडं

१२४. ता कहं ते मासा आहितांति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पण्णत्ता । तेसिं च दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा लोइया लोउत्तरिया य । तत्थ लोइया णामा 'इमे, तं जहा'[12]-- सावणे भद्दवते अस्सोए[13] कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चित्ते वइसाहे जेट्ठामूले आसाढे । लोउत्तरिया णामा 'इमे, तं जहा'[14]---

१. सातिणा (ट); सातीहिं (व) ।
२. आत्तसियाओ (क); आतिसियाओ (ट); आसत्तिय (व) ।
३. मूलागसाएणं (ट) ।
४. आमलगसरीणेणं (ग,घ) ।
५. विलेवीओ (क); विलेवी (ग,घ) ।
६. पुप्फति (ट,व) ।
७. समणेणं (व) ।
८. तुवरातो (ट) ।
९. × (ग,घ) ।
१०. इमा (क,ग,घ) ।
११. समणे (ग,घ,व) ।
१२. × (क,ग,घ,ट,व) ।
१३. चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'व' संकेतितायां प्रतौ पूर्णः पाठो विद्यते, स मूले स्वीकृतः अन्यादर्शेषु 'अस्सोए जाव आसाढे' इति संक्षिप्त पाठोऽस्ति ।
१४. × (क,ग,घ,ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा— अभिणंदे[1] सुपइट्ठे[2] य, विजए पीतिवद्धण ।
सेज्जंसे य सिवे यावि, 'सिसिरेवि य हेमवं'[3] ॥१॥
णवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे ।
एकादसमे णिदाहे, वणविरोही य बारसे ॥२॥

वीसइमं पाहुडपाहुडं

१२५. ता कति णं संवच्छरा आहिताति वदेज्जा ? ता पंच संवच्छरा आहिताति वदेज्जा, तं जहा—णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छर-संवच्छरे ॥

१२६. ता णक्खत्तसंवच्छरे णं कतिविहे पण्णत्ते ? ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सावणे भद्दवए जाव[4] आसाढे । जं वा बहस्सतीमहग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेति ॥

१२७. ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव । ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता, तच्चस्स णं अभिवड्ढितसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । पंचमस्स णं अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसते भवतीति मक्खायं[5] ॥

१२८. ता पमाणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णक्खत्ते चंदे उडू[6] आइच्चे अभिवड्ढिते ॥

१२९. ता लक्खणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—'णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिते । ता णक्खत्तसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा'[7]—

गाहा— समगं णक्खत्ता जोयं, जोएंति समगं उडू[8] परिणमंति ।
णच्चुण्हं णातिसीते, बहूदओ होति णक्खत्ते ॥१॥

---

१. आभिणादिते (क); अभिणदे (ग,घ); आभिणंदे (ट); आभिणादिता (ब); द्रष्टव्यं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः ७।११४ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम् ।

२. सुपइट्ठिते (क); सुपइट्ठिय (ग,घ); पतिट्ठो (ब) ।

३. सिसिरे य सहेमवं (क,व, जं० ७।११४) ।

४. सू० १०।१२४ ।

५. समक्खातं (ग,घ) ।

६. उऊ (ट,ब) ।

७. ता णक्खत्ते णं संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तं जहा (क); णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभि-वड्ढिते । ता णक्खत्ते णं संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते (ग,घ); नक्खत्ते चंदे उदू आइच्चे अभिवड्ढिते । ता नक्खत्तसंवच्छरस्स पंचविहं लक्खणं पण्णत्तं तं (ट); × (ब); स्थानाङ्गे (५।२१३) जंबूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।११२) च चिह्नाङ्कितः पाठो नोपलभ्यते ।

८. उऊ (ट,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससि[1] समग[2] पुण्णिमासिं, जोएंति[3] विसमचारिणक्खत्ता[4] ।
कडुओ बहूदओ य, तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥
विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं ।
वासं न सम्म वासति, तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥
पुढविदगाणं च रसं, पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे ।
अप्पेणवि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सस्सं[5] ॥४॥
आइच्चतेयतविया, खणलवदिवसा उडू परिणमंति ।
'पूरेंति णिण्णथलए'[6] तमाहु अभिवड्ढियं जाण ॥५॥

१३०. ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—अभीई सवणे[7] जाव उत्तरासाढा । जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ ॥

एक्कवीसइमं पाहुडपाहुडं

१३१. ता कहं ते 'जोतिसस्स दारा'[8] आहिताति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ । तत्थेगे एवमाहंसु—ता कत्तियादिया[9] णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता महादिया[10] णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता अस्सिणीयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता भरणीयादिया

---

१. 'ससि' त्ति विभक्तिलोपात् शशिना ।
२. समग (ठा० ५।२१३) ।
३. जोएइ (ट,व, ठा० ५।२१३) ।
४. °णक्खत्ते (ठा० ५।२१३) ।
५. सासं (ट) ।
६. पुरेति य थलियाइं (ग,घ); पूरेइ य थलाति (ट,व); पूरेति रेणुथलयाइं (ठा० ५।२१३) ।
७. समणा (ग,घ,व) ।
८. जोतिसिदार (ट) ।
९. कत्तियादी (क,ग,घ) ।
१०. द्वयोरपिवृत्त्योः 'एके पुनरेवमाहुः—अनुराधादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारकाणि प्रज्ञप्तानि' इति व्याख्यातमस्ति, अनेन ज्ञायते वृत्तिकारस्य सम्मुखे अनुराधादिनक्षत्रविषयकपाठ एव आसीत् । इदानीन्तनेषु आदर्शेषु मघादिनक्षत्रविषयकः पाठः उपलभ्यते । स्थानाङ्गवृत्ता (पत्र ३६३) वपि अभयदेवसूरिणा एष एव पाठः उल्लिखितः—इह चार्थे पञ्च मतानि सन्ति, यत आह चन्द्रप्रज्ञप्त्याम्—'तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पन्नत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—कत्तियाइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता एवमन्ये मघादीन्यपरे धनिष्ठादीनि इतरेऽश्विन्यादीनि अपरे भरण्यादीनि, दक्षिणापरोत्तरद्वाराणि च सप्त-सप्त यथामतं क्रमेणैव समवसेयानीति, वयं पुण एवं वयामो—अभियाइया णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता', एवं दक्षिणद्वारिकादीन्यपि क्रमेणैवेति, तदिह षष्ठं मतमाश्रित्य सूत्राणि प्रवृत्तानि । 'क' सङ्केतितादर्शे 'मघादिविषयकपाठानन्तरं अनुराधा विषयकः पाठोऽपि लिखितोऽस्ति । एतेन ज्ञायते अस्मिन् विषये वाचनाद्वयमासीत् । प्रस्तुतप्रतौ द्वयोरपि वाचनयोः सम्मिश्रणं कृतं लिपिकारेण । वृत्त्योः 'तत्थ जेते एवमाहंसु' इत्यालापकेषु अनुराधादिनक्षत्राणां स्पष्टीकरणपाठो नोपलभ्यते, तेन आदर्शानुसारी पाठ एव स्वीकृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता– एगे एवमाहंसु ५।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता कत्तियादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—कत्तिया रोहिणी 'संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा'[1]। महादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा– महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा । अणुराधादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया[2] पण्णत्ता, तं जहा अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो। धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा- धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी भरणी।

तत्थ जेते एवमाहंसु -ता महादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा- महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा । अणुराधादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—अणुराधा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणे। धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा -धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी भरणी । कत्तियादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा- -कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा -धणिट्ठा सतभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवती अस्सिणी भरणी। कत्तियादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा। महादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा। अणुराधादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा-- अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभीई सवणो।

तत्थ जेते एवमाहंसु --ता अस्सिणीयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा -अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू । पुस्सादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा-- पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता । सातियादिया[3] णं सत्त णक्खत्ता, पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा—साती विसाहा अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा। अभीईयादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवती।

तत्थ जेते एवमाहंसु ता भरणीयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा -भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो। अस्सेसादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा -अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती। विसाहादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं

१. जाव अस्सिलेसा (ट,व)।

२. अवरदारिया (ट,व) सर्वत्र।

३. सादीयादीया (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा---विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई। सवणादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा--सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी--एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वदामो ता अभिईयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, तं जहा---अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती। अस्सि-णीयादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा---अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू। पुस्सादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा--पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता। सातिया-दिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा---साती विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा॥

बावीसइमं पाहुडपाहुडं

१३२. ता कहं ते णक्खत्तविजए आहितेति वदेज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[1] परिक्खेवेणं। ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, तं जहा--दो अभीई दो सवणा[2] दो धणिट्ठा दो सतभिसया दो पुव्वापोट्ठवया दो उत्तरापोट्ठवया दो रेवती दो अस्सिणी दो भरणी दो कत्तिया दो रोहिणी दो संठाणा दो अद्दा दो पुणव्वसू दो पुस्सा दो अस्सेसाओ दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो उत्तराफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो साती दो विसाहा दो अणुराधा दो जेट्ठा दो मूला दो पुव्वासाढा दो उत्तरासाढा॥

१३३. ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं--अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्ता-वीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति? 'कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति? कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति'[3]? कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति? ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा--दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती दो जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तं जहा--दो सवणा दो धणिट्ठा दो पुव्वाभद्दवया दो रेवती दो अस्सिणी दो कत्तिया दो संठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराहा दो मूला दो

---

१. सू० १।१४।

२. दो समणा जाव दो उत्तरासाढा (व)।

३. जाव (ट,व)।

पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा— दो उत्तरापोट्ठवया दो रोहिणी दो पुणव्वसू दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा ॥

१३४. ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति। ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं। ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा— दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती दो जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तं जहा— दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा— दो उत्तरापोट्ठवया जाव दो उत्तरासाढा ॥

१३५. ता कहं ते सीमाविक्खंभे आहितेति वदेज्जा? ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं— अत्थि णक्खत्ता जेसि णं छ सता तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो। अत्थि णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं[1] सीमाविक्खंभो। अत्थि णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो। अत्थि णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो। ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेसि णं छ सत्ता तीसा तं चेव उच्चारेतव्वं[2]। कयरे णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो? ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं छ सता तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं दो अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं जहा— दो सतभिसया जाव[3] दो जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं तीसं, तं जहा— दो सवणा जाव[4] दो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं जहा— दो उत्तरापोट्ठवया जाव[5] दो उत्तरासाढा ॥

---

१. सत्तसट्ठिभागा° (ट)।
२. उच्चारेतव्वं जाव (ट)।
३. सू० १०।१३३।
४. सू० १०।१३३।
५. सू० १०।१३३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३६. ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—किं सया[1] पातो[2] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति[3] ? किं सया सायं[4] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ? किं सया दुहओ पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ? ता एतेसि णं छप्पण्णाए 'णक्खत्ताणं किमपि तं जं'[5] सया पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। णो सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। णो सया दुहओ पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। 'णण्णत्थ दोहिं अभीईहिं'[6]। 'ता एतेणं'[7] दो अभीई 'पायंचिय-पायंचिय'[8] 'चोत्तालीसं-चोत्तालीसं'[9] अमावासं[10] जोएंति, णो चेव णं पुण्णिमासिणिं॥

१३७. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ[11] पण्णत्ताओ॥

१३८. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ[12] पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ[13] मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति॥

१३९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ[14] पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ[15] मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति॥

१४०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति॥

१४१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दोण्णि अट्ठासीए भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे

---

१. सता (क,ग,घ)।
२. पादो (ग,घ,व)।
३. जोएंति (क)।
४. साग (ग,घ)।
५. णक्खत्ता णो (क,ग,घ,ट,व)।
६. ण णत्थि रातिंदियाणं वुड्ढोवुड्ढीए मुहुत्ताणं च चयोवचयेणं णण्णत्थ वा दोहिं अभिया (ट)।
७. 'ता एतेसि ण' मित्यादि ता इति तत्र—तेषां षट्पञ्चाशतो नक्षत्राणां मध्ये एते (सूवृ, चंवृ)।
८. पायं पायं (क), आअं चित्ता आअं चित्ता (व)।
९. चोतालीसतिमं चोतालीसतिमं (व)।
१०. अमावसं (क,ट); अवामंसं (ग,घ,व)।
११. अमावसाओ (क,ट); अवामंसातो (ग,घ,व)।
१२. ता एते णं (क); ता तेणं (ग,घ); ताद्धो (व)।
१३. °ट्ठाणाते (ग,घ)।
१४. ता तेणं (क); ता एते णं (ट); ता एते (व) प्रायः सर्वत्र।
१५. °ट्ठाणाते (क,ग,व) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएति। एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ-ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं-दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं पुण्णिमासिणिं चंदे जोएति ॥

१४२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे[1] उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं पच्चत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमा-सिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं[2] सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दो चउणवतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४५. ता[3] एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएति। एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ-ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं-चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं पुण्णिमासिणिं सूरे जोएति ॥

१४७. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागे[4] वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता[5] तिहिं भागेहिं

१. चउभागे (क,ग,घ,ट,व); असौ पाठः 'सप्तविंशतिभागानुपादाय' इति वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः।

२. पुणपुच्छा (ट) सर्वत्र।

३. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ट,व' प्रत्योः पाठसंक्षेपो विद्यते एवं तच्चपि णवरं दोच्चातो।

४. अट्ठावीसइमं भागं (ग,घ,ट,व)।

५. उवादिणावेत्ता (क,ग,घ); उवातिणावेत्ता (ट,व)।

दोहि य कलाहि दाहिणिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति।

१४८. ता[1] एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं[2] चंदे कंसि देसंसि जोएति? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमबावट्ठिं अमावासं जोएति ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएति। एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिताओ तेणेव[3] अभिलावेणं अमावासाओवि भणितव्वाओ, तं जहा[4]- बिइया तइया दुवालसमी। एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ-ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं-दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अमावासं चंदे जोएति॥

१४९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएति? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ-ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सोलसभागे ओसक्कइत्ता[5], एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति॥

१५०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएति? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे पढमं अमावासं जोएति। एवं जेणेव अभिलावेणं सूरस्स पुण्णिमासिणीओ भणियाओ तेणेव अभिलावेण अमावासाओवि भणितव्वाओ, तं जहा--बिइया[6] तइया दुवालसमी। एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं-चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अमावासं सूरे जोएति॥

१५१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं पुच्छा। ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सत्तालीसं भागे ओसक्कइत्ता, एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति॥

१५२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति? ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एगूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं

---

१. 'ट' प्रतौ अत्र एव संक्षिप्तपाठो विद्यते-- एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णमासिणीया भणिया तेणं चेव अभिलावेणं अमावसातोवि भाणियव्वाओ तं पढमा बितिया दुवालसमा। चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि संक्षिप्तपाठो व्याख्यातोऽस्ति --चन्द्रविषयमतिदेशमाह---एवमित्यादि एवं येनाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्य उक्तास्तेनैवाभिलापेनामावस्याऽपि वक्तव्यास्तद्यथा— प्रथमा द्वितीया द्वादशी।

२. अमावसं (क); अवामंसं (ग,घ,व) प्रायः सर्वत्र।

३. तेणं चेव (व)।

४. तं जहा---पढमा (क,व); अनयोरादर्शयोः प्रथमं सूत्रं पूर्वं लिखितमस्ति, ते न 'पढमा' इति पदं अतिरिक्तं विद्यते।

५. ओसक्कावइत्ता (क,ग,घ)।

६. बिदिया (क,ग,घ); बितिया (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुव्वाफग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुबत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं, उत्तराणं पोट्ठवयाणं सत्तावीसं मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता एक्कतीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य एगट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठि चुण्णिया भागा सेसा । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छव्वीसं[1] मुहुत्ता छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ[2] य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुस्सेणं, पुस्सस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५७. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्के मुहुत्ते चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा । तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सेसाहिं[3] चेव, अस्सेसाणं[4] एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५८. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा । तं समयं च

१. छदुवीसं (ग,घ) ।
२. अट्ठा (व) ।
३. असिलेसाहिं (ट) ।
४. असिलेसाणं (ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं जहेव[1] चंदस्स ॥

१५९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता हत्थेणं, हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता हत्थेणं चेव, हत्थस्स जहा[2] चंदस्स ॥

१६०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अद्दाहिं, अद्दाणं चत्तारि मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अद्दाहिं चेव, अद्दाणं जहा[3] चंदस्स ॥

१६१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता बायालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स णं जहा[4] चंदस्स ॥

१६२. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं अट्ठ एगूणवीसाइं मुहुत्तसयाइं चउव्वीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं सरिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अण्णंसि देसंसि ॥

१६३. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं सोलस अट्ठतीसे मुहुत्तसयाइं अउणापण्णं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णिया भागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अण्णंसि देसंसि ॥

१६४. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं 'चउप्पण्णं मुहुत्तासहस्साइं'[5] णव य मुहुत्तसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६५. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमं एगं मुहुत्तासयसहस्सं अट्ठाणउतिं च मुहुत्तसताइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं

१. यथा चंद्रस्य विषये उक्तं तथैवात्रापि विषये वक्तव्यं तद्यथा—चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ते पण्णट्ठि चुण्णिया भागा सेसा (सूवृ)।

२. स चैवम्—हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं चेव बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता बावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा (सूवृ)।

३. स चैवम्—अद्दाए चत्तारि मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चउपण्णं चुण्णिया भागा सेसा (सूवृ)।

४. स चैवम्—'पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता छायालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा (सूवृ)।

५. चउप्पण्णमुहुत्तसहस्साइं (क,ग,घ,ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयं जोएंति तंसि देसंसि ॥

१६६. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे[1] अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६७. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति तंसि देसंसि, से णं इमाइं सत्तदुवतीसं[2] राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६८. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं अट्ठारस वीसाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से[3] सूरे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६९. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१७०. ता जया[4] णं इमे चंदे गतिसमावण्णए भवइ तया[5] णं इयरेवि चंदे गतिसमावण्णए भवइ, जया णं इयरे चंदे गतिसमावण्णए भवइ तया णं इमेवि चंदे गतिसमावण्णए भवइ ॥

१७१. ता जया णं इमे सूरिए गतिसमावण्णे भवइ तया णं इयरेवि सूरिए गतिसमावण्णे भवइ, जया णं इयरे सूरिए गतिसमावण्णे भवइ तया णं इमेवि सूरिए गतिसमावण्णे भवइ। एवं गहेवि णक्खत्तेवि ॥

१७२. ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इयरेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ, जया णं इयरे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इमेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ। 'एवं सूरेवि गहेवि णक्खत्तेवि'[6] ॥

१७३. सयावि[7] णं चंदा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं, सयावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं, सयावि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं। दुहतोवि णं चंदा जुत्ता जोगेहिं, दुहतोवि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं, दुहतोवि णं गहा जुत्ता जोगेहिं, दुहतोवि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं। मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउयाए सएहिं छेत्ता। इच्चेस णक्खत्ते खेत्तपरिभागे णक्खत्तविजए पाहुडे[8] आहितेत्ति बेमि ॥

---

१. सूरिए (क,ग,घ,ट)।
२. सत्तदुवत्तीसं (क); सत्तदुवत्तीसं (ग,घ); सत्तदूवत्तीसं (ट); सत्तदुपतीसा (व)।
३. × (ग,घ)।
४. जता (ग,घ)।
५. तता (ग,घ)।
६. जहा चंदे एवं सूरेवि गहे णक्खत्ते भाणितव्वे (व)।
७. सतावि (क,ग,घ,व); सदावि (ट)।
८. पाहुडेति (ग,घ,ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कारसमं पाहुडं

१. ता कहं ते संवच्छराणादी[1] आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते ॥

२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंद-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ॥

ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ॥

तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा ।

तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥

३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ॥

ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी, से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

तं समयं च णं सूरे केणं[2] णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा ॥

४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहि-

१. संवच्छराणाई (क); संवच्छराणाती (व) । २. के पुच्छा (ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेति वदेज्जा ? ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं तच्चस्स अभिवड्ढित-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ।
ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।
तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं तेरस मुहुत्ता तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा ।
तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता छप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ॥

५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं चउत्थस्स चंद-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ।
ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं चरिमस्स[1] अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी, से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।
तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं ऊतालीसं मुहुत्ता चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउ-दस[2] चुण्णिया भागा सेसा ।
तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता एक्कवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सीतालीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥

६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहि-तेति वदेज्जा ? ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पंचमस्स अभिवड्ढित-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ।
ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।
तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ।
तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुस्सेणं, पुस्सस्स णं एक्कवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥

---

१. पंचमस्स (ट) । २. सीयालीसं (ट); सीतालसं (व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसमं पाहुडं

१. ता कति णं संवच्छरा आहितति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा णक्खत्ते चंदे उडू आदिच्चे अभिवड्ढिते ॥

२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स णक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता सत्तावीसं राइंदियाइं एक्कवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताणं[1] सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस[2] णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसतं एक्कावण्णं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पण्णं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसतिमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठपंचासते मुहुत्ते तेत्तीसं च छावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा चंदे संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं छच्च पणवीसे[3] मुहुत्तसते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसतिमुहुत्तेणं

---

१. × (क,ट,व) ।
२. एतेसि (ग,घ,ट,व) ।
३. पणुवीसं (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा उडू संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि सट्ठे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आदिच्चे मासे तीसतिमुहुत्तेणं[1] अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तीसं राइंदियाइं अवड्ढभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा आदिच्चे संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तस्स सहस्साइं णव असीते मुहुत्तसते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स अभिवड्ढिते मासे तीसतिमुहुत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कतीसं राइंदियाइं एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसते सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा अभिवड्ढितसंवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि तेसीते राइंदियसते एक्कवीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कारस मुहुत्तसहस्साइं पंच य एक्कारस मुहुत्तसते अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

७. ता केवतियं ते नोजुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता सत्तरस एक्काणउते राइंदियसते एगूणवीसं च मुहुत्ते सत्तावण्णे बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तेपण्णमुहुत्तसहस्साइं सत्त य अउणापण्णे[2] मुहुत्तसते सत्तावण्णं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता

---

१. तीसतिमुहुत्ते पुच्छा तहेव (ट,व) । २. अगुणपण्णा (ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणपण्णं चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

८. ता केवतिए णं ते जुगप्पत्ते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता चत्तारि य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसते चत्तारि य बावट्ठिभागे बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

९. ता केवतियं जुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठारसतीसे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चउप्पण्णं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा।
ता से णं केवतिए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चउत्तीसं सयसहस्साइं अट्ठतीसं च बावट्ठिभागमुहुत्तसते बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

१०. ता कया[1] णं एते 'आदिच्चचंदा संवच्छरा'[2] समादीया[3] समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा ? ता सट्ठिं एते आदिच्चमासा, बावट्ठिं एते चंदमासा। एस णं अद्धा छक्खुत्तकडा दुवालसभइता तीसं एते आदिच्चसंवच्छरा, एक्कतीसं एते चंदसंवच्छरा। तया णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ॥

११. ता कया णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ? ता सट्ठिं एते आदिच्चा मासा, एगट्ठिं एते उडू मासा, बावट्ठिं एते चंदा मासा, सत्तट्ठिं एते णक्खत्ता मासा। एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा दुवालसभइता सट्ठिं एते आदिच्चा संवच्छरा, एगट्ठिं एते उडू संवच्छरा, बावट्ठिं एते चंदा संवच्छरा, सत्तट्ठिं एते णक्खत्ता संवच्छरा। तया णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ॥

१२. ता कया णं एते अभिवड्ढितआदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ? ता सत्तावण्णं[4] मासा सत्त य अहोरत्ता एक्कारस य मुहुत्ता तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एते अभिवड्ढिता मासा, सट्ठिं एते आदिच्चा मासा, एगट्ठिं एते उडू मासा, बावट्ठिं एते चंदमासा, सत्तट्ठिं एते णक्खत्तमासा। एस णं अद्धा छप्पण्णसतक्खुत्तकडा दुवालसभइता सत्त सता चोताला[5] एते णं अभिवड्ढिता संवच्छरा, सत्त सता असीता एते णं आदिच्चा संवच्छरा, सत्त सता तेणउता एते णं उडू संवच्छरा, अट्ठ सता छलुत्तरा एते णं चंदा संवच्छरा, अट्ठ सता एगसत्तरा एते णं णक्खत्ता

---

१. कता (क,ग,व,ब)।

२. आदिच्चचंदसंवच्छरा (क,ग,घ,ट); प्रस्तुतसूत्रस्य निगमने 'क,ब,घ' प्रतिष्ठापि 'आदिच्चचंदसंवच्छरा' इति पाठो दृश्यते। आदर्शेषु च क्वचित् समस्तपदान्यपि लिखितानि सन्ति, अस्माभिरुभयथापि पाठः स्वीकृतः। वृत्त्योस्तु सर्वत्रापि समस्तपदं व्याख्यातमस्ति।

३. समातीता (व)।

४. सत्तापण्णं (ग,घ)।

५. चोयाला (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवच्छरा। तया णं एते अभिवड्ढिता आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहितात्ति वदेज्जा ।।

१३. ता णयट्ठयाए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागे राइंदियस्स आहितेति वदेज्जा। ता अधातच्चेणं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे रायंदियसते पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ।।

१४. तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तं जहा- –पाउसे वरिसारत्ते सरदे[1] हेमंते वसंते गिम्हे ।।

१५. ता सव्वेवि णं एते चंदउडू दुवे-दुवे मासाति चउप्पण्णेणं-चउप्पण्णेणं आदाणेणं गणिज्जमाणा सातिरेगाइं एगूणसट्ठिं-एगूणसट्ठिं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

१६. तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तं जहा—ततिए पव्वे सत्तमे पव्वे एक्कारसमे पव्वे पण्णरसमे पव्वे एकूणवीसतिमे पव्वे तेवीसतिमे पव्वे ।।

१७. तत्थ खलु इमे छ अइरत्ता, तं जहा- –चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे बारसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसतिमे पव्वे चउवीसतिमे पव्वे।

गाहा— छच्चेव य अइरत्ता, आदिच्चाओ हवंति माणाहिं ।।
छच्चेव ओमरत्ता, चंदाओ हवंति माणाहिं ।।१।।

१८. तत्थ खलु इमाओ पंच वासिकीओ पंच हेमंतीओ[2] आउट्टीओ पण्णत्ताओ ।।

१९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अभीइणा, अभीइस्स पढमसमए। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति[3] ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

२०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता संठाणाहिं, संठाणाणं 'एक्कारस मुहुत्ता ऊतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेपण्णं चुण्णिया भागा सेसा'[4]। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव जं पढमाए ।।

२१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेरस मुहुत्ता चउप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ।।

२२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता रेवतीहिं, रेवतीणं पणवीसं मुहुत्ता दुबत्तीसं च बावट्ठिभागा सेसा मुहुत्तस्स

---

१. सरते (क,ग,घ)।
२. हेमंताओ (ट)।
३. जोगं जोएति (ट,ब)।
४. सो चेव अभिलावो एकारस ऊणलाभे तेपण्णं चेव चुण्णिया (ट); सो चेव अभिलावो एक्कारस ऊताली तेपण्णं चेव चुण्णिता (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छव्वीसं[1] चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥

२३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं वासिविं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं, पुव्वाणं फग्गुणीणं बारस मुहुत्ता सत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥

२४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता हत्थेणं, हत्थस्स णं पंच मुहुत्ता पण्णासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता सतभिसयाहिं, सतभिसयाणं दुण्णि मुहुत्ता अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२७. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं[2] हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता अट्ठावण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२८. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमिं[3] हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२९. तत्थ खलु इमे दसविधे जोए पण्णत्ते, तं जहा—वसभाणुजाते वेणुयाणुजाते[4] मंचे मंचातिमंचे छत्ते छत्तातिछत्ते जुयणद्धे घणसंमद्दे पीणिते मंडूकप्पुत्ते णामं दसमे ॥

३० ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं छत्तातिच्छत्तं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता

१. बत्तीसं (ग,व); वृत्तौ—'षड्विंशतिश्चूर्णिका भागाः शेषाः' इति व्याख्यातमस्ति।
२. चउत्थं (ट)।
३. पंचमं (व)।
४. वेणुताणुजाते (व)।

अट्ठावीसतिभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिणपुरत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से चंदे छत्तातिच्छत्तं जोयं जोएति, तं जहा—उप्पिं चंदे, मज्झे णक्खत्ते, हेट्ठा आदिच्चे। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता चित्ताहिं, चित्ताणं चरिमसमए ॥

तेरसमं पाहुडं

१. ता कहं ते चंदमसो[1] वड्ढोवड्ढी आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठ पंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, ता दोसिणापक्खाओ अंधकारपक्खमयमाणे[2] चंदे चत्तारि बातालसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं 'बितियाए बितियं'[3] भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। चरिमसमए चंदे रत्ते भवति, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयण्णं[4] अमावासा[5], एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासा, ता अंधकारपक्खो, तो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारे बाताले मुहुत्तसते छतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। चरिमे समए चंदे विरत्ते भवति, अवसेसमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयण्णं पुण्णिमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी ॥

२. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पण्णत्ताओ। बावट्ठिं एते कसिणा रागा, बावट्ठिं एते कसिणा विरागा। एते चउव्वीसे पव्वसते एते चउव्वीसे कसिणरागविरागसते, जावतिया णं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगेणं चउव्वीसेणं समयसतेणूणका एवतिया परित्ता असंखेज्जा देसरागविरागसता भवंतीति मक्खाता ॥

३. ता अमावासाओ णं पुण्णिमासिणी चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता पुण्णिमासिणीओ णं अमावासा चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता अमावासाओ णं अमावासा अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता पुण्णिमासिणीओ णं पुण्णिमासिणी अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। एस णं एवतिए चंदे मासे, एस णं एवतिए सगले जुगे ॥

४. ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चोद्दस चउब्भागमंडलाइं चरति, एगं च चउव्वीससयभागं मंडलस्स ॥

---

१. चंदिमंसा (क); चंदेमसो (ट,व)।
२. °पक्खं अयमीणे (क,ग,घ,व)।
३. बिदियाए बिदियं (क,ग,घ)।
४. अयण्णं (ग,घ,ट)।
५. अमावसा (क); अवामंसा (ग,घ); अवामंसं (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. ता आदिच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति? ता सोलस मंडलाइं चरति, सोलसमंडलचारी तदा अवराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ।।

६. कतराइं खलु ताइं दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ? ता इमाइं खलु ते बे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति, तं जहा णिक्खममाणे चेव अमावासंतेणं, पविसमाणे चेव पुण्णिमासितेणं । एताइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ।।

७. ता पढमायणगते चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ।।

८. कतराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ? इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति, तं जहा—बितिए[1] अद्धमंडले चउत्थे अद्धमंडले छट्ठे अद्धमंडले अट्ठमे अद्धमंडले दसमे अद्धमंडले बारसमे अद्धमंडले चउदसमे अद्धमंडले । एताइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ।।

९. ता पढमायणगते चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति ।।

१०. कतराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति ? इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति, तं जहा—ततिए अद्धमंडले पंचमे अद्धमंडले सत्तमे अद्धमंडले णवमे अद्धमंडले एक्कारसमे अद्धमंडले तेरसमे अद्धमंडले पण्णरसमस्स[2] अद्धमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं । एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति । एतावता च[3] पढमे चंदायणे समत्ते भवति ।।

११. ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे, चंदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे । ता णक्खत्ताओ अद्धमासाओ ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं[4] चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति चत्तारि य सट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं एगतीसाए छेत्ता णव भागाइं ।।

१२. ता दोच्चायणगते चंदे पुरत्थिमाते भागाते णिक्खममाणे सत्त चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, सत्त तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति । ता दोच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते णिक्खममाणे छ चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, छ तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति, अवरकाइं खलु दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ।।

१. बिदिए (क,ग,घ) ।
२. पण्णरसस्स (क); पण्णरसमे (ग,घ) ।
३. × (क,ग,ट) ।
४. किमहियं (ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. कतराइं खलु ताइं दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति। इमाइं खलु ताइं दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति, तं जहा—सव्वब्भंतरे चेव मंडले सव्वबाहिरे चेव मंडले। एताणि खलु ताणि दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ 'असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता'[३] चारं चरति। एतावता च दोच्चे चंदायणे समत्ते भवति॥

१४. ता णक्खत्ते मासे णो चंदे मासे, चंदे मासे णो णक्खत्ते मासे। ता णक्खत्ताओ मासाओ चंदे चंदेणं मासेणं किमधियं चरति? ता दो अद्धमंडलाइं चरति अट्ठ य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं। ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। एतावता व बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति॥

१५. ता तच्चायणगते चंदे पुरत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरतच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। एतावता च बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति॥

१६. ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरचउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। एतावता च बाहिरचउत्थे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति॥

१७. एवं खलु चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पण्णगाइं दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति, दुवे ईतालीसकाइं 'दुवे तेरसकाइं'[१] अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। 'अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति'[२] इच्चेसा चंदमसोऽभिगमण-णिक्खमण-वुड्ढि-णिवुड्ढि-अणवट्ठितसंठाणसंठिती विउव्वणगिड्ढिपत्ते रूवी चंदे देवे आहितेति वदेज्जा॥

---

१. जाव (क,ग,घ)।
२. × (ग,घ,ट,व)।
३. चिन्हाङ्कितः पाठो वृत्त्योर्व्याख्यातो नास्ति।

चउद्दसमं पाहुडं

१. ता कया[1] ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ? ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ॥

२. ता कहं[2] ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ? ता अंधकारपक्खातो णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ॥

३. ता कहं ते अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ? ता अंधकारपक्खाओ णं दोसिणापक्खं अयमाणे[3] चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तं जहा पढमाए पढमं भागं, 'बितियाए बितियं'[4] भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। एवं खलु अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ॥

४. ता केवतिया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ? ता परित्ता असंखेज्जा भागा ॥

५. ता कया[5] ते अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ? ता अंधकारपक्खे णं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ॥

६. ता कहं ते अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ? ता दोसिणापक्खातो णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ॥

७. ता कहं ते दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ? ता दोसिणापक्खातो णं अंधकारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छायालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। एवं खलु दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ॥

८. ता केवतिए णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ? ता परित्ता असंखेज्जा भागा ॥

---

१. कता (क,ग,घ,ट,व)।

२. कधं (क,ग,घ)।

३. अयमीणे (क,ग,घ,व)।

४. बिदियाए बिदियं (क,ग,घ)।

५. कता (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णरसमं पाहुडं

१. ता कहं ते सिग्घगती वत्थू आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गह-[1] णक्खत्त-तारारूवाणं चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती, सूरेहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती। सव्वप्पगती चंदा, सव्वसिग्घगती तारा ॥

२. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवतियाइं भागसताइं गच्छति ? ता जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस 'अडसट्ठिं भागसते'[2] गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता ॥

३. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवतियाइं भागसताइं गच्छति ? ता जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसते गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता ॥

४. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवतियाइं भागसताइं गच्छति ? ता जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसते गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता ॥

५. ता जया[3] णं चंदं गतिसमावण्णं सूरे गतिसमावण्णे भवति, से णं गतिमाताए केव-तियं विसेसेति ? ता बावट्ठिभागे विसेसेति ॥

६. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं णक्खत्ते गतिसमावण्णे भवति, से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ? ता सत्तट्ठिभागे विसेसेति ॥

७. ता जया णं सूरं गतिसमावण्णं णक्खत्ते गतिसमावण्णे भवति, से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ? ता पंच भागे विसेसेति ॥

८. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं अभीई[4] णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ॥

---

१. गहगण (ट)।

२. अट्ठट्ठे भागसते (क,ग,घ); अट्ठभागसयाति (ट,व)।

३. जता (क,ग,घ,व)।

४. अभीयी (क,ग,घ); अभिति (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं सवणे[1] णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति। एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं—पण्णरसमुहुत्ताइं, तीसइमुहुत्ताइं, पणयालीसमुहुत्ताइं भणितव्वाइं जाव उत्तरासाढा ॥

१०. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं गहे गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता चंदेणं सद्धिं अधाजोगं जुंजति, जुंजित्ता अधाजोगं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ॥

११. ता जया णं सूरं गसिसमावण्णं अभीई णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरित्थिमात्ते भागाते समासादेति, समासादेत्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति,अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति। एवं छ अहोरत्ता एक्कवीसं मुहुत्ता य, तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य, वीसं अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भाणितव्वा जाव--

१२. जया णं सूरं गतिसमावण्णं उत्तरासाढा णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ॥

१३. ता जया णं सूरं गतिसमावण्णं गहे गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता सूरेण सद्धिं अधाजोयं जुंजति, जुंजित्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता[2] •विजहति विप्पजहति° विगतजोई यावि भवति ॥

१४. ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता तेरस मंडलाइं चरति तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ॥

१५. ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता तेरस मंडलाइं चरति चोत्तालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ॥

१६. ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता तेरस मंडलाइं चरति अद्धसीतालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ॥

१७. ता चंदेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चोद्दस सचउभागाइं मंडलाइं चरति एगं च चउव्वीससतभागं मंडलस्स ॥

१८. ता चंदेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति एगं च चउवीससतभागं मंडलस्स ॥

१९. ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति छच्च चउवीससतभागे मंडलस्स ॥

२०. ता 'उडुणा मासेणं'[3] चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चोद्दस मंडलाइं चरति

---

१. समणे (ट,व)।
२. सं० पा०—अणुपरियट्टित्ता जाव विगतजोई।
३. उडुमासेणं (क,सूवृ,चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीसं च एगट्ठिभागं मंडलस्स ।।

२१. ता उडुणा मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस मंडलाइं चरति ।।

२२. ता उडुणा मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस मंडलाइं चरति पंच य बावीससतभागे मंडलस्स ।।

२३. ता आदिच्चेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चोद्दस मंडलाइं चरति एक्कारस य पण्णरसभागे मंडलस्स ।।

२४. ता आदिच्चेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरति ।।

२५. ता आदिच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरति 'पंचतीसं च'[1] वीससतभागे मंडलस्स चरति ।।

२६. ता अभिवड्ढितेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस मंडलाइं चरति तेसीति य छलसीयसतभागे मंडलस्स ।।

२७. ता अभिवड्ढितेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता सोलस मंडलाइं चरति तिहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सतेहि मंडलं छेत्ता ।।

२८. ता अभिवड्ढितेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता सोलस मंडलाइं चरति सीतालीसएहिं भागेहिं आहियाइं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं सतेहिं मंडलं छेत्ता ।।

२९. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति एक्कतीसाए भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं सतेहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।।

३०. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति ।।

३१. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति दोहिं भागेहिं अहियं[2] सत्तहिं दुवत्तीसेहिं सतेहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।।

३२. ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति एक्कतीसाए भागेहिं अहिएहिं चउहिं बातालेहिं सतेहिं राइंदियं छेत्ता ।।

३३. ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति ।।

३४. ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं[3] सतेहिं राइंदियं छेत्ता ।।

३५. ता जुगेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता अट्ठ चुलसीते मंडलसते चरति ।।

३६. ता जुगेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता णव पण्णरसमंडलसते चरति ।।

३७. ता जुगेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसते चरति । इच्चेसा मुहुत्तगती रिक्खातिमास[4]-राइंदिय-जुग-मंडलपविभत्ती सिग्घगती वत्थू आहितेति बेमि[5] ।।

---

१. पंच य (क,ट,ब) ।
२. अधियं (क,ग,घ); अहितं (ट) ।
३. सत्तट्ठेहिं (क,ग,घ); सतट्ठे (ट); सत्तट्ठे (ब) ।
४. रिक्खगणमास (ट,ब) ।
५. वदेज्जा (ट,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं पाहुडं

१. ता कहं ते दोसिणालक्खणे आहितेति वदेज्जा ? ता 'चंदलेस्सा 'इ य'[1] दोसिणा इ य ।।

२. दोसिणा इ य चंदलेस्सा इ य'[2] के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ।।

३. ता[3] सूरलेस्सा इ य आतवे इ य ।।

४. आतवे इ य सूरलेस्सा इ य के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ।।

५. ता[4] अंधकारे इ य छाया इ य ।।

६. छाया इ य अंधकारे इ य के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ।।

---

१. दीय (ग,घ) ।

२. दोसिणा ति या चंदलेस्सा ति आ चंदलेस्सा ति आ दोसिणा ति आ (ट,व) ।

३,४. 'एतेषु पदेषु विषये प्रश्ननिर्वचनसूत्राणि भावनीयानि' इति द्वयोरपि वृत्त्योर्व्याख्यातमस्ति । तेन सूरलेश्या अन्धकारसम्बन्धिसङ्क्षिप्तसूत्रद्वयस्य पूर्णपाठ एवं सम्भाव्यते—ता कहं ते आतवलक्खणे आहितेति वदेज्जा ? ता सूरलेस्सा इ य आतवे इ य। ता कहं ते छायालक्खणे आहितेति वदेज्जा ? ता अंधकारे इ य छाया इ य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरसमं पाहुडं

१. ता कहं ते चयणोववाता[1] आहिताति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति[2]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति २ एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव[3] ता एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुओसप्पिणिउस्सप्पिणिमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति- एगे एवमाहंसु २५

वयं पुण एवं वदामो—ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढिया महाजुतीया महाबला महाजसा 'महाणुभावा महासोक्खा'[4] वरवत्थधरा वरमल्लधरा वरगंधधरा वराभरणधरा अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए काले अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहिताति वदेज्जा ॥

---

१. °वाते (क,ग,घ,ट,व); सूत्रे च द्वित्वेपि बहुवचनं प्राकृतत्वात् (सूवृ)।

२. उववज्जंति आहिताति वदेज्जा (ट,व,सूवृ, चंवृ) सर्वत्र।

३. सू० ६।१। 'एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुराइंदियमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता एव अणुपक्खमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहियत्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमासमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहियत्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुउउमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहियत्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ६ एवं ता अणुअयणमेव ७ ता अणुसंवच्छरमेव ८ ता अणुजुगमेव ९ ता अणुवाससयमेव १० ता अणुवाससहस्समेव ११ ता अणुवाससयसहस्समेव १२ ता अणुपुव्वमेव १३ ता अणुपुव्वसयमेव १४ ता अणुपुव्वसहस्समेव १५ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव १६ ता अणुपलिओवममेव १७ ता अणुपलिओवमसयमेव १८ ता अणुपलिओवमसहस्समेव १९ ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव २० ता अणुसागरोवममेव २१ ता अणुसागरोवमसयमेव २२ ता अणुसागरोवमसहस्समेव २३ ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव २४' (सूवृ)।

४. महासोक्खा महाणुभावा (ग,घ); महाणुभागा महासक्खा (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमं पाहुडं

१. ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं[1] पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, दिवड्ढं चंदे—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं चंदे—एगे एवमाहंसु २ एगे[2] पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धुट्ठाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता पंच जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछट्ठाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धसत्तमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता सत्त जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धट्ठमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धणवमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु—ता णव जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धदसमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ९ एगे पुण एवमाहंसु—ता दस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धएक्कारस चंदे—एगे एवमाहंसु १० एगे पुण एवमाहंसु—ता एक्कारस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धबारस चंदे ११ एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं—बारस सूरे अद्धतेरस चंदे १२ तेरस सूरे, अद्धचोद्दस चंदे १३ चोद्दस सूरे, अद्धपण्णरस चंदे १४ पण्णरस सूरे, अद्धसोलस चंदे १५ सोलस सूरे, अद्धसत्तारस चंदे १६ सत्तरस सूरे, अद्धअट्ठारस चंदे १७ अट्ठारस सूरे, अद्धएकोणवीसं[3] चंदे १८ एकोणवीसं सूरे, अद्धवीसं चंदे १९ वीसं सूरे, अद्धएक्कवीसं चंदे २० एक्कवीसं सूरे, अद्धबावीसं चंदे २१ बावीसं सूरे, अद्धतेवीसं चंदे २२ तेवीसं सूरे, अद्धचउवीसं चंदे २३ चउवीसं सूरे, अद्धपणवीसं चंदे—एगे एवमाहंसु २४ एगे पुण एवमाहंसु—ता पणवीसं जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछव्वीसं चंदे—एगे एवमाहंसु २५

---

१. पणुवीसं (ग,घ,व); पंचवीसं (ट)।

२. अतः 'ट,व' प्रत्योर्वृत्त्योश्च संक्षिप्तपाठो विद्यते—'एवं एएण अभिलावेणं तिण्णि जोयणसहस्साति सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धुट्ठाइं चंदे, तावता जोयणसहस्साति सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्ध एवमाइ चंदे' इत्यादि।

३. एक्कूणवीसं (ग,घ); एकूणवीसतिमाति (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयं पुण एवं वदामो—ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ[1] सत्तणउतिजोयणसते उड्ढं उप्पइत्ता हेट्ठिल्ले ताराविमाणे चारं चरति, अट्ठजोयणसते उड्ढं उप्पइत्ता सूरविमाणे चारं चरति, अट्ठअसीए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरति, णव जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले ताराविमाणे चारं चरति, हेट्ठिल्लाओ ताराविमाणाओ दसजोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता सूरविमाणे चारं चरति, णउतिं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरति, दसोत्तरं जोयणसयं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति, ता सूरविमाणाओ असीतिं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरति, जोयणसयं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति, ता चंदविमाणाओ णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति। एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरजोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोतिसविसए जोतिसं चारं चरति आहितेति वदेज्जा॥

२. ता अत्थि णं चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि? समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि? उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि? ता अत्थि॥

३. ता कहं ते चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि? समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि? उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि? ता जहा-जहा णं तेसि णं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं उस्सियाइं भवंति तहा-तहा[2] णं तेसिं देवाणं एवं भवति[3], तं जहा—अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा[4]। ता एवं खलु चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि तहेव[5]॥

४. ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवतिया गहा परिवारो पण्णत्तो? केवतिया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो? केवतिया तारा परिवारो पण्णत्तो? ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीतिं गहा[6] परिवारो पण्णत्तो, अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो,

---

१. अतः परं चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोः प्रत्योश्चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ च संक्षिप्तपाठः किञ्चित्पाठभेदश्चापि लभ्यते—सत्तणउते जोयणसते अबाहाए हिट्ठिल्ले तारारूवे चारं चरति, अट्ठजोयणसए अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति, अट्ठअसीते जोयणसते अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, णवजोयणसए अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति, ता हेट्ठिलातो णं तारारूवाओ दस जोयणे अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति, तता णं असीते जोयणे अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव णेयव्वं—सव्वब्भंतरिल्लं चारं संठाणं पमाणं वहति सिहगति इड्ढि तारंतरं अग्गमहिसी ठिति अप्पाबहुयं जाव तारातो संखेज्जगुणातो।

२. तधा (क,म,घ)।

३. पण्णायति (जी० ३।९९९); पण्णायए (जं० ७।१६९)।

४. वा। जहा जहा णं तेसिं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं णो ऊसियाइं भवंति, तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं णो पण्णायए तं जहा—अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा (ग)।

५. तहेव जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि (ग,घ)।

६. महग्गहा (जी० ३।१०००, जं० ७।१७०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छावट्ठि सहस्साइं णव चेव सताइं पंचसत्तराइं[1] तारागणकोडिकोडीणं परिवारो पण्णत्तो ॥

५. ता मंदरस्स णं पव्वयस्स केवतियं अबाहाए जोतिसे चारं चरति ? ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसते अबाहाए जोतिसे चारं चरति ॥

६. ता लोयंताओ णं केवतियं अबाहाए जोतिसे पण्णत्ते ? ता एक्कारस एक्कारे जोयणसते अबाहाए जोतिसे पण्णत्ते ॥

७. ता जंबुद्दीवे णं दीवे कतरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरति ? कतरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरति ? कतरे णक्खत्ते सव्वुपरिल्लं[2] चारं चरति ? कतरे णक्खत्ते सव्वहिट्ठिल्लं चारं चरति ? ता अभीई णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरति, मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ, साती णक्खत्ते सव्वुपरिल्लं चारं चरति, भरणी णक्खत्ते सव्व-हेट्ठिल्लं चारं चरति ॥

८. ता चंदविमाणे णं किंसंठिते पण्णत्ते ? ता अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिते सव्वफलिहा-मए[3] अब्भुग्गयमूसियपहसिए विविहमणिरयणभत्तिचित्ते जाव[4] पडिरूवे । एवं सूरविमाणे गहविमाणे णक्खत्तविमाणे ताराविमाणे ॥

९. ता चंदविमाणे णं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं, केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? ता छप्पण्णं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, अट्ठवीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१०. ता सूरविमाणे णं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं पुच्छा । ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

११. ता गहविमाणेणं पुच्छा । ता अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं कोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१२. ता णक्खत्तविमाणे णं केवतियं पुच्छा । ता कोसं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१३. ता ताराविमाणे णं केवतियं पुच्छा । ता अद्धकोसं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, पंच धणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

१४. ता चंदविमाणं[5] कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, दाहि-णेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, पच्चत्थिमेणं वसहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परि-वहंति । एवं सूरविमाणंपि ॥

१५. ता गहविमाणं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता अट्ठ देवसाहस्सीओ परि-वहंति, तं जहा पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं जाव

---

१. पंचुत्तराइं (ग,घ) ।
२. सव्वुवरिल्ले (ग घ) ।
३. °फलियामए (ग,घ); फालियामए (जी० ३।१००८, जं० ७।१७६) ।
४. जी० ३।१००८ ।
५. °विमाणे णं (ग,घ) सर्वत्र ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं ॥

१६. ता णक्खत्तविमाणं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा- पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं ॥

१७. ता ताराविमाणं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा- पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंच देवसता परिवहंति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं[1] ॥

१८. ता[2] एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगती वा मंदगती वा ? ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती, सूरेहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती । सव्वप्पगती चंदा, सव्वसिग्घगती तारा ॥

१९. ता एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा? ता ताराहिंतो णक्खत्ता महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढिया, गहेहिंतो सूरा महिड्ढिया, सूरेहिंतो चंदा महिड्ढिया । सव्वप्पिड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा ॥

२०. ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स य तारारूवस्स य एस णं केवतिए अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? ता दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा- वाघातिमे य निव्वाघातिमे य । तत्थ णं जेसे वाघातिमे, से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसते, उक्कोसेणं बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बाताले जोयणसते तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । तत्थ णं जेसे निव्वाघातिमे, से णं जहण्णेणं पंच धणुसताइं, उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२१. ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा- चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि-चत्तारि देवीसाहस्सी परिवारो पण्णत्तो । पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि-चत्तारि देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए । एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिए ॥

२२. ता पभू णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

२३. ता कहं ते णो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसिया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकधा सण्णिक्खित्ता चिट्ठंति, ताओ णं चंदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो अण्णेसिं च बहूणं जोतिसियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ

१. तुरगा (क,ग,घ) ।

२. 'ता एएसि णं' मित्यादि, शीघ्रगतिविषयं प्रश्नसूत्रं निर्वचनसूत्रं च सुगमं, एतच्च पश्चादप्युक्तं (१५।१) परं भूयो विमानवहनप्रस्तावादुक्तमित्यदोषः, अन्यद्वा कारणं बहुश्रुतेभ्योऽवगन्तव्यम् (सूवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ। एवं खलु णो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ।।
पभू णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, केवलं परियारणिड्ढीए, णो चेव णं मेहुणवत्तियं ।।

२४. ता सूरस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सूरप्पभा आतवा अच्चिमाली पभंकरा, सेसं जहा चंदस्स, णवरं सूरवडेंसए विमाणे जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं[1] ।।

२५. ता जोतिसिया णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं अट्ठभाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं[2] वाससतसहस्समब्भहियं ।।

२६. ता जोतिसिणीणं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं अट्ठभाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ।।

२७. ता चंदविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससतसहस्समब्भहियं ।।

२८. ता चंदविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ।।

२९. ता सूरविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ।।

३०. ता सूरविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं ।।

३१. ता गहविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं ।।

३२. ता गहविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।।

३३. ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।।

३४. ता णक्खत्तविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं 'अट्ठ-भागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं'[3] ।।

३५. ता ताराविमाणे णं देवाणं पुच्छा। ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं

१. मेधुणवत्तियं (क,ग,घ)।
२. पलितोवमं (क,ग,घ) सर्वत्र।
३. चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं चउ-भागपलिओवमं (पण्ण० ४।१९८, जी० ३।१०३४)।

चउब्भागपलिओवमं ॥

३६. ता ताराविमाणे णं देवीणं पुच्छा । ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवमं ॥

३७. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? ता चंदा य सूरा य—एते णं दोवि तुल्ला सव्वत्थोवा, णक्खत्ता संखेज्जगुणा, गहा संखेज्जगुणा, तारा संखेज्जगुणा ॥

एगूणवीसइमं पाहुडं

१. ता कति णं चंदिमसूरिया सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ । तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयं ओभासति उज्जोएति तवेति पभासेति[1] एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि चंदा तिण्णि सूरा सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता आहुट्ठिं[2] चंदा आहुट्ठिं सूरा सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—एतेणं अभिलावेणं[3] णेतव्वं—सत्त चंदा सत्त सूरा ४ दस चंदा दस सूरा ५ बारस चंदा बारस सूरा ६ बातालीसं चंदा बातालीसं सूरा ७ बावत्तरिं चंदा बावत्तरिं सूरा ८ बातालीसं चंदसतं बातालीसं सूरसतं ९ बावत्तरं चंदसतं बावत्तरं सूरसतं १० बातालीसं चंदसहस्सं बातालीसं सूरसहस्सं ११ बावत्तरं चंदसहस्सं बावत्तरं सूरसहस्सं सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति—एगे एवमाहंसु १२

वयं पुण एवं वदामो—ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[4] परिक्खेवेणं पण्णत्ते[5] । ता जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा

१. पभासेति आहितेति वदेज्जा (ट,व); आख्यात इति वदेत् वृत्त्योरपि सर्वत्र ।

२. आउड्ढिं (ग,घ); आउट्ठिं (ट) ।

३. अतः परं चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोः प्रत्योः चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ च भिन्ना पाठपद्धतिर्दृश्यते, ट,व :—जातो चेव ततिए पाहुडे दुवालसपडिवत्तीओ ताओ चेव इहंपि णेयव्वा । ता णवरं सत्त य दस जाव ता बावत्तरिचंदसहस्सं बावत्तरिसुरियसहस्सं सव्वलोयं ओभासंति जाव आहितेति वदेज्जा एगे एवं । चंवृ—या एव तृतीये प्राभृते द्वादशप्रतिपत्तयः उक्तास्ता एव इहापि ज्ञातव्याः, नवरमनेन क्रमेण ज्ञातव्याश्चतुर्थ्यां प्रतिपत्तौ प्रत्येकं सप्त चन्द्राः सूर्याश्च वक्तव्याः । पंचम्यां दश एव यावद् द्वादशभ्यां प्रतिपत्तौ द्वासप्ततं चन्द्रसहस्रं द्वासप्ततं सूर्यसहस्रमिति ।

४. सू० १।१४ ।

५. अतः परं सूर्यप्रज्ञप्तेः 'क,ग,घ' संकेतितेषु आदर्शेषु अतिरिक्तः पाठो लभ्यते—ता जम्बुद्दीवे २ केवतिया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ? केवतिया सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ? केवतिया णक्खत्ता जोयं जोइंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ? केवतिया गहा चारं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, छावत्तरिं गहसतं चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, एगं सयसहस्सं तेत्तीसं च सहस्सा णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ।

संगहणी गाहा— दो चंदा दो सूरा, णक्खत्ता खलु हवंति छप्पण्णा ।
छावत्तरं गहसतं, जंबुद्दीवे विचारी णं[1] ॥१॥
एगं च सयसहस्सं, तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं ।
णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडीणं ॥२॥

२. ता जंबुद्दीवं णं दीवं लवणे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥

३. ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

४. ता लवणसमुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दो जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पण्णरस जोयणसयसहस्साइं एक्कासीइं च सहस्साइं सतं च ऊतालं[2] किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

५. ता लवणसमुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा एवं पुच्छा जाव केवतियाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ? ता लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, चत्तारि सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, बारस णक्खत्तासतं जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, तिण्णि बावण्णा महग्गहसता चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, दो सतसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा णव य सता तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ।

संगहणी गाहा— पण्णरस सतसहस्सा, एक्कासीतिं सतं च ऊतालं ।
किंचिविसेसेणूणो, लवणोदहिणो परिक्खेवो ॥१॥
चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ।
बारस णक्खत्तसयं, गहाण तिण्णेव बावण्णा ॥२॥
दो चेव सतसहस्सा, सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं ।
णव य सता लवणजले, तारागणकोडिकोडीणं ॥३॥

चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा ? केवतिया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ? सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ नैष व्याख्यातोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य रचनाक्रमेणापि नैष उपयुक्तोस्ति । 'वयं पुण एवं वदामो' इति पाठान्तरं स्वाभिमतप्रतिपादनं भवति, न तु प्रश्नोत्तरशैली पूर्वं क्वापि प्रयुक्ता दृश्यते ।

चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,त्र' संकेतितयोः प्रत्योः एवं संक्षिप्तपाठो लभ्यते —ता जंबुदीवे णं दीवे दो चंदा पभासिंसु पभासंति जहा जीवाभिगमे जाव तारातो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

१. 'णं' इति वाक्यालङ्कारे (वृ) ।

२. उगुतालं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. ता[1] लवणसमुद्दं धायईसंडे[2] णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते तहेव जाव[3] णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

७. धायईसंडे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चत्तारि जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं ईतालीसं जोयणसतसहस्साइं दस य सहस्साइं णव य एगट्ठे जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

८. धायईसंडे दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव । ता धायईसंडे णं दीवे बारस चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बारस सूरिया तवेंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, एगं छप्पण्णं महग्गहसहस्सं चारं चरिंसु वा चरिंति वा चरिस्संति वा, अट्ठेव सयसहस्सा तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ॥

संगहणी गाहा —
धायईसंडपरिरओ, ईताल दसुत्तारा सतसहस्सा ।
णव सया य एगट्ठा, किंचिविसेसेण परिहीणा ॥१॥
चउवीसं ससिरविणो, णक्खत्तसया य तिण्णि छत्तीसा ।
एगं च गहसहस्सं, छप्पण्णं धायईसंडे ॥२॥
अट्ठेव सतसहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सताइं ।
धायईसंडे दीवे, तारागणकोडिकोडीणं ॥३॥

९. ता[4] धायईसंडं णं दीवे कालोए णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते जाव[5] णो विसमचक्कवालसंठाणसंठिते ॥

१०. ता कालोए णं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता कालोए णं समुद्दे अट्ठ जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते, एक्काणउतिं जोयणसतसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

११. ता कालोए णं समुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा । ता कालोए समुद्दे बातालीसं चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बातालीसं सूरिया तवेंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, एक्कारस बावत्तरा णक्खत्तसया जोयं जोइंसु वा जोएंति वा

---

१. अतः चंद्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते-- ता लवणसमुद्दं ता धायतिसंडे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठिते जाव चिट्ठंति । ता धायतिसंडे णं दीवे किं समचक्कसंठिते एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जहा जीवाभिगमे जाव तारातो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव व्याख्यातोस्ति ।

२. धातकीसंडे (क) ।

३. सू० १९।२,३ ।

४. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः ट,व संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—धायतिसंडेणं दीवे कालोए णं समुद्दे वट्टे वलया जाव चिट्ठति । ता कालोए णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते विसम एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं च भाणि यव्वं जाव तारातो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव व्याख्यातोस्ति ।

५. सू० १९।२,३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोइस्संति वा, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, अट्ठावीसं सयसहस्साइं बारस य सहस्साइं णव य सताइं पण्णासा तारागण-कोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा।

संगहणी गाहा— एक्काणउतिं सतराइं, सहस्साइं परिरओ[1] तस्स।
अहियाइं छच्च पंचुत्तराइं कालोदधिवरस्स ॥१॥
बातालीसं चंदा, बातालीसं च दिणकरा दित्ता।
कालोदहिंमि एते, चरंति संबद्धलेसागा ॥२॥
णक्खत्तसहस्सं एगमेव छावत्तरं च सयमण्णं।
छच्च सया छण्णउया, महग्गहा तिण्णि य सहस्सा ॥३॥
अट्ठावीसं कालोदहिंमि बारस य सहस्साइं[2]।
णव य सता पण्णासा, तारागणकोडिकोडीणं ॥४॥

१२. ता[3] कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥

१३. पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता सम-चक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

१४. ता पुक्खरवरे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं ? ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बाणउतिं च सतसहस्साइं अउणाणउतिं[4] च सहस्साइं अट्ठचउणउते जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

१५. ता पुक्खरवरे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव[5]। ता चोतालं चंदसतं पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, चोतालं सूरियाणं सतं तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं च णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, बारस सहस्साइं छच्च बावत्तरा महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, छण्णउतिं सयसहस्साइं चोयालीसं सहस्साइं चत्तारि य सयाइं तारागण-कोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ॥

संगहणी गाहा—कोडी बाणउती खलु, अउणाणउतिं भवे सहस्साइं।
अट्ठसता चउणउता, य परिरओ पोक्खरवरस्स ॥१॥

---

१. परिरतो (क,ग,घ)।

२. सयसहस्साइं (क); मूलपाठे 'अट्ठावीसं सयसहस्साइं बारस य सहस्साइं' इत्युपलभ्यते, किन्तु प्रस्तुतगाथायां 'बारस य सयसहस्साइं' मूलपाठपद्धत्या नास्ति समीचीनम् अथवा छन्दोदृष्ट्या एवं संक्षेपीकरणं स्यात्।

३. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—ता कालोयं णं समुद्दे पुक्खरवरे णं दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठति। ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवाल विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जाव तारातो। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति।

४. अउणावण्णं (ग,घ)।

५. तधेव (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोतालं चंदसतं, चोतालं चेव सूरियाण सतं ।
पोक्खरवरदीवम्मि, चरंति एते पभासंता ॥२॥
चत्तारि सहस्साइं, बत्तीसं चेव हुंति णक्खत्ता ।
छच्च सता बावत्तर, महग्गहा बारह सहस्सा ॥३॥
छण्णउति सयसहस्सा, चोत्तालीसं खलु भवे सहस्साइं ।
चत्तारि य सता खलु, तारागणकोडिकोडीणं ॥४॥

१६. ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स बहुमज्झदेसभाए[1] माणुसुत्तरे णामं पव्वते पण्णत्ते—वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते जे णं पुक्खरवरं दीवं दुधा विभयमाणे-विभयमाणे चिट्ठति, तं जहा—अब्भितरपुक्खरद्धं च बाहिरपुक्खरद्धं च ॥

१७. ता[2] अब्भितरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता समचक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

१८. ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दो अउणापण्णे जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

१९. ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं केवतिया चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा ? केवतिया सूरा तविंसु वा पुच्छा। ता बावत्तरिं चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बावत्तरिं सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, दोण्णि सोला णक्खत्तसहस्सा जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, छ महग्गहसहस्सा तिण्णि य [सया ?[3]]छत्तीसा चारं चरेंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, अडतालीससतसहस्सा बावीसं च सहस्सा दोण्णि य सता तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ॥

२०. ता[4] समयक्खेत्ते णं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता पणतालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सतसहस्साइं [तीसं च सहस्साइं ?[5]] दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसते परिक्खेवेणं

---

१. चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं (ट,व) ।

२. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—अब्भितरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिते, एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जाव तारातो। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

३. अस्य अपेक्षायै द्रष्टव्यम्—जीवाजीवाभिगमे ३।८३४ ।

४. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते ता मणुस्सखेत्तं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं केवतियं एवं विक्खंभो परिक्खेवो। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

५. कोष्ठकवर्तिपाठः आदर्शेषु त्रुटितो वर्तते । वृत्तौ एष व्याख्यातोस्ति—एका योजनकोटी द्विचत्वारिंशत्—द्विचत्वारिंशच्छतसहस्राधिका त्रिशत्सहस्राणि द्वे शते, एकोनपञ्चाशदधिके एतावत्प्रमाणो मानुषक्षेत्रस्य परिरयः । जीवाजीवाभिगमे (३।८३५) पि वृत्तिसंवादिपाठो लभ्यते एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य एऊणपण्णा जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहितेति वदेज्जा ॥

२१. ता समयक्खेत्ते णं केवतिया चंदा पभासेसु वा पुच्छा तहेव। ता बत्तीसं चंदसतं पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बत्तीसं सूरियाणं सतं तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउता णक्खत्तसता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसता चारं चरिंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, अट्ठासीतिं सतसहस्साइं चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडि-कोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा।

संगहणी गाहा— अट्ठेव सतसहस्सा, अब्भिंतरपुक्खरस्स विक्खंभो।
पणयालसयसहस्सा, माणुसखेत्तस्स विक्खंभो ॥१॥
कोडी बातालीसं[1], 'सहस्सा दो सता'[2] अउणपण्णासा।
माणुसखेत्तपरिरओ, एमेव य पुक्खरद्धस्स ॥२॥
बावत्तरिं च चंदा, बावत्तरिमेव दिणकरा दित्ता।
पुक्खरवरदीवड्ढे, चरंति एते पभासेंता ॥३॥
तिण्णि सता छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु।
णक्खत्ताणं तु भवे, सोलाइं दुवे सहस्साइं ॥४॥
अडयालसयसहस्सा, बावीसं खलु भवे सहस्साइं।
दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोडिकोडीणं ॥५॥
बत्तीसं चंदसतं, बत्तीसं चेव सूरियाण सतं।
सयलं माणुसलोयं, चरंति एते पभासेंता ॥६॥
एक्कारस य सहस्सा, छप्पि य सोला महग्गहाणं तु।
छच्च सता छण्णउया, णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ॥७॥
'अट्ठासीतिं चत्ताइं, सयसहस्साइं मणुयलोगंमि'[3]।
सत्त य सया अणूणा, तारागणकोडीकोडीणं ॥८॥

२२. एसो[4] तारापिंडो, सव्वसमासेण मणुयलोयंमि।
बहिया पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥१॥
एवतियं तारग्गं, जं भणियं माणुसंमि लोगंमि।
चारं कलंबुयापुप्फसंठितं जोइसं चरति ॥२॥

---

१. बादालीसा (क); एषा गाथा संक्षिप्ता वर्तते 'बातालीसं सहस्सा' एते द्वे अपि पदे केवलं संकेतं कुर्वतः। वस्तुतः 'बातालीसं सयसहस्साइं तीसं सहस्साइं' इति पाठो युज्यते।

२. सहस्स दुसया (ग,घ)।

३. अडसीइ सय सहस्सा, चत्तालीससहस्स मणुयलोगंमि (जी० ३।८३७ पादटिप्पणम्)।

४. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—जोतिसं गाहातो य जाव एगससिपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रविससिगहणक्खत्ता, एवतिया आहिता मणुयलोए ।
जेसिं णामागोत्तं, ण पागता पण्णवेहिंति ॥३॥
छावट्ठिं पिडगाइं, चंदादिच्चाण मणुयलोयम्मि ।
दो चंदा दो सूरा[1], हुंति एक्केक्कए पिडए ॥४॥
छावट्ठिं पिडगाइं, णक्खत्ताणं तु मणुयलोयम्मि ।
छप्पण्णं णक्खत्ता, हुंति एक्केक्कए पिडए ॥५॥
छावट्ठिं पिडगाइं, महग्गहाणं तु मणुयलोयंमि ।
छावत्तरं गहसयं, होइ एक्केक्कए पिडए ॥६॥
चत्तारि य पंतीओ, चंदादिच्चाण मणुयलोयम्मि ।
छावट्ठिं छावट्ठिं, च होंति एक्किक्किया पंती ॥७॥
छप्पण्णं पंतीओ, णक्खत्ताणं तु मणुयलोयम्मि ।
छावट्ठिं छावट्ठिं, हवंति एक्केक्किया पंती ॥८॥
छावत्तरं गहाणं पंतिसयं हवइ मणुयलोयंमि ।
छावट्ठिं छावट्ठिं, हवंति य एक्केक्किया पंती ॥९॥
ते मेरुमणुचरंता, पदाहिणावत्तमंडला सव्वे ।
अणवट्ठितेहिं जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ॥१०॥
णक्खत्ततारगाणं, अवट्ठिता मंडला मुणेयव्वा ।
तेवि य पदाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति ॥११॥
रयणिकरदिणकराणं, उड्ढं च अहे य संकमो णत्थि ।
मंडलसंकमणं पुण, सब्भंतरबाहिरं तिरिए ॥१२॥
रयणिकरदिणकराणं, णक्खत्ताणं महग्गहाणं च ।
चारविसेसेण भवे, सुहदुक्खविही मणुस्साणं ॥१३॥
तेसिं पविसंताणं, तावक्खेत्तं तु वड्ढते णिययं ।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायति णिक्खमंताणं ॥१४॥
तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिता हुंति तावखेत्तपहा ।
अंतो य संकुडा बाहिं, वित्थडा चंदसूराणं ॥१५॥
केणं वड्ढति चंदो, परिहाणी केण होति[2] चंदस्स ।
कालो वा जोण्हो[3] वा, केणणुभावेण चंदस्स ॥१६॥
किण्हं राहुविमाणं, णिच्चं चंदेण होइ अविरहियं ।
चउरंगुलमप्पत्तं, हिट्ठा चंदस्स तं चरति ॥१७॥
बावट्ठिं-बावट्ठिं, दिवसे-दिवसे तु सुक्कपक्खस्स ।
जं परिवड्ढति चंदो, खवेइ तं चेव कालेणं ॥१८॥

---

१. सूरा य (ग,घ) ।
२. हुंति (ग,घ) ।
३. जुण्हो (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णरसइभागेण य, चंदं पण्णरसमेव तं वरति ।
पण्णरसइभागेण य, पुणोवि तं चेव वक्कमति ।।१९।।
एवं वड्ढति चंदो, परिहाणी एव[1] होइ चंदस्स ।
कालो वा जोण्हो वा, एयणुभावेण[2] चंदस्स ।।२०।।
अंतो मणुस्सखेत्ते, हवंति चारोवगा तु उववण्णा ।
पंचविहा जोतिसिया, चंदा सूरा गहगणा य ।।२१।।
तेण परं जे सेसा, चंदादिच्चगहतारणक्खत्ता ।
णत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिता ते मुणेयव्वा ।।२२।।
एवं जंबुद्दीवे, दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति ।
लावणगा य तिगुणिता, ससिसूरा धायईसंडे ।।२३।।
दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए ।
धायइसंडे दीवे, बारस चंदा य सूरा य ।।२४।।
धायइसंडप्पभिति, उद्दिट्ठा तिगुणिता भवे चंदा ।
आदिल्लचंदसहिता, अणंतराणंतरे खेत्ते ।।२५।।
रिक्खग्गहतारग्गं, दीवसमुद्दे जतिच्छसी णाउं ।
तस्स ससीहिं गुणितं[3], रिक्खग्गहतारगग्गं तु ।।२६।।
बहिता[4] तु माणुसणगस्स, चंदसूराणवट्ठिता जोआ[5] ।
चंदा अभीइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ।।२७।।
चंदातो सूरस्स य, सूरा चंदस्स अंतरं होइ ।
पण्णाससहस्साइं, तु जोयणाणं अणूणाइं ।।२८।।
सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अंतरं होइ ।
बाहिं तु माणुसणगस्स, जोयणाणं सतसहस्सं ।।२९।।
सूरंतरिया चंदा, चंदंतरिया य दिणयरा दित्ता ।
चित्तंतरलेसागा, सुहलेसा मंदलेसा य ।।३०।।
अट्ठासीतिं च गहा, अट्ठावीसं च हुंति णक्खत्ता ।
एगससीपरिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ।।३१।।
छावट्ठिसहस्साइं, णव चेव सताइं पंचसतराइं ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ।।३२।।

---

१. अत्र छन्दोदृष्टया अनुस्वारलोपो दृश्यते ।
२. एवणुभावेण (ग,घ) ।
३. तिगुणियं (ग,घ) ।
४. जीवाजीवाभिगमे (३।८३८) एषा गाथा अंतिमा विद्यते ।
५. द्वयोरपि वृत्योः 'तेया' इति पाठो व्याख्यातो दृश्यते— बहिश्चन्द्रसूर्याणां तेजांसि अवस्थितानि भवन्ति, किमुक्तं भवति ? सूर्याः सदैवानत्युष्णतेजसो न तु जातुचिदपि मनुष्यलोके ग्रीष्मकाल इवात्युष्णतेजसः, चन्द्रमसोपि सर्वदैवानतिशीतलेश्याका न तु कदाचनाप्यन्तर्मनुष्यक्षेत्रस्य शिशिरकाल इवातिशीततेजसः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. ता[1] अंतो मणुस्सखेत्ते जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-ताराख्वा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारट्ठितिया गतिरतिया गतिसमावण्णगा ? ता ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा, णो चारट्ठितिया गतिरतिया गतिसमावण्णगा उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फ-संठाणसंठितेहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सियाहिं 'बाहिराहिं वेउव्वियाहिं'[2] परिसाहिं महताहतणट्ट-गीय - वाइय-तंती- तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं महता उक्कुट्ठिसीहणाद[3]-बोलकलकलरवेणं अच्छं पव्वतरायं पदाहिणावत्तमंडलचारं मेरुं अणुपरियट्टंति ।।

२४. ता तेसि णं देवाणं जाधे इंदे चयति से कधमियाणिं पकरेंति ? ता चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जावण्णे तत्थ इंदे उववण्णे भवति ।।

२५. ता इंदट्ठाणे णं केवतिएणं कालेणं विरहिते पण्णत्ते ? ता जहण्णेणं इक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे ।।

२६. ता बहिता णं माणुस्सक्खेत्तस्स जे चंदिम-सूरिय-गह[4] •गण-णक्खत्त-°ताराख्वा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारट्ठितिया गतिरतिया गति-समावण्णगा ? ता ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा णो चारोववण्णगा, चारट्ठितिया, णो गतिरतिया णो गतिसमावण्णगा पक्किट्टगसंठाणसंठितेहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सियाहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महताहतणट्ट-गीय-वाइय[5]-•तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवायइ°रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा चित्तंतरलेसा अण्णोण्ण-समोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिता ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ।।

२७. ता तेसि णं देवाणं जाहे इंदे चयति से कहमियाणिं पकरेंति ? ता[6] चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं तहेव जाव छम्मासे ।।

२८. ता[7] पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो[8]

१. अतः प्रारभ्य 'जाव छम्मासे' इति पर्यन्तः (सूत्र २३-२७) आलापकः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोर्द्वयोरपि प्रत्योर्नास्ति । चन्द्रप्रज्ञप्ति-वृत्तावपि अस्य आलापकस्य उपलब्धेर्विरलता प्रतिपादितास्ति—इहान्यान्यपि सूत्राणि प्रविरलपुस्तकेषु दृश्यन्ते न सर्वेषु पुस्तकेषु, ततस्तान्यपि विनेयजनानुग्रहाय दर्श्यन्ते ।

२. वेउव्वियाहिं बाहिराहिं (जं० ७।५५) ।

३. उक्कट्ठि° (ग,घ) ।

४. सं० पा०---गह जाव ताराख्वा ।

५. सं० पा०---वाइय जाव रवेणं ।

६. ता जाव (क,ग,घ) ।

७. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते--ता पुक्खर णं दीवं पुक्खरोदे वा णामं समुद्दे वट्टे वलया जाव चिट्ठति । एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं च भाणियव्वं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभुरमणे । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

८. सं० पा०—सव्व जाव चिट्ठति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति ।।

२९. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते[1] ? •विसमचक्कवालसंठिते ? ता पुक्खरोदसमुद्दे समचक्कवालसंठिते,° णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

३०. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

३१. ता पुक्खरवरोदे णं समुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव । ता पुक्खरोदे णं समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव संखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा । एतेणं आभिलावेणं—वरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे । खीरवरे दीवे खीरवरे समुद्दे । घतवरे दीवे घतोदे समुद्दे । खोदवरे[2] दीवे खोदोदे[3] समुद्दे । णंदिस्सरवरे दीवे णंदिस्सरवरे समुद्दे । अरुणोदे दीवे अरुणोदे समुद्दे । अरुणवरे दीवे अरुणवरे समुद्दे । अरुणवरोभासे दीवे अरुणवरोभासे समुद्दे । कुंडले दीवे कुंडलोदे समुद्दे । कुंडलवरे दीवे कुंडलवरोदे समुद्दे । कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासे समुद्दे । सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवो जोतिसाइं पुक्खरोदसागरसरिसाइं ।।

३२. ता कुंडलवरोभासण्णं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो[4] •समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति ।।

३३. ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवाल[5] •संठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता रुयए दीवे समचक्कवालसंठिते,° णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

३४. ता रुयए णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयण-सहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

३५. ता रुयगे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा । ता रुयगे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा । एवं रुयगे समुद्दे । रुयगवरे दीवे रुयगवरोदे समुद्दे । रुयग-वरोभासे दीवे रुयगवरोभासे समुद्दे । एवं तिपडोयारा णेतव्वा जाव सूरे दीवे सूरोदे समुद्दे । सूरवरे दीवे सूरवरे समुद्दे । सूरवरोभासे दीवे सूरवरोभासे समुद्दे । सव्वेसिं विक्खंभपरिक्खेव-जोतिसाइं रुयगवरदीवसरिसाइं ।।

३६. ता सूरवरोभासोदण्णं समुद्दं देवे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति जाव[6] णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

३७. ता देवे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयण-सहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—समचक्कवालसंठिते जाव णो ।
२. खोतवरे (क) ।
३. खोतोदे (क,ग,घ) ।
४. सं० पा०—सव्वतो जाव चिट्ठति ।
५. सं० पा०—समचक्कवाल जाव णो ।
६. सू० १९।३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. ता देवे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव। ता देवे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभेस्संति वा। एवं देवोदे समुद्दे। णागे दीवे णागोदे समुद्दे। जक्खे दीवे जक्खोदे समुद्दे। भूते दीवे भूतोदे समुद्दे। सयंभुरमणे दीवे सयंभुरमणे समुद्दे। सव्वे देवदीवसरिसा॥

वीसइमं पाहुडं

१. ता कहं ते अणुभावे आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता चंदिमसूरिया णं णो जीवा अजीवा, णो घणा झुसिरा[1], णो वरबोंदिधरा[2] कलेवरा, णत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कारपरक्कमेति वा, ते णो विज्जुं लवंति णो असणिं लवंति णो थणितं लवंति। अहे[3] णं बादरे वाउकाए संमुच्छति, संमुच्छित्ता विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणितंपि लवंति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता चंदिमसूरिया णं जीवा णो अजीवा, घणा णो झुसिरा, वरबोंदिधरा[4] णो कलेवरा, अत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कारपरक्कमेति वा, ते विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणितंपि लवंति—एगे एवमाहंसु २।
वयं पुण एवं वदामो—ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढिया[5] •महाजुतीया महाबला महाजसा महासोक्खा° महाणुभावा वरवत्थधरा वरमल्लधरा वराभरणधारी अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति[6]॥

२. ता कहं ते राहुकम्मे आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता णत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति—एगे एवमाहंसु २ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति, ते एवमाहंसु—ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयति, बुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयति, मुद्धंतेणं गिण्हित्ता

---

१. झूसियारा (ट)।
२. बादरबोंदिधरा (क); बादरबुंदधरा (ग,घ); बायरबोंदिधरा (ट); बादरबोंदिधरा (व)।
३. अधो (क)।
४. बादरबुंदिधरा (क,ग,घ); बादरबोंदेधरा (ट); बादरबोंदियरा (व)।
५. सं० पा०—महिड्ढिया जाव महाणुभावा। महासुक्खा (ट); महेसक्खा (व) यावत्करणात् 'महज्जुइया महबला महाजसा महेसक्खा' इति द्रष्टव्यं……तथा महेश इति महान् ईशः—ईश्वर इत्याख्या येषां ते महेशाख्याः, क्वचित् महासोक्खा इति पाठः, तत्र महत् सौख्यं येषां ते महासौख्याः (सूवृ)।
६. उववज्जंति आहितेति वदेज्जा (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुद्धंतेणं मुयति, मुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयति, वामभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयति, वामभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयति, दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयति, दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयति। तत्थ जेते एवमाहंसु—ता णत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति, ते एवमाहंसु तत्थ णं इमे पण्णरस कसिणपोग्गला पण्णत्ता, तं जहा सिंघाडए जडिलए खरए खतए अंजणे खंजणे सीतले हिमसीतले केलासे अरुणाभे परिज्जए णभसूरए कविलए पिंगलए राहू।

ता जया णं एते पण्णरस कसिणा पोग्गला सया[1] चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तया णं माणुसलोयंसि माणुसा एवं वदंति एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हति। ता जया णं एते पण्णरस कसिणा पोग्गला णो सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति, णो खलु तया णं माणुसलोयम्मि मणुस्सा एवं वदंति—एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हति एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वदामो ता राहू णं देवे महिड्ढिए महाजुतीए महाबले महाजसे महाणुभावे वरवत्थधरे[2] •वरमल्लधरे[2] वराभणधारी। राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा सिंघाडए जडिलए खतए खरए दद्दरे मगरे मच्छे कच्छभे कण्हसप्पे।

ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा किण्हा णीला लोहिता हालिद्दा सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि णीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए[3] राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ता पच्चत्थिमेणं वीतीवयति तया णं पुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू। जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणेणं आवरित्ता उत्तरेणं वीतीवयति तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, उत्तरेणं राहू। एतेणं अभिलावेणं पच्चत्थिमेणं आवरित्ता पुरत्थिमेणं वीतीवयति, उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीतीवयति। जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपुरत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीतीवयति तया णं दाहिणपुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, उत्तरपच्चत्थिमेणं राहू। जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीतीवयति तया णं दाहिणपच्चत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, उत्तरपुरत्थिमेणं राहू। एतेणं अभिलावेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेणं वीतीवयति, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरेता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीतीवयति। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे

---

१. सता (क,ग,घ,ट,व)।

२. सं० पा०- वरवत्थधरे जाव वराभरणधारी।

३. हालिद्दए (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं 'आवरेत्ता वीतीवयति'[1] तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति---'एवं खलु'[2] राहुणा चंदे वा सूरे वा गहिते -एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा गहिते। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पासेणं वीतीवयति तया णं मणुस्सलोयंमि मणुस्सा वदंति 'एवं खलु'[3] चंदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा- एवं खलु चंदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा।

ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पच्चोसक्कति तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता मज्झंमज्झेणं वीतीवयति तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति - एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वइयरिए[4]---एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वइयरिए। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ताणं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं चिट्ठति तया णं मणुस्सलोयंसि मणुस्सा वदंति--एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे---एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे॥

३. ता कतिविहे णं राहू पण्णत्ते ? ता दुविहे पण्णत्ते, तं जहा---धुवराहू य पव्वराहू य। तत्थ णं जेसे धुवराहू, से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए[5] पण्णरसतिभागेणं पण्णरसतिभागं चंदस्स लेसं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरमे समए चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति। तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे चिट्ठति, तं जहा- पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवति, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ। तत्थ णं जेसे पव्वराहू, से जहण्णेणं छण्हं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडतालीसाए संवच्छराणं सूरस्स॥

४. ता 'कहं ते'[6] चंदे ससी-चंदे ससी आहितेति वदेज्जा ? ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणावि य णं चंदे देवे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे ता 'एवं खलु'[7] चंदे ससी-चंदे ससी आहितेति वदेज्जा॥

५. ता 'कहं ते'[8] सूरे आदिच्चे-सूरे आदिच्चे आहितेति वदेज्जा ? ता सूरादिया

---

१. आवरेत्ति (ट,व)।
२. × (क,ग,घ)।
३. × (क,ग,घ)।
४. वतिचरिए (ट); वेतिचरिए (व)।
५. पडिवए (ग,घ,ट,व)।
६. से णं केणट्ठेणं एवं वुच्चइ (ट); से केणट्ठेणं एवं वुच्चति (व); भगवत्या-(१२।१२५) मपि एवं विद्यते।
७. से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ (ट,व)।
८. से केणट्ठेणं एवं वुच्चति (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं समयाति वा आवलियाति वा आणापाणूति वा थोवेति वा जाव[1] ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीति वा, 'एवं खलु'[2] सूरे आदिच्चे-सूरे आदिच्चे आहितेति वदेज्जा ॥

६. ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, 'जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं'[3] । एवं सूरस्सवि भाणितव्वं[4] ॥

७. ता चंदिमसूरिया णं जोतिसिंदा जोतिसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति? ता से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबल-समत्थाए भारियाए सद्धिं 'अचिरवत्तविवाहे अत्थत्थी'[5] अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पव-सिते, से णं ततो लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियमघरं हव्वमागए ण्हाते कत-बलिकम्मे कतकोतुक-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिते अप्प-महग्घाभरणालंकितसरीरे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अंतो[6] सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोय-चिल्लियतले[7] 'बहुसमसुविभत्तभूमिभाए मणिरयणपणासितंधयारे'[8] कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिते गंधवट्टिभूते तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि दुहओ उण्णए मज्झे णत-गंभीरे सालिंगणवट्टिए 'उभओ विब्बोयणे'[9] सुरम्मे गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए 'सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमियखोमदुगूलपट्ट-पडिच्छायणे'[10] रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आईणगरूतबूरणवणीततूलफासे सुगंधवरकुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिए ताए तारिसाए भारियाए सद्धिं सिंगारागारचारुवेसाए संगतगतहसित-भणितचिट्ठितसंलावविलासणिउणजुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणोणुकूलाए एगंतरतिपसत्ते अण्णत्थ कत्थइ मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविधे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरेज्जा । ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सातासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरति ? ओरालं समणाउसो ! ता तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो एतो अणंतगुणविसिट्ठतरा[11] चेव वाणमंतराणं देवाणं कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा, असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा, असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव गहगणणक्खत्तताराख्वाणं कामभोगा, गहगणणक्खत्त-ताराख्वाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिमसूरियाणं देवाणं कामभोगा,

---

१. भ० १२।१२६; ठाण २।३८८,३८९ ।
२. से एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चति (ट,व) ।
३. एवं तं चेव पुव्वभणियं अट्ठारसमे पाहुडे तहा णेयव्वं जाव मेहुणवत्तियं (ट,व) ।
४. × (ट,व) ।
५. अचिरवत्तविवाहकज्जे (भ० १२।१२८) ।
६. अब्भितरओ (ट,व) ।
७. आइण्णतले (चंवृ); चिल्लगतले (चंवृपा) ।
८. मणिरयणपगासियंधयारे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पंचवण्णरस २ सुरभिमुक्कपुप्फ-पुंजोवयारे कलिते (ट,व) ।
९. पण्णत्तगंडविब्बोयणे (ग,घ,सूवृपा, चंवृपा) ।
१०. उवचितदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे सुविरइयत्ताणे (ट,व) ।
११. °विसिट्ठतराए (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता एरिसए णं चंदिमसूरिया जोतिसिंदा जोतिसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

८. तत्थ खलु इमे अट्ठासीतिं महग्गहा पण्णत्ता, तं जहा—इंगालए वियालए लोहितक्खे[1] सणिच्छरे आहुणिए पाहुणिए कणे कणए कणकणए कणविताए कणसंताणए सोमे सहिते आसासणे कज्जोवए कब्बडए अयकरए दुंदुभए संखे संखणाभे संखवण्णाभे कंसे कंसणाभे कंसवण्णाभे णीले णीलोभासे रुप्पे रुप्पोभासे भासे भासरासी तिले तिलपुप्फवण्णे दगे दगवण्णे काए काकंधे[2] इंदग्गी धुमकेतू हरी पिंगलए बुधे सुक्के बहस्सई राहू अगत्थी माणवगे 'कासे फासे'[3] धुरे पमुहे वियडे विसंधीकप्पे [णियल्ले ?] पयल्ले जडियायलए अरुणे अग्गिल्लए काले महाकाले सोत्थिए सोवत्थिए वद्धमाणगे पलंबे णिच्चालोए णिच्चुज्जोते सयंपभे ओभासे सेयंकरे खेमंकरे आभंकरे पभंकरे अरए विरए असोगे वीतसोगे विमले[4] वितत्ते विवत्थे विसाले साले सुव्वते अणियट्टी एगजडी दुजडी करकरिए रायग्गले पुप्फकेतू भावकेतू ।

संगहणी गाहा— इंगालए[5] वियालए, लोहियक्खे सणिच्छरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामा उ पंचेव ॥१॥

---

१. लोहितंके (क); लोहिएके (ग,घ); लोहित्यकः (सूवृ); चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'लोहिताक्षः' इति व्याख्यातमस्ति, तथा स्थानाङ्गे (२।३२५) 'लोहितक्खा' जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।१८६) च 'लोहितक्खे' इति पाठो लभ्यते ।

२. बंधे (क,ग,घ) वृत्तिद्वयेपि 'बन्ध्यः' इति व्याख्यातमस्ति । 'बन्ध्यः' इति पदस्य 'बंझ' इति रूपं स्यात्, कथं 'बंधे' इति प्रश्नोस्ति । तथा स्थानाङ्गे 'कक्कंधा' इति पाठो लभ्यते ।

३. सूर्यप्रज्ञप्तेः 'क' प्रतौ 'कासफासे' इति पाठो विद्यते तथा चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' सङ्केतितप्रतिद्वये 'कासे फासे' इति पाठोस्ति, सङ्ख्यादृष्ट्यापि 'कासे फासे' इति नामद्वयं युक्तमस्ति । वृत्तिद्वयेपि 'कामस्पर्श' इति व्याख्यातमस्ति । सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तावुद्धृतासु गाथास्वपि 'कामफासे' इति पाठो विद्यते, किंतु स्थानाङ्गे (२।३२५) 'दो कासा दो फासा' इति पाठो लभ्यते ।

४. × (ट); एतत् पदं वृत्तिद्वयेपि व्याख्यातं नास्ति ।

५. स्थानाङ्गवृत्तौ 'इदं तत्रैव संग्रहणीगाथाभिर्नियन्त्रितम्' इत्युल्लेखपूर्वकं नव गाथा उद्धृताः सन्ति, तासु विद्यमानानां नाम्नां गद्यभागवर्त्तिभिर्नामभिः सह संवादित्वमस्ति, तेन एता गाथाः मूले स्वीकृताः । चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोरादर्शयोस्तद्वृत्तौ च संग्रहणीगाथा नोपलभ्यते । सूर्यप्रज्ञप्त्यादर्शेषु एता निम्ननिर्दिष्टा गाथा लिखिताः सन्ति, सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ च एतेषामेव नाम्नां सुखप्रतिपत्त्यर्थं सङ्ग्रहणिगाथाषट्कमाह' इत्युल्लेखपूर्वकं नव गाथा उद्धृताः सन्ति । एतासु गाथासु यानि नामानि सन्ति, तेषां नाम्नां गद्यभागवर्त्तिभिर्नामभिः सर्वथा संवादित्वं नास्ति, तेन नैताः मूले स्वीकृताः—

इंगालए वियालए, लोहितंके[1] सणिच्छरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए कणकसणामावि पंचेव ॥१॥

---

१. लोहिकते (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमे सहिते अस्सासणे य कज्जोवए य कब्बरए ।
अयकरए दुंदुभए, संखसणामावि तिण्णेव ॥२॥
तिण्णेव कंसणामा, णीले रुप्पी य हुंति चत्तारि ।
भास तिल पुप्फवण्णे, दगवण्णे[1] काय बंधे य ॥३॥
इंदग्गि धूमकेतू य, हरि पिंगलए बुधे य सुक्के य ।
वहसति राहु अगत्थी, माणवए कामफासे य ॥४॥
धुरए पमुहे वियडे, 'विसंधिकप्पे पयल्ले'[2] ।
जडियाइल्लए[3] अरुणे, अग्गिल काले महाकाले ॥५॥
सोत्थिय सोवत्थिय वद्धमाणग तथा पलंबे य ।
णिच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥६॥
सोयंकरे खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोधव्वे ।
अरए विरए य तधा, असोगे तह वीतसोगे य ॥७॥
विमल वितत्त वितत्थे, विसाल तह साल सुव्वते चेव ।
अणियट्टि एगजडि य, होई बिजडी य बोधव्वे ॥८॥
कर करिए रायग्गल, बोधव्वे पुप्फ भावकेतू य ।
अट्ठासीति खलु गहा, णेतव्वा आणुपुव्वीए ॥९॥

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एता गाथा लभ्यन्ते—

इंगालए वियालए, लोहिअक्खे[4] सणिच्चरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामावि पंचेव ॥१॥
सोमे सहिए अस्सासणे य कज्जोवए कब्बरए ।
अयकर दुंदुभए वि य, संखसणामावि तिन्नेव ॥२॥
तिन्नेव कंसणामा, नीले रुप्पी हवंति चत्तारि ।
भास तिल पुप्फवन्ने,[5] दगवन्ने काय बंधे य ॥३॥
इंदग्गि धूमकेऊ, हरि पिंगलए बुधे य सुक्के य ।
वहसइ राहु अगत्थी, माणवगे कामफासे य ॥४॥
धुरए पमुहे वियडे, विसंधिकप्पे तहा पयल्ले[6] य ।
जडियालए[7] य अरुणे, अग्गिल[8] काले महाकाले ॥५॥
सोत्थिय सोवत्थिय, वद्धमाणग तहा पलंबे य ।
निच्चालोए निच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥६॥
सेयंकर खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोधव्वे ।
अरए विरए य तहा, असोक तह वीयसोगे य ॥७॥
'विमल वितत्त'[9] वितत्थे, विसाल तह साल सुव्वए चेव ।
अनियट्टी एगजडी, य होइ वियडी य बोधव्वे ॥८॥

१. दगपंचवण्णे (ग,घ) ।
२. विसंधीकप्पे तहा णियल्ले या (ग,घ) ।
३. जडियालए (ग,घ) ।
४. 'लोहियंके' क्वचिल्लोहिताक्षः (पुवृ) ।
५. पुप्फवण्ण दग (हीवृ) ।
६. पगप्पे (हीवृ) ।
७. जाडालए (हीवृ) ।
८. अग्गि य (हीवृ) ।
९. होइ वितत्थ (हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमे सहिए आसासणे य कज्जोवए य कब्बडए ।
अयकरए दुंदुहए, संखसनामाओ तिन्नेव ॥२॥
तिन्नेव कंसणामा, णीला रुप्पी य होंति चत्तारि ।
भास तिलपुप्फवन्ने, दगे य दगपणवण्णे य काय काकंधे ॥३॥
इंदग्गि धूमकेऊ, हरि पिंगलए बुहे य सुक्के य ।
बहस्सइ राहु अगत्थी, माणवए कास फासे य ॥४॥
धुरए पमुहे वियडे, विसंधि णियले तहा पयल्ले य ।
जडियाइलए अरुणे, अग्गिल काले कहाकाले ॥५॥
सोत्थिय सोवत्थिय, वद्धमाणगे तधा पलंबे य ।
निच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥६॥
सेयंकर खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोधव्वे ।
अरए विरए य तहा, असोग तह वीयसोगे य ॥७॥
विमल वितत वितत्थे, विसाल तह साल सुव्वए चेव ।
अनियट्टी एगजडी, य होइ विजडी य बोद्धव्वे ॥८॥
करकरए रायग्गल, बोद्धव्वे पुप्फ भावकेऊ य ।
अट्ठासीई गहा खलु, णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥९॥

९. इइ एस पाहुडत्था, अभव्वजणहिययदुल्लहा इणमो ।
उक्कित्तिता भगवती, जोतिसरायस्स पण्णत्ती ॥१॥
एस गहितावि संती थद्धे गारविय-माणि-पडिणीए ।
अबहुस्सुए ण देया, तव्विवरीते भवे देया ॥२॥
सद्धा-धिति-उट्ठाणुच्छाह-कम्म-बल वीरिय-पुरिसकारेहिं ।
जो सिक्खिओवि संतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ॥३॥
सो पयवण-कुल-गण-संघबाहिरो णाणविणयपरिहीणो ।
अरहंतथेरगणहरमेरं किर होंति वोलीणो ॥४॥
तम्हा धिति-उट्ठाणुच्छाह-कम्म-बल-वीरियसिक्खियं णाणं ।
धारेयव्वं णियमा, ण य अविणीएसु दायव्वं ॥५॥
वीरवरस्स भगवतो, जरमरणकिलेसदोसरहियस्स ।
वंदामि विणयपणतो, सोक्खुप्पाए सदा पाए ॥६॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ७५,८७५

अनुष्टुप् श्लोक २,३७१ अक्षर ३

कर करिए[1] रायग्गल, बोधव्वे पुप्फ भाव केऊ य ।
अठासीइ गहा खलु, नायव्वा आणुपुव्वीए ॥९॥

चन्द्रप्रज्ञप्तिसूर्यप्रज्ञप्त्योरादर्शेषु, स्थानाङ्गे, तद्वृत्तावुद्धृते सूर्यप्रज्ञप्तिपाठे, जंबूद्वीपप्रज्ञप्तेः संक्षिप्त-पाठे तद्वृत्तौ तथा त्रिलोकप्रज्ञप्तौ च उपलब्धानि महाग्रहनामानि अत्र कोष्ठकेषु प्रदर्शितानि सन्ति—

---

१. करए (ह्रीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र०	मूल	'ट'	'ख'	'क'	'ग, घ'	ठाणं २।३२५	ठाणं वृत्ति[1]
१	इंगालए	,,	,,	,,	,,	इंगालगा	,,
२	वियालए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
३	लोहितक्खे	,,	,,	लोहितके	लोहिएके	,,	,,
४	सणिच्छरे	सणच्छंदे	सणिच्चरे	,,	,,	सणिच्चरा	,,
५	आहुणिए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
६	पाहुणिए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
७	कणे	,,	X	,,	,,	,,	,,
८	कणए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
९	कणकणए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१०	कणविताणए	कणगवियाणए	X	,,	,,	कणगवितागगा	,,
११	कणसंताणए	,,	,,	कणगसंताणए	कणगसंताणए	कणगसंताणगा	,,
१२	सोमे	,,	ओसो	,,	,,	,,	,,
१३	सहिते	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१४	आसासणे	आसासणे	,,	अस्सासणे	अस्सासणे	,,	अस्सासणे
		रुकं १५					
१५	कज्जोवए	,,	,,	कज्जावए	X	,,	कज्जोयए
१६	कब्बडए	,,	,,	कब्बरए	कब्बरणे	,,	,,
१७	अयकरए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१८	दुंदुभए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१९	संखे	,,	,,	,,	,,	,,	,,
२०	संखणाभे	संखवणे	संखण्णोभे	,,	संखणाते	संखवण्णा	संखवण्णे
२१	संखवण्णाभे	,,	X	,,	,,	,,	,,
२२	कंसे	,,	X	,,	,,	,,	,,
२३	कंसणाभे	कंसवणे	X	,,	X	कंसवण्णा	कंसवण्णे
२४	कंसवण्णाभे	,,	X	,,	,,	,,	,,
२५	णीले	,,	,,	,,	,,	रुप्पी	,,
२६	णीलोभासे	नीलाभासे	,,	,,	णीलोतासी	रुप्पाभासा	,,
२७	रुप्पे	रुवी	रुप्पी	,,	,,	णीला	रुप्पी
२८	रुप्पोभासे	रुवीभास	,,	,,	,,	णीलोभासा	,,
२९	भासे	,,	,,	,,	,,	,,	,,
३०	भासरासी	,,	,,	,,	,,	,,	,,

१. अङ्गारकादयोऽष्टाशीतिर्ग्रहाः सूत्रसिद्धाः केवलमस्मद् दृष्टपुस्तकेषु केषुचिदेव यथोक्तसंख्यां संवदतीति सूर्यप्रज्ञप्त्यनुसारेणासाविह संवदनीया, तथाहि तत्सूत्रम् —तत्थ……(वृ.)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमाहिं गाहाहिं—इंगालए वियालए, लोहितक्खे सणिच्छरे चेव। आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामा य पंचेव ॥१॥
सोमे सहिए आसासणे य कज्जोवए य कब्बडए अयकरए दुंदुभए संखसणामेवि तिण्णेव ॥२॥
एवं भाणियव्वं जाव भावकेउस्स........

ठां० ७।१८६	सूर्	चंद्	जं० पु	ठां० द्वीव्	तिलोयपण्णत्ति
	अङ्गारकः	,,	,,	,,	बुध
	विकालकः	,,	विकालगः	विकालः	शुक्र
	लोहित्यकः	लोहिताक्षः	लोहितांक[१]	लोहिताक्षः	बृहस्पति
	शनैश्चरः	,,	,,	,,	मंगल
	आधुनिकः	,,	,,	,,	शनि
	प्राधुनिकः	,,	,,	,,	काल
	कणः	,,	,,	,,	लोहित
	कणकः	,,	,,	,,	कनक
	कणकणकः	,,	,,	,,	नील
	कणवितानकः	,,	,,	कणकवितानकः	विकाल
	कणसन्तानकः	,,	,,	कणकसंतानकः	केश
	सोमः	,,	,,	,,	कवयव
	सहितः	,,	,,	,,	कनक-संस्थान
	आश्वासनः	,,	आश्वासनः	आश्वासनः	दुन्दुभक
		रूत: १५			
	कार्योपगः	,,	,,	,,	रक्तनिभ
	कर्बटकः	कर्बुर	कर्बुरकः	कब्बुरः	नीलाभास
	अजकरकः	,,	,,	,,	अशोकसंस्थान
	दुन्दुभकः	,,	,,	,,	कंस
	शङ्खः	,,	,,	,,	रूपनिभ
	शङ्खनाभः	,,	,,	,,	कंसकवर्ण
	शङ्खवर्णाभः	,,	,,	,,	शंखपरिणाम
	कंसः	,,	,,	,,	तिलपुच्छ
	कंसनाभः	,,	,,	,,	शंखवर्ण
	कंसवर्णाभः	,,	,,	,,	उदकवर्ण
	नीलः	,,	,,	,,	पंचवर्ण
	नीलावभासः	नीलोवभासः	,,	,,	उत्पात
	रूप्पी	,,	,,	,,	धूमकेतु
	रूप्यावभासः	,,	,,	,,	तिल
	भस्म	,,	,,	,,	नभ
	भस्मराशिः	,,	,,	,,	क्षारराशि

२. क्वचिल्लोहिताक्षः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क०	मूल	'ट'	'व'	'क'	'ग,घ'	ठाणं २।३२५
३१	तिले	,,	,,	,,	,,	,,
३२	तिलपुप्फवण्णे	,,	,,	,,	,,	,,
३३	दगे	,,	,,	,,	,,	,,
३४	दगवण्णे	,,	दगयवण्णे	,,	,,	दगपंचवण्णा
३५	काए	,,	,,	,,	,,	,,
३६	काकंधे	,,	,,	बंधे	बंडे	,
३७	इंदग्गी	,,	,,	,,	,,	,,
३८	धूमकेतू	,,	,,	,,	,,	,,
३९	हरी	,,	हेरी	,,	हेरी	,,
४०	पिंगलए	,,	,,	,,	पिगए	पिंगला
४१	बुधे	,,	,,	,,	,,	,,
४२	सुक्के	,,	,,	,,	वुक्के	,,
४३	बहस्सई	,,	,,	,,	,,	,,
४४	राहू	,,	,,	,,	,	,,
४५	अगत्थी	,,	,,	,,	आगत्था	,,
४६	माणवगे	,,	,,	,,	,,	,,
४७	कासे	,,	,,	कासफासे	कामफासे	,,
४८	फासे	,,	,,	×	×	,,
४९	धुरे	,,	,,	,,	,,	,,
५०	पमुहे	,,	,,	,,	,,	,,
५१	वियडे	,,	,,	,,	×	,,
५२	विसंधीकप्पे	विसंधी	विसंधी	,,	विसंधीकप्पेल	विसंधी
५३	[णियल्ले ?]	×	नेतल्ले	×	×	णियल्ला
५४	पयल्ले	,,	पत्तल्ले	,,	,,	पइल्ला]
५५	जडियायलए	जयले	जडियातिलते	,,	जडिएबलए	जडियाइलगा
५६	अरुणे	,,	,,	,,	,,	,,
५७	अग्गिलए	,,	अग्गिलए	,,	अग्गन्नए	,,
५८	काले	,,	,,	,,	,,	,,
५९	महाकाले	,,	,	,,	,,	महाकालगा
६०	सोत्थिए	,,	,,	,,	×	,,
६१	सोवत्थिए	,,	,,	,,	,,	,,
६२	वद्धमाणगे	,,	,,	,	,,	,,
६३	पलंबे	,,	,,	,	,,	,,
६४	णिच्चालोए	,,	,,	,,	,,	,,
६५	णिच्चुज्जोते	,,	,,	,,	,,	,,
६६	सयंपभे	,,	,,	,,	,,	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणं वृत्ति	सूर्य०	चंद्र	जं० पुव	जं० हीव	तिलोयपण्णत्ति
,,	तिलः	,,	,,	,,	विजिष्णु
,,	तिलपुष्पवर्णकः	,,	,,	पुष्पवर्णः	सदृश
,,	दकः	दकवर्णः	,,	,,	संधि
दगपंचवण्णे	दकवर्णः	,,	,,	,,	कलेवर
,,	कायः	,,	,,	,,	अभिन्न
,,	वन्ध्यः	,,	,,	,,	ग्रन्थि
,,	इन्द्राग्निः	,,	,,	,,	मानवक
,,	धूमकेतुः	सूनकेतुः	,,	,,	कालक
,,	हरिः	,,	,,	,,	कालकेतु
पिंगले	पिङ्गलः	,,	,,	,,	निलय
,,	बुधः	,,	,,	,,	अनय
,,	शुक्रः	,,	,,	,,	विद्युज्जिह्व
,,	बृहस्पतिः	,,	,,	,,	सिंह
,,	राहुः	,,	,,	,,	अलक
,,	अगस्तिः	,,	,,	,,	निर्दुःख
,,	माणवकः	,,	,,	,,	काल
,,	कामस्पर्शः	,,	,,	,,	महाकाल
,,	धुरः	,,	,,	,,	रुद्र
,,	प्रमुखः	,,	,,	,,	महारुद्र
,,	विकटः	,,	,,	,,	सन्तान
,,	विसंधिकल्पः	,,	,,	,,	विपुल
विसंधी	प्रकल्पः	,,	,,	,,	संभव
नियल्ले	जटालः	,,	,,	,,	स्वार्थी
,,	अरुणः	,,	,,	,,	क्षेम
जडियाइल्लए	अग्निः	,,	,,	,,	चन्द्र
,,	कालः	,,	,,	,,	निर्मन्त्र
,,	महाकालः	,,	,,	,,	ज्योतिष्माण
,,	स्वस्तिकः	,,	,,	,,	दिशासंस्थित
,,	सौवस्तिकः	,,	,,	,,	विरत
,,	वर्द्धमानकः	,,	,,	,,	वीतशोक
,,	प्रलम्बः	,,	,,	,,	निश्चल
,,	नित्यालोकः	,,	,,	,,	प्रलम्ब
,,	नित्योद्योतः	,,	,,	,,	भासुर
,,	स्वयंप्रभः	,,	,,	,,	स्वयंप्रभ
,,	अवभासः	,,	,,	,,	विजय
,,	श्रेयस्करः	,,	,,	,,	वैजयन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क०	मूल	'ट'	'व'	'क'	'ग,घ'	ठाणं २।३७५
६७	ओभासे	,,	,,	,,	,,	,,
६८	सेयंकरे	,,	,,	,,	,,	,,
६९	खेमंकरे	,,	,,	,,	,,	,,
७०	आभंकरे	,,	,,	,,	,,	,,
७१	पभंकरे	,,	खेमंकरे पभंकरे	,,	×	,,
७२	अरए	,,	अपरातिए	,,	,,	अपराजिता
७३	विरए	×	अपरते	,,	,,	अरया
७४	असोगे	,,	,,	,,	,,	,,
७५	वीतसोगे	विगयसोगे	विगतसोगे	,,	,,	विगतसोगा
७६	विमले	×	,,	,,	,,	,,
७७	वितत्ते	,,	,,	,,	वितते	वितता
७८	वितत्थे	वितये	वितत्थे	,,	,,	वितत्था
७९	विसाले	,,	,,	,,	,,	,,
८०	साले	,,	×	,,	,,	,,
८१	सुव्वते	,,	सव्वतो	,,	,,	,,
८२	अणियट्टी	,,	अणियट्टिए	,,	अणिट्टी अट्टी	,,
८३	एगजडी	,,	,,	,,	,,	,,
८४	दुजडी	,,	,,	,,	,,	,,
८५	करकरिए	कर करिए	कर करिए	कर ८३ करिए ८४	कर करिए	,,
८६	रायग्गले	राय ग्गले	राय ग्गले	राय ८५ ग्गले ८६	राय ग्गले	,,
८७	पुप्फकेतू	,,	पुप्फकेता	,,	,,	,,
८८	भावकेतू	,,	×	,,	,,	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणं वृत्ति	सूत्रवृ०	चंद्र	जं० पुव्	जं० द्वीव्	तिलोयपण्णत्ति
,,	क्षेमंकरः	,,	,,	,,	सीमंकर
,,	आभंकरः	,,	,,	,,	अपराजित
,,	प्रभङ्करः	,,	,,	,,	जयन्त
,,	अरजा	अरजाः	,,	अरजाः	विमल
,,	विरजा	,,	,,	विरजाः	अभयंकर
अपराजिए	अशोकः	,,	,,	,,	विकस
अरए	वीतशोकः	अशोकावीति	,,	,,	काष्ठी
,,	वितप्तः	वितप्तग्रहः	विमलः ७४ वितप्तः ७५	विततः	विकट
,,	विवस्त्रः	थित्रअः	,,	,,	कज्जली
,,	विशालः	,,	,,	,,	अग्निज्वाल
वियत्ते	शालः	,,	,,	,,	अशोक
वितत्थे	सुव्रतः	,,	,,	,,	केतु
,,	अनिवृत्तिः	अनवृत्तिः	,,	,,	क्षीररस
,,	एकजटी	,,	,,	,,	अघ
,,	द्विजटी	,,	,,	,,	श्रवण
,,	करः	,,	,,	,,	जलकेतु
,,	करिकः	,,	,,	,,	केतु
,,	राजः	राजा	राजा	राजा	अंतरद
,,	अर्गलः	,,	,,	,,	एकसंस्थान
,,	पुष्पः	भावकेतुः	पुष्पकेतुः ८७	,,	अश्व
,,	भावः	धूम्रकेतुः	भावकेतुः ८८	,,	भावग्रह
,,	केतुः	पुष्यकेतुः[1]	,,	,,	महाग्रह

१. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ एतावान् अतिरिक्तः पाठो व्याख्यातोस्ति--एते अंगारकादयो ग्रहाः सर्वेपि प्रत्येकं चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च स्वविमानवास्तव्यानां देवानां चाधिपत्यमनुभवंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसिट्ठं

चन्द्रप्रज्ञप्ति व सूर्यप्रज्ञप्ति का पाठभेद

चन्द्रप्रज्ञप्ति	सूर्यप्रज्ञप्ति
सूत्र १०	सूत्र ६
,, १	×
,, २-५	सूत्र ६-६
,, ६-१०	,, १-५

१।१ से ६ पाहुडपाहुडों में कहीं-कहीं शब्दभेद है।

१।७ पाहुडपाहुड में पाठभेद है। वह इस प्रकार है—

चन्द्रप्र०

ता समचउरंससंठाणसंठिता णं[1] मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता विसमसंठाणसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता समचउक्कोणसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता विसमचउक्कोणसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता समचक्कवालसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता विसमचक्कवालसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता चक्कद्धचक्कवालसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता छत्तागारसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ८ 'तत्थ

सूर्यप्र०

ता सव्वावि मंडलवाता समचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचक्कवालसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचक्कवालसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता चक्कद्धचक्कवालसंठिता पण्णत्ता एगे एवाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु—८ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता, एतेणं नएणं नायव्वं, नो चेव णं

१. 'णं' इति वाक्यालंकारे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेते एवमाहंसु ता छत्तागारसंठिता णं मंडल-संठिती आहितेति वएज्जा,"[1] एतेणं नएणं नायव्वं, नो चेव णं इतेरेहिं। इतरेहिं, पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ।

चं० १।२९-३२

सू० १।२८-३१

२९. 'ता अब्भंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडल-बाहा बाहिराए मंडलवयाए अब्भितरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहितेति वएज्जा। २८. ता अब्भितराओ....

३०. ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडल-बाहा बाहिराए मंडलवयाए एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसए अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा"[2]। २९. अब्भितराए मंडलवताए....

३१. 'ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भितरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए बाहिरा मंडल-बाहा एस णं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा"[3]। ३०. ता अब्भंतराओ...

३२. 'अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहितेति वएज्जा"[4]। ३१. ता अब्भितराए....

चं, चंवृ

सू०, सूवृ०

४।२. आहियत्ति वएज्जा

पण्णत्ता (सर्वत्र)

---

१. × (ट)।

२. ता अब्भंतरातो मंडलवतातो बाहिरा मंडलवता बाहिरा मंडलवतातो अब्भंतरा मंडलवया। बाहिरा मंडलवयाते एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिया (ट); ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहियाति वदेज्जा। ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडला बाहिरा एस णं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयणसते अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिए (व)।

३. ता अब्भंतराए मंडलवयाते अब्भंतरमंडलबाहा बाहिराए मंडलवताए बाहिरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वदेज्जा (ट); अब्भंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंच-नवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिता (व)।

४. अब्भंतराते मंडलवताते अब्भंतरा मंडलवता बाहिराए मंडलवयाते एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वदेज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसते आहियति वदेज्जा (ट); अब्भंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहिताति वएज्जा (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।३. एवं ताओ इत्यादि। एवमुक्तेन प्रकारेण चन्द्रसूर्यसंस्थितिगतेन प्रकारेणेत्यर्थः ८ एवानन्तरोदितचन्द्रसूर्यसंस्थितिगता गेहसंस्थितया सहाऽष्टौ प्रतिपत्तयो नेतव्याः यावदियमष्टमा वालग्गपोत्तिया संठिया तावखित्तसंठिए आहियत्ति वएज्जा।

४।३ एवमुक्तेन प्रकारेण एतेनान्तरोदितेनाभिलापेन।

एवं जाव वालग्गपोत्तिया संठिता तावखेत्तसंठिई पण्णत्ता। इति एवमनन्तरोक्तेन प्रकारेण चन्द्रसूर्यसंस्थितिगतेन प्रकारेणेत्यर्थः गृहसंस्थितताया ऊर्ध्वं तावद् वक्तव्यं यावद् वालाग्रपोत्तिकासंस्थिता प्रज्ञप्ता इति तच्चैवम्।

एके पुनरेवमाहुः

१०।६।२५ चंवृ हस्त० पत्र ७८

एवं नेयव्वमिति एवमुक्तेन प्रकारेण शेषमप्यमावास्याजातं नेतव्यम्। नवरं मार्गशीर्ष्यां माघ्यां फाल्गुन्यामाषाढयां च कुलोपकुलं भणितव्यम्, शेषाणां त्वामावास्यानां कुलोपकुलं नास्ति ततो न वक्तव्यम्।

सूवृ पत्र १२७

'एवं नेयव्व' मिति एवमुक्तप्रकारेण शेषमप्यमावास्याजातं नेतव्यम्, नवरं मार्गशीर्षीं माघीं फाल्गुनीमाषाढीममावास्यां कुलोपकुलमपि युनक्तीति वक्तव्यम्, शेषासु त्वमावास्यासु कुलोपकुलं नास्ति।

१०।६।५८ : चंवृ पत्र ८०

तिग तिग पंचग दस

जं० ७।१३० तिग तिग पंचेगसयं

सूवृ पत्र १३१

तिग तिग पंचग सय

दोनों वृत्तियों (चंवृ व सूवृ) में गाथाएं उद्धृत हैं।

१०।१०।६४ : चंवृ पत्र ८०,८१

एवमित्यादि एवमुक्तेन प्रकारेण एतेनाऽनंतरोदितेनाभिलापेन यथैव जंबूद्वीपप्रज्ञप्तौ भणितं तथैव इहापि भणितव्यम्। यावदाषाढमासचितायां। तसिं च णमित्यादि। तच्चैवं धणिट्ठा चउद्दस अहोरत्ते नेइ, सयभिसया सत्तअहोरत्ते नेइ, पुव्वभद्दवया अट्ठअहोरत्ते नेति।....पश्चात्यं तु सूत्रं सकलमपि सुगमम्।

सूवृ पत्र १३३

तत्र धनिष्ठा तस्मिन् भाद्रपदे मासे प्रथमान् चतुर्दश अहोरात्रान् स्वयं अस्तङ्गमनेनाहोरात्रपरिसमापकतया नयति, तदनन्तरं शतभिषक्नक्षत्रं सप्ताहोरात्रान् ततः..........एवं शेषमासगतान्यपि सूत्राणि भावनीयानि।

१०।१३।८४ सुपीए—'ट' सुठिए 'व' सुट्ठीजे 'चंवृ' पंचमः स्थपीतिः। 'सूवृ' पञ्चमः सुपीतः।
बंभे—'ट' पम्हे 'चंवृ' नवमः पक्ष्मः। 'सूवृ' नवमः ब्रह्मा।
तट्ठे—'चंवृ' द्वादशं स्रष्टा। 'सूवृ' द्वादश त्वष्टा।
वारुणे—'ट' वावरे 'चंवृ' अपरः पञ्चदशः। 'सूवृ' पंचदशः वारुणः।
वीससेणे—'ट' विजयसेणे 'चंवृ' अष्टादशो विजयसेनः। 'सूवृ' अष्टादशो विश्वसेनः।
सव्वट्ठे—'चंवृ' एकोनत्रिंशतितमः सत्यवान्। 'सूवृ' एकोनत्रिंशत्तमः सर्वार्थः।

१०।१४।८६ चंवृ	सूवृ
तृतीयो मणरहः	तृतीयो मणोहर :
दिवसाणं णामधेज्जा (ट)।	दिवसा।
दिवसानां नामधेयानि व्याख्यातानीति वदेत्।	दिवसा आख्याता इति वदेत्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०।२२।१४८ चंवृ पत्र ११०

चन्द्रविषयमतिदेशमाह—एवमित्यादि एवं येनाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्य उक्तास्तेनैवभिलापेनाऽमावास्याऽपि वक्तव्यास्तद्यथा प्रथमा द्वितीया तृतीया द्वादशी ।

१८।१ चंवृ पत्र १५५

वयं पुण मित्यादि । वयं पुनरुत्पन्नकेवलज्ञाना एवं वक्ष्यमाणेन वदामस्तमेव प्रकारमाह । ता इमीसे इत्यादि । ता इति पूर्ववत् अस्या रत्नप्रभायाः पृथ्व्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूद्र्ध्वं सप्तयोजनशतानि नवत्यधिकानि अबाधया कृत्वा इति गम्यते । अन्तरीकृत्येति भावः अत्रान्तरेऽधस्तनोरूपं ज्योतिश्चक्रं चारं चरति । मंडलगत्या परिभ्रमणं प्रतिपद्यते । तस्या अस्या एव रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागात् ऊद्ध्वमष्टौ योजनशतान्यबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सूर्यविमानं चारं चरति । तथा अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद् भूमिभागाद् उद्ध्वमष्टौ योजनशतान्यबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सूर्यविमानं चारं चरति । तस्मादेवाधस्तया अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागादूद्ध्वं अष्टौ योजनशतानि अशीत्यधिकानि अबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सूर्यविमानं चारं चरति । तस्मादेवाधस्तनात् ताराख्पाज्जोतिश्चक्रादूद्ध्वं नवति योजनान्यूर्ध्वमबाधया कृत्वा अत्रान्तरे चन्द्रविमानं चारं चरति । दशोत्तरयोजनशतमबाधया कृत्वा अत्रान्तरे चंद्रविमानं चारं चरति ।

सूवृ पत्र १८४

चन्द्रविषयं प्रश्नसूत्रमाह—'ता एएसि ण' मित्यादि, तत्र युगे एतेषामनन्तरोदितानां पञ्चानां संवत्सराणां मध्ये प्रथमाममावस्यां चन्द्रः कस्मिन्देशे स्थितः परिसमापयति ? भगवानाह—'ता जंसिण' मित्यादि, तत्र यस्मिन् देशे स्थितः सन् चन्द्रश्चरमां द्वाषष्टिं —द्वाषष्टितमाममावस्यां परिसमापयति, ततोऽमावास्यास्थानाद्—अमावास्यापरिसमाप्ति स्थानात् परतो मण्डलं चतुर्विंशत्याधिकेन शतेन छित्त्वा तद्गतान् द्वात्रिंशतं भागान् उपादायात्र प्रदेशे स चन्द्रः प्रथमाममावास्यां परिसमापयति 'एव' मित्यादि, एवमुक्तेन प्रकारेण येनैवाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्यो भणितास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि भणितव्याः । तद्यथा—द्वितीया तृतीया द्वादशी च ।

सूवृ पत्र २६१

'वयं पुण एवं वदामो' इत्यादि, वय पुनरुत्पन्नकेवलवेदसः एवं—वक्ष्यमाणेन प्रकारेण वदामस्तमेव प्रकारमाह—'ता इमीसे' इत्यादि, ता इति पूर्ववत्, अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागादूर्ध्वं सप्तयोजनशतानि नवतानि नवत्यधिकानि उत्प्लुत्य गत्वा अत्रान्तरे अधस्तनं ताराविमानं चारं चरति—मण्डलगत्या परिभ्रमणं प्रतिपद्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशोत्तरं योजनशतमबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सर्वोपरितनं तारारूपं ज्योतिश्चक्रं चारं चरति। तथा सूरविमाणातो इत्यादि। ता इति तस्मात्सूर्यविमानादूर्द्ध्वमशीतियोजनान्यबाधया कृत्वा अत्रान्तरे चन्द्रविमानं चारं चरति। एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव नेयव्वमिति एवमुक्तेन प्रकारेण यथैव जीवाभिगमेऽभिहितं तथैव ज्ञातव्यम्।

१९।१ चंवृ पत्र १९१

एवमुक्तेन प्रकारेण एतेनानन्तरोदितेनाभिलापेन या एव तृतीये प्राभृते द्वादशप्रतिपत्तयः उक्तास्ता एव इहापि ज्ञातव्याः नवरमनेन क्रमेण ज्ञातव्याश्चतुर्थ्यां प्रतिपत्तौ प्रत्येकं सप्त चन्द्राः सूर्याश्च वक्तव्याः। पंचम्यां दश एवं यावद् द्वादश्यां प्रतिपत्तौ द्वाशप्तत्तं चन्द्रसहस्रं द्वासप्तसूर्यसहस्रमिति। तत्र चैवमभिलापः एगे पुण एवमाहंसु। ता सत्त······

सूवृ पत्र २७१

एवं··—उक्तेन प्रकारेण एतेनानन्तरोदितेनाभिलापेन तृतीयप्राभृतप्राभृतोक्तप्रकारेण द्वादशप्रतिपत्तिविषयं सकलमपि सूत्रं नेतव्यं, तच्चैवम्—'सत्तचंदा सत्त सूरा' इति, एगे पुण एवमाहंसु ता सत्त···

चंवृ पत्र १९१

ता जंबूद्दीवे णं दीवे दो चंदा इत्यादि अत्र जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ त्ति वचनं सूत्रं पाठो द्रष्टव्यः। दो चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा। दो सूरिया तवयंसु वा तवयंति वा तवइस्संति वा। छप्पन्नं णक्खत्ता जोगं जोएंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा। छावत्तरं गहसयं चारिं चरिंसु वा चरिस्संति वा। एगं सयसहस्सं बत्तीसं च सहस्सा नव सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं सोभंसु वा सोभिस्संति वा

दो चंदा दो सूरा नक्खत्ता खलु हवंति छप्पन्ना।
बावत्तरं गहसयं, जंबूदीवे वियारी णं॥
एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं।
नवसयसया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीणं॥

इति। अस्य व्याख्या द्वौ चंद्रौ·········

१९।१ सूवृ पत्र २७२

'ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा इत्यादि, जम्बूद्वीपे द्वौ चन्द्रौ·······

चंवृ पत्र १९२।१

ता लवणे समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा जाव ताराउत्तिवचनं········। इदं सकलमपि सूत्रं सुगमं

सूवृ पत्र २७३

ता लवणेणं समुद्दे इत्यादि सुगमं, लवणसमुद्दे चत्वारः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरम् लवणसमुद्रे चत्वारः ।

चंवृ १६२।१

ता लवणन्नं समुद्दमित्यादि सुगमं । ता धायइसंडेणमित्यादि । अत्र जहा जीवाभिगमे जाव ताराउत्ति…………तारागणकोडिकोडीणमिति । इदमपि सुगमं नवरं

सूवृ पत्र २७३

'ता लवणं णं समुद्द' मित्यादि सकलमपि सुगमम्, नवरम्

चंवृ पत्र १६२।२

धायइसंडेणमित्यादि सुगमं । ता कालोए णं समुद्दे इत्यादि । अत्र एवं विष्कंभो……तारागणकोडिकोडीणमिति एतदपि सुगमं । नवरं

सूवृ पत्र २७३

ता धायइसंडण्ण' मित्यादि, एतदपि सकलं सुगमं, 'ता कालोए णं समुद्दे' इत्यादि, एतदपि सुगमं, नवरं

चंवृ १६३।१

ता कालोय णं समुद्दपुक्खरवरेणमित्यादि सुगमं, ता पुक्खरवरेणमित्यादि । अत्र एवं विष्कंभो परिक्खेवो इमं जाव ताराउत्ति…तारागणकोडिकोडीणमिति सुगमं । गणितभावना त्वियं पुष्करवरद्वीपस्यैकतोपि चक्रवालविष्कंभः षोडशलक्षा परतोपि षोडशेति । द्वात्रिंशतिकालोदधिसमुद्रे एकतोप्यष्टौ लक्षा अपरतोप्यष्टाविति षोडश-धातकीषंडेत्वेकतोपि चतस्रो लक्षाः अपरतोपि चतस्रो ।

सूवृ २७३

ता कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरेण मित्यादि सुगमं, गणितभावना त्वियं पुष्करवरद्वीपस्य पूर्वतः षोडश लक्षा अपरतोपीति द्वात्रिंशल्लक्षाः कालोदधेः पूर्वतोष्टौ अपरतोऽप्यष्टाविति षोडश धातकीखण्ड एकतोपि चतस्रो लक्षा अपरतोपि चतस्र इत्यष्टौ ।

चंवृ पत्र १६३

ता अभ्यंतरपुक्खरद्धेणमित्यादि सुगमं ।…तारागणकोडिकोडीणं । सोभेंसु वा इति सुगमं । नवरं परिधिगणितभावना

सूवृ पत्र २७४

ता अब्भितरपुक्खरद्धे वा' मित्यादि सर्वमपि सुगमं, नवरं परिधिगणितभावना

चंवृ पत्र १६४।१ से १६५।१

ता मणुसखेत्तेणं केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहियत्ति वएज्जा । एवं विष्कंभो परिक्खेवो जोइसं जोइसगाओ य जाव एकससीपरिवारो……एतस्य समस्तस्यापि सूत्रस्य क्रमेण व्याख्या तत्र मनुष्यक्षेत्रस्यायामविष्कंभविषये पंचचत्वारिंशल्लक्षाः

सूवृ पत्र २७४

ता मणुसखेत्ते णं केवइयमित्यादि सुगमं । नवरं मानुषक्षेत्रस्यायामविष्कंभपरिमाणं पञ्चचत्वारिंशल्लक्षाः

चंवृ पत्र १७६

तथा विचित्रैर्नानारूपैरुल्लोचैश्चन्द्रोदयैराकीर्णं क्वचित् । चिल्लगाति पाठसूत्रचिल्लगं देदीप्यमानं

सूवृ पत्र २९३

विचित्रेण—विविधचित्रयुक्तेनोल्लोचेन — चन्द्रोदयेन 'चिल्लियं' त्ति दीप्यमानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंवृ पत्र १७७

तत्थ खलु इत्यादि। तत्र तेषु चंद्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराारूपेषु मध्ये इमेऽष्टाशीति संख्या ग्रहाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा इंगालए इत्यादि अंगारकः १ विकालकः २ लोहिताक्षः ३ शनैश्चरः ४·········अतवृत्तिः ८० एकजटी ८१ द्विजटी ८२ करः ८३ करिकः ८४ राजा ८५ अर्गलः ८६ भावकेतु ८७ धूम्रकेतुः पुष्पकेतुः ८८ एते अंगारकादयो ग्रहाः सर्वेपि प्रत्येकं चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतसृणां अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां मामानीकाधिपतीनां षोडशानां आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च स्वविमानवास्तव्यानि देवानां चाधिपत्यमनुभवन्ति। सम्प्रति सकलशास्त्रोपसंहारमाह—

सूवृ पत्र २९५

तत्थ खलु' इत्यादि, तत्र—तेषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रताराारूपेषु मध्ये ये पूर्वमष्टाशीतिसङ्ख्या ग्रहाः प्रज्ञप्ताः ते इमे, तद्यथा 'इंगालए' इत्यादि सुगमं एतेषामेव नाम्नां सुखप्रतिपत्त्यर्थं संग्रहणीगाथाषट्कमाह इंगालए वियालए लोहियंके सणिच्छरे चेव।···· अनिवृत्ति ७९ एकजटी ८० द्विजटी ८१ करः ८२ करिकः ८३ राजः ८४ अर्गलः ८५ पुष्पः ८६ भावः ८७ केतुः ८८। सम्प्रति सकलशास्त्रोपसंहारमाह—

चंवृ पत्र १७८

एसगहियावसंतीथद्धेगार वियमाणि पडिणीए। अबहुस्सुए न देयातविचरीए भवेदेया एषा चन्द्रप्रज्ञप्तिः सूर्यसम्यक्करणेन·······

सद्धाधिउट्ठाणुच्छाहकम्मबलविरियपुरिसकारेहिं। जो सिक्खाओविसंतो अभायणे पक्खिविज्जाहिं। सो पवयणकुल-गण-संघबाहिरो नाणविणयपरिहीणो अरहंत-थेर-गणहर-मेरं किर होइ वोलीणे श्रद्धा श्रवणं·······

स्वयं शिष्यतोपि चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्रार्थोभयोपि सन् यो दाक्षिण्यादिना अन्तेवासिन्यभाजनेऽयोग्ये प्रक्षिपेत्·······

यत् चन्द्रप्रज्ञप्तिलक्षणं ज्ञानं मुमुक्षुणा सता शिक्षितं। तन्नियमादात्मन्येव धर्त्तव्यम्। ननु जातुचिदप्यविनीतेषु दातव्यं तदानोक्तप्रकारेण आत्म पर·······

सूवृ पत्र २९६

'एषा गहियावि' इत्यादि गाथाद्वयं, एषा---- सूर्यप्रज्ञप्तिः स्वयं सम्यक्करणेन ·······

'सद्धे' त्यादि, श्रद्धा श्रवणम्·······

स्वयं शिक्षितोपि गृहीतसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रार्थोभयोपि सन् यो दाक्षिण्यादिना अन्तेवासिनि अभाजने—अयोग्ये प्रक्षिपेत् ····

यत् ज्ञानं—सूर्यप्रज्ञप्त्यादि स्वयं मुमुक्षुणा सता शिक्षित तन्नियमादात्मन्येव धर्त्तव्यं, न तु जातुचिदप्यविनीतेषु दातव्यं, उक्तप्रकारेण तद्दाने आत्म-पर·········

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अणागारेहिं जाव पासति	३०।२७,२८	३०।२८
अणिट्ठतरिया चेव जाव अमणामतरिया	१७।१३०	१७।१२३
अणिट्ठतरिया जाव अमणामतरिया	१७।१२५	१७।१२३
अबाहा जाव णिसेगो	२३।६८,७४	२३।६०
आगारेहिं जाव जं	३०।२६	३०।२५
आभिणिबोहियणाण एवं जहेव कण्हलेस्साणं तहेव भाणियव्वं जाव चउहिं	१७।११३	१७।११२
इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया	१७।१२६,१२७,१३४	१७।१३८
उद्दे जाव एलए	११।१७,१६,२०	११।१६
उदएणं जाव अट्ठविहे	२३।२१,२२	२३।१३
उववेया जाव फासेणं	१७।१३४	१७।१३३
एत्तो जाव अमणामतरिया	१७।१३१,१३२	१७।१२३
एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे भणियं तहा भाणियव्वं जाव से तेणट्ठेणं	३४।१२	१५।४६
एवं जहा नेरइयाणं	२८।३६	२८।२२
एवं मणूसाण वि	३४।१६	३४।१८
कंता जाव मणामा	२८।१०५	२८।२४
कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुतोवउत्ता	२३।२००	२३।१६६
कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुतोवउत्ते	२३।२०१	२३।१६६
कालं जाव खेत्तओ	१८।११७	१८।२६
खेत्तं जाव पासति जाव इत्तरिय°	१७।१०७	१७।१०६
गोयमा जाव णण्णत्थ	११।१६,२०	११।११
गोयमा जाव रोएज्जा	२०।३४	२०।१७
जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु जाव जे णं	२०।१८	२०।१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा भासुद्देसए जाव णियमा	२८।१२-१६	११।६२-६६
जहेव नेरइया तहेव	२८।३५	२८।३३
जाणंति जाव अत्थेगइया	१५।४६	१५।४७
जावतियं तं चेव	१५।५१	१५।५१
णेरइए जाव पासति	१७।१०७	१७।१०६
णेरइए तं चेव जाव इत्तरिय°	१७।१०७	१७।१०६
तं चेव	१७।१५४	१७।१५१
तं चेव जाव चिट्ठति	१५।५२	१५।५२
तं चेव जाव णो	३४।१६	३४।१५
तं चेव जाव मणपरियारणा	३४।१८	३४।१८
तहेव पुच्छा	२३।१६	२३।१३
तहेव पुच्छा उत्तरं च, णवरं—अमणुण्णा सद्दा जाव कामदुहता	२३।१६	२३।१५
तेणट्ठेणं जाव णो	३०।२६	३०।२६
पसत्थेणं जाव फासेणं जाव एत्तो	१७।१३३	१७।१३२
पासइ जाव विसुद्धतरागं	१७।११०	१७।१०८
पुच्छा	१८।१७,१८,२०-२३,२६-३६,३६, ४२-४४,४६,४६-५१,५७,६२,६३, ६५,६६,६८,७०-७५,७७,७८,८०, ८२,८४,८५,८७-६०,६३,६४,६७, ६८,१००-१११,११३,११४,११६, ११७,११६,१२०,१२२,१२३,१२५-१२७	१८।१
पुच्छा	२१।४०	२१।३८
पुच्छा	२३।१६,२१,२३	२३।१३
पुच्छा	२३।२८,३०,४०	२३।२५
पुच्छा	२४।११	२४।४
पुच्छा	२८।४१,४३,४८	२८।२४
पुच्छा। गोयमा! एवं चेव, णवरं—अणिट्ठा सद्दा जाव हीणस्सरता दीणस्सरता अणिट्ठस्सरता अकंतस्सरता जं वेदेते सेसं तं चेव जाव कोहसविहे	२३।२०	२३।१६
पुच्छा। गोयमा! एवं चेव, णवरं—जातिविहीणया जाव इस्सरियविहीणय	२३।२२	२३।२१
बद्धस्स जाव कतिविहे	२३।१७	२३।१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं	२३।१४,१५	२३।१३
मणुस्सा एवं चेव, णवरं—आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुपज्जति	२८।४६-७१	२८।४-१६,३२,२१, २२,४०,४३-४५
मणूसस्स अतीता वि पुरेक्खडा वि जहा णेरइयस्स पुरेक्खडा	३६।१०	३६।६
महिड्ढीए जाव महासोक्खे	३६।८०	२।३०
वाससताइं जाव णिसेगो	२३।६६	२३।६०
सपज्जवसिए जाव अवड्ढं	१८।६४	१८।५६
समट्ठे एत्तो जाव असणामतरिया	१७।१२४	१७।१२३
सम्मुच्छिमसामण्णपुच्छाकायव्वा	४।१३४	४।११६
सिज्झति जाव अंतं	३६।६२	३६।८८
सीलं वा जाव पडिवज्जित्तए	२०।३४	२०।१७
सेसं जहा नेरइयाणं जाव आहच्च	२८।३२,३३	२८।२०,२१

जंबुद्दीवपण्णत्ती

अंचेइ जाव पणामं	३।१२	३।६
अंचेत्ता जाव करयलपरिग्गहियं	५।५८	५।२१
अंतलिक्खपडिवण्णे जाव उत्तरपुरत्थिमं	३।१३०	३।४३
अंतलिक्खपडिवण्णे जाव पूरेंते	३।४३	३।३०
अंतवाले जाव पडिच्छइ	३।१३३,१३४	३।२६,२७
अकोहे जाव अलोहे	२।६८	पज्जो० ७८
अच्छरगणसंघसंविकिण्णा जाव पडिरूवा	१।३१	पण्ण० २।३०
अणंते जाव समुप्पन्ने	२।८५	पज्जो० ८१
अणुपविसइ जाव णमि	३।१३७	३।२०
अणुसज्जिस्संति जाव सणिचारी	२।१६३	२।४६
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे जाव सुहसंकमे	३।१००	३।६६
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठेहिं जाव सुहसंकमेहिं	३।१०१	३।६६
अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे जाव समुद्दरव°	३।१८०	३।२२
अदंडकोदंडिमं जाव सपुरजणजाणवयं	३।२१२	३।१२
अपत्थियपत्थगा जाव परिवज्जिया	३।१२४	३।७७
अयमेयारूवे जाव संकप्पे	५।२२	५।२०
अवक्कमित्ता जाव अब्भवद्दलए विउव्वंति २ जाव तं णिहयरयं	५।७	राय० सू० १२
अहोरत्तंसि जाव चारं	७।२७	७।२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउहघरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं	३।६०	३।४३
आपूरेमाणा जाव अतीव	५।३८	राय० सू० ४०
आभिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति	३।१७३,१७४	३।१५,१६
आयामेणं जाव वासं	२।१४४,१४५	२।१४१
आसत्तोसत्तविपुलवट्ट जाव करेइ	३।८८	३।७
आसयंति जाव भुंजमाणा	१।३३	१।१३
आसयंति जाव विहरंति	४।२	१।१३
आसोए जाव आसाढे	७।१०३	भ० १८।२१६
इट्टत्तराए चेव जाव आसाए	२।१८	जी० ३।५९९
इट्टत्तरिया चेव जाव मणामतरिया	२।१६	जी० ३।२७६
इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहित्तिकट्टु	३।२०९	३।१८५
इट्ठाहिं जाव जयजयसद्दं	५।५८	३।१८५; शाव्
इड्ढी एवं चेव जाव अभिसमण्णागए	३।१२६	३।१२६
इत्थिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं	३।२१४	३।२०४
इमं जाव विणमी	३।१३८	३।२६
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।१८८	३।२६
इव जाव ससिव्व	३।१६,१७	ओ० सू० ६३
ईरियासमिए जाव पारिट्ठावणियासमिए	२।६८	पज्जो० ७८
ईसर जाव पभितयो	३।१०	ओ० सू० ५२
उक्करं जाव मागह	३।२८	३।१२
उक्किट्ठाए जाव अट्ठाहियं जाव पच्चप्पिणंति	३।६४-६७	३।५६-५९
उक्किट्ठाए जाव उत्तरेणं	३।१३३	३।२६
उक्किट्ठाए जाव एवं	३।५६	३।२६
उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं	२।६०	जी० ३।४४३
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	५।५,४४	३।२६
उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणे	५।४७	३।२६
उक्किट्ठाए जाव सक्कारेइ सम्माणेइ, २ त्ता पडिविसज्जेइ जाव भोयणमंडवे, तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति	३।७२-७५	३।५६-५९
उक्किट्ठिसीहणाय जाव करेमाणे	३।९९	३।२२
उत्तरेणं जाव चउणवइं	४।८६	१।२०
उप्पलहत्थगया जाव अप्पेगइया	३।१०	शाव्
उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरं चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जगं सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य जाव दाहिणिल्ले अंतवाले जाव अट्ठाहियं	३।३७-४२	३।२३-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडयाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं पभासतित्थोदगं च गिण्हइ २ त्ता जाव पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी जाव पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले, सेसं तहेव जाव अट्ठाहिया निव्वत्ता	३।४५-५०	३।२३-२९
उवट्ठाणसाला जाव सीहासणवरगए	३।२१९	३।१८६
उवाएणं जाव संकममाणे	७।८४	७।७८
उवागच्छित्ता जाव आगायमाणीओ	५।७	५।५
उवागच्छित्ता जाव ससिव्व	३।२२२	३।९
एज्जमाणा जाव निव्वुइकरेणं	५।३८	राय० सू० ४०
एयारूवाए जाव अभिसमण्णागए	३।१२२	३।२६
एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स	३।१७८,१७९ शावृ, हीवृ, ओ० सू० ६४	
एवं पच्चत्थिमिल्लाए जाव पच्चत्थिमिल्लं	४।१०८	४।१
कट्टु जाव पडिसुणेइ	३।८४	३।१९
कडगाणि य जाव आभरणाणि	३।७२	३।२६
कडगाणि य जाव मागह°	३।२६	३।२६
कडगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पडिविसज्जेइ	३।५६,५७	३।२६,२७
कत्तिइण्णं जाव वत्तव्वं	७।१४२	७।१४१
करयल जाव अंजलिं	३।६,२०४	३।५
करयल जाव एवं	५।४६	३।५
करयल जाव कट्टु	३।५	ओ० सू० २०
करयल जाव जएणं	३।५	ओ० सू० २०
करयल जाव मत्थए	३।८८	३।५
करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	३।१५१	३।५
करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए	३।११४,१२६; ५।५८	३।५
करेइ अवसिट्ठं तं चेव जाव निहिरयणाणं	३।१६४-१६६	३।१८-२०
करेत्ता जाव णट्टविहिं	५।५८	शावृ
करेत्ता जाव वेयड्ढगिरिकुमारस्स	३।६१-६३	३।१८-२०
करेत्ता जाव सिंधूए	३।५२-५४	३।१८-२०
कामगमाणं जाव मणोरमाणं	७।१७५	७।१७५
किण्हचामरज्झया जाव सुक्किल°	४।२९	जी० ३।२८८
केणट्ठेणं जाव सासए	४।३४	४।२२, पुवृ, हीवृ
कोट्ठपुडाण वा जाव पीसिज्जमाणाण	४।१०७	जी० ३।२८३
कोडीए जाव दोहिवि पुट्ठे	४।१७२	४।१०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहे वा जाव लोहे	२।६६	पज्जो० ७६
गच्छंति जाव नियमा	७।४०-४८ भ० १।२५८-२६६, शाव्	
गयवई जाव दुरुढे	३।२१५	३।१७
गामाइ वा जाव सण्णिवेसाइ	२।२१	ठाणं २।३९०
गाहावइकुंडप्पमाणं जाव मंगलावत्त	४।१९५	४।१८३; हीव्
गुणेत्ता जाव तं चेव	७।३३	७।३१
घडमुहपवत्तिएणं जाव साइरेग°	४।९०,९१	४।२३
°घाइय जाव दिसोदिसिं	३।११०	३।१०८
चंदिम जाव ताराख्वा	७।५८	७।५५
चंदे जाव संकममाणे	७।७५,७८	७।६९
चक्करयणदेसियमग्गे जाव खंडगप्पवायगुहाओ	३।१६३	३।९३
चच्चर जाव महापह	३।२१२	३।१८५
चरइ जाव केवइयं	७।८०	७।७६
चेव जाव गंधे	४।१०७	जी० ३।२८१
छत्तपडागा जाव संपट्ठिया	३।१७८	ओ० सू० ६४
जा पढममज्झिमेसु वत्तव्वया ओसिप्पिणीए सा भाणियव्वा	२।१५८	२।५५
जुगमुसलमुट्ठि जाव वासं	३।१२२	३।११५
जुगमुसलमुट्ठि जाव सत्तरत्त	२।१४२	२।१४१
जोएइ जाव कुलोवकुलं	७।१३९	७।१३९
जोयणंतरिएहिं जाव जोयणुज्जोयकरेहिं	३।९६	३।९५
णरवई जाव सव्वे	३।१३१	३।२४
णवजोयणविच्छिण्णं जाव कयमालस्स	३।६९-७१	३।१८-२०
णवजोयणविच्छिण्णं जाव खंधावारणिवेसं	३।१८०	३।१८
णवजोयणविच्छिण्णं जाव विजयखंधावारणिवेसं	३।१६४	३।१८
णवरं पम्हलसूमालाए जाव मउडं	३।२११	जी० ३।४४९
णाणामणिपंच जाव कित्तिमेहिं	२।१२७	२।५७
णिक्खममाणस्सवि जाव अप्पडिवुज्झमाणे	३।२०४	३।१८६
णिरयगामी जाव अंतं	१।१५१	१।२२
णिरयगामी जाव अप्पेगइया	२।१४८;४।१०१	१।२२
णिरयगामी जाव देवगामी	२।१२३	१।२२
णिरयगामी जाव सव्वदुक्खाणमंतं	२।१२८	१।२२
णेया वेढो भरहस्स	३।१०९	३।७७
णो चेव णं तेसिं मणुयाणं आबाहं वाबाहं वा जाव पगइभद्दया	२।४१	२।३६
तयणंतराओ जाव संकममाणे	७।८१	७।६९
तलवर जाव सत्थवाह°	३।१७८,१८८,२१६,२२१	३।१०
तहेव पविसंतो मंडलाइं आलिहइ	३।१५८-१६०	३।९४-९६
तहेव सेसं जाव विजयखंधावार°	३।३०	३।१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थगरचियगं जाव अणगारचियगं	२।१११	२।९५
तित्थगरचियगं जाव णिव्वावेंति	२।११२	२।१११
तित्थगरचियगाए जाव अणगारचियगाए	२।१०५-१०७, १०९	२।९५
तित्थगरचियगाए जाव विउव्वंति	२।१०८	२।१०७
तित्थगरसरीरगं जाव अणगारसरीरगाणि	२।१०८	२।१०७
तित्थयरस्स जाव फुट्टिहीतिकट्टु	५।७३	५।७२
तिसोवाणपडिरूवएणं जाव पज्जुवासंति	३।२०६	३।२०५
तुरग जाव वणलयभत्तिचित्ताओ	२।१०१	१।३७
तुरियाए जाव उद्धुयाए	३।१३८	३।२६
तुरियाए जाव वीतिवयमाणा	३।११३	३।२६
तेणेव जाव पच्चप्पिणंति	५।७०	३।१३
तेरसहिं जाव छेत्ता	७।८०,८१,८३	७।७९
तोरणेणं जाव पवूढा	४।७७	४।३५
दंडणायग जाव दूय	३।९	शावृ
दंडणायग जाव संधि	३।७७	३।९
दिव्वतुडिय जाव आपूरेंते	३।१७२	३।१४
दिव्वा वा जाव पडिलोमा	२।६७	पज्जो० ७७
दुरंतपंतलक्खणे जाव परिवज्जिए	३।१२२	३।२६
दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरि°	३।११४	३।५
दुरुहित्ता जाव सीहासणंसि	५।४१	राय० सू० ४७
दुरुहित्ता तहेव जाव णिसीयंति	५।४२	५।४२
दुस्समदुस्समाकाले जाव सुसमसुसमाकाले	२।३	२।२
देवराया जाव पच्चप्पिणइ	५।७१	३।१३
देवाणुप्पिया जाव अम्हे	३।१३८	३।२६
देवा य जाव विहरंति	१।३६	१।१३
देविड्ढि जाव उवदंसेमाणे	५।४४	राय० सू० ५६
देविड्ढि जाव दिव्वं	५।४४	राय० सू० ५६
देवेण वा जाव अग्गिपओगेण वा जाव उद्दवित्तए	३।१२५	३।११५
नाणेणं जाव चरित्तेणं	२।७१	पज्जो० ८१
पउंजित्ता जाव पम्हसूमालाए	५।५८	शावृ, जी० ३।४९९
पउमवरवेइयाए जाव संपरिक्खित्ता	४।२४२	४।३
पंडुयए जाव संखे	३।१७८	३।१६७
पकरेंति जाव जहण्णेणं	७।५९,६०	७।५६,५७
पगिण्हित्ता जाव अट्ठमभत्तं	३।१८२	३।२०
पच्चत्थिमाभिमुहे जाव समप्पेइ	६।२४	६।२४
पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा	४।५५	४।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे	१।४८	१।२०
पच्चप्पिणइ सेसं तहेव जाव मज्जणघराओ	३।३३,३४	३।२०,२१
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	३।२००	३।१६
पच्चुवसमंति एवं पुप्फवद्दलगंसि पुप्फवासं वासंति, वासित्ता जाव कालागुरुपवर जाव सुरवराभिगमणजोग्गं	५।७	राय० सू० १२
पडिणिक्खमित्ता जाव उत्तरपुरत्थिमं	३।१४०	३।४३
पडिणिक्खमित्ता जाव गंगाए	३।१४६	३।४३
पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणं	३।१३६	३।४३
पडिणिक्खमित्ता जाव पूरेंते	३।५१	३।४३
पडिसाहरेमाणे जाव जेणेव	५।४४	राय० सू० ५६
पण्णत्ते सयणिज्जवण्णओ भाणियव्वो	४।१३	जी० ३।८०७; शावृ
पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव	२।१४२	२।४१
पतणतणाइस्सइ जाव वासं	२।१४३	२।१४१
पत्तेयं जाव अंजलिं	३।२०९	जी० ३।४४६
परामुसइ वेढो जाव छत्तरयणस्स	३।११९	३।९२
परिगरणिगरियमज्झो जाव तए	३।१३१	३।२४
परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला	४।१०७	जी० ३।२८१
पवरवाहण जाव सेणाए	३।२१	३।१७
°पवरवीर जाव दिसोदिसिं	३।१०९	३।१०५
पाईणपडीणायया जाव पच्चत्थिमिल्लाए	४।१	१।१२०
पाउप्पभाए जाव जलंते	३।१८८	ओ० सू० २२
पारेत्ता जाव सीहासणवरगए	३।५८	३।२८
पासाईयाओ जाव पडिरूवाओ	२।१५	१।८
पासादीया जाव पडिरूवा	२।१४	१।८
पिंडिम जाव पासादीयाओ	२।१२	ओ० सू० ७
पीइमणे जाव अंजलिं	३।१९	३।८
पुप्फारुहणं जाव वत्थारुहणं	३।८८	३।१२
पुरत्थिम जाव पुट्ठे	४।९८	४।१
पेच्छिज्जमाणे एवं जाव णिग्गच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं	२।६५	ओ० सू० ६९ वाचनान्तर; वृत्तित्रय
पोसहसालाए जाव अट्ठमभत्तिए	३।६३	३।५४
पोसहसालाए जाव णमि	३।१३७	३।५४
पोसहसालाए जाव णिहिरयणे	३।१६६	३।५४
°प्पभिइओ तेवि तह चेव णवरं दाहिणिल्लेणं	३।२०६	३।२०५
फासपज्जवेहिं जाव परिहायमाणे	२।१३०	२।५१
बंभयारी जाव अट्ठमभत्तिए	३।८४,८५	३।२०,२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंभयारी जाव कयमालगं	३।७१	३।६३
बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	३।५४	३।२०
बहवे जाव करेंति	२।११५	२।११४
बहवे जाव सत्थवाह°	३।१०	३।१७८
बहुमज्झदेसभाए जाव उम्मुग्ग	३।१६१	३।९७
बहुसंघयणा जाव अप्पेगइया	१।५०	१।२२
बहुसमरमणिज्जे जाव भविस्सइ, मणुयाणं जा चेव ओसप्पिणीए पच्छिमे तिभागे वत्तव्वया सा भाणियव्वा:		
कुलगरवज्जा उसभसामिवज्जा	२।१५६,१५७	२।५७,५८
भगिणी मे जाव संगंथसंथुया	२।६६	सू० २।१।५१; शावृ
भवण जाव वेमाणिएहिं	४।२४८	४।२४८
भवणवइ जाव अट्ठाहियाओ	२।१२०	२।११६
भवणवइ जाव जे	५।७३	५।७२
भवणवइ जाव तित्थगर जाव भारग्गसो	२।११०	२।१०९
भवणवइ जाव देवेहिं	४।२५२	४।२४८
भवणवइ जाव भारहगा	४।२५०	४।२४८
भवणवइ जाव वेमाणिए	२।१०१,१०६,११४	२।९५
भवणवइ जाव वेमाणिया	२।९६,१००,१०२,१०४,११३,११६	२।९५
मंसाहारा जाव कहिं	२।१३७	२।१३५
°मग्गे जाव समुद्दरवभूयं	३।१०६	३।२२
मडंब जाव जोयणंतरियाहिं	३।१८०	३।१८
मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी	३।६८	पज्जो० ७८
मणुण्णा जाव गंधा	४।१०७	जी० ३।२८१
महज्जुईए जाव पलिओवमट्ठिईए	३।२५६	१।२४
महज्जुईए जाव महासोक्खे	३।११५	१।२४
महज्जुईया जाव महासोक्खा	१।३१	१।२४
महया जाव आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहराहित्तिकट्टु	३।१८५	शावृ
महया जाव भुंजमाणे	३।१८७	३।८२
महाणईओ तहेव णवरं पच्चत्थिमिल्लाओ	३।१६१	३।९७
महामेहणिग्गए जाव मज्जणघराओ	३।२१	३।९
महिड्ढीए जाव णो	३।१२५	३।११५
महिड्ढीयं जाव उद्दवित्तए	३।१२४	३।११५
माडंबिय जाव सत्थवाह०	३।८६	३।१०
य जाव छेत्ता	७।८२	७।७९
रयणकुच्छिधारिए एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव धण्णासि	५।४६	५।५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणाणं जाव संवट्टगवाए	५।५	रा० सू० १२
रयथामयकूले जाव पासाईए जाव पडिरूवे	४।३८	४।२५
राईसर जाव सत्थवाह°	३।१८६	३।१०
रायधम्मे जाव धम्मचरणे	२।१५७	२।१२८
राया जाव तमाणत्तियं	३।३२	३।१३
राया जाव पच्चप्पिणंति	३।१९८	३।१३
राया जाव पडिविसज्जेइ	३।१३९	३।२७
राया जाव पासइ	३।१७३	३।३१
रुट्ठे जाव पीइदाणं सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि जाव दहोदगं	३।१३३	३।२६
रूवेहिं जाव णिओगेहिं	५।४३	[राय० सू० ५४, शावृ
रोहिया णं जहा रोहियंसा पवहे य मुहे य भाणियव्वा जाव संपरिक्खित्ता	४।७२	४।४३
लवणं जाव समप्पेइ	४।३७	४।३५
लूहेत्ता एवं जाव कप्परुक्खगं	५।५८	शावृ, जी० ३।४४९
लोगपालेहिं जाव चउहिं	२।९०	५।१९
वंदणघडसुकय जाव गंधुद्धुयाभिरामं	३।७	ओ० सू० ५५
वंदेज्ज वा जाव पज्जुवासेज्ज	२।६७	शावृ
वणसंडेणं जाव संपरिक्खित्ते	४।७६	४।३१
वणसंडेहिं जाव संपरिक्खित्ते	४।८६	४।३१
वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुण°	२।५४,१३८,१४०,१५३	२।५१
वण्णपज्जवेहिं जाव परिवड्ढेमाणे	२।१४९	२।५१
वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव अणंतेहिं उट्ठाणकम्म जाव परिहायमाणे	२।१२१	२।५१
वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव परिहाणीए	२।१२६	२।५१
वण्णेणुववेए जाव फासेणुववेए	२।१८	जी० ३।५९९
वाइय जाव दिव्वाइं	७।१८२	५।१८
वाइय जाव भुंजमाणा	७।५८	५।१८
वाइय जाव भोगभोगाइं	५।१	५।१८
वालग्गे एवं हेमवयएरण्णवयाणं मणुस्साणं पुव्वविदेह अवरविदेहाणं मणुस्साणं	२।६	२।६
वित्थडा तं चेव जाव तीसे	७।३३	७।३१
विमलदंडं जाव अहाणुपुव्वीए	३।१७८	ओ० सू० ६४
विसयवासी जाव अहण्णं	३।१३३	३।२६
विसुद्धरुक्खमूलाइं जाव चिट्ठंति	२।९	२।८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	२।८८	२।८९
वीरिय जाव केवलकप्पे	३।१८८	३।१८८
वेउव्विय जाव समोहण्णंति	३।१९२	३।१९२
वेढिम जाव विभूसियं	३।२११	जी० ३।४४९
वेत्तेण वा जाव कसेण	२।६७	शावृ
वेरुलियविमलदंडं जाव धूवं	३।८८	३।१२
संथरइ जाव कयमालस्स	३।८४	३।२०
सकोरंट जाव चाउचामर°	३।६	ओ० सू० ६३
सक्कस्स जाव अंतियं	५।२२	५।२०
सक्करा वा जाव मणुस्से	३।९८	३।९८
सक्के जाव आसणं	५।२१	५।२०
सक्के तं चेव जाव अंतियं	५।२६	५।२२
सखिखिणीयाइं जाव जएणं	३।१३८	३।२६
सच्चेव सव्वा सिंधुवत्तव्वया जाव णवरं कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाइं सेसं तं चेव जाव महिमत्ति	३।१४१-१४८	३।५२-५९
सण्णद्धबद्धवम्मियकवया जाव गहियाउह°	३।१२४	३।७७
सद्दावेत्ता जाव अट्ठाहियाए महामहिमाए	३।५८,५९	३।२८,२९
सद्दावेत्ता जाव पोसहसालं	३।१८०-१८२	३।१८-२०
समचउरंसे जाव तिक्खुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेइ वंदति वंदित्ता जाव एवं	१।५,६	भ० १।९,१०
समाणीए जाव पच्चत्थिमं	३।६८	३।४३
समाणे जाव सरसगोसीस°	३।८२	शावृ
समाणे सेसं तहेव	३।३६	३।२२
सम्माणेत्ता जाव पुरोहियरयणं	३।२१९	३।१८६
सयंति जाव फलवित्तिविसेसं	१।३०	१।१३
सव्वज्जुईए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं	३।१८०	३।१२
सव्वबलेणं जाव निग्घोसनाइएणं	३।७८	३।१०
सहइ जाव अहियासेइ	२।६७	पज्जो० ७७
सहस्सा जाव समप्पेंति	६।२६	६।२६
सासया जाव णिच्चा	१।११	१।४७
सिंगारागार जाव जुत्तोवयारकुसलं	३।१३८	२।१५
सिंघाडग जाव एवं	५।७३	५।७२
सिंघाडग जाव महापह	३।१८५,५।७२	ओ० सू० ५२
सिज्झंति जाव अंतं	४।१०१	१।२२
सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं	१।५०,२।५८	१।२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिया जाव तहेव जं	५।५	राय० सू० १२
सिरिवच्छ जाव कयग्गह°	३।८८	३।१२
सिरिवच्छ जाव दप्पणे	३।१७८	३।१२
सिरिवच्छ जाव पडिरूवा	४।२८	जी० ३।२८७
सिरिवच्छसरिसरूवं वेढो भणियव्वो जाव दुवालस	३।११६	३।७९
सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं जाव महया	२।२०९	जी० ३।४४४
सुवण्णं मे जाव उवगरणं	२।६९	सू० २।१५०
सुसमा तहेव	२।१५९-१६१	२।५०-५२
सुसमासुसमा तहेव	२।१६२,१६३	२।५०,७
सुस्सूसमाणा जाव पज्जुवासंति	३।२०५	१।६
सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ	२।९०,५।५८	१।६
सूरिय जाव तारारूवा	७।५५	७।५५
सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे	३।१८८,२१०	३।१७८
सेणावइरयणे जाव सत्थवाह०	३।२०६,२१५	३।१८८
सेणिपसेणिसद्दावणया जाव णिहिरयणाणं अट्ठाहियं महामहिमं करेइ	३।१६८,१६९	३।५८,५९
हट्ठ करयल जाव एवं	३।८	३।५;ओ० सू० ५६
हट्ठ जाव सोमणस्सिए	३।६	३।५
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव करयल°	३।७७,८४	३।८
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव विणएणं	३।१००	३।१९
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव हियया	३।११४	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबिय°	३।३१,१७३	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव पोसहसालाओ	३।१९९	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	३।१५	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	५।२७	३।५
हत्थिखंधवरगया जाव घोसंति	३।२१३	३।२१२
हयगय जाव सण्णाहेत्ता	३।१९९	३।१५
हयगयरह तहेव अंजणगिरि	३।१७५-१७७	३।१५-१७
हयगयरहपवर जाव चाउरंगिणिं	३।७७	३।१५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	३।१११	३।१०८
हरिय जाव सुहोवभोगे	२।१४६	२।१४५
हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ°	६।९३,१८०	३।१८

सूरपण्णत्ती

सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं	१।१४	जं० १।७
एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु	१।२०	१।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राइंदिए तहेव	१।२४	१।२४
तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया	४।४	४।३
उड्ढीमुहकलंबुयापुष्फसंठिता तहेव जाव बाहिरिया	४।६,७	४।३,४
सेसं तहेव	४।७	४।४
अणुपरियट्टित्ता जाव विगतजोई	१५।१४	१५।१०
गह जाव ताराख्वा	१६।२६	१६।२३
वाइय जाव रवेणं	१६।२६	१६।२३
सव्व जाव चिट्ठति	१६।२८	१६।२
समचक्कवालसंठिते जाव णो	१६।२६	१६।३
सव्वतो जाव चिट्ठति	१६।३२	१६।२
समचक्कवाल जाव णो	१६।३३	१६।३

उवंगा

अंतरं वा जाव मम्मं	१।६६	१।६५
अंतराणि जाव पडिजागरमाणे	१।१०५	१।६५
अंतिए जाव पडिवज्जइ	३।१०४	३।१०३
अगाराओ जाव पव्वइत्तए	३।१०६	३।११८
अज्जगं जाव उवसंपज्जित्ता	१।११६	१।१०६
अज्जाणं जाव पव्वइत्तए	३।१०६,१३८	३।१०६
अज्झत्थिए°	३।२६	१।१५
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१५; ३।४८,५०,५५; ५।३५	राय० सू० ६
अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता	५।३७	१।१५
अणगारे जाव अप्पाणं	५।३२	भ० १।५१
अत्तए जाव वेहल्लं	१।११४	१।११०
अपत्थियपत्थए जाव परिवज्जए	१।८६	उवा० २।२२
अम्मयाओ जाव अंगपडिचारियाओ निरवसेसं भाणियव्वं जाव जाहे वि य णं तुमं वेयणाए		
अभिभूए सहया जाव तुसिणीए	१।७४-८७	१।३४-६२
अम्मयाओ जाव एत्तो	३।१०१	३।६८
अम्मयाओ जाव जम्म°	१।३४	ना० १।१।३३
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५१,६६; ३।१०६	१।१५
असण जाव सम्माणेत्ता	३।५०	ना० १।७।६
अहं जाव पव्वइत्तए	४।१४	३।१२८
अहापडिरूवं जाव विहरंति	५।२६	३।६६
आएहि जाव ठिइं	१।४३	१।४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आघवित्तए वा जाव विण्णवित्तए	३।१०६	३।१०६
आरंभेहिं जाव एरिसएणं	१।१४०	१।२७
आलोएहि जाव पायच्छित्तं	३।११५	ठाणं ३।३३८
आसाएमाणीओ जाव परिमाएभाणीओ	१।३४	वि० १।२।२६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं	१।२२	वृत्ति
आहारपज्जत्तीए जाव भासमणपज्जत्तीए	३।१५	राय० सू० ७९७
आहेवच्चं जाव विहरइ	५।१०	ना० १।५।६
इच्छिए जाव अभिरुइए	३।१३	ना० १।१।१०२
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं	१।४४	१।४१
इमेयारूवे जाव संकप्पे	३।६८	१।१५
उक्खेवओ	३।८८,१५४,१६७	३।२०
उक्खेवओ	४।३;५।३	२।३
उक्खेवओ जाव दस	४।१,२	२।१,२
उक्खेवओ भाणियव्वो	३।२३,२४	३।२०,२१
उड्ढंजाणू जाव विहरइ	१।३	ओ० सू० ८२
उवट्ठवेत्ता जाव पच्चप्पिणंति	१।१७,१८	राय० सू० ६९०,६९१
उवट्ठवेत्ता जाव पच्चप्पिणह	४।१६	१।१७
एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५४	१।१५
एवं मारेउ बंधेउ	१।७३	१।७३
एवमाइक्खइ जाव परूवेइ	१।६८	ओ० सू० ५२
ओग्गहं जाव विहरंति	३।१३२	३।९१
ओहय जाव झियाइ	३।६८	१।१५
ओहयमण जाव झियाइ	१।१५	वृत्ति
कंता जाव भंड०	३।१२८	ना० १।१।२०६
कयवलिकम्मा जाव अप्प०	१।१६	ओ० सू० २०
करयल०	१।३६,५८;३।१०६ १३८;५।१६	वृत्ति
करयल०	१।४५;४।१५	१।४५
करयल०	१।१०७	ओ० सू० २०
करयल जाव एवं	१।६६	१।३६
करयल जाव कट्टु	१।५५	१।३६
करयल जाव पडिसुणेत्ता	१।४५	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेंति	१।१२२	१।१०७
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।११६	१।१०७
काणि जाव वेहल्लं	१।११२	१।१११
कूणिएणं करयल जाव पडिसुणेत्ता	१।१०८	१।४५
गामागर जाव सण्णिवेसाइं	३।१०१	ओ० सू० ८९
चउत्थ जाव अप्पाणं	५।२८	२।१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थ जाव भावेमाणे	३।१४	२।१०
चरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे जाव अहापडिरूवं	१।२	राय० सू० ६८६
चिण्णाइं जाव जूवा	३।५०	३।४८
छट्ठ	४।२४	२।१०
छट्ठट्ठम जाव मासद्ध०	३।८३	२।१०
छट्ठट्ठम जाव विचित्तेहिं	५।३६	२।१०
छट्ठट्ठम जाव विहरइ	२।१०	ना० १।१।२०१
छत्तादीए जाव धम्मियं	१।१६	४।१८
जइस्सइ जाव कालं	१।२१	१।१५
जहा पढमं जाव वेहल्लं	१।११३	१।१०६
जहा पण्णत्तीए। सामिलो निग्गओ खंडियविहूणो जाव एवं वयासी — जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं च ते भंते ! पुच्छा। सरिसवया मासा कुलत्था एगे भवं जाव संबुद्धे	३।२६-४५	भग० १८।२०५-२२१
जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं जाव जीवियाओ ववरोविए	१।१४०	१।२२
जहा सिवो जाव गंगाओ	३।५६	३।५१; भग० ११।६४
ण्हाए जाव सव्वालंकार°	१।७०	ओ० सू० ७०
ण्हायं जाव पायच्छित्तं	३।११०	१।७०
ण्हाया जहा कालादीया जाव जएणं	१।१२६,१३०	१।१२१,१२२
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।१२१; ५।१६	१।७०
तं चेव जाव कट्ठमुद्दाए	३।५५	३।५५
तं चेव जाव निव्वेयणे	१।६२	१।६१
तं चेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं	१।११०	१।१०६
तं चेव सखंधावारे	१।११६	१।११५
तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव आहारं अहारेइ, नवरं इमं नाणत्तं -दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं महाणरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव अणुजाणउ त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरइ। एवं पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ। उत्तरेणं वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरइ। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहार आहारेइ	३।५३, ५४	३।५१
तलवर जाव संधिवाल°	१।६२	ओ० सू० ६३
तलवर जाव सत्थवाह°	३।१०१	१।६२
तवसा जाव विहरंति	३।६६	१।[illegible]

तहारूवाणं जाव विउलस्स	१।१७	ओ० सू० ५२
तहेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं	१।१०८	१।१०७
तिक्खुत्तो जाव एवं	१।२१	ओ० सू० ८१
ते जाव पच्चप्पिणंति	४।१७	१।१८
दंतिसहस्सेहिं जाव ओयाए	१।१५	१।१४
दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं	१।१३६	१।१४
दंतिसहस्सेहिं जाव रहमुसलं	१।२१	१।१४
दंतिसहस्सेहिं जाव सत्तावण्णाए	१।१३७	१।१४
दिव्वा जाव अभिसमण्णगया	३।८५	राय० सू० ७६७
दुज्जाएहिं जाव नो संचाएमि विहरित्तए	३।१३४	३।१३१
दुरंत जाव परिवज्जिया	१।११५	१।८६
देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए	३।८३; ४।२४	३।१२०
देवसयणिज्जंसि जाव भासमणपज्जत्तीए	३।१६१; १६२	३।८३,८४
देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया	३।१२२	३।८४
देवी जाव कहिं	४।२६	३।१२५
देवे जाव एवं	३।७५,७६	३।५७,५८
नमंसंति जाव पज्जुवासंति	५।३६	ओ० सू० ५२
नरए जाव नेरइयत्ताए	१।१४०	१।२६
नाइ जाव रवेणं	४।१८	३।१११
निक्खेवओ	३।८७,१६६ १७०; ४।२७; ५।४३	३।१६
निसम्म जाव हियया	१।२१	ओ० सू० ८१
नीय जाव अडमाणे	३।१३३	३।१००
पढमं भणइ तहेव	३।७७	३।५६
परिजाणइ जाव तुसिणीए	३।६१	३।५६
पवर जाव पच्चप्पिणंति	५।१८	१।१२३
पासादीए जाव पडिरूवे	५।५	५।३
पुप्फ जाव दरिसणिज्जे	५।६	ना०१।५।४
पुव्वरत्ता जाव समुप्पज्जित्था	१।६५	१।५१
पुव्वाणुपुव्विं जाव अंबसालवणे विहरइ	३।२६	ओ० सू० ५२
बहुपडिपुण्णाणं जाव सूमालं	१।५३	ओ० सू० १४३
बहूणं नगरनिगम जहा आणंदो	३।११	उवा० १।१३
बुज्झिहिइ जाव अंतं	१।१४१	ओ० सू० १५४
बुज्झिहिइ जाव सव्व°	५।४३	ओ० सू० १५४
भगवं जाव पज्जुवासामि	१।१७	ओ० सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वयाइ	३।११२	३।१०६
भवित्ता जाव पव्वयाहि	३।१३६	३।१०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भीए जाव संजायभए	१।८६	ना० १।१।१६०
भीया जाव देवाणुप्पियाणं	४।१६	३।११२
भोगभोगाइं जाव विहरामि	३।१०६	३।६८
मज्जणघरे जाव दुरूढे	५।१६	१।१२४
मुंडा जाव पव्वयाइ	४।१६	३।१०६
मुंडा जाव पव्वयामि	३।१३६	३।१०६
मुंडा जाव पव्वयाहि	३।१०७,१३६	३।१०६
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।३२	३।१०६
मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	३।११४,११५	ना० १।१६।२८
मुच्छिया जाव अब्भंगणं	३।११६	३।११४
रज्जं च जाव जणवयं	१।६४	१।६६
रज्जसिरिं जाव विहरामि	१।७१	१।६५
रज्जेण वा जाव जणवएण	१।६६	१।६६
राईसर जाव सत्थवाह°	५।२०	१।६२
लोह जाव गहाय मुंडे जाव पव्वइए	३।५५	३।५०
लोह जाव घडावेत्ता जाव उवक्खडावेत्ता	३।५५	३।५०
लोह जाव दिसापोक्खिय°	३।५०	३।५०
वसही जाव वद्धावेता	१।११०	राय० सू० ६८३
वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविया	३।५५	३।४८
विउलाइं जाव विहरामि	३।१०६	३।६८
विउलाइं जाव विहरित्तए	३।१३१	३।१३१
संकाइय जाव कट्ठमुद्दाए	३।६३	३।७३
संजमेणं जाव विहरइ	१।२	राय० सू० ६८६
सण्णद्ध जाव गहियाउह०	१।१३८	राय० सू० ६६४
सद्द जाव विहरइ	५।२०	ओ० सू० १५
सद्धि जाव भुंजमाणी	३।१३१	३।१३०
समाणी जाव पव्वइत्तए	३।१०८	३।१०६
समाणे जाव भासमणपज्जत्तीए	३।८४	३।१५
सीयं जाव विविहा	३।१२८	ना० १।१।२०६
सुरं च जाव पसण्णं	१।३४	वि० १।२।२६
सोल्लेहि य जाव दोहलं	१।४६	१।३४
हट्ठ जाव हियया	१।४२ ; ३।१२८	ओ० सू० २०
हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खणं	३।११८	३।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमाणविधि

- अव्यय, सर्वनाम का साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार दिया है।
- रूट (√) अंकित शब्द धातुएं हैं। उनके रूप भी दिए गए हैं।
- शब्द के बाद साक्ष्यस्थल –

पण्णवणा पहला प्रमाण पद का, दूसरा सूत्र का और तीसरा श्लोक का परिचायक है।

जंबुद्दीवपण्णत्ती— पहला प्रमाण वक्खार का, दूसरा सूत्र का, तीसरा श्लोक का परिचायक है।

चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती —पहला प्रमाण पाहुड का, दूसरा सूत्र का, तीसरा श्लोक का परिचायक है।

उवंग अंक १ निरयावलियाओ, अंक २ कप्पवडिंसियाओ, अंक ३ पुप्फियाओ, अंक ४ पुप्फचूलियाओ, अंक ५ वण्हिदसाओ का परिचायक है। दूसरा सूत्र का प्रमाण, तीसरा श्लोक का है।

अध्ययन (पद, वक्खार) आदि के परिवर्तन का संकेत (;) सेमिकोलन है।

जहां एक सूत्र में अनेक श्लोक आ गए हैं वहां आगे के सूत्र की संख्या से पहले अध्ययन की संख्या भी दी गई है। जैसे उप्पल (उत्पल) प०१।४६, १।४८।४४, १।६२।

शब्द पहले सूत्र में आया फिर उसी सूत्र के श्लोकों में आया तो उसके दोनों प्रमाण दिए हैं, जैसे—अइकाय (अतिकाय) प० २।४५, २।४५।२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ

अ (अ) प ११।६७
अइ (अपि) प २।६४।७
अइ (अयि) उ १।२६; ५।४०
अइकंत (अतिकान्त) ज २।१५
अइकाय (अतिकाय) प २।४५,२।४५।२
अइगच्छमाण (अतिगच्छत्) ज ३।२१७
अइगय (अतिगत) ज ३।८१
अइछत्त (अतिछत्र) प २।४८
अइतेया (अतितेजा) ज ७।१२०।२
अइदूर (अतिदूर) ज २।६०; ३।२०५,२०६; ५।५८
अइपडागा (अतिपताका) ज ३।७
अइमुत्तग (अतिमुक्तक) प १।४।४
अइमुत्तय (अतिमुक्तक) प १।४०।३
अइमुत्तय (लता) (अतिमुक्तकलता) प १।३६।१
अइरत्त (अतिरात्र) सू १२।१७।१
अइरित्त (अतिरिक्त) उ ५।४५
अइरेक (अतिरेक) ज २।१५
अइवइत्ताण (अतिव्रज्य) प ३४।१६
अइविकिट्ठ (अतिविकृष्ट) उ १।११०
अइविगिट्ठ (अतिविकृष्ट) उ १।१२६,१३३
अइसीय (अतिशीत) ज ७।११२।१
√अइ (अति+इ) अईइ ज ३।१५७,१८६
अईव (अतीव) ज २।८,६; ७।२१३ उ ३।४६
अउज्झ (अयोध्य) प २।३०,३१,४१
अउणतीस (एकोनत्रिंशत्) सू २।३
अउणत्तर (एकोनसप्तति) ज ६।१०
अउणत्तरि (एकोनसप्तति) ज ७।८२
अउणपण्णास (एकोनपञ्चाशत्) सू० १६।२१।२ सू० १०।१६३
अउणाउति (एकोननवति) सू १।२७
अउणाणउति (एकोननवति) सू १६।१४,१५।१
अउणाणवइ (एकोननवति) ज ७।७३
अउणापण्ण (एकोनपञ्चाशत्) ज ४।२४०
अउणावीस (एकोनविंशति) सू २।३
अउणासीइ (एकोनाशीति) ज १।७।१
अउणासीत (एकोनाशीति) सू १।२७
अउणासीति (एकोनाशीति) सू २।२।३
अउणासीय (एकोनाशीति) ज ४।२३४; ७।१६
अउण्णापण्ण (एकोनपञ्चाशत्) प २।६४
अउय (अयुत) ज २।४; ७।१७८
अउयंग (अयुतांग) ज २।४
अउल (अतुल) ज ३।६५,१५६
अओज्झ (अयोध्य) ज ३।११७; ४।२१२
अंक (अंक) प १।२०।३; २।३०,४८,४६; १७।१२८ ज २।१५; ४।२१२,२५५; ५।५
अंकमय (अंकमय) ज ७।१७८
अंकमुहसंठिल (अंकमुखसंस्थित) ज ७।३१, ३३ सू ४।३,४,६,७
अंकलिवि (अंकलिपि) प १।६८
अंकवडेंसय (अंकावतंसक) प २।५१,५६
अंकावई (अंकावती) ज ४।२०२।२,२११; ७।१७८
अंकिय (अंकित) प २।३०
अंकुर (अंकुर) प ३६।६४ ज २।१३१,१४४ से १४६
अंकुस (अंकुश) ज २।१५; ३।३; ५।३८; ७।१७८
अंकेल्लण (दे०) ज ३।१०६
अंकोल्ल (अंकोल, अंकोठ, अंकोट) प १।३५।१, १।३७।५
अंग (अंग) प १।६३।१,१।१०१।६,८ ज २।१४; ३।६,३५,१०६, २२१,२२२ उ १।१२२,१२६; २।१०; १२; ३।१४, १५०,१६१,१६६; ५।२८,३६,४१
अंगइ (अंगजित्) उ ३।१०,११,१३,१४,२१
अंगण (अंगन) प ११।२५ ज २।६६; ५।५,७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगद (अंगद) प २।३०,४९
अंगपडियारिया (अंगपरिचारिका) उ १।३६,३७
अंगमंग (अंगांग) ज २।१६,११३
अंगय (अंगद) प २।३१,४१ ज ३।९,२११, २२२
अंगलोय (अंगलोक) ज ३।८१
अंगा (अंग) उ १।१२२
अंगारग (अंगारक) प २।४८
अंगुट्ठ (अंगुष्ठ) ज ३।१०९
अंगुल (अंगुल) प १।७४,७५,८४; २।६४, २।६४।८; १२।१२,१६,२७,३१,३२,३७,३८; १५।७ से ९,२२,४० से ४२; १८।४१,४३,९५, ११७; २१।३८,४० से ४३, ४८,६३ से ७१,८४, ८६,९० से ९२; ३३।१२,१३,१६,१७; ३६।६६,७०,७२ से ७४,८१ ज १।७; २।६ सू १।१४; १०।६३ से ७३; १९।२२।१७. उ ३।८३,१२०,१६१; ४।२४
अंगुलपुहत्तिय (अंगुलपृथक्त्विक) प १।७५
अंगुलि (अंगुलि) प २।३०,३१,४१ ज २।१५; ३।९,१८४,१८६,२०४,२२२
अंगुलिज्जग (अंगुलीयक) ज ३।९,२२२
अंगुलितल (अंगुलितल) ज ३।७,८८
अंगुलिय (अंगुलिक) ज ५।५८
√अंच (कृष्) अंचेइ ज ३।६
अंचिय (अञ्चित) ज ५।५७
अंचेत्ता (कृष्ट्वा) ज ३।६
√अंज (अञ्ज्) अंजेइ उ ३।११४
अंजण (अञ्जन) प १।२०।२; २।३१; १७।१२३ ज ४।२०२; ५।५,२१ सू २०।२ उ ३।११४
अंजणई (अञ्जनकी) प १।४०।५
अंजणकेसियाकुसुम (अञ्जनकेशिकाकुसुम) प १७।१२४
अंजणग (अञ्जनक) ज २।११७,११९,१२०
अंजणगिरि (अञ्जनगिरि) ज ३।१७
अंजणगिरिकूड (अञ्जनगिरिकूट) ज ३।९१,१७७, १८३,२०१,२१४
अंजणा (अञ्जना) ज ४।१५५।२,२२३।१
अंजणागिरि (अञ्जनगिरि) ज ४।२२५।१
अंजलि (अञ्जलि) ज २।६५; ३।५,६,८,१२, १९,२६,३९,४७,५३,५६,६२,६४,७०,७२, ७७,८१,८४,८८,९०,१००,११४,१२६,१३३, १३८,१४२,१४५,१५१,१५७,१६५,१८१, १८६, १८९,२०४ से २०६,२०९; ५।५, २१,४६,५८ उ १।३६,४५,५५,५८,८०,८३, ९९,१०७,१०८,११६,११८,१२२; ३।१०६, १३८; ४।१५; ५।१७
अंजलिपुट (अञ्जलिपुट) ज ३।८१
अंडग (अण्डज) ज ५।३२
अंत (अन्त) प ६।११०; २०।१८; २१।९०; ३६।८८,९२ ज १।२२,२७,५०; २।५८, ८४,१२३,१२८,१५१,१५७; ४।१०१,१०३, १७१,१७८,२०० सू ४।४,७; २०।२;७ उ १।४२,१४१,१४७; २।१३; ३।२१, ८६,१५२,१६५; ५।४३
अंतकड (अन्तकृत) ज २।८८,८९
अंतकम्म (अन्तकर्मन्) ज ५।५८
अंतकर (अन्तकर) उ १।५४,७९
अंतकिरिया (अन्तक्रिया) प १।१।५; २०।१।१, २०।१ से ४,६ से १३,४०,४४,४६,४८
अंतक्खरिया (अन्त्याक्षरिका) प १।९८
अंतगड (अन्तकृत) ज ३।२२५
अंतगमण (अन्तगमन) उ १।४२
अंतर (अन्तर) प २।३०,३१,४१; ११।७० ज १।१७; ३।३,३५,२२१; ४।२७,४९, १४०।२; ७।६,६५,८९,१६८,१७८,१८२ चं ३।१ सू० १।७।१,१।१६,२०,२१,२४,२७; २।२; ९।१; १८।२०; १९।२२।२८ उ १।२४,४७,६५,६६,६८,९०,९२,१०५, १०६
अंतरकंद (अन्तरकन्द) प १।४८।४२
अंतरगत (अन्तर्गत) सू ५।१; ७।१

अंतरणई (अन्तर्नदी) ज ४।२१२; ५।५५

अंतरदीव (अन्तर्द्वीप) प २।२६; ६।६४

अंतरदीवग (अन्तर्द्वीपज, °द्वीपक) प १।८५,८६; ६।७२, ८१,६७,१०८; १७।१७२; २१।७२

अंतरदीवय (अन्तर्द्वीपज, °द्वीपक) प १।८४,८६; ६।७६; १७।१६२; २१।५४

अंतरवीहिय (अन्तर्वीथिक) ज ३।७

अंतराइय (आन्तरायिक) प २२।२८; २३।१, ८,१२,२३,२४,५६,१३३,१५४,१५६,१६३, १६६,१७५ १८६,१६०,२०२; २४।१; २५।१, ३; २६।१,७; २७।१,४

अंतरापह (अन्तरापथ) प १६।२२

अंतराय (अन्तराय) प २४।१५

अंतरावास (अन्तरावास) उ १।१००,१२६,१३३

अंतरिय (अन्तरित) ज ३।१८,३१ ६५,६६,१५६, १६०,१८० उ १।१३४; ३।१४,८३,१२०, १६१; ४।२४

अंतरिया (अन्तरिका) सू १६।२२।३०

अंतलिक्ख (अन्तरिक्ष) ज ३।१४,२६,३०,३६, ४३,४७,५१,५६,६०,६४,६८,७२,११३,१३६, १३८,१४०,१४५ १४६,१७२ उ ३।६६

अंतवाल (अन्तपाल) ज ३।२६,३६,४७,११३

अंतिय (अन्तिक) प ३४।१६,२१ ज ३।६,८,१३, ७७,८४,६१,१०७,११३ से ११५,१२५, १३८,१५३,१६६ ५।२२,२३,२६ से २८.७३ उ १।२१,२३,३७,४१,४५,८८,११५ ११७, ११६,१२१,१२६; २।१०,१२; ३।१३,१४, २६,५०,५५,५७,६५,६६,७२,७५,७६,१०३, १०४,१०६ से १०८,११२,११८,१३४,१३६, १३८,१३६,१४८,१५०,१६१,१६६; ४।१४, १६,२०,२८; ५।२८,३२,३६,४१,४३

अंतियाओ (अन्तिकतस्) उ ३।११०

अंतेउर (अन्तःपुर) ज २।६४; ३।२२४; ५।५, ७ उ १।१६,६३,६७,६८,१०५ से १०७,११६

अंतेवासि (अन्तेवासिन्) ज १।५; २।८२,८३

चं १० सू १।५ उ १।२,३; ५।२०,४०,४१

अंतो (अन्तर्) प १।७४,८४; २।७,२० से २७, २६ से ३५,४१,४८; २३।६१,१२६,१७७, १८२,१८६,१६०; ३३।२७ से २६ ज १।१३,१४,३१,३६; ३।६८; ४।११,४६, ५०,११४,११७,१३१,२३४,२४०; ५।३२; ७।३१,३३,५५,१६८।१ सू ४।३,४,६,७; १६।२२।१५,२१, १६।२३; २०।७

अंतोमुहुत्त (अन्तर्मुहूर्त्त) प ४।२,३,५,६,८,६,११, १२,१४,१५,१७,१८,२०,२१,२३,२४,२६, २७,२६,३०,३२,३३,३५,३६,३८,३६,४१,४२, ४४,४५,४७,४८,५०,५१,५३,५४,५६ से ६७, ६६ से १६४,१६६,१६७,१६६,१७०,१७२, १७३,१७५,१७६,१७८,१७६,१८१,१८२, १८४ १८५,१८७,१८८,१६०,१६१,१६३, १६४,१६६,१६७,१६६,२००,२०२,२०३, २०५,२०६,२०८,२०६,२११,२१२,२१४, २१५,२१७,२१८,२२०,२२१,२२३,२२४, २२६,२२७,२२६,२३०,२३२,२३३,२३५, २३६,२३८,२३६,२४१,२४२,२४४,२४५, २४७,२४८,२५०,२५१,२५३,२५४,२५६, २५७,२५६,२६०,२६२,२६३,२६५,२६६, २६८,२६६,२७१,२७२,२७४,२७५,२७७, २७८,२८०,२८१,२८३,२८४,२८६,२८७, २८६,२६०,२६२,२६३,२६५,२६६,२६८, २६६; ६।२०,२१; १८।३,४,८,६,१०,१२, १४ से १६,१८ से २४,२६ से २८,३० से ३६,४१ से ५४,५६,५७,५६,६१,६३ से ६७, ६६ से ७४,७६ से ७६,८३,८५,६०,६१,६३, ६६,१०३ से १०५,१०७,१०८,११०,११३, ११४,११६,११७,११६,१२०; २०।६३; २३।६०,६२,६५,६७,७२,७८,७६,१३३,१४७, १५८,१६२,१६५,१६६,१७०,१३६,१८४; २८।४७,५०; ३६।६१,७६ जं २।८४,१२३, १२८,१४८,१५१; ४।१०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तग (अन्तर्मुहूर्त्तक) प ११।७१
अंतोमुहुत्तद्धाउय (अन्तर्मुहूर्ताद्धायुष्क) प १।७४
अंतोमुहुत्ताउय (अन्तर्मुहूर्तायुष्क) प १।८४
अंतोमुहुत्तिय (आन्तर्मुहूर्तिक) प १५।६१; २८।४,३८; ३६।२,८४,६२
अंतोवाहिणी (अन्तर्वाहिनी) ज ४।२१२
√**अंदोलाव** (आन्दोलय्) अंदोलावेइ उ १।६७
अंधकार (अन्धकार) ज ३।९३,९५,१५७,१५९, १६३ सू १४।५ से ८; १६।५,६
अंधकारपक्ख (अन्धकारपक्ष) सू १३।१; १४।२, ३,५ से ८
अंधयार (अन्धकार) प २।२० से २७ ज १।२४; ३।३१,१०६
अंधयारसंठिति (अन्धकारसंस्थिति) ज ७।३३, से ३५ सू ४।६,७,९
अंधिया (अन्धिका) प १।५१।१
अंब (आम्र) प १।३५।१; १६।५५; १७।१३२, १३३ ज ३।११९
अंबट्ठ (अम्बष्ठ) प १।९४।१
अंबर (अम्बर) ज ७।१७८
अंबरतल (अम्बरतल) ज ३।१४,३०,४३,५१,६० ६८,१३०,१३६,१४०,१४९,१७२
अंबसालवण (आम्रशालवन) उ ३।२९,-६,६५
अंबाडग (आम्रातक) प १।३६।१; १६।५५; १७।१३२
अंबाराम (आम्राराम) उ ३।४८ से ५०,५५
अंबिल (अम्ल) प १।४ से ९; ५।५,७,२०५; २८।२६,३२,६६ ज २।१४५
अंबिलसाय (अम्लशाक) प १।४४।२
अंबिलिया (अम्लिका) ज ३।११९
अंबिलोदय (अम्लोदक) प १।२३
अंबुभक्खि (अम्बुभक्षिन्) उ ३।५०
अंस (अंस) उ १।१३८
अंसु (अश्रु) ज २।९०, १०३,१०६,१०८
अकंटय (अकण्टक) ज २।१२
अकंत (अकान्त) ज २।१३३
अकंततरिया (अकान्ततरका) प १७।१२३ से १२५, १३० से १३२
अकंतत्त (अकान्तत्व) प २८।२४
अकंतस्सर (अकान्तस्वर) ज २।१३३
अकंतस्सरता (अकान्तस्वरता) प २३।२०
अकंप (अकम्प) ज २।६८; ३।७९,९९ से १०१ ११६
अकज्ज (अकार्य) ज २।१३३
अकण्ण (अकर्ण) प १।८६
अकत्तिम (अकृत्रिम) ज २।१२२,१२७; ४।१००, १७०
अकम्मभूमग (अकर्मभूमज) प १।८५,८७; ६।७२ ८१ ८४,९५,९७,१०८; २१।५४,७२
अकम्मभूमय (अकर्मभूमज) प ६।७९; १७।१६२, से १६४,१७२
अकम्मभूमि (अकर्मभूमि) प १।८४; २।२९
अकयपुण्ण (अकृतपुण्य) उ १।९२; ३।९८,१०१ १३१
अकरंडुय (अकरण्डक) ज २।१५
अकरणया (अकरणता) उ ३।११५
अकविल (अकपिल) ज २।१५
अकसाइ (अकषायिन्) प ३।९८; १३।१९; १८।६७; २८।१३८
अकसायसमुग्घाय (अकषायसमुद्घात) प ३६।४८
अकसायि (अकषायिन्) प ३।९८
अकाइय (अकायिक) प ३।५०; १८।२९
अकामय (अकामक) उ ३।१०९
अकामिय (अकामित) उ १।५२,७७
अकाल (अकाल) ज ३।१०४,१०५
अकालतालु (अकालतालु) जं ३।१०९
अकालपरिहीण (अकालपरिहीन) जं ५।२२,२६ से २८
अकित्तिम (अकृत्रिम) जं १।२१,२६,४९; २।५७, १४७,१५०,१५६
अकिरिय (अक्रिय) प १७।२५; २२।७,८,२६,३०

३२ से ३४,३६,३७,४५
अकुडिल (अकुटिल) ज २।१५
अकुव्वमाण (अकुर्वत्) सू २०।७
अकेसर (अकेसर) प १।४८।४६
अकोह (अक्रोध) ज २।६८
अक्क (अर्क) प १।३७।३
अक्कबोंदी (दे०) प १।४०।५
√**अक्कम** (आ+क्रम्) अक्कमइ उ १।११६
अक्कमाहि उ १।११५
अक्कमित्ता (आक्रम्य) उ १।११५
अक्किज्ज (अक्रेय) ज ३।१६७।१३
अक्किट्ठ (अक्लिष्ट) ज २।४६
अक्कुस्समाण (आक्रोशत्) उ ३।१३०
अक्कोप्प (अकोप्य) ज २।१५
अक्कोसमाण (आक्रोशत्) उ ३।१३०
अक्ख (अक्ष) ज २।६,१३४
अक्खय (अक्षय) ज १।११,४७; ३।१६७,२२६;
४।२२,५४,६४,१०२,१५६; ५।२१
७।२१० उ ३।४३,४४
अक्खर (अक्षर) ज २।६,१३४
अक्खरपुट्ठिया (अक्षरपुष्टिका,[1] °पृष्टिका) प १।६८
अक्खाइया (आख्यायिका) प ११।३४।१
अक्खाइयाणिस्सिया (आख्यायिकानिश्रिता)
प ११।३४
अक्खात (आख्यात) प १।४६,६६,७५,८१;
२।२१ से २६,३०,३२ से ३६,४१,४३,४६,
४८ से ५२,५५ से ५७,६० से ६२ सू
३।१; १३।२
अक्खाय (आख्यात) प १।५०,५१,६०,७६;
२।२०,३१,५८,५६ ज १।२६; ४।२१;
६।१०,११,१४,१५,१८ से २२,२६; ७।४,६३
८७ सू १०।१२७
√**अक्खिव** (आ+क्षिप्) अक्खिवइ उ १।१०५
अक्खिविउकाम (आक्षेप्तुकाम) उ १।१०५

१. टीका में अक्षरस्पृष्टिका है।

अक्खीण (अक्षीण) प ३६।८२
अक्खोड (अक्षोट) प १६।५५
अक्खोडय (अक्षोटक) प १७।१३२
अक्खोभ (अक्षोभ) ज ३।३
अगंतूण (अगत्वा) प ३६।८३।२
अगंथ (अग्रन्थ) ज २।७०
अगच्छमाण (अगच्छत्) सू २।२
अगड (दे०) प २।४,१३,१६ से १६,२८; ११।७७
ज २।३१
अगणि (अग्नि) प १।४८।५६; २।२० से २५
अगणिकाय (अग्निकाय) ज २।१०५ से १०८
अगत्थि (अगस्ति) प १।३८।२ ज २।१० सू
२०।८,२०।८।४
अगरुलहुय (अगुरुलघुक) प १५।५७ ज २।५१,५४,
१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,
१६३
अगरुयलहुयपज्जव (अगुरुलघुकपर्यव) ज २।१४६,
१५४,१६०,१६३
अगरुयलहुयपरिणाम (अगुरुलघुकपरिणाम)
प १३।२१,३०
अगार (अगार) प २०।१७,१८ ज २।६५,६७,८५,
८७ उ ३।१३,१०६ से १०८, ११२,११८,
१३६,१३८,१३६; ४।१४,१६; ५।३२,४३
अगारवास (अगारवास) ज २।८७; ३।२२५
उ ३।११८
अगुरु (अगुरु) ज २।१०६,११०
अगरुलघुअणाम (अगुरुलघुकनामन्) प २३।५१
अगुरुलहुणाम (अगुरुलघुनामन्) प २३।३८,११
अग्ग (अग्र) प २।३१ ज १।३७; २।१२०; ३।१२,
१८,२२,३१,७६,८८,१०७,१२५ से १२८,
१५१,१५२,१५६,१८०
अग्गंगुलिया (अग्रांगुलिका) उ १।५६,६१ से ६३
८४,८६,८७
अग्गभाव (अग्रभाव) ज ७।१३२।१ सू १०।६४
अग्गमहिसी (अग्रमहिषी) प २।३० से ३३,३५,

४१, ४३,४८ से ५२ ज १।४५; २।६०,
४।१५१; ५।१६,३६,४१,४४,५०,५२,५३;
७।१६८।२,१८३,१८६ सू १८।२१,२३,२४,
२०।६
अग्गर (दे०) प १।८६
अग्गल (अर्गल) सू २०।८
अग्गसाला अग्रशाला) ज २।१०; ४।१६६
अग्गसिहर (अग्रशिखर) ज १।३७
अग्गहत्थ (अग्रहस्त) ज २।१५
अग्गाणीय (अग्राणीक) ज ३।१०७ से १०६
अग्गि (अग्नि) प २।३०।१,२।४०।२,६,११;
३६।६४ ज २।६; ३।३,६५,११५,१२४,१२५
१५६; ५।१६,५२; ७।१३०,१८६।३ उ ३।४८,
५०,५१,६४
अग्गिकुमार (अग्निकुमार) प १।१३१; ५।३
६।१८ ज २।१०५,१०६
अग्गिदेवया (अग्निदेवता) सू १०।८३
अग्गिमाणव (अग्निमानव) प २।४०।७
अग्गिमेह (अग्निमेघ) ज २।१३१
अग्गिल (अग्निल) सू २०।८।५
अग्गिवेस (अग्निवेश्मन्) ज ७।११७,१२२।३,
१३२।३ सू १०।८४।३,१०।८६।३
अग्गिसीह (अग्निसिंह) प २।४०।६
अग्गिहोत्त (अग्निहोत्र) उ ३।५५,६३,७०,७३
अग्गिहोम (अग्निहोम) ज ५।१६
√अग्घा (आ + घ्रा)—अग्घाति प १५।३८,४२
अग्घाडग (दे० अपामार्ग) प १।३७।४
अचंचल (अचञ्चल) ज ३।१०६
अचंडपाडिय (अचण्डपातित) ज ३।१०६
अचक्खुदंसण (अचक्षुर्दर्शन) प ५।५,७,१०,१२,
१४,१६,१८,२०,२१,४५,५३,५६,५६,६३,
६८,७१,७४,७८,६३,६७; २६।३,७,१०,
१३,१४,१७,१६ से २१
अचक्खुदंसणावरण (अचक्षुर्दर्शनावरण) प २३।१४
अचक्खुदंसणि (अचक्षुर्दर्शनिन्) प ३।१०४;
५।४७,६५,८०,६६,११७; १८।८६
अचरित्ति (अचरित्रिन्) प १३।१४,१८,१६
अचरिम (अचरम) प १।१०३,१०६,१०७ १०६
११०,११३,११४,११६,११६,१२०,१२२,
१२३; ३।१२३; १०।२ से १३,२१,२६ से ५३;
१८।१२७
अचरिमंत (अचरमान्त) प १०।२ से ५,२१,२६,से
२६
अचल (अचल) ज ३।६६ से १०१; ५।२१
अचवल (अचपल) ज ५।५,७
अचित्त (अचित्त) प ६।१३ से १७,१६ ज २।६६
अचित्तजोणीय (अचित्तयोनिक) प ६।१६
अचित्ताहार (अचित्ताहार) प २८।१,२
अचिरवत्तविवाह (अचिरवृत्तविवाह) सू २०।७
अचेलय (अचेलक) ज २।६६
अचोक्ख (दे०) ज ५।५
√अच्च (अर्च्) अच्चेइ उ ५।७अच्चेंति ज० २।१२०
अच्चंत (अत्यन्त) उ १।७२,७३,८७,८८,६२;
३।४८,५०,५५
अच्चणिज्ज (अर्चनीय) ज ७।१८५ सू० १८।२३
अच्चणिया (अर्चनिका) ज ४।१४०।१
अच्चसण (अत्यशन) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२
अच्चासण्ण (अत्यासन्न) ज २।६०; ३।२०५,२०६,
५।५८
अच्चासन्न (अत्यासन्न) ज १।६
अच्चि (अर्चिस्) प १।२६; २।३०,३१,४१,४६
अच्चिणेत्ता (अर्चयित्वा) ज ३।८८
अच्चिमालि (अर्चिमालिन्) प २।५०,५४,५८ से ६०
ज ७।१८३ सू १८।२१,२४; २०।६
अच्चिसहस्समालणीय (अर्चिस्सहस्रमालनीक)
ज ४।२७; ५।२८
अच्चुइंद (अच्युतेन्द्र) ज ५।५८
अच्चुण्ह (अत्युष्ण) ज ७।११२।१ सू १०।१२६।१
अच्चुत (अच्युत) प १।१३५; २।४६,५६,६०; ३।१८३
अच्चुतवडेंसय (अच्युतावतंसक) प २।५६
अच्चुय (अच्युत) प २।४६,५६,५६।२,६३; ४।२६४

से २६६;६।३८,५६,६६,८५,८६,६८,७।१६; १५।८८,२०।६१,२१।६१,७०,६१,६२;२८।८६; ३०।२६;३३।१६,२४;३४।१६,१८ ज २।६४; ५।४६,५४,५६,५८,५६ उ २।२२;५।४१

अच्चुयग (अच्युतक) ज ५।४६

अच्चेत्ता (अर्चयित्वा) ज २।१२०

अच्छ (रुक्ष) प १।६६;११।२१ ज २।३६,१३६

अच्छ (अच्छ) प १।६३।४;२।३०,३१,४१,४६,५० ५२,५८,५६,६३,६४ ज १।८ से १०,२३,३१, ३५,५१;३।१२,८८,१०६,१६४;४।१,३,७,१२, १५,२४,२५,२८ से ३१,३६ से ४१,४५,५७, ६२,६४,६६ से ६८,७४ से ७६,८६,८८,६१ से ६३,१०३,११०,११४,११८,१४३,१५६ १७८,२०३,२०६,२१३,२१८,२४२,२४५, २५१,२५२,२६०।१;५।५८;७।५५ सू ५।१; १६।२३

√**अच्छ** (आस्) अच्छेज्ज प २।६४।१६

अच्छत्तय (अछत्रक) उ ५।४३

अच्छरगण (अप्सरोगण) प २।३०,३१,४१ ज १।३१

अच्छरसातंडुल (अप्सरस्तण्डुल[1]) ज ३।१२,८८; ५।५८

अच्छरा (दे०) प ३६।८१

अच्छरा (अप्सरस्) प ३४।१६ से २४ उ ५।५

अच्छि (अक्षि) प १।४८।४७;११।२५ चं १।१ ज २।४३;३।१७८;७।१७८ उ० ३।११४

अच्छिण्ण (अच्छिन्न) प १५।४० से ४२

अच्छिद्द (अछिद्र) ज २।१५

अच्छिरोड (अक्षिरोट) प १।५१

अच्छिवेह (अक्षिवेध) प १।५१

अच्छी (ऋक्षी) प ११।२३

अच्छेरग (आश्चर्य) ज २।१५

अजर (अजर) प २।६४।२१

अजसोकित्तिणाम (अयशःकीर्तिनामन्) प २३।३८, १२८

अजहण्ण (अजघन्य) प २३।१६१ से १६३ ज २।१५

अजहण्णमणुक्कोस (अजघन्यानुत्कर्ष) प ४।२६७, २६६; ५।४२,४६,६४,७६,११२,११६,२४४; ७।३०;१८।१०२;२३।६३;२८।६७

अजहण्णमणुक्कोसगुण (अजघन्यानुत्कर्षगुण) प ५।३८,६०,७५,६०,१०८,१६१,१६८,२०१, २०४,२०८,२१२,२१५,२१६,२२२,२२५,२४३

अजहण्णमणुक्कोसट्ठितिय (अजघन्यानुत्कर्षस्थितिक) प ५।३५,५७,७२,८७,१०५,१७५,१७८,१८२, १८५,१८८,२४०

अजहण्णमणुक्कोसपदेसिय (अजघन्यानुत्कर्षप्रदेशिक) प ५।२३१,२३२

अजहण्णमणुक्कोसमति (अजघन्यानुत्कर्षमति) प ५।६४

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणग (अजघन्यानुत्कर्षावगाहनक) प ५।१७१,१७२,२३६,२३७

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणय (अजघन्यानुत्कर्षावगाहनक) प ५।५०,५४,६६,८४,१०२,१५५,१५८ १६०,१६४,१६७,१७२,२३७

अजहण्णुक्कोस (अजघन्योत्कर्ष) प ५।६४,६८

अजहण्णुक्कोसोगाहणग (अजघन्योत्कर्षावगाहनक) प ५।३१,३२

अजहण्णुक्कोसोगाहणय (अजघन्योत्कर्षावगाहनक) प ५।३२,१६१

अजाइय (अयाचित) उ० ३।३८

अजावणिज्ज (अयापनीय) ज २।१३१

अजिण (अजिन) ज २।७८

अजिम्ह (अजिह्म) ज २।१५

अजिय (अजित) ज० ३।१८५,२०६

अजीरग (अजीरक) ज २।४३

अजीव (अजीव) प १।१०१।२;१५।५७ ज २।७१ सू २०।१उ ३।१४४;५।३४

अजीवपज्जव (अजीवपर्यव) प ५।१,१२३से १२५, २४४

---

1. अच्छो रसो येषां ते अच्छरसाः प्रत्यासन्नवस्तु प्रतिबिम्बाधारभूता इवातिनिर्मला इतिभावः टीका पत्र १६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजीवपण्णवणा (अजीवप्रज्ञापना) प १।१ से ४,९
अजीवपरिणाम (अजीवपरिणाम) प १३।१,२१,३१
अजीवमिस्सिया (अजीवमिश्रिता) प ११।३६
अजोगया (अयोगता) प ३६।९२
अजोगि (अयोगिन्) प ३।९६;१३।१९;१८।५८; २८।१३८
अजोगिकेवली (अयोगिकेवलिन्) प १।१०८,११०, १२१,१२३
अजोगिभवत्थकेवलि (अयोगिभवस्थकेवलिन्) प १८।१०१;१०३
अजोणि (अयोनि) प ९।१९
अजोणिय (अयोनिक) प ९।१२,१९,२५
अज्ज (अद्य) ज २।१४६ सू १०।१६२ से १६९ उ १।४२
अज्ज (आर्य) ज ३।१२४;७।२१४
अज्जग (अर्जक) ज ५।७२,७३
अज्जग (आर्यक) उ १।१०५ से १०७,११९
अज्जम (अर्यमन्) ज ७।१३०,१८६।४
अज्जमदेवता (अर्यमदेवता) सू १०।८३
अज्जय (अर्जक)प १।४४।३
अज्जल (आर्यल) प १।८९
अज्जव (आर्जव) ज २।७१
अज्जसुहुम्म (आर्यसुधर्मन्) उ १।२,३
अज्जा (आर्या) उ ३।९९ से १०४,१०६ से १०८, १११ से १२०, १३२ से १३९,१४१,१४२ १४३,१४५,१४६,१४८ से १५०;४।२१ से २४
अज्जिय (अर्जित) ऊ ३।१७५
अज्जिया (आर्यिका) ज २।७५,८२ उ ३।१२
अज्जुण (अर्जुन) प १।३६।३,४२।१ ज ३।११७
अज्झत्थवयण (अध्यात्मवचन) प ११।८६
अज्झत्थिय (आध्यात्मिक) ज ३।२६,३९,४७,५६, १२२,१२३,१३३,१४५,१८८;५।२२ उ १।१५ १७,५१,५४,६५,७६,७९,९९,१०५;३।२९ ४८,५०,५५,९८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७
अज्झयण (अध्ययन) प १।१।३ ज ७।११४ चं ५।२ सू १।९।२;१०।७८ उ १।६ से ८, १४२,१४३, १४८; २।१ से ३,१४,१५,२१;३।२,३,१९,२०, २२,२३,८७,८८,१५३,१५४,१६६,१६७,१७०, ४।१ से ३,२७;५।२,३,४४,४५
अज्झवसाण (अध्यवसान) प ३४।१।१,३४।१३ ज ३।२२३
√**अज्झावस** (अधि + आ + वस्)—अज्झावसइ ज २।६४
अज्झावसमाण (अध्यावसत्) ज २।६४
अज्झावसित्ता (अध्युष्य) ज २।६४
अज्झोववण्ण (अध्युपपन्न) उ ३।११४,११५,११९
अज्झुसिर (अशुषिर) ज ३।३
अट्ट (आर्त) उ १।५२,७७
अट्टइ (दे०) प० १।३७।३
अट्टज्झाण (आर्तध्यान) ज ३।१०५ उ १।१५;३।९८
अट्टालग (अट्टालक) ज २।२०
अट्टालय (अट्टालक) प २।३०,३१,४१
अट्ठ (अष्टन्) प १।५० ज १।८चं ३।२
अट्ठ (अर्थ) प ५।३,५,७,१०,१२,१४,१६,१८,२०, २४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४९,५३,५६, ५९,६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६,८९,९३,९७, १०१,१०४,१०७,१११,११५,११९,१२७,१२९, १३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७, १५०,१५४,१५७,१६३,१६६,१६९,१७२,१७४, १७७,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३,१९७,२००, २०३,२०७,२११,२१४,२१८,२२१,२२४, २२८,२३०,२३२,२३४,२३७,२३९,२४२; ११।३,११ से २०,३९,४१;१५।४४,४८,४९; १७।१ से ६,८ से १७,२०,२२,२४,२५,२७, १०७,१०९,१११,११६,११९,१२३ से १२८, १३० से १३२,१३५,१५०,१५२,१५५;२०।२ ३,१४ से १७, १९ से २५,२७ से ३०,३३,३४, ३९ से ४८,५० से ५२,५५,५९;२२।८,७९, ८०,८२,९२,९४,९५;२८।४,२५,२७,२९,३८, ४७,५०,७३ से ७५,९७;२९।१७,१९ से २१; ३०।१६,१९,२१,२३,२५,२६,२८;३४।१२,

१६,१८;३५।१८,२०,२३; ३६।८०,८१,८३, ८८ ९२,९४, ज १।११,४५,४७,५१; २।१७,१८,२१ से २३,२५,२६,३० से ३३, ३८ से ४०,४२,४३,५२,५६,१५९.१६१;३।१ ६,९१,९८,१०६.१०७,११३,११४,१८९, १९९,२०९,२२६;४।१९,२२,३४,३७,४१,५१, ५३,५४,६०,६१,६४,७०,७६,७९,८१,८५, ८६,८९,९०,९३,९७,१०२,१०७,१०८,११०, ११३,१४१,१४२,१४६,१५१,१५९,१६१,१६६, १७७,१८०,१८४,१८६,१८८,१९३,१९६, १९९,२००,२०३,२०५,२०६,२०९ से २११,२६१,२६४,२६६,२७०,२७२,२७३, २७६,२७७;५।२७;७।१६९,१८४,१८५,२०९, २१३,२१४ सू १६।२,४,६;१८।२२ उ १।४, ८,१७,२३,२४,३७ से ४०,४२,४३,५५,५७, ५८,६७,८०,८२,८३,८८,९९,१००,१०२, १०४,१०७,११५,११७,११९,१२०,१२२, १२७,१४२,१४३;२।१,३,१४,१५,२१;३।१, ३,१३;१९,२०,२२,२३,२९,३८,४०,४२,४४, ५९,६१,७७,८७,८८,१०२,१०७,११६ से ११८,१२३,१४०,१४७,१५३,१५४,१६०, १६६,१६७,१७०;४।१,११,२७;५।१,३,१५, ३८,४३,४४

अट्ठअसीय (अष्टाशीति) सू १८।१

अट्ठक (अष्टक) सू १३।५,६

अट्ठकण्णिय (अष्टकर्णिक) ज ३।९४,१३५,१५८

अट्ठछत्ताल (अष्टचत्वारिंशत्) सू १०।१४६

अट्ठजोयणिय (अष्टयोजनिक) प २।६४

अट्ठतरि (अष्टसप्तति) सू ४।५

अट्ठतीस (अष्टत्रिंशत्) प २।३८ ज १।२० सू. १०।१५२ उ ३।१२

अट्ठपंचासत (अष्टपञ्चाशीति) सू १२।३

अट्ठपदेसिय (अष्टप्रदेशिक) प १०।१३,१४

अट्ठपिट्ठणिट्ठिया (अष्टपिष्टनिष्ठिता) प १७।१३४

अट्ठभाग (अष्टभाग) प ४।१७१,१७३,१७४, १७६,२०१,२०३,२०४,२०६, ज २।५९; ४।२१५;७।१९५,१९६ सू १८।२५,२६,३४,३६

अट्ठम (अष्टम) प ३६।८५,८७ ज २।७१;४।२११ ५।१०;७।९७ सू १०।७७;१२।१७,१३।८ उ २।१०,२२; ३।१४,८३,१५०,१६१;४।२४; ५।२८,३९,४३

अट्ठमंगलग (अष्टमंगलक) ज ३।१७८,२०२, २१७;४।२८,११५,१३८,१५८;५।४३,५८

अट्ठमंगलय (अष्टमंगलक) ज ३।१२,८८;४।१२५

अट्ठमभत्त (अष्टमभक्त) प २८।५० ज ३।२०, २१,२८,३३,३४,४१,४९,५४,५५,५८,६३, ६४,६६,७१,७२,७४,८४,८५,१११,११२, ११३,१३१, १३७ से १३९,१४३,१४४, १४७,१६६,१६८,१८२,१८३,१८७,१९१, २१८

अट्ठमभत्तिय (अष्टमभक्तिक) ज ३।५४,६३,७१, १११,११३,१३७,१४३,१६७,१९०

अट्ठमी (अष्टमी) ज ७।१२५

अट्ठया (अर्थ) सू १७।१;२०।१ उ ३।४४

अट्ठविह (अष्टविध) प १।४,१३२;१३।२९; २१।५५;२२।२१ से २३,२८,८३,८४,८६,८७ ९०;२३।१५,१६,२१,२२,३०,३१,५०,५८; २४।२ से ८,१० से १३;२५।४,५;२६।२ से ६, ८ से १०,२७।२,३; २९।२ सू ९।५

अट्ठवीस (अष्टविंशति) प २।५९।१

अट्ठसइय (अष्टशतिक) ज २।६४

अट्ठसट्ठ (अष्टषष्टि) ज ७।३१ सू ४।४

अट्ठसट्ठि (अष्टषष्टि) ज ६।१५

अट्ठसमइय (अष्टसामयिक) प ३६।३,८५

अट्ठसयमंगुलमायत (अष्टशताङ्गुलायत) ज ३।१०९

अट्ठसुवण्ण (अष्टसुवर्ण) ज ३।९५,१५९

अट्ठसोवण्णिय (अष्टसौवर्णिक) ज ३।९४,१५८

अट्ठहत्तर (अष्टसप्तति) प २।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठहत्तरि (अष्टसप्तति) ज ७।३२,३४

अट्ठा (अष्टा) ज २।६५

अट्ठाणउइ (अष्टनवति) ज ७।९८

अट्ठानउति (अष्टनवति) सू १०।१६५

अट्ठाणउय (अष्टनवति) सू १०।१७३

अट्ठार (अष्टादशन्) प १०।१४।४ से ६ ज ४।९२

अट्ठारस (अष्टादशन्) प २।२४ जं १।४८ सू १।१३ उ १।१०४

अट्ठारसवंक (अष्टादशवक्र) उ १।९६,१०२ से ११७,११९,१२७,१२८

अट्ठारसविह (अष्टादशविध) प १।९८

अट्ठावण्ण (अष्टपञ्चाशत) ज ४।१४२

अट्ठावय (अष्टापद) ज २।१५,८८,९०;३।२२४

अट्ठावीस (अष्टाविंशति) प २।२३ ज १।७ सू १।१४

अट्ठवीसइभाग (अष्टाविंशतिभाग) सू १०।१४२

अट्ठावीसइविह (अष्टविंशतिविध) ज ७।११३ सू १०।१३०

अट्ठावीसतिभाग (अष्टविंशतिभाग) प २३।१०२ से १०४,१५२ सू १२।३०

अट्ठावीसतिविह (अष्टाविंशतिविध) प १।८६; २।४८

अट्ठावीसविमाणसयसहस्साहिवइ (अष्टाविंशति-विमानशतसहस्राधिपति) ज २।९१

अट्ठासीइ (अष्टाशीति) सू २०।८।९

अट्ठासीति (अष्टाशीति) सू १८।४,२०।८

अट्ठासीय (अष्टाशीति) ज १।२३ सू १०।१४१

अट्ठाहिय (अष्टाहिक) ज २।११७ से १२०;३।१२ से १४,२८,३०,४१,४२,४३,४९ से ५१,५८ से ६०, ६६ से ६८,७४ से ७६,१३६,१३९,१४७ से १५१,१६८ से १७०; ५।७४

अट्ठि (अर्थिन्) प २८।१।१,२८।३,२५,२८,३७, ४९, ज ३।१०९

अट्ठिकच्छभ (अस्थिकच्छप) प १।५७

अट्ठिय (अस्थित) प ११।८० से ८३

अठिय (अस्थिन) प ११।४७

अड (दे०) प १।७९

अडड (अटट) ज २।४

अडडंग (अटटाङ्ग) ज २।४

अडतालीस (अष्टचत्वारिंशत्) सू १।२३

अडमाण (अटत्) उ ३।१००,१३३

अडयाल[1] (दे०) प २।३०

अडयाल (अष्टचत्वारिंशत्) ज १।२० सू १।२४

अडयालीस (अष्टचत्वारिंशत्) ज २।६ सू १।२४

अडवीबहुल (अटवीबहुल) ज १।१८

अडसट्ठि (अष्टषष्टि) सू १५।२

अडिल (अटिल) प १।७८

अड्ढ (आढ्य) ज ३।१०३ उ १।१४१;३।१०,२१ २८,९६,१५८;४।७

अड्ढाइज्ज (अर्धतृतीय) प १।७४,८४;२।७,२९; १८।४५;२१।६६,६७;३३।५,६ ज १।३८,४३; ४।१०,१२;४३,४५,५७,७२,७८,११०,१४७, १८३,२१५,२२१,२४५,२४८;५।५२ सू १।२३ १८।१

अणंगसेणा (अनङ्गसेना) उ ५।१०,१७

अणंत (अनन्त) प १।१३,४८;१।४८।७,८, १० से १९,३० से ३३,३८ से ४२,५०,५२,५७,५८, ६०,२।६४।१०,११,१३,१५,१६;५।२ से ७, ९ से २०,२३,२४,२७ से ३४,३६,३७,४०, ४१,४४,४५,४८,४९,५२,५३,५५,५६,५८,५९, ६२,६३,६७,६८,७०,७१,७३,७४,७७,८२,८३ ८५,८८,९२,९६,१००;१०१,१०३,१०६,११० ११४,११८,११९,१२६ से १३०,१३३,१३५, १३७,१३९,१४२,१४४,१४६,१४९ से १५४ १५६,१६२,१६५,१६८,१७१,१७३,१७६, १८०,१८३,१८६,१८९,१९२,१९६,१९९,२०२ २०६,२१०,२१३,२१७,२२०,२२३,२२७, २२९,२३१,२३३,२३८,२४१;६।६३;१०।१६, १८ से २०;१२।७ से ११,२०;१५।१४,१५, २७,३२,५७,८३,८४,८७,८९ से ९९, १०३, १०४,१०९,११२,११५,११८,११९,१२१,

[1] अडयाल शब्दो देशीवचनत्वात् प्रशंसावाची ,

१२२,१२६,१२९,१३०,१३५ से १३७,
१३९ से १४२;१६।३७;१७।१४२;१८।३,१४,
२७,४५,५९,६४,७७,८३,९०,१०८;३६।८,
१२,१४,१६,१८ से २६ ३२ से ३४,४४ से
४७,८ ३।२ ज २।६,५१,५४,७१,८५,१२१
१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,
१६३;३।२२३;५।२१,५८

अणंतक (अनन्तक) ज ३।२११

अणंतखुत्तो (अनन्तकृत्वस्) ज ७।२१२

अणंतगुण (अनन्तगुण) प २।६४।१५;३।३८ से ४२
४९ से ५२,६० से ६३, ७१ से ७४,८४ से
८७,९५ से १०२,१०५ से ११५,११८,१२२,
से १२४,१७५,१७७ से १७९,१८२,१८३;
५।५,१२९,१५१,१५२;९।१२,१९,२५;१०।४,
५,२९,३०;११।५४,५६,५८,६०,६१,७२,७९,
९०;१२।७,१०,२०,१५।१३,१६,२६,२८,३१,
३३,१७।५६,५९,६९,१४४,१४६;२१।१०४;
२८।७,१०,११,४१,४४,५३,५६,५७,७०;
३६।३५,४८ ज २।५१,५४,१४९,१५४,१६०,
१६३ सू २०।७

अणंतणाणि (अनन्तज्ञानिन्) ज २।४।३

अणंतपएसिय (अनन्तप्रदेशिक) प ५।१३७,१३८,
१६८,१६९,१७१,१७२,१८७,२०२,२०३,
२०६,२०७,२२४;१०।१४,१७,२०,२४,२९,
३०;११।४९;१५।११,२४;१६।४३

अणंतपदेसिय (अनन्तप्रदेशिक) प ३।१७९;
५।१२७,१७२,१८६,२०७,२२३,२२४;१०।१७,
२५;१६।३९;१७।१४०;२८।५,५१;३०।२६,
२८

अणंतभाग (अनन्तभाग) प ५।५,१२९;१२।७,१०,
२०;१५।५७;२८।२२,३४,३९,६८

अणंतमिस्सिया (अनन्तमिश्रिता) प ११।३६

अणंतय (अनन्तक) प १।४८।५२

अणंतर (अनन्तर) प २।६४।६।९९,१०१,१०३,
१०५,११०;११।६९।१;२०।१।१;२०।६ से १५
१७ से २५ २७,२९,३२,३४,३८ से ४०,४५
५२;३४।१।१;३४।१ से ३; ३६।९२ ज ३।१७८
२११;४।३६,७२,७८,९५,१०३,१४३,१७८,
२००,२०२,२१२;५।४३;७।९,१०,१२,१३,१५
१९,१८ से ३० ४२,५०,६८,६९,७१,७२,७४
७५,७७,७८,८०,८३,८४, सू १।१४,१६,१७,
२१,२४,२७;२।२,३;६।१;८।१;९।१;१३।१४;
१९।२२।२५ उ १।१४१;३।९२,१२५;४।२६,
२८,३०,४३

अणंतरपच्छाकड (अनन्तरपश्चात्कृत) सू ८।१;
११।२ से ६

अणंतरपुरक्खड (अनन्तरपुरस्कृत) सू ८।१; ११।२
से ६

अणंतरसिद्ध (अनन्तरसिद्ध) प १।११,१२;
१६।३५,३६

अणंतरोवगाढ (अनन्तरावगाढ) प ११।६३,६४;
२८।१३,१४,५९,६०

अणंतरोववण्णग (अनन्तरोपपन्नक) प १५।४९;
३४।१२

अणंतसमयसिद्ध (अनन्तसमयसिद्ध) प १।१३

अणंताणुबंधि (अनन्तानुबन्धिन्) प १४।७;
१८।१; २३।३५

अणंसुपाति (अनश्रुपातिन्) ज ३।१०९

अणगार (अनगार) प १५।१।१; १५।४३;
३६।७९ ज १।५; २।६५,६७,८३,८५,८७,
८८,९५,९६,१०० से १०२,१०४,११४,चं
१० सू १।५ उ १।२,३; २।९ से १२; ३।१३,
१४,१६१; ५।२१,२२,२७,२८,३२,३८ से ४१
४३

अणगारचियगा (अनगारचितका) जं २।१०५ से
११२

अणगारिया(अनगारिता) प २०।१७,१८
उ ३।१३,१०६ से १०८,११२,११८,१३६,
१३८,१३९; ४।१४,१९; ५।३२,४३

अणघ (दे०अक्षत) ज० ३।८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणग्घाइज्जमाण (अनाघ्रायमाण) प २८।४३, ४४,६६,७०
अणग्घिय (अनर्घित) ज ३।६२,११६
अणतिवर (अनतिवर) ज ३।११६
अणदब्भवाह (अदभ्रवाह) ज ३।१०६
अणभिग्गहिय (अनभिगृहीत) प ११।०१।११
अणभिग्गहिया (अनभिगृहीता) प ११।३७।२
अणरिह (अनर्ह)उ १।४०,४३
अणव (ऋणवत्) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३
अणवकंखमाण (अनवकाङ्क्षत्) ज ३।२२४ उ० २।११
अणवगल्ल (अनवकल्प) ज २।४।१
अणवट्ठित (अनवस्थित) सू ६।१०; ८।१०; १३।१७;१६।२२।१०,२७
अणवट्ठिय (अनवस्थित) प ३३।३५,३६ ज ७।३१,३२ सू ४।३ से ७
अणवण्णिंद (अणपन्निकेंद्र) प २।४६
अणवण्णिय (अणपन्निक) प २।४१,४६
अणवण्णियकुमारराय (अणपन्निककुमारराज) प २।४६
अणवन्निय (अणपन्निक) प २।४६,४७।१
अणवरय (अनवरत) ज २।६४; ३।१८५,२०६
अणसण (अनशन) उ २।१२; ३।१४,८३,१२०, १५०,१६१; ५।२८,३६,४१,४३
अणस्साइज्जमाण (अनास्वाद्यमान) प २८।४३,४४ ६६,७०
अणह (अनघ) सू २०।७
अणह (दे०अक्षत) ज ३।८१
अणाईय (अनादिक) प १८।१३,१०५
अणाएज्जणाम (अनादेयनामन्) प २३।१२६
अणागतद्धा (अनागताध्वन्) २।६४; ३६।६३
अणागय (अनागत) ज २।६०; ३।२६,३६,४७, ५६,१३३,१३८,१४५; ५।३,२२; ७।३६,५२
अणागयद्धा (अनागताध्वन्) प ३६।६४
अणागयवयण (अनागतवचन) प ११।८६
अणागार (अनाकार) प २।६४।१२; २६।११; ३०।२६ से २८
अणागारपस्सि (अनाकारदर्शिन्) प ३०।१५ से १८ २०,२२,२३
अणागारपासणता (अनाकारदर्शन, °पश्यत्ता) प ३०।१७
अणागारपासणया (अनाकारदर्शन, °पश्यत्ता) प ३०।१,३,५,७,१२,१३
अणागारोवउत्त (अनाकारोपयुक्त) प ३।१०६, १७४; १३।१४; १८।६३; २६।१६ से २१
अणागारोवओग (अनाकारोपयोग) प १३।८,२६।१ ३,५,७,८,१०,१३,१४
अणाघाइज्जमाण (अनाघ्रायमाण) प २८।४४,७०
अणाढाइज्जमाण (अनाद्रियमाण) उ ३।६२
अणाढायमाण (अनाद्रियमाण) उ ३।५६,६१,७७, ११६
अणाढिय (अनादृत) ज ४।१५०,१५६,१६०; ७।२१३ उ ३।२,१७१
अणाणत्त (अनानात्व) प २।३,६,६,१२,१५
अणाणुगामिय (अनानुगामिक) प ३३।३५
अणाणुपुव्व (अनानुपूर्व्य) ज ७।४७
अणाणुपुव्वी (अनानुपूर्वी) प ११।६८; २८।१८, ६४
अणादि (अनादि) सू १।६; ११।१
अणादीय (अनादिक) प १८।२५,५५,५६,६४,६८ ७७,८३,८६,६०,१११,१२२,१२३,१२६, १२७
अणादेज्ज (अनादेय) ज २।१३३
अणादेज्जणाम (अनादेयनामन्) प २३।३८
अणाभोगणिव्वत्तिय (अनाभोगनिर्वर्तित) प १४।६; २८।४,५०; ३४।५
अणारिय (अनार्य) ज २।४३
अणालोइय (अनालोचित) उ ३।८३'१२०; ४।२४
अणावुट्ठिबहुल (अनावृष्टिबहुल) ज १।१८
अणासाइज्जमाण (अनास्वाद्यमान) प २८।४०, ४१,४४,७०
अणाहारग (अनाहारक) प ३।१०७; २८।१०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से ११०,११२,११४ से ११६,११८'११६, १२१,१२३ मे १२५,१३०,१३१,१३६ से १३६,१४१,१४२

अणाहारय (अनाहारक) प १८।६७ से १०३; २८।१०६ से १०८,१११,११३,११७,११६, १२०,१२२,१२५,१२७ से १२६,१३२,१४३

अणिंद (अनिन्द्र) प २।६०,६३

अणिंदिय (अनिन्द्रिय) प ३।४०; १३।१६; १८।१७

अणिंदिया (अनिन्दिता) ज ५।१।१

अणिक्खित्त (अनिक्षिप्त) उ० ३।५०

अणिगण (अनग्न) ज २।१३

अणिच्चजागरिया (अनित्यजागरिका) उ० ३।५५

अणिच्छियत्त (अनिप्टत्व) प २८।२४

अणिज्जिण्ण (अनिर्जीर्ण) प ३६।८२

अणिट्ठ (अनिप्ट) प २३।२० ज २।१३३

अणिट्ठतरिया (अनिष्टतरका) प १७।१२३ से १२५,१३० से १३२

अणिट्ठत्त (अनिष्टत्व) प २८।२

अणिट्ठस्सर (अनिष्टस्वर) ज २।१३३

अणिट्ठस्सरता (अनिप्टस्वरता) प २३।२०

अणिड्ढि (अनर्द्धि) प ६।६८; २१।७२

अणिड्ढिपत्तारिय (अनर्द्धिप्राप्तार्य) प १।६०,६२, १२६

अणित्थंत्थ (अनित्थंस्थ) प २।६४।६

अणिदा (दे०) प ३५।१।१; ३५।१६

अणिदाया (दे०) प ३५।१७ मे २०,२२,२३

अणिमिस (अनिमेष) ज ५।६७

अणिय (अनीक)प २।३० मे ३३,३५,४१,४३,४८ से ५१ ज १।४५; २।६०; ३।१२५; ५।१,१६, ४३,४४,५०,५६, सू १८।२३

अणियट्टि (अनिवृत्ति) सू २०।८,२०।८।८

अणियत (अनियत) सू १।२६

अणियय (अनियत) प १७।२०

अणियाधिवति (अनीकाधिपति) प २।३० से ३३ ४१,४३,४८ से ५१

अणियाहिव (अनीकाधिप) ज ४।१५१।२

अणियाहिवइ (अनीकाधिपति) ज १।४५; २।६० ४।१६,१५१; ५।१,१६,३६,४३,४८,५०,५२, ५३,५६ सू १८।२३

अणियाहिवति (अनीकाधिपति) प २।३०

अणिल (अनिल) ज २।६८

अणिवारिय (अनिवारित) उ ३।११६; ४।२२

अणीय (अनीक) उ १।१४६; १४७

अणु (अणु) प ११।६४,६५,६६।१; २८।१४,१५, ६०,६१ ज ७।४३,५०,१६८ सू ६।१; ६।२; १७।१; १८।२,३; १६।२१

अणुउ (अनृतु) सू १०।१२६।३

अणुकतनुक (दे०) ज ३।१०६

अणुगंतव्व (अनुगन्तव्य) प १।४८; २।४०; १५।५५ ज ७।१३४

√ **अणुगच्छ** (अनु+गम्)

अणुगच्छइ ज ३।६; ५।२१ उ ३।१०१

अणुगच्छंति ज ३।१०,११,५१,८६,८७

अणुगच्छति प १६।४८

अणुगच्छमाण (अनुगच्छत्) ज ३।१८,३१,१८०

अणुगच्छित्ता (अनुगम्य) ज ३।६ उ ३।१०१

अणुगम्ममाण (अनुगम्यमान) उ ३।१३०

अणुगिण्हमाण (अनुगृण्हान) उ १।१०७,१०८

√ **अणुचर** (अनु+चर्)

अणुचरंति सू १६।२२।११

अणुचरंत (अनुचरत्) सू १६।२२।११

अणुचरिय (अनुचरित) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८ ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

√ **अणुजाण** (अनु+ज्ञा)

अणुजाणउ उ ३।५१

अणुजाय (अनुयात) ज ३।२२,३५,३६

अणुतडिया (अनुतटिका) प ११।७७

अणुतडियाभेद (अनुतटिकाभेद) प ११।७७,७६

अणुतडियाभेय (अनुतटिकाभेद) प ११।७३

अणुत्त (अणुत्व) ज ७।१६६ सू १८।३

अणुत्तर (अनुत्तर) प २।२७,२७।४; २।४६,६३;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१।५५; ३४।२३,२४ ज २।७१,८५; ३।२२३
अणुत्तरविमाण (अनुत्तरविमान) प २।६२।१; १०।२; ३०।२६
अणुत्तरोववाइय (अनुत्तरोपपातिक) प १।१३६, १३८; २।४६,६३; ३।१८३; ६।४६,६६,६६, ६८,११३; २०।५७; २१।५५,७१,८३,६३, ६४; ३३।१८,२६; ३४।१६,१८ ज० २।८१
अणुत्तरोववातिय (अनुत्तरोपपातिक) प २०।५६; २१।६२
अणुदु (अनृतु) ज ७।११२।३
अणुद्धुय (अनुद्धूत) जं ३।१२,२८,४१,४६,५८ ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३; ५।५
√अणुपरियट्ट (अनु+परि+वृत्)
अणुपरिट्टइ ज ७।१५६ से १६७ सू १०।६७
अणुपरियट्टंति ज ७।५५ सू १६।२३
अणुपरियट्टति सू १०।५
अणुपरियट्टित्ता (अनुपरिवृत्य) सू १०।५
अणुपरियट्टित्ताणं (अनुपरिवृत्य) प ३६।८१
अणुपरिवाडीय (अनुपरिपाटीक) ज ७।१३०
अणुपविट्ठ (अनुप्रविष्ट) ज ३।८१ उ १।३३, ३।८,१००,१३३
√अणुपविस (अनु+प्र+विश्)
अणुपविसइ ज ३।६,१७,२०,२१,२८,३१ से ३४,४१,४६,५४,६३,७१,७७,६५,१३७,१३६, १४३,१५६,१६६,१७७,१८२,२०१,२०४, २१८,२२२ सू २।१ अणुपविसंति ज ३।२०५, २०६ अणुपविसति ज ३।१८३,१८४
अणुपविसह उ ३।१०१
अणुपविसमाण (अनुप्रविशत्) ज ३।१८४,१८५
अणुपविसित्ता (अनुप्रविश्य) ज ३।६ सू २।१
अणुपुव्व (अनुपूर्व) ज २।१५; ४।३।२५,३५ सू ६।१ उ १।५७,५८,८२,८३; ३।४६
अणुप्पत्त (अनुप्राप्त) उ ३।१२७,१२८; ५।४३
अणुप्पयाहिणीकरेमाण (अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्) ज ३।२०४ से २०६,२०८; ५।४१
अणुप्पवाएमाण (अनुप्रवाचयत्) ज ३।२६,३६, ४७,१४३
√अणुप्पवाय (अनु+प्र+वाचय्)
अणुप्पवाएइ ज ३।२६,३६,४७,१३३
अणुबंध (अनुबन्ध) ज २।४२
अणुबद्धचारि (अनुबद्धचारिन्) सू २०।२
अणुब्भड (अनुद्भट) ज २।१५
अणुभाव (अनुभाव) प २३।१।१,२३।१३ से २३ ज ४।८३ चं २।५ सू १।६।५; १६।२२।१६,२०
अणुभावणामणिहत्ताउय (अनुभावनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८
अणुभावणामनिहत्ताउय (अनुभावनामनिधत्तायुष्क) प ६।११६,१२२
अणुभावनिहत्ताउय (अनुभावनिधत्तायुष्क) प६।१२३
√अणुमण्ण (अनु+मन्)
अणुमण्णित्था उ ३।१०६
अणुमय (अनुमत) प ११।३०।१,२ ज २।१५ उ ३।१२८
अणुमाण (अनुमान) सू ६।३
अणुमाणइत्ता (अनुमान्य) उ ३।५५
अणुयाय (अनुयात) ज ३।६३,६६,१०६,१६३, १७५,१८०
अणुरंगिणी (अनुरङ्गिनी) सू १०।७४
अणुरंजिएल्लिय (अनुरञ्जित) ज ३।११७
अणुरत्त (अनुरक्त) सू २०।७ उ १।१३६
अणुराग (अनुराग) प २।४०।११ उ १।७२,७३, ८७,८८,६२
अणुराधा (अनुराधा) सू १०।२ से ६, १८
अणुराहा (अनुराधा) ज ७।१२८,१२६,१३६।१, १४०,१४६,१५२,१६६, सू १०।२ से ६,१८, २३,५०,६२,७२,७५,८३,११५,१२०,१३१, १३३
√अणुलिंप (अनु+लिप्) अणुलिंपइ ज २।६६; ३।१२ अणुलिंपंति ज २।१००; ३।१२,२११; ५।५८
अणुलिंपित्ता (अनुलिप्य) ज २।६६
अणुलित्त (अनुलिप्त) प २।३१ ज ३।६,२२२

√**अणुलिह** (अनु+लिह्)
अणुलिहंति ज ३।१७८; ५।४३
अणुलिहंत (अनुलिहत्) उ ५।५
अणुलिहमाण (अनुलिखत्) प २।४८
अणुलेवण (अनुलेपन) प २।२० से २७,३०,३१, ४१,४६ ज २।७०
अणुलोम (अनुलोम) ज २।१६,६७
अणुलोमच्छाया (अनुलोमछाया) सू ६।४
अणुवउत्त (अनुपयुक्त) प १५।४८,४६; ३४।१२
अणुवत्तमाण (अनुवर्तमान) ज ५।२७
अणुवम (अनुपम) प ३०।२७,२८
अणुवरयकाइया (अनुपरतकायिकी) प २२।२
अणुववेत (अनुपेत) प १७।१३२
अणुवसंत (अनुपशान्त) प १४।६
अणुवसंपज्जमाणगति (अनुपसंपद्यमानगति) प १६।३८,४२
अणुवसंपज्जित्ताणं (अनुपसंपद्य) प १६।४२
अणुवाय (अनुवाद) ज ४।१०७
अणुवायगइ (अनुपातगति) सू १।१४
अणुवासिय (अनुवासित) ज ५।५
अणुविद्ध (अनुविद्ध) ज ३।१२,८८; ५।५८
अणुव्वय (अणुव्रत) उ ३।८१,८२
अणुसज्जमाण (अनुसजत्) ज ४।२०५
√**अणुसज्ज** (अनु+षंज्) अणुसज्जित्था ज २।५० अणुसज्जिस्संति ज २।१६२,१६४
अणुसमवयणोववत्तीय (अनुसमवदनोपपत्तिक) ज ३।१६७।१२
अणुसमय (अनुसमय) प ६।१६,६२,६३; ११।७०; २८।४,२६,५०
अणुसार (अनुसार) प २१।८० ज० ५।५७ उ ५।४५
√**अणुहर** (अनु+हृ)
अणुहरंति ज ३।१३८
√**अणुहो** (अनु+भू) अणुहोति प २।६४।२२
अणूण (अनून) सू १६।२१।८; १६।२२।२८
अणेग (अनेक) प १।३८।३; १।४८।६,४७; १।१०१।७; २।४१,६४ ज १।३७; २।१२,११३,१४६; ३।३,६,१२,२२,२४,२८,३१,३६,४१,४६,५८, ६६,७४,७७,६३,६६से१०१,१०६,१११,११६, १२०,१४७,१६३,१६८,१६३,२१२, २१३, २२२; ४।३,६,२५,३३,१२०,१४७,२१६, २४२; ५।३,४,२८,३२,३३,४३ उ १।६७ से ६६; ३।४३,४४; ५।१०,१७
अणेगजीविय (अनेकजीवित°जीवक) प १।३५,३६
अणेगविह (अनेकविध) प १।१३,२०,२३,२६,२६, ३५ से ५१,५६,६३ से ६६,७०,७१,७५,७६, ७८,७६,८६,६६; १६।३०,३७
अणेगसिद्ध (अनेकसिद्ध) प १।१२; १६।३६
अणेगिंदिय (अनेकेन्द्रिय) प ११।३८
अणेरइय (अनैरयिक) प १७।६०,६१
अणेसणिज्ज (अनेषणीय) उ ३।३८
अणोगाढ (अनवगाढ) प ११।६२; २८।१२,५८
अणोवम (अनुपम) ज ३।६२,१०६,११६
अणोवमा (अनुपमा) प २।६४।१८; १७।१३५
अणोवमा (दे०) ज २।१७
अणोवाहणय (अनुपानत्क) उ ५।४३
अणोहट्टिय (दे०) उ ३।११६; ४।२३
अण्ण (अन्य) प १।२०,२३,२६,२६,३५ से ३७,३६ से ४७,४८।७,१० से २६; १।४८ से ५१,५६, ६०,७८,६६,६७; २।३० से ३३,४८ से ५५; ११।२१ से २५; ३६।६४ ज १।४५,४६; २।२०,७१,६०; ३।८१,१८६,१८८,२०६, २१०,२१६,२२१; ४।१३,१४,५२,११४,१४६, १५६,१६५,२०६,२१६,२१६,२२१; ५।१,५, १६,२४,३८,४७,५०,६७; ७।५६,५६,१८३, १८५ सू ६।१; १०।१६२ से १६४,१६६; १७।१; १८।२१,२३,१६।११,२४; २०।१ उ ५।१०,१७
अण्णतर (अन्यतर) सू ६।१
अण्णतरठितिय (अन्यतरस्थितिक) प २८।५०,५१

अण्णत्थ (अन्यत्र) प ११।११ से २०,४६ सू १।१४, १७,१०।१३६; २०।७

अण्णमण्ण (अन्योन्य) प १६।३६,४२ ज २।३६, ४१,१४६; ३।१०५,१०७,११३ से १३८; ५।३,२७,३८ सू १।१८ से २१ उ १।४७,६८, १३८,१३९

अण्णयर (अन्यतर) प २२।६१ से ६५; २३।१९१ १९२ ज २।६६

अण्णया (अन्यदा) ज ३।४,८३,१०४,१३०,१५४, १७२,१८८,२२२ उ १।१४; २।८; ३।४६; ४।२१; ५।१३

अण्णलिंगसिद्ध (अन्यलिङ्गसिद्ध) प १।१२

अण्णहा (अन्यथा) प ११।०१।३,५ उ १।१०९

अण्णाण (अज्ञान) प ५।२४,२८,३०,३२,३४,३७, ४३,४५,४९,५३,५९,६८,७१,७४,८०,८३,८४ ८६,८७,८९,९७,९९,१०१,१०२,१०४,१०५, १०७,११७

अण्णाणपरिणाम (अज्ञानपरिणाम) प १३।१४,१६ १७,१९,

अण्णाणि (अज्ञानिन्) प १।७४,८४;५।६४,१८।८३ २३।२००,२८।१३७

अण्णाणुपुव्वी (अनानुपूर्वी) प २८।१८,६४ सू २६

अण्णोण्ण (अन्योन्य) प २।६४।१० ज ७।५८ सू १९।२६

अण्हाणय (अस्नानक) उ ५।४३

अतसी (अतसी) प १।३७।२

अतिक्कम (अतिक्रम) ज २।१३३

अतितेया (अतितेजा) सू १०।८८।२

अतित्थगरसिद्ध ((अतीर्थंकरसिद्ध) प १।१२

अतित्थसिद्ध (अतीर्थसिद्ध) प १।१२

अतिदूर (अतिदूर) ज १।६

अतिभाग (अतिभाग) सू ४।८

अतिमास (अतिमास) सू १५।३७

अतिराउल (दे०) प ११।१४,१९

अतिरेग (अतिरेक) ज ३।३५,२११; ५।५८

अतिवतित्ताणं (अतिव्रज्य) प २८।१०५; ३४।१९

अतिसीत (अतिशीत) सू १०।१२९।१

अतिहि (अतिथि) उ ३।४८,५०,५१

√अति (अति+इ)अतीति ज ३।९३,९५

अतीत (अतीत) प १५।८३,८४,८९ से ९७,९९ से १०१,१०३ से १०६,१०९,११०,११२ से ११७,११९,१२०,१२२,१२३,१२५ से १३२,१३५,१३९,१४०,१४१,१४३; ३६।८ से २६,३० से ३४,४४, से ४७

अतीय (अतीत) प १५।१०८,११८; ३६।३४

अतीव (अतीव) ज ५।३८

अतुरिय (अत्वरित) ज ५।५,७

अतुल (अतुल) प २।६४।२०

अत्त (आत्मन्) प १५।५० ज ३।२२२ उ ३।८३, १२०, १५०; ५।२८,४३

अत्तय (आत्मज) उ १।१०,३१,९५,१०९,११०, ११३,११४; २।९

अत्तया (आत्मजा) उ ४।९

अत्थ (अत्र) ज ४।१४२,३ सू ९।१ उ ३।१५१

अत्थ (अर्थ) ज ५।२६ चं १।३ सू २०।७ उ ३।४०

अत्थ (अस्त्र) ज ३।७७,१०९

अत्थओ (अर्थतस्) प १।१०१।८

अत्थजुत्त (अर्थयुक्त) ज ५।५८

अत्थणिउर (अर्थनिकुर) ज २।२४

अत्थणिउरंग (अर्थनिकुराङ्ग) ज २।४

अत्थत्थि (अर्थार्थिन्) सू २०।७

अत्थत्थिय (अर्थार्थिक) ज ३।१८५

अत्थमंत (अस्तवत्) ज ३।१९

अत्थमण (अस्तमयन) ज ७।३६ से ३८ चं ४।१ सू १।८।१;२।३; ९।२

अत्थसत्थ (अर्थशास्त्र) उ १।३१

अत्थसिद्ध (अर्थसिद्ध) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२

अत्थाम (अस्थामन्) ज ३।१११

अत्थि (अस्ति) प १।७५; २।६४।१४; ५।८०, ९९; ६।११०; १२।६; १५।४५,४७ से ४९,

६०,६२,६३,६५,६६,८७,९४ से १०१,१०३ से १०६,१०८,११२ से ११४,११६,१३८, १४१ ; १७।१३,३५ ; १८।१।२ ; २०।१,४,१७ १८,२२,२५,२८,२९,३४,३८,३९,४९,५०,५३, ५८ ; २१।९८ से १००,१०३ ; २२।९,११,१२, १४,१६,१८,५८,५९,७७,७९,८१,८२ ; २३।९ ; २८।१२३,१३६,१४१,१४५ ; ३४।७ से ९,११, १२,१५,१६,२० ; ३६।८ से ११,१७ से २३, २५,२६,२९ से ३२,३४,४४ ज १।४७, सू १।३ ; ९।१ उ ३।१०१ ; ४।५ ; ५।२९

अत्थिकायधम्म (अस्तिकायधर्म) प १।१०१।१२

अत्थिय (अस्थिक) प १।३६।१ ; ३।१।२

अत्थोग्गह (अर्थावग्रह) प १५।६८,७० से ७२,७४, ७५

अथिरणाम (अस्थिरनामन्) प २३।३८,१२२

अद (अदस्) सू १।४

अदंड (अदण्ड) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६,७४ १४७,१६८,२१२,२१३

अदंतवणय (दे० अदन्तधावनक) उ ५।४३

अदि (अयि) उ ५।४१

अदिइ (अदीति) ज ७।१८६।३

अदिज्ज (अदेय) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६, ७४,१४७,१६८,२१२,२१३

अदिट्ठ (अदृष्ट) सू ५।१ ; ७।१

अदिट्ठंत (अदृष्टान्त) प ३०।२७,२८

अदिण्णादाण (अदत्तादान) प २२।१४,१५,८०

अदिति (अदिति) ज ७।१३०

अदितिदेवया (अदितिदेवता) सू १०।८३

अदुक्खमसुह (अदुःखासुख) प ३५।१।२ ; ३५।१० १२

अदुत्तर (दे०) ज २।४७,१३१ ; ३।२२६ ; ४।२२, ३४,५४,६४,१०२,१०५,११३,१५९,१६१, १६६,२०८,२१०,२६१ उ १।११९

अदुवा (दे०) ज ७।२१२

अदूरसामंत (अदूरसामन्त) प ३४।२२,२३ ज १।५ ; ३।१८,३१,५२,६९,१३१, १४१,१८० ; ५।५,७ उ १।३ ; ३।२९ ; ५।६

अदेवीय (अदेवीक) प ३४।१५,१६

अद्द (आर्द्र) प २।३१

अद्दरूसग (अटरूपक,आटरूपक) प १।३७।४

अद्दा (आर्द्रा) ज ७।१२८,१२९।१,१३४ से १३६, १३६।१,१४०,१४९,१६१, सू १०।३ से ६, १३,२४,३९,६२,६८,७५,८३,१०४,१२०, १३१ से १३४।२,१३५।२,१६०

अद्दाय (दे०) प १५।१।१ ; १५।५०

अद्दारिट्ठय (आर्द्रारिष्टक) प १७।१२३

अद्ध (अर्ध) ज १।१६ ; ३।१०९ ; ४।२०८ ; ५।३८ ; ७।१७६,१७७।३ सू २।२ ; ९।३ उ १।१०३, १०९,११०,११३,११४

अद्धअउणट्ठि (अर्द्धैकोनषष्टि) सू ९।३

अद्धअट्ठारस (अर्धाष्टादश) सू १८।१

अद्धएकोणवीस (अर्धैकोनविंशति) सू १८।१

अद्धएकवीस (अर्धैकविंशति) सू १८।१

अद्धएकारस (अर्धैकादश) सू १८।१

अद्धंगुल (अर्धाङ्गुल) प ३६।८१ ज १।१७ ; ३।१०९ ; ७।२०७ सू १।५४

अद्धकविट्ठग (अर्द्धकपित्थक) प २।४८ सू १८।८

अद्धकुंभिक (अर्द्धकुम्भिक) ज ५।३८

अद्धकोस (अर्द्धकोश) ज १।३७,४२,५१ ; ४।९, १५,२४,३३,३६,११४,११८,१२८,१४७, १५४,१५५,२४२, सू १८।१२,१३

अद्धगाउय (अर्द्धगव्यूत) प ३३।२,९ ज ७।९०

अद्धचउवीस (अर्द्धचतुर्विंशति) सू १८।१

अद्धचंद (अर्द्धचन्द्र) प २।४८,५०,५९, ज १।२० ; ३।२४,७९,११६ ; ४।४९,१०८,२४५

अद्धचंदसंठाणसंठित (अर्द्धचंद्रसंस्थानसंस्थित) प २।५८

अद्धचोद्दस (अर्धचतुर्दश) सू १८।१

अद्धछट्ठ (अर्द्धषष्ठ) सू १८।१

अद्धछव्वीस (अर्द्धषड्विंशति) सू १८।१

अद्धछव्वीसतिविह (अर्द्धषड्विंशतिविध) प १।९३

अद्धजोयण (अर्द्धयोजन) ज १।७।१, १।९,१०,१७, २३,२५ ; ४।६,७,१४,२४,३६,४२,४९,५९,७१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४,७८,११२,११४,११५,११६,१२३, १२६,१२७,१४६ सू १८।११,२०

अद्धट्ठम (अर्द्धाष्टम) ज २।७८; ४।११०,११६, १२८ सू १८।१ उ १।५३,७८

अद्धट्ठारस (अर्द्धाष्टादश) प २३।१०४

अद्धणवम (अर्द्धनवम) सू १८।१

अद्धणाराय (अर्द्धनाराच) प २३।४५,६७

अद्धतिवण्ण (अर्द्धत्रिपञ्चाशत्) प २।२७।३

अद्धतेरस (अर्द्धत्रयोदश) प १।६०,८१।१; २३।१०२ ज ४।३६,४३,६६,७२,११४,१२०, १२२ सू १८।१

अद्धतेवट्ठि (अर्द्धत्रिषष्टि) ज ४।२४० उ ३।७

अद्धतेवण्ण (अर्द्धत्रिपञ्चाशत्) प २।२७

अद्धतेवीस (अर्द्धत्रयोविंशति) प ६।३१ सू १८।१

अद्धदसम (अर्द्धदश) सू १८।१

अद्धद्धमिस्सिया (अर्द्धार्द्धमिश्रिता) प ११।३६

अद्धपंचम (अर्द्धपञ्चम) प ४।३४,३६,४०,४२ सू १८।१

अद्धपण्णवीस (अर्द्धपञ्चविंशति) सू १८।१

अद्धपण्णरस (अर्द्धपञ्चदशन्) सू १८।१

अद्धपलिओवम (अर्द्धपल्योपम) प ४।१६८,१७०, १७४,१७६,१८०,१८२,१८६,१८८,१९२, १९४,१९५,१९७ ज ७।१८८,१९०,१९२, १९३ सू १८।२६,२८,३०,३२,३३

अद्धपलियंकसंठित (अर्द्धपर्यंक संस्थित) सू १०।४४

अद्धपोरिसी (अर्द्धपौरुषी) सू ६।३

अद्धबारस (अर्द्धद्वादश) सू १८।१

अद्धबयालीस अर्द्धद्वाचत्वारिंशत्) सू १।२३

अद्धबावण्ण (अर्द्धद्विपञ्चाशत्) सू १।२३

अद्धबावीस (अर्द्धद्वाविंशति) सू १८।१

अद्धभरह (अर्द्धभरत) ज ३।९५

अद्धभाग (अर्धभाग) ज १।२३,४८; ४।१,६२,८१ ८६

अद्धमंडल (अर्द्धमंडल) च ३।१ सू १।१८; १३।७ से ११,१४ से १६; १५।२६ से ३१

अद्धमंडलसंठिति (अर्द्धमण्डलसंस्थिति) सू १।७।१, १।१५ से १७

अद्धमागहा (अर्द्धमागधी) प १।९८

अद्धमास (अर्द्धमास) प ६।१२; २३।७१,१८४ सू १३।४,५,११

अद्धमासिया (अर्द्धमासिकी) उ ३।१४,८३,१२०

अद्धवीस (अर्द्धविंशति) सू १८।१

अद्धसत्तम (अर्द्धसप्तम) सू १८।१

अद्धसत्तरस (अर्द्धसप्तदश) सू १८।१

अद्धसीतालीस (अर्द्धसप्तचत्वारिंश) सू १।२३

अद्धसोलस (अर्द्धषोडश) ज ४।११६ सू १८।१

अद्धहार (अर्धहार) ज ३।६,२११,२२२; ५।३८ ६७

अद्धा (अद्धा, अध्वन्) प २।६४।१५,१६; १५। ५८।१; १५।६३,६४; १८।१,१२५; ३६।९२, ९४, सू १।११,१२,२७ से ३१; २।२; ६।३; १२।२ से ६,१० से १२

अद्धामिस्सिया (अर्द्धमिश्रिता) प ११।३६

अद्धासमय ('अद्धा'समय) प १।३; ३।११४,११५, १२१,१२२,१२४; ५।१२४; १५।५३ से ५५, ५७; १८।१२५

अद्धुट्ठ (दे०) प ३३।३,४ ज ४।११९ सू १।२३, ३।१; १८।१ उ ५।१०

अधण्ण (अधन्य) उ १।९२; ३।९८,१०१,१३१

अधमत्थिकाय (अधर्मास्तिकाय) प १।३; ३।११४, ११५, ११७,१२२; ५।१२४; १५।५३,५४

अधर (अधर) ज २।१५

अधरिम (अधरिम) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१४७,१६८,२१२,२१३

अधाजोग (यथायोग) सू १५।१०

अधाजोय (यथायोग) सू १५।१३

अधातच्च (यथातथ्य) सू १२।१३

अधारणिज्ज (अधारणीय) ज ३।१११

अधिगय (अधिगत) प १।१०१।२

अधिपति (अधिपति) ज ३।२५,४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिय (अधिक) सू १३।११,१४

अधिवति (अधिपति) प २।५०,५१

अधेसत्तमा (अधःसप्तमी) प ३।१८३

अनिल (अनिल) ज २।६८,१३१

अपइट्ठाण (अप्रतिष्ठान) प २।२७

अपच्चक्खाण (अप्रत्याख्यान) प १४।७; २३।३५

अपच्चक्खाणकिरिया (अप्रत्याख्यानक्रिया) प १७।११,२२,२३,२५; २२।६०,६४,६६, ७२,७४,९८,९९

अपच्चक्खाणि (अप्रत्याख्यानिन्) प २२।६४

अपच्चक्खाय (अप्रत्याख्यात) प ११।८९

अपज्जत्त (अपर्याप्त) प १।१७,२२,३१,४९ से ५१,६०,६६,७५,७६,८१; २।१७,२० से ३९,४१ से ४३,४८ से ६३; ३।४३ से ४९, ५३ से ६०,६४ से ७१,७५ से ८४,८८ से ९५, ११०,१७४; ४।५५,८६,८९,९१,९३,९६,९९, २३८,२४१,२४४,२४७,२५०,२५३,२५६, २५९,२६२,२६५,२६८,२७४,२७७,२८०, २८३,२८६,२८९,२९२,२९५,२९८; २१।६, १६,१८,२३ से ३२,३६,४०,४१,४८,५०,५३, ५५

अपज्जत्तग (अपर्याप्तक) प १।२०,२३,२५,२६,२८ २९,४८।६०; १।४८ से ५१,५३,८४, १३१ से १३३,१३५,१३७,,१३८; २।२,३,५, ६,८,९,११,१२,१४ से १९; ३।४१,४३ से ४९,५१,५३ से ६०,६२,६४ से ७१,७३,७५ से ८४,८६,८८,९१,९३ से ९५, ११०,१४२, १४८,१५१,१८३; ६।७१,७२,८३,१०२; ११।३९,४१; १५।४९; १८।४८; २१।५,१०, १३,२०,३३,३४,३६,४१,५२ से ५५,७२; ३४।१२

अपज्जत्तगणाम (अपर्याप्तकनामन्) प २३।३८,१२०

अपज्जत्तय (अपर्याप्तक) प १।२९; ३।६२,६६ से ६८,८६,८९,९०,९२,९३,९५,१४५,१५४, १५७,१६०,१६३,१६६,१६९,१७२,१७४, १८३; ४।२,५,८,११,१४,१७,२०,२३,२६,२९, ३२,३५,३८,४१,४४,४७,५०,५३,५७,६०,६३, ६६,६८,७०,७३,७५,७७,८०,८३,१०२,१०५, १०८,१११,११४,११७,१२०,१२३,१२६, १२९,१३२,१३५,१३८,१४१,१४४,१४७, १५०,१५३,१५६,१५९,१६३,१६६,१६९, १७२,१७५,१७८,१८१,१८४,१८७,१९०, १९३,१९६,१९९,२०२,२०५,२०८,२११,२१४, २१७,२२०,२२३,२२६,२२९,२३२,२३५, २७१; ६।७१,७२,७९,८३,८४,९७,१०२; ११।३१,३५,३६; १८।८,१८,३०,३९,११४; २१।४०,४२; २३।१९३; २८।१४३ से १४५; ३६।५२

अपज्जत्ति (अपर्याप्ति) प २८।१४३

अपज्जवसित (अपर्यवसित) प २।६४

अपज्जवसिय (अपर्यवसित) प १८।७,१३,१७, २५,२९,५५,५८,५९,६३,६४,६७,६८,७५ से ७७,७९,८२,८३,८६,८८,९०,९२,१००, १०५,१११,११२,११५,११८,१२१,१२३, १२४,१२७

अपज्जुवासणया (अपर्युपासना) उ ३।४७

अपडिक्कंत (अप्रतिक्रान्त) उ ३।८३,१२०; ४।२४

अपडिबद्ध (अप्रतिबद्ध) ज २।७०

अपडिबद्धगामि (अप्रतिबद्धगामिन्) ज २।६८

अपडिबुज्झमाण (अप्रतिबुध्यमान) ज २।६५; ३।१८६,

अपडिवाइ (अप्रतिपातिन्) प ३३।१।१; ३३।३५

अपडिवाति (अप्रतिपातिन्) प १।११४

अपडिसुणमाण (अप्रतिशृण्वत्) उ १।१२७

अपडिहय (अप्रतिहत) प ११।८९

अपडोयार (अप्रत्यवतार) प ३०।२७,२८

अपढम (अप्रथम) प १।१३,१०३,१०६,१०७, १०९,११०,११३,११४,११६,११९,१२०, १२२,१२३; १६।३७

अपत्थियपत्थग (अप्रार्थितप्रार्थक) ज ३।१२४ उ १।११५,११६

अपत्थियपत्थय (अप्रार्थितप्रार्थक) ज ३।२६,३९, ४७,१०७,११४,१२२,१३३ उ १।८९

अपदेसट्ठया (अप्रदेशार्थं) प ३।१७९,१८१

अपमत्त (अप्रमत्त) प १७।३३; २१।७२

अपमत्तसंजत (अप्रमत्तसंयत) प ६।९८

अपमत्तसंजय (अप्रमत्तसंयत) प ६।९८; १७।२५, २२।६३

अपमाण (अप्रमाण) प ३०।२७,२८

अपराइय (अपराजित) ज ३।३

अपराइया (अपराजिता) ज ४।२१२

अपराजित (अपराजित) प १।१३८; २।६३; ६।५६; ७।२९ ज १।१५

अपराजिता (अपराजिता) ज ४।२०२; ७।१८६

अपराजिय (अपराजित) प ४।२९४ से २९६; ६।४२; १५।८९,९२,१००,१०५,१०८,१०९, ११४,११६,१२०,१२१,१२३,१२५,१२६, १३१,१३९; २८।९६

अपराजियत्त (अपराजितत्व) प १५।११३

अपराजिया (अपराजिता) ज ४।२१२।४; ५।८।१; ७।१२०।२ सू १०।८८।२

अपरिग्गहिय (अपरिगृहीत) प ४।२२२ से २२४, २३४, से २३६,

अपरिजाणमाण (अपरिजानत्) उ ३।५९,६१,७७, ११६

अपरितावियं (अपरितापित) ज २।४९

अपरित्त (अपरीत) प ३।१०९; १८।१०९

अपरिभुंजमाण (अपरिभुञ्जत्) उ १।३५

अपरिभूय (अपरिभूत) ज ३।१०३ उ ३।१०, २८ ९६

अपरिमिय (अपरिमित) ज ३।१९७

अपरियाग (अपरिपाक, अपर्याय) प १७।१३२

अपरियार (अपरिचार) प ३४।१५,१६

अपरियारग (अपरिचारक) प ३४।१८,२५

अपरिसेस (अपरिशेष) प २८।४०, ६९ ज ४।८३, २७४

अपरिसेसिय (अपरिशेषित) प २८।२३

अपविट्ठ (अप्रविष्ट) प १५।३९, ४१

अपसत्थ (अप्रशस्त) प १७।११४।१; २३।५६, १०९,११७,१२८

अपाणय (अपानक) ज २।६५,७१,८८; ३।२२५

अपि (अपि) ज १।२२ उ १।६७; ३।६०; ५।१७

अपिक्क (अपक्व) प १७।१३२

अपुट्ठ (अस्पृष्ट) प ११।६१; १५।३६ से ३८,४१; २२।५९; २८।११,५७ ज ७।४०,५३

अपुणरावित्ति (अपुनरावृत्ति) ज ५।२१

अपुणरुत्त (अपुनरुक्त) ज २।६४; ५।५८

अपुण्ण (अपुण्य) उ १।९२; ३।९८,१०१,१३१

अपुरिसक्कार (अपुरुषकार) ज ३।१११

अपुरोहिय (अपुरोहित) प २।६०,६३

अपुव्व (अपूर्व) प २८।२०,३२,६६

अपुव्वकरण (अपूर्वकरण) ज ३।२२३

अपोह (अपोह) ज ३।२२३

अप्प (आत्मन्) प० १४०।४; २२।४ से ६ ज १।५; २।७१, ८३; ३।१८८; ५।५७ सू १।१९; १३।१२,१४ से १७; १८।८; २०।४ उ १।२,३,४६,६५,६८,७२; २।१०,१२; ३।१४,२९,५०,५१,५३,५४,८३,९९,१३२, १४४,१६१; ४।२४,२८; ५।२६, २८,३२,३९, ४३

अप्प (अल्प) प ३।३८ से ११६, ११७।१,११८ से १२०,१२२ से १२४,१७४,१७९ से १८३; ६।१२३; ८।५,७,९,११; ९।१२,१९,२५; १०।३ से ५,२६ से २९; ११।७९,९०; १५।१३,१६,२६,२८,३१,३३,६४; १७।५६ से ६९,७१ से ७६,७८ से ८३,१४४ से १४६; २०।६४; २१।१०४,१०५; २२।१०१; २८।४१, ४४,७०; ३४।२५; ३६।३५ से ४१,४८,४९ ज १।५०; २।५८,८३,१२३,१२८,१४८,१५१, १५७; ३।१०,११,८५,८७,११७।१,१८४; ४।१०१; ५।५ २७,५७; ७।११२।४,१६८,१९७ सू १०।१२९।४; १५।१; १८।१८,३७; १९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३,२६; २०।७ उ १।१६,४२,६३; ३।२६, १४१; ४।१२

अप्प (अल्प) जवासा प १।४०।४

अप्पकप्पिय (आत्मकल्पित) उ १।४६

अप्पकम्मतराग (अल्पकर्मतरक) प १७।३,१६

अप्पच्चक्खाण (अप्रत्याख्यान) प १४।७

अप्पच्चक्खाणकिरिया (अप्रत्याख्यान क्रिया) प २२।६४,६६,७४,९७,१०१

अप्पच्चक्खाणवत्तिया (अप्रत्याख्यानप्रत्यया) प २२।६४

अप्पडिबुज्झमाण (अप्रतिबुध्यमान) ज ३।२०४

अप्पडिहय (अप्रतिहत) ज ३।८१,८८,१०९,१५१; ५।२१

अप्पणया (आत्मन्) प २८।२०,३२,६६

अप्पतराय (अल्पतरक) प १७।२,२५

अप्पतिट्ठिय (अप्रतिष्ठित) प १४।३

अप्पत्त (अप्राप्त) सू १९।२२।१७

अप्पत्थियपत्थय (अप्रार्थितप्रार्थक) ज ३।१०७

अप्पबहु (अल्पबहु) प १७।११४।१; २१।१।१; ३४।१।२ ज ७।१६८।२

अप्पमेय (अप्रमेय) ज ५।५८

अप्पवस (आत्मवश) उ ३।११८

अप्पवेदणतराग (अल्पवेदनतरक) प १७।६,२७

अप्पसत्थ (अप्रशस्त) प १७।१३८; २३।११६, १३२; ३४।१३

अप्पसरीर (अल्पशरीर) प १७।२,२५

अप्पसोय (अल्पशोक) उ १।९३

अप्पहयगति (अप्रहतगति) ज २।६८

अप्पाबहु (अल्पबहु) प ६।१२३; १५।१।१

अप्पाबहुग (अल्पबहुक) प १७।३६,७०

अप्पाबहुय (अल्पबहुक) प० १०।२८; ११।८०; १५।१८,१९, १५।५८।१; १७।७७

अप्पिच्छ (अल्पेच्छ) ज २।१६

अप्पिड्ढिय (अल्पर्द्धिक) प १७।८४ से ८७,८९ ज० ७।१८१ सू १८।१९

अप्पिण (अर्पय्) अप्पिणइ उ० १।११८ अप्पिणामि उ० १।११७

अप्पिणित्ता (अर्पयित्वा) ज ३।८१

अप्पिय (अप्रिय) ज २।१३३

अप्पियतरिया (अप्रियतरका) प १७।१२३ से १२५, १३० से १३२

अप्पियत्त (अप्रियत्व) प० २८।१४

अप्पियस्सर (अप्रियस्वर) ज २।१३३

अप्पुस्सुय (अल्पौत्सुक्य) ज ३।२६,३९,४७,१३३

अप्पेस्स (अप्रेष्य) प० २।६०,६३

अप्फुण्ण (दे) उ १।२३,९१

अप्फोड (आ+स्फोटय)—अप्फोडेंति ज ५।७

अप्फोडिय (आस्फोटित) ज ३।३१; ७।१७८

अप्फोया (आस्फोता) मल्लिका, अपराजिता प १।४०।३

अफासाइज्जमाण (अस्पृश्यमान) प २८।४०,४१, ४३,४४,६६,७०

अफुण्ण (दे०) प ३६।५९,६०,६६ से ६८,७०,७१, ७३ से ७५

अफुसमाण (अस्पृशत्) प १३।२३

अफुसमाणगति (अस्पृशद्गति) प १६।३८,४०; ३६।९२

अफुसित्ता (अस्पृष्ट्वा) प १६।४०

अबंधग (अबन्धक) प ३।१७४; २२।८४; २६।९

अबंधय (अबन्धक) प २२।८३,८४,८६; २६।८ से १०

अबल (अबल) ज ३।१११

अबहुस्सुय (अबहुश्रुत) सू २०।९।२

अबाधा (अबाधा) सू २८।२०

अबाहा (अबाधा) प २।६४; २३।६० से ६४,६६, ६८,६९,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ९०,९२, ९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१७६,१७७, १८२,१८३,१८७,१९० ज १।१७; ३।१; ४।११०,११६,१४१,१४२,२०६,२०७; ७।५,

६,८ से १३,६४,६५,६७ से ७२,८८,८९,९१,
९२,१६८।१,१७१ से १७४,१८२ सू १८।५,६

अबाहूणिया (अवाभ्रोनिका) प २३।६० से ६४,६६
६८,६९,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ९०,९२,
९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४,
११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,१७६,
१७७,१८२,१८३,१८७,१९०

अबीय (अद्वितीय) ज ३।२०,३३,८४,१८२

अब्भइय (अभ्यधिक) प १८।४

अब्भंग (अभि+अञ्ज्) अब्भंगेइ उ ३।११४
अब्भंगेति ज ५।१४

अब्भंगण (अभ्यञ्जन) उ ३।११४,११५,११९

अब्भंगेत्ता (अभ्यज्य) ज ५।१४

अब्भंतर (आभ्यन्तर) प ३६।८१ ज ३।१८४;
४।१५२; ७।५,८,९,१०,१३ से १६,१९ से
२२,२५ से २७,३०,३१,३३,६४,६७ से ६९,
७२ से ७५,७८ से ८१,८४,८८,९१,९३,९५,
१७५ सू १।११,१२,१४,१६,१७,२१,२४,
२७,३०; २।३; ३।१,२; ४।७; ६।१; ९।२;
१०।१३२; १३।१३; १९।१; १९।२२।१२

अब्भंतर पुरक्खरद्ध (आभ्यन्तर पुस्करार्द्ध) सू ८।१
१९।१६ से १९

अब्भंतरिय (आभ्यन्तरिक) सू ४।३,४,६,७

अब्भंतरिल्ल (आभ्यंतरिक) ज ७।१७५ सू १८।७

अब्भक्खाण (अभ्याख्यान) प २२।२०

अब्भणुण्णाय (अभ्यनुज्ञात) उ ३।१०६,१०८,१३८;
४।११

अब्भपडल (अभ्रपटल) प १।२०।२; ११।७५

अब्भवद्दलय (अभ्रवार्दलक) ज ५।७

अब्भवालुया (अभ्रवालुका) प १।२०।२

अब्भहिय (अभ्यधिक) प ४।१७१,१७३,१७४,१७६,
१७७,१७९,१८०,१८२,१८३,१८५,१८६,
१८८; ५।५,१०,२०,३०,३२,७२,८१,१०२,
१२९,१३१,१३२,१३४,१६०,१७७,१९३,
२१४,२२८; १७।९३; १८।२८,४७,६०,६९ से
७४,८४; २३।७८,७९,१६९; २९।२१
ज ३।१८,९३,१८०; ७।१८७ से १९०
सू १८।२५ से ३० उ ३।१६

अब्भितर (आभ्यन्तर) प १५।५५; ३३।१।१
ज १।७, २।१२; ४।८,२१; ५।३९ सू १।१४,
१६,२१,२४,२७ से २९,३१; २।३; ४।९;
६।१; ८।१, १९।२१।१

अब्भिंतरओ (अभ्यन्तरतस्) ज ३।२४।२,१३१।२
उ २।८

अब्भिंतरग (आभ्यन्तरक) प १।४८।४५

अब्भिंतरय (आभ्यंतरक) उ १।४४

अब्भिंतरिय (आभ्यंतरक) ज ४।१९

अब्भुक्ख (अभि+उक्ष्) अब्भुक्खेइ ज ३।१२,
८८ उ० ४।२१

अब्भुक्खेत्ता (अभ्युक्ष्य) ज ३।१२

अब्भुग्गय (अभ्युद्गत) प ४।४८ ज १।४२; २।१५;
४।४९, २२१, ७।१७६,१७८ सू १८।८

अब्भुट्ठ (अभि+उत्+ष्ठा) अब्भुट्ठेइ
ज ३।६,२६,३९,४७,१३३, २१४; ५।२१
उ ३।१०१—अब्भुट्ठेमि उ ३।१३६; ४।१४
—अब्भुट्ठेहि उ ३।११५

अब्भुट्ठिय (अभ्युत्थित) ज २।७०

अब्भुट्ठेत्ता (अभ्युत्थाय) ज ३।६ उ ३।१०१,
१३४

अब्भुण्णय (अभ्युन्नत) ज २।१५; ७।१७८

अब्भुवगम (अभ्युपगम) प ३५।१।१

अब्भोरुह (अभ्यवरुह) प १।४४।१

अब्भोवगमिया (आभ्युपगमिकी) प ३५।१२,१३

अभंगय (अभङ्गक) प २६।९; २८।११९

अभक्खेय (अभक्ष्य) उ ३।३७ से ४०

अभड (अभट) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६,७४,
१४७,१६८,२१२,२१३

अभय (अभय) उ १।३१,४२ से ४६,४८

अभयदय (अभयदय) ज ५।२१

अभवसिद्धिय (अभवसिद्धिक) प ३।११३,१८३;
१२।७,२०; १८।१२३; २८।११२

अभव्वजण (अभव्यजन) सू २०।१।१
अभायण (अभाजन) सू २०।१।३
अभाव (अभाव) प ३।१२१
अभासग (अभाषक) प ३।१०८; ११।३८ से ४१, ६०
अभासय (अभाषक) प० १८।१०५
अभिइ (अभिजित्) ज ७।११३।१, १२८ से १३१, १३३,१३४।१, १३५,१३६,१३८,१४१,१४६, १५६,१७५ सू १०।१ से ६,८,२०,२३,२७,५५, ६३,७५,७८,९२,१२०,१२२,१२३,१३० से १३६; १२।१६; १५।८,११; १८।७;
अभिओग (अभियोग) उ ३।९१
अभिक्ख (अभीक्ष्ण) ज २।१३१
अभिक्खण (अभीक्ष्ण) प १७।२,२५; २८।२१,२३, ६७ ज० १।१८; २।१३१,१३३; ३।१०४, १०५ उ १।५६,८४,९७; ३।११७; ४।२१
अभिगम (अभिगम) प ३४।१।२
अभिगमण (अभिगमन) ज ५।७,४१ सू० १३।१७ उ १।१७; ३।७
अभिगय (अभिगत) उ ३।१४४; ५।३४
√**अभिगिण्ह** (अभि+ग्रह्)अभिगिण्हइ उ ३।५५ अभिगिण्हिस्सामि उ ३।५०
अभिगिण्हेत्ता (अभिगृह्य) उ ३।५०
अभिग्गह (अभिग्रह) प ११।३७।२ उ० ३।५०
अभिचंद (अभिचन्द्र) ज २।५६, ६१; ७।१२२।१ सू १०।८४।१
अभिजात (अभिजात) सू १०।८६।२
अभिजाय (अभिजात) ज ३।३; ७।११७।२
अभिजिणमाण (अभिजयत्) ज ३।१८,३१,१८०
अभिजिय (अभिजित) ज ३।३६,३९,४७,५६,६४, ७२, १२६।४, १३३,१३८,१४५,१८८; ७।१२६
अभिजेतुं (अभिजेतुम्) ज ३।९५
अभिज्झियत्त (अभिध्यातत्व) प २८।२४,२६
अभिणंद (अभि+णद्) अभिणंदति ज २।६४
अभिणंद (अभिनन्द) सू १०।१२४।१
अभिणंदत (अभिनन्दत्) ज २।६४; ३।१८५, २०९
अभिणंदिज्जमाण (अभिनन्द्यमान) ज २।६५
अभिणंदिय (अभिनन्दित) ज ७।११४।१
अभिणय (अभिनय) ज ५।५७
अभिणिसढ (अभिनिसृत) सू ९।१,३
√**अभिणिस्सव** (अभि+नि+स्रु) अभिणिस्सवंति ज ४।१०७
अभिणिस्सित (अभिनिश्रित) सू ९।३
√**अभिणी** (अभि+णी) अभिणेति ज ५।५७
अभिण्ण (अभिन्न) प ११।७२
√**अभिथुण** (अभि+ष्टु) अभिथुणंति ज २।६४; ३।२१०
अभिथुणंत (अभिष्टुवत्) ज २।६४; ३।१८५,२०९
अभिथुव्वमाण (अभिष्टूयमान) ज २।६५; ३।१८६ २०४
अभिनिविट्ठ (अभिनिविष्ट) प २०।३९
√**अभिनिस्सव** (अभि+नि+स्रु) अभिनिस्सवेइ उ १।५९
अभिभूय (अभिभूत) ज २।१३३ उ १।६०,६२,८५, ८७,९३
अभिमुह ((अभिमुख) ज १।६; २।९०; ३।१४, १५,२२,३०,३१,३६,४३,४४,५१,५२,६० ६१,६८,६९,१३०,१३१,१३६,१३७,१४०, १४११४५,१४६,१५०,१७२,१७३,२०५,२०६, ४।१,३७,३८,६५,७१,७३,९०,९१,९४; ५।५८,६।२३ से २६ उ १।१९; ३।४३
√अभिरक्ख (अभि+रक्ष्) अभिरक्खउ उ ३।५१
अभिरममाण (अभिरममाण) ज २।१४६; ५।६७
अभिराम (अभिराम) प २।३०,३१,४१ ज ३।१, ७,९,१७,२१,३४,८८,१०९,१७७,२२२; ४।२७; ५।७,२८,४३ सू २०।७ उ ५।५
अभिरुइय (अभिरुचित) उ ३।१३८
अभिरूव (अभिरूप) प २।३०,३१,४१,४८,४९,

५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१,४२; २।१२,१४, १५; ४।३,६,१३,२५,२७,२९,३३,४६,१४६; ५।६२ सू०१।१ उ०५।४ से ६
अभिलंघमाण (अभिलङ्घमान) ज ४।४९
अभिलाव (अभिलाप) प ४।५५; ६।४६,५९,६९,७८ १११,१२३; ११।८३; १५।३८,५०; १७।८८, ९१,९६,११७,१४५,१४६; २१।५५; २२।५८; २३।१९१; ३६।६५ ज ३।२११; ४।२३८; ७।१५५ सू ५।१; ६।१; ७।१; ९।२,३; १०।२३, १४८,१५०; १५।१९; १८।१; १९।१,३१; २०।२
अभिवंदिऊण (अभिवन्द्य) प १।१।१
अभिवड्ढि (अभिवृद्धि) ज ७।१३०
अभिवड्ढित (अभिवर्धित) सू १०।१२८,१२९; ११।१; १२।१,६,१२; १५।२६से२८
अभिवड्ढितसंवच्छर (अभिवर्धितसंवत्सर) सू ११।२ से ६; १२।६
अभिवड्ढित्ता (अभिवर्ध्य) सू ६।१
अभिवड्ढिदेवया (अभिवृद्धिदेवता) सू०१०।८३
अभिवड्ढिय (अभिवर्धित) ज ७।१०५,११० से ११२।५ सू १०।१२७,१२९।५
अभिवड्ढियसंवच्छर (अभिवर्धितसंवत्सर) सू १०।१२७
अभिवड्ढेत्ता (अभिवर्ध्य) ज ७।२७ सू ६।१
अभिवड्ढेमाण (अभिवर्धमान) ज ७।१०, १६,२२,२५,२७,३०, ६९,७५,८१, सू १।२०, २१,२७; ६।१; ९।२
अभिवुड्ढ (अभि+वृध्) अभिवुड्ढेइ सू ६।१
अभिवुढिड्त्ता (अभिवर्ध्य) सू १।१४
अभिवुड्ढेमाण (अभिवर्धमान) सू १।१४; २।३; ९।२
अभिसमण्णागय (अभिसमन्वागत) प २०।३९ सू ३।२६,३९,४७,१२२,१२६,१३३ उ ३।८५, ९४,१२२,१६३; ५।३१
अभिसरमाण (अभिसरत्) उ ३।६८
√अभिसिंच (अभि+सिंच्) अभिसिंचइ ज २।६४ अभिसिंचंति ज ३।२१०; ४।२४८,२५० से २५२; ५।५९ अभिसिंचति ज ३।२०९; ५।६०
√अभिसिंचाव (अभि+सेचय्) अभिसिंचावेइ उ १।६८ अभिसिंचावेसि उ १।७२
अभिसिंचावित्तए (अभिषिञ्चयितुम्) ज ३।१८८ उ० १।६५
अभिसिंचित्ता (अभिषिच्य) ज २।६४
अभिसिंचिय (अभिषिञ्चित) ज ३।२१२
अभिसित्त (अभिषिक्त) ज ३।२१४
अभिसेक्क (अभिषेक) ज ३।२०४,२१४,२१७, ४।१४०
अभिसेक्क (अभिषेक्य) उ १।१२३,१३१
अभिसेय (अभिषेक) ज २।१५; ३।२०९; ४।१४०।१ १६०,२४४,२४८; ५।५७,५८,६१,६५
अभिसेयपीढ (अभिषेकपीठ) ज ३।१९४ से १९६, २०४ से २०६,२१४ से २१६
अभिसेयमंडव (अभिषेकमण्डप) ज ३।१९१,१९३, १९४,१९८,२०४ से २०६,२०८,२१४
अभिसेयसभा (अभिषेकसभा) ज ४।१४०
अभिसेयसिला (अभिषेकशिला) ज ४।२४४; ५।४७
अभिसेयसिहासण (अभिषेकसिंहासन) ज ४।२४८; ५।४७
√अभिहण (अभि+हन्) अभिहणंति प ३६।६२,७७
अभिहणमाण (अभिघ्नत्) ज ३।१०९
अभिहिय (अभिहित) प १।१०१।१२
अभीइ (अभिजित्) ज २।८५,८८,१३८; ७।१३६।१ सू १९।२२।२७
अभीय (अभीत) ज २।६४
अभेज्ज (अभेद्य) ज ३।७९,९९ से १०१,११६,
अभेल (अभेल) ज ३।१०९
अमच्च (अमात्य) ज ३।,९,७७,२२२
अमणाम (दे०) ज २।१३३
अमणामतरिया ('अमणाम' तरका) प १७।१२३ से १२५,१३० से १३२
अमणामत्त ('अमणाम' त्व) प २८।२४
अमणुण्ण (अमनोज्ञ) प २३।१६,२१ ज ७।१३१, १३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमणुण्णतरिया (अमनोज्ञतरका) प १७।१२३ से १२५,१३० से १३२
अमणुण्णत्त (अमनोज्ञत्व) प २८।२४
अमणूस (अमनुष्य) प २१।७२
अमम (अमम) ज २।५०,१६४;४।१०६ २०५, ७।१२२।३ सू १०।८४।३
अमयमेह (अमृतमेघ) ज २।१४४,१४५
अमर (अमर) प २।३०,३१,४१; २।६४।२१; ज २।७१; ३।३५,१०६,१३८
अमरपति (अमरपति) ज ३।३१
अमरवइ (अमरपति) प २।४५।२ ज ३।३,१८, ६३,१८०
अमल (अमल) ज ४।२६
अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णग (अमायिसम्यक् दृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७,२६
अमाइसम्मद्दिट्ठी (अमायिसम्यक्दृष्टि) प १५।४६; ३४।१२; ३५।३
अमाइसम्मद्दिट्ठी उववण्णग (अमायि सम्यक्दृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७
अमाण (अमान) ज २।६८
अमाय (अमाय) ज २।६८
अमावासा (अमावास्या) ज ७।१२५,१३७,१४७, १४८.१५०,१५१,१५४,१५५, सू १०।७,२३ से २६,१३६,१३७,१४८ से १५१,१५७ से १६१; १३।१ से ३,६,
अमिज्ज (अमेय) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१४७,१६८ २१२,२१३
अमित्त (अमित्र) ज ३।२२१
अमिय (अमृत) प २।६४।१६
अमिय (अमित) प २।४०।७ ज ७।१७८
अमियवाहण (अमितवाहन) प २।४०।७
अमिलाय (अम्लान) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८, ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३
अमिलाव (अभिलाप) ज ४।२३८
अमूढदिट्ठि (अमूढदृष्टि) प १।१०१।१४
अमोहा (अमोहा) ज ४।१५७।१
अम्मता (अम्बा) उ ४।११
अम्मया (अम्बा) उ १।३४,४०,४३,७४; ३।६८, १०१,१३१
अम्मा (अम्बा) प ११।१३,१८ उ १।७१,७३,८८
अम्मापिइ (अम्बापितृ) उ २।६
अम्मापियर (अम्बापितृ) उ १।६३; ३।१२६,१२८ ४।११,१४,१५,१६; ५।२७,३८
अम्ह (अस्मत्) प १।१।३ ज ५।३ सू १।२० उ १।१५
अय (अज) प १।६४; ११।१६ से २० ज २।३४, ३५; ७।१८६।३
अय (अयस्) प १।२०।१ ज १।७
अयकरय (अजकरक) ज ७।१८६।२ सू २०।८,८।२
अयखंड (अयस्खण्ड) प ११।७४
अयगर (अजगर) प १।६८,७२ ज २।४१
अयगोल (अयोगोल) १।४८।५६
अयण (अयन) ज २।४,६६; ७।१२६,१२७ सू ६।१; ८।१; १३।७,६,१२ से १४
अयदेवया (अजदेवता) सू १०।८२
अयमाण (अयमान) ज ७।२०,२३,२६,२८ सू १।१४,१६,२१,२४,२७; २।३; ६।१; १३।१; १४।३,७
अयल (अचल) ज ३।७६,११६
अयसिकुसुम (अतसीकुसुम) प १७।१२४
अयसी (अतसी) प१।४५।२; २।३१ ज २।३७
अयाणंत (अजानत्) प १।१०१।५
अयोज्झ (अयोध्य) ज ३।३५
अयोमुह (अयोमुख) प १।८६
अर (अर) ज ३।३५
अरइ (अरति) प २३।७७ ज २।७०
अरजा (अरजा) ज ४।२१२
अरणि (अरणि) ज ५।१६ उ०३।५१
अरण्ण (अरण्य) ज २।६६,१३१
अरति (अरति) प २३।३६,१४५
अरतिरति (अरतिरति) प २२।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरत्त (अरक्त) प २।७०
अरय (अरक) ज ३।३०
अरय (अरजस्) सू २०।८।७
अरयंबर (अरजोम्बर) प २।५० से ५३,५४ ज २।९१
अरयंबरवत्थधर (अरजोम्बरवस्त्रधर) ज ५।१८, ४८
अरया (अरजा) ज ४।२१२।२
अरबाक (अरबक) प १।८९
अरविंद (अरविन्द) प १।४६,१।४८।४४ ज ३।११७
अरसमेघ (अरसमेघ) ज २।१३१
अरह (अर्हत्) ज २।६३ से ६७,७३ से ९०; ५।५८,६५ उ ३।१२,१४,२९,४६,७९;४।१०, ११,१३,१४,१९,२०;५।१४,२०,३२,३३,३६, ३७,३९ से ४१
अरहंत (अर्हत्) प १।९१;९।२६ ज १।१;५।२१ सू० २०।९।४ उ १।१७
अरहंतवंस (अर्हद्वंश) ज २।१२४
अरि (अरि) ज २।२८
अरिट्ठ (अरिष्ट) प १।३५।२
अरिट्ठनेमि (अरिष्टनेमि) उ ५।१४,२०,३२,३३, ३६,३७,३९, से ४१
अरिस (अर्शस्) ज २।४३
अरिह (अर्ह) ज १।२ उ १।३९,४२
अरुण (अरुण) ज ४।८४,८५ सू २०।८,८।५
अरुणवर (अरुणवर) प १५।५५।१ सू १९।३१
अरुणवरोभास (अरुणवरावभास) सू १९।३१
अरुणोभास (अरुणावभास) ज ४।८५
अरुणाभ (अरुणाभ) सू २०।२
अरुणोद (अरुणोद) सू १९।३१
अरुय (अरुज) ज ५।२१
अरूवि (अरूपिन्) प १।२,३;५।१२,३,१२४
√**अरुह** (अर्ह्)
अरुहतु ज ३।१२६
अलंकार (अलङ्कार) ज २।६५,९९,१००;३।१२ ६४,७२,७८,१५०,१८०,२०९,२२४;५।१४, २२,३६,४१,४३ उ १।३५,७०;३।५०,११०, ११३;४।१८,२०;५।१७
अलंकारिय (अलंकारिक) ज ४।१४०
अलंकित (अलङ्कृत) सू २०।७
अलंकिय (अलङ्कृत) प २।४८ ज ३।९,८५,२११, २२२;४।४९;५।५८ उ १।१९,४२;३।२९, १४१;४।१२
अलंबुसा (अलम्बुसा) ज ५।११।१
अलकापुरी (अलकापुरी) ज ३।१
अलत्तग (अलक्तक) उ ३।११४,
अलद्ध (अलब्ध) उ ३।३८
अलभमाण (अलभमान) उ १।६६
अलसंडविसयवासी (अलसण्डविषयवासिन्) ज ३।८१
अलाय (अलात) प १।२६
अलिय (अलीक) उ १।४७
अलेस्स (अलेश्य) प ३।९९;१३।१९;१७।५६, ५८;१८।७५;२८।१२४
अलोग (अलोक) प १०।२,४,५;१५।१।२
अलोय (अलोक) प २।६४।३;१५।५७;३३।१३
अलोवेमाण (अलोपयत्) उ १।१११,११२
अलोह (अलोभ) ज २।६८
अल्ल (आर्द्र) उ १।४४ से ४६
अल्लइकुसुम (आर्द्रकीकुसुम) प १७।१२७
अल्लग (आर्द्रक) ज ३।११९
अल्लीण (आलीन) ज २।१५,१६;७।१७८
अवक्कम (अव+क्रम्) अवक्कमइ उ ३।११३, अवक्कमंति ज ३।१११,११५,१९२,२०८; ५।५,७,५५ अवक्कमह ज ३।१२४;४।२०
अवक्कमित्ता (अवक्रम्य) ज ३।१११; उ ३।११३; ४।२०
अवगाह (अवगाह) प १७।११४।१
√**अवचिज्ज** (अव+चि) अवचिज्जंति प २१।९७
अवज्झा (अवध्या) ज ४।२१२,२१२।४

अवट्ठित (अवस्थित) सू ६।१; १६।२२।११

अवट्ठित्ता (अवस्थाय) सू १६।२२।२२

अवट्ठिय (अवस्थित) प ३३।२५ ज १।११,४७; ३।६२,११६,२२६; ४।२२,५४,६४,१०२,१५६, २१२; ७।३१,३३,१०१,१०२,२१० सू ४।३ ४,६,७,८।१ उ ३।४३,४४

अवड्ढ (अपार्ध) प १८।५६,६४,७७,८३,६०,१०८ सू १।२२; ६।३

अवड्ढखेत्त (अपार्धक्षेत्र) सू १०।४,५

अवड्ढगोलगोलच्छाया (अपार्धगोलगोलछाया) सू ६।५

अवड्ढगोलच्छाया (अपार्धगोलच्छाया) सू ६।५

अवड्ढगोलपुंजच्छाया (अपार्धगोल पुंजछाया) सू ६।५

अवड्ढगोलावलिच्छाया (अपार्धगोलावलिछाया) सू ६।५

अवड्ढभाग (अपार्धभाग) सू १२।५

अवड्ढवाविसंठिय (अपार्द्धवापीसंस्थित) सू १०।३१

अवणीयउवणीयवयण (अपनीततोपनीतवचन) प ११।८६

अवणीयवयण (अपनीतवचन) प ११।८६

अवण्ण (अवर्ण) प ३०।२७,२८

अवतंस (अवतंस) सू ५।१

अवत्तव्वय (अवक्तव्यक) प १०।६ से १३

√अवदाल (अव + दलय्) अवदालेति प ३६।८१

अवदालेत्ता (अवदल्य) प ३६।८१

अवद्दार (अपद्वार) उ १।११७ से ११६

अवमंस (दे० अमावास्या) ज ७।१२७।१,१६७।१

अवय (अवका) प १।४६,१।४८।१; १।६२ शैवाल

अवर (अपर) प १।१।६,१।४८।४,८; १।६१ ज ४।१७; १३७,१५१,५।३६ चं ५।२ सू १।६।२; २।१; ३।१; १०।५,१२७; १३।५,१७; १८।१, २१

अवरक (अपरक) सू १३।१२

अवरत्त (अपरात्र) उ १।५१,६५,७६; ३।४८,५० ५५,५७,६५,६८,७२,७५,७६,६८,१०६,१३१; ५।३६

अवरविदेह (अपरविदेह) प १६।३०; १७।१६१ ज २।६; ४।६४,६६,२१३,२६३।१

अवरविदेहकूड (अपरविदेहकूट) ज ४।६६

अवरवेयालि (अपर'वेयाली') प १६।४५

अवराइया (अपराजिता) ज ४।२०२।२,२१२, २१२।२

अवलद्ध (अपलब्ध) ५।४३

अवव (अवव) ज २।४

अववंग (अववाङ्ग) ज २।४

अवस (अवश) उ १।५२,७७

अवसण (अवसन) ज ३।१११,११३

अवसाण (अवसान) प ८।३ ज ३।६,११७,२२२

अवसिट्ठ (अवशिष्ट) प २३।१७५ ज ४।१६२ से १६४,२०४,२०८,२१०, २६२,२७१,२७४; ५।४६,५०

अवसेय (अवशेष) प २।५४; ३।१८२; ५।३७,३६, ७४, ८६,१०७,१४६,१५६,१६०,१६३,१६७, २००,२०३,२०५,२०७,२२४,२४२; १७।१७; २०।२३; २२।२४; २४।११; २६।४,८; २७।२; २८।१२५,१३३,१३६,१३७,१४१ से १४३; ३०।२४; ३६।२० ज २।४६,५६,६२,६५,६६, १०१,१०२,११३,११४; ४।५३,१४०,१६५, २६५,२६८; ५।४२,४५; ७।१३४।४,१३५।४, १५३ सू १०।२२; १३।१; २०।३

अवहाय (अपहाय) ज २।६

अवहार (अपहार) प १२।३२

अवहिय (अपहृत) प १२।२४,३३

√अवहीर (अप + हृ) अवहीरंति प १२।७,८,१०, १२,१६,२०,२४,२७,३२ अवहीरति प १२।२७,३२

अवहीरमाण (अपह्रियमाण) प १२।२४,३३

अवाउक्काइय (अवायुकायिक) प २१।५०

अवाय (अवाय) प १५।५८।२; १५।६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवि (अपि) प १।१।३ ज ४।२०० सू १।२५;५।१ उ १।३१; ३।११; ४।६; ५।४५
अविदमाण (अविन्दान) उ १।४१,४३
अविग्गह (अविग्रह) प ३६।६२
अविग्घ (अविघ्न) ज २।६४
अविणिज्जमाण (अविनीयमान) उ १।३५,४०,४३
अविणीय (अविनीत) ज ३।१०६ सू २०।६।६
अवितह (अवितथ) ज २।७८ उ १।२४,४२ ३।१०३
अवियाउरिया (दे० अविजनयित्री) उ ३।१३१
अवियाउरी (दे० अविजनयित्री) उ ३।६७
अविरत (अविरत) प ३।१८३
अविरत्त (अविरक्त) सू २०।७
अविरय (अविरत) प ११।८६
अविरल (अविरल) ज २।१५
अविरहिय (अविरहित) प ६।१६,६२,६३; ११। ७०;२८।४,२६,५० सू १०।७७; १६।२२।१७
अविराहियसंजम (अविराधितसंयम) प २०।६१
अविराहियसंजमासंजम (अविराधितसंयमासंयम) प २०।६१
अविसय (अविषय) प ११।६७;२८।१७,६३ ज ७।४६
अविसारय (अविशारद) प० १।१०१।११
अविसुद्ध (अविशुद्ध) प १७।१३८
अविसुद्धलेस्सतराग (अविशुद्धलेश्यतरक) प १७।७
अविसुद्धवण्णतराग (अविशुद्धवर्णतरक) प १७।६, १७
अविसेस (अविशेष) प २।३,६,६,१२,१५
अविसेसिय (अविशेषित) ज १।५१
अविस्साम (अविश्राम) प २।४८
अवीरिय (अवीर्य) ज ३।१११
√अवे (अप+इ) अवेति प २८।१०५; ३४।१६
अवेद (अवेद) प २।६४।१
अवेदग (अवेदक) प ३।६७;१३।१६
अवेदणा (अवेदना) प २।६४।१
अवेदय (अवेदक) प १८।६३; २८।१४०
अवेदिय (अवेदित) प ३६।८२
अव्वय (अव्यय) ज १।११,४७;३।१६७,२२६; ४।२२,५४,६४,१०२; ७।२१० उ ३।४३,४४
अव्वहिय (अव्यथित) ज २।४६
अव्वाबाह (अव्याबाध) प २।६४।१४,२०,२२; ३६।६४।१ ज ५।२१ उ ३।३०,३५
अव्वोच्छिण्ण (अव्यवच्छिन्न) ज ३।३
अव्वोच्छित्तिणय (अव्यवच्छित्तिनय) सू १७।१; २०।१
अव्वोयड (अव्याकृत) प ११।३७।२
√अस (अस्) अत्थि प १।७५,८०;५।६६; १२।६;१५।६५,६६;१७।३३;२८।१२३,१३६, १४१,१४२,१४५ ज १।४७ आसि ज १।४७ आसी प २।६४।५ सिया सू १०।२५
असइ (असकृत्) ज ७।२१२
असंकिलिट्ठ (असंक्लिष्ट) प २।३१;१७।१३८
असंख (असंख्य) प १।४८।६०
असंखभाग (असंख्यभाग) प १।४८।६०
असंखिज्जइभाग (असंख्येयभाग) प २३।१०१, १५१,१५७
असंखिज्जगुण (असंख्येयगुण) प १८।६३;२८।१४०
असंखिज्जतिभाग (असंख्येयभाग) प २।४८
असंखिज्जसमइय (असंख्येयसामयिक) प १५।६१
असंखेज्ज (असंख्येय) प १।१३,२०,२३,२६,२६, ४८,१।४८।८,४०,५६;२।१०,११,४१ से ४३, ४६,४८ ५०,५६;३।१८०;५।२,३,५,१२६, १२७,१४४,१४५,१५१;६।४२,६० से ६४,६८, १०।१६,१८ से २०,२३,२५,२८,३०;११।५०, ७०,७२;१२।७,८,१२,१६,२०,२४,२७,३१, ३२;१५।१२,२५,५८।१;१५।८३,८४,८७,६१, ६२,६४ से ६६,१०३,१०४,११८,१२० से १२३,१२५ से १२८,१३५ से १३७,१४० से १४२; १७।१४१,१४३;१८।३,२६,२७,३७

३८,४१,४३,६५,१०७,११७;२८।५,५१;३३।१०,१२,१३,१६,१७;३४।१३;३६।८,१३ से १५,१७ से २०,२२,२३,२५,२६,३३,३४,४४,६६,६८,९२ ज १।४६;२।४,५८,८४,९०,१५७;३।३;४।५२,१६५;५।४४ सू १३।२;१४।४,८;१८।१;१९।२२।१;१९।३४,३५,३७,३८

असंखेज्जइभाग (असंख्येयभाग) प १।७४,८४;२।१,२,४,५,७,८,१३,१६ से ३२,३४ ३५,३७,३८,४१ से ४३,४६,४९,५०,५२,५८ से ६०;४।१४९,१५१,१५७;१५।२२;१८।२७,७० से ७२,९५,११७;२०।६३;२१।३८,४० से ४२,४८,६३ से ६७,७०,७१,८४,८६,९० से ९२;२३।६१,६४,६६,६८,७३,७५ से ७७,८३ से ८६,८८ से ९०,९२,९५ से ९९,१०२ से १०४,१११ से ११४,११७,११८,१३४,१३५,१३८,१४०,१४२,१४३,१५१ से १५३,१५५,१५६,१६०,१६१,१६४,१६६ से १६९,१७१ से १७३;२८।४०,६९ उ ३।८३,१२०,१६१;४।२४

असंखेज्जग (असंख्येयक) प १२।७

असंखेज्जगुण (असंख्येयगुण) प २।६४।११;३।१० से २३,२६,२९ से ३६,३८,३९,४५ से ५२,५९ से ६३,७१ से ९६,१०१,१०३ से १०५,१०७,१११,११६,११७,११९,१२०,१२२,१२५ से १२९,१३१ से १७३,१७५ से १७७,१८२,१८३;५।५,१०,२०,३२,१२९,१५१;९।१२,१९,२५;१०।३ से ५;११।९०;१५।१३;१७।५७,६०,६३,६४,६७,६८,७१,७३,७४,७६,७९ से ८३,१४४ से १४६;२०।६४;२१।१०४,१०५;२८।७,५३;३४।२५;३६।३५ से ४१,५२,९२

असंखेज्जजीविय (असंख्येयजीविक) प १।३५,३६

असंखेज्जतिभाग (असंख्येयभाग) प २।५१,६१,६३,६४;४।१५५;१२।८,१२,१६,२४,२७,३१;१५।७,८,४०,४२;१८।३,४१,४३;२३।८१;२८।२२,३४,३९,६८;३३।१२,१३,१६,१७;३६।६६,७०,७३,७४

असंखेज्जपएसिय (असंख्येयप्रदेशिक) प ५।१३५,१३६,१६५,१६६,१८३,१८४,१९९,२००,२२०,२२१;१०।१७,२२,२७;११।४९

असंखेज्जपदेसिय (असंख्येयप्रदेशिक) प ३।१७९;५।१२७,१८४;१०।१७,१९,२३,२८

असंखेज्जभाग (असंख्येयभाग) प ५।५,१०,२०,३०,३२,१०२,१२९

असंखेज्जवासाउय (असंख्येयवर्षायुष्क) प ६।७१,७२,७९,८१,९४,९५,९७,१०७,१०८,११६;२१।५३;५४,७२

असंखेज्जसमइय (असंख्येयसामयिक) प ११।७१;२८।४,३८;३६।२,८४,९२

असंखेज्जसमयद्ठितिय (असंख्येयसमयस्थितिक) प ५।१४८;११।५१

असंखेज्जसमयठितीय (असंख्येयसमयस्थितिक) प ३।१८१

असंखेप्पद्धपविट्ठ (असंक्षेप्याध्वप्रविष्ट) प २३।१९३

असंग (असङ्ग) प २।६४।१,२१

असंजत (असंयत) प ३।१०५; ६।९७,९८

असंजय (असंयत) प ३।१०५; १७।२३,२५,३०;१८।९०;२०।६०;२१।७२;३२।१ से ४,६

असंजयभवियदव्वदेव (असंयतभविकद्रव्यदेव) प २०।६१

असंठाण (असंस्थान) प ३०।२७,२८

असंत (असत्) प २।६४।१७

असंतप्पमाण (असंतप्यमान) सू ९।१

असंदिद्ध (असंदिग्ध) उ० १।२४,४२

असंपत्त (असंप्राप्त) प १।२०,२३,२६,२९,४८;२।३१;१६।२२ ज ४।४२,७१,७७,९४,२६२;५।५,३८,४४ सू १०।१४२,१४७;१२।३०

असंभंत (असम्भ्रान्त) ज ५।५,७

असंविदित (असंविदित) उ १।१०७,१०८,११९,१२७

असंसारसमावण्ण (असंसारसमापन्न) प १।१० से १३
असंसारसमावण्णग (असंसारसमापन्नक) प ११।३६; २२।८
असकण्णी (अश्वकर्णी) प १।४८।१
असक्कारिय (असत्कारित) उ १।११७ से ११६
असच्चामोसभासग (असत्यमृषाभाषक) प ११।६०
असच्चामोसमण (असत्यमृषामनस्) प १६।१,७
असच्चामोसमणजोग (असत्यमृषामनोयोग) प ३६।८६
असच्चामोसवइ (असत्यमृषावाक्) प १६।३,६,१३
असच्चामोसवइजोग (असत्यमृषावाग्योग) प ३६।६०
असच्चामोसा (असत्यमृषा) प ११।२,३,३५,३७, ४२ से ४६,८३ से ८५,८८,८६
असण (अशन) प १।३५।३ उ ३।५०,५५,१०१, ११०,१३४,१४६
असणि (अशनि) प १।२६ सू २०।१
असणिमेह (अशनिमेघ) ज २।१३१
असण्णि (असंज्ञिन्) प १।८४; ३।११२; १७।२०; १८।१२०; २०।६१,६३, २३।१६७,१७१; २८।११७ से ११६; ३१।१ से ३,५,६,६।१; ३५।२०
असण्णिआउय (असंज्ञ्यायुष्क) प २०।६२
असण्णिभूत (असंज्ञिभूत) प ३५।२०
असण्णिभूय (असंज्ञिभूत) प १५।४८; १७।६; ३५।१८
असण्णिहि (असन्निधि) ज २।१६
असण्णिभूय (असंज्ञिभूत) प १७।२०
असत्थ (अशस्त्र) ज ३।६२, ११६ उ ३।३८,४०
असमोहत (असमवहत) प ३।१७४
असमोहय (असमवहत) प ३।१७४; ३६।३५ से ४१,४८ से ५१
असम्माणिय (असम्मानित) उ० १।११७ से ११६
असरीर (अशरीर) प २।६४।१२; ३६।६३,६४
असरीरि (अशरीरिन्) प २८।१४१
असाढय (अषाढक) प १।४२।१
असात (असात) प ३५।१।२; ३५।८,६
असातवेदग (असातवेदक) प ३।१७४
असातावेयणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।२६,१८०
असामण्णक (असम्मान्यक) सू १३।५,६,१२,१३,१७
असाय (असात) प २२।५
असायावेदणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६
असायावेयणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६,६४, १३६
असासय (अशाश्वत) ज ७।२०८,२०६
असाहुदंसण (असाधुदर्शन) उ ३।४७,७६
असि (असि) प २।४१; १५।१।२; १५।५० ज २।२३;३१,१७८; ३।१७८; उ १।१३८
असिय (असित) प २।३१
असिरयण (असिरत्न) ज ३।१०६;१७८, २२०
असिरयणत्त (असिरत्नत्व) प २०।६०
असिलेस (अश्लेष) ज ७।१२६।१,१६२
असीइ (अशीति) प २।५६।३
असीइमंगुलमूसिय (अशीत्यङ्गुलोच्छ्रित) ज ३।१०६
असीति (अशीति) प० २।५१ सू १।२२; १२।५,१२
असुइ (अशुचि) प २।२० से २७ ज २।१३३; ५।५ उ १।६३;३।१२६,१३०
असुइजायकम्मकरण (अशुचिजातकर्मकरण) उ० १।६३; ३।१२६
असुइय (अशुचिक) प १।८४
असुभ (अशुभ) प २।२० से २७; २२।४
असुभणाम (अशुभनामन्) प २३।३८;१२३
असुभत्त (अशुभत्व) प २८।२४ उ १।२७,१४०
असुर (असुर) प० २।३०।१,२।४०।१,५,१०; ५।३; ३६।४६ ज २।६४; ३।२४।१,२, १३१।१,२,३।१८५,२०६; ५।५२; चं १।२
असुरकुमार (असुरकुमार) प १।१३१; २।३१ से ३३,४०।८; ४।३७ से ३६; ५।६ से ८,४८ से ५०,१२१; ६।१७,५२,६१,८१,८५,६३,१०१, १०६,१११,११२,११४; ७।२; ८।३; ६।३;

१५,१८; ११।४४; १२।२,१५,१६,३१; १३।१५,२०; १५।१६,३५,७१,७८,८४,८७, १०२,१३६,१३८; १६।३,११,१६; १७।१४ से १७,२६,३०,३३,३४,६३,६८,६६,१०१, १०२,१०५; १६।१; २०।३,५,८,११,१२,१५, २० से २४,२७,३५,३७,४४,६०; २१।५५, ६१,७०,६०; २२।२३,३७,४५; २८।१,२५, ७४,१०६; ३१।२; ३३।१०,२०; ३४।२,४,५; ३५।३; ३६।५,८,१६,२०,२३,२४,२६,३७, ४१,५०,५५,६६,७२ उ २०।७

असुरकुमारत्त (असुरकुमारत्व) प १५।६५,६७, ११६,१४१; ३६।१८,२०, २२ से २४

असुरकुमारराय (असुरकुमारराज) प २।३१,३२ ज २।११३; ५।५०,५१

असुरकुमारिंद (असुरकुमारेन्द्र) प २।३१,३२

असुरकुमारी (असुरकुमारी) प ४।४० से ४२; २०।१२

असुरिंद (असुरेन्द्र) ज २।११३; ५।५० से ५२ सू २०।७

असुह (अशुभ) प २।२० से २७

असेलेसिपडिवण्णग (अशैलेशीप्रतिपन्नक) प ११।३६; २२।८

असेस (अशेष) ज ७।१३५।२

असोग (अशोक) प० १।३५।३ ज २।६५; ३।१२, ३५,८८,१८८; ४।२१२।२; ५।५८ सू २०।८, २०।८।७ उ ११; ३।५६,६४,६६,६८,७६

असोग (लता) (अशोकलता) प १।३६।१

असोगवडेंसय (अशोकावतंस) प २।५०,५२

असोगवणिया (अशोकवनिका) उ १।५५ से ५७, ८० से ८२

असोगवण (अशोकवन) ज ४।११६

असोगा (अशोका) ज ४।२१२

अस्स (अश्व) प १।६३

अस्संजत (असंयत) प ३२।६।१

अस्संजय (असंयत) प ११।८६; २८।१२६; ३२।६।१

अस्संजयभवियदव्वदेव (असंयतभविकद्रव्यदेव) प २०।६१

अस्सण्णि (असंज्ञिन्) प १।७४; ६।८०।१

अस्सतर (अश्वतर) प १।६३

अस्सदेवया (अश्वदेवता) सू १०।८३

अस्सपुरा (अश्वपुरा) प ४।२११

अस्सरह (अश्वरथ) प ३।२१,२२,३४

अस्सातावेदग (असातवेदक) प ३।१७४

अस्सातावेदणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६

अस्सातावेयणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६

√अस्साय (आ+स्वादय्) अस्साएइ प १५।३८ अस्साएंति प २८।२२,३६,६८

अस्सायण (आश्वायन) ज ७।१३२ सू० १०।६६

अस्सायावेदणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।३१

अस्सिणी (अश्विनी) ज ७।११३।१,१२८,१२६, १३६,१४३,१४६,१५५,१५८,१५६; सू १०।१ से ६,१०,२२,२३,३४,६२,६५,६६,७५,८३, ६६,१२०,१३१ से १३३,१५४

अस्सेसा (अश्लेषा) ज ७।१२८; १३४,१३६,१४०, १४७,१५० सू १०।१ से ६,१४,२३,२५,४२, ६२,६६,७५,८३,१०७,१२०,१३१ से १३४।२, १५७

अस्सोई (आश्वयुजी) ज ७।१४०,१४३,१४६ सू १०।२३

अस्सोय (आश्वयुज) सू १०।१२४

अह (अथ) प ५।५ उ० ३।२६

अह (अधस्) ज ३।१८८

अहक्खाय (यथाख्यात) प १।१२४,१२६

अहक्खायचरित्तपरिणाम (यथाख्यातचरित्रपरिणाम) प० १३।१२

अहत (अहत) ज २।१००; ३।३५,२११; ५।५८

अहत्ता (अधस्ता) प० २८।२४,२६

अहमिंद (अहमिन्द्र) प २।६०,६१,६२।१,६३

अहय (अहत) ज ३।६,११७।१२,२२

अहर (अधर) प २।३१

अहवणं (अथवा) प० १२।१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहवा (अथवा) प ११।१०३ ज २।६६ सू १०।१२० उ १।११५

अहाछंद (यथाछन्द) उ ३।१२०

अहाछंदविहारि (यथाछंदविहारिन्) उ ३।१२०

अहापडिरूव (यथाप्रतिरूप) उ १।२; ३।२६,६६, १३२; ५।२६

अहाणुपुव्वी (यथानुपूर्वी) ज ३।१७८,१७६,२०२, २१७; ५।४३

अहाबायर (यथाबादर) ज ३।१६२; ५।५,७

अहामालिय (यथामालिक) ज ३।६

अहारिह (यथार्ह) उ ३।११५

अहासुह (यथासुख) उ ३।१०३,११२,१३६,१४७, १४८; ४।११,१४,१५,१६

अहासुहुम (यथासूक्ष्म) ज ३।१६२

अहि (अहि) प १।६८,६६,७१ ज० २।४१

अहिग (अधिक) सू १।२७; १५।२४,२५

अहिगम (रुइ) (अधिगमरुचि) प १।१०१।१

अहिगमरुइ (अधिगमरुचि) प १।१०१।८

अहिगरणिया (आधिकरणिकी) प २२।१,३,४८, ५३ से ५६,५८,५६

अहिगरणिसंठिय (अधिकरणीसंस्थित) ज ३।६४, १३५,१५८

अहिगरणी (अधिकरणी) प २२।४८

अहिछत्ता (अहिछत्रा) प १।६३।२

√अहिज्ज (अधि+इ) अहिज्जइ उ २।१०; ३।१४; ५।२८

अहिज्जंत (अधीयान) प १।१०१।६

अहिज्जित्ता (अधीत्य) उ २।१०; ३।१४; ५।३६

अहिय (अधिक) प २।२७।२; १३।२२।२; २३।१४७, १५८,१६२,१६५ ज २।१३१; ३।३६,७६,११७, २२२; ४।१४६; ७।२७,२६,३० सू ११।१४,१६, २१,२४; ६।१; १५।२८,३१,३२; १६।११।१

√अहियास (अधि+सह्, आस्) अहियासिज्जंति उ ५।४३ अहियासेइ ज २।६७

अहिलाण (दे०) ज ३।१०६,१७८ घोड़े के मुंह पर बांधे जानेवाला

अहिवइ (अधिपति) ज ३।२६,३६,१५६; ५।१८,४६

अहिसलाग (दे०) प १।७१

अहीण (अहीन) उ ५।४५

अहीय (अधीत) उ ३।४८,५०

अहुणोववण्ण (अधुनोपपन्न) उ ३।१५,८४,१२१, १६२

अहे (अधस्) प २।२० से २७,२७।३; २।३०,३१, ४१; ११।६५,६६,६६।१; १६।५५; २१।८७, ६०,६१; २८।१५,१६,६१,६२; ३३।१६ ज २।६५,७१; ७।५४,१६८।१ सू २।१; ४।१०; १६।२२; २०।१,२ उ १।४६; ३।५६, ६४,६८,७१,७४

अहे (अथ) उ ३।५१।१

अहेतु (अहेतु) प ३०।२७,२८

अहेदिसा (अधोदिशा) प ३।१७६,१७८

अहेलोइय (अधोलौकिक) प २१।६२,६३

अहेलोय (अधोलोक) प० ३।१२५ से १७३,१७५, १७७

अहेसत्तमा (अधःसप्तमी) प ३।१७,१८; ४।२२ से २४; ६।१६,५१,६०,८०,८८,६१,६२,१००, १०६; १०।२,३,१६।२६; २०।७,४३,५७; २१।५२,५६,६७,८७; ३०।२६; ३३।६,१७

अहेसत्तमापुढवि (अधःसप्तमीपृथ्वी) प० २०।५२

अहो (अहो) ज ३।१२६ उ १।६२; ५।२२

अहोरत्त (अहोरात्र) ज २।४,६६; ७।२० से २४, २६ से २६,१२२,१२६,१२७,१३४।१, १३५।१ से ४,१५६,१५७,१६० सू १।१४, १६,२१,२४,२७; २।३; ६।१; ८।१; १०।३,६३ से ७४,८४,१३४; १२।२ से ५,१२; १५।११, १२,२६ से ३१,३४

अहोलोग (अधोलोक) ज ५।१ से ३,५

अहोलोय (अधोलोक) प २।१,४,१०,१६ से १६,२८

अहोवाय (अधोवात) प १।२६

अहोसिर (अधःशिरस्) ज १।५; २।८३ उ० १।३

आ

आइ (आदि) प ५।४,१४३,२१८; २५।४ ज २।२१; ५।२७,४०,५५,५७; ७।४५,५० उ २।२२; ५।४५

√**आइक्ख** (आ+ख्या) आइक्खइ ज ७।२१४ उ १।९८

आइक्खग (आख्यायक) ज २।६४

आइगर (आदिकर) ज ५।११ उ ३।१२; ५।१४

आइच्च (आदित्य) ज ३।३; ७।२५,३०,१११, ११२।४,५ सू १।९।३; १०।१२८,१२९।४,५

आइच्चचार (आदित्यचार) चं ५।३

आइणग (आजिनक) ज ४।१३

आइण्ण (आकीर्ण) ज २।१३४; ३।१०३,१७८

आइय (आदिक) प १।५०,५१,६०,७५,७६,८१; २४।८ ज २।३५,६४,१४४; ३।१८५; ४।२४८,२५१; ५।३८,५७; ७।१२६ उ २।१०, १२; ३।१४,१६१,२५०; ५।२८,३९,४१

आइय (आचित) प १७।११९

आइल्ल (आदिम) प ५।१०२; २२।३५,५१,५४

आइल्लिग (आदिम) प १७।३०

आइल्लिय (आदिम) प २२।७३,७४

आईणग (आजिनक) सू २०।७

आईय (आदिक) प १४।१८; २८।११६; उ १।६६,६७,९४; ४।१३

आउ (दे० अप्) प ६।१०२,१०४,११५; ९।४; ११।२६ से २८; १३।१६; १७।३३; १८।२६, ३२; २०।८,२२,२८; २१।८५; २२।२४; २८।१२३

आउ (आयुष्) ज १।२२,२७,५०; २।४९,५१,५३, ५४,५८,१३३ से १३५,१६१; ३।३; ७।१३०, १८६।४,२११

आउ (काइय) (दे० अप्कायिक) प १७।१४०

आउकाइय (अप्कायिक) प १।१५; ३।५० से ५२, ५५, ६० से ६३,६६,७१ से ७४, ७७,८४ से ८७,९०,९५,१५९ से १६१,१८३; ४।६५ से ७०; ५।३,११,१२; ६।१९,१०२; १५।१३७]

आउकाइयत्त (अप्कायिकत्व) ज ७।२१२

आउक्काइय (अप्कायिक) प १।२१; २।४ से ६; ३।३; ६।८६,१२।२२; १५।२९,८५; १७।६०, ९६,१०२; १८।३८,४०,४२,५०; २०।१३,२५, २६,४४; २१।२४,४०; २२।३१

आउकाय (अप्काय) सू २।१

आउक्खय (आयु:क्षय) उ० २।१३; ३।१८,८६, १२५,१५२; ४।२६; ५।३०,४३

आउज्जीकरण (आवर्जीकरण) प ३६।८४

√**आउट्ट** (आ+वृत्) आउट्टेज्जा ज २।६७

आउट्टि (आवृत्ति) सू १२।१८ से २८

√**आउड** (आ+कुट्) आउडेइ ज ३।८८,१३५, १५५

आउडिय (आकुटित) ज ३।८९,१५६

आउत्त (आयुक्त) प ११।८९ ज ३।१७८

आउदेवया (अब्देवता) सू १०।८३

आउपज्जव (आयुष्पर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३

आउय (आयुष्क) प ३।१७४; २०।६१,६३; २२।२८; २३।१,१२,१८,३७,१४६,१६९,१८५ १९१,१९३,१९७ से २०१; २४।१४; २६।११; २७।५; ३६।८२,८३।१,९२ ज २।४९,५८,१२३, १२८,१४८,१५१,१५७; ३।२२५; ४।१०१

आउयबंध (आयुष्कबन्ध) प ६।११८,११९

आउयबंधद्धा (आयुष्कबन्धाध्वन्) प २३।१९३

आउल (आकुल) प० २।४१ ज० २।६५ सू २०।७

आउस (आयुष्मत्) प २।३,६,९,१२,१५,२० से २७, ६० से ६३; ३।३६; १५।४३,४५; ३६।७९, ८१ ज २।१६,१९ से २१,२३,२५,२६,२८, ३० से ३६,३९ से ४३,४८,४९,५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३३,१३८,१४०,१४९,१५४,१५९, १६०,१६३; ७।१०१,१०२,१२६, सू ८।१०; २०।७

आउह (आयुध) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८

आउहघरसाला (आयुधगृहशाला) ज ३।४,५,९,१२,

१४,३०,४३,५१,६०,६८,१३०,१३६,१४०, १४६,१७२,२२०

आउहघरिय (आयुधगृहिक) ज ३।५,६

आएज्जणाम (आदेयनामन्) प २३।१२६

आएस (आदेश) ज ३।१६७।६

आओग (आयोग) ज ३।१०३

आओजित (आयोजित) प २२।५७

आओजिय (आयोजित) प २२।५८

√**आओस** (आ+क्रुश्) आओसइ उ १।५७

आओसणा (आक्रोशना) उ १।५७,८२

आकासिया (आकाशिका) ज २।१७

आकुल (आकुल) ज ३।९,२२२

आकोसायंत (आक्रोशायमान) ज २।१५

आगइ (आगति) ज २।७१

√**आगच्छ** (आ+गम्) आगच्छइ ज २।२४, ३।१०७,११४; ७।२० से २५,७९,८२ सू २।३ उ १।७० आगच्छंति प ११।७२; २८।४०, ४३,६९ ज २।३४,३५,३७,१०१; ७।१०१, १०२,२०२,२०४,२०६ सू ८।१ आगच्छति सू २।३ आगच्छेज्ज प ३६।६१ आगच्छेज्जा प ३६।८१ ज २।६

आगच्छमाण (आगच्छत्) सू २०।२

आगत (आगत) प २०।६,१०

√**आगम** (आ+गम्) आगमेसि ज २।८१

आगमण (आगमन) उ ३।१६९

आगमेस्स (आगमिष्यत्) ज २।१३८,१६१

आगम्म (आगम्य) ज ५।५५ उ ५।७

आगय (आगत) प २०।६ से ९,११ से १३; ३४।१।१ ज ३।८२ सू २०।७ उ० १।१७,२२, १०७,१०८,१२७,१२८,१३८,१४०; ३।७,२१, २५,२९,९१

आगर (आकर) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८,३१,८१,१६७।२,८,३।१८०,१८५,२०९, २२१ उ० ३।१०१; ५।३६

आगरपति (आकरपति) ज ३।८१

आगायमाण (आगायत्) ज ५।५,७ से १२,१७ उ० ३।११४

आगार (आकार) प १।३८।३; ३३।१९,२४

आगार (आगार) प ३०।२५,२६

आगारभाव (आकारभाव) ज १।७,२१,२६,२७, २९,३३,४९,५०; २।७,१४,१५,२०,५२,५६ से ५८,६५,१२२,१२३,१२७,१२८,१३१ से १३३, १३९,१४७,१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१५९ १६१,१६४; ४।५६,८२,१००,१०१,१०९,१७०, १७१

आगारभावमाता (आकारभावमात्रा) प १७।१५०, १५२,१५५

आगरिस (आकर्ष) प ६।१११; ६।१२०,१२१,१२३

आगास (आकाश) प २।६४।१६; १५।५३,५४, ५७ ज ३।१०४,१०५,१०७,२११; ५।५८ सू २।६

आगासत्थिकाय (आकाशास्तिकाय) प १।३; ३।११४,११५,११८,१२२; ५।१२४; १५।५३, ५४,५७

आगासथिग्गल (आकाशथिग्गल) प १५।५३,५६; १४।१२३

आगासफलोवम (आकाशफलोपम) ज २।१७

आगासफालिओवमा (दे०) प १७।१३५

आघवणा (आख्यान) उ ३।१०९

आघवित्तए (आख्यातुम्) उ ३।१०९

√**आचिट्ठ** (आ+स्था) आचिट्ठामो ज ३।११३

आजीविय (आजीविक) प २०।६१

आजोजित (आयोजित) प २२।५७

आडोव (आटोप) ज ७।१७८

आढई (आढकी) ११३७।१

आढत्त (आरब्ध) प १७।१४८

√**आढा** (आ+दृ) आढाइ उ १।३८; ३।५९ आढेंति उ ३।११८

आणंद (आनन्द) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२ उ १।७१,७२; २।२१

आणंदकूड (आनन्दकूट) ज ४।१०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणंदा (आनन्दा) ज ५।८।१
आणंदिय (आनन्दित) ज ३।५,६,८,१५,१९,३१,५२,५३,६१,६२,६९,७०,७७,८४,९१,१००,१३४,१३७,१४१,१४२,१५०,१६५,१७३,१८१,१८६,१९९,२१३;५।५,१५,२१,२३,२७,२८,२९,४१,५५,५७,७० उ १।२१,४२;३।१३६
आणण (आनन) प २।४९ ज ३।९,१८,९३,१८०,२२२
आणत (आनत) प १।१३५
√आणत्त (अन्यत्व) प १५।४४,४५
आणत्ति (आज्ञप्ति) ज ३।२६,३९,४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५;५।६१ उ १।११६
आणत्तिया (आज्ञप्तिका) ज २।१०५;३।७,९,१२,१३,१५,१८,१९;२८,२९,३१,३२,४१,४२,४७,४९,५०,५२,५३,५८,५९,६१,६२,६४,६६,६७,६९,७०,७४ से ७६,८३,९९,१००,१२८,१४१,१४२,१४५,१४७,१४८,१५१,१५४,१६४,१६५,१६८ से १७१,१७३,१७५,१८०,१८१,१९१,१९८,१९९,२१२,२१३,५।३,२८,६८,६९ से ७३ उ १।१७,१८,१२३;३।७;४।१६,१७;५।१८
आणपाणपज्जत्ति (आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति) उ ३।१५।८४
आणपाणु (आनप्राण, आनापान) प १०।५३।१
√आणम (आ+नम्) आणमंति प ७।१ से ४,६ से १५
आणमणी (आज्ञापनी) प ११।६,९,२७,३७।१
आणय (आनत) प २।४९,५८,५९,५९।२,६३;३।१८३;४।२५५ से २५७;६।३५,५६,६६,८६,९६,११३;७।१६;१५।८८;२१।७०,९२;२८।८३;३३।१६;३४।१६,१८ ज ४।२४९;५।४९;७।१७८
√आणव (आ+ज्ञापय्)
आणवेइ ज ५।२२,२६ उ १।११०

आणा (आज्ञा) प १।१०१।५ ज १।४५;३।८,१९,५३,६२,७०,७७,८४,१००,१४२,१६५,१८१,१८५,१९२,२०९,२२१;५।१९,२३,७३ उ १।२०,४५,१०८
आणाईसर (आज्ञेश्वर) प २।३०,३१,४१,४९ उ ५।१०
आणापाणु (आनप्राण, आनापान) सू ८।१;२०।५
आणापाणुचरिम (आनप्राणचरम, आनापानचरम) प १०।४०,४१
आणापाणुपज्जत्ति (आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति) प २८।१४२
आणामिय (आनमित) ज २।१५
आणारुइ (आज्ञारुचि) प १।१०१।१,५
आणु (आन) प १।४८।५३
आणुगामिय (आनुगामिक) प ३३।३५,३६
आणुपाण (आनप्राण, आनापान) प १।४८।५५
आणुपुव्विणाम (आनुपूर्वीनामन्) प २३।५४,१११,११३,११४,१४६
आणुपुव्वी (आनुपूर्वी) प २।४७।३;११।६८,६९,६९।१;२३।११२,११५,१७५,१९०;२८।१८,१९,६४,६५ ज ७।४७,५० सू २०।८ उ २।१२,२२;५।३९
आणुपुव्वीणाम (आनुपूर्वीनामन्) प २३।३८
आणेउं (आनेतुम्) उ १।१०७
आणेत्ता (आनीय) उ ४।१६
आणेयव्व (आनेतव्य) ज २।९४
आयपत्त (आतपत्र) ज ३।३
आतरक्ख (आत्मरक्ष) प २।३१,४३
आतव (आतप) ज २।१३४;३।११७ सू १६।३,४
आतवा (आतपा) सू १८।२४
आतीय (आदिक) उ ४।१८
आदंस (आदर्श) ज ३।११;५।८
आदंसघर (आदर्शगृह) ज ३।२२२,२२४
आदंसिया (दे०) प १७।१३५ ज २।१७
आदरिस (आदर्श) ज २।६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदाण (आदान) सू १२।१५

आदाय (आदाय) ज २।६५

आदि (आदि) प १।६४,७६,८६; ५।२५,४६,१३१, १३४,१३६,१४०,१४७,१६३,१६६,१६६, १७२,१७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१६३, १६७,२००,२०३,२०५,२२१,२२४,२३०,२३२, २३४,२३७,२३६; १०।२; ११।६६,६७,६६।१; २०।२५; २३।१०८; २४।८; २६।६; २८।१२, २८।१६,१७,६२,६३,१२३,१३३,१३६,१३७, १४०; ३६।२०,४६ ज २।६।१,२।७१,१३१, १४५ चं २।३ सू १।६।३; ५।१; १०।५; ११।२ से ६

आदिच्च (आदित्य) सू १।१३,१४,१६,१७,२१, २४,२७; २।३; ६।१; १०।५,१०,११,७७, १२।१,५,१० से १२; १३।५; १५।२३ से २५; १६।२२।४,७,८,२२; २०।५

आदिच्चचार (आदित्यचार) सू १०।१२१,१२३

आदिपदेस (आदिप्रदेश) सू १।१६

आदिय (आदिक) प १।४६,६६; २८।१४५ सू १०।१,१३१; २०।५

आदिल्ल (आदिम) प ५।१०५; २२।५१ सू १६।२२।२५

आदिल्लिय (आदिम) प १७।६७

आदीय (आदिक) प ६।१२३;११।३०;२२।४५; २४।६ से ११;२६।८;२८।१२३,१२६,१३७, १४०,१४५; ३६।२० उ १।११६,११६ से १२२, १२५; ३।३१,४०

आदेज्ज (आदेय) ज २।१५

आदेज्जणाम (आदेयनामन्) प २३।३८

आदेस (आदेश) प १८।६०

√आधाव (आ+धाव्) आधावेंति ज ५।५७

आपडिपुच्छमाण (आप्रतिपृच्छत्) ज २।६५

√आपुच्छ (आ+प्रच्छ्) आपुच्छइ उ ३।१४८; ४।१५ आपुच्छामि उ ३।१३६; ४।४; ५।२७

आपुच्छणा (आप्रच्छना) उ २।६

आपुच्छणिज्ज (आप्रच्छनीय) उ ३।११

आपुच्छित्ता (आपृच्छ्य) उ २।११; ३।५०,५।३८

आपूरेंत (आपूरयत्) ज ३।१४,१७२

आपूरेमाण (आपूर्यमाण) ज ४।३५,४२,६४,१७४, २६२;५।३८

आबाहा (आबाधा) ज २।३०,३६,४१

आभंकर (आभङ्कर) सू २०।८,२०।८।७

आभरण (आभरण) प २।३०,३१,४१,४६; ११।२५; १५।५५।२ ज २।६५; ३।६,११,१२, २६,३६,४७,५६,६४,७२,७८,८१,८५,१३३, १४५,१८४,२२२,२२४; सू २०।७ उ १।१६; ४२;३।२६,११३,१४१; ४।१२,२०

आभरण (वासा) (आभरणवर्ष) ज ५।५७

आभरणविहि (आभरणविधि) ज ३।१६७।४

आभरणारुहण (आभरणारोहण आभरणारोपण) ज ३।१२

आभासिय (आभाषिक) प १।८६,८६

आभिओग (आभियोग) प २०।६१ ज २।२६,६७, ६८; ५।१४,१५,५३,६१,७२,७३ उ ३।३७,६१

आभिओगसेढी (आभियोगश्रेणी) ज ४।१७२

आभिओगिय (आभियोगिक) प २०।६१ ज ५।३, ४,२८,४३,५०

आभिओग्ग (आभियोग्य) ज १।१३; ३।१६१, १६२,१६६,२०७,२०८; ५।२८,५४,५५

आभिओग्गसेढी (आभियोग्यश्रेणी) ज १।२८ से ३२; ६।६५

आभिणिबोहिय (आभिनिबोधिक) प १७।११२, ११३

आभिणिबोहियणाण (आभिनिबोधिकज्ञान) प ५।५, ७,२०,२४,४१,४२,४६,७८,६३,६७,१११, ११२; १७।११२,११३;२०।१७,१८,३४; २६।२,१२,१७,१६,२१

आभिणिबोहियणाणारिय (आभिनिबोधिकज्ञानार्य) प १।६६

आभिणिबोहियणाणावरणिज्ज (आभिनिबोधिक-ज्ञानावरणीय) प २३।२५

आभिणिबोहियणाणि (आभिणिबोधिकज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३;५।४० से ४२,७७ से ७६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९२ से ९४,९९,१०० से ११२,११७; १३।१४, १७,१९; १८।८०; २८।१३६
आभिणिबोहियनाणपरिणाम (आभिनिबोधिकज्ञान-परिणाम) प० १३।६
आभियोगसेढी (आभियोगश्रेणी) ज ४।२००
आभिसेक्क (आभिषेक्य) ज ३।१५,१७,२०,३१, ३३,५४;६३,६४,७१,७७,९१,१४३,१५१,१६६, १७३,१७५,१७७,१७८,१८२,१८३,१८५, १९९,२०२,२०४,२१४,२१७; ४।१४० उ ५।१८
आभिसेय (आभिषेक) ज ३।१०९
आभूय (आभूत) उ १।७४
आभोएत्ता (आभोग्य) ज २।६०
आभोएमाण (आभोगयत्) उ ३।७,९१
आभोग (आभोग) प १४।१८।१
आभोगणिव्वत्तिय (आभोगनिर्वर्तित) प १४।६; २८।४,२५,२७,३७,४७,५०,७३ से ७५; ३४।५
√**आभोय** (आ + भोगय्) आभोएइ ज २।६०,६३; ३।५६,१४५; ५।२१ आभोएंति ज ३।११३; ५।३
आभोवण (आभोगन) प ३४।१।१
√**आमंत** (आ + मंत्रय्) आमंतेइ उ ३।११०; ४।१६
आमंतणी (आमन्त्रणी) प ११।३७।१
आमंतेत्ता (आमन्त्र्य) उ ३।५०; ४।१६
आमलग (आमलक) प १।३६।१
आमलगसारिय (आमलकसारिक) सू १०।१२०
√**आमुस** (आ + मृश्) आमुसइ उ १।६१
आमुह (आमुख) सू १९।२३
आमेल (आपीड) प २।४१
आमेलग (आमेलक) ज २।१५;)३।१०९
आय (दे०) प १।४७
आय (आत्मन्) प १४।३; १४।१८।१
आय (आय) उ १।४१,४३
आयंक (आतङ्क) ज २।४३;५।५ उ ३।३५,११२, १२८
आयंत (आचान्त) ज ३।८२ उ ३।५१,५६
आयंस (आदर्श) ज २।१५;५।५५
आयंसमुह (आदर्शमुख) प १।८६
आयंसलिवि (आदर्शलिपि) प १।९८
आयत (आयत) प १।४ से ६;२।५० से ५२,५७, ५८,६१,६२;१०।१५ से २५,२७ से ३०; १५।५२ ज ३।२४,१०९,१३१,१३८।१
आयय (आतत) प १।७;२।३१,५३ से ५६,५९, ६०;१०।२६;१३।२४ ज १।१८,२०,२३,२५, २८,३२,४८;४।८१,९८,१०३,१०८,१७२, १९१,२०३,२०५,२१४,२४५,२५१,२५२, २६८ उ १।२२,१४०
आयर (आदर) ज ३।१२,७८,१८०,२०९;५।२२, २६
आयरक्ख (आत्मरक्ष) प २।३० से ३३,३५;४०।५; २।४१,४८ से ५९ ज १।४५;२।६०; ४।२०, ११२,१५१।२; २।१५९;५।१,१९,४०,४९ से ५१,५२।२,५३;५६ सू १८।२३
आयरिय (आचार्य) प १६।५१ ज ३।३५ चं १।२ उ ५।२६,२८
आयव (आतप) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३
आयवणाम (आतपनामन्) प २३।३८,११५
आयसरीर (आत्मशरीर) प २८।२०,३२,६६
आयाए (आदाय) उ १।९३
आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमित (आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमित) उ ३।६९
आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिय (आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमित) ज ३।६८
आयाम (आयाम) प २।५०,५९,६४; २१।८४,८६, ८७,९० से ९३; ३६।६६,६८,७०,७२ से ७४, ८१ ज १।७,२०,२३ से २५,२८,३२,३७,४०, ४३,४८,५१; २।६,१५,१४१ से १४५;३।१, १८;३१,५२,६१,६९,९५,९६,१३१,१३७, १३८,१४१,१५९,१६०,१६४,१८०; ४।१,३,

६,७,६,१२,१४,१५,१६,२४,२५,३१,३३,३६ से ४१,४७,५२ से ५५,५७,५६,६२,६४,६६ से ६८,७०,७४ से ७६,८०,८१,८६,८८,८६,६१ से ६३,६८,१०२,१०३,१०८,११०,११२,११४, ११६,११८ से १२०,१२२ से १२७,१३२, १३६,१४०,१४३,१४५ से १४७,१५३ से १५६, १६५,१६७,१६६,१७२,१७४,१७६,१७८, २००,२१५,२१६,२१८,२१६,२२१,२४२, २४५,२४८;५।३५;७।७,१४,१६,३१,३२।१, ३३,३४,६६,७३ से ७८,६०,६३,६४,१०७, २०७ सू १।१४,२६,२७;४।३,५ से ८;१८।६ से १३;१६।२०,३० उ ५।४

आयारभाव (आकारभाव) ज १।२२

आयावण (आतापन) उ ३।५०

आयावणभूमी (आतापनभूमी) उ ३।५०,५१,५३

आयावेमाण (आतापयत्) उ ३।५०

आयाहिण (आदक्षिण) ज १।६ ; २।६ ; ३।५ ; ५।५,४४,४६ उ १।१६,२१ ; ३।११३;४।१३

आरंभ (आरम्भ) उ १।२७,१४०

आरंभिया (आरम्भिकी) प १७।११,२२,२३,२५; २२।६०,६१,६६ से ६६,७६,६१,६८,१०१

आरंभियाकिरिया (आरम्भिकीक्रिया) प २२।६७ से ६६

आरण (आरण) प १।१३५ ; २।४६,५६,५६।२, ६०,६३;३।१८३;४।२६१ से २६३;६।३७,५६, ६६;७।१८;१५।८८ ; २१।७०,६२;२८।८५; ३३।१६ ; ३४।१६,१८ ज ५।४६

आरद्ध (आरब्ध) प २०।६०

आरबक (आरब) ज ३।८१

आरबी (आरबी) ज ३।१११।२

आरब्भ (आरब्ध) प १७।३२

आरभड (आरभट) ज ५।५७

√**आरस** (आ+रस्) आरसइ उ १।६० आरससि उ १।८५

आरसिय (आरसित) उ १।६१,८६

आराम (आराम) ज २।६५;५।५,७ उ ३।३६,३६

√**आराह** (आ+राध्) आराहेहिति उ ५।४३

आराहणविराहणी (आराधनविराधनी) प ११।३

आराहणी (आराधनी) प ११।३,८

आराहय (आराधक) प ११।८६ उ १।२०

आराहेत्ता (आराध्य) उ ५।४३

आरिय (आर्य) प १।८८,६०,६३।६,१।१२६ उ १।१७

आरूढ (आरूढ) ज ३।३५,१२१

आरुभित्ता (आरुह्य) सू ६।४

√**आरुह** (आ+रुह्) आरुहेति ज २।१०३,१०४

आरुहेत्ता (आरुह्य) ज २।१०३

आरोग्ग (आरोग्य) ज ३।६२,११६

आरोहग (आरोहक) ज ३।१७८

आलइय (आलगित) प २।५० ज ५।१८

आलंकारिय (आलंकारिक) ज ३।१५०

आलंबण (आलम्बन) ज ४।२६

आलंबणभूय (आलम्बनभूत) उ ३।११

आलय (आलय) ज २।७१

आलावग (आलापक) प १७।१६७ से १७२; २१।३१ सू ८।१

आलिंगणवट्टिय (आलिङ्गनवर्तिक) ज ४।१३ सू २०।७

आलिंगपुक्खर (आलिङ्गपुष्कर) ज १।१३,२१,२६, ३३,३६,३६,४६;२।७,३८,५२,५७,११२, १२७,१४७,१५०,१५६,१६१,१६४;३।१६२; ४।२,८,११;५।३२

आलित्त (आदीप्त) उ ३।११३

आलिसंद (दे०) प १।४५।१

आलिसंदग (दे०) ज २।३७

√**आलिह** (आ+लिख्) आलिहइ ज ३।१२,८८; ५।५८

आलिहमाण (आलिखत्) ज ३।६५,१५६

आलिहिज्जमाण (आलिख्यमान) ज ३।६६,१६०

आलिहित्ता (आलिख्य) ज ३।१२

आलुग (आलुक) प १।४८।२

आलोअंत (आलोकमान) ज ३।१७८

आलोइय (आलोचित) उ २।१२;३।१५०,१६१; ५।२८,३६,४१

आलोगभूय (आलोकभूत) ज ३।१६,१६०

आलोय (आलोक) ज ३।६,१२,१८,७७,८८,९३, ९५,१५६,१७८,१८०,२२२;५।४३,४६

√आलोय (आ+लोच्) आलोएहि उ ३।११५; ४।२२

आवकहिय (यावत्कथिक) प १।१२५

√आवज्ज (आ+पद्) आवज्जंति प ११।७२

आवड (आवर्त) ज ५।३२

आवडिय (आपतित) ज ५।२५

आवण (आपण) ज ३।३२

आवणगिह (आपणगृह) ज ३।१६७।२

आवत्त (आवर्त) प १।६३ ज ३।३;४।२३,३५, ३७,४२,७१,७७,९४,१८८ से १९१,२६२; ७।५५ सू १९।२२।१०,११;१९।२३

आवत्तकूड (आवर्तकूट) ज ४।१९२

आवत्तग (आवर्तक) ज ३।१०६

आवरण (आवरण) ज ३।३५,११६,१६७।६,१७८

आवरित्ता (आवृत्य) सू २०।२

√आवरिस (आ+वृष्) आवरिसेज्जा ज ५।७

आवरेत्ता (आवृत्य) सू २०।२

आवरेमाण (आवृन्वत्) सू २०।३

आवलि (आवलि) ज ५।२८

आवलिया (आवलिका) प १२।२७;१८।३,२७ ज २।४ चं ५।१ सू १।६।१;८।१ २०।५

आवलियाणिवात (आवलिकानिपात) सू १०।१

√आवस (आ+वस्) आवसामि उ ३।११८

आवसह (आवसथ) ज ३।१६,३१,३२।२,५३,६२, ७०,१४२,१६५,१८१

आवसिसा (ओस्य) ज ३।२२५

आवस्सग (आवश्यक) उ ३।३१

आवाग (आपाक) प २३।१३ से २३

आवाड (आपात) ज ३।१०३ से १०५,१०७ से ११५,१२५ से १२७

आवास (आवास) प १५।५५।३ ज ३।१८,५२,६१, ६६,७७,८४,१४१,१५३,१६४,१६७।१३,१८० उ ५।४१

आविद्ध (आविद्ध) ज ३।६,७७,१०७,१०६,१२४, २२२;५।५६ उ १।१३८

आविद्धकंठ (आविद्धकण्ठ) ज ३।२०६

आवीकम्म (आविष्कर्मन्) ज २।७१

आवेढिय (आवेष्टित) प १५।५१

आस (अश्व) प २।४०।१०;११।२१ ज २।३५; ३।६८,१६७।४,१७८,१७६,२२१;७।१३, १८६।३ उ १।१४,१५,२१,१२१,१२६,१३३, १३६,१३७

आस (आस्य) प २।४०।१०

√आस (आस्) आसि १।४७

आसकण्ण (अश्वकर्ण) प १।८६

आसक्खंधसंठिय (अश्वस्कन्धसंस्थित) सू १०।३४

आसखंध (अश्वस्कन्ध) ज ४।१७८

आसखंधग (अश्वस्कन्धक) ज ७।१३३।१

आसग (आस्यक) उ १।८६,९०

आसण (आसन) प ११।२५ ज २।८६,९०,९२, ९३;३,५५,५६,६४,७२,१०३,११२,११३, १४४,१४५;५।२,३,७,२०,२१ सू २०।४ उ ३।१०१,१३४

आसत्त (आसक्त) प २।३०,३१,४१ ज २।७,३०, ३५,८८

आसत्थ (आश्वस्त) उ १।२४,९२

आसधर (अश्वधर) ज० ३।१७६

आसपुरा (अश्वपुरा) ज ४।२१२।२

आसम (आश्रम) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८,३१,३२,१८०,१८५,२०६ उ ३।५५,१०१

आसमुह (अश्वमुख) प १।८६

आसय (आस्यक) उ १।६१,६२,८६,८७

√आसय (आस्) आसयंति ज १।१३,३०,३३,३६; २।७;४।२,६४,८७,१०४,१७६,१८५,१९१, १९७,२००,२०१,२०६,२१४,२३४,२४०, २४१,२४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसरयण (अश्वरत्न) ज ३।१०६,२२०
आसरयणत्त (अश्वरत्नत्व) प २०।५६
आसरह (अश्वरथ) ज ३।३४ से ३६ उ १।११०; ५।३८
आसल (दे०) प १७।१३४
आसव (आश्रव) प १।१०।१२; १७।१३४
आसा (आशा) उ ३।१५६
आसाएमाण (आस्वादयत्) उ १।३४,४६,७४
आसाढ (आषाढ) ज २।६५; ७।१०४,११३,११४, १२६ सू १०।१२४,१२६ उ ३।४०
आसाढा (आषाढा) सू १०।७५,१२०,१५५,१५६; ११।२ से ६; १२।२४ से २८
आसाढी (आषाढी) ज ७।१३७,१४०,१४६,१४६, १५३,१५५ सू १०।७,१६,२४,२५,२६
आसाय (आस्वाद) प १७।१३० से १३५ ज २।१७,१८
√आसाय (आ+स्वाद्) आसाएंति प २८।२२, ३४,६८
आसायणिज्ज (आस्वादनीय) प १७।१३४ ज २।१८
आसालिय (आशालिक, आसालिग) प १।६८,७३, ७४
आसासग (अश्वास्यक) प २।४०।१०
आसासण (आश्वसन) ज ७।१८६।२ सू २०।८, २०।८।२
आसिय (आसिक्त) ज २।६५; ३।७,१८४; ५।७
आसीत (आशीत) प २।२७।१
आसीत्तिय (दे०) सू १०।१२०
आसीविस (आशीविष) प १।७० ज ४।२१२
आसुरुत्त (आशुरक्त) ज ३।२६,३६,४७,१०७, १०६,१३३ उ १।२२,५७,८२,११५ से ११७, ११६,१४०
आसोइ (आश्वयुजी) ज ७।१३७ सू १०।७,१०,२२, २३,२६
आसोत्थ (अश्वत्थ) प १।३६।१
आसोय (आश्वयुज) ज ७।१०४ उ ३।४०
√आह (ब्रू) आहंसु सू १।२० आहु ज ७।११२।२,५ सू १०।१२६।२,५
आहच्च (दे०) प १७।२,२५; २८।२१,३३,३८,६७
आहत (आहत) प २।३०,३१,४१,४६ सू १६।२३, २६
आहय (आहत) ज १।४५; ३।२६,८२,१३३; ५।१, १६; ७।५५,५८ सू १८।२३
√आहर (आ+हृ) आहरेइ उ ३।५१
√आहार (आ+हृ) आहारिस्सइ ज २।१४६ आहारिस्संति ज २।१३४,१४६ आहारेइ उ ३।५० आहारेंति प १५।४६ से ४६; १७।२, २५; २८।५ से ७,६ से २३,३० से ३५,३६, ४०,५१,५२,५३,५५ से ६६,६८ से १०१; ३४।६ से ६,११,१२ आहारेमि प ११।१२,१७
आहार (आहार) प १।१।७,१।४८।५५; ३।१।१; १०।५३।१; ११।१२; १५।१।१; १७।१।१; १७।१८; १८।१।१; २८।१।१; २८।३ से ५, २०,२७ से ३०,३२,३७,३८,४०,४७,४६ से ५१,६६,६६,७३ से ७५,६७,१०६।१; ३४।१।१,३४।१ से ३,५; ३६।१।१ ज २।१६, १६,५२,५६,१४६,१५६,१६१ उ ३।५१,५३,५४
आहार (आधार) उ ३।११
आहारग (आहारक) प ३।१०७; १२।१३,२८, ३६; २१।१०४,१०५; २३।४२,६१,६२,१४६, १७४; २८।१०८ से ११०,११२,११४ से ११६, ११८,११६,१२१,१२३,१२४,१३०,१३१,१३६, १३७,१४१,१४२
आहारगमीसगसरीर (आहारकमिश्रकशरीर) प १६।१५
आहारगमीससरीर (आहारकमिश्रशरीर) प १६।१, १०,१५; ३६।८७
आहारगमीसासरीर (आहारकमिश्रकशरीर) प १६।१०,१५; ३६।८७
आहारगसमुग्घात (आहारकसमुद्घात) प ३६।३३
आहारगसमुग्घाय (आहारकसमुद्घात) प ३६।१ २,७,६,१०,१३,१४,३०,३५,५३,५८,७४
आहारगसरीर (आहारकशरीर) प १२।१३,२१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४; १६।१,१०,१५; २१।७२ से ७४,९६,९९,
१०१,१०२,१०४,१०५; २३।१८६; ३६।८७
आहारगसरीरय (आरारकशरीरक) प १२।९
आहारगसरीरि (आहारकशरीरिन्) प २८।१४१
आहारचरिम (आहारचरम) प १०।४२,४३
आहारत्त (आहारत्व) प २८।२२ से २४,३४ से
३६,३९,४०,४२,४५,४८,६८,६९,७१; ३४।६
आहारपज्जत्ति (आहारपर्याप्ति) प २८।१४२,१४३,
उ ३।१५,८४
आहारपय (आहारपद) ज ७।५०
आहारभूय (आधारभूत) उ ३।११
आहारय (आहारक) प १२।१,५,२५; १८।९४ से
९७; २१।१; २८।१०६ से १०८,१११,११३,
११७,११९,१२०,१२२,१२५,१२७ से १२९,
१३२,१४३
आहारयसरीर (आहारकशरीर) प १२।१७
आहारसण्णा (आहारसंज्ञा) प ८।१ से ११
आहारेत्ता (आहार्य) ज २।९९
आहारेमाण (आहारयत्) प ११।१२,१७
आहिंड (आ+हिण्ड्) आहिंडह उ ३।१०१
आहित (आख्यात) सू १।१०,११,१५ से १८,२०,
२२,२३,२५; १९।२२।३
आहिय (आख्यात) प ३४।१।१ ज २।४।२;
७।३१,३३ चं २।३,५ सू १।६।३,५
आहिवच्च (आधिपत्य) ज ३।१६७।१३
आहुट्ठि (दे०,अर्धचतुर्थ) सू १९।१
आहुणिय (आधुनिक) ज ३।९८; ५।५; ७।१८६।१
आहूय (आहूत) उ ३।४८;५० सू २०।८,२०।८।१
आहेवच्च (आधिपत्य) प २।३० से ३३,३५,३६,
४१,४३, ४८ से ५१,५७,५९ ज १।४५; १८५,
२०९,२२१; ५।१९ उ ५।१०

इ

इ (इति) प १।४८।२ ज १।२६ सू १।८
इ (चित्) उ १।३६; ३।११
इइ (इति) सू २०।९
इंगाल (अङ्गार) प १।२६ उ ३।५०
इंगालभूय (अंगारभूत) ज २।१३२,१४१
इंगालय (अंगारक) ज ७।१८६।१ सू २०।८,२०।८।१
इंगिय (इङ्गित) ज ३।८७
इंद (इन्द्र) प २।४०,४५,४७।१ ज २।९४;३।२४।३,
३७।१,४५।१; १३१।३,१८५,२०९; ५।४९,
५२,५७; ७।५६,५७,५९,६०,१३०,१८६।४
सू १९।२४,२७
इंदगोवय (इन्द्रगोपक) प १।५०
इंदग्गह (इन्द्रग्रह) ज २।४३
इंदग्गि (इन्द्राग्नि) ज ७।१३०,१८६।२,४
सू २०।८,२०।८।४
इंदग्गिदेवया (इन्द्राग्निदेवता) सू १०।८३
इंदज्झय (इन्द्रध्वज) ज ३।३
इंदट्ठाण)इन्द्रस्थान) सू १९।२५
इंदणील (इन्द्रनील) ज ३।३५
इंददेवया (इन्द्रदेवता) सू १०।८३
इंदधणु (इन्द्रधनुष्) ज ३।२४
इंदनील (इन्द्रनील) प १।२०।३ ज ३।१०९
इंदभूइ (इन्द्रभूति) ज १।५
इंदभूति (इन्द्रभूति) चं १।४,१० सू १।५
इंदभूय (इन्द्रभूत) सू २०।७
इंदमह (इन्द्रमह) ज २।३१
इंदमुद्धाभिसित्त (इन्द्रमूर्धाभिषिक्त) ज ७।११७।२
सू १०।८६।२
इंदिओवउत्त (इन्द्रियोपयुक्त) प ३।१७४
इंदिकाइय (दे०) प १।५०
इंदिय (इन्द्रिय) प ११।५;३।११; १३।१७;
१५।१,१७,१९,२०,३०,३४,५८।१,१५।५८ से
६०,६२,६३,६५,६६,६७,७५,७६,१३४,१४३;
१७।१३४; १८।१।१; २८।१०१
इंदियउवउत्त (इन्द्रियोपयुक्त) प ३।१७४
इंदियजवणिज्ज (इन्द्रिययापनीय) उ ३।३२,३३
इंदियपज्जत्ति (इन्द्रियपर्याप्ति) प २८।१४२
उ ३।१५,८४
इंदियपरिणाम (इन्द्रियपरिणाम) प० १३।२,१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६,१७,१९
इंदीवर (इन्दीवर) प १।४४।३
इक्क (एक) ज १।२० सू १९।२५
इक्कड (इक्कड) सरकंडा, पानी का पौधा प १।४८।४६
इक्कवीस (एकविंशति) ज २।१३४
इक्कारस (एकादशन्) ज ४।२७५
इक्कारसम (एकादश) सू १०।७७
इक्कारसी (एकादशी) ज २।७१
इक्कावण्ण (एकपञ्चाशत्) सू ११२१
इक्किक्क (एकैक) ज ७।१७८।२
इक्खाग (इक्ष्वाकु) प १।९५
इक्खु (इक्षु) प १।४१।१,१।४८।४६
इक्खुवाडिया (इक्षुवाटिका) प १।४८।४६
इक्खुवाडी (इक्षुवाटी) प १।४१।१
इगतालीस (एकचत्वारिंशत्) ज ७।७५ सू ११।३
इगुणापण्ण (एकोनपञ्चाशत्) ज ७।७५
इगुणालीस (एकोनचत्वारिंशत्) ज ७।२४
√इच्छ (इष्) इच्छइ उ १।५१ इच्छंति प १६।४६ इच्छसि सू १९।२२।२६ इच्छामि उ १।७६;३।१०६;४।११ इच्छामो प २८।१०५;३४।१६,२१ से २४
इच्छा (इच्छा) ज ७।१२०।२ सू १०।८८।२
इच्छाणुलोम (इच्छानुलोम) प ११।३७।१
इच्छामण (इच्छामनस्) प २८।१०५;३४।१६,२१ से २४
इच्छिय (इष्ट, ईप्सित) ज ३।८८,१३८; उ ३।१३८
इच्छियत्त (इष्टत्व) प २८।२६
इच्छियव्व (एष्टव्य, एषितव्य) ज ३।८१
इट्ठ (इष्ट) प २३।१६;२८।१०५ ज २।६४; ३।२४,८२,१८५,१८७,२०९,२१८;५।५८ सू २०।७ उ १।४१,४४;३।११२,१२८;४।१९; ५।२२,२५
इट्ठतर (इष्टतर) ज २।१८;४।१०७
इट्ठतरिय (इष्टतरक) प १७।१२६ से १२८,१३३ से १४५ ज २।१७
इट्ठत्त (इष्टत्व) प ३४।२०
इट्ठस्सरता (इष्टस्वरता) प २३।१९
इड्ढि (ऋद्धि) प २।३०,३१,४१,४९;६।९८; १७।८९;२१।७२ ज २।२५;३।१२,१८,३१, ७८,८८,९३,१२६,१८०,१८६,२०९,२१६; ४।१४०;५।२२,२६,२७,४३,४४,४६,४७,५६, ६७ उ १।९२,१२१,१२२,१२६,१३३,१३४, १३८;३।४६,५०,१११,१२२;४।१८;५।१७, १९,२३,३१
इड्ढिपत्तारिय (ऋद्धिप्राप्तार्य) प १।९०,९१
इड्ढिमंत (ऋद्धिमत्) ज ७।१६८।२
इड्ढिसिय (दे०) ज ३।१८५
इणं (एतत्) प १।१।३ ज २।१७ सू १८।२२
इतर (इतर) सू १।२५;२।२;४।२
इति (इति) प १।७५ ज १।२६;३।३२।१ सू १०।१० उ १।१७
इत्तरिय (इत्वरिक) प १।१२५;१७।१०६,१०७
इत्तो (इतस्) प २।६४।१८ ज ३।१२४
इत्थ (अत्र) प २।३१ ज ४।१४७
इत्थं (अत्र) ज २।२०
इत्थि (स्त्री) प १।६०,६६,७५,७६,८१;६।७९, ८०;८०।२;११।५ से १०,२३,२६ से २८; १७।१६९ से १७२ ज ३।२२१
इत्थिरयण (स्त्रीरत्न) प ९।२६ ज ३।७२,१३८, १७८,१८६,२०४,२१४,२२०
इत्थिरयणत्त (स्त्रीरत्नत्व) प २०।५८
इत्थिवयण (स्त्रीवचन) प ११।२६,८६
इत्थिवेद (स्त्रीवेद) प १८।६०;२३।७३;२८।१४०
इत्थिवेदग (स्त्रीवेदक) प १३।१४,१९
इत्थिवेय (स्त्रीवेद) प २३।३६,१४१
इत्थिवेयपरिणाम (स्त्रीवेदपरिणाम) प १३।१३
इत्थिवेयग (स्त्रीवेदक) प १३।१५
इत्थी (स्त्री) उ ३।३६,४२

इत्थीलिंगसिद्ध (स्त्रीलिंगसिद्ध) प १।१२
इत्थीवेदग (स्त्रीवेदक) प ३।६७;१३।१८
इब्भ (इभ्य) प १६।४१ ज २।२५;३।१०,८६, १७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६,२१९, २२१ उ १।९२;३।११,१०१;५।१०
इब्भजाति (इभ्यजाति) प १।९४।१
इम (इदम्) प १।४८ सू १।१५ उ १।१५;२।९
इय (इति) प २।६४।१८ ज १।७ सू १।६
इयर (इतर) प २१।३५
इयाणि (इदानीम्) सू १९।२४ उ ३।५५
इरियावहियबंधग (ईर्यापथिकबन्धक) प २३।६३
इरियावहियबंधय (ईर्यापथिकबन्धक) प २३।१७९
इरियासमिय (ईर्यासमित) उ २।९;३।१३,९९, १०२,११३,११५,१३२,१४९;४।२२;५।३८,४३
इलादेवी (इलादेवी) ज ५।१०।१ उ ४।२।१
इलादेवीकूड (इलादेवीकूट) ४।४४,२७५
इव (इव) प २।४८ उ ३।१२८
इसि (ऋषि) प २।४७।२ ज ३।१०९ उ १।२०
इसिपाल (ऋषिपाल) प २।४७।२
इसिवाइय (ऋषिवादिक) प २।४१,२।४७।१
इसीपब्भारा (ईषत्प्राग्भारा) प २।१;२१।९०
इस्सरियविसिट्ठया (ऐश्वर्यविशिष्टता) प २३।२१, ५८
इस्सरियविहीणया (ऐश्वर्यविहीनता) प २३।२२, ५८
इह (इह) ज २।६९ उ १।९
इहं (इह) प १।७५ उ १।१७
इहगय (इहगत) ज ५।२१;७।२०,२२ से २५,७९, ८२

ई

ईतिबहुल (ईतिबहुल) ज १।१८
ईताल (एकचत्वारिंशत्) सू १९।८।१
ईतालीस (एकचत्वारिंशत्) सू १३।१४
ईतालीसक (एकचत्वारिंशत्क) सू १३।१७
ईरियासमिय (ईर्यासमित) ज २।१६८
ईसर (ईश्वर) प २।४७।२;१६।४१ ज २।२५; ३।१२६।३;५।१९ उ १।९२;५।१०
ईसर (ऐश्वर्य) ज १।४५;३।१०,१८५,२०९,२२१
ईसाण (ईशान) प १।१३५;२।४९,५१,५३,६३; ३।३०,१८३;४।२२५ से २३६;६।२८,५६,६५, ८५,१११;१५।१३८;२०।६०;२८।७६;३४।१६, १८ ज २।६१ से ६३,११३,११९;४।१७२, २००,२२१;२२४।१,२३५,२४०,२४२,२४३; ५।४८,५९,६०;७।१२२।१ सू १०।८४।१ उ २।२०,२२;५।४१
ईसाणकप्पवासि (ईशानकल्पवासिन्) प २।५१
ईसाणग (ईशानज) प २।५१;६।६५;७।९;१५।८७; २१।७०,९०;३३।१६ ज ५।४९
ईसाणवडेंसग (ईशानावतंसक) प २।५५,५७
ईसाणवडेंसय (ईशानावतंसक) प २।५१
ईसि (ईषत्) प २।३१,६४;१७।१३४;२३।१९५ ज ३।१०९,१७८;४।५४;५।५,२१,३८,५८; ७।१७८
ईसिउच्छंग (ईषदुत्सङ्ग) ज ३।१७८
ईसिणिया (ईशानिका) ज ३।११।१
ईसितुंग (ईषत्तुङ्ग) ज ३।१७८
ईसिदंत (ईषद्दान्त) ज ३।१७८
ईसिमत्त (ईषन्मत्त) ज ३।१७८
ईसीपब्भारा (ईषत्प्राग्भारा) प २।६४;१०।१,२; २१।९०;३०।२६,२८
ईसीहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धा (ईषद्ह्रस्वपञ्चाक्षरो-च्चारणाध्वन्) प ३६।९२
ईहा (ईहा) प १५।५८।२;१५।६७ ज ३।२२३
ईहामइ (ईहामति) उ १।३१
ईहामिग (ईहामृग) ज २।३७,१०१;४।२७

उ

उ (तु) प १।४८।९ ज १।४७ सू १।७ उ १।७
उईर (उदीरण) प १४।१८।१
उउ (ऋतु) ज २।६९;३।११७।१;७।१११,११२।५, १२६, १२७ उ ५।२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उउय (ऋतुक) प २।४१
उंबर (उदुम्बर) प १।३६।१ उ ३।७४,७६
उंबेभरिया (दे०) प १।३५।२
उक्कड (उत्कट) प १।५० ज ३।३१
उक्कर (उत्कर) ज ३।१२, १३,२८,४१,४६,५८, ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३
उक्करिया (उत्करिका) प ११।७८;१३।२५
उक्करियाभेद (उत्करिकाभेद) प ११।७८,७६
उक्करियाभेय (उत्करिकाभेद) प ११।७३
उक्कलिया (उत्कलिका) प १।५०
उक्कलियावाय (उत्कलिकावात) प १।२६
उक्का (उल्का) प १।२६
उक्कामुह (उल्कामुख) प १।८६
उक्कालिय (उत्कालिक) ज ५।७
उक्किट्ठ (उत्कृष्ट) ज २।६०;३।१२,२६,२८,३६, ४१,४७,४६,५६,५८,६४,६६,७२,७४,११३, १३८,१४५,१४७,१६८,२१२,२१३;५।५,४४, ४७,६७;७।५५ उ १।१३८;३।१२७
उक्किट्ठि (उत्कृष्टि) ज ३।२२,३६,७८,६३,६६, १०६,१३३,१६३,१८०
उक्किण्ण (उत्कीर्ण) प २।३०,३१,४१ ज ३।८२
उक्कित्तिता (उत्कीर्तिता) सू २०।६।१
उक्किरिज्जमाण (उत्कीर्यमाण) ज ४।१०७
उक्कुट्ठ (उत्कृष्ट) सू १६।२३
उक्कुडुयट्ठिय (उत्कुटुकस्थित[1]) ज २।१३३
उक्कुरुडिया (दे०) उ १।५४ से ५७,५६,६३,७६ से ८२,८४
उक्कुला (उत्कूला) सू १०।६
उक्कूवमाण (उत्कूजत्) उ ३।१३०
उक्कोस (उत्कर्ष) प १।७४;२।६४।६;४।१ से ६७,६६ से २६६,२६८;५।४२,४६,७६,६४, ६८,११२,११६;६।१ से १८,२० से ४५,६०, ६१,६४,६६ से ६८,१२०,१२१,१२३;७।२,३, ६ से २६;११।७०,७१;१२।६;१५।४० से ४२; १७।१४५,१४६;१८।२ से ४,६,८ से १०,१२, १४ से १६,१८ से २४,२६ से २८,३० से ३६, ४१ से ५४,५६,५७,५६ से ६७,६६ से ७४, ७६ से ७६,८१,८३ से ८५,८७,८६ से ६१, ६३,६५,६६,६८,१०३ से १०५,१०७,१०८, ११०,११३,११४,११६,११७,११६,१२०; २०।६ से १३,६१,६३;२१।३८,४० से ४४, ४६ से ४८,६३ से ७१,७४,८४,८६,८७,६० से ६३;२३।६० से ७६,८१,८३ से ६२,६५ से ६६, १०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१२६ से १३१,१३३ से १३५, १३८,१४०,१४२,१४३,१४७,१५१ से १५५, १५७,१५८,१६० से १६२,१६४ से १६६, १७१ से १७३,१७६,१७७,१८२,१८३,१८६, १८७,१६०;२८।२५,२७,४७,५०,७३ से ६६; ३३।२ से १३,१५ से १७;३६।८ से १०,१७, १८,२०,३०,३४,४४,६१,६६,६८,७०,७२,७४, ७६ ज २।६,४४,४५,५८,१२३,१२८,१३३, १४८,१५१,१५७;४।१०१;७।५७,६०,१८२, १८७ से १६६,२०६ सू १८।२०,२५,३६; १६।२५ उ २।२०,२२;३।१३०
उक्कोसकालठिईय (उत्कर्षकालस्थितिक) प २३।२००
उक्कोसकालठितीय (उत्कर्षकालस्थितिक) प २३।१६४ से १६६,१६८ से २०१
उक्कोसग (उत्कर्षक) प १७।१४५,१४६;२३।१८४
उक्कोसगुण (उत्कर्षगुण) प ५।३८,६०,७५,६०, १०८,१६१,१६४,१६८,२०१,२०४,२०८, २१२,२१५,२१६,२२२,२२५,२४३
उक्कोसट्ठिईय (उत्कर्षस्थितिक) प ५।१८५
उक्कोसट्ठिलीय (उत्कर्षस्थितिक) प ५।३५,५७, ७२,८३,१०५,१७५,१७८,१८२,१८८,२४०
उक्कोसपएसिय (उत्कर्षप्रदेशिक) प ५।२२६,२३०
उक्कोसपद (उत्कर्षपद) प १२।३२
उक्कोसपय (उत्कर्षपद) ज ७।१६८,१६६,२०२, २०४

1. अस्थिक इत्यपि भवति विकल्पेन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसमति (उत्कर्षमति) प ५।६४

उक्कोसमदपत्त (उत्कर्षमदप्राप्त) प १७।१३४

उक्कोसय (उत्कर्षक) प १५।६४; २२।१०५ ज ७।२६ सू १।१६,१७,२१,२२,२४,२७;२।३; ३।२;६।१; ८।१; ९।२; २०।३

उक्कोसा (उत्कर्षक) प १७।१४६

उक्कोसिया (उत्कर्षिका) ज २।७४ से ८०;७।२८ सू १।१४,२१; २।३; ४।९; ६।१

उक्कोसोगाहणग (उत्कर्षावगाहनक) प ५।३०

उक्कोसोगाहणय (उत्कर्षावगाहनक) प ५।२९, ३०,५०,५४,६९,८४,१०२,१५५,१५८,१६०, १६४,१६७,१७०,२३५

उक्खित्त (उत्क्षिप्त) ज ५।५७

उक्खेव (उत्क्षेप) ज ५।४६,६०,६६

उग्ग (उग्र) प १।९५ ज २,१६५

उग्गच्छ (उद्गत्य) ज ७।१०१,१०२ सू ८।१

उग्गतव (उग्रतपस्) ज १।५

उग्गमण (उद्गमन) ज ७।३६ से ३८ सू २।३; ९।२

उग्गममाण (उद्गच्छत्) प १।४८।५२

उग्गय (उद्गत) ज १।३७; ३।२४; ४।२७;५।२८

उग्गवई (उग्रवती) ज ७।१२१ सू १०।९१

उग्गविस (उग्रविष) प १।७०

उग्गसेण (उग्रसेन) उ ५।१०

उग्गह (अवग्रह) प १५।६८,७१,७२

उग्गा (दे०) ज २।१७

उग्घोस (उद्घोष) ज २।६५

उग्घोसेमाण (उद्घोषयन्) ज ३।२१२,२१३; ५।२२,२६

उच्च (उच्च) उ ३।१००,१३३

उच्चंतय (उच्चंतग) प १७।१२४

उच्चत्त (उच्चत्व) प २१।८७।२ ज १।८ से १०,१६,२२ से २४,२७,३५,३७,३८,४०, ४२,४९,५१;२।६,१५,४५,५१,५४,५६,५८, ८६,१२३,१२८,१३८,१४०,१४८,१५१,१५७, १५९;४।१,९,१०,१४,३३,४५,४७ से ४९,५४, ५७,५९,६२,८०,८४,८६,९६,१०१,१०३, ११०,११२,११४,११५,११९ से १२२,१२५, १२८,१३९,१४२,१४६,१४७,१४९,१५५, १५६,१६३ से १६५,१७२,१७५,१७८,२०३, २१२,२१६,२१७,२१९,२२१,२२६,२४२; ५।३८,४९,७२,७३;७।३७,३८,२०७ चं २।५ सू १।६।५;९।२,३;१८।१

उच्चत्तच्छाया (उच्चत्वछाया) सू ९।४

उच्चत्तपज्जव (उच्चत्वपर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०, १६३

उच्चत्तुद्देस (उच्चत्वोद्देश) सू ९।२

उच्चागोय (उच्चगोत्र) प २३।२१,५७,५८, १३१,१५३,१८८

उच्चार (उच्चार) प १।८४

√उच्चार (उत्+चारय्) उच्चारेइ उ ३।७९

उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिट्ठवणियासमिय (उच्चारप्रस्रवणक्ष्वेल 'जल्ल' 'सिंघाण' परिष्ठापनिकासमित) ज २।६८

उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिय (उच्चारप्रस्रवणक्ष्वेल 'सिंघाण' 'जल्ल' परिष्ठा-पनिकासमित) उ ३।९९

उच्चारेतव्व (उच्चारयितव्य) सू १०।१३५

उच्चारेयव्व (उच्चारयितव्य) ज ७।१६८ सू १०।१३४

उच्चावय (उच्चावच) प ३४।२३,२४ उ १।५७, ८९;५।४३

उच्चाविय (उच्चैःकृत्वा) प १७।१११

उच्छंग (उत्सङ्ग) उ ३।९८,११४

उच्छण्ण (उत्सन्न) ज २।८,९

उच्छण्णणाणि (उत्सन्नज्ञानिन्) प २३।१३

उच्छण्णदंसणि (उत्सन्नदर्शनिन्) प २३।१४

उच्छाह (उत्साह) सू २०।९।३,५

उच्छूढसरीर (उत्क्षिप्तशरीर) ज १।५

√उच्छोल (दे० उत्+क्षालय्) उच्छोलेंति

ज ५।५७
उजुसेढि (ऋजुश्रेणि) प ३६।६२
उज्जय (उद्यत) ज २।१३३
उज्जल (उज्ज्वल) ज १।३७;७।१७८
उज्जाण (उद्यान) ज २।६५,७१;५।५,७ उ ३।३६; ५।६,७,२४,२६,३७
उज्जाणसंठित (उद्यानसंस्थित) सू ४।३
√उज्जाल (उत्+ज्वालय्) उज्जालंति ज ५।१६ उज्जालेइ उ ३।५१ उज्जालेंति ज २।१०८ उज्जालेह ज २।१०७
उज्जालित्ता (उज्ज्वाल्य) ज ५।१६
उज्जालेत्ता (उज्ज्वाल्य) उ ३।५१
उज्जु (ऋजु) प २।३१ ज २।१५
उज्जुय (ऋजुक) ज २।१५
उज्जुसुय (ऋजुसूत्र) प १६।४६
उज्जोइय (उद्द्योतित) प २।४६ ज ३।६,१८,६३, १८०,२२२
उज्जोत (उद्द्योत) प० २।४१,५६,६६
उज्जोय (उद्द्योत) प २।३०,३१,४६,५६,६३ ज १।८,३१;३।६३,१२१;५।३२
√उज्जोय (उद्+द्योतय्) उज्जोएंति सू १६।१ उज्जोएति सू १६।१
उज्जोयकर (उद्द्योतकर) ज ३।६५,६६,१५६,१६०
उज्जोयणाम (उद्द्योतनामन्) प २३।३८
उज्जोयभूय (उद्द्योतभूत) ज ३।१६,१६०
√उज्जोव (उत्+द्युत्) उज्जोवेइ ज ४।२११ उज्जोवेंति ज ७।५१,५८ सू ३।१ उज्जोवेति सू ३।२
उज्जोवणाम (उद्द्योतनामन्) प २३।११५
उज्जोविय (उद्द्योतित) ज २।१६ उ १।५६,८१
उज्जोवेमाण (उद्द्योतयत्) प २।३०,३१,४१,४६
√उज्झ (उज्झ्) उज्झइ उ १।५५ उज्झाहि उ १।५४
उज्झर (उज्झर) प २।४,१३,१६ से १६,२८ उ ५।५
उज्झरबहुल (निर्झरबहुल) ज १।१८
√उज्झाव (उज्झय्) उज्झावेसि उ १।५७
उज्झावित्तए (उज्झयितुम्) उ १।५४,५६
उज्झिज्जमाण (उज्झ्यमान) उ १।५६,६३,८४
उज्झित (उज्झित) उ १।५६,८१
उज्झिय (उज्झित) उ १।५७,८२
उट्ट (उष्ट्र) प १।६४;११।१६ से २० ज २।३५
√उट्ठा (उत्+ष्ठा) उट्ठेइ उ १।२४ उट्ठेंति ज ३।११४,१२६ उट्ठेति ज १।६
उट्ठा (उत्था) उ १।२४
उट्ठाण (उत्थान) प २३।१६,२० ज २।५१,५४, १२१,१२६,१३०,१३५,१३८,१४०,१४६, १५४,१६०,१६३ सू २०।१,७; ६।३,५
उट्ठाय (उत्थाय) ज १।६
उट्ठिय (उत्थित) ज ३।१८८ उ ३।४८,५०,५५, ६३,६५,७०,७४,१०६,११८
उट्ठेंत (उत्तिष्ठत्) ज ३।३५
उट्ठेत्ता (उत्थाय) ज १।६ उ १।२४
उडय (उटज) उ ३।५१,५३
उडिय (दे०) ज ७।१७८
उडु (ऋतु) सू ६।१; ८।१; १०।१२८,१२६;१२।१, ४,११,१२,१४,१५; १५।२० से २२
उडु (उडु) सू १०।१२६।१,५
उडुकल्लाणिया (ऋतुकल्याणिका) ज ३।१७८, १८६,२०४,२१४,२२१
उडुपाण (उडुपान[1]) प १५।१।२; १५।५०
उड्ड (उड्र) प १।८६
उड्ढ (ऊर्ध्व) प २।४,४८ से ५३,६०,६३,६४; ११।६५,६६;११।६६।१; १५।५२; २१।८७, ६० से ६३; २८।१५,१६,६१,६२;३३।१६, १७; ३६।६२ ज १।८ से १०,२५,२८,३२, ३५,३७,३८,४०,४२,५१; २।६,५६,८६,१२३, १२८,१४८;३।१३१,१३२;४।१,६,१०,२३, ४५,४७,५७,५६,६२,८६,१०१,१०३,११०, ११२,११४,११५,११६ से १२२,१२८,१३६,

---

१. उडु (जलम्) आप्टे पृ० ४०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४२,१४६,१४७,१५५,१५६,१६३ से १६५, १७५,१७८,२०३,२१२,२१६,२१७,२१९, २२१,२२६,२३४,२४० से २४२;५।६४; ७।४४,५४,१६८।१,२०७ सू २।१;४।१०; ९।३;१८।१;१९।२२।१२;१९।२३ उ १।९७; २।१२;३।५०;५।४१

उड्ढजाणु (ऊर्ध्वजानु) ज १।५;२।८३ उ १।३

उड्ढत्त (ऊर्ध्वत्व) प २८।२४,२६

उड्ढदिसा (ऊर्ध्वदिशा) प ३।१७६,१७८

उड्ढमुह (ऊर्ध्वमुख) ज ३।३;१७।१६८

उड्ढलोग (ऊर्ध्वलोक) ज ५।६,६७

उड्ढलोय (ऊर्ध्वलोक) प २।१,४,१०,१३,१६ से १९,२८;३।१२५,१२७ से १७३,१७५,१७७

उड्ढवाय (ऊर्ध्ववात) प १।२९

उड्ढामुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठित ('उद्धी'मुखकलम्बुकपुष्पसंस्थानसंस्थित) सू १९।२३

उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठित ('उद्धी'मुखकलम्बुक-पुष्पसंस्थित) ज ७।३१,३३,३५ सू ४।३,४,६,७,९

उड्ढोववण्णग (ऊर्ध्वोपपन्नग) ज ७।५५ सू १९।२३,२६

उण्णंदिज्जमाण (उन्नन्द्यमान) ज ३।१८६,२०४

उण्णय (उन्नत) ज २।१५;३।१०९,१३८;४।१३;७।१७८ सू २०।७

उण्णाय (उन्नाक) उ ५।४३

उण्ह (उष्ण) प १७।११४।१,१७।१३८;२८।२६ उ ३।१२८

उतालीस (एकोनचत्वारिंशत्) सू १२।२०

उत्तत्त (उत्तप्त) प २।४०।९

उत्तम (उत्तम) प २।४९ ज २।१५;३।३,१२,१२५;४।२६०।१;५।५८ सू ५।१

उत्तमकट्ठपत्त (उत्तमकाष्ठाप्राप्त) ज २।७,५२,१३१,१६१,१६४;७।२६,२८ सू १।१४,१६,१७,२१,२२,२४,२७;२।३;३।२;४।८,९;६।१;९।२

उत्तमपुरिस (उत्तमपुरु) प ९।२६

उत्तमा (उत्तमा) ज ७।१२०।१ सू ५।१;१०।८८।१

उत्तर (उत्तर) प २।२१ से २७;२७।१,२;२।३० से ३६,४४,४८,५१,६०,६१,६२।१;२।६३;३।१ से ३७,१७६,१७८;१५।८५;१८।६० ज १।१८,२०,२३,४८;३।१,८२,१२६।४,१३१,१३३,१३८,१५१;४।१,१७,३८,५५,६२,७३,७६,८१,८६,९१,९३,९८,१०३,१०८,११४,१२९,१४१ से १४३,१५०,१५६,१६०,१६५,१६७,१६९,१७२,१७३,१७५,१७७,१७८,१८०,१८१,१८४,१८५,१८७,१९०,१९१,१९३,१९६,१९७,१९९ से २०३,२०५,२०८,२०९,२१३,२२६,२३१,२३४,२३७,२३८,२४९,२५२,२६२,२६५,२६८,२६९,२७१,२७२,२७४,२७५;५।११,३९,४२;६।११,१४,२४;७।५,१५,१७,२४,२५,६४,७४,७६,७८,८३,८४,८८,९४,१२७,१२९,१३४।३,१३५।३,१७४,१७८,२०१,२०४ सू १।१५ से १७,२४,२६ से ३१;२।३;१०।७५,१३५;१२।१२;१३।९,१०;१८।१४ से १७;१९।८।१,११।१;२०।२ उ ३।५४,५५,६३,६७,७०,७३;४।१६;५।४१

√उत्तर (उत्+तॄ) उत्तरइ ज ३।१०१,१२६

उत्तरओ (उत्तरतस्) प २।४०।४ ज १।१८

उत्तरकुरा (उत्तरकुरु) ज ४।९९,१०३,१०८ से ११०,१४१,१४३,१६१,१६२,२०५,२१३

उत्तरकुरु (उत्तरकुरु) प १।८७;१६।३०;१७।१६४ ज २।६;४।१४२।३.१६१।२;१६२,२०७,२६२;५।५५

उत्तरकुरुकूड (उत्तरकुरुकूट) ज ४।१०५,१६३

उत्तरकूल (उत्तरकूल) उ ३।५०

उत्तरगुण (उत्तरगुण) प ११।४६

उत्तरड्ढ (उत्तरार्द्ध) प २।५१;८।१

उत्तरड्ढकच्छ (उत्तरार्द्धकच्छ) ज ४।१६८,१७२,१७३ से १७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरड्ढभरह (उत्तरार्द्धभरत) ज १।१६,४७ से ५१;३।१०३,११३;४।३५
उत्तरड्ढभरहकूड (उत्तरार्द्धभरतकूट) ज १।३४
उत्तरलवणसमुद्द (उत्तरलवणसमुद्र) ज ४।२७७
उत्तरड्ढलोकाहिवइ (उत्तरार्द्धलोकाधिपति) ज ५।४८
उत्तरण (उत्तरण) ज ३।७६,११६
उत्तरदारिया (उत्तरद्वारिका) सू १०।३१
उत्तरदाहिण (उत्तरदक्षिण) ज १।२४;४।१०६, १६४,१६७,१६६,१७८,१८०,१८१,१८५, १८७,१६१,१६६ से २०१,२०३,२०६,२१५, २४५,२४८,२५१,२५२ सू ८।१
उत्तरदाहिणायया (उत्तरदक्षिणायता) ज १।२४; ४।१०३,१६२,१६७,१६६,१७८,१८५,१८७, १६१,२००,२०३,२४५,२५१
उत्तरड्ढ (उत्तरार्द्ध) ज २।६१
उत्तरड्ढभरह (उत्तरार्द्धभरत) ज १।२३
उत्तरपच्चत्थिम (उत्तरपाश्चात्य) प ३।१७६,१७८ ज ३।४३,४४;४।१०३,१०६,१५०,२२४,२३१, २३२ सू २।१;२०।२
उत्तरपच्चत्थिमिल्ल (उत्तरपाश्चात्य) ज ४।२३८ सू १।१६;२।१;२०।२
उत्तरपाईण (उत्तरप्राची) ज ३।१२६
उत्तरपुरत्थिम (उत्तरपौरस्त्य) प ३।१७६,१७८ ज १।३;३।६०,६१,१३०,१३१,१४०,१४१, १६१,१६२,२०४,२०८;४।१७,१२०,१३६, १३६,१५०,१५४,१६२ से १६४,२२१,२२६, २३३,२३६;५।५,७,३६,४४,५५ चं ७ सू १।२ २०।२ उ ३।११३;४।२०;५।५
उत्तरपुरत्थिमिल्ल (उत्तरपौरस्त्य) ज ४।१५६, २३७,२३८;५।४८,४६ सू १।१६
उत्तरपोट्ठवया (उत्तरप्रोष्ठपदा) ज ३।२०६ सू १०।६४
उत्तरफग्गुणी (उत्तरफल्गुनी) ज ७।१२८,१२६, १३६
उत्तरभद्दवया (उत्तरभद्रपदा) ज ७।१२८,१२६, १३६,१३६,१४२
उत्तरवेउव्विय (उत्तरवैक्रयिक) प १५।१८,१६; २१।५८,५६,६१,६५ से ६७,७०;३४।१६,२१ से २३ ज ३।२०६;५।४१
उत्तरवेयड्ढ (उत्तरवैताढ्य) ज ३।८१
उत्तरा (उत्तर) सू १०।३२,४५,६०,६२,१२०, १५३,१५५,१५६,१५८;११।२,४ से ६; १२।२४ से २८ ज ७।११३ उ ३।५५,६३,६५, ६७,७०,७४
उत्तरापोट्ठवया (उत्तरप्रोष्ठपदा) सू १०।५,६,२१, २३,६५,७५,८३,६७,१३१ से १३५
उत्तराफग्गुणी (उत्तरफल्गुनी) ज ७।१४०,१४८, १५१,१६३,१६४ सू १०।२ से ६,१५,२३,७०, ७१,७५,८३,११०,१३१ से १३३
उत्तराभद्दवया (उत्तरभद्रपदा) ज ७।१४६,१५७, १५८ सू १०।२ से ६,१३१
उत्तराभिमुह (उत्तराभिमुख) उ ३।५५,६३,६७, ७०,७३
उत्तरासंग (उत्तरासङ्ग) ज ३।६;५।२१
उत्तरासाढा (उत्तराषाढा) ज २।७१,८५;७।१२८, १३०,१३६,१४०,१४६,१५६,१६७ सू १०।१ से ६,१६,२३,५४,६२,६३,७४,८३,११६, १२२,१२३,१३० से १३५;१५।६,१२
उत्तरिज्ज (उत्तरीय) ज ३।६,२२२
उत्तरित्तु (उत्तीर्य) ज १।१८१
उत्तरिय (औत्तरिक) प ३६।२१,२२,२४,२६,२७, ४६
उत्तरिल्ल (औदीच्य) प २।३३,३६,३६,४०,४४, ४७;१६।३४ ज १।२६;२।११६;३।१०२, १०६,१३३,१३७,१५४ से १५७,२०५,२१५, २२०;४।३८,४२,७३,७७,६१,६४,१७२, १६६ से २०२,२०६,२०७,२१२,२३२,२३३, २३८,२४८,२५१;५।११,१४,४४,४५,४६,५२, ७।१७८ उ ३।६१

उत्तरोट्ठ (उत्तरौष्ठ) ज २।१५
उत्ताण (उत्तान) उ ३।१३०
उत्ताणग (उत्तानक) ज ३।१११,११३ उ १।४६
उत्ताणय (उत्तानक) प २।६४ उ १।४६
उत्ताणसेज्ज (उत्तानशय) उ ३।१३०,१३१,१३४
उत्तासणग (उत्त्रासनक) प २।२० से २६
उत्तासणय (उत्त्रासनक) प २।२७
उत्तिण्ण (उत्तीर्ण) ज ३।८१
उत्तिमंग (उत्तमाङ्ग) ज २।१५
उदग (उदक) ज २।१३१;३।२६,३६,४७,१०६, १३३,२२१;५।५५
उदगधारा (उदकधारा) ज ३।८८
उदय (उदय) प २३।३,१३ से २३ सू १।६।२; १।८।१
उदय (उदक) प १।४१।२,१।४६;१०।१७; १६।५४ ज ३।६,२०६;५।१४,५६;७।११२।१, २ चं २।२;४।१,३ सू १०।१२६।१,२
उदयसंठिति (उदयसंस्थिति) सू १।६।२;१।८।१,३
उदर (उदर) उ १।४३
उदहि (उदधि) प २।३०।१;२।४०।२,८,१०; १५।१।२ ज २।१५;५।५२
उदहिकुमार (उदधिकुमार) प १।१३१;५।३;६।१८
उदार (उदार) ज ३।२४,१३१
उदाहु (उताहो) प १०।६;१५।४६,४७;३४।६ उ १।१२७
उदिण्ण (उदीर्ण) प २०।३६;२३।३,१३ से २३
उदीण (उदीचीन) प २।१०,५० से ५२,५४,५६, ५८ से ६० ज १।१८,२०,२३,२५,२८,३२, ४८;३।१;४।१,३,५५ ६२,८६,८८,६८, १०८,१७२,२०५,२१४,२५२,२६२,२६८; ७।१०१,१०२ सू ८।१
उदीणदाहिणायता (उदीच्यदक्षिणायता) सू १।१६; २।१;१०।१४२,१४३;१२।३०
उदीणवाय (उदीचीनवात) प १।२६
√**उदीर** (उद्+ईर्) उदीरंति प १४।१८ उदीरिस्संति प १४।१८ उदीरेंति उ ३।३४ उदीरेंसु प १४।१८ उदीरेति प २२।५
उदीरण (उदीरण) ज २।१३१
उदीरिज्जमाण (उदीर्यमाण) प २३।१३ से २३
उदीरिय (उदीरित) प २३।१३ से २३
उदु (ऋतु) ज २।४;७।११२।१
उद्दंडग (उद्दण्डक) उ ३।५०
उद्दंडिय (उद्दण्डिक) अ ३।३२
√**उद्दव** (उद्+द्रु) उद्दवेंति प ३६।६२,७७
उद्दवित्तए (उद्द्रवयितुं) ज ३।११५
उद्दाइत्ता (उद्द्रुत्य) ज ६।४
उद्दाल (उद्दाल) ज २।८
उद्दाल (अवदाल) ज ४।१३ सू २०।७
√**उद्दाल**[1] (आ+छिद्) उद्दालेइ उ १।१०५
उद्दालेउकाम (आछेत्तुकाम) उ १।१०५
उद्दिट्ठ (दे०) सू १६।२२।२५
√**उद्दिस** (उत्+दिश्) उद्दिसंति उ ५।४५
उद्दिस्सिय (उद्दिश्य) प १६।५१
उद्दिस्सपविभत्तगति (उद्दिश्यप्रविभक्तगति) प १६।३८,५१
उद्देस (उद्देश) ज ७।१०१,१०२
उद्देसग (उद्देशक) उ ५।४५
उद्देसय (उद्देशक) प १७।१४८
उद्देहिया (दे०) प १।५०
उद्ध (ऊर्ध्व) प ३३।२४ ज १।१६,२३,२४;२।६, ५८,६५,१५७
√**उद्धंस** (उत्+धृष्) उद्धंसइ उ १।५७
उद्धंसणा (उद्धर्षणा) उ १।५७,८२
उद्धंसेत्ता (उद्धर्ष्य) उ १।५७
उद्धत (उद्धत) ज २।६५
उद्धिय (उद्धृत) ज ३।२२१
उद्धुत (उद्धूत) प २।४८
उद्धुय (उद्धूत) प २।३०,३१,४१ ज २।६०;३।७; २४।३,२६,३७।१,३६,४५।१,४७,५६,६४, ७२,८८,११३;१३१।३,१३८,१४५,१७८;

१. हेम० ४।१२५

४।४६ ; ५।५,७,४३,४४,४७,६७ सू २०।७
उद्धुर (उद्धुर) ज ५।५ ; ७।१७८
उद्धुव्वमाण (उद्धूयमान) ज ३।१८,३१,६३,१८० उ ५।१६
√**उवगच्छ** (उप+गम्) उपगच्छंति ज ३।१६७।१४
उवचयंकर (उपचयङ्कर) ज ३।१६७
उपरिल्ल (उपरितन) सू १८।७
उवसंत (उपशान्त) प २०।३६
उप्पइत्ता (उत्पत्य) प २।४८ से ६३ ज १।२५ सू २।१;१८।१
√**उप्पज्ज** (उत्+पद्) उप्पज्जइ सू ६।१ उप्पज्जंति ज २।६७
उप्पज्जंत (उत्पद्यमान) ज ३।१६७।५
उप्पज्जय (उत्पद्यक) ज ३।३
उप्पड (उत्पट) प १।५०
उप्पण्णमिस्सिया (उत्पन्नमिश्रिता) प ११।३६
उप्पण्णविगयमिस्सिया (उत्पन्नविगतमिश्रिता) प ११।३६
उप्पत्ति (उत्पत्ति) प १।६३।६;१४।५;३६।६४ ज ३।१६७।३,६,८,६,१०
उप्पत्तिया (औत्पत्तिकी) उ १।४१,४३
उप्पन्न (उत्पन्न) ज ३।२६,३६,४७,५६,१३३, १३८,१४५,१७५;५।३,२२
उप्पन्नकोउहल्ल (उत्पन्नकुतूहल) ज १।६
उप्पन्नसंसय (उत्पन्नसंशय) ज १।६
उप्पन्नसड्ढ (उत्पन्नश्रद्धा) ज १।६
उप्पयनिवय (उत्पातनिपात) ज ५।५७
√**उप्पय** (उत्+पत्) उप्पयंति ज ५।५७,६४
उप्पल (उत्पल) प १।४६,१।४८।४४,१।६२; १५।५५।२ ज १।५१ ; २।४,१६;३।३,८६, १८८,२०६;४।३,२२,२५,३०,३४,६०,११३, २६६,२७२;५।५५,५६;७।१७८
उप्पलंग (उत्पलाङ्ग) ज २।४
उप्पलहत्थगय (हस्तगतोत्पल) ज ३।१०
उप्पला (उत्पला) ज ४।१५५।१,२२२
उप्पलिणीकंद (उत्पलिनीकन्द) प १।४८।४२
उप्पलगुम्मा (उत्पलगुल्मा) ज ४।११५।१,२२२
उप्पलुज्जला (उत्पलोज्ज्वला) ज ४।११५।१,२२२
उप्पाइय (औत्पातिक) ज ३।१०४,१०५,१०६
उप्पाएत्ता (उत्पाद्य) प २८।२०,३२,६६
√**उप्पाड** (उत्+पादय्) उप्पाडेज्जा प २०।१७, १८,३२ से ३४,४७
उप्पाय (उत्पाद) प १।५०
√**उप्पाय** (उत्+पादय्) उप्पाएंति ज २।३६,४१
उप्पि (उपरि) प २।५२ से ६२ ज १।१०,१२, १४,१६ सू १२।३०;१८।२,३ उ १।४६;२।६; ५।१३,२०,२७,३१
उप्पीलिय (उत्पीडित) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८
उप्फिडिय (उत्फिट्य) प १६।४४
उप्फेस (दे०) प २।३०
उब्बहिया (उद्वाह्य) प १६।५४
उब्भड (उद्भट) ज २।१३३
उब्भिज्जमाण (उद्भिद्यमान) ज ४।१०७
उभओ (उभयतस्) ज १।२३,२५,२८,३२; ३।१७६;४।१,१३,३६,४३,६२,७२,७८,८६, ६५,६८,१०३,११०,१८३,२००,२०१,२०६ ; ५।४६,६०,६६;७।३१,३३ सू ४।३,४,६ ; २०।७
उभय (उभय) ज ३।३
उभयभाग (उभयभाग) सू १०।४,५
उम्मज्जग (उन्मज्जक) उ ३।५०
उम्मत्तजला (उन्मत्तजला) ज ४।२०२
उम्माण (उन्मान) ज ३।६५,१३८,१५६,१६७।३
उम्मिमालिणी (ऊर्मिमालिनी) ज ४।२१२
उम्मिलिय (उन्मीलित) प २।४८ ज ३।१८८; ४।४६
उम्मुक्क (उन्मुक्त) प २।६४।२१ ज ३।२०,३३, ५४,६३,७१,८४,१३७,१४३,१६७,१८२
उम्मुग्गजला (उन्मुक्तजला) ज ३।६७ से १०१, १६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उयर (उदर) उ १।३४,४०,४६,४८,४९,५१,५४,७४,७६,७९

उर (उरस्) ज ५।५ उ ३।११४

उरग (उरग) प ६।८०।१ ज ३।२४

उरत्थ (उरःस्थ) ज ३।३९

उरपरिसप्प (उरःपरिसर्प) प १।६७,६८,७५; ४।१३१ से १३९;६।७१; २१।१४ से १६,३५, ४५,६०

उरब्भरुहिर (उरभ्ररुधिर) प १७।१२६

उराल (उदार) प १।४४।३ गुलू नामक वृक्ष

उराल (दे०) ज ५।३८

उरु (उरु) ज २।१५,१६;५।५;७।१७८

उरुलुंचग (दे०) प १।५०

√उलंघ (उत्+लङ्घ्) उलंघेज्ज प ३६।६१

उल्ल (आर्द्र) ज ३।२२,३६,४४,१२५,१२६

√उल्लाल (उत्+लालय्) उल्लालेइ ज ५।२३

उल्लालिय (उल्लाल्य) ज ५।२४

उल्लालेमाण (उल्ललायत्) ज ५।२२

उल्लोइय (उल्लोचित) प २।३०,३१,४१ ज १।३७; ३।७,१८४

उल्लोय (उल्लोच) ज ४।११९;५।३४,६७ सू २०।७

उल्लोयण (उल्लोचन) उ १।४६

उवइय (उपचित) ज ४।२७

उवउज्जिऊण (उपयुज्य) प १६।२०; २२।४५; ३६।३२

उवउत्त (उपयुक्त) प २।६४।१२,१३;८।४ से ११; १५।४८,४९;२९।१७,१९,२०;३४।१२ ज ५।२६

उवएसरुइ (उपदेशरुचि) प १।१०१।१,४

उवओग (उपयोग) १।१।७;३।१।१;१५।५८।१; १५।६३,६४;१८।१।१;२८।१०६।१;२९।१,५, ८,११,१५

उवओगपरिणाम (उपयोगपरिणाम) प १३।२,१४, १९

उवंग (उपाङ्ग) उ १।४ से ८;२।१;३।१,२; ४।१,३;५।१,३,४५

उवकुल (उपकुल) ज ७।१३६।१,१४१,१४३ से १४६,१५० से १५३ सू १०।६,२० से २२,२५

√उवक्खड (उपस्कारय्) उवक्खडावेइ उ ३।११०; ४।१६

उवक्खडावेत्ता (उपस्कार्य) उ ३।५०

√उवगच्छ (उप+गम्) उवगच्छइ ज ३।४१

उवगच्छित्ता (उपगम्य) ज ३।४१

उवगय (उपगत) प २।६४।१४,२० ज ३।२०,३३, ५४,५६,८४,१०५,१०८ से १११,११३,१३७; ५।५,७ उ १।१५,२५;३।९८,१०६;५।३५

उवगरण (उपकरण) ज २।६९ सू २०।४ उ १।९३, १०५,१०६;३।५५,६३,७०,७३

उवगिज्जमाण (उवगीयममान) ज ३।८२,१८७, १८८ उ ५।२५

उवग्गच्छाया (उपाग्रछाया) सू ९।४

उवघाइय (उपघातिक) प० ११।३४।१

उवग्गहिय (औपग्रहिक) प २३।६

उवघायणाम (उपघातनामन्) प २३।३८,५२,११०

उवघायणिस्सिया (उपघातनिश्रिता) प ११।३४

उवचय (उपचय) प १५।५८।१;१५।५८,५९

√उवचय (उप+चि) उवचयंति प ९।२६

√उवचिण (उप+चि) उवचिण प १४।१८।१
उवचिज्जंति प १४।१८।१;२१।९७
उवचिणंति प १४।१५
उवचिणिसु प १४।१४ उवचिणिस्संति प १४।१६

उवचित (उपचित) प २।३१,४१

उवचिय (उपचित) प २।३०;२३।१३ से २३ ज २।१४५,१४६;३।७;४।३,२५,२७;७।१७८

उवज्जिय (उपार्जित) ज ३।१८५,२०९

उवज्झाय (उपाध्याय) प १६।५१ चं १।२

√उवट्ट (उद्+वृत्) उवट्टेंति ज ५।१४

उवट्टेत्ता (उद्वृत्य) ज ५।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**उवट्ठ** (उप + स्थापय्) उवट्ठवेंति ज ३।२०८; ५।५५ उवट्ठवेंति ज ३।१२० उवट्ठवेह ज २।५४;३।२०७ उ १।१७

उवट्ठवेत्ता (उपस्थाप्य) उ १।१७

उवट्ठाइ (उपस्थायिन्) ज ३।३२।१

उवट्ठाणसाला (उपस्थानशाला) ज ३।५,१२,१७, २१,२८,३४,४१,४६,५८,६६,७४,७७,१३५, १४७,१५१,१७७,१८८,२१६ उ १।१६,४१, ४२,१२४;४।१२;५।१६

उवट्ठिय (उपस्थित) उ १।२०

√**उवणी** (उप + णी) उवणेइ ज ३।२६,३६,४०, ४७,५६,६४,७२,१३३,१४५,१५१ उवणेंति ज ३।८१,१२६;५।६१ उ १।४५ उवणेह उ १।४४

उवणीयअवणीयवयण (उपनीतापनीतवचन) प ११।८६

उवणीयवयण (उपनीतवचन) प ११।८६

उवणेत्ता (उपनीय) ज ३।१२६

उवत्थाणिया (उपस्थानिका) ज ३।२६,३६,४७, ५६,१३३,१३८,१४५ उ ३।१२३

√**उवदंस** (उप + दृश्) उवदंसइ ज ५।५७,५८; ७।२१४ उ ३।१२३ उवदंसेंति) ज ५।५७ उवदंसेति सू २०।२

उवदंसण (उपदर्शन) ज ४।२६३।१

उवदंसित्तए (उपदर्शयितुम्) उ ३।११२

उवदंसित्ता (उपदर्श्य) उ ३।२१;४।५

उवदंसिय (उपदर्शित) प १।१।२

उवदंसित्ता (उपदर्श्य) प ५।५८

उवदंसेमाण (उपदर्शयत्) प ३४।२२ ज ५।४४ सू २०।३

उवदिट्ठ (उपदिष्ट) प १।१०१।४ च १।३

√**उवदिस** (उप + दिश्) उवदिसइ प २।६४

उवदिसित्ता (उपदिश्य) प २।६४

उवद्दव (उपद्रव) ज २।४०;३।१०५

उवप्पयाण (उपप्रदान) उ १।३१

उवबूह (उपबृंहण) प १।१०१।१४

उवभोग (उपभोग) ज २।१४६

उवभोगंतराय (उपभोगान्तराय) प २३।२३

उवमा (उपमा) प २।६४।१७;३५।२५,२६ ज ३।२४।४;३७।२;४५।२;१३१।४ उ ३।६८

उवयार (उपचार) प २।३०,३१,४१ ज २।१०, १५,६५;३।७,१२,८८,१३८;४।१६६;५।७, ५८;७।१३३।१ सू २०।७

उवयारियालयण (उपकारिकालयन) ज ४।११८

उवरक्खिय (उपरक्षित) प २।३०,३१,४१

उवरि (उपरि) प २।२१ से २७,३० से ३६,४१ से ४३,४६;१२।३२ ज १।३५;४।१५६।१, २१३,२१६

उवरितल (उपरितल) ज ४।१४२।१,२,४।२१३

उवरिम (उपरितन) प २।२७।३,६२।१

उवरिमउवरिमगेवेज्जग (उपरितनोपरितनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२६१ से २६३;७।२८;२८।९५

उवरिमगेवेज्जग (उपरितनग्रैवेयक) प २।६२; ३।१८३;६।४१,५६;२०।६१;३३।१७

उवरिमगेवेज्जय (उपरितनग्रैवेयक) प २०।६१

उवरिममज्झिम (उपरितनमध्यम) प २८।९४

उवरिममज्झिमगेवेज्जग (उपरितनमध्यमग्रैवेयक) प १।१३७;४।२८८ से २९०;७।२७

उवरिमहेट्ठिम (उपरितनाधस्तन) प २८।९३

उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जग (उपरितनाधस्तनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२८५ से २८७;७।२६

उवरिल्ल (उपरितन) प २।६४;५।१३१,१३४, १३६,१४०,१४३,१६६,१६६,१८१,१८४, १९३,१९७,२००,२२८,२३४;१६।३४; २२।५१,७०,७१,७४ ज २।११३;४।२५३, २५६,२५६;७।१७३ से १७५ सू १८।१

उवरिल्लय (उपरितन) प २८।१४३

उवल (उपल) प १।२०१ ज ४।२५४

उवलद्ध (उपलब्ध) प १।१०१।६ उ ३।१०१

उवलालिज्जमाण (उपलाल्यमान) ज ३।८२,१८७, २१८

उवलित्त (उपलिप्त) ज ३।१८४;५।५७ उ ३।१३०,
१३१,१३४

उवलेवण (उपलेपन) उ ३।५१,५६,७१,७६

√**उववज्ज** (उप+पद्) उववज्जइ प १७।६५
उववज्जंति प ६।४७ से ५६,६० से ६४,६६
७० से ७२,७८ से ११०,११२,११३ ज २।४६
सू १७।१ उववज्जति प १६।५०;१७।६०,६२,
६४,६५,६६ से १०४ उववज्जिहिइ उ २।१४१;
३।१८;४।२६ उववज्जिहिंति ज २।१३५ से
१३७

उववज्जमाण (उपपद्यमान) प २०।६१

उववज्जावेयव्व (उपपादयितव्य) प ६।६२,६४

उववण्ण (उपपन्न) ज ७।५६,५६,२१२ सू १६।
२२।२१,१६।२४ उ १।२५ से २७,१४०;
२।१२;३।१४,८३,१२०,१६१;४।२४;५।२८,
३०,४०,४१

उववण्णग (उपपन्नक) प ३।३६;१५।४६;३४।१२;
३५।२३

उववण्णपुव्व (उपपन्नपूर्व) ज ७।२१२

उववन्नग (उपपन्नक) प १५।४६;३४।१२

उववाइय (औपपातिक) प ६।७३

उववाएयव्व (उपपादयितव्य) प ६।७३,७४

उववात (उपपात) प २०।६०. चं २।५. सू
१।६।५;१७।१

उववातगति (उपपातगति) प १६।३७

उववातसभा (उपपातसभा) उ ३।१४

उववाय (उपपात) प २।१,२,४,५,७,८,१०,११,
१३,१४,१६, से ३०,४६;६।१ से ४,१० से
२३,२७,४३,५६;६३,६६,८०।२,३।८१,८३,
८६,६२,१००,१०२,१०७,१०८;२०।६१.
ज २।७१;४।१४०।१,१६०;७।५७,६०
उ २।२०,२२;३।१६६

उववायगति (उपपातगति) प १६।१७,२४ से ३८

उववायसभा (उपपातसभा) ज ४।१४० उ ३।८३;
१२०,१६१;४।२४

उववास (उपवास) ज० २।१३५

उववेत (उपेत) प १७।१३३

उववेय (उपेत) प १७।१३४ ज २।१४,१८
उ ५।५

√**उवसंकम** (उप+सं+क्रम्) उवसंकमति
सू १।१७

उवसंकमित्ता (उपसंक्रम्य) ज ७।१०,१३,१६;
सू १।११;१४

उवसंत (उपशान्त) प १४।१६;२०।३६ उ २।१६,
६८;५।७. उ ३।३५

उवसंतकसाय (उपशान्तकषाय) प १।१०२,१०३,
११५,११६

उवसंपज्जमाणगति (उपसंपद्यमानगति)
प १६।३८,४१

उवसंपज्जित्ताणं (उपसंपद्य) प १६।४१,४३.
ज ७।५६,५६. सू १६।२४. उ ३।६;४।२२

उवसग्ग (उपसर्ग) ज २।६४,६७; ३।६२,११५,
११६,१२५

उवसम (उपशम) ज ७।११७,१२२।२.
सू १०।८४।२,८६।२

उवसामय (उपशामक) प २३।१६१,१६२

उवसोभिय (उपशोभित) ज १।१३,२१,२६,२६,
३३,४६;२।७,५७,१२२,१२७,१४७,१५०,
१५८,१६४;३।१७८,१६२;४।१६,६३ ८२;
५।३२,३८;७।१७८

उवसोभमाण (उपशोभमान) ज ३।४६

उवसोभेमाण (उपशोभमान) ज २।८,६;४।२८;
७।२१३

उवसोहिय (उपशोभित) ज ४।११४;५।६७

उवस्सय (उपाश्रय) उ ३।११९,११८,१४१;४।२२

उवहाण (उपधान) ज ४।१३

उवहि (उपधि) प १४।५

उवहित (उपहित) सू ६।४

उवाइणावेत्ता (उपातिक्रम्य) सू १०।१३८

√**उवागच्छ** (उप+आ+गम्) उवागच्छइ
ज १।६;२।६०;३।५,६,१२,१७,१८,४१

उ १।२; ३।२६; ४।११; ५।१६ – उवागच्छंति प ३४।२२,२३. ज २।११६. उ १।४५; ५।१७ —उवागच्छति. ज २।१६५; ३।२८,३२,४१, ४६,२१६ उवागच्छसि. उ ३।७६

उवागच्छित्ता (उपागत्य उपागम्य) प ३४।२२; ज १।६. उ० १।१६; ३।२६; ४।११; ५।१६

उवागय (उपागत) उ १।१२२,१३०; ३।७१,७६, ६६;१०६,१३८;४।१५,१८,१६; ५।२६

उवाय (उपाय) प० ११।७१; ३६।६२ ज ७।१०, १३,१६,१६,२२ से २५,२७,३०,६६,७२,७५, ७८,८१,८४ सू १।१४,१६,१७;२१,२४;२७; २।३; ६।१; १०।१४१,१४६,१४८,१५० उ १।४१,४३

उव्वागय (उपागत) ज २।६५,७१,८८; ३।२२५

√उवे (उप+इ) उवेइ प १३।२२।२. उ ३।१११ उवेंति ज २।१६; ३।१२६ उवेह ज ३।१२५

√उव्वट्ट (उद्+वृत्) उव्वट्टंति प ६।५८,६८ उव्वट्टति प १७।६१,६२,६४,६५,१००,१०२ से १०४ उव्वट्टेइ उ० ३।११४

उव्वट्ट (उद्वर्त) प २०।१।१

उव्वट्टण (उद्वर्तन) प ६।१।१. उ० ३।११४

उव्वट्टणया (उद्वर्तन) प ६।६,७

उव्वट्टणा (उद्वर्तना) प ६।८,६,४५,४६,५६,६६, १००,१०२,१०३,१०७,१०८

उव्वट्टित्ता (उद्वर्त्य) प ६।६६ उ १।१४१

उव्विग्ग (उद्विग्न) प २।२० से २७ ज ३।१११, १२५ उ १।८६; ३।११२; ४।१६

उव्विद्ध (उद्विद्ध) ज २।६५; ३।३१; ५।२८

√उव्विह (उद्+व्यध्) उव्विहइ उ १।६१

उव्वेह (उद्वेध) ज० १।२३,५१; ४।१,३,६,१४, २५,३६,४०,४३,५४,५७,६२,६४,६७,७२, ७८,८०,८४,८६,८८,६०,६५,१०३,११०, १२८,१४६,१५४,१५६,१७२,१७८,१८३, २०३,२१३,२२१,२२६; ७।२०७

उव्वेहलिया (दे०) प १।४८।५०

उसभ (ऋषभ) प २।४६ ज० १।३७,५१; २।१५, ५६,६२,६४ से ६७,७३ से ८६,१०१; ४।६७; ५।२८

उसभकूड (ऋषभकूट) ज० १।५१; ३।१३५; ४।१७४,१७५; ६।१६

उसभणाराय (ऋषभनाराच) प २३।४५,६५

उसभसेण (ऋषभसेन) ज० २।७४

उसह (ऋषभ) ज २।६३,६०; ४।२७

उसहकूड (ऋषभकूट) ज० १।५१,१३५; ४।१७५, १७६

उसहच्छाया (ऋषभछाया) प १६।४७

उसहसंघयण (ऋषभसंहनन) ज ३।३

उसिण (उष्ण) प १।४ से ६; ५।५,७,१२६,१५४, २११,२१४,२१८,२२१,२२६; ६।१ से ११; ११।५६,६०; २८।३२,६६,१०५; ३४।१६; ३५।१ से ३

उसिणजोणिय (उष्णयोनिक) प ६।१२

उसिणोदय (उष्णोदक) प १२३

उसीरपुड (उशीरपुट) ज ४।१०७

उसु (इषु) ज ३।२४,३७,४५,१३१ उ १।२२, १४०

उसुय (इषुक) उ ३।११४

√उस्सक्क (उत्+ष्वष्क्) उस्सक्कति प १७।१५०,१५२

उस्सण्हसण्हिया (उत्श्लक्षणश्लक्षिणका) ज २।६

उस्सप्पिणी (उत्सर्पिणी) प १२।७,८,१०,१२, १६,२०,२७,३२; १८।३,२६,२७,३७,३८,४१, ४३,४५,५६,६४,७७,८३,६०,६५,१०७, १०८. ज २।१,३,६,१३८,१६१,१६४; ७।१०१ सू ६।१; ८।१; ६।२; १७।१; २०।५

उस्सास (उच्छ्वास) प १।१।४; १७।१।१ उ ५।४३

उस्सासणाम (उच्छ्वासनामन्) प २३।३८,५५, ११५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सासद्धा (उच्छ्वास'अद्धा') ज २।४

उस्सासविस (उच्छ्वासविष) प १।७०

उस्सिय (उच्छ्रित) ज ३।१८४. सू १८।३

उस्सीसग (उच्छीर्षक) ज ५।६७

उस्सुक्क (उच्छुल्क) ज ३।१२,१३,२८,४१,४६,
५८,६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

उस्सेह (उत्सेध) ज १।४०;३।१२,८८,१६७।११;
४।१०३,१७८;५।५७,५८ चं १० उ १।३;
३।१२

उस्सेहंगुल (उत्सेधाङ्गुल) ज २।६

ऊ

ऊण (ऊन) प २।२६,२७।४;२।६४।७;४।३,६,९,
१२,१५,१८,२१,२४,२७,३०,३३,३६,३९,
४२,४३,४५,४६,४८,४९,५१,५२,५४,५८,६४,
६७,७१,७४,७८,८१,८७,९०,९४,९७,१००,
१०३,१०६,१०९,११२,११५,११८,१२१,
१२४,१२७,१३०,१३३,१३९,१४२,१४५,
१४८,१५१,१५४,१५७,१६०,१६४,१६७,
१७०,१७३,१७६,१७९,१८२,१८५,१८८,
१९१,१९४,१९७,२००,२०३,२०६,२०९,
२१२,२१५,२१८,२२१,२२४,२२७,२३०,
२३३,२३६,२३९,२४२,२४५,२४८,२५१,
२५४,२५७,२६०,२६३,२६६,२६९,२७२,
२७५,२७८;२८१,२८४,२८७,२९०,२९३,
२९६,२९९;१२।१०;१५।५७;१८।९,१०,१२,
५९,६४,७७,८१,८३,८४,८९ से ९१,९५,
९६,१०८;२१।७४;२३।७६,१५६
ज १।१७।१;२।८८;४।५५,९२;७।२७,२९,
३० सू १।१४,१६,२१,२३,२४;६।१;१५।१८,
१९,२९,३४

ऊणक (ऊनक) सू १३।२

ऊणग (ऊनक) प २३।६६,८१,८३ से ८६,८९,
९५ से ९९,१०१ से १०३,१११ से ११४,
१५२ ज ३।२२५;१५।२७

ऊणय (ऊनक) प २३।६१,६४,६८,७३,७५,७७,
८८,९०,९२,१०४,११७,११८,१३४,१३५,
१३८,१४०,१४२,१४३,१५१,१५३,१५५,
१५७,१६०,१६१,१६४,१६६ से १६८,१७१
से १७३ ज २।६,१२६,१२४

ऊताल (एकोनचत्वारिंशत्) सू १९।४

ऊतालीस (एकोन चत्वारिंशत्) सू २।३

ऊरु (ऊरु) उ १।१३८;३।११४

ऊस (ऊष) प १।२०।१

ऊसय (उत्सव) उ १।७१,७२

ऊसविय (उच्छ्रित) ज ५।२१ सू १८।८

√ऊसस (उत्+श्वस्) ऊससंति प ७।१ से ३;
१७।२;२८।२१,३३,६७

ऊसास (उच्छ्वास) प १।४८।५३ ज० २।४।१

ऊसिय (उच्छ्रित) प २।४८;१५।५२ ज १।४२;
२।१५,१६,५२,१६१;३।७,३५,१०९,१७८;
४।६,१४,३१,४१,४९,६८,७६,९३,२२१;
५।४३;७।१६९,१७६,१७८ सू १८।८.
उ० ३।७

ए

एकादसम (एकादश) सू १०।१२४।२

एकावलि (एकावलि) ज ३।२११

एकासीइ (एकाशीति) ज ४।११०

एकूणवीसतिम (एकोनविंशतितम) सू० १२।१६

एक्क (एक) प १।४८।५४ ज १।३२ सू १०।१५७

एक्कग (एक) ज ७।१३१।१

एक्कड (इक्कट) प १।४१।१ एक तरह का
सरकंडा जिसकी चटाई बनाई जाती है।

एक्कतीस (एकत्रिंशत्) प ४।२९१ ज ४।११९
सू २।३

एक्कतीसधा (एकत्रिंशद्धा) सू १३।१४,१६,१७

एक्कमेक्क (एकैक) ज ५।१

एक्कवीस (एकविंशति) प ७।१९. ज २।६
सू २।३. उ ५।१०

एक्कवीस (एकविंशतितम) प १०।१४।४

एक्कहत्तर (एकसप्तति) ज १।४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्काणउति (एकनवति) सू ११९
एक्कार (एकादश) व १०।१४।३
एक्कार (एकादशन्) सू १८।६
एक्कारस (एकादशन्) प १।१०।१८ ज १।४८. सू १२।६. उ १।६६
एक्कारस (एकादश) प १०।१४।२
एक्कारसग (एकादश) ज ७।१३३।२
एक्कारसम (एकादश) प १०।१४।१ ज ७।६७ सू १०।७७;१३।१० उ १।१४,१७,२१,१४०; ३।१२६
एक्कारसविह (एकादशविध) प १६।३,२०
एक्कारसी (एकादशी) ज ७।१४५
एक्कावण्ण (एकपञ्चाशत्) प ७।१६ सू १।२७
एक्कासी (एकाशीति) सू १९।८
एक्कासीइ (एकाशीति) ज ४।१४३
एक्कासीत (एकाशीति) सू १९।५
एक्कासीतिविह (एकाशीतिविध) प० १७।१३९
एक्किक्किक्कय (एकैकक) सू १९।२२।८
एक्कूणवीसइम (एकोनविंशतितम) प १।४८।६२
एक्केक्क (एकैक) प १।४८।५८ ज ७।१७८।१,२. सू ८।१;१९।२२।४ से ९
एग (एक) प १।२० ज १।७. सू १।१४ उ १।१७
एगइय (एकक) प १।७५;१५।४५,४७ से ४९; १७।१३;२०।१,४,१७,१८,२२,२५,२८,२९, ३४,३८,३९,४९,५०,५३,५८;२२।५९;२३।९; ३४।७ से ९,११,१२,१५,१६ ज १।२२,५०, २।५८,८३,१२३,१२८,१४८,१५१,१५७; ३।१०,११,८६,८७,१४४;४।१०१,१८४; ५।२७,५७;६।४ उ १।९७;३।११४,१३०, १३१,१३४,१५१;५।१७,२९
एगओवत्त (एकतोवृत्त) प १।४९
एगंत (एकान्त) ज ३।९८;५।५,२६. सू २०।७. उ १।५४ से ५७,५९,६३,७९ से ८२,८४
एगखुर (एकखुर) प १।६२,६३
एगगुण (एकगुण) प ३।१८२;५।१४९,१५०; ११।५४,५६,५८,६०;२८।७,१०,५३,५६
एगग्ग (एकाग्र) ज ५।२५
एगजडि (एकजटिन्) सू २०।८
एगजीव (एकजीव) प १।४७।१
एकजीविय (एकजीविका) प १।४७।१
एगट्ठ (एकार्थ) सू १९।२,४,६
एगट्ठिभाग (एकषष्टिभाग) सू १।१४,१६,२०, २१,२३
एगट्ठिय (एकास्थिक) प १।३४,३५
एगट्ठिहा (एकषष्टिधा) सू २।३
एगणासा (एकनासा) ज ५।१०।१
एगतओ (एकततस्) उ १।१२५
एगतारा (एकतारा) सू १०।६२
एगतिय (एकक) प ६।११० सू ९।१
एगतीस (एकत्रिंशत्) ज ४।६२ सू १३।११
एगतोनिसहसंठिय (एकतोनिषधसंस्थित) सू ४।३
एगत्त (एकत्व) प ११।८३,८५;२२।२५,२८; २३।८,१२;२४।६;२५।४;२७।२;२८।१२४; १३०,१३१,१३६,१४३,१४५
एगदिसि (एकदिश्) ज ७।४८
एगपएसिय (एकप्रदेशिक) प ११।४९
एगमेग (एकैक) प १०।५;१५।८३,८४,८९,९४ से ९७,१००,१०३ से १०६,१०९,११४,११५, ११७,१३५,१४१;३६।८ से ११,१८ से २२, ३०,३१,४४,४६ ज २।४;४।९४,११५,२६२; ६।१४,१६,२१,२२;७।१३,१६,१९ से २५, ६९,७२,७५,७८ से ८२,८४,९५,९६,९८ से १००,११४ से ११६,११९,१७० सू १।१८, २०,२१,२३,२४,२७;२।३;६।१;१०।८४,८५, ८७,९०,९१,१२४;१५।२ से ४,२९ से ३४; १८।४,२१
एगयओ (एकततस्) ज ३।१११
एगराइय (एकरात्रिक) प २।७०
एगलक्खण (एकलक्षण) सू १९।२,४,६
एगवउ (एकवचस्) प ११।२१

एगवयण (एकवचन) प ११।८६,८७
एगविह (एकविध) प २।३,६,६,१२,१५,२२।८३,८४,८६;२४।१० से १२;२६।२,४,६,८ से १०
एगवीस (एकविंशति) प ४।२,६१ सू २।३
एगसट्ठि (एकषष्टि) ज ७।७
एगसट्ठिभाग (एकषष्टिभाग) ज ७।२७,२६,३०,६६,७२,७५
एगसट्ठिभाय (एकषष्टिभाग) ज ७।६५,६६,७१,७२,७५,७७
एगसट्ठिहा (एकषष्टिधा) ज० ७।२१,२२,२४,२५
एगसत्तर (एकसप्तति) ज ४।१६६ सू १२।१२
एगसमइय (एकसामायिक) प ३६।६०,६७,६८,७१,७५
एगसमइयट्ठितीय (एकसमयस्थितिक) प ५।१४६,१४७;११।४१
एगसमयठितीय (एकसमयस्थितिक) प ३।३८१
एगसाडिय (एकशाटिक) ज ३।६;५।२१
एगसिद्ध (एगसिद्ध) प १।१२
एगसेल (एकशैल) ज ४।१६६,१६७
एगसेलकूड (एकशैलकूट) ज ४।१६८
एगागार (एकाकार) प १।६०,७२,७३,८०,८१,८४;१३।२०;२१।७२;२३।५१ से ५३,५५,५६,ज ४।२५६
एगारस (एकादशन्) ज ३।१
एगावण्ण (एकपञ्चाशत्) ज ७।२०
एगावलि (एकावलि) ज ७।१३३
एगावलिसंठिय (एकावलिसंस्थित) सू १०।५०
एगासीति (एकाशीति) ज ३।३२
एगाहच्च (एगाहत्य) उ १।२२,२५,२६,१४०
एगाहिय (एकाहिक) ज २।६,४३;७।२५ सू २।३
एगिंदिय (एकेन्द्रिय)प १।१४,४८;३।४० से ४२,४४,४६,१४१ से १४३,१८३;६।७१,८३,८६,६२,१००,१०२,१०७,११२; १०।३६;११।३६,४१,८०,८४;१३।१६;१५।१०३;१६।२७;१७।३६,५६,६०,६२,८७;१८।१४,२०;२०।३५;२१।२ से ५,२२ से २५,३६,४०'४६,५०;५७,६४,७५;७६,७६,८०,८५,६४;२२।२५,८२;२३।४०,८५,१३४,१३५,१३७ से १४०,१४२,१४३,१५०,१५६,१५६;२४।१३;२६।४,५,६;२८।१२;२८।६८,६६,१०२,१०६,११२,११५,११६,१२३,१२६,१२७,१२६,१३२,१३३,१३७ से १४१,१४३;३४।५,१४;३५।७;३६।५६,६६ ज ३।१६७।५,१७८
एगिंदियरयण (एकेन्द्रियरत्न) ज ३।१७८,२२०;७।२०५,२०६
एगूणणउइ (एकोननवति) ज ७।१४
एगूणणउति (एकोनवति) ज २।८८ सू १।२७
एगूणतालीस (एकोनचत्वारिंशत्) सू २।३
एगूणतीस (एकोनत्रिंशत्) प ४।२८५ सू २।३
एगूणपण्ण (एकोनपञ्चाशत्) ज २।४६ सू २।३
एगूणवण्ण (एकोनपञ्चाशत्) प ४।६८
एगूणवीस (एकोनविंशति) प ४।२५७ ज ७।४ सू १।१०
एगूणवीसइ (एकोनविंशति) ज १।१८
एगूणवीसइभाग (एकोनविंशतिभाग) ज १।२३;४।८१,६०,६८,१६६
एगूणवीसइभाय (एकोनविंशतिभाग) ज १।१८,२०,४८;४।६८,२००,२०१
एगूणवीसति (एकोनविंशति) ज २।८८
एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) सू १२।६
एगूणासीइ (एकोनाशीति) ज २।५६
एगेंदिय (एकेन्द्रिय) प १।१५;३।४६
एगोरुय (एकोरुक) प १।८६
एज्जमाण (एजमान) ज ३।१०७
एज्जमाण (आयत्) उ १।२२,८६,१४०
एज्जेमाण (आयत्) ज ४।३५,४२,७१,७७,६४
√एड (एड्) एडेइ ज ३।६८ एडेंति ज ५।५
एडेत्ता (एलित्वा, एडित्वा) ज ५।५
एणी (एणी) ज ३।१०६
एत (एतद्) प १।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतारूव (एतद्रूप) प १७।१२३ से १२५,१२७, १२८,१३० से १३२,१३४,१३५

एताव (एतावत्) ज २।४

एतावंत (एतावत्) सू १३।१०,१३ से १६

एत्तो (इतस्) प १७।१३५ उ ३।१०१

एत्थ (अत्र) प १।७४ ज १।३ चं ७ सू १।२ उ ३।४५

एमेव (एवमेव) प १।१०१३

एय (एतद्) प १।२६ ज ३।१०७ चं २।५ सू १।६ उ १।१७

एयारूव (एतद्रूप) प १७।१२६ ज १।११; २।१७,१८; ३।२६,२७,३६,४०,४७,४८,५६, ५७,६४,६५,७२,७३,११२,१२२,१२३,१३३, १३४,१३८,१३९,१४५,१४६,१८८,१९५, १९७; ४।७,१५,२६,१०७,१४६;५।१३,२२ उ १।१५,१७,३४,४०,४३,५१,५४,६३,६५, ७४,७६,७९,९९,१०५; ३।२९,४८,५०,५५, ९८,१०६,११८,१२६,१३१; ५।२३,३१,३६, ३७

एरंड (एरण्ड) प १।४२।२; १।४८।४९

एरंडबीय (एरण्डबीज) प ११।७८

एरण्णवय (ऐरण्यवत) प १७।१६३ ज २।६

एरवत (ऐरवत) प १।८८

एरवय (ऐरवत) प १६।३०;१७।१६० ज ४।१०२; ५।५५; ६।६,१३,१९,२० सू १।१८,१९

एरवयकूड (ऐरवतकूट) ज ४।२७५

एरावण (ऐरावण) ज ४।१४२।३,२०७,२६२; ५।१८

एरावणवाहण (ऐरावणवाहन) प २।५०

एरावतिय (ऐरावतिक) सू १।१९

एरावय (ऐरावत) ज ४।२७४,२८७

एरावयग (ऐरावतक) ज ४।२५२

एरिसय (ईदृशक) प २३।१९५,१९९,२०० सू २०।७ उ १।१४०

एरिसिय (ईदृशक) प २३।२०१

एलग (एलक) प १।६४ ज २।३४,३५

एलय (एलक) प ११।१६ से २०

एलवालु (दे०) प १।४८।४८

एलवालुंकी (दे०) प १।४०।१

एलापुड (एलापुट) ज ४।१०७

एलावच्चा (एलापत्या) ज ७।१२० सू १०।८८।१

एव (एव) ज १।१६ सू १९।११ उ १।२

एवइ (एतावत्) प ३६।६०

एवइय (एतावत्) प ३६।५९,६६,७४

एवं (एवं) प १।६० ज १।६ चं २।५ सू १।५ उ १।४

एवंकरणया (एवंकरण) ज ३।१२६

एवंभाग (एवंभाग) सू १।९;१०।४

एवंभूय (एवंभूत) प १६।४६

एवति (इयत्, एतावत्) प ३६।६७,७१,७५

एवतिय (एतावत्, इयत्) प ३६।६६,६८,७०,७३ सू २।२;१९।२२।२,३

एवमेव (एवमेव) प ३४।१९

एवामेव (एवमेव) प २८।१०५ ज १।२६ सू ३।१; १०।१२७ उ १।६३

एसणासमिय (एषणासमित) ज २।६८ उ ३।९९

एसणिज्ज (एषणीय) उ ३।३६,३८

ओ

ओअवण (दे० साधन, स्वायत्तीकरण) ज ४।२७७

ओइण्ण (अवतीर्ण) उ १।९०,९१

ओगाढ (अवगाढ) प ३।१८०,१८२;५।१३९ से १४५;१०।१८ से ३०;११।५०,६२ से ६४, ६६।१;१५।१।१;१५।१२,२५;१७।१४१; २८।५,१२,१३,२०,३२,५१,५८,५९,६६ ज ७।४१,४२,५०,५८

√ओगाह (अव+गाह्) ओगाहइ ज ३।२२,२६ चं ३।२ सू १।७।२ उ ३।५१ ओगाहई प ११।०१।६ ओगाहेइ ज ३।४४

ओगाहणट्ठया (अवगाहनार्थ) प ५।५,७,१०,१२, १४,१६,१८,२०,२४,२५,२८,३०,३२,३४, ३७,४१,४५,४९,५३,५६,५९,६३,६८,७१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४,७८,८३,८४,८६,८६,६३,६७,१०१,१०२, १०४,१०५,१०७,१११,११५,११६,११७, ११६,१२६,१३१,१३२,१३४,१३६,१३८, १४०,१४३,१४५,१४७,१५०,१५४,१६०, १६३,१६६,१६६,१७२,१७४,१७७,१७६, १८१,१८४,१८७,१६०,१६३,१६७,२००, २०३,२०७,२११,२१४,२१८,२२१,२२४, २२८,२३०,२३२,२३४,२३७,२३६,२४३; १५।१३,२६,३१

ओगाहणसंठाण (अवगाहनासंस्थान) प १।१।६

ओगाहणा (अवगाहना) प १।७४,८४; २।६४।४, ६ से ६; ५।६६,१३२,१६५; ११।७२; १५।१३,२६,३०,३१,५८।२,६५; २१।१।१, २१।३८,४० से ४२,४८,६३ से ६६,६८ से ७१,७४,८८ से ६४,१०५ उ ३।८३,१२०, १६१; ४।२४

ओगाहणाणामणिहत्ताउय (अवगाहनानामनिधत्ता-युष्क) प ६।११८

ओगाहणाणामनिहत्ताउय (अवगाहनानामनिधत्ता-युष्क) प ६।११२

ओगाहणानामनिहत्ताउय (अवगाहनानामनिधत्ता-युष्क) प ६।११६

ओगाहिऊण (अवगाह्य) ज ४।२४०

ओगाहित्ता (अवगाह्य) प २।२१,२२,२४ से २७, ३० से ३२,४१ से ४३; १५।४३,४५,५२ ज १।४६; ४।२२१; सू १।२२ उ ३।५१

ओगाहेत्ता (अवगाह्य) प २।२३,३३,३५,३६

ओगिण्हित्ता (अवगृह्य) उ १।२; ३।२६; ५।२६

ओगुंडिय (अवगुण्डित) ज २।१३३

ओग्गह (अवग्रह) उ १।२; ३।२६,६६,१३२; ५।२६

ओघ (ओघ) ज ५।२२ से २४

ओघमेघ (ओघमेघ) ज २।१४१,१४२,१४५; ३।११५,११६,१२२,१२४

ओघसण्णा (ओघसंज्ञा) प ८।१,२,३

ओघस्सर (ओघस्वर) ज ५।५०,५२

ओचूलग (अवचूलक) ज ३।१२५,१२६,१७८; ७।१७८

ओच्छण्ण (अवच्छन्न) ज २।१२,१३; ३।१२१

ओट्ठ (ओष्ठ) प २।३१,३२ ज २।४३; ७।१७८ उ ३।११४

ओट्ठावलंबिणी (ओष्ठावलम्बिनी) प १७।१३४

ओणय (अवनत) ज २।६०

ओत्थय (अवस्तृत) ज ३।६,१८,६३,१८०,२२२

ओभंजलिया (दे०) प १।५१

ओभास (अव+भास्) ओभासइ ज ४।२१० चं २।१ सू १।६।१ ओभासंति सू० ३।१ ओभासति सू ३।२ ओभासेंति ज ७।४६,५८

ओभास (अवभास) ज १।२३; २।१२; ४।२०१, २१४,२४०,२६४,२७० सू २०।८,२०।८।६

ओम (अवम) सू ६।३

ओमंथिय (दे० अवमस्तिक) उ १।१५,३५; ३।६८

ओमज्जायण (अवमज्जायन) ज ७।१३२।१; सू १०।१०६

ओमत्त (अवमत्व) प १५।४४,४५

ओमरत्त (अवमरात्र) सू १२।१६,१७।१

ओमुइत्ता (अवमुच्य) ज २।६५ उ ३।११३

√**ओमुय** (अव+मुच्) ओमुयइ ज २।६५,२२४; ५।२१ उ ३।११३; ४।२०

ओमोय (दे०) ज ३।६

ओम्मिमालिणी (ऊर्मिमालिनी) ज ४।२११

ओय (ओजस्) चं २।२ सू १।६।२; ६।१; ६।३

ओयंसि (ओजस्विन्) ज ३।७७,१०६

√**ओयर** (अव+तॄ) ओयरइ उ १।६७

√**ओयव** (दे०) ओयवेइ ज ३।१७५ ओयवेहि ज ३।७६,१२८,१५१,१७०

ओयवण (दे०, साधन, स्वायत्तीकरण) ज ३।१२६; ४।१७७

ओयवित्ता (दे० अधीनीकृत्य) ज ३।७१

ओयविय (दे० परिकर्मित) प २।३१ ज ४।१३ सू २०।७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओयवेऊण (दे० स्वायत्तीकर्तुं) ज ३।८१
ओयवेत्ता (दे० अधीनीकृत्य) ज ३।७६
ओयसंठिति (ओजःसंस्थिति) सू १।६; ६।१; ६।२
ओयाय (उपयात) उ १।१४,१५,२१,१३६,१३७
ओयाहार (ओजआहार) प २८।१०४,१०५
ओराल (दे०, उदार) प ३४।१६,२१,२२ ज १।५; २।६४;३।१८५;४।१०७ सू २०।७ उ १।४०, ४१,४३,४४; २।११
ओरालिय (औदारिक) प १२।१,३ से ५,८,९, ११ से १३,१५ से १७,२१,२३,२७ से २९, ३२,३३,३५,३६;२१।१,३९,८०,८२,१०२, १०४,१०५;२३।४१ से ४४,८९,९२;३६।९२
ओरालियामीसगसरीर (औदारिकमिश्रकशरीर) प १६।१५;३६।८७
ओरालियमीससरीर (औदारिकमिश्रशरीर) प १६।१,४ से ७
ओरालियमीसासरीर (औदारिकमिश्रकशरीर) क १६।१२ से १५; ३६।८७
ओरालियसरीर (औदारिकशरीर) प १२।२३,२७, ३२;१६।१,४ से ७,१२ से १५;२१।२ से ५, १९ से २५,२८ से ३२,३६,३८,४० से ४२, ४८,७६,७७,९५,९८ से १००,१०४,१०५; २२।३७,४४,४५;२८।१०४,१४१;३६।८७
ओरालियसरीरग (औदारिकशरीरक) प १२।२०
ओरालियसरीरय (औदारिकशरीरक) प १२।७
ओरालियसरीरि (औदारिकशरीरिन्) प २८।२,१४१
ओरोह (अवरोध) ज ५।२२,२९
ओलंग (अवलम्ब) ज ७।१७८
ओलुग्ग (अवरुग्ण) उ १।३५
ओवइय (दे०) प १।५०
ओवक्कमिया (औपक्रमिकी] प ३५।१।१;३५।१२, १३
ओवमिय (औपमिक) ज २।४,५
ओवम्म (औपम्य) प २।६४।१८
ओवम्मसच्च (औपम्यसत्य) प ११।३३।१, ११।३३
√ओवय (अव+पत्) ओवयंति ज ५।५७
ओवयमाण (अवपतत्) ज ५।४४
ओववाइय (औपपातिक) ज २।८३; ५।५७
ओवाय (अवपात) ज २।३८
ओवासंतर (अवकाशान्तर) प १५।५१
ओविय (दे०) ज ३।९,२४; ५।२१,२८
√ओसक्क (अव+ष्वष्क्) ओसक्कति प १७।१५२,१५५
ओसक्कइत्ता (अवष्वष्क्य) सू १०।१४८
ओसण्ण (अवसन्न) प ८।४,६,८,१०; २८।२०, २६,३२,६६ ज २।१३३,१३५ से १३७ उ ३।१२०
ओसण्णविहारि (अवसन्नविहारिन्) उ ३।१२०
ओसत्त (अवसक्त) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,८८
ओसधि (ओषधि) प १।३३।१,१।४५ ज २।१३१, १४४ से १४६; ३।१३३,२०९,२११; ५।५५, ५६
ओसप्पिणी (अवसर्पिणी) प १२।७,८,१०,१२,१६, २०,२७,३२; १८।३,२६,२७,३७,३८,४१,४३, ४५,५९,६४,७७,८३,९०,९५,१०७,१०८ ज २।१,२,६,७,५२,५६,१३५।१ सू ८।१; ९।२; १७।१; २०।५
ओसरित्ता (अपसृत्य) ज ५।५८
ओसह (ओषध) उ ३।१०१
ओसही (ओषधी) ज ४।२००।१ नगरी का नाम
ओसा (दे०) प १।२३
ओसारिय (उत्सारित) उ १।१३८
ओसोवणी (अवस्वापिनी) ज ५।४६,६७
ओहय (उपहत,अवहत) ज ३।१०५,१०९,२२१ उ १।१५,३५,४१ से ४४,७१; ३।९८
ओहस्सर (ओघस्वर) ज २।१६; ५।५१
ओहडिय (अवघटित) ज १।२४

ओहारिणी (अवधारिणी) प ११।१ से ३
ओहि (अवधि)प १।१।७;१७।१०६ से १०८, ११०;३३।१।१;३३।१ से १३,१५ से १९, २६,२७,३५ ज २।९०,९३;३।१२,५६,८८, ११३,१४५;५।३;७।२१,५८ उ ३।७,९१
ओहिणाण (अवधिज्ञान) प ५।५,७;२४,४१,४९, ९७,११५;१७।११२,११३;२०।१७,१८,३४; २८।१३६;२९।२,६,१७,१९;३०।२,६
ओहिणाणारिय (अवधिज्ञानार्य) प १।९९
ओहिणाणि (अवधिज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३; ५।४३,९६ से ९९,११४ से ११७;१३।१४; १८।८०;२८।१३६;३०।१६ ज २।७९
ओहिदंसण (अवधिदर्शन) प ५।५,७,४५,९७; २९।३,७,१७,१९;३०।३,७
ओहिदंसणावरण (अवधिदर्शनावरण) प २३।१४
ओहिदंसणि (अवधिदर्शनिन्) प ३।१०४;५।४७, ९९,११७;१८।८७;३०।१६
ओहिनाणपरिणाम (अवधिज्ञानपरिणाम) प १३।९
ओहिनिगर (अवधिनिकर) ज ३।१२,८८
ओहिय (औधिक) प २।३४,३७,४२,४३,५०; ४।५५,६८,७५,९१;६।७३,७४;११।८२,८३; १२।२६,२८,२९,३२ से ३४,३६;१५।१८, १९,३०;१७।२८ से ३०,३२,३३,३५,५८, ६०,६२,६३;२१।३१,३९,४२,४४ से ४७, ६१,७०;२२।२४;२३।१७९,१८१,१८५,१९०; २९।१५

क

क (किम्) प १।१ ज १।४५ सू १।६ उ १।४
कइ (कति) प १५।५३;१८।१४१,२२।४०,४१, ६०;२५।४ ज १।३४;४।२१४ चं २।१,३ सू १।६।१,३ उ १।६;२।१;४।१
कइविह (कतिविध) प १६।१;२१।७,१३;३०।२ ज २।५;७।१०४,१०५,१११ से ११३
कइरसार (करीरसार) प १७।१२५
कओ (कुतस्) प ६।८२,९३;११।३०।१ ज ७।३१
कंक (कङ्क) प १।७९ ज २।१३७
कंकग्गहणी (कङ्कग्रहणी) ज २।१६
कंकडग (कंकटक) ज ३।३५,१७८
कंकण (कङ्कण) उ ३।११४
कंकावंस (दे०) प १।४१।२
कंगु (कङ्गु) प १।४५।२ ज २।३७;३।११९
कंगुया (कंगू) प १।४०।२
कंचण (काञ्चन) ज १।३७;२।१५,७०;३।१२, २४,३५,८८,१०९,११७;५।५८;७।१७८
कंचणकूट (काञ्चनकूट) ज ४।२०४।१
कंचणकोसी (काञ्चनकोशी) ज ३।१७८
कंचणग (काञ्चनक) ज ४।१४२।१
कंचणगपव्वय (काञ्चनकपर्वत) ज ४।१४२; ६।१०
कंचणपुर (काञ्चनपुर) प १।९३।१
कंटक (कण्टक) ज ४।२७७
कंटकबहुल (कण्टकबहुल) ज १।१८
कंटग (कण्टक) ज २।३९
कंटय (कण्टक) ज ३।२२१
कंठ (कण्ठ) ज ५।५६;७।१७८
कंठाणुवादिणी (कण्ठानुवादिनी) सू ९।४
कंड (काण्ड) प २।४१ से ४३,४६
कंडावेलु (कण्डावेणु) प १।४१।२
कंडुइय (कण्डूयित) ज १।१३३
कंडुक्क (कंडुक) प १।४८।५०,६२ भिलावा, तमाल
कंडुरिया (कंडुर) प १।४८।२ एक तरह का सरकंडा
कंत (कान्त) प २।४१;२८।१०५ ज २।१५,६४, ६५;३।९२,११९,१८५,२०९;५।२८,५८ सू २०।४ उ १।४१,४४;३।११२,१२८;५।२२
कंततर (कान्ततर) ज २।१८;४।१०७
कंततरिय (कान्ततरक) प १७।१२६,१२७,१३३ से १३५ ज २।१७
कंतत्त (कान्तत्व) प ३४।२०
कंतयरिय (कान्ततरक) प १७।१२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंतस्सरता (कान्तस्वरता) प २३।१६
कंति (कान्ति) ज २।६५;३।१८६,२०४
कंद (कन्द) प १।३५,३६,४८।७,११,२१,३१,३५,
६१,१।१०१,१२८ ज ४।७ उ ३।५०,५१,५३
कंदप्प (कन्दर्प) प २।४१
कंदप्पिय (कान्दर्पिक) प २०।६१ ज ३।१७८
कंदमाण (क्रन्दत्) उ १।६२;३।१३०
कंदमूल (कन्दमूल) प १।४८।८,६१
कंदर (कन्दर) ज २।६५;३।३५
कंदल (कन्दल) ज ३।३५
कंदलग (कन्दलक) प १।६३
कंदलि (कन्दली) प १।३७।२,१।४३।१
कंदली (कंद) (कन्दलीकन्द) प १।४८।४३
कंदलीथंभ (कन्दलीस्तम्भ) प ११।७५
कंदाहार (कन्दाहार) उ ३।५०
कंदित (क्रन्दित) प २।४१
कंदिय (क्रन्दित) प २।४७।१
कंदु (कन्दु) उ ३।५०
कंदुयक (कंदुक) ब १।४८।५०
कंपण (कम्पन) ज ३।३५
कंपिल्ल (काम्पिल्य) प १।६३।२
कंबल (कम्बल) प १५।१।२,१५।५१
कंबु (कम्बु) प १।४८।३
कंस (कांस्य) प ११।२५ ज २।२४,६६ सू २०।८
कंसणाभ (कंसनाभ) सू २०।८;२०।८।३
कंसताल (कांस्यताल) ज ३।२१
कंसवण्णाभ (कांस्यवर्णाभ) सू २०।८
कंसोय (कंसीय) प ११।२५
ककुह (ककुद) ज ७।१७८
कक्कस (कर्कश) उ ३।६८
कक्केयण (कर्केतन) ज ३।३५,१०६
कक्कोडइ (कर्कोटकी) प १।४०।२
कक्ख (कक्ष) ज० २।१५ उ० ३।६८
कक्खंतर (कक्षान्तर) उ ४।२१
कक्खड (कर्कश) प १।४ से ६;२।२० से २७;
३।१८२;५।५,७,२०६ से २०८;१३।२६;
१५।१४,१६,२७,२८,३२,३३;२३।५०;२८।६,
१०,२०,३२,५५,५६,६६
कच्चायण (कात्यायन) ज ७।१३२।४
सू १०।११७
कच्छ (कक्ष) ज ४।२४८
कच्छ (कच्छ) ज ३।८१;४।१६२।१,१६७,१७२।१,
१७७,१७८,१८१,१८४,१८७,१६०,२००;
७।१७८
कच्छकूड (कच्छकूट) ज ४।१६३,१६४,१८०
कच्छगावइ (कच्छकावती) ज ४।१८५ से १८६
कच्छगावइकूड (कच्छकावतीकूट) ज ४।१८७
कच्छगावती (कच्छकावती) ज ४।१८७
कच्छभ (कच्छप) प १।५५,५७ ज २।१३४;
४।३,२५ सू २०।२
कच्छभी (कच्छभी) ज ३।३१
कच्छविजय (कच्छविजय) ज ४।१६३,१६६,१६६
कच्छा (कक्षा) वराही नामक पौधा, झींगुर
प १।४६;१।४८।६२
कच्छु (कच्छू) ज २।१३३
कच्छुल (कच्छुरा) प १।३८।२
कच्छुरी (कच्छुरा) प १।३७।१
कज्ज (कृ) कज्जइ प २२।१०,१५,१६,१८,४८,
५०,५२,६७ से ६६,७२,८२,६१ से ६३,६८,
६६ ज ७।५२,५३ कज्जंति प १७।११,२२,
२३,२५;२२।५१,७१,७३,७४ कज्जति
प १७।२५;२२।६,११ से १४,१७,१६,४८ से
५०,५२ से ५६,६१ से ६५,६७ से ६६,७१
से ७४,७६ से ७६,८१,६१,६४,६७ से ६६
कज्ज (कार्य) सू १०।१२० उ ३।११,५१,५६
कज्जल (कज्जल) प १७।१२३
कज्जलप्पभा (कज्जलप्रभा) ज ४।१५५।२,
२२३।१
कज्जोवय (कार्योपग) ज ७।१८६।२ सू २०।८;
२०।८।२
कट्टु (कृत्वा) प ११।७० ज २।६४ सू १।२०,
२१ उ १।१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कट्ठ (काष्ठ) प १।४८।३० से ३७ ज २।६५, ६६,६८,१३१;३।६८;५।५,१४ से १६ उ ३।५०,५१
कट्ठपाउयार (काष्ठपादुकाकार) प १।६७
कट्ठमुद्दा (काष्ठमुद्रा) उ ३।५५,५६,६३,६४,६७, ६८,७०,७१,७३,७४,७६
कट्ठसेज्जा (काष्ठशय्या) उ ५।४३
कट्ठा (काष्ठा) सू १।६।३;१।६।१ से ३
कट्ठाहार (काष्ठाहार) प १।५०
कड (कृत) प २०।३६;२३।१३ से २३ ज १।१३, ३०,३३,३६;२।७१;४।२ सू १२।२ से ६,१० से १२ उ १।२७,१४०
कडक्ख (कटाक्ष) ज ७।१७८
कडग (कटक) प २।३० ज ३।६,६,१७,२६,२६, ४७,५६,६४,७२,६७,१०६,१३३,१३५,१३८, १४५,१५०,१६१,२११,२२२;५।२१,५८ उ ५।५
कडय (कटक) प २।३१,४१,४६ ज १।६;३।६५, १५६;४।६
कडाह (कटाह) प १।४८।४६ कटाहवृक्ष
कडि (कटि) ज ३।१७८;७।१७८ उ ३।११४
कडिसुत्त (कटिसूत्र) ज ३।६,२२२
कडुगतुंबी (कटुकतुम्बी) प १७।१३०
कडुगतुंबीफल (कटुकतुम्बीफल) प १७।१३०
कडुच्छुग (दे०) ज १।४०;४।१३६,२४२
कडुच्छुय (दे०) ज ३।११,१२,८८;४।२१६; ५।५५,५७,५८ उ ३।५०,५५
कडुय (कटुक) प १।४ से ६;५।५,७,२०५; २८।२०,३२,६६, ज २।१४५;७।११२।२ सू १०।१२६।२
कढिण (कठिन) उ ३।५०
कण (कण) सू २०।८
कणइर (करवीर) प १।३८।१ ज २।१० कर्णिकार का पेड
कणकण (कणकण) ज ५।२४
कणकणय (कणकणक) सू २०।८
कणग (दे०) ज ३।३५ बाण
कणग (कनक) प १।५१; २।४०।८,६;२।४८ ज १।५,१६,३८; २।१५,६४,६८,६६; ३।६, २४,३५,५६,८१,१४५,१७८,२११,२२२; ४।१०,११५; ४।२१०।१,२१७; ५।५८; ७।१७८
कणगमय (कनकमय) ज ३।१६७।१२
कणगरयणदंड (कनकरत्नदण्ड) ज ३।१०६
कणगसणाम (कनकसनामन्) ज ७।१८६।१ सू २०।८।१
कणगामई (कनकावती) ज ४।७,१५,२४५
कणगामय (कनकमय) ज १।४६;३।१०६,१६७; ४।१,११०,१५६
कणगावलि (कनकावलि) ज ३।२११
कणय (कनक) प १।४१।२ पलाश, धतूरा
कणय (दे०) ज ३।३१
कणय (दे०) सू २०।८ एक ग्रह का नाम
कणयदंडियार (कनकदण्डिकार) ज ३।३५
कणयमय (कनकमय) ज १।४६।१
कणवितणय (कनकवितानक) सू २०।८ ग्रह का नाम
कणसंताणय (कनकसंतानक) सू २०।८ ग्रह का नाम
कणवीर (करवीर[1])ज २।१५;३।१२,८८;५।५८
कणिक्कामच्छ (कणिकामत्स्य) प १।५६
कणीयस (कनीयस्) उ १।६५
कण्ण (कर्ण) ज २।४३,६४;५।२६,३८;७।१७८ उ ३।१०२
कण्णकला (कर्णकला) सू १।८।१;२।२
कण्णगा (कन्यका) उ ५।१३,२५
कण्णत्तिय (दे०) प १।७८
कण्णपाउरण (कर्णप्रावरण) प १।८६

---
1. हे० १।२५३

कण्णपीढ (कर्णपीठ) प २।३०,३१,४१,४९
कण्णमूल (कर्णमूल) ज ५।१६
कण्णा (कन्या) ज ३।३२
कण्णायत (कर्णायित) ज ३।२४,१३१
कण्णायय (कर्णायत) उ १।२२,१४०
कण्णिगा (कर्णिका) ज ४।७
कण्णिया (कर्णिका) प १।४८।४५ ज ३।११७; ४।८,१५,१६
कण्णियारकुसुम (कर्णिकारकुसुम) प १७।१२७
कण्णिलायण (कर्णिलायन) सू १०।९५
कण्णिल्ल (कर्णिल) ज ७।१३२।१
कण्ह (कृष्ण) प १।४४।३;१।४८।७,१।९३।६; २।२०;१७।२९,५६ से ६९,७१ से ७६,८१ से ८७,९४,१०० से १०४,१०६,१०९,११२, १६६,१६७,१६९ से १७२ उ १।७; ५।९,१५, १७ से १९
कण्ह (वल्ली) (कृष्णवल्ली) प १।४०।३
कण्हकंदय (कृष्णकंदक) प १७।१३०
कण्हकडबु (दे०) प १।४८।३
कण्हलेस (कृष्णलेश्य) प १३।१५; १७।८३,९२, ९४,९५,१०३,१०४,१०७,१०८,१२१,१२९, १७०,१७२;१८।६९;२३।१९५,२००
कण्हलेसट्ठाण (कृष्णलेश्यास्थान) प १७।१४६
कण्हलेसा (कृष्णलेश्या) प १७।१२१;२८।१२३
कण्हलेस्स (कृष्णलेश्य) प १३।१४,१९
कण्हलेस्सट्ठाण (कृष्णलेश्यास्थान) प १७।१४६
कण्हलेस्सा (कृष्णलेश्या) प १३।१४,१९;१६।४९, ५०;१७।३६,३८,३९,४१,४३,४७,५०,८२, ११४ से ११६,११८,१२१,१२३,१३०,१३९ से १४५,१४७ से १५०,१५६ से १६४
कण्हलेस्सापरिणाम (कृष्णलेश्यापरिणाम) प १३।६
कण्हसप्प (कृष्णसर्प) प १।७० सू २०।२
कत (कृत) प २८।१०५;३४।१९ सू २०।७
कतर (कतर) प ३।३८ से ४८,५० से १२०,१२२ से १२४,१७४,१७९ से १८२;६।१२३;८।५, ७,९,११;९।१२,१९,२५;१०।३ से ५,२६, २८,२९;११।७९,९०;१५।१३,१६,२६,२८, ३१,३३,६४;१७।५६ से ६९,७१ से ७६,७८ से ८३,१४५,१४६;२०।६४;२१।१०४,१०५; २८।४१,४४,७०;३४।२५;३६।३५ से ३७,३९ से ४१,४८,४९ सू १३।६,८,१०,१३;१८।७, ३७
कति (कति) प ६।१२०,१२१;८।१ से ३,१०।१ ,१५;११।३०।१;११।४२,८८;१२।१ से ५; १४।१ से ३,५,११ से १४,१७; १५।१।१, १५।१,१२,१७,१९,२०,२५,३०,५४,५६, ५७,७७ से ८०,१३३,१३४;१७।३६ से ४०,११२ से ११४,१२९,१३६,१३७, १४७,१५६,१५७,१५९ से १६१,१६३; २१।१,९५,९६;२२।१,२१ से २३,२६,२७, २९,३०,३२ से ३९,४२ से ४७,५७,६६,८३, ८४,८६,८७,८९,९०;२३।१।१,२३।१,२,६,७, २४;२४।१ से ५,१० से १५;२५।१,२,५; २६।१ से ४,८,९;२७।१ से ३,५,६;२८।३१; ३६।१,४ से ७,४२,४३,५३,५४,५८,६२ से ६४,७७,७८ ज १।१५,४।२६० चं २।३,५ सू १।६।३,१।९।१ से ३;१०।८ से १९,६३ से ७४,७६;१२।१;१३।४,५,१५ से ३७;१८।१४ से १७;१९।१
कतिपएसिय (कतिप्रदेशिक) प १५।११,२४
कतिपदेसिय (कतिप्रदेशिक) प १७।१४०
कतिप्पगार (कतिप्रकार) प ११।३०।१
कतिभाग (कतिभाग) प २८।१।१,२८।२२,३४,३९ ६८
कतिभागावसेसाउय (कतिभागावशेषायुष्क) प ६।११४ से ११६
कतिविध (कतिविध) प ६।११८;१७।१३९
कतिविह (कतिविध) प ५।१,१२३ से १२५; ६।११९;९।१,१३,२०,२६;११।३१ से ३७, ७३,८६;१३।१ से १३,२१ से ३१;१४।७,९; १५।५८ से ६०,६२,६३,६५ से ७४,७६;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६।२,३,१७,१६,२०;२०।६२; २१।२ से ६; ८ से १२,१४,१५,१६,२०,४६,७२,७५ से ७७,६४;२२।२ से ६; २३।११,२३।१३ से २३,२५ से ४७,५७ से ५६;२६।१ से ३,५ से ७,६,१०,१२,१३;३०।१,३,५ से ११,१३; ३३।१;३४।१७;३५।१,४,६,८,१०,१२,१६ ज २।१ से ३;४।२५४,२५५ सू १०।१२६; २०।३

कतिसमइय (कतिसामयिक) प १५।६१; ३६।२, ३,८४,८५

कतो (कुतस्) प० ६।७० सू ४।४

कत्तिई (कार्तिकी) ज ७।१४०,१४४,१४६ सू १०।२६

कत्तिगी (कार्तिकी) ज ७।१३७,१५५

कत्तिम (कृत्रिम) ज २।१२२,१२७;४।१००,१७०

कत्तिय (कार्तिक) ज ७।१०४,११३।१,१३७ उ ३।१३,४०

कत्तिया (कृत्तिका) ज० ७।१२८,१२६,१३६, १४०,१४४,१४६,१५६,१६० सू १०।१ से ६, ११,२३,३६,६२,६६,६७,७५,८३,१०१;१२०, १२४,१३१ से १३३;१२।२८

कत्तिया (कार्तिकी) सू १०।७,११,२३,२६

कत्तो (कुतस्) प ६।११;६।७५,७८,८०,८१,८७, ६०,६४,६६ ज ३।१२७

कत्थ (कुत्र) प २।६४।२

कत्थइ (कुत्रचित्) ज २।६६ सू २०।७

कत्थुल (कस्तुल) ज २।१०

कदलीथंभ (कदलीस्तंभ) प ११।७५

कद्दम (कर्दम) ज० ३।१०६ उ १।१३६

कद्दुइया (दे०) प १।४०।२

कधं (कथं) सू १६।२४

कप्प (कल्प) प० २।१,४,१०,१३,५० से ५६, ५६।२;२।६०;६३;३।२६ से ३६,१८३;४।२१३ से २४०,२४३,२४६,२५८,२६४;६।२८,६५, ६८,१०६;२०।६१;२१।७०,६१,६२;३०।२६; ३४।१६,१८ ज ५।१८,२४ से २६,४४,४६ उ २।२०,२२;३।६०,१२०;१५६,१६१;४।५, २४,२८

√कप्प (क्लृप्)—कप्पइ उ ३।५०;४।२२— कप्पेंति ज ५।१३,१८,२४,२५

√कप्प (कल्पय्) कप्पेह उ ५।१८

कप्पकार (कल्पकार) ज ३।११७

कप्पणा (कल्पना) ज ३।३५

कप्पणी (कल्पनी) ज ३।३१

कप्पणिकप्पिय (कल्पनीकल्पित) उ १।४६

कप्परुक्ख (कल्पवृक्ष,कल्परूक्ष) ज ३।६,२११,२२२

कप्परुक्खग (कल्परूक्षक) ज ५।५८

कप्पवडिंसिया (कल्पावतंसिका) उ १।५;२।१ से ३,१४,१५,२१; ३।१

कप्पाईय (कल्पातीत) प १।१३८

कप्पातीत (कल्पातीत) प १।१३४; २१।५५,७१

कप्पातीतग (कल्पातीतक) प ६।८५,६२

कप्पातीय (कल्पातीत) प १।१३६; २१।६२

कप्पासट्ठिसमिंजिया (कार्पासास्थिसमञ्जिका) प १।५०

कप्पासिय (कार्पासिक) प १।६६

कप्पिंद (कल्पेन्द्र) प १५।५५।२

कप्पिय (कल्पित) ज ३।६,२२२

कप्पूरपुड (कर्पूरपुट) ज ४।१०७

कप्पेत्ता (कल्पयित्वा) ज ५।१२

कप्पेमाण (कल्पमान) ज १।१३४

कप्पोवग (कल्पोपग) प १।१३४,१३५; ६।८५; ८६,६५; २१।५५

कप्पोववण्णग (कल्पोपपन्नक) ज ७।५५ सू १६।२३ २६

कबंध (कबन्ध) उ १।१३६

कब्बड (कर्बट) प १।७४ ज २।२२,१३१;३।१८, ३१, १८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१

कब्बडय (कर्बटक) ज ७।१८६।२ सू २०।८, २०।८।२

कम (क्रम) ज ३।३१,१०६,२१७;४।२०२;७।१३० सू १६।२२।१४

√कम (क्रम्) कमइ ज २।६;४।२०२;७।१३०

कमंडलु (कमण्डलु) ज २।१५ उ ३।५१।१

कमल (कमल) ज २।१५;३।३,६,१८८,२०६, २१०;५।२१,५६ उ १।१५,३५;३।६८

कमलमाला (कमलमाला) उ १।३५

कमलागर (कमलाकर) ज ३।१८८

कमलामेल (कमलामेल) ज ३।१०६

कम्म (कर्मन्) प १।१।६;२।६७।२१;३।१७४; ११।८६; १७।१।१;१७।१८;२०।३६; २१।१०२;२२।२६,२७;२३।३,६,७,६ से ११, १३ से २३,२५,२६,२६ से ४१,४७,४८,५७ से ६४,६६,६८,६६,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ६०,६२,६३,६५ से ६६,१०१ से १०४, १११ से ११४,११६ से ११८,१२७,२३०, १३१,१३३ से १३५,१३७,१३८,१४२,१४३, १५५,१६१,१६५,१६७,१७१,१७६,१७७, १८२,१८३,१८७,१६१ से २०१;२४।२ से ५, ११,१२,१४;२५।२,४,५;२६।२ से ४,८,६; २७।२,३,६;३६।८२,८३।१,३६।६२ ज १।१३, २०,३३,३६;२।५१,५४,६४,७०,१२१,१२६, १३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,१६३; ३।२२।२,३५,१२५,१६७।७,१७८,२११,२२३; ४।२;७।११२।३ सू १०।१२६।३;२०।१,२; २०।६।३,५ उ १।२७,१४०

कम्मंस (कर्मांश) प ३६।८२,६२

कम्मकर (कर्मकर) ज ३।१७८

कम्मखंध (कर्मस्कन्ध) प ३६।६२

कम्मग (कर्मक) प १२।१४,२१,२६,२६;२१।६६, १०५;२३।४१,४३,४४;३६।६२

कम्मगर (कर्मकर) ज ५।५७

कम्मगसरीर (कर्मकशरीर) प १२।१०;१६।१५, १८,२१;२१।६४,१०० १०३ से १०५;३६।८७

कम्मगसरीरि (कर्मकशरीरिन्) प २८।१४१

कम्मपगडि (कर्मप्रकृति) प १४।११ से १४,१७; २२।२१ से २३,२८,८३,८४,८६,८७,८६, ६०;२३।१ से ५,२४;२४।१ से ५,१० से १५; २५।१,२,४,५;२६।१ से ४,८,६;२७।१ से ३, ५,६

कम्मबीय (कर्मबीज) प ३६।६४

कम्मभूमग (कर्मभूमिक) प १।८५,८८,१२६; ६।७२,८४ ६७,६८,११३;२१।५४,७२

कम्मभूमग (कर्मभूमिज) प २३।२००

कम्मभूमगपलिभागि (कर्मभूमिकपरिभागिन्) प २३।१६६,१६६ से २०१

कम्मभूमय (कर्मभूमज) प ६।७६;१७।१५६,१६१, १७१;२३।१६६,१६६

कम्मभूमि (कर्मभूमि) प १।७४,८४;२।७,२६

कम्मभूमिग (कर्मभूमिज) प २३।२०१

कम्मय (कर्मक) प १२।१ से ५,३५,३६;२१।१

कम्मवेदय (कर्मवेदक) प १।१।६

कम्मसरीर (कर्मशरीर) प १२।८

कम्मा (कर्मक) प १२।२५;२१।१०२

कम्मार (कर्मार) ज २।२६

कम्मारिय (कर्मार्य) प १।६२,६६

कम्मासरीर (कर्मकशरीर) प १६।१ से ८,१० से १५,१६

कम्मिया (कार्मिकी) उ १।४१,४३

कम्हा (कस्मात्) ज ७।३८

कय (कृत) प २।३०,३१,४१ ज ३।६,१८,५८, ६६,७२,७४,७७,८१,८२,८५,६२,६३, ११७।१,११६ १२१,१२५,१४७,१८० २२१, २२२,२२६; ५।२६,५६ उ १।१६,७०,८८, ६२,१२१;३।४८,५०,५१,५६,११०;५।१७

कयंब (कदम्ब) प १।३६।३

कयकज्ज (कृतकार्य) सू २०।७

कयग्गह (कचग्रह) ज ३।१२,८८;५।७,५८

कयत्थ (कृतार्थ) ज ५।५,४६ उ १।३४

कयपुण्ण (कृतपुण्य) उ १।३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयमाल (कृतमाल) ज २।८; ३।७१ से ७४,७६, ८४
कयमालक (कृतमालक) ज ३।७१,१५०
कयमालय (कृतमालक) ज १।२४,४६; ६।१६
कयर (कतर) प ३।४९; १७।१४४; २२।१०१; ३६।३८ ज ७।१२९,१७५,१८०,१८१,१९७ सू १०।२ से ४,७५,७७,१३३ से १३५; १८।१८,१९
कयलक्खण (कृतलक्षण) उ १।३४
कयलीखंभ (कदलीस्तंभ) ज २।१५
कयलीहर (कदलीगृह) ज ५।१४
कयलीहरग (कदलीगृहक) ज ५।१३
कयवर (कचवर) ज २।३९; ५।५
कयविहव (कृतविभव) उ १।३४
कया (कदा) ज ७।१२५ चं २।४ सू १।६।४;१४।१
कयाइ (कदाचित्) ज १।४७; ३।४,८३,१०४, १५४,१७२,१८८,२२२,२२६; ४।२२,५४, १०२ उ १।१४; ३।४६; ४।२१; ५।१३
कयाइं (कदाचित्) उ २।८
कर (कृ) अकासी ज २।८४ करवाणि ज ३।३२।१ करिस्सामि ज २।६; ५।४६ करिस्सामो ज ५।५,७ करेइ प १।७४; ३६।८८ ज १।६; २।६५,९०; ३।५,६,१२,१८ १९,३१,३२।२, ४९,५२,५३ ६१,६२ ६९,७०,८८,९५,१००, १३१,१३७.१४१ १४२,१५९,१६४,१६५, १८०,१८१,२२४; ५।२१,२९,४४,४६ ४८ सू २।१ उ १।१९; ३।५१; ४।१३ करेंति प १।८४; ६।११०.२०।६ से ८; ३४।१९,२१ से २४ ज १।२२,२७,५०; २।१०.५८,१००, ११५,११६,११८,१२०,१२३,१२८; ३।१३, २८,४२,४७,५० ५९,६७,७५,९२,११९,१३९, १४८.१६९,१८४,२११; ४।१०१,१६६,१७१; ५।५.७,१४,१६,४६,५७,६०,६६,७४ सू २।१ उ १।६३ करेज्जा प २०।१ से ४,१८, ४०,४४,४६,४८ ज ५।७, करेति प १।७१; १६।५०; ३६।८२।१ ३६।८५,९२ ज २।९९, ११७ करेमि ज २।९०; ३।२६,३९,४७,५६ ' १३३,१४५; ५।२२ उ १।४२ करेमो ज ३।११३,११५,१३८; ५।३ करेसि उ ३।७९ करेस्सामी उ ३।२९ करेह ज २।१४; ३।७, १२,२८,४१,४९,५८,६१,६६,७४,१४७,१६८ करेहि ज ३।१८,१९.३१,५२.६९,९९,१४१, १६४,१८० सू ३।१०३ करेहिइ उ ३।२१ करेहिंति ज २।१५१.१५७ उ ३।१२६ काहिइ उ १।४१; ३।८६ कीरइ उ ५।४३
कर (कर) ज २।१५,७१; ३।३,१३८ उ १।१३९
करंज (करञ्ज) प १।३५।१ कंजा जिसके फल आदि दवा के काम आते हैं
करंडग (करण्डक) उ ३।१२८
करंडुग (दे०) ज २।१६
करंत (कुर्वत्) उ १।८८,९२
करकर (करकर,अकरकरा) प १।४२।२;१।४८।४६ अकरकरा
करकरय (करकरक) सू २०।८।९
करकरिय (करकरिक) सू २०।८
करण (करण) ज १।१३८; ३।३२ १२६,२०९; ५।५; ७।१२३ से १२६
करतल (करतल) ज ३।२०९
करधाण (करध्मान) ज ३।३१
करमद्द (करमर्द) प १।३७।४ करौंदा,आंवला
करय (करक) प १।२३
करयल (करतल) ज ३।५,६,८,१२,१९,२६,३९, ४७,५३.५६,६२ ६४,७०,७२,७७,८४,८८, ९०,१००,१०५,११४,१२६,१३३,१३८ १४२, १४५,१५१,१५७ १६५,१८१.१८९,२०५, २०६; ५।५ ७,,२१.४६,५८ उ १।१५,३५, ३६,४५.५५.५७,५८,६१,६२,८०,८२,८३ ८६,८७,९९,१०७,१०८,११६,११८,१२२; ३।९८,१०६,११४,१३८,१४८; ४।१५; ५।१७
करयलपुड (करतलपुट) ज ५।१४,१७,६० ६६
करिय (कृत्वा) ज ५।५८

करित्तए (कर्तुम्) प २८।१०५ ज ५।२२
करीर (करीर) प १।३७।४ करील
करेंत (कुर्वत्) ज २।६५
करेत्तए (कर्तुम्) प ३४।१६,२१ से २४ ज २।६० उ ३।११५
करेत्ता (कृत्वा) प ३६।६२ ज १।६ सू २।१ उ १।१६; ३।७; ४।१३
करेमाण (कुर्वत्) ज २।६५,७८; ३।२२,२८,३१, ३२,३४ से ३६,५४,७५,८६,६३,६६.१०२ १०६,१११.११३,१३७,१४३,१५६,१६२, १६३,१८०,२०४ से २०६,२०८.२०६,२२३ उ १।२२,६५,६६,७१,६४,१११,११२,१३८, १४०; ३।५०
कल (कल) प १।४५।१ ज २।३७ सालवृक्ष
कलंकलीभाव (कलंकलीभाव) प २।६४
कलंबुया (कदम्बक) प १।४६; १५।२,१८ सू ४।३, ४,६,७,६; १६।२२।२,१५; १६।२३
कलकल (कलकल) ज २।६५; ३।२२,३६,७८,६३, ६६.१०६,१६३,१८०; ७।५५,१७८ सू १६।२३ उ १।३८
कलकुसुम (कलकुसुम) प १७।१२५
कलताल (कलताल) ज ३।३१
कलस (कलश) प २।३०,३१ ४१ ज २।१५; ३।१७८,२०६; ४।२८; ५।५६ से ५८ उ ३।५१,५६
कलह (कलह) प २।४१; २२।२० ज २।४२,१३३
कलहंस (कलहंस) प १।७६ ज २।१२
कला (कला) ज २।६४; ७।१३४।१ सू १०।१४२, १४७; १२।३० उ ५।१३
कलाव (कलाप) प २।३०,३१,४१; १५।२६; २१।२५ ज ३।७,८८,११७
कलिंग (कलिङ्ग) प १।६३।१
कलिंद (कलिन्द) प १।६४।१
कलिय (कलित) प २।३०,३१ ४१,४८ ज ३।१०, १५.६५; ३।७ १२,१५,२१,२२,२८,३१, ३२।२,,३४ से ३६,४१ ४६,५८,६६,७४,७७, ७८,८८,६१,१४७,१६८,१७३,१७५,१८४, १६६,२१२,२१३; ४।२७,४६ १६६; ५।७ २८,४३ सू २०।७ उ १।१२३; ५।१८
कलुय (कलुक) प १।४६
कलुस (कलुष) ज २।१३१
कलेवर (कलेवर) प १।८४ सू २०।१
कल्ल (कल्य) ज ३।१८८ उ ३।४८,५०,५५,६३, ६७,७०,७३,१०६,११८
कल्लाण (कल्यानी) प १।४१।२ जंगली ३३८
कल्लाण (कल्याण) ज १।१३,३०,३३,३६; २।१८,६४,६७; ४।२ सू १८।२३ उ १।१७, ४१,४४; ५।३६
कल्लाणग (कल्याणक) प २।३०,३१,४१,४६ ज ३।६,२२२
कल्हार (कल्हार) प १।४६ सफेद कोइ, एक पुष्प
कवड (कपट) ज २।१३३
कवय (कवच) प २।६४।२१ ज १।३७; ३।३१, ७७.७६,६६,१००,१०१,१०७,११६,१२४ उ १।१३८
कवाड (कपाट) प २।८,३०,३१,४१ ज १।२४; ३।८३,८५,८८ से ६०,१०२,१५४ से १५७, १६२,१६७।१२
कविंजल (कपिञ्जल) प १।७६
कविट्ठ (कपित्थ) प १।३६।१; १६।५५; १७।१३२ ज ३।११६; ७।१७६ कैथ
कविट्ठाराम (कपित्थाराम) उ ३।४८,५५
कविल (कपिल) ज २।१२,६५,१३३
कविलय (कपिलक) सू २०।२ राहु का नाम
कविसीसग (कपिशीर्षक) ज ३।१; ४।११४
कविसीसय (कपिशीर्षक) ज ४।११४
कवोय (कपोत) प १।७६ ज २।१६
कवोल (कपोल) ज २।१५
कव्व (काव्य) ज ३।१६७।१०
कस (कष) ज २।६७; ३।१०६
कसरि (दे०) सू १०।१२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसाय (कषाय) प १।१।५,,१।४ से ९; ३।१।११; ५।५,७,२०५; १४।१,२; १८।१।१; २३।६८, १४०,१८३,१८४; २८।३२,६६,१०६।१; ३६।१।१ ज २।१४५

कसायपरिणाम (कषायपरिणाम) प १३।२,५,१४ १९

कसायवेयणिज्ज (कषायवेदनीय) व २३।१७,३४, ३५

कसायसमुग्घात (कषायसमुद्घात) प ३६।६५

कसायसमुग्घाय (कषायसमुद्घात) प ३६।१ ४,५, ६,७,२१,२२ २८,३५ से ४३,४६,५३ से ५८

कसाहिया (दे०) प १।७१

कसिण (कृष्ण) प २।३१ ज २।१५

कसिणपुग्गल (कृष्णपुद्गल) सू २०।२

कसेरुया (कशेरुक) प १।४६ एक तरह का घास

कह (कथं) प २३।१।१

√कह (कथय्) कहेइ उ २।१२

कहं (कथं) ज ७।५६ चं २।४ सू १।६ उ १।७२, ३।७८

कहग (कथक) ज २।३२

कहा (कथा) उ १।१७,५७,८२,९९,१०७,१२७; ३।१३,२९,१४७,१६०; ४।११; ५।१५,३८

कहि (क्व) प १।७४ ज १।७

कहिं (क्व) प ६।९९ ज २।१८ चं २।२ सू १६।२ उ १।२५

कहिंचि (कुत्रचित्) उ ३।१०१

कहिय (कथित) ज १।४ चं ९ सू १।४ उ १।२

काइय (कायिक) ज २।७१

काइया (कायिकी) प २२।१ २;२२।४६ से ५०,५३ से ५९

काउ (कापोत) प १३।६;१७।१२२

काउं (कृत्वा) उ ३।१११;४।१९

काउंबरी (काकोदुम्बरिका) प १।३६।२

काउलेस (कापोतलेश्य) प १७।९२,९४,९५,१०३, ११०,१११,१६८

काउलेसट्ठाण (कापोतलेश्यास्थान) प १६।१४६

काउलेसा (कापोतलेश्या) प १७।१२१;२८।१२३

काउलेस्स (कापोतलेश्य) प ३।९९;१३।१४; १६।४९;१७।३२,५६,५७,५९ से ६१,६३,६४, ६६ से ६९,७१ से ७४,७६,८१ से ८५,८७, ९४,१००,१०२,१०३,१११,१६७;१८।७१

काउलेस्सट्ठाण (कापोतलेश्यास्थान) प १७।१४६

काउलेस्सा (कापोतलेश्या) प १६।४९;१७।३६, ३७,११७,११८,१२१,१२२,१२५,१२९,१३२, १३६,१४४,१४५,१५१ से १५३

काउलेस्सापरिणाम (कापोतलेश्यापरिणाम) प १३।६

काऊ (कापोती) प २।२० से २५

काऊण (कृत्वा) ज ३।१२

काओदर (काकोदर) प १।७०

काओली (काकोली) प १।४८।५ एक वनौषधि जो अष्टवर्ग के अन्तर्गत है, जीवंती

काकंदी (काकन्दी) उ ३।१७१

काकंध (काकन्ध) सू २०।८;२०।८।३

काग (काक) प १।७९

कागणि (काकिणी) प १।४०।५ ज ३।९५;१५९;

कागणिरयण (काकिणीरत्न) ज ३।९४,१३५,१५८, १७८,२२०

कागणिरयणत्त (काकिणीरत्नत्व) प २०।६०

काणण (कानन) ज २।६५

कातव्व (कर्तव्य) प ५।१६१,१७९;६।५९,६९, ७४ से ७८,८०,१११

कामंजुग (कामयुग) प १।७९

कामकाम (कामकाम) प २।४१

कामकामि (कामकामिन्) ज २।१६

कामगम (कामगम) ज ५।४९।३;७।१७८

कामगामि (कामकामिन्) ज २।२२

कामगुणित (कामगुणित) प २।६४।१९

कामत्थिय (कामार्थिक) ज ३।१८५

कामभोग (कामभोग) ज ३।८२,१८७,२१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सू २०।७ उ १।११
कामभोय (कामभोग) उ ५।२५
कामरूव (कामरूप) प २।४१
काय (काक) प १।४७
काय (काय) प १।८९;३।१।१;१५।५३,५४,५६, ५७;१६।१ से ८,१० से १५,१८,१९,२१,५४; १८।१।१; २३।१५,१६,३०,३१;३४।११२ ज २।६७;६।१६७ सू १०।७४;२०।८;२०।८।३
कायअपरित्त (कायअपरीत) प १८।१०९,११०
कायगुत्त (कायगुप्त) ज २।६८ उ ३।९९
कायजोग (काययोग) प ३६।८६ से ८८,९१,९२
कायजोगपरिणाम (काययोगपरिणाम) प १३।७
कायजोगि (काययोगिन्) प ३।९६;१३।१४,१६; १८।५७; २८।१३८
कायठिइ (कायस्थिति) प १।१।५;१८।१।२
कायपरित्त (कायपरीत) प १८।१०६,१०७
कायपरियार (कायपरिचार) प ३४।१९
कायपरियारग (कायपरिचारक) प ३४।१८,१९, २१,२५
कायपरियारणा (कायपरिचारणा) प ३४।१७ से १९
कायमाई (काकमाची) प १।३७।२ मकोय
काययोगि (काययोगिन्) प १३।१७
कायव्व (कर्तव्य) प ५।१३२,२१६;६।४६,११०; १३।१७;१५।३४,३८,७५;१७।९१; २८।१।२ ज ४।१७२
कायसमिय (कायसमित) ज २।६८
कारंडव (कारण्डक) ज २।१२
कारण (कारण) प ८।४,६,८,१०; २८।२०;२६, ३२,६६ ज ७।२१४ उ १।३६,११९,१२७; ३।११,२९
कारभरिय (कारभारिक) ज ३।१८५
√कारव (कारय्) कारवेंति ज ३।१३ कारवेह ज ३।७
कारवेत्ता (कारयित्वा) ज ३।७
कारियल्लइ (कारवल्ली) प १।४०।२ करेला
कारिया (दे०) प १।३७।५
कारिल्लय (दे०) सू १०।१२०
कारेमाण (कारयत्) प २।३०,३१,४१,४९,५७ ज १।४५;३।१८५,२०५,२०९,२११;५।१९ उ ५।१०
कारोडिय (कारोटिक) ज ३।१८५
काल (काल) प १।४ से ९,७४,८४;२।२० से २७, ३१ से ३३,४०।८;२।४२,४३,४५।१;२।४६,४७, ६४;४।१ से ४९,५६ से ५८,६५,७२,७९,८८, ९५,९८,१०१,१०४,११३,१३१,१४०,१४९, १५८,१६५,१६८,१७१,१७४,१८३,२०७, २१०,२१३,२९४,२९७,२९९;५।५,७,३७,३८, ७४,१०७,१२९,१५०,१५२,१५४,१९०,१९३, १९७,२००,२०३,२४२,२४४;६।१ से २३, २७,४२ से ४५;७।१ से ४,६ से ३०; ११।५३, ५४;१२।२४,३२,३३;१३।२६;१६।५०;१८।३, १४,१५,२६,२७,३७,३८,४१,४३,४५,५७, ५९,६२,६४,७७,८३,९०,९५,१०५,१०७, १०८,११०,११६,११७,१२०;२३।४७,६० से ६२,१०५,१९३ से १९६,१९८ से २०१; २८।४,६,७,२०,२९,३२,३८,५०,५२,५३, ६६;३६।६०,६१,६७,७१,७२,७५,७६,९३, ९४ ज १।२,४,५;२।१ से ३,६,४४,४९,५१, ५४,६९,७१,८८,८९,९१,१२१,१२६,१३०, १३१,१३३ से १४१,१४९,१५४,१६०,१६३; ३।३,२४,३१,३२,९२,९५,१०३,११९,१३८।१, १५९,१६७।१,७,१७८,२२४;५।१,६,८ से १३,१८,४८,५० से ५२;७।५७,६०,१०१, १०२,१८७,२१० चं ६,९,१० सू १।१,४,५; २।२;८।१;१७।१;१८।२५ से ३४;१९।२५; २०।७ उ १।१ से ३,७,९,१३ से १६,२१,२२, २५ से २८,५१,६५ से ६७,७६,९३,९४,११९ से १२२,१२५,१४०,१४१,१४४,१४७;२।४,६, ७,९,११,१६,२२;३।४ से ६,९,१२,१४,१६, २१,२४,२५,२७,४०,४८,५०,५५ से ५७,६४,

६५,६८,६९,७१,७२,७४,७५,७९,८३,८९,
९०,९५,९८,९९,१०६,१२०,१२४,१३१,१३२,
१५०,१५५ से १५७,१५९,१६१,१६४,१६८,
१६९;४।४ से ६,१०,१६,२४;५।४,१४,२१,
२४,२५,२६ २८,३६,४०,४१

काल (काल) सू २०।७;२०।८।५

काल (दे० कृष्ण) सू १९।२२।१६,१८,२०

कालओ (कालतस्) प ११।४८,५१;१२।७,८,१०,
१२,१६,२०,२७,३२;१८।१ से १०,१२ से १७,
१९ से ३९,४१ से ४७ ४९ से ५१, ५४ से
५९,६१ से ९०,९३ से १११,११३,११४,
११६,११७,११९,१२०,१२२,१२३,१२५ से
१२७;३५।४ ज २।६९

कालग (कालक) प ३।१८२;५।३७,५९,८८,८९,
१०७,१४९,१५०,१९०,१९३,१९७,२००

कालगय (कालगत) ज २।८८,८९;३।२२५
उ १।२२,९२; २।१२; ५।३९,४०

कालण्णाण (कालज्ञान) ज ३।१६७।७

कालनाण (कालज्ञान) ज ३।३२

कालतो (कालतस्) प १२।२०;१८।३,१८,४१,
४३,६०,९५;२८।५,५१

कालमास (कालमास) ज २।४९,१३५ से १३७
उ १।२५ से २७,१४०;३।१४,८३,१२०,१५०,
१६१;४।२४;५।२८,४०,४१

कालमुह (कालमुख) ज ३।८१

कालय (कालक) प ३।१८२;५।३६ से ३८,५८ से
६०,७३ से ७५,८९,९०,१०६ से १०८,१५०,
१५१,१८९ से १९४,१९६ से २०४,२४१ से
२४३;१७।१२९ सू २०।२

काललोहिय (काललोहित) ३ १७।१२९

कालहेसि (कालहेषिन्)

काला (काला) ज २।१३३

कालागरु (कालागुरु) प २।३०,३१,४१ ज २।६५;
३।१२;५।७,५८

कालागुरु (कालागुरु) ज ३।७,८८ सू २०।७

कालायस (कालायस) ज ३।१०९,१७८

कालिंग (कालिङ्ग) प १।४८।४८ ज ३।११९

कालिंगी (कालिङ्गी) प १।४०।१

काली (काली) उ १।१२,१३,१५,१७,१९ से २४;
२।५,६

कालोदधि (कालोदधि) सू १९।११।१

कालोदहि (कालोदधि) सू १९।११।२,४

कालोय (कालोद) प १५।५५,५५।१ सू ८।१

कालोयसमुद्द (कालोदसमुद्र) प १६।३०

काविसायण (कापिशायन) प १७।१३४

कास (काश, कास) प १।३७।४ सहिजन का पेड,
एक घास

कास (कास) ज २।४३

कास (काश) सू २०।८;२०।८।४

कासपगास (काशप्रकाश) ज ३।३५

कासव (काश्यप) ज ७।१३२।३

कासवगोत्त (काश्यपगोत्र) उ १।३

कासित्ता (कासित्वा) ज २।४९

कासी (काशी) प १।९३।१ उ १।१२७ से १३०,
१३२

√काह (कथय्) काहिइ उ २।१३;५।४३

काहार (दे०) ज ७।१३३।१

काहारसंठिय ('काहार'संस्थित) सू १०।२७

किं (किम्) प १।१ ज १।७ चं २।१ सू १।६

किंकर (किङ्कर) प २।३०,३१,४१ ज ३।२६,३९,
४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५,१७८

किंचि (किञ्चित्) प २।६४।१८ ज १।७
सू १।१४,२२,२७

किंचिविसेसूण (किञ्चित्विशेषोन) ज १।४८;
४।१,४०,५५,६७,१६७,१६९ सू १।२७;
१।१९।४,५।१,१।१९।७; ८।१

किंथुग्घ (किंस्तुघ्न) ज ७।१२३ से १२५

किंपज्जवसिय (किंपर्यवसित) प ११।३०

किंपहव (किंप्रभव) प ११।३०

किंपुरिस (किंपुरुष) प १।१३२; २।४१,४५,
४५।२ ज ३।११५,१२४,१२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसंठिय (किंसंस्थित) प ११।३०
किसुय (किंशुक) ज ३।१८८
किंसुयपुप्फ (किंशुकपुष्प) प १७।१२६
किच्च (कृत्य) उ १।६२
किच्चा (कृत्वा) ज २।४६ उ १।२५; ३।१४; ४।२४; ५।२८
किच्छ (कृच्छ्र) ज ३।१०८ से १११
किटिभ (किटिभ) ज २।१३३
किट्टि (किट्टी) प १।४८।४
किट्ठीय (किट्टिया) प १।४८।२
किढिण (किठिण) उ ३।५१,५३,५५,५६,६३,६४, ६७,६८,७०,७१,७३,७४,७६
किणा (कथं) प १५।५३
किण्णं (किंनं) ज ३।१२४ उ १।६६
किण्णर (किन्नर) प २।४५,४५।२ ज १।३७; २।१०१; ३।११५,१२४,१२५; ४।२७; ५।२८
किण्णा (कथं) उ ५।२३
किण्ह (कृष्ण) प १।४८।६ कालीमीर्च, करौंदा
किण्ह (कृष्ण) प २।२१ से २७ ज १।१३,१४; २।७,१२,२३,१६४; ४।२६,११४,११६,१२६, २०१,२१५,२४०,२४१ सू १६।२२।१७; २०।२ उ ३।४६
किण्हकणवीरय (कृष्णकरवीरक) प १७।१२३
किण्णकेसर (कृष्णकेशर) प १७।१२३
किण्हपत्त (कृष्णपत्र) प १।५१
किण्हबंधुजीवय (कृष्णबन्धुजीवक) प १७।१२३
किण्हब्भ (कृष्णाभ्र) ज २।१५
किण्हमत्तिया (कृष्णमृत्तिका) प १।१६
किण्हय (कृष्णक) प १।४८।६२
किण्हलेसा (कृष्णलेश्या) प १७।२१
किण्हलेस्स (कृष्णलेश्य) प ३।६६; १७।३१,८४; २३।१६६
किण्हलेस्सा (कृष्णलेश्या) प १७।३७,११६,१२०, १२२,१२३,१३६
किण्हसुत्तय (कृष्णसूत्रक) प १७।११६

किण्हा (कृष्णा) ज १।२३; २।१२
किण्हासोय (कृष्णाशोक) प १७।१२३
किण्होभास (कृष्णावभास) ज ४।२१५ उ ३।४६
कित्ति (कीर्ति) ज ३।१७,१८,२१,३१,६३,१७७, १८० उ ४।२।१
कित्ति (कूड) (कीर्तिकूट) ज ४।२६३।१
कित्तिम (कृत्रिम) ज १।२१,२६,४६; २।५७,१४७, १५०,१५६
कित्तिय (कीर्तित) प १।४८।६३
किन्नर (किन्नर) प १।१३२; २।४१
किन्नरछाया (किन्नरछाया) प १६।४७
किब्बिसिय (किल्विषिक) प २०।६१ ज ३।१८५
किमंग (किमङ्ग) उ १।१७; ३।१०२
किमिरागकंबल (कृमिरागकम्बल) प १७।१२६
किमिरासि (कृमिराशि) प १।४८।६
किर (किल) ज २।६ सू २०।६।४
किरण (किरण) ज २।१५; ३।२४
किरिया (क्रिया) प १।१।६; १७।११,२२,२३, २५,३०,३३; २२।१ से ५,६ से १६,२६,२७, २६,३०,३२ से ५०,५२ से ६३,६५ से ६६, ७१ से ७४,७६,६१ से ६४,६७ से ६६,१०१; २६।१०; ३६।६२ से ६४,६७,६८,७१,७७,७८ ज ७।५२
किरिया (रुइ) (क्रियारुचि) प १।१०१।१,१०
किरियारुइ (क्रियारुचि) प १।१०१।१०
किलकिलाइय (किलकिलायित) ज ७।१७८
√किलाव (क्लम्) किलावेंति प ३६।६२
किवणबहुल (कृपणबहुल) ज १।१८
किलेस (क्लेश) चं १।२ सू २०।६।६
किसलय (किसलय) प १।४८।५२
किसि (कृषि) ज २।३
कीड (कीट) प १।५१।१
√कीड (क्रीड्) कीडंति ज १।३०,३३
√कील (क्रीड्) कीलंति ज १।१३; ४।२
कीलंत (क्रीडत्) ज ३।१७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीलग (कीलक) ज ५।३२
कीलण (क्रीडन) प २।४१
कीलावण (क्रीडन) उ १।९७ से ९९
कीस (कस्मात्) उ १।५७,८२
कोसल (कौशलता) प २८।२४,३६,४२,४५,७१; ३४।२०
कुंकुम (कुंकुम) ज ३।३५
कुंकुमपुड (कुंकुमपुट) ज ४।१०७
कुंजर (कुञ्जर) ज १।३७;२।१०१; ३।३; ४।२७; ५।२८
कुंड (कुण्ड) प ११।२५ ज ४।२५,४०,६७,६८, ७१,७५,९०,९२,१३४ से १७६,१८२,१८३, १८८,१८९;१९४;६।१८
कुंडल (कुण्डल) प २।३०,३१,४१,४९,५०; १५।५५।१ ज ३।३,६,९,१८,२६,९३,१८०, २११,२२२;४।२०२;५।१८,२१,६७ सू १९।३१
कुंडलवर (कुंडलवर) सू १९।३१
कुंडलवरोद (कुंडलवरोद) सू १९।३१
कुंडलवरोभास (कुंडलवरावभास) सू १९।३१,३२
कुंडलोद (कुण्डलोद) सू १९।३१
कुंत (कुन्त) प २।४१ ज ३।१७८
कुंतग्ग (कुन्ताग्र) उ १।११५,११६
कुंतग्गाह (कुन्तग्राह) ज ३।१७८
कुंथु (कुन्थु) प १।५०
कुंद (कुन्द) प १।३८।३; २।३१;१७।१२८ ज २।१०,१५; ३।३,१२,३५,८८; ५।५८
कुंद(लता) (कुन्दलता) प १।३९।१
कुंदरुक्क (कुन्दरुक) प २।६५; ३।८८ एक वृक्ष और उसका फल जिसकी तरकारी बनती है
कुंदुरुक्क (कुन्दरुक) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,१२,८८; ५।७,५८ सू २०।७
कुंभ (कुम्भ) ज ३।३,५६,१२०,१४५;७।१७८ उ १।९७
कुंभग्गस (कुंभाग्रशस्) ज २।१०९,११०
कुंभिक्क (कौम्भिक, कुंभाग्र) ज ५।३८
कुंभी (कुम्भी) ज ३।९२
कुक्कुड (कुक्कुट) प १।५१।१;१।७९
कुक्कुडि (कुक्कुटी) उ १।५९,८३,८४
कुक्कुह (दे०) प १।५१।१
कुच्च (कूर्च) प १।३७।५
√ कुच्छ (कुत्स्) कुच्छिज्जा ज २।६
कुच्छि (कुक्षि) प १।७५ ज २।६,६३ सू २०।२ उ ३।९८; ५।३०
कुच्छि (कुक्षि) ज २।४३ अडतालीस आंगुल का मान
कुच्छिकिमिय (कुक्षिकृमिक) प १।४९
कुच्छिपुहत्तिय (कुक्षिपृथक्त्विक) प १।७५
कुज्जय (कुब्जक) प १।३८।१
कुज्जाय (कुब्जक) ज २।१०
कुट्टिमतल (कुट्टिमतल) ज ३।९,२२२
कुट्ठाणासण (कुस्थानासन) ज २।१३३
कुडगछल्ली (कुटजछल्ली) प १७।१३०
कुडगपुप्फरासि (कुटजपुष्पराशि) प १७।१२८
कुडगफल (कुटजफल) प १७।१३०
कुडगफाणिय (कुटजफाणित) प १७।१३०
कुडभी (कुडभी) ज ५।४३
कुडय (कुटज) प १।३६।३,१।४१।२; १७।१३० ज ३।३५
कुडुंब (कुटुम्ब) उ ३।११,१३,५०,५५
कुडुंबजागरिया (कुटुम्बजागरिका) उ १।१५; ३।४८,५०,७९,९८,१०६,१३१
कुडुयय (कांद) (कुस्तुम्बरानन्द) प १।४८।४३
कुणक्क (कुणक) प १।४७
कुणाला (कुणाला) प १।९३।५
कुणिम (दे० कुणप) ज २।१४६
कुणिमआहार (कुणिम आहार) ज २।१२५ से १२७
कुत्थुंभरि (कुस्तुम्भरी) प १।३६।२,३७।२
कुदंसण (कुदर्शन) प १।१०१।१३
कुदिट्ठि (कुदृष्टि) प १।१०१।११
कुप्पमाण (कुप्रमाण) ज २।१३३
कुप्पर (कूर्पर) ज ३।२२,३५,३६,४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुबेर (कुवेर) ज ३।१८६,२१७
कुभोइ (कुभोजिन्) ज २।१३३
कुमार (कुमार) उ १।१३ से १५,२१,२२,२५ से २७,३१,४२ से ४६,४८,६४ से ६९,९४ से ९९,१०२ से ११७,११९ से १२२,१२५, १२७,१२८,१४०,१४१,१४६,१४७;२।६,७, ९,१८,१९; ३।११४,१२०;५।१०,२०,२२, २३,२७,३१,३२,३४ से ३८
कुमार (कुमार) उ १।८९
कुमारग्गह (कुमारग्रह) ज २।४३
कुमारावास (कुमारावास) ज २।६४,८७; ३।२२५
कुमारिया (कुमारिका) उ ३।११४,१३०
कुमुद (कुमुद) प १।४६ ज ३।११७; ४।१५४, १५५,२१२,२२५।१,२३०
कुमुददल (कुमुददल) प १७।१२८
कुमुदप्पभा (कुमुदप्रभा) ज ४।२२१।१
कुमुदप्पहा (कुमुदप्रभा) ज ४।१५५।१
कुमुदा (कुमुद) ज ४।१५५।१,२२१
कुमुय (कुमुद) ज २।१५; ४।३,२५,२१२।१
कुमुयहत्थगय (हस्तगतकुमुद) ज ३।१०
कुम्म (कूर्म) ज २।१४,१५,६८; ३।३; ७।१७८
कुम्मुण्णया (कूर्मोन्नता) प ९।२६
कुरंग (कुरङ्ग) प १।६४ ज २।३५
कुरज्ज (कुराज्य) ज ३।२२१
कुरय (कुरब) प १।४७ लालफूलवाली कटसरैया
कुरल (कुरल) प १।७९
कुरा (कुरु) ज ४।१०८,१४१,१४३,२०५,२०७ २०८
कुरु (कुरु) प १।९३।२; १५।५५।३
कुरुविंद (कुरुविन्द) प १।४२।२
कुरूव (कुरूप) ज २।१३३
कुल (कुल) ज ३।३,९,१७,२१,२४,३४,१०९, १७७; ४।२१२; ५।१५,४६,५५; ७।१२७।१, १३६।१,१४१ से १४६,१५० से १५३, १६७।१ चं ५।१ सू १।९।१; १०।६,२०,२१, २२,२५; २०।९।४ उ १।५४,७९,१४१; ३।४८,५०,५५,१००,१३३; ५।५
कुलकोडि (कुलकोटि) प १।४९ से ५१,६०,६६, ७५,७६,८१,८१।१
कुलक्ख (कुलाक्ष) प १।८९
कुलक्खय (कुलक्षय) ज २।४३
कुलगर (कुलकर) ज २।५९ से ६३
कुलत्थ (कुलत्थ) प १।४५।१ ज २।३७; ३।११९ उ ३।४१,४२
कुलत्था (कुलस्था) उ ३।४२
कुलदेव (कुलदेव) ज ३।११३
कुलदेवया (कुलदेवता) ज ३।१११,११३
कुलधुया (कुलदुहितृ) उ ३।४२
कुलमाउया (कुलमातृका) ज ३।४२
कुलरोग (कुलरोग) ज २।४३
कुलवधुया (कुलवधु) उ ३।४२
कुलविसिट्ठया (कुलविशिष्टता) प २३।२१
कुलविहीणया (कुलविहीनता) प २३।२२
कुलारिय (कुलार्य) प १।९५
कुलोवकुल (कुलोपकुल) ज ७।१३६,१४१ से १४६,१५० से १५३ सू १०।६,२० से २२,२५
कुवधा (दे०) प १।४०।२
कुवलय (कुवलय) चं १।१
कुविंदवल्ली (कुविन्दवल्ली) प १।४०।३
कुविय (कुपित) ज ३।२६,३९,४७,१०७,१०९, १३३ उ १।२२,१४०
कुवुट्ठिबहुल (कुवृष्टिबहुल) ज १।१८
कुव्वमाण (कुर्वत्) प २।३३,५०,५१,५९
कुव्वर (कूबर) ज ३।३५
कुस (कुश) प १।४२।१ ज २।८९ उ ३।५१,५६
कुसंघयण (कुसंहनन) ज २।१३३
कुसंठिय (कुसंस्थित) ज २।१३३
कुसट्ट (कुशावर्त) प १।९३।२
कुसल (कुशल) ज २।१५; ३।२२,७७,८७,१०९, ११९,१३८,१७८; ५।५ सू २०।७
कुसील (कुशील) उ ३।१२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसीलविहारी (कुशीलविहारिन्) उ ३।१२०

कुसुंभ (कुसुम्भ) प १।४५।२ ज २।३७

कुसुम (कुसुम) प २।३१,४१ ज २।१०,५३,६५, १६२; ३।१२,३०,३५,८८,२२१;४।१६६; ५।५,७,२१,५८ सू २०।७

कुसुम (कुसुम्) कुसुमेंति ज २।१०;४।१६६

कुसुमसंभव (कुसुमसंभव) ज ७।११४।२ सू १०।१२४।२

कुसुमासव (कुसुमासव) ज २।१२

कुसुमिय (कुसुमित) ज २।११;७।२१३

कुसेज्जा (कुशय्या) ज २।१३३

कुहंड (कुष्माण्ड) ज २।४१,४७।१

कुहंडियाकुसुम (कुष्माण्डिकाकुसुम) प १७।२७

कुहण (कुहण) प १।३३।१,१।४७

कुहर (कुहर) ज २।६५

कूड (कूट) प २।१;१५।५५।३ ज १।३४,३५,४१, ४६।१;२।१३३;४।४४ से ४६,४८,५३,७९, ९६,९७,१०५,१०६,१५६।१,१६२ से १६५, १६७,१६९,१७२।१,१८०,१८६,१९२,१९८, २०४,२१०,२१२,२३६ से २४०,२६३,२६९, २७५,२७६;५।१,६ से ८,१३;६।६।१,६।११, १६;७।५८ सू १९।२६

कूडसामली (कूटशालमली) ज ४।२०८

कूडसामलीपेढ (कूटशाल्मलीपीठ) ज ४।२०८

कूडागार (कूटागार) ज २।२०

कूडागारसाला (कूटागारशाला) उ ३।८,२६,९३, १५६

कूडाहच्च (कूटाहत्य) उ १।२२,२५,२६,१४०

कूणिय (कूणिक) उ १।१० से १२,१४,१५,२१, २२,६३ से ७४,८८,८९,९१ से ९५,९८ से १२९,१३१,१३४,१३६,१४०,१४४,१४५;२।४, ५,९,१६,१७;५।१९

कूर (कूर) उ ३।१३०

कूल (कूल) ज ३।१४,१५,१८,५१,५२,९९,१४९, १५०,१६१,१६४;४।३,२५,६४,८८,११०, १४३,२०६,२११

कूलधमा (कूलध्मायक) उ ३।५०

कूवग्गाह (कूपग्राह) ज ३।१७८

कूवमाण (कूप्यत्) उ ३।१३०

केइ (केचित्) प १।४८।४१ ज २।११३

केउबहुल (केतुबहुल) ज २।१२

केउभूय (केतुभूत) ज २।१२

केऊर (केयूर) ज ३।६;५।२१

केक्कय (केकय) प १।८९

केणइ (केनचित्) पू १३।५

केतकिपुड (केतकीपुट) ज ४।१०७

केतु (केतु) प २।४८

केमहालय (कियत्महत्) ज १।७;७।२६ से ३०

केमहालिय (कियत्महत्) प २१।३८,४० से ४२, ४८,६३ से ६६,६९ से ७१,७४,८४ से ९३

केयइ (केतकी) प १।३७।५,१।४३।१

केयइअद्ध (केकयार्द्ध) प १।९३।६

केयूर (केयूर) ज ३।२११

केरिस (कीदृश) सू २०।७

केरिसिय (कीदृशक) प २३।१९५,१९६,१९९ से २०१ ज १।२१,२२,२६,२७,२९,३३,४९,५०; २।७,१४,१५,१७,१८,२०,५२,५६ से ५८, १२२,१२३,१२७,१२८,१३१ से १३३,१३९, १४७,१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१५९, १६१,१६४;४।५६,१००,१०१,१०९,१७०, १७१ उ १।२७

केरिसिय (कीदृशक) प १७।१२३ से १२८,१३०, १३५

केलास (कैलाश) ज ३।१८६,२१७

केलास (कैलाश) सू २०।२ राहु का नाम

केलि (केलि) प २।४१

केवइ (कियत्) प ७।९; ३६।६०,६१,७५

केवइय (कियत्) प ५।८२; ६।३; १२।११,१२; १५।३२; २०।११; ३६।४४ ज १।१७;२।४, ४४,४५; ४।२५७; ६।७,८;१०,११,१५ से

१८,२३ से २५; ७।१,३ से २५,३२,५४,५७, ६०,६२ ६४ से ७३,७६,७९ से ८२,८६ से ९६,९८ से १००,१२७,१७० से १७२,१७४, १८२,१८७,१९८,१९९,२०१ से २०७ चं २।१; ३।२ गु १।६।१; १।७।२ उ ३।१६, १२४,१६४

केवच्चिर (कियच्चिरं) प १८।१ से १०,१२ से ३७, ४१ से ४७,४९ से ५१,५४ से ८२,८४ से ९०. ९३ से १११,११३,११४,११६,११७,११९, १२०,१२२,१२३,१२५ से १२७ ज ७।२१०

केवति (कियत्) प ७।१ से ४,६ से ८,१० से ३०; २८।१।१,२८।४,२९,३८,५०; ३६।६७,७१,७२, ७६

केवतिय (कियत्) व ४।१ से ४९,५६ से ५८,६५, ७२,७९,८८,९२,९८,१०१,१०४,११२,१३१, १४०,१४९,१५८,१६५,१६८,१७१,१७४, १८३,२०७,२१०,२१३,२९४,२९७,२९९, ५।४,६,९,११,१७,२३,२७,२९,३१,३३,३६, ४०,४४,४८,५२,८५,९२,१००,१०३,१०६, ११०,११४,११८,१२८,२३१,२४१; ६।१,२, ४ से २३,२७,४३ से ४५,६० से ६४,६७,६८; १२।७ से १०,१३,१५,१६,२०,२१,२३,२७, ३१.३२; १५।७,८,१४,१५,२२,२३,२७,४०, ४१,८३ से ८५,८९,९१,९४ से ९८,१००, १०३ से १०६,१०८,१०९,११३ से १२०, १२३,१२६,१२७,१२९,१३१,१३२,१३५, १३९ से १४१,१४३; १७।१०६,१०८,११०, १४२,१४३; २०।९,१०,१२,१३; २३।६० से ६२; २३।२,३,१०,१२,१३ १५ से १८; ३४।१३; ३६।८ से २२,३० से ३४,४४ से ४७,५९,६६,७०,७३,७४ ज ७।१७३ सू १।२०,२२,२३,२६,२८ से ३१; २।३; ३।१; ४,५,८,१०; १२।२ से ९; १८।४,८, १५।२ से ७; १८।४ से ६,९,१०,१२,१३,२०, २५ से ३४; १९।४,५,७,८,१०,११,१४,१५, १८ से २१,२५,३०,३२,३४,३५,३७,३८

केवल (केवल) प २०।१७,१८,२९,३४ ज २।७१, ८५; ३।२२३; ७।१३५।१,१८५ सू १८।२३

केवलकप्प (केवलकल्प) प ३६।८१ ज ३।२६,३९, ४७,५३,६४,७२,१३३,१३८,१४५,१७५, १८५,१८८,२०९,२११ उ ३।७,९१

केवल (णाण) (केवलज्ञान) प २९।१७

केवलणाण (केवलज्ञान) प २।६४।१३; ५।२४, १०२,१०७,११९; १३।१३; २०।१८,३३; २९।२; ३०।२

केवलणाणारिय (केवलज्ञानार्य) प १।९९

केवलणाणावरणिज्ज (केवलज्ञानावरणीय) प २३।२५

केवलणाणि (केवलज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३; ५।१,११८,११९; १३।१९; १८।८२; २८।१३६,१४०; ३०।१६,१७

केवलदंसण (केवलदर्शन) प ५।२४,१०२,१०५, १०७,११९; २९।३,१७; ३०।३,१७

केवलदंसणावरण (केवलदर्शनावरण) प २३।१४

केवलदंसणावरणिज्ज (केवलदर्शनावरणीय) प २३।२८

केवलदंसणि (केवलदर्शनिन्) प ३।१०४; ५।१२०; १८।८८; ३०।१६

केवलदिट्ठि (केवलदृष्टि) प २।६४।१३

केवलनाण (केवलज्ञान) प ५।१०५

केवलनाणपरिणाम (केवलज्ञानपरिणाम) प १३।९

केवलनाणि (केवलज्ञानिन्) प ५।११९

केवलबोहि (केवलबोधि) उ ५।४३

केवलि (केवलिन्) प १।१०४,१०८,१२१,१२९; १८।९४,९६,९७,९९; २०।१७,१८,२२,२५,२८ २९,३४,४५; ३०।२५ से २८; ३६।८२,८३, ८३।२ ज २।६३,७१; ३।२२४,२२५ उ ३।१०२,१३५,१४२

केवलिपरियाय (केवलिपर्याय) ज २।८८; ३।२२५

केवलिय (कैवलिक) प ३६।१।१

केवलिसमुग्घाय (केवलीसमुद्घात) प ३६।१,३,७, ११,१५ से १७,३१,३४,३५,४१,७९,८५,

केस (केश) प २।३१ ज २।१३३;३।२६,३९,४७,९२,११९

केसवट्ठिअणह (केशावस्थितनख) ज ३।१३८

केस (कीदृश) ज ३।१२२

केसर (केसर) प १।४८।४५,४९ ज ३।२४;४।३,७,२५;७।१७८

केसरिद्दह (केसरिद्रह) ज ४।२६२

केसलोय (केशलोच) उ ५।४३

केसि (केशि) उ १।२;५।२६

केसुय (किंशुक) ज ३।२५

कोइल (कोकिल) ज २।१५;३।३५ उ ५।५

कोइलच्छदकुसुम (कोकिलच्छदकुसुम) प १७।१२५

कोइला (कोकिला) प १।७९

कोउय (कौतुक) ज ३।९,७७,८२,८५,१२५,१२६,२२२ उ १।१९,७०,१२१;३।११०;५।१७

कोउहल्ल (कौतूहल) ज २।३२

कोऊहल्ल (कौतूहल) ज ५।२६

कोऊहल्लवत्तिय (कौतूहलप्रत्यय) ज ५।२७

कोंकणग (कोङ्कणक) प १।८९

कोंच (क्रौञ्च) प १।७९,८९ उ ५।५

कोंचारव (क्रौञ्चारव) ज ३।८९,१०२,१५६,१६२

कोंचस्सर (क्रौञ्चस्वर) ज २।१६;५।५२

कोंडलग (कुण्डलक) ज २।१२

कोंत (कुन्त) ज ३।३,३५

कोकंतिय (दे०) ज २।३६ लोमड़ी

कोकणद (कोकनद) प १।४६,१।४८।४४

कोकासिय (दे० विकसित) ज ३।१०९

कोकुइय (कौकुचिक) ज ३।७८

कोकंतिय (दे०) प १।६६;११।२१,२३

कोज्जय (कुब्जक) ज ३।१२,८८;५।५८

कोटेज्जमाण (कुट्यमान्) ज ४।१०७

कोट्टणी (दे०) ज ३।३२

कोट्ठ (कोष्ठ) ज ३।३२

कोट्ठग (कोष्ठक) प २।३०,३१,४१

कोट्ठपुड (कोष्ठपुट) ज ४।१०७

कोट्ठय (कोष्ठक) उ ३।९,१२

कोट्ठसमुग्ग (कोष्ठसमुद्ग) ज ३।११।३

कोट्ठसमुग्गयहत्थगय (हस्तगतकोष्ठसमुद्गक) ज ३।११

कोट्ठागार (कोष्ठागार) ज २।६४ उ १।६६,९४,९९

कोडाकोडि (कोटिकोटि) प २।४९,५०,५२,५३,५५,५९,६३;१२।२७,३२;१८।४२,४४,४६,२३।६० से ६४,६६,६८,६९,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ९२,९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१२९ से १३१,१३३,१७६,१७७,१८२,१८३,१८६,१८७,१९० ज २।६,५१,५४,१२१,१२६,१५४,१६०,१६३;७।१,१७०

कोडि (कोटि) प २।३०,४९,५०,५२,६२,६३,६४ ज १।२०,२३,४८;२।६;३।२४,१७८,२२१;४।१,२१,५५,६२,८१,८६,९८,१०८,१७२;५।६८ से ७०;६।८।१;७।१।१ उ १।१४,१५,२१,१२१,१२२,१२६,१३३,१३६,१३७,१४०;५।१०

कोडिकोडि (कोटिकोटि) सू १८।४;१९।१।१,५।३,८।३,११।४,१५।४;१९।१९,२१।५,८,१९।२२।३,१९।३१,३५,३८

कोडिगार (कोटिकार) प १।९७

कोडी (कोटि) सू १९।१४,१५।१,१८,२१।२

कोडीवरिस (कोटिवर्ष) प १।९३।५

कोडुंबिय (कौटुम्बिक) प १६।४१ उ १।१७,१८,९२,१२३,१३१;३।११,१०१;४।१६,१७;५।१०,१५,१६,१८

कोतुक (कौतुक) सू २०।७

कोत्तिय (दे०) उ ३।५०

कोत्थुंभरि (कुस्तुम्बरी) ज ३।११९

कोत्थलवाहग (दे०) प १।५०

कोदंडिम (कुदण्डिम) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,

१. हे० १।२९

६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३
कोदूसा (कोरदूष?) प १।४५।२
कोद्दव (कोद्रव) प १।४५।२ ज २।३७; ३।११६
कोद्दाल (दे०) ज २।८
कोमल (कोमल) ज २।१५; ३।१०६,२८८ उ ३।६८
कोमुई (कौमुदी) ज २।१५
कोरंट (कोरण्ट) ज ३।१७८; ५।५८
कोरंटय (कोरण्टक) प १।३८।१ ज २।१०; ३।१२,८८
कोरग (कोरक) ज २।१२
कोरव्व (कौरव्य) प १।६५
कोरेंटमल्लदाम (कोरण्टमाल्यदामन्) प १७।१२७
कोलट्ठिय (कौलास्थिक) सू १०।१२०
कोलव (कौलव) ज ७।१२३ से १२५
कोलसुणग (कोलशुनक) प १।६६ ज २।३६,१३६
कोलसुणय (कोलशुनक) प ११।२१
कोलसुणिया (कोलशुनिका) प ११।२३
कोलालिय (कौलालिक) प १।६६
कोलाह (कोलाभ) प १।७०
कोलाहल (कोलाहल) प २।४१; ज २।१३१
कोस (क्रोश) प ३६।८१ ज १।७,३५,३७,४२,५१; ४।७,६,१४,१५,२४,३१,३३,३६,३६,४१,४३, ४६,५६,६६,६८,७०,७२,७६,६३,११२,११४, ११५,११६,१२०,१२२,१३४,१३७,१४७, १५३ से १५५,२४२;७।१७७।३,२०७ सू १।१४;१८।११,१२
कोस (कोष) ज २।६४;३।३,१७५; ४।६;७।१७७ उ १।६६,६४,६८
कोसंब (कोशाम्र) प १।३५।१
कोसंबी (कौशाम्बी) प १।६३।३
कोसल (कौशल) प १।६३।२
कोसलग (कौशलक) उ १।१२७ से १३०,१३२
कोसलिय (कौशलिक) ज २।६३ से ६७,७३ से ८२,८६ से ६०
कोसागार (कोशागर) ज ३।८१
कोसिय (कौशिक) ज ७।१३२।३ सू १०।१११
कोसेज्ज (कौशेय) ज ३।२४।३,३७।१,४५।१ १३१।३
कोह (क्रोध) प ११।३४।१; १४।३,५,७,६,११ से १५,१७;२२।२०;२३।६,३५,७० से ७२,१८४ ज २।१६,६६,१३३ उ ३।३४
कोहकसाइ (क्रोधकषायिन्) प ३।६८;१३।१४, १६; १८।६५; २८।१३३
कोहकसाय (क्रोधकषाय) प १४।१,२
कोहकसायपरिणाम (क्रोधकषायपरिणाम) प १३।५
कोहकसायि (क्रोधकषायिन्) प ३।६८
कोहणिस्सिया (क्रोधनिश्रिता) प ११।३४
कोहसंजलना (क्रोधसंज्वलन) प २३।६६,१४०
कोहसण्णा (क्रोधसंज्ञा) प ८।१,२
कोहसमुग्घाय (क्रोधसमुद्घात) प ३६।४२,४४ से ५१

ख

खइरसार (खदिरसारक) प १७।१२५
खओवसमिय (क्षायोपशमिक) प ३३।१
खंजण (खञ्जन) प १७।१२३
खंजण (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
खंजणवण्णाभ (खञ्जनवर्णाभ) सू २०।२
खंड (खण्ड) प १३।२५; १७।१३५; ३३।१३ ज २।१७; ६।६।१;६।७ उ १।१४,१५,२१
खंडग (खण्डक) ज ४।१७२।१; ६।७
खंडगप्पवायगुहा (खण्डप्रपातगुफा) ज ३।१५४,१६१ से १६३
खंडप्पवायकूड (खण्डप्रपातकूट) ज १।४१
खंडप्पवायगुहा (खण्डप्रपातगुफा) ज १।२४; ३।१४६,१५०,१५५ से १५७,१५६ से १६१; ४।३५; ६।१६
खंडप्पवायगुहाकूड (खण्डप्रपातगुहाकूट) ज १।३४
खंडय (खण्डक) प ११।७४
खंडाभेद (खण्डभेद) प ११।७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंडाभेय (खण्डभेद) प ११।७३,७४
खंडिय (खण्डित) ज ७।१३४।१
खंति (क्षान्ति) ज २।६४,७१ ; ३।१०९
खंतुं (क्षन्तुम्) ज ३।१२६
खंद (स्कन्द) ज २।३१
खंदग्गह (स्कन्दग्रह) ज २।४३
खंध (स्कन्ध) प १।४,३५,३६,४७।१,१।४८।१२, २२,३२,३६ ; ३।१७९ ; ५।१२५,१२७,१३४, १३६,१३८,१५४,१६६,१६९,१७२,१८१,२२७ से २३२ ; १०।७ से १४ ; १०।१४।५,६ ; १३।२२।१ ; १६।३९,४३ ; ३०।२६,२८ ज ३।१८,७८,९३,२१२,२१३ ; ४।१४६ ; ५।५ ; ७।१७८ उ १।९७,१२१,१४० ; ३।११४
खंधावार (स्कन्धावार) प १।७४ ज ३।१८,२८, ३१,३२।२,४१,४९,५२,६१,६९,८१,८८,९५, १०१,११५ से ११७,११९,१२१।१,१२२, १२४,१३१,१३५,१३७,१४१,१५१,१५९, १६४,१६७।२,१७२,१८० उ १।११५,११६, १३३,१३४
खंभ (स्तम्भ) ज १।३७ ; ३।९९ से १०१,१९३ ; ४।९,२६,२७,३३,१२०,१४७,२१६,२४२ ; ५।३,४,२८,३२ सू २०।४
खंभच्छाया (स्तम्भछाया) सू ९।४
खग्ग (खड्ग) प १।६५ ; २।४९ ज ३।३१ ; ४।२००।१
खग्गपुरा (खड्गपुरा) ज ४।२१२,२१२।४
खग्गरयण (खड्गरत्न) ज ३।१०९
खचिय (खचित) ज १।३७ ; ३।२११ ; ५।५८
खज्जग (खाद्यक) उ ३।१३०
खज्जलग (दे०) उ ३।११४
खज्जूरसारय (खर्जूरसारक) प १७।१३४
खज्जूरी (खर्जूरी) प १।४३।३
खज्जूरीवण (खर्जूरीवन) ज २।९
खट्टोदय ('खट्ट' उदक) प १।२३
खड्डाबहुल ('खड्डा' बहुल) ज १।१८
खण (क्षण) ज ७।११२ सू १०।१२९।५
√खण (खन्) खणंति ज ५।१३
खणित्ता (खनित्वा) ज ५।१३
खतय (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
खत्तमेघ ('खत्त'मेघ) उ २।१३१
खत्तिय (क्षत्रिय) ज २।६५ ; ५।५,४६
√खम (क्षम्) खमई ज २।६७ खमंतु ज ३।१२६ खामेमु ज ३।१२६
खम (क्षम) ज २।६४
खमा (क्षमा) ज ३।१०९
खय (क्षय) प ३३।१।१ ज ३।१२३ उ १।१३९
खयकर (क्षयकर) ज ३।११७
खर (खर) प १।१८,२० ; ११।१६ से २० ज २।१३३
खरमुही (खरमुखी) ज ३।१२,३१,७८,१८०,२०९
खरय (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
खरोट्ठी (खरोष्ट्रिका) प १।९८
खल (खल) ज २।६९
खलंत (स्खलत्) ज २।१३३
खलु (खलु) प १।४८।५२ ; ६।८०।१ ; १७।१५०, १५२,१५५ ; २३।३,६ ; ३६।८२ ज १।४६ सू १।१२ उ १।५ ; २।२ ; ३।२ ; ४।२ ; ५।२
खल्लूड (खल्लूट) प १।४८।७
खव (क्षपय्) खवेइ सू १९।२२
खवइत्ता (क्षपयित्वा) प ३६।९२
√खवय (क्षपय्) खवयति प ३६।९२ खवेइ सू १९।२२।१८ खवेति प ३६।९२
खवय (क्षपक) प २३।१९१,१९२
खवल्लमच्छ (दे०) प १।५६
खवेत्ता (क्षपयित्वा) प ३६।९२
खस (खस) प १।८९
खसर)खसर) ज २।१३३
खहचर (खेचर) प १।५४,७७,८१ ; ३।१८३ ; ४।१४९ से १५७ ; ६।७१,७६,७८,९४ ; ११।८, १७,३५,४७,५३,६० ज २।१३१
खाइम (खाद्य) उ ३।५०,५५,१०१,११०,१३४ ; ४।१६

खाइय (खादित) उ १।५१,५४,७६,७६
खाणु (स्थाणु) ज २।३६; ४।२७७
खाणुबहुल (स्थाणुबहुल) ज १।१८
खात (खात) प २।३०
खाय (खात) प २।३१,४१ ज ३।३२
खार (क्षार) प १।७६
खारतउसी (क्षारत्रपुषी) प १७।१३०
खारतउसीफल (क्षारत्रपुषीफल) प १७।१३०
खारमेघ (क्षारमेघ) ज २।४२,१३१
खारोदय (क्षारोदक) प १।२३
खासीय (खासिक) प १।८६
खिखिणी (किङ्कणी) ज ३।२५
√खिस (खिस्) खिसंति उ ३।११७
खिसिज्जमाण (खिस्यमान) उ ३।११८,१२३
खिप्पामेव (क्षिप्रमेव) प २८।१०५; ३४।१६,२१, २४ ज २।९५,९७,१०१,१०५,१०७,१०६, १११ ११४,११५,१४१ से १४५; ३।७,१२, १५,१८,१६,२१,२५,२८,३१,३२,३४,३८, ३६ ४६,४६,५२,५३,५८,६१,६२,६६,६६, ७०,७४, ७७,८०,८३,६१,६६,६६,१००, ११५,११८,१२१,१२४,१२८,१३२,१४१, १४२ १४७,१६० से १६५,१६८,१७३,१७५, १८०,१८१,१८३,१६१,१६६,२०७,२१२, २१३; ५।३,७,१४,१५ २२,२८,५४,६८ से ७०,७२,७३
खीण (क्षीण) ज २।६; ३।२२५
खीणकसाय (क्षीणकषाय) प १।१०२,१०४ से ११०,११५,११७ से १२३
खीर (क्षीर) प १।४२।१ लौकी
खीर (क्षीर) प १५।५५।१; १७।११६,१२८ सू १०।१२० उ ३।११४,१३०
खीरकाओली (क्षीरकाकोली) प १।४८।५
खीरपूर (क्षीरपूर) प १७।१२८
खीरमेह (क्षीरमेघ) ज २।१४२,१४३
खीरवर (क्षीरवर) सू १६।३१
खीरिणी (क्षीरिणी) प १।३५।२
खीरोद (क्षीरोद) ज २।६७,६८
खीरोदग (क्षीरोदक) ज २।६७ से १००,१११, ११२; ५।५५
खीरोदय (क्षीरोदक) प १।२३ ज ५।५५
खीरोदा (क्षीरोदा) ज ४।२१२
खीरोया (क्षीरोदा) ज ४।२१२
खीलग (कीलक) ज ७।१३३।२
खीलगसंठिय (कीलकसंस्थित) सू १०।४८
खीलच्छाया (कीलछाया) सू६।४
खीलिया (कीलिका) प २३।४५,६८
खु (खलु) ज ३।२४
खुज्ज (कुब्ज) प १५।३५; २३।४६ ज ३।११।१,८७
खुज्जा (कुब्जा) उ १।१६
खुड्ड (क्षुद्र) प ३६।८१ ज १।७; ४।६०,८३,११३
खुड्डग (क्षुद्रक) ज ४।१३६
खुड्डतर (क्षुद्रतर) ज ४।५४
खुड्डाग (क्षुद्रक) प १८।६५
खुड्डाय (क्षुद्रक) सू १।१४
खुड्डिया (क्षुद्रिका) ज ४।६०,८३,११३
खुभिय (क्षुभित) ज २।६५
खुर (क्षुर) ज ३।३०; ७।१७८
खुरप्प (क्षुरप्र) प २।२० से २७; १५।५ ज ३।३०
खुल्लग (क्षुल्लक) प १।४६
खुहा (क्षुधा) ज ३।२२१।१ उ ३।१२८
खेड (खेट) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८,३१, ८१,१८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१
खेडग (खेटक) ज ३।३५
खेडय (खेटक) ज ३।३१
खेड्डकारग (खेलकारक) ज ३।१७८
खेत्त (क्षेत्र) प २।६४; ३।१।२; १२।३२; १४।५, १४।१८।१; १५।५२;१७।१०६ से १११; २८।२०,३२,६६; ३३।२,३,१०,१२,१३,१५ से १८; ३६।५६,६०,६६ से ६८,७० से ७४ ज २।६६; ३।३; ७।२० से २५,२६,५२,५४, ७६ से ८२,६५,६६ सू १।१४; २।२; ३।१;

६।१ ; ६।१ ; १०।४,५,१७३ ; १९।२२।२५

खेत्तओ (क्षेत्रतस्) प ११।४८,५० ; १२।७,८,१०, १२,१६,२०,२७,३२ ; १८।३,२६,२७,३७,३८, ४१,४३,४५,५६,६४,७७,८३,१०८,११७ ; २८।५,५१ ; ३५।४ ज २।६६

खेत्ततो (क्षेत्रतस्) प १८।९०,९२,९५

खेत्ताणुवाय (क्षेत्रानुपात) प ३।१२५ से १७३, १७५,१७७

खेत्तारिय (क्षेत्रार्य) प १।९२,९३

खेत्तोववातगति (क्षेत्रोपपातगति) प १६।२५

खेत्तोववायगति (क्षेत्रोपपातगति) प १६।२४ से ३०।३२

खेम (क्षेम) प २।३०,३१,४१

खेमकर (क्षेमंकर) ज २।५९,६० सू २०।८,२०।८।७

खेमंधर (क्षेमंधर) ज २।५९,६१

खेमपुरा (क्षेमपुरा) ज ४।१८१,२००।१

खेमा (क्षेमा) ज ४।१७७,२००।१

खेल (क्ष्वेल) प १।८४

खेल्लणग (खेलनक) उ ३।११४

खेल्लणय (खेलनक) उ ३।१३०

खेवणी (क्षेपणी) ज ३।२१

खोत (क्षोद) प १५।५५।१

खोतोदय (क्षोदोदक) प १।२३

खोदवर (क्षोदवर) सू १९।३१

खोदोद (क्षोदोद) सू १९।३१

खोद्दाहार (क्षौद्राहार) ज २।१३५ से १३७

खोम (क्षौम) ज ४।१३ ; ५।६७ सू २०।७

खोमिय (क्षौमिक) सू २०।७

ग

गइ (गति) प २।४८ ज २।१५,७१,१३३ ; ३।३, १३८,१७८ ; ५।२१ ; ७।२१,२५,५५,५८,८१, १७५,१७८ च ४।१ सू १६,१।८।१ ; १९।२२।२२

गइकल्लाण (गतिकल्याण) ज २।८१

गइनामणिहत्ताउय (गतिनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८

गइपरिणाम (गतिपरिणाम) प १३।२३

गइप्पवाय (गतिप्रपात) प १६।१७,५५

गइरइय (गतिरतिक) ज ७।५५,५८

गंगदत्त (गङ्गदत्त) उ ३।१३,१६०

गंगप्पवायकुंड (गंगाप्रपातकुण्ड) ज ४।२५,२६,३१, ३५

गंगा (गंगा) ज १।१८,२०,४८ ; २।१३१,१३३, १३४ ; ३।१,१४,१५,१८,१४१,१४३ से १५१, १६१,१६४,१७० ; ४।१३,२३ से २६,३३ से ३६,१६७,१७७,२७४ ; ५।५५ ; ६।१६ सू २०।७ उ १।६७ ; ३।५१,५६,६८

गंगाकुंड (गंगाकुण्ड) ज १।५१ ; ४।१७५ १७६

गंगाकूड (गंगाकूट) ज ४।४४

गंगाकूल (गंगाकूल) उ ३।५०

गंगादीव (गंगाद्वीप) ज ४।३१,३२

गंगादेवी (गंगादेवी) ज ३।१४०,१४१,१४३,१४५, १४६

गंगावत्त (गंगावर्त्त) ज २।१५

गंगावत्तणकूड (गङ्गावर्तनकूट) ज ४।२३

गंज (गञ्जा) प १।३७।५

गंठि (ग्रन्थि) प १।४८।३८ ईख

गंड (गण्ड) प १।६५ ; २।५० ज ४।१३ ; ५।६७ ; ७।१७८

गंडतल (गण्डतल) प २।३०,४९

गंडयल (गण्डतल) प २।३१,४१

गंडलेहा (गण्डरेखा) ज २।१५

गंडीपद (गण्डीपद) प १।६२

गंडीपय (गण्डीपद) प १।६५

गंडूयलग (गण्डूपदक) प १।४९

गंता (गत्वा) प ११।७२ ; ३६।९२ ज ३।२५,३८, ४६,१३२

गंतूण (गत्वा) प २।६४।२,३

गंध (गन्ध) प १।४ से ९ ; २।३०,३१,४१,४९ ; ३।१८२ ; ५।१०,१२,१४,१६,१९,२०,२४,२८,

३०,३२,३४,३७,३६,४१,४५,५३,५६ ५६,
६१,६३,६८,७१,७४,७६,७८,८३,८६,८६,
६१ ६३,६७,१०१,१०४,१०७,१०६,१११,
११५,११६,१२६,१३८,१५०,१५२,१५४,
१६०,२०७,२११,२१४,२२८,२४२,२४४;
१०।५३।१;११।५५;१५।३८,४२,१५।५५।२;
१७।११४।१,१७।१३२ से १३४;२३।१५ १६,
१६,२०,१६०;२८।२०,३२,६६;३६।८०,८१
ज १।१३;२।७,१६,१८,१२०,१४२ १६४,
२११;३।३,७,६,११,१२,२१,३४,७८,८२,
८५,८८,१०६,१८०,१८७,२०६,२११,२१८,
२२२;४।८२,१०७,१०६;५।५,७,२२,२६,
३२,५५,५८;७।२०६ सू २०।७ उ १।३५;
३।५०,११०;५।२५

गंधओ (गन्धतस्) प १।५ से६;११।५६;२८।८,
२०,२६,३२,५४,५६

गंधकासाइय (गन्धकासायिक) ज ३।६,२११,२२२;
५।५८

गंधचरिम (गन्धचरम) प १०।४८।४६

गंधट्टय (गन्धाट्टक) ज ५।१४

गंधणाम (गन्धनामन्) प २३।३८,४८,१०६,१०७

गंधतो (गन्धतस्) प १।७ से ६

गंधदेवी (गन्धदेवी) उ ४।२।१

गंधद्धुणि (गन्धघ्राणि) ज २।१२

गंधपज्जव (गन्धपर्यव) ज २।५१.५४,१२१,१२६,
१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,१६३

गंधपरिणाम (गन्धपरिणाम) प १३।२१,२७

गंधमंत (गन्धवत्) प ११।५२,५५;२८।५,५१

गंधमायण (गन्धमादन) ज ४।१०२,१०४ से १०८,
१६२,२०४,२१५

गंधमायणकूड (गन्धमादनकूट) ज ४।१०५

गंधवट्टिभूत (गन्धवर्तिभुत) प २।३०,३१,४१
ज ३।७,८८,१८४,१६३;५।५७ सू २०।७

गंधवट्टिभूय (गन्धवर्तिभुत) ज ५।७

गंध (वासा) (गन्धवर्षा) ज ५।५७

गंधव्व (गन्धर्व) प १।१३२;२।४१,४५;६।८५
ज ३।११५.१२४,१२५;७।१२२।३ सू १०।८४।३

गंधव्वछाया (गन्धर्वछाया) प १६।४७

गंधव्वलिवि (गन्धर्वलिपि) प १।६८

गंधव्वाणीय (गन्धर्वानीक) ज ५।४१,४४

गंधहत्थि (गन्धहस्तिन्) उ १।६६ से ६६,१०२ से
११६,१२७,१२८

गंधादेस (गन्धादेश) प १।२०,२३,२६ २६,४८

गंधावइ (गन्धापातिन्) ज ४।२६६

गंधावइवट्टवेयड्ढपव्वय (गन्धापातिवृत्तवैताढ्य-
पर्वत) ज ४।२६२

गंधावति (गन्धापातिन्) प १६।३०

गंधाहारग (गन्धारक) प १।८६

गंधिल (गन्धिल) ज ४।२१२,२१२।३

गंधिय (गन्धिक) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,१२,
८८,२११,२२१;४।२६;५।७,५८ उ ३।१३१

गंधिलावई (गन्धिलावती) ज ४।१०३,२१२,
२१२।३

गंधिलावइकूड (गन्धिलावतीकूट) ज ४।१०५

गंधोदग (गन्धोदक) ज ५।७

गंधोदय (गन्धोदक) ज ३।६,२२२

गंभीर (गम्भीर) प १।५१;२।२० से २७,३०,३१,
४१. ज २।१५,६८;३।३५,१३८।१;४।३,१३,
२५;५।२२ से २४;७।१७८ सू २०।७

गंभीरमालिणी (गम्भीरमालिनी) ज ४।२१२

गगण (गगन) ज १।२६;२।६८;३।१७८;४।४६

गगनतल (गगनतल) प २।४८ ज ३।१७८;५।४३
उ ५।५

गग्गर (गद्गद) ज ७।१७८

√गच्छ (गम्) गच्छ ज ३।८३,१७० उ १।५४
गच्छइ ज ४।२६८ २७४;५।२२,२६;७।२० से
२५,७६ से ८४,६५ ६८ से १००,१३५;
७।१३५।१ चं २।१ सू १।६।१ गच्छं
ज ३।१५४,१७० गच्छंति प ६।६६.१०५,
११०;३६।८३ ज २।४६;७।३६ से ४८
गच्छति प १६।३४,४१,४२,४४,४५,४७,५१,
५४;३६।८२,८३।१ सू २।२

गच्छह ज ३।१२५,१२७ उ १।४४ गच्छामि ज २।६०;३।२६,३६,४७,५६,१३३,१४५; ५।२२ उ १।१७;३।२६ गच्छामो ज ३।१३८; ५।३ गच्छाहि ज ३।७६,१२७,१२८,१५१ गच्छिहिइ उ १।१४१;३।१८;४।२६;५।४३ गच्छिहिति ज २।१३५ से १३७ गच्छेज्ज प ३६।९१

गच्छमाण (गच्छत्) सू २।२;२०।२

गच्छित्ता (गत्वा) ज ५।१४

√गज्ज (गर्ज्) गज्जंति ज ५।७

गज्जिय (गर्जित) ज ३।१०४,१०५;७।१७८

गड्ड (गर्त) ज २।३८,१३१;३।८८ उ ३।५५

गढिय (ग्रथित) उ ३।११४,११५,११९

गण (गण) प २।३०,३१,४१,४८,६० से ६३; २।६४।१५ ज १।३१; २।८,१२,१३,२०,३६, ४१,६४;४।३,२५ सू १९।२२।१०,२१; २०।९।४ उ ४।११;५।५

गणग (गणक) ज ३।९,७७,२२२

गणणा (गणना) चं १।३

गणधम्म (गणधर्म) ज २।१२९

गणनायग (गणनायक) ज ३।९,७७,२२२

गणराय (गणराज) उ १।१२७ से १३०,१३२

गणहर (गणधर) प १६।५१ ज २।७३,९५,९६, १०० से १०२,१०४ सू २०।९।४

गणहररचियगा (गणधररचितका) ज २।१०५ से ११२,११४

गणावच्छेइय (गणावच्छेदक) प १६।५१

गणि (गणिन्) प १६।५१ ज ३।३५, १६७ चं १।३

गणिज्जमाण (गण्यमान) सू १२।३ से ६,१५

गणितलिवि (गणितलिपि) प १।९८

गणिय (गणित) ज २।४,६४;३।१६७।३;६।७,८

गणियपय (गणितपद) ज ६।८।१

गणिया (गणिका) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८, ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३ उ ५।१०, १७

गत (गत) प २।३०,३१,६३;१७।१०७,१५१, १५४;२१।५२,५५,७७;३४।२०;३६।८३।२, ३६।८६,८८ सू २।३,९।३;१३।७,९,१२,१४ से १६;२०।७

गति (गति) प ३।११,३।३८,३९;१०।५३।१; १६।३९,४०,४३,४६,५५;१७।११४।१; १८।१।१;२३।१३ से २३;३६।८३।२ सू २।३;१५।१,३७;१८।८

गतिचरिम (गतिचरम) प १०।३१ से ३३

गतिणाम (गतिनामन्) प २३।३८,३९,८१ से ८४,१४६,१४८,१४९,१७१,१७२

गतिणामनिहत्ताउय (गतिनामनिधात्तायुष्क) प ६।११९,१२२

गतिपरिणाम (गतिपरिणाम) प १३।२,३,१४,१६ से २१,२३

गतिमाता (गतिमात्रा) सू १५।५ से ७

गतिरतिय (गतिरतिक) सू १९।२३,२६

गतिसमावण्ण (गतिसमापन्न) सू १०।१७०;१५।५ से १३

गतिसमावण्णग (गतिसमापन्नक) सू १९।२३,२६

गत्त (गात्र) प २।३१ ज ३।९,२२२;४।१३; ५।५;७।१७८

गद्दभ (गर्दभ) प १।६३

गब्भ (गर्भ) प ९।२६;१७।१६६,१६७,१६९ से १७२ ज २।८५;३।३ उ १।५० से ५२, ५४,७४,७६,७७,७९

गब्भवक्कंतिय (गर्भावक्रान्तिक) प १।६०,६६, ७५,७६,८१,८२,८४,८५,१२९;३।१८३; ४।११० से ११२,११९ से १२१,१२८ से १३०,१३७ से १३९,१४६ से १४८,१५५ से १५७,१६२ से १६४;६।२२,२४,६५,६६, ७१,७२,८४,९७,९८,१०८,११३;९।७,१०, १७,२३;१६।२८;१७।४३,४७,६३,६४,६६, ६७,८९;२१।९,१०,१२,१३,१५ से २०,३१, ३४,३६,४३ से ४८,५३,५४,७२

गब्भवसहि (गर्भवसति) प २।६४
गब्भिणी (गर्भिणी) ज ३।३२
गम (गम) प १५।१४३; २३।१६७ ज २।५६, १५९; ३।३, १८३, २०३, २१७; ४।१३९, १४०।१, १९७, २४३; ५।४० सू ८।१
गमण (गमन) ज ३।९, ३५, ८५, १८३ उ १।४२, ८८; १२६; ३।१२७, १२८
गमणिज्ज (गमनीय) ज २।६४; ३।१८५, २०९; ५।५८
गमय (गमक) प ५।१७९; १७।२८, ३५
गमित्तए (गन्तुम्) उ ४।११
गय (गज) प २।३० ज २।१५, ६५; ३।१५, १७, २१, २२, ३१, ३४ से ३६, ७७, ७८, ९१, १७३, १७५, १७७, १७८, १९९ उ १।१२३, १३८; ५।१८
गय (गत) प २।४१; १७।१०९, १११; २१।५५ ज २।१५; ३।१८, १३८; ७।१३३।३, १३५ चं १।१, २ उ १।२५, ४६, ५१, ५४, ६४, ७६, ७९, ८८, ८९, ९७, १११-११२, १२१, १३८; २।९; ३।१५, ३५, ५१, ५६, ८४, १२१, १६२; ४।२४; ५।१७, २०, २७, ३१, ४०
गयंद (गजेन्द्र) चं १।१
गयकण्ण (गजकर्ण) प १।८६
गयकलभ (गजकलभ) प १७।१२३
गयछाया (गजछाया) प १६।४७
गयण (गगन) ज ३।३
गयणलल (गगनतल) ज ५।४३
गयतालुय (गजतालुक) प १७।१२६
गयदंत (गजदन्त) ज ३।३५; ४।१०३; ७।१३३।३
गजदंतसंठिय (गजदंतसंस्थित) सू १०।५१
गयपुर (गजपुर) प १।९३।२
गयमारिणी (गजमारिणी) प १।३७।५
गयरूवधारि (गजरूपधारिन्) ज ७।१७८ सू १८।१४
गयवइ (गजपति) प २।४९ ज ३।१७, १२६।२, १७७, १८३, २०१, २१४ उ १।१२४, १३१; ५।१९
गयवति (गजपति) ज ३।१२६।२
गयवर (गजवर) ज ३।९१
गयविक्कम (गजविक्रम) ज ७।१३३।३
गयविक्कमसंठिय (गजविक्रमसंस्थित) सू १०।५३
गरह (गर्ह्) गरहंति उ ३।११७ गरहेहि उ ३।११५
गरहिज्जमाण (गर्ह्यमान) उ ३।११८
गराइ (गर) ज ७।१२३ से १२५
गरुय (गुरुक) प १।४ से ९; ३।१८२; ५।५, ७, २०९; १५।१४, १६, २७, २८, ३२, ३३; २८।२०, ३२, ६९
गरुयत्त (गुरुकत्व) प १५।४४, ४५
गरुयलहुयपज्जव (गुरुकलघुकपर्यव) ज २।५१, ५४, १२१, १२६, १३०, १३८, १४०, १४९, १५४, १६०, १६३
गरुल (गरुड) प २।३०, ३१ ज ३।१०९; ४।२०८ चं १।२
गरुलवूह (गरुडव्यूह) उ १।१४, १५, २१, १३६, १४०
गल (गल) ज २।१५; ७।१७८
गल (गलत्) चं १।१
√गल (गल्) गलइ उ १।५१
गलय (गलत्) ज ७।१७८
गललाय (गलल्लात) ज ३।१७८; ७।१७८
गल्ल (गल्ल) ज ५।१८
गवक्ख (गवाक्ष) ज १।९; २।२०; ४।६
गवय (गवय) प १।६४ ज २।३५
गवल (गवल) प २।३१, १७।१२३ ज ३।२४
गवलवलय (गवलवलय) प १७।१२३
गवेलग (गवेलक) ज ३।१०३
गवेलय (गवेलक) ज २।१३१
गवेस (गवेष्) गवेसइ उ ३।११४
गवेसग (गवेषक) ज ३।१०९
गवेसणा (गवेषणा) ज ३।२२३ सू २०।७
गवेसित्ता (गवेषयित्वा) उ ३।११४

गव्विय (र्वित) ज ७।१७८

गह (ग्रह) प १।१३३; २।२० से २७,४८ से ५१, ६३ ज १।२४; ७।१७७।३,१८०,१८१,१८६, १६७ सू १०।१७१ से १७३; १५।१,१०,१३; १८।४,१८,१६,३७; १६।१,५।२,८।२, १६।२२।३,६,६,१०,२१,२०,२६,३१; २०।८

गहगण (ग्रहगण) ज ३।३,१७,२१,३४,१७७,२२२; ७।५५,५८,१८०,१८१,१६७, सू १८।१८; १६।२२,२३,२६;२०।७ उ २।१२;५।४१

गहण (गहन) प १।४८।५३ से ५५; ११।५३,५५, ५७,५६,७१;१८।६५;२२।१५,८० उ १।७१

गहणया (ग्रहण) उ १।१७

गहत्त (ग्रहत्व) उ ३।८३

गहर (दे०) प १।७६

गहविमाण (ग्रहविमान) प ४।१८६ से १६४ ज ७।१७८।१,१६१,१६२ सू १८।८,११,१५, ३१,३२

गहाय (गृहीत्वा) प ३६।८१ ज ३।८८ उ १।६७; ३।५०

गहिऊण (गृहीत्वा) ज ३।२४

गहित (गृहीत) सू २०।२,६।२ उ ३।५५

गहिय (गृहीत) प २।४१; ११।७१,७२ ज ३।१२, ७७,८८ १०७,१२४;५।७,५८ उ १।१३८; ३।६३,७०,७३

गहिर (गंभीर) प २।४

गा (गै) गायति ज ५।५७

गाउय (गव्यूत) प १।७५; २।३४;२१।४२,४४,४६; ४७।१,२; २।४८;३३।२ से ६ ज २।३,४५; ४।८३,१०३,११०,१४३,१७८,२०३,२२६; ७।६०,१८२

गाउयपुहत्तिय (गव्यूतपृथक्त्विक) प १।७५

गागर (दे) प १।५६ ज ३।३

गात (गात्र) ज ३।२११;५।५८

गाम (ग्राम) प १।७४;१६।२८;२१।६२,६३ ज २।२२,६६ ७०,१३१;३।१८,३१,३२,८१, १६७।२,१८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१; ५।३६

गामकंटय (ग्रामकण्टक) उ ५।४३

गामणिद्धमण (ग्रामनिर्द्धमण) प १।८४

गाममारी (ग्राममारी) ज २।४३

गामरोग (ग्रामरोग) ज २।४३

गाय (गो) प १।१४

गामाणुगाम (ग्रामानुग्राम) उ १।२,१७।३।२६,६६, १३२;५।३६

गामि (गामिन्) उ १।१११,११२

गाय (गो) प १।१४

गाय (गात्र) प १७।१३४ ज २।१५,१८;३।८२, २११,५।५८ उ ३।५०

गायंत (गायन्) ज ३।१७८

गारव (गौरव) ज ३।३

गारविय (गौरवित) सू २०।६।२

गालण (गालन) उ १।५१,७६

गालित्तए (गालयितुम्) उ १।५१,७६,७७

गालेमाण (गालयत्) उ ५।२५

गावी (गो) ज २।३४

गाह (ग्राह) प १।५५,५८

गाह (गाह्) गाहेहिंति ज २।१३४

गाहा (गाथा) प १।४८;२।४०;१५।५५ सू १।१७, १६,२५

गाहावइ (गृहपति) ज ४।१८१,१८३,१८४,१८६, १६५ उ ३।१०,११,१३,२१,१५८,१६०,१६६; ४।७ से ६,१६,१८

गाहावइकुण्ड (गृहपतिकुण्ड) ज ४।१८२,१६४

गाहावइणी (गृहपत्नी) उ ४।६

गाहावइदीव (गृहपतिद्वीप) ज ४।१८२

गाहावइरयण (गृहपतिरत्न) ज ३।११६,१२०, १७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६,२१६, २२०

गाहावइरयणत्त (गृहपतिरत्नत्व) प २०।५८

गाहेत्ता (ग्राहयित्वा) ज २।१३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिण्ह (ग्रह्) गिण्हइ ज ५।६०,६६ उ १।५७ गिण्हंति ज ५।१४,१७,५५ उ १।४५ गिण्हह उ १।४४ गिण्हेइ उ १।४८
गिण्हउकाम (ग्रहीतुकाम) उ १।१०५
गिण्हमाण (गृह्णत्) प ११।७०
गिण्हित्तए (ग्रहीतुम्) उ १।११९
गिण्हित्ता (गृहीत्वा) ज ५।१४ सू २०।२ उ १।४५
गिण्हेऊणं (गृहीत्वा) उ ३।९८
गिण्हेत्ता (गृहीत्वा) उ १।४८
गिम्ह (ग्रीष्म) ज २।६४,७०;७।१६४,१६७ सू ८।१;१०।७१ से ७४;१२।१४ उ ५।२५
गिरिकुमार (गिरिकुमार) ज ३।१२३,१२६
गिरा (गिरा,गिर्) ज २।१५
गिरि (गिरि) ज २।१५,६५,१३१,१३३,१३४; ३।३२,७६,७७,१०९,१२६।४,१२८,१३८, १५१,१७०,१८५,२०९,२२१;४।२३४,२४०
गिरिकण्णइ (गिरिकर्णी) प १।४०।५ अपराजिता
गिरिदरी (गिरिदरी) ज ३।१०९
गिरिराय (गिरिराज) ज ४।२६०।१ सू ५।१
गिरिवर (गिरिवर) ज २।६५;३।३,८८
गिल्लि (दे०) ज २।३३
गिह (गृह) ज ३।३२,१८३,१८६ उ १।४२,४४, १०८;३।२९,१००,१०१,१३१,१४१,१४८; ४।१२,१५
गिहिलिंगसिद्ध (गृहलिङ्गसिद्ध) प १।१२
गीत (गीत) प २।३०,३१,४१ सू १८।२३; १९।२३,२६
गीतजस (गीतयशस्) प २।४५,४५।२
गीतरति (गीतरति) प २।४५
गीय (गीत) प २।४१,४९ ज १।४५,२।६५; ३।८२,१८५,१८७,२०४,२०९,२१८;५।१, १९;७।५५,५८,१८४
गीयरइ (गीतरति) प २।४५।२
गीवा (ग्रीवा) ज २।१५
गुंजंत (गुञ्जत्) ज २।१२
गुंजद्ध (गुञ्जार्ध) ज ३।३५,१८८
गुंजद्धराग (गुञ्जार्धराग) प १७।१२६
गुंजालिया (गुञ्जालिका) प २।४,१३,१६ से १९, २८;११।७७
गुंजावल्ली (गुञ्जावल्ली) प १।४०।४ घूंघची
गुंजावाय (गुञ्जावात) प १।२९
गुच्छ (गुच्छ) प १।३३।१,३७;१।४८।९,६१ ज २।१२,१३१,१४४,१४६ उ ५।५
गुच्छवहुल (गुच्छबहुल) ज १।१८
गुज्झ (गुह्य) उ ३।११
गुज्झंतर (गुह्यान्तर) ज ४।२१
गुण (गुण) प २।६४।१३,१७;५।३६ से ३८,५८ से ६०,७३ से ७५,८८ से ९०,१०६ से १०८, १४९,१५०;१५।१४ से १६,२७,२८,३२,३३, ५७;२०।१७,१८,३४;२८।२०,२६,३२,६६; ३४।२० ज २।१५,६५;३।३,३२,११७।१, ११९,१८६,२०४,२०९;५।५६,६८,७०
√**गुणड्ढ** (गुणाढ्य) ज ३।३२।१
गुणनिप्फण्ण (गुणनिष्पन्न) उ १।६३
गुणरयण (गुणरत्न) ज ५।५८
गुणसिलय (गुणशिलक) उ १।१,२;३।४,२१,२४, ८९,१५५,१६८;४।४,६,१३,१८
गुणसेढि (गुणश्रेणि) प ३६।९२
गुणसेढीय (गुणश्रेणिक) प ३६।९२
गुणहर (गुणधर) ज ३।१२६।१
गुणित (गुणित) सू १९।२२।२६
गुणिय (गुणित) ज २।६
गुणेत्ता (गुणयित्वा) ज ७।३१ सू ४।४,७
गुणोववेय (गुणोपेत) ज २।१४
गुत्त (गुप्त) प २।३०,३१,४१ ज २।६८;३।३५
गुत्तबंभयारि (गुप्तब्रह्मचारिन्) ज २।६८ उ २।९; ३।१३,८९,१०२,११३,११५,१४९,१६०; ४।२०,२२;५।२७,३८,४३
गुत्ति (गुप्ति) प १।१०१।१० ज २।७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुत्तिंदिय (गुप्तेन्द्रिय) ज २।६८ उ ३।६६
गुमगुमंत (गुमगुमायमान) ज २।१२
गुम्म (गुल्म) प १।३३।१;१।३८।३,१।४८।६१ ज २।१०,१२,१३१,१४४ से १४६;३।२२१; ४।१६६ उ ५।५
गुम्मबहुल (गुल्मबहुल) ज १।१८
गुरु (गुरु) प १।१।१ ज २।१३३
गुरुजण (गुरुजन) उ १।७२
गुरुजणग (गुरुजनक) उ १।८८,६२
गुल (गुड) प १७।१३५ ज २।१७
गुलगुलाइय (गुलगुलायित) ज २।६५;३।३१; ५।५७
गुलिया (गुलिका) प २।३१ ज ७।१७८
गुलगुलाइय (गुलगुलायित) ज ७।१७८
गुहा (गुफा) ज १।२४;३।३२
गूढदंत (गूढदन्त) प १।८६
गूढछिराग (गूढशिराक) प १।४८।३६
√गेण्ह (ग्रह्) गेण्हइ प ११।७१ ज २।११३; ३।२६,३६,४७,५६,६४,७२,१३३,१३८, १४५;५।५५ उ ३।५१ गेण्हंति प ११।८१; २८।२२ से २४,३४ से ३६,३६,४०,४२,४५, ६८,६६,७१;३४।६ ज २।११३;५।५५ गेण्हति प ११।४७ से ७०,८०,८१,८३,८५ सू २०।२
गेण्हमाण (गृह्णत्) सू २०।२
गेण्हित्ता (गृहीत्वा) ज ३।२६,३६ उ ३।५१
गेय (गेय) ज ५।५७
गेरुय (गैरिक) प १।२०।४
गेविज्ज (ग्रैवेय) उ १।१३८
गेविज्जग (ग्रैवेयक) ज ३।६,३६,२२२
गेविज्जविमाण (ग्रैवेयकविमान) उ ५।४१
गेवज्ज (ग्रैवेय) प २।४६,६३;३४।१६,१८ ज ३।७७,१०७,१२४;७।१७८
गेवेज्जग (ग्रैवेयक) प १।१३६,१३७;२।४६,६० से ६२;६।६६,६८;१५।८८,६१,६६,१०४,१०८, ११२,११५,११६,१२२,१२५,१२७,१२६, १३६;२१।५५,६२,७१,६३;३३।२५
गेवेज्जगविमाण (ग्रैवेयकविमान) प २।६०; ३०।२६
गेह (गेह) ज ६६ सू ४।२,३
गेहावण (गेहायतन[1]) ज २।२१
गेहावणसंठित (गेहापणसंस्थित) सू ४।२
गो (गो) ज ३।१०३
गोकण्ण (गोकर्ण) प १।६४,८६ ज २।३५
गोक्खीर (गोक्षीर) प २।६४
गोखीर (गोक्षीर) प २।३१ ज ४।१२५;५।६२; ७।१७८
गोजलोय (गोजलौका) प १।४६
गोड (गौड) प १।८६
गोण (गौण) प १।६४;११।१६ से २० ज २।३५
गोणस (गोनस) प १।७१
गोतम (गौतम) प ३६।१२,८१ चं १।४
गोत्त (गोत्र) प ३६।६२ ज १।१५;७।१२७।१, १३२।४,१६७।१ चं ५।३,१० सू १।५;६।४; १०।६२ से ११६; १६।२२।३
गोत्तफुसिया (गोत्रस्पर्शिका) प १।४०।५
गोध (गोध) प १।८६
गोधूम (गोधूम) प १।४५।१
गोपुच्छ (गोपुच्छ) ज १।१८,३५,५१;२।१५; ४।४५,११०,२१३, २४२
गोपुर (गोपुर) ज २।२० सू ४।२
गोमयकीडग (गोमयकीटक) प १।५१
गोमाणसिया (दे०) ज ४।१३०
गोमुह (गोमुख) प १।८६
गोमेज्जय (गोमेदक) प १।२०।३
गोम्ही (दे०) प १।५०
गोय (गोत्र) प २२।२८;२३।१,२,५७;२४।१५; २६।११;२७।५;३६।८२ ज ३।२२५ उ १।१७
गोयम (गौतम) प १।७४,८४;२।१ से ३६,४१ से

1. गेहेषु आपतनानि वा उपभोगार्थमागमनानि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४,४६,४८ से ६४,३।३८ से १२०,१२२ से १२४,१७४,१७६ से १८२;४।१ से ५४, ५६ से ६७,६९ से ७४,७६ से ९०,९२ से २९९;५।१ से ७,९ से २०,२३,२४,२७ से ३४,३६,३७,४०,४१,४४,४५,४८,४९,५२, ५३,५५,५६,५८,५९,६२,६३,६७,६८,७०, ७१,७३,७४,७७,७८,८२,८३,८५,८६,८८, ८९,९२,९३,९६,९७,१००,१०१,१०३,१०४, १०६,१०७,११०,१११,११४,११५,११८, ११९,१२३ से १३१,१३३ से १४०,१४२ से १४७,१४९,१५०,१५३,१५४,१५६,१५७, १५९,१६२,१६३,१६५,१६६,१६८,१६९, १७१ से १७४,१७६,१७७,१८०,१८१,१८३, १८४,१८६,१८७,१८९,१९०,१९२,१९३, १९६,१९७,१९९,२००,२०२,२०३,२०६, २०७,२१०,२११,२१३,२१४,२१७,२१८, २२०,२२१,२२३,२२४,२२७ से २३४, २३६ से २३९,२४१,२४५;६।१ से ४५, ४७ से ५५,५७,५८,६० से ६४,६७,६८,७० से ७२,७४ से ८५,८७ से ९१,९३,९४,९६ से १०३,१०५ से ११०,११२,११४ से ११६, ११८ से १२१,१२३;७।१ से ४,६ से ३०; ८।१ से ११;९।१ से ४,६ से १६,१९ से २२, २५,२६;१०।१ से ५,७ से १३,१५ से २४, २६ से २९,३१ से ५३;११।१ से ४४,४६, ७३,७९ से ९०;१२।१ से ५,७ से १३,१५, १६,२०,२१,२३,२४,२७,३१ से ३३;१३।१ से १३,२१ से ३१;१४।१ से ३,५,७,९ ११ से १५,१७;१५।१ से २८,३० से ३३,३६ से ५४, ५७ से ७४,७६ से ८४,८९,९१ से ९८,१००, १०३ से १०६,१०८,१०९,११३ से ११९, १२६,१२९,१३२ से १३५,१४०,१४१;१६।१ से ४,६ से ८,१० से १३,१५,१७,१९ से २१;१७।१ से ६,८ से १७,१९ से २२,२४, २५,२७,२९,३३,३६ से ६१,६३ से ६९,७१ से ७६,७८ से ८७,९० से ९२,९४,९५,१००, १०२ से १०४,१०६ से ११६,११८ से १३७, १३९ से १४७,१४९ से १५२,१५४ से १६४, १६६,१६७,१६९ से १७२;१८।१ से १०,१२ से ३७,३९,४१ से ४७,४९ से ९०,९२ से १२७;१९।१ से ३,५;२०।१ से ४,६,७,९ से २५,२७ से ३०,३२ से ३४,३८ से ५४,६१ से ६४;२१।१ से १५,१९ से २५,२८ से ३२, ३६ से ३८,४० से ४२,४८ से ८१,८३ से ९६,९८ से १०१,१०३ से १०५;२२।१ से ११,१३,१५,१७,१९,२१ से २३,२६,२७, २९,३०,३२ से ५०,५२,५३,५७,५९ से ६९, ७८,७९,८२ से ८४,८६,८७,८९ से ९५,९७ से ९९,१०१;२३।१ से ७,९ से ११,१३ से ५०,५७ से ६२,६५,६९ से ७९,८१,८३ से ८६,८९,९०,९५,९८,९९,१०१ से १०४, १०६,१११ से ११८,१२८,१२९,१३१ से १३५,१३७ से १४०,१५४,१५५,१५७,१६०, १६१,१६४,१६७,१७१,१७३,१७६,१७७, १९१ से १९६,१९८ से २०१;२४।१ से ६,८, १० से १५;२५।१,२,४,५;२६।१ से ४,६;८ से १०;२७।१ से ३,५,६;२८।१,२ से ७,१० से १९,२१ से २४,२९,३१,३३ से ३७,३९ से ४२,४४,४५,४९ से ५३,५६ से ६५,६७ से ७१,७६ से ९९,१०२,१०४,१०६ से १२०, १२२,१२३,१२५,१२७ से १२९,१३२;२९।१ से ३,५ से १३,१६ से २१;३०।१ से ३,५ से १३,१५ से २३,२५ से २८;३१।१ से ३,६;३२।१ से ४,६;३३।१ से ३,७ से १०, १२,१३,१५ से २९,३१ से ३३,३५,३६; ३४।१ से ३,५ से ९,११ से १८,२०,२५; ३५।१ से १३,१६ से २०,२२,२३;३६।१ से २२,३० से ५१,५३ से ६४,६६,६७,७०,७१, ७४ से ९०,९२,९४ ज १।१५ से ७,१५ से १८,२० से २३,२६,२७,२९,३३ से ३५,४१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५ से ५१;२।१ से ४,७,१४,१५,१७ से २३,
२५,४२,४४ से ४८,५०,५२,५६ से ५८,
१२२,१२३,१२७,१२८,१३१ से १३७,१३९,
१४७,१५०,१५१,१५६,१५७,१५९,१६१,
१६४;३।१,९८,२२६;४।१,२२,३४,४४,४५,
४८,५१,५२,५४ से ५७,६० से ६२,६४,७९,
से ८२,८४ से ८६,८९,९६ से ९८,१०० से
१०३,१०५ से ११०,११३,११४,१४१,१४३,
१५९ से १६७.१६९ से १७८,१८० से १८२,
१८४,१८५,१८७,१८८,१९० से १९४,१९६,
१९७,१९९,२००,२०२ से २१०,२१२ से
२१४,२२५,२२६.२३४,२३६,२३७,२३९,
२४१,२४५,२४९,२५१ से २७७;६।२,४,७
से २६;७।१ से ३६,३८ से ४८,५२ से ५७,
५९ से १०८,१११ से १४४,१४७,१४८,
१५०,१५४ से १६७,१७० से १७८,१८० से
१८५,१८७,१९७ से १९९,२०१ से २१३;
चं १० सू० ११५;१०।१०२ उ १।२५,२६,२८,
१४०,१४१;२।१२.१३;३।८,९,१६ से १८;
२६,२७,८५,८६,९३,९५,१२२ से १२५,१५२,
१५७,१६३ से १६५;४।६,२५,२६
गोयम (गोतम) ज ७।१३२।२
गोयर (गोचर) ज २।१३२
गोर (गौर) प २।४०।८,२।४९ ज १।५
गोरक्खर (गौःखर) प १।६३ गदर्भ की एक जाति
गोलगोलच्छाया (गोलगोलच्छाया) सू ९।५
गोलच्छाया (गोलच्छाया) सू ९।४,५
गोलपुंजच्छाया (गोलपुञ्जच्छाया) सू ९।५
गोलवट्टसमुग्गय (गोलवृत्तसमुद्ग) २।१२०;
७।१८५
गोलव्वायण (गोलव्यायन) ज ७।१३२।४
सू १०।११५
गोलावलिच्छाया (गोलावलिच्छाया) सू ९।५
गोलोम (गोलोमन्) प १।४९
गोवग (गोपक) ज ३।३५
गोवल्ल (गोवल) ज ७।१३२।३
गोवल्लायण (गोवलायन) सू १०।१०९
गोवल्ली (दे०) प १।४०।४
गोसीस (गोशीर्ष) प २।३०,३१,४१ ज २।९५,
९६,९९,१००; ३।७,९,१२,८२,८८,१३३,
१८४,२११,२२२; ५।१४ से १६,५५,५८
गोसीसावलि (गोशीर्षावलि) ज ७।१३३।१
गोसीसावलिसंठिय (गोशीर्षावलिसंस्थित)
सू १०।२७
गोहा (गोधा) प १।७६
गोहूम (गोधूम) ज २।३७;३।११९

घ

घओदय (घृतोदक) प १।२३
घंटा (घण्टा) ज १।३७; ३।३५,१७८; ४।३०;
५।२२ से २६,२८,४८ से ५३; ७।१७८
उ १।१३८; ३।७,९१
घंटिया (घण्टिका) ज २।६४;७।१७८
घंटियाजाल (घण्टिकाजाल) ज ३।२४,३०,१०९;
५।२८
घट्टणया (घट्टनता) प १६।५३
घट्ठ (घृष्ट) प २।३०,३१,४१,४९,५९,६३,६४
ज १।८,२३,३१ सू २०।७
घड (घट) प २।३०,३१,४१ ज ३।७;४।२३,३८,
६५,७३,९०,९१
√**घड** (घटय्) घडेंति ज ५।१६
घडाउेत्ता (घटयित्वा) उ ३।५०
घडिया (घटिका) ज ४।१२९
घडेत्ता (घटयित्वा) ज ५।१६
घण (घन) प १।४८।३८;२।३०,३१,४१,४९;
१२।१२,३८; ज १।२४,४५,६५;३।३,२४,
८२,१६७,१८५,१८७,२०९,२१८,२२४;
४।१२५;५।१,५,१९,५७,६२;७।५५,५८,
१७८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६
घणघण (घनघन) ज २।६५
घणघणाइय (घनघनायित) ज० ५।५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घणघणेंत (घनघनायमान) ज ३।३१
घणदंत (घनदन्त) प १।८६
घणवाय (घनवात) प १।२६;२।१०
घणवायवलय (घनवातवलय) प २।१०
घणसंमद्द (घनसंमर्द) सू १२।२६
घणोदधि (घनोदधि) प २।२४
घणोदधिवलय (घनोदधिवलय) प २।४
घणोदहि (घनोदधि) प २।१३
घणोदहिवलय (घनोदधिवलय) प २।१३
घत (घृत) प १५।५५।१ सू १०।१२०
घतवर (घृतवर) सू १६।३१
घतोद (घृतोद) सू १६।३१
√घत्त (ग्रह्) घत्तामो ज ३।१०७ घत्तिहामि उ १।४१ घत्तेह ज ३।११४
घत्थ (ग्रस्त) सू २०।२
घय (घृत) ज २।१०६;११० उ ३।५१
घयमेह (घृतमेघ) ज २।१४३,१४४
घर (गृह) सू २०।७ उ ३।१००
घरग (गृहक) ज १।१३
घरघरग (घरघरक) ज ७।१७८ अनुकरणशब्द
घरोइला (गृहकोकिला) प १।७६
घाइय (घातित) ज ३।१०८ से १११ उ १।२२; १४०
घाएउकाम (हन्तुकाम) उ १।७२
घाडिय (घाटिक) ज २।२६
घाण (घ्राण) प १५।७७,८१,८२; ३६।८१ ज ४।१०७
घाणविण्णाणवरण (घ्राणविज्ञानावरण) प २३।१३
घाणावरण (घ्राणावरण) प २३।१३
घाणिंदिय (घ्राणेन्द्रिय) प १३।४; १५।१,४,८, १३,१६,४२,५८,६४,६९,७०; २८।४५,४६, ७१ उ ३।३३
घाणिंदियत्त (घ्राणेन्द्रियत्व) प ३४।२०
घाणिंदियपरिणाम (घ्राणेन्द्रियपरिणाम) प १३।४
घाणेंदिय (घ्राणेन्द्रिय) प १५।३४
घायय (घातक) ज २।२८
घुल्ला (दे०) प १।४९
घेत्तूण (गृहीत्वा) ज ३।८१
घोडग (घोटक) प १।६३
घोडय (घोटक) प ११।१६ से २०
घोणा (घोणा) ज ३।१०९
घोर (घोर) ज १।५
घोरगुण (घोरगुण) ज १।५
घोरतवस्सि (घोरतपस्विन्) ज १।५
घोरबंभचेरवासि (घोरब्रह्मचर्यवासिन्) ज १।५
घोलंत (घोलत्) ज ३।६;५।२१
घोस (घोष) प० २।४०।६ ज २।६५;३।३५, १८६,२०४
√घोस (घोषय्) घोसंति ज ३।२१३ घोसेंति ज ५।७३ घोसेह ज ३।२१२;५।७२,७३
घोसणा (घोषणा) ज ५।२६,७२,७३
घोसाडइफल (कोशातकीफल) प १७।१३०
घोसाडई (कोशातकी) प १।४०।१
घोसडय (कोशातक) प १।४८।४८
घोसाडिय (कोशातकी) प १७।१३०
घोसेत्ता (घोषयित्वा) ज ३।२१२

च

च (च) प १।१ ज १।७ सू १।७ उ १।७; ३।७; ४।१०
चइत्ता (त्यक्त्वा) प २०।४९ ज २।६४ उ ३।१८, १२५,१५२;४।२६,२८;५।३०,४३
चइत्ता (च्युत्वा) ज २।८५
चउ (चतुर्) प १।१३ ज १।८ चं ४।३ सू १।८ उ २।२२
चउक्क (चतुष्क) प २१।१६;२३।२६,२८,६२, १३४,१७८ ज २।६५;३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३;७।१३१।२ उ १।९८
चउक्कग (चतुष्क) ज ७।१३१।२
चउक्कय (चतुष्क) प ६।८३;२३।२८

चउगुण (चतुर्गुण) प २।५९ ज ५।५१

चउग्गुण (चतुर्गुण) प २।४०।५ ज ५।४९,५२।१ सू १९।२२।२३

चउजमलपय (चतुर्यमलपद) प १२।३२

चउट्ठाणवडित (चतुःस्थानपतित) प ५।१२,१४, १६,१८,२४,२८,३४,३५,३७,४१,४५,४९, ५०,५४,५६,५९,६३,६९,७१,७४,७८,८६, ८७,८९,९३,९४,९७,१०२,१०४,१०५,१०७, १११,११२,११६,११९,१३१,१३४,१३६, १३८,१४०,१४३,१४५,१४७,१४८,१५०, १५१,१५४,१६६;१६७,१६९,१७२,१७५, १७८,१८२,१८४,१८५,१८७,१८८,१९०,१९३, १९७,२००,२०३,२०७,२११,२१४,२१८, २२१,२२४,२२८,२३०,२३२,२३४,२३७, २३९,२४०,२४२

चउट्ठाणवडिय (चतुःस्थानपतित) प ५।७,२५, ८४,१६३

चउणउत (चतुर्नवति) सू १९।१४,१५।१

चउणउति (चतुर्नवति) सू ४।४

चउणउय (चतुर्नवति) ज ४।२४१

चउणवइ (चतुर्नवति) ज ४।८६

चउतीस (चतुस्त्रिंशत्) सू १।२०

चउत्तीस (चतुस्त्रिंशत्) सू १।२२

चउत्थ (चतुर्थ) प ३।२०,१८३;६।८०।१; १०।१४।४,५,६;११।३,४२,८८;१५।१४३; १७।१४८;३३।१६;३६।८५,८७ ज ४।१८०, २०२;७।१०९,१५९,१६३ सू १०।७०,७४, ७७,१२७;११।५,६;१२।५,१७,२७;१३।८, १६ उ २।१०,१२;३।१४,५४,७१,८३,८८, १५३,१५४ १६१;४।१,३,२८;५।१,२८;३९,४३

चउत्थभत्त (चतुर्थभक्त) प २८।२५ ज २।५६,१५९

चउत्था (चतुर्थी) सू १२।२२

चउत्थाहिय (चतुर्थाहिक) ज २।४३

चउत्थी (चतुर्थी) ज ७।१२५ उ १।२६,२७, १४०,१४१

चउदस (चतुर्दशन्) ज ३।२२१

चउदसपुव्वि (चतुर्दशपूर्विन्) ज २।७८

चउद्दस (चतुर्दशन्) ज ७।१५६ सू ८।१

चउद्दसपुव्वि (चतुर्दशपूर्विन्) ज २।७८

चउद्दसम (चतुर्दश) सू १०।७७;१३।८

चउद्दसी (चतुर्दशी) ज ७।१२५

चउद्दिसि (चतुर्दिश्) ज ४।४,२०,११८,१२६, १४४,१४७,१५१।२,२१९,२३५,२४६; ५।४०,६१

चउनाणोवगय (चतुर्ज्ञानोपगत) ज १।५

चउपएसिय (चतुःप्रदेशिक) प ५।१५९;१०।९

चउपण्ण (चतुःपञ्चाशत्) ज २।७७

चउपण्णग (चतुःपञ्चाशत्क) सू १३।१७

चउपुरिसपविभत्तगति (चतुःपुरुषप्रविभक्तगति) प १६।३८,५२

चउप्पएसिय (चतुःप्रदेशिक) प ५।१६०

चउप्पगार (चतुःप्रकार) प ११।३०।२

चउप्पण्ण (चतुःपञ्चाशत्) ज ४।२३४

चउप्पदेस (चतुःप्रदेशिक) प १०।१४।२

चउप्पय (चतुष्पद) प १।६१,६२,६६;४।१२२ से १३०;६।७१,७७;२१।११ से १३,३५,४४, ५३,६० ज २।१३१;७।१२३ से १२५

चउप्पाइया (चतुष्पादिका) प १।७६

चउब्भाग (चतुर्भाग) ज ७।१९० से १९५ सू १।१९;१०।१४२,१४७;१२।३०;१८।२७ से ३५

चउभंग (चतुर्भङ्ग) प १६।१०;२६।६,९

चउभंगि (चतुर्भङ्गिन्) प १०।६

चउभाग (चतुर्भाग) प ४।१७७,१७९,१८०,१८२, १८३,१८५,१८६,१८८,१८९,१९१,१९२, १९४,१९५,१९७,१९८,२००,२०१,२०३ ज ७।१८७,१८८ सू १।१९;२।१;९।३; १०।४७;१२।३०;१३।४;१५।१७ से १९,२४। २५

चउम्मुह (चतुर्मुख) ज ३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३ उ १।९८

चउरंगुल (चतुरङ्गुल) सू १०।६३;१६।२२

चउरंगुलकण्णाक (चतुरङ्गुलकर्णक) ज ३।१०९

चउरंगुलजण्णुक (चतुरङ्गुलजानुक) ज ३।१०९

चउरंगुलमूसियखुर (चतुरङ्गुलोच्छ्रितखुर) ज ३।१०९

चउरंस (चतुरस्र) प १।४ से ६;२।२० से २७, ३१ से ३५,४१;१०।१५,२६;२१।६२ ज १।३१;२।१५;३।६५,१५६;४।११४

चउरासोइ (चतुरशीति) प २।४६ ज २।४

चउरासीति (चतुरशीति) प २।२० ज २।७३

चउरिंदिय (चतुरिन्द्रिय) प १।१४,५१;२।१८; ३।६,४० से ४२,४७,४६,१५० से १५२, १८३;४।१०१ से १०३;५।३,८१;६।२०,६५, ७१,८३,१००,१०२,१०४,११५;६।४,१६, २२;११।४५;१२।३,३०;१३।१७;१५।३४,७५, ८२,८६,१३७;१६।६,१३;१७।२२,४०,६२, ८८,६६,१०३;१८।१५,२३;२०।८,१६,२३, २५,२८,३३,४७;२१।६,२८,४२,७६,८०,८६; २२।३१,७३;२३।८८,१५१,१६४;२८।४३, ४६,१०१,१२५,१३६;२६।१४,२१;३०।१२, १३,२२,२३;३१।३;३२।२;३४,३,७;३५।१३, २०;३६।६,३६

चउरिंदियत्त (चतुरिन्द्रियत्व) प १५।६७,१४२

चउरेंदिय (चतुरिन्द्रिय) प ६।८६;१६।३

चउवत्तर (चतु:सप्तति) ज ४।५५

चउवीस (चतुर्विंशति) प ६।१।१ ज २।६ सू ४।७

चउवीसतिम (चतुर्विंशतितम) सू १२।१७

चउवीसय (चतुर्विंशति) सू १।१६

चउव्विह (चतुर्विध) प १।४,५२,६२,६८,७७, १०१।३;१३०;५।१२५;१३।३,५;१४।७,६; १५।६६,७५;१६।६,२६,३१,५३;१७।१३; २०।६२;२१।७७;२३।१८,२८,३७,३६,५४; २५।४,५;२६।३,१२;३०।६;३५।४ ज २।५३, ६६,१६२;३।१६७।१०,२११;४।६६,२५४, २५५;५।५७

चउव्वीस (चतुर्विंशति) प ६।१० सू २।१

चउव्वीस (चतुर्विंशतितम) प १०।१४।३

चउसट्ठि (चतु:षष्टि) प २।३२ ज २।५२

चउसमइय (चतु:सामयिक) प ३६।६७,६८

चउहा (चतुर्धा) प १६।१

चंकमिय (चंक्रम्य) ज ७।१७८

चंगेरी (चंगेरी) ज ३।११;५।७,५५

चंचल (चञ्चल) प २।४१,५० ज ३।१०६,१७८; ५।१८;७।१७८

चंचलायमाण (चंचलायमान) ज ३।२४।३,२७।१, ४५।१,१३१।३

चंचुच्चिय (दे०) ज ३।१७८;७।१७८ कुटिलगमन

चंचुमलइय (दे०) ज ५।२१

चंड (चण्ड) २।६०,१३१

चंडिक्किय (दे०) अत्यधिक कुपित ज ३।२६,३६, ४७,१०७,१०६,१३३ उ १।२२,१४०

चंडी (चण्डा) प १।४८।४

चंद (चन्द्र) प १।१३३;२।२० से २७,४८;१५।३, ४,२१,५५।३;१७।१२८;२१।२३,८० १।२४;२।१५,६८,१३१;३।३,२४।४,३२।१, ३५,३७।२,४२,४५।२,७६,८५,६५,१३१।४, १५६,१८५,२०६;४।१४२,२११;७।१,७२, ७५,७८ से ८२,८४,६८,१०५,१११, ११२।२,१२६,१२७।१,१२६,१३४।१,४, १६७।१,१७०,१७७।१,१७८।१,१८०,१८१, १८३ से १८५,२०७,२१२,२६२ सू १०।२, ५,७५,१२२,१२७ से १२६।२,१३२,१३३, १३६,१३८ से १४२,१४८,१४६,१५२ से १६५,१७०,१७२,१७३;११।१ से ६;१२।३, १५,१७।१,१६ से २८,३०;१३।१,३ से १७; १४।३,७;१५।१,२,५,६,८ से १०,१४,१७ से २०,२६,२६,३२,३५;१८।१४,१८,१६,२१ से २४,३७;१६।१।१,५।२,८,११।२,१५।२, १६,२१।३,६,१६।२२।४,७,१०,१५ से २५, २७,२८,३०;१६।३१,३५,३८;२०।२,३,४,६ ज १।६३;३।२।१,३।६,१४ से १८,२१,२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदचार (चंद्रचार) सू १०।१२१,१२२
चंदण (चन्दन) प १।२०।४;१।३६।३,१।४६; २।३०,३१,४१ ज २।७०,९५,९६,९९,१००; ३।९,१२,८२,८८,१३३,२०९,२११,२२१, २२२;५।१४ से १६,५५,५६,५८
चंदणकयचच्चाय (चन्दनकृतचर्चाक) ज ३।२०९
चंदणपुड (चन्दनपुट) ज ४।१०७
चंदणा (चन्दना) उ ३।१७१
चंदद्दह (चन्द्रद्रह) ज ४।१४२।३,२६२
चंदपण्णत्ति (चन्द्रप्रज्ञप्ति) ज ७।१०२
चंदपव्वय (चन्द्रपर्वत) ज ४।२२२
चंदप्पभ (चन्द्रप्रभ) प १।२०।४ ज २।१३; ३।१२,८८;५।५८
चंदप्पभा (चंद्रप्रभा) प १७।१३४ ज ७।१८३ सू १८।२१;२०६
चंदमंडल (चन्द्रमण्डल) ज ३।९५,११७,१५९, १७८;७।६१ से ७३,७६,७८,९७,१७७ सू १०।७६,७७
चंदमग्ग (चन्द्रमार्ग) चं ५।२ सू ११९।२; १०।७५
चंदमस (चन्द्रमस्) चं २।४; सू १।६।४; १३।१,१७
चंदसा (चन्द्रमस्) १।६;१३।१,१७
चंदमास (चन्द्रमास) सू १२।१० से १२
चंदलेस्सा (चन्द्रलेश्या) सू १६।१,२
चंदवडिंसय (चन्द्रावतंसक) सू १८।२२,२३ उ ३।६,१४
चंदविमाण (चन्द्रविमान) प ४।१७७ से १८२; ६।८५ ज ७।१७३,१७४,१७६ से १७८,१८८ सू १८।१,८,९,१४,२७,२८
चंदसंवच्छर (चन्द्रसंवत्सर) ज ७।१०६,१०७ सू १०।१२७;११।२ से ६;१२।१,३,१० से १३
चंदाभ (चन्द्राभ) ज २।५९,६२
चंदायण (चन्द्रायण) सू १३।१०,१३
चंदिम (चन्द्रमस्) प २।४८ से ५१,६३ ज ७।५५, ५८,१६८,१८०,१८१,१९७ सू ३।१;९।१; १५।१;१७।१;१८।२,३,१८,१९,३७;१९।१, २६;२०।१,७ उ ३।१२;५।४१
चंदिमसूरियसंठिति (चन्द्रमस्सूर्यसंस्थिति) सू ४।१,२
चंदिमा (चन्द्रिका) ज ७।१०२
चंदोतारायण (चन्द्रावतारायन) उ ३।१५७
चंप (चम्पक) प १७।२७
चंपकवण (चम्पकवन) ज ४।११६
चंपग (चम्पक) ज २।१०;३।१२,८८ उ १।२३, ९१
चंपगजाति (चम्पकजाति) प १।३८।३
चंपकवडेंसय (चम्पकावतंसक) प २।५०,५२
चंपछल्ली (चम्पकछल्ली) प १७।१२७
चंपभेद (चम्पकभेद) प १७।१२७
चंपयकुसुम (चम्पककुसुम) प १७।१२७
चंपयलता (चम्पकलता) प १।३९।१
चंपा (चम्पा) प १।९३।१;१७।१२७ उ १।६,१०, १२,१९,९३,९५,९७,९८,१०५,१०६,११०, ११९,१२२,१२५,१४४,१४५;२।४,५,१६,१७
चंपापुड (चम्पकपुट) ज ४।१०७
चक्क (चक्र) ज २।१५;३।३,३५,९५,१५९, १६७।११,१२ सू ३।२
चक्कद्धचक्कवालसंठित (चक्रार्धचक्रवालसंस्थित) सू १।२५;४।२
चक्कपुरा (चक्रपुरा) ज ४।२१२,२१२।४
चक्करयण (चक्ररत्न) ज ३।४ से ६,९,१२,१४, १५,१८,२२,३०,३१,३६,४३,४४,५१,५२, ६०,६१,६८,६९,९३,९९,१०६,१३०,१३१, १३६,१३७,१४०,१४१,१४९,१५०,१६३, १७२,१७३,१७५,१७८,१८०,२२०
चक्करयणत्त (चक्ररत्नत्व) प २०।६०
चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) प १।७४,९१;९।२६ ज २।१८,६३,१२५;१५३;३।२,३,२६,३९,

४७,५६,७६,६५,११५,११६,१२४,१३३, १३५।१,१३६,१३८,१४५,१५६,१६७।५,१४; ४।६४,१६२,२७७;५।२१,५८;७।१६६,२००

चक्कवट्टित्त (चक्रवर्तित्व) प २०।५०,५२

चक्कवट्टिवंस (चक्रवर्तिवंश) ज २।१२४,१५२

चक्कवट्टिविजय (चक्रवर्तिविजय) ज ४।१६६, २६२;५।१,५५;६।१४,१६

चक्कवाग (चक्रवाक) उ ५।५

चक्कवाय (चक्रवात) ज २।१२

चक्कवाल (चक्रवाल) ज १।६५;४।२३४,२४०, २४१ सू १६।४,७,१४,१८,३०,३४,३७ उ ३।१२,१४१;४।१२,१३

चक्काग (चक्रवाक) प १।४८।३८;१।७६

चक्कि (चक्रिन्) प १।६३।६;२०।१।१

चक्किय (चक्रिक) ज २।६४

चक्किया (शक्नुयात्) ज ३।१८५

चक्खिदिय (चक्षुरिन्द्रिय) प १५।१,३,८,१३,१६, ३४,४१,५८,६४,७०;२८।४६,७१ उ ३।३३

चक्खिदियत्त (चक्षुरिन्द्रियत्व) प ३४।२०

चक्खिदियपरिणाम (चक्षुरिन्द्रियपरिणाम) प १३।४

चक्खु (चक्षुष्) ज ५।५,४६

चक्खुदंसण (चक्षुर्दर्शन) प ५।५,७,२१,४५,८१, ९३,९७;२९।३,७,१४,१७,१९,२१;३०।३,७, १३

चक्खुदंसणावरण (चक्षुर्दर्शनावरण) प २३।१४

चक्खुदंसणावरणिज्ज (चक्षुर्दर्शनावरणीय) प २३।२८

चक्खुदंसणि (चक्षुर्दर्शिन्) प ३।१०४

चक्खुदय (चक्षुर्दय) ज ५।२१

चक्खुप्फास (चक्षुःस्पर्श) ज ७।२० से २५,७६,८१

चक्खुफास (चक्षुःस्पर्श) सू २।३

चक्खुभूय (चक्षुर्भूत) उ ३।११

चक्खुम (चक्षुष्मत्) ज २।५६,६१

चक्खुल्लोयणलेस (चक्षुर्लोकनलेश) ज ४।२७;५।२८

चक्खुहर (चक्षुर्हर) ज ३।२११;५।५८

चच्चपुड (चर्चपुट) ज ३।१०९

चच्चय (चर्चक) ज ३।८८

चच्चर (चत्वर) ज २।६५;३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३ उ १।९८

चच्चा (दे०) ज ५।५६

चच्चिय (चर्चित) ज ३।२११

चडकर (दे०) ज २।६५

चडगर (दे०) ज ३।१७,२१,२२,३६,७८,१७७

चणग (चणक) ज ३।११९

चत्ताल (चत्वारिंशत्) ज ४।५५ सू १।२१

चत्तालीस (चत्वारिंशत्) प २।३६ ज ५।४९ सू १०।१५७

चमर (चमर) प १।६४;२।२१,३२,४०।६ ज १।३७;२।३५,१०१,११३,११६,३।१८५, २०९;४।२७;५।२८,५०

चमरचंचा (चमरचञ्चा) ज ४।१६५,२१०;५।५०

चमरीगंड (चमरगण्ड) ज ३।१७८

चम्म (चर्मन्) ज ५।३२

चम्मपक्खि (चर्मपक्षिन्) प १।७७,७८

चम्मरयण (चर्मरत्न) ज ३।७८ से ८१,११६, ११७,१२१,१५१,१७८;२२०

चम्मरयणत्त (चर्मरत्नत्व) प २०।६०

चम्मेट्ठग (चर्मेष्टक) ज ५।५

चय (चय, च्यव) प २०।४९ उ ३।१८,१२५,१५२; ४।२६,२८;५।३०,४३

चय (शक्) चएइ प २।६४।१७

चय (च्यव्) चयंति प ६।१११;६।२६;१७।६९ सू १७।१ चयति सू १९।२४

चयंत (त्यजत्) प २।६४।५

चयण (च्यवन) प ६।४६,५६,६६;१७।६१,१०५ चं २।५ सू १।६।५;१७।१

चयोवचय (चयोपचय) सू १।१४

चर (चर्) चरइ ज ७।१०,१३,१६,१९ से ३०, २५,६६,७२,७५,७८ से ८२,८४,९५,९६,९८ से १००,१७१,१७३,१७५ सू १।११ चरंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प १।७५; २।४८ ज ३।६५,१२५;७।१ चं ३।१ सू १।७।१;१६।१,११।२,१५।२,२१।३,६ चरति सू १३।५, १६।२२।२,१७ चरिति सू १६।८ चरिंसु ज ३।६५; ७।१ सू १६।१ चरिस्संति ज ३।६५;७।१ सू १६।१ चरेंति सू १६।११
चर (चर) ज ७।१२४,१२५
चरग (चरक) प २०।६१ ज ३।१०६
चरण (चरण) ज ३।३,१३८
चरम (चरम) सू ७।१;१०।१५६; २०।३
चरमाण (चरत्) उ १।२,१७;३।२६,६६,१३२, १४६,१५६;४।११;५।३६
चरित्त (चरित्र) प १।१०१।१० ज २।७१
चरित्तधम्म (चरित्रधर्म) प १।१०१।१२
चरित्तपरिणाम (चरित्रपरिणाम) प १३।२,१२, १४,१८,१६
चरित्तमोहणिज्ज (चरित्रमोहनीय) प २३।३२,३४
चरित्ताचरित्ति (चरित्राचरित्रिन्) प १३।१४,१८, १६
चरित्तारिय (चरित्रार्य) प १।६२,१११ से १२६
चरित्ति (चरित्रिन्) प १३।१४,१८,१६
चरिम (चरम) प १।१।४,१०३,१०६,१०७,१०६, ११०,११३,११४,११६,११६,१२०,१२२,१२३; २।६४।५; ३।१।२,३।१२३; १०।२ से १३, २१ से २४,२६ से २६, ३१ से ५३; १५।४३;१८।१।२,१८।१२६; २३।१६३; ३६।७६ ज ४।१४३;७।१५६ से १६७ सू ५।१; १०।६३ से ७४,१३८,१४२;१४३,१४७ से १५१,१५६,१६१;११।५,६;१२।२४ से २८, ३०;१३।१ उ ५।४३
चरिमंत (चरमान्त) प २।६४;१०।२ से ५,२१, २६,२७ से २६; १६।३४; २१।६०;३३।१६, १७ ज ४।११०,१४१,२०६,२०७,२५२
चरिमभव (चरमभव) प २।६४।४
चरु (चरु) उ ३।५१,६४
चल (चल) ज ३।१७८; ७।१७८
√चल (चल्) चलइ ज २।६२;३।५५,६४,७२, १४४;५।२० चलंति ज ३।२,१११,११२;५।२,७
चलंत (चलत्) ज ३।३१;७।१७८
चलचवल (चलचपल) प २।४१
चलण (चरण) ज २।१४,१५;३।३५,१०६;७।१७८
चलणीबहुल (चलनी[1] बहुल) ज २।१३२
चलिय (चलित) ज २।८६,६०,६३; ३।५६,११३, १४५; ५।३,२१,२८
चवल (चपल) ज २।६०;३।६,२६,२५,३६,४७, ५६,६४,७२,१०६,११३,१३८,१४५,१७८; ५।५,२१,२६,४४,४७,६७;७।१७८
चवलायंत (चपलायमान) ज २।१५
चविया (चव्य) प १७।१३१
चाउग्घंट (चतुर्घण्ट) ज ३।२१,२२,३४ से ३६ उ ५।३८
चाउघंट (चतुर्घण्ट) उ १।११०
चाउरंगिणी (चतुरङ्गिणी) ज ३।१५,२१,३१,३४, ७८,६१,१७३,१७५,१६६ उ १।१२३ १२७, १२८;५।१८
चाउरंत (चतुरन्त) ज २।१८; ३।२,२६,३६,४७, ५६,११५,१२४,१३३,१३८,१४५;५।२१,५८
चाउस्सालग (चतु:शालक) ज ५।१३
चाउस्सालय (चतु:शालक) ज ५।१३,१४
चाडुकारग (चाटुकारक) ज ३।७८
चामर (चामर) प ११।२५ ज २।१५; ३।६,१८, २४,३१,३५,६३,१०६,१७८,१८०,२२२; ४।२६,३०;५।११,४३,४६,५५,५७,६०,६६; ७।१७८
चामरग्गाह (चामरग्राह) ज ३।१७८
चामरच्छाय (चामरच्छायन) ज ७।१३२।३
चामरच्छायण (चामरच्छायन) सू १०।११३
चामरहत्थगय (हस्तगतचामर) ज ३।११

---

1 चलनप्रमाण कर्दम: चलनीत्युच्यते

चामीकर (चामीकर) ज ३।१

चार (चार) प २।४८;१६।५५ ज ७।१,१०,१३,
१६, १९ से ३१, ३५, ६९,७२,७५,७८ से
८२,८४,९५,९६,९८ से १००,१७१,१७३ से
१७५ सू १।९,११,१४,१६,१७,१९ से २४,
२७;२।२,३;३।२;४।४,७,९;६।१;९।२;
१०।१२१,१२२,१३।५ से १०,१२,१३,१७;
१५।२ से ४;१८।१,५,७;१९।१,५,८,११,१५,
१९,२१,१९।२२।२,१३,२२;१९।२३

चारगसाला (चारकशाला) उ १।८८,९१

चारट्ठिइय (चारस्थितिक) ज ७।५५,५८

चारट्ठितिय (चारस्थितिक) सू १९।२३,२६

चारण (चारण) प १।९१

चारि (चारिन्) प २।४८

चारिय (चारिक) प १७।३१

चारियव्व (चारयितव्य) प १७।३१,९७

चारु (चारु) प २।४१,५० ज २।१४,१५;३।१०९,
११९,१३८;५।१८

चारुभासि (चारुभासिन्) ज ३।७७,१०९

चारेयव्व (चारयितव्य) प २१।१०२; २२।७०

चारोवग (चारोपग) सू १९।२२।२१

चारोववण्णग (चारोपपन्नक) ज ७।५५,५८
सू १९।२३,३६

चाव (चाप) ज २।१५; ३।३१,१७८

चावग्गाह (चापग्राह) ज ३।१७८

चाववंस (दे०) प १।४१।२

चास (चाष) प १।७९;१७।१२४

चासपिच्छ (चाषपिच्छ) प १७।१२४

चि (चि) चिज्जंति प २१।९५,९६

चिउर (चिकुर) प १७।१२७

चिउरराग (चिकुरराग) प १७।१२७

चिंचाराम (चिञ्चाराम) उ ३।४८,५५

चिंत (चित्) चितेमि प ११।१

चिंतय (चिन्तक) उ १।३१

चिंता (चिन्ता) ज ३।१०५ उ २।११

चिंतिय (चिन्तित) ज ३।२६,३९,४७,५६,८७,
१२२,१३३,१४५,१८८;५।२२ उ १।१५,५१,
५४,६५,७६,७९,९९,१०५; ३।२९,४८,५०,
५५,९८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

चिंतेमाण (चिन्तयत्) ज ३।१८८

चिंध (चिह्न) प २।३०,३१,४१,४८,४९
ज ३।२४,३१,७७,१०७ से १११,११७,१२४,
१७८ उ १।१२,१४०

चिक्खिल्ल (दे०) प २।२० से २७

√**चिट्ठ** (स्था) चिट्ठइ उ १।४७ चिट्ठई ज १।१९,
४०,४७;३।५४,६३,७२,१३७,१४३,१६७,
२२२;४।१४०,१६८,२३४,२४०,२४१;५।६७,
६८ चिट्ठंति प० २।६४;२।६४।२०;१५।४३,
४५,२८।१०५;३४।१९,२२ से २४,३६,७९,
८१,९३,९४।१ ज १।१३,३०;२।७ से ९,१३,
६० से ६२; ३।१११,११३;४।२,१२९,१३७;
५।५,७ से १२,३८,५७,६०,६७;७।१८५,२१३
सू १८।२३ उ ३।४९ चिट्ठति प १५।५१,५२
सू १९।२ चिट्ठह ज ३।११३
चिट्ठामि उ १।११७ चिट्ठाहि उ १।११५
चिट्ठेज्ज प ३६।९१

चिट्ठत (स्थित) सू २०।७

चिट्ठिय (चेष्टित) ज २।१५; ३।१२८

चिडग (चटक) प १।७९

चिणण (चयन) प २१।१।१

√**चिण** (चि) चिण प १४।१८।१ चिणंति
प १४।१२ चिणिसु प १४।११ चिणिस्संति
प १४।१३

चिण्ण (चीर्ण) चं ३।१ सू १।७,१८,१९;१३।१२,
१४ से १७ उ ३।४८,५०,५५

चित्त (चित्त) २।४१ ज ३।५,६,८,१५,१९,३१,५२,
५३,६१,६२,६९,७०,७७,८४,९१,१००,१०९,
११४,१३७,१४१,१४२,१५०,१६५,१७३,
१८१,१९९,२०८,२१३; ५।५,१५,१८,२१,
२६,२७,२९,४१,५५,५७,७० उ १।२१,३१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२,१०८; ३।१३६; ५।२०
चित्त (चित्र) प १।१।३;२।३०,३१,४१,४८,५० ज ३।२४।३,३७।१,४५।१,७६,११६,१२४, १३१।३,१४५,१७८;७।१७८
चित्त (चैत्र) सू १०।१२४
चित्तंतरलेस (चित्रान्तरलेश्य) ज ७।५८ सू १६।२६
चित्तंतरलेस्साग (चित्रान्तरलेश्याक) सू १६।२२।३०
चित्तकणगा (चित्रकनका) ज ५।१२
चित्तकूड (चित्रकूट) ज ४।१६६,१६६,१७२,१७३, १७६,१७८ से १८१,१८५,१६१,१६७,२००, २०६,२०७; ६।१०
चित्तग (चित्रक) प १।६६
चित्तगुत्ता (चित्रगुप्ता) ज ५।६।१
चित्तपक्ख (चित्रपक्ष) प १।५१
चित्तगहुल (चित्रकबहुल) ज २।६४
चित्तय (चित्रक) प ११।२१
चित्तलंगमंग (चित्रलाङ्गाङ्ग) ज २।१३३
चित्तलग (चित्रलक) प १।६६ ज २।१३६
चित्तलि (चित्रल,चित्रलिन्) प १।७१
चित्तविचित्तकूड (चित्रविचित्रकूट) ज ४।६४
चित्ता (चित्रा) ज ५।१२;७।१२८,१२६,१३६, १४०,१४६,१६४,१६५ सू १०।२ से ६,१६, २३,४७,६२,७१,७२,७५,८३,११२,१२०, १३१ से १३३,१५४; १२।३०
चित्तामूलय (चित्तामूलक) प १७।१३१
चित्तार (चित्रकार) प १।६७
चित्तिया (चित्रिका) प ११।२३
चिय (चित) प २३।१३ से २३ ज ३।२१७
चिय (एव) सू १०।१३६
चियगा (चितका) ज २।६५,६६,१०३,१०४,११४
चियत्तदेह (त्यक्तदेह) ज २।६७
चिरं (चिरम्) ज ३।१२६।१,२
चिरंजीव (चिरंजीव) ज ३।१२६
चिराईय (चिरातीत) चं ७ उ ५।७
चिलाइ (किराती) ज ३।१११।१
चिलाइया (किरातिका) ज ३।८७
चिलाय (किरात) ज ३।१०३ से १०५,१०७, ११५,१२५ से १२७
चिलायविसयवासि (किरातविषयवासिन्) प १।८६
चिल्लग (दे०) प २।४१
चिल्लल (दे०) प १।८६; २।४,१३,१६ से १६,२८
चिल्ललग (दे०) प ११।२२
चिल्ललय (दे०) प ११।२१,२४
चिल्ललिया (दे०) प ११।२३
चिल्लाय (किरात) प १।८६
चिल्लियतल (दे०) सू २०।७ देदीप्यमान तल
चीण (चीन) प १।८६
चीणपिट्ठरासि (चीनपिष्टराशि) प १७।१२६
चीवरधारि (चीवरधारिन्) ज २।६६
चुंचुण (चुञ्चुण) प १।६४।१
चुंचुय (चुञ्चुक) प १।८६
चुच्चु (दे०) प १।३७।२
चुण्ण (चूर्ण) प १।४८।३८ ज २।६५; ३।११,१२, ८८ सू २०।७
चुण्णग (चूर्णक) ज ३।११४
चुण्णवास (चूर्णवास) ज ५।५७
चुण्णविहि (चूर्णविधि) ज ५।५७
चुण्णिया (चूर्णिका) प ११।७६ ज ७।२१,२५,६५, ६८,६६,७१,७२,७४ सू २।३; १०।१५२ से १६०,१६२,१६३; ११।२ से ६; १२।७,८,१६ से २८
चुण्णियाभाग (चूर्णिकाभाग) ज ७।२१,६६,७४,७५
चुण्णियाभाय (चूर्णिकाभाग) ज ७।२५,६५,६८, ७१,७२,७५,७७,७८
चुण्णियाभेद (चूर्णिकाभेद) प ११।७६,७६
चुण्णियाभेय (चूर्णिकाभेद) प ११।७३,७६
चुय (च्युत) ज २।८५; ७।५६,५६
चुलसीइ (चतुरशीति) प २।३४ ज २।७४ चं ४।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुलसीति (चतुरशीति) प २।४०।१ सू २।३
चुलसीय (चतुरशीति) सू १।१२
चुल्लमाउया (क्षुल्लमातृका) उ १।१२,४३,४४, १४५;२।५,१७
चुल्लहिमवंत (क्षुल्लहिमवत्) प १६।३० ज १।४८; ४।४८
चुल्लहिमवंतकूड (चुल्लहिमवत्कूट) ज ४।४४,४५, ४८,५१,५२,७९,९६,२२६
चुल्लहिमवंतगिरिकुमार (क्षुल्लहिमवत्गिरिकुमार) ज ३।१३१ से १३४,१३६;४।५२
चूचुय (चूचुक(ज २।१५
चूडामणि (चूडामणि) प २।३० ३१ ज ३।३९, २११
चूतलता (चूतलता) प १।३९।१
चूयमंजरी (चूतमञ्जरी) ज ३।१२,८८;५।५८
चूयवण (चूतवन) ज ४।११६
चूयवडेंसय (चूतावतंसक) प २।५०,५२
चूलासीइ (चतुरशीति) सू १।८।२
चूलियंग (चूलिकाङ्ग) ज २।४
चूलिय (चूलिक) ज २।४;४।२४२
चेइय (चैत्य) ज १।३;२।३१,६७;७।२२४ चं ७,९ सू १।२,४;१८।२३ उ १।१.२,९,१७,१९, १४४;२।४,१६; ३।४,९,२१,२४,२९,४६,८९, ९५,१५५,१५७,१६८,१७१;४।४,६,१३,१८, २८;५।३६
चेइमखंभ (चैत्यस्तम्भ) ज २।१२०;४।१३३; ७।१८५
चेइयथूभ (चैत्यस्तूप) ज २।११४,११५
चेइयरुक्ख (चैत्यरुक्ष,चैत्यवृक्ष) ज ४।१२६,१२७
चेट्ठा (चेष्टा) ज २।१३३
चेड (चेट) ज ३।९,७७,२२२
चेडग (चेटक) उ १।२२,१०७,१११,११५,११६, ११९,१२८,१३७,१४०
चेडय (चेटक) उ १।२२,२५,२६,१०५ से १०७, १०९,११०,११३,११४,११६ से ११९,१२७, १२९ से १३४,१४०
चेडरूव (चेटरूप) उ ३।११४
चेडिया (चेटिका) उ ३।१४१
चेडी (चेटी) उ १।५४,५५,७९,८०;४।१२,१३
चेतियखंभ (चैत्यस्तम्भ) सू १८।३
चेत्त (चैत्र) ज ७।१०४ उ ३।४०
चेत्ती (चैत्री) ज ७।१३७,१४०,१४९,१५५ सू १०।७,१६,२३,३६
चेदि (चेदि) प १।९३।४
√**चेय** (त्यज्) चेएइ उ० ४।२१ चेएसि उ ४।२२
चेलपेला (चेलपेटा) उ ३।१२८
चेल्लणा (चेलना) उ १।१०,३२ से ४१,४३,४४, ४६,४८ से ५५,५७,५८,७० से ७४,८८,९५, १०९,११०,११३,११४
चेव (चैव) प १।१।७
चोइयमइ (चोदितमति) ज ३।१३८
चोक्ख (चोक्ष) ज ३।८२,१०९ उ ३।५१,५६
चोताल (चत्वारिंशत्) सू १२।१२;१९।१५।२
चोत्तालीस (चत्वारिंशत्) सू १०।१३६
चोत्तीस (चतुःत्रिंशत्) प २।३९ ज ४।११० सू १।२२
चोद्दस (चतुर्दशन्) प २।२६; ज १।४८ सू ३।१;१०।६३
चोद्दसपुव्वि (चतुर्दशपूर्विन्) ज १।५
चोद्दसम (चतुर्दश) ज २।८८
चोद्दसरयणीसर (चतुर्दशरत्नेश्वर) ज ३।१२६।३
चोद्दसविह (चतुर्दशविध) प २३।१९,२०
चोप्पाल (दे०) ज ४,१२७ आयुधशाला
चोप्पालग (दे०) ज २।२० बरण्डा
चोय (दे०) ज ३।१११।३
चोयपुड ('चोय'पुट) ज ४।१०७
चोयाल (चतुश्चत्वारिंशत्) प २।४०।३ ज ७।७९ सू १।१८
चोयालीस (चतुश्चत्वारिंशत्) प २।३५ ज ७।८
चोयासव (चोयासव) प १७।१३४
चोर (चोर) प १७।१३२ उ ३।१२८
चोरग (चोरक) प १।४४।३ असबरक, एक बढ़िया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घास जो रेशम रंगने के काम आता है
चोवट्ठि (चतुष्षष्टि) प २।३१
चोवत्तर (चतुस्सप्तति) ज ७।८०
चोव्वीस (चतुर्विंशति) ज ७।१०६
चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) ज २।६४

छ

छ (षष्) प १।६४।१ ज १।१८ चं ३।३ सू १।७ उ ५।२५
छउमत्थ (छद्मस्थ) प १।१०१।४,१।१०४ से १०७, ११७ से १२०,१२६; ३।१८३; १५।४४,४५; १८।६४,६५,६७,६८; ३६।८०,८१
छउमत्थपरियाय (छद्मस्थपर्याय) ज २।८८
छक्कग (षट्क) ज ७।१३१।१
छक्खुत्तो (षट्कृत्वस्) सू १२।१०
छगल (छगल) प २।४६
छज्ज (राज्) छज्जइ ज ३।२४।४,३७।२,४५।२, १३१।४
छट्ठ (षष्ठ) प ३।१८,१८३; ६।८०।२; १०।१४।४ से ६; १२।३२; १७।६५; ३३।१६; ३६।८५,८७ ज २।६५,८५; ७।६७,११७।१ सू १०।७७; १३।८ उ २।१०,२२; ३।१४,५०,५५,८३,१५० १६१,१६७,१७०; ४।२४; ५।२८,३६,४३
छट्ठक्खमण (षष्ठक्षपण) उ ३।५० से ५४
छट्ठभत्त (षष्ठभक्त) प २८।४७ ज २।५२,१६१
छट्ठाणवडित (षट्स्थानपतित) प ५।५,७,१०,१२ १४,१६,१८,२०,२४,२५,२८,३०,३२,३४, ३७,३८,४१,४२,४५,४६,४६,५३,५६,५६, ६०,६३,६४,६८,७१,७४,७५,७८,७६,८३, ८४,८६,८६,६०,६३,६४,६७,१०१,१०२, १०४,१०५;१०७,१०८,१११,११२,११६,१२६, १३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७, १५०,१५१,१५४,१६३,१६६,१६६,१७२, १७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१६०,१६१, १६३,१६४,१६७,१६८,२००,२०१,२०३,२०४, २०७,२०८,२११,२१२,२१४,२१५,२१८, २१६,२२१,२२२,२२४,२२५,२२८,२३०, २३२,२३४,२३७,२३६,२४२ से २४४
छट्ठाणवडिय (षट्स्थानपतित) प ५।५,७।११५, ११६,१६६
छट्ठी (षष्ठी) प २।२७।२ ज ७।१२५
छण्ण (छन्न) ज ३।३
छण्णउइ (षण्णवति) प २।४०।१;१२।३२ ज २।६; ३।१७८
छण्णउत (षण्णवति) सू १६।२१
छण्णउति (षण्णवति) सू २।३
छण्णउय (षण्णवति) सू १६।११।३;२१।७
छत्त (छत्र) प २।४८,६४;११।२५ ज २।१५,२०; ३।३,६,१८,३१,३५,७७,७८,६३,१७८,१८०, २२२;५।४३,५५,५७ सू १२।२६ उ १।१६; ४।१३,१८
छत्तहत्थगय (हस्तगतछत्र) ज ३।११
छत्तछाया (छत्रछाया) प १६।४७
छत्तरयण (छत्ररत्न) ज ३।११७।१,११८,११६, १२१,१७८,२२०
छत्तरयणत्त (छत्ररत्नत्व) प २०।६०
छत्तल (षट्तल) ज ३।६३,१३५,१५८
छत्ताइच्छत्त (छत्रातिच्छत्र) ज ४।३०,४६;५।४३
छत्तागारसंठित (छत्राकारसंस्थित) सू १।२५;४।२
छत्तातिच्छत्त (छत्रातिच्छत्र) सू १२।२६,३०
छत्ताय (छत्राक) प १।४७ कुकुरमुत्ता, धनिया, सोया, जाल बबूर का वृक्ष
छत्तार (छत्रकार) प १।६७
छत्तालीस (षट्चत्वारिंशत्) सू १२।२५
छत्तीस (षट्त्रिंशत्) प २।४०।४ ज ३।३ सू १०।१६६
छत्तोह (छत्रौघ) प १।३६।३
छप्पएसिय (षट्प्रदेशिक) प १०।११
छप्पण्ण (षट्पञ्चाशत्) प १।८४ ज ४।८६ सू ३।१
छप्पण्ण (दे० षट्प्राज्ञक) ज २।१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पय (षट्पद) ज २।१२
छब्भंग (षट्भङ्ग) प २८।११६,१२३,१२५,१३३,
१३६,१४३ से १४५
छब्भाग (षट्भाग) प २।६४ ज १।१८;६।३२।१
छमास (षण्मास) सू १।१६
छम्मास (षण्मास) ज २।४६;७।२३,२५,२८,३०,
५७,६० सू १।१३,१४,१७,२१,२४,२७;२।३;
६।१;१६।२५,२७
छम्मासावसेसाउय (षण्मासावशेषायुष्क)
प ६।११४
छल (षष्) ज ७।२०१ सू १२।१२
छलंस (षडस्र) ज ३।६२,११६
छलसीय (षडशीति) ज ४।४५;७।३१ सू ४।४;
१५।२६
छल्ली (छल्ली) प १।४८।३० से ३७,६३
छवि (छवि) ज २।१६,३६,४१,१३३;३।१०६
छविच्छेय (छविच्छेद) ज २।३६,४१
छविधर (छविधर) ज ७।१७८
छविहर (छविधर) ज ७।१७८
छव्विध (षड्विध) प ६।११८
छव्विय (दे०) प १।६७ कट आदि बनाने वाला
छव्विह (षड्विध) प १।६१,६४,६५;६।११६;
१३।६;१५।३५,७०;२१।२६,३१,३२,३४,३६;
२२।८३,८४,८६;२३।४५,४६;२४।२,४,८,
१० से १२;२६।२,४,६,८ से १०;२८।६;
३०।२ ज २।२,३,५०,५८,१२३,१२८,१४८,
१५१,१५७,१६४;४।१०१,१७१
छव्वीस (षड्विंशति) प २।२३ ज ७।१०८
सू १।२१
छाउद्देस (छायोद्देश) सू ६।२
छाउमत्थिय (छाद्मस्थिक) प ३६।५३ से ५६,५८
छाणविच्छुय (छगणवृश्चिक) प १।५१
छायच्छाय (छायाछाया) सू ६।४
छाया (छाया) प २।३०,३१,४१,४६;१६।४८
ज १।८,२३,३१;२।१६,२०,१४६;३।३,११७।१
१२७;५।३२;७।१५६ से १६७।१ सू ६।४;
१०।६३ से ७४;१६।५,६
छायागति (छायागति) प १६।३८,४७
छायाणुमाणप्पमाण (छायानुमानप्रमाण) सू ६।३
छायाणुवादिणी (छायानुवादिनी) सू ६।४
छायाणुवायगति (छायानुपातगति) प १६।३८,४८
छायाल (षट्चत्वारिंशत्) प २।४०।४ ज ४।८६
छायालीस (षट्चत्वारिंशत्) सू १४।७
छायाविकंप (छायाविकम्प) सू ६।४
छारियभूय (क्षारिकभूत) ज २।१३२,१४१
छावट्ठ (षट्षष्टि) ज ७।२७
छावट्ठि (षट्षष्टि) प १८।७६ ज १।२०
सू १।११;१२।३
छावत्तर (षट्सप्तति) ज ७।१ सू१६।१।१,११।३
छावत्तरि (षट्सप्तति) प २।४०।२
छिंद (छिद्) छिंदंति ज ५।५७ छिंदामि उ १।८८
छिज्ज (छेद्य) उ ३।११४
छिण्ण (छिन्न) ज २।८८,८६;३।२२५
छिण्णरुहा (छिन्नरुहा) प १।४८।३ गुडूची
छिद्द (छिद्र) प २।१० उ १।६५,६६,१०५
छिण्णलेसा (छिन्नलेश्या) सू ६।१
छिन्नसोय (छिन्नस्रोतस,छिन्नशोक) ज २।६८
छिप्पतूर (क्षिप्रतूर्य) उ १।१३८
छिया (दे०) ज २।६७
छीइत्ता (क्षुत्वा) ज २।४६
छीरविरालिया (क्षीरबिडालिका) प १।७६
छीरविराली (क्षीरविदारी) प १।४०।४;
१।४८।२ सफेद और अधिक दूध वाली
विदारी
छुरघरगसंठिय (क्षुरगृहकसंस्थित) सू १०।३६
छुरघरय (क्षुरगृहक) ज ७।१३३।१
छुहा (क्षुधा) प २।६४।१६
छेइत्ता (छित्त्वा) उ ३।१५०;५।२८,४१
छेज्ज (छेद्य) ज ३।३२
छेत्ता (छित्त्वा) ज ७।२२ सू १।१६
छेत्तुं (छेत्तुम्) ज २।६।१

छेद (छिद्) छेदेइ उ ३।८३ छेदेहिइ उ ५।४३
छेदित्ता (छित्त्वा) उ २।१२; ३।१४
छेदेत्ता (छित्त्वा) उ ३।८३
छेदोवट्ठावणिय (छेदोपस्थापनीय) प १।१२४, १२६
छेदोवट्ठावणियचरित्तपरिणाम (छेदोपस्थानीय चरित्रपरिणाम) प १३।१२
छेय (छेद) ज २।३६,४१,६० ; ३।१७८;५।५
छेय (छिद्) छेएइ उ ५।३६
छेयणगदाइ (छेदनकदायिन्) प १२।३२
छेरमाण (छिद्यमान) उ ३।१३०
छेलिय (दे०) ज ३।३१
छेवट्ट (सेवार्त) प २३।४५,६६,१०५,१०७,१०९, ११०
छोढुं (क्षिप्त्वा[1]) सू ९।३

ज

ज (यत्) प १।४ ज १।६ सू १।४ उ १।२;३।३१; ५।३६
जइ (यदा) प २।२
जइ (यदि) प २।६४।१६ सू १।१३ उ १।६; २।१;३।१;४।१;५।१
जइ (यत्र) प २३।१६०
जइण (जविन्) ज २।९०;३।२६,३५,३९,४७,६४, ७२,१०९,११३,१३८,१४५;५।५,२८,४४,४७, ६७;७।१७८
जइया (यावत्) ज ७।१३१
जंगम (जङ्गम) ज ३।१०९
जंगल (जङ्गल) प १।९३।२
जंघा (जङ्घा) ज २।१५ उ ३।११४
जंत (यंत्र) प २।३०,३१,४१ ज ३।३२,७९,१०९, ११६,१७८,४।२७;५।२८
जंतु (जन्तु) ज २।४।१
जंपमाण (जल्पत्) ज ३।८१
जंबु (जन्तु, जम्बू) प १।३५।१।१३१ उ १।३ से ५,७,९,१४२,१४४,२।२,४,१४,१६,२१;३।२, ४,१९,२१,२२,२४,८७,८९,१५३,१५५,१६६, १६८,१७०;४।२,४,२७,५।२,४,४४
जंबुद्दीव (जम्बुद्वीप) प २।३२,३३,३५,३६,४३,५०, ५१;१५।५४,५५।१;१६।३०;२६।८१ ज १।७, १५,१६,१७।१,१८,२०,२३,३४,३५,४६,४८, ५१;२।१,७,१८,५२,५६,९०,१६१,१६४;३।२६, ३९,४७,५६,११३,१३३,१३८,१४५;४।१,६, ५२,५५,६२,८१,८६,९८,११४,१५९,१६०, १६५,१६७,१६९,१७२ से १७४,१७८,१८१, १८२,२०१ से २०३,२०९,२१३,२६२,२६५, २६८,२७१,२७४,२७७;५।३,२२,२६;६।१,५,७ से २६;७।१,४,८ से १४,३१,३३,३६ से ३९, ५२,५४,६२ ६३,६७ से ७२,८६,८७,९१,९२, १०१,१०२,१७५,१८२,१९८ से २०८,२१० से २१३ सू १।१४,१६,१७,१९,२१,२२,२४, २७;२।१,३;३।१,२;४।३,४,७,१०;६।१;८।१; १०।१३२,१४२,१४७;१२।३०;१८।७,२०; १९।१,२,१९।२२।२३ उ १।९;३।७,९१,१२५, १५७;५।२४,४३
जंबुद्दीवपण्णत्ति (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति) ज ७।१०१,१०२, २१४ सू ३।१
जंबू (जम्बू) ज ४।१४६ से १५०; १५१।१,२,१५२ से १५४,१५६,१५७।२,१५८,१५९,२०८; ७।२१३
जंबूणय (जाम्बूनद) ज ३।३०,३५
जंबूणयामय (जाम्बूनदमय) ज १।५१; ४।७,१३, ११८,१४३,२५६
जंबूपेढ (जम्बूपीठ) ज ४।१४३ से १४५
जंबूफल (जम्बूफल) प १७।१२३
जंबूफलकालिया (जम्बूफलकालिका) प १७।१३४
जंबूरुक्ख (जंबूरूक्ष) ज ७।२१३
जंबूवण (जम्बूवन) ज ७।२१३
जंबूवणसंड (जम्बूवनषण्ड) ज ७।२१३
जंभग (जृम्भक) ज ५।६९

---
1. हे० ४।१४३ क्षिप्—छुह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंभय (जृम्भक) ज ५।७०

जंभाइत्ता (जृम्भयित्वा) ज २।४६

जक्ख (यक्ष) प १।१३२; २।४१,४५; १५।५५।३ ज २।३१; ३।१४,१८,३०,३१,४३,५१,६०,६८, ६३,१३०,१३६,१४०,१४६,१७२,१८० सू १६।३८ उ ५।७,२४,२६

जक्खग्गह (यक्षग्रह) ज २।४३

जक्खाययण (यक्षायतन) उ ५।७,८,२४,२६

जक्खोद (यक्षोद) सू १६।३८

जग (जगत्) ज ५।५,४६

जगई (जगती) ज १।७ से ६,१२,१४; ४।६,३५, ३७,४२,४५,७१,७७,६०,६४,२६२

जगईसमिया (जगतीसमिका) ज १।१०

जगती (जगती) सू ३।१

जगप्पईवदाइय (जगत्प्रदीपदायिका) ज ५।५,४६

जघण (जघन) ज ३।१३८

जच्च (जात्य) ज २।१५; ३।१०६,१७८

जच्चकणग (जात्यकनक) ज २।६८

जट्ठ (इष्ट) उ ३।४८,५०

जडि (जटिन्) ज ३।१७८

जडियाइलय (जटिकादिलक) सू २०।८।५

जडियायलय (दे० जटिकायिलक) सू २०।८।५

जढिलय (जटिलक) सू २०।२

जढ (त्यक्त) ज ३।१२७

√जण (जन्) जणइस्सइ ज २।१४२,१४३,१४५ जणेज्जा प १७।१६६,१६७,१६६ से १७२

जण (जन) प १।१।२ ज १।२६; २।६५; ३।१,६५, १०६ ११६,१३८,१५६ सू १।१ उ १।६८, १३६; ३।११४,११५,११६; ५।७,२०,२७

जणक्खय (जनक्षय) ज २।४३

जणणी (जननी) ज ५।५,४६

जणवद (जनपद) उ १।६६

जणवय (जनपद) प ११।३३।१ ज २।१३१; ३।८१, १८६,२०४,२२१ उ १।६४,६६,१०३ १०६, ११०,११३,११४,१२२,१२६,१३३

जणवयकल्लाणिया (जनपदकल्याणिका) ज ३।१७८, १८६,२०४,२१४,२२१

जणवयविहार (जनपदविहार) उ ३।४६,१४५; ५।३३

जणवयसच्च (जनपदसत्य) प ११।३३

जणिय (जनित) उ ३।४८,५०

जण्ण (यज्ञ) ज २।३० उ ३।४८,५०

जण्णइ (यज्ञकिन्) उ ३।५०

जण्णु (जानु) ज ३।१२,८८; ५।७,५८

जण्हवी (जाह्नवी) ज ३।१६७।११

जत (यत) प २।३०,४१

जति (यदा) प ५।२०; ; ५।१३४ सू १६।२२।२६

जति (यत्र) प २३।१६७

जतिविह (यतिविध) प १६।२०

जत्ता (यात्रा) उ ३।३०,३१

जत्तिय (यावत्) प १५।६६,१०३; २३।१७५ ज ७।२००

जत्थ (यत्र) ज ३।७६ उ ३।५५; ४।२१; ५।३६

जदा (यदा) ज ७।२०

जदि (यदि) प ५।५

जप्पभिइ (यत्प्रभृति) ज २।६७ उ ३।११८

जम (यम) ज ७।१३०,१८६।३ उ ३।५३

जम (काइय) (यमकायिक) ज १।३१

जमग (यमक) ज ४।११२ से ११५,११७,१२०, १४०।२,१४१,१६५

जमगपव्वय (यमकपर्वत) ज ४।१११,११३,२०६, २६२; ६।१०

जमगवण्णाभ (यमकवर्णाभ) ज ४।११३

जमगसंठाणसंठिय (यमकसंस्थानसंस्थित) ज ४।११०

जमगसगम (दे०) ज ३।१२,३१,७८,१०६,१८० २०६; ५।२४

जमदेवया (यमदेवता) सू १०।८३

जमय (यमक) ज ४।११६

जमल (यमल) ज १।२४; २।१५; ४।२७; ५।५,२८

जमालि (जमालि) उ ४।१५; ५।२०,२७,३८

जमिगा (यमिका) ज ४।१६०

जम्म (जन्मन्) प ३६।६४ ज २।१०३; ,१०४ उ १।३४; ३।६८,१०१,१३१

जम्मण (जन्मन्) ज ५।३,५,६,१७,२२,२६,४४,४६,६७ से ७०,७२ से ७४ उ २।६;३।११२;४।१६;५।२५

जम्हा (यस्मात्) उ १।६३;२।६

जय (यत्) प २।३१

जय (जय) ज २।१५,६४,६५;३।५,६,१८,२६,३६,४७,५६,६४,७२,७७,६०,६३ ११४,१३३,१३८,१४५,१५१,१५७,१७८,१८०,१८५,२०५,२०६,२२२;५।५८;७।११८ उ १।१०७,११०,११६,११८,१२२,१३०;५।१७

√जय (जि) जइस्सइ उ १।१५ जयंति उ १।१३५

जयंत (जयन्त) प १।१३८;२।६३;४।२६४ से २६६;६।४२,५६;७।२६;१५।८६,६२,१००,१०२,१०५,१०८,१०६,११३,११४,११६,१२०,१२१,१२३,१२५,१२६,१३१,१३६;२८।६६ ज १।१५;४।६४

जयंती (जयन्ती) ज ४।२१२,२१२।४;५।८।१;७।१२०।२,१८६ सू १०।८८।२

जयणा (यतना) उ ३।३१

जयहर (जयधर) ज ३।१२६।१

जया (यदा) ज ५।१ सू १।११ उ ३।११८

जया (जया) सू १०।६०,१७०,१७२

जर (जरा) प १।११;३६।८३।२ सू २०।६।६

जर (ज्वर) ज २।४३

जरा (जरा) प २।६४,२।६४।६,२२;३६।६४।१ ज २।८८,८६,१०३,१०४,१३३;३।२२५

जरुला (दे०) प १।५१

जल (जल) प १।७५ ज २।१३४;३।२२,८१,६८,१५१;४।३,२५ उ ३।५५

√जल (ज्वल्) जलंति ज ५।५७

जलंत (ज्वलत्) ज ३।१८८;४।६,१४,३१,४१,६८,७६,६३ उ ३।४८,५०,५५६३,६७,७०,७३,१०६,११८

जलकंत (जलकान्त) प १।२०।४;२।४०।६

जलकिड्डा (जलक्रीडा) उ ३।५१,५६

जलचारिया (जलचारिका) प १।५१

जलट्ठाण (जलस्थान) प २।४,१३,१६ से १६,२८

जलण (ज्वलन) ज ३।३५

जलपह (जलपथ) प १६।४५

जलप्पह (जलप्रभ) प २।४०।७

जलमज्जण (जलमज्जन) उ ३।५१,५६

जलय (जलज) प १।४८।४० ज ४।२६;५।७

जलय (जलग) ज ३।३२

जलयर (जलचर) प १।५४,५५,६०;३।१८३;४।११३ से १२१;६।७१,७८,८३;२१।८ से १०,३२ से ३४,४३,५३,६० सू १०।१२०

जलरुह (जलरुह) प १।३३।१,१।४६

जलवासि (जलवासिन्) उ ३।५०

जलविच्छुय (जलवृश्चिक) प १।५१

जलाभिसेय (जलाभिषेक) उ ३।५०,५१,५६

जलासय (जलाशय) प २।४,१३,१६ से १६,२८

जलिय (ज्वलित) ज ३।३५

जलोउय (जलोतुक) प १।४६

जलोया (जलौका) प १।४६,७८

जल्ल (दे०) ज २।३२

जल्लेस (यत्लेश्य) प १७।६२,१०२

जल्ललेस्स (यत्लेश्य) प १७।६२,१०२

जव (यव) प १।४५।१ ज २।१५,३७;३।११६

जवजव (यवयव) प १।४५।१ ज २।३७

जवण (यवन) प १।८६

जवणदीव (यवनद्वीप) ज ३।८१

जवणाणिया (यवनानिका) प १।६८

जवणालिया (यवनालिका) प ३३।२६

जवणिज्ज (यापनीय) ज ३।३०,३२,३४

जवमज्झ (यवमध्य) ज २।६

जवसय (यवासक) प १।३७।३ जवासा नामक पौधा, एक तरह का खदिर

जवासाकुसुम (यवासककुसुम) प १७।१२५

जस (यशस्) ज ३।३५,७७,१०६,१२६,१२६,१६७,१८५,२०६

जसंसि (यशस्विन्) ज ३।३,१२६।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसधर (यशोधर) ज ७।११७।१

जसभद्द (यशोभद्र) ज ७।११७।१ सू १०।८६।१

जसम (यशस्वत्) ज २।५६,६१

जसवई (यशस्वती) ज ७।१२१ सू १०।६१

जसोकित्ति (यशःकीर्ति) प २३।१६,२०,१५३

जसोकित्तिणाम (यशःकीर्तिनामन्) प २३।३८, १२७,१८८

जसोधर (यशोधर) सू १०।८६।१,८८।१

जशोहरा (यशोधरा) ज ४।१५७।१;५।६।१; ७।१२०।१

जस्संठित (यत्संस्थित) सू ४।३

जह (यथा) प १।१।३ उ १।१०६

जहण (जघन) ज २।१५

जहण्ण (जघन्य) प १।७४;२।६४।८;४।१ से ५४, ५६ से ६७,६९ से ८९,९१ से १३३,१३५ से २९६,२९८;५।४०,४१,४४,४५,७७,७८,९२, ९३,९६,९७,११०,१११,११४,११५,१५३, १५४,१५६,१५७,१५९,१६२,१६३,१६५,१६६, १६८,१६९;६।१ से १८,२० से ४५,६०,६१, ६४,६६ से६८,१२०,१२१,१२३;७।२,३,६ से २९;११।७०,७१;१२।९,१३।२२।२;१५।४० से ४२;१७।१४६;१८।२ से ४,६,८ से१०,१२,१४ से १६,१८ से २४,२६ से २८.३० से ३९,४१ से ५४,५६,५७,५९ से ६७,६९ से ७४,७६ से ८१,८३ से ८५,८७,८९ से ९१,९३,९५,९६, ९८,१०३,१०४,१०५,१०७,१०८,११०,११३, ११४,११६,११७,११९,१२०;२०।९ से १३, ६१,६३;२१।३८,४० से ४२,४८,६३ से ७१, ७४,८४,८६,८७,९० से ९३;२३।६० से ७९, ८१,८३ से ९२,९५ से ९९,१०१ से १०४, १११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१२९, १३१,१३३ से १३५,१३८,१४०,१४२,१४३; १४७,१५१ से १५३,१५५,१५७,१५८,१६० से १६२,१६४ से १७३,१७६,१७७,१८२,१८३ १८६ से १८८,१९० से १९३;२८।२५,४७,५०, ७३ से ९६;३३।२ से १३,१५ से १७;३६।८ से १०,१७,१८,२०,३०,३४,४४,६१,६६,६८, ७० ७२ से ७४,७६,९२ ज २।४४,४५,५८, १२३,१२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१;७।२८, ५७,६०,१८२,१८७ से १९६,२०६ सू १।१४; १८।२०,२५ से ३४;१९।२;२०।३

जहण्णग (जघन्यक) प १७।१४४,१४६;२३।१५२, १८४

जहण्णगुण (जघन्यगुण) प ५।३६,३७,५८,५९,७३, ७४,८८,८९,१०६,१०७,१८९,१९०,१९२, १९३,१९६,१९७,१९९,२००,२०२,२०३, २०६,२०७,२१०,२११,२१३,२१४,२१७, २१८,२२०,२२१,२२३,२२४,२४१,२४२

जहण्णद्ठितीय (जघन्यस्थितिक) प ५।२३,३४,५५, ५६,७०,७१,८५,८६,१०३,१०४,१७३,१७४, १७६,१७७,१८०,१८१,१८३,१८४,१८६, १८७,२३८,२३९

जहण्णठितीय (जघन्यस्थितिक) प ५।५६

जहण्णपएसिय (जघन्यप्रदेशिक) प ५।२२८

जहण्णपदेशित (जघन्यप्रदेशिक) प ५।२२८

जहण्णपदेसिय (जघन्यप्रदेशिक) प ५।२२७

जहण्णपय (जघन्यपद) ज ७।१९८,१९९,२०२, २०४,२०६;१२।३२

जहण्णमति (जघन्यमति) प ५।६२,६३

जहण्णय (जघन्यक) प १५।६४;१७।१४४; २१।१०५;२३।१९३ ज ७।२६ सू १।१४,१६, १७,१९,२१,२२,२४,२७;२।३ ; ३।२;४।७,९; ६।१;८।१;९।२

जहण्णुक्कोसग (जघन्योत्कर्षक) प १७।१४६

जहण्णुक्कोसय (जघन्योत्कर्षक) प १५।६४; २१।१०५

जहण्णोगाहणग (जघन्यावगाहनक) प ५।२७;२८, ४८,४९,५२,५३,६७,६८,८२,८३,१००,१०१, १५३,१५४,१६२ १६३,१६५,१६६,१६८. १६९,२३३,२३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णोगाहणय (जघन्यावगाहनक) प ५।२८,४६, ५३,६८,६६,८३,१००,१५४,१५६,१५६, १६३,१६६,१६६,२३४

जहन्न (जघन्य) प ४।६०,१३४

जहा (यथा) प १।१ ज १।११ सू १।१२ उ १।२; २।२;३।२;४।२,५

जहाणाम (यथानामन्) सू २०।७

जहाणामय (यथानामक) प १६।५२,५४; १७।१०७,१०६,१११,११६,११६,१२३ से १२८,१३० से १३५;२८।१०५;३४।१६; ३६।६४ ज १।१३,२१,२६,३३,३८,४६;२।७, १७,१८,३८,५२,५७,१२२,१२७,१४७,१५०, १५६,१६१,१६४; ३।१६२;४।२,८,११,१०७; ५।५,७,३२

जहाभूय (यथाभूत) उ १।४२

जहारिह (यथार्ह) ज २।११३;३।८१

जहाविभव (यथाविभव) उ ५।१७,२५

जहिच्छिय (यथेष्ट) ज २।१६,२२

जहेव (यथैव) सू १७।१ उ ३।२१

जहोचिय (यथोचित) उ १।३५

जा (या) जंति प ६।८०।१ ज ७।१३५।४

जाइ (जाति) प १।३८।२ छोटा आंवला. चमेली, जायफल

जाइ (जाति) प १।४६,६०,६६,७५,७६;११।६ ज २।८८,८६,१२५;३।३,१०६;५।५,४६ सू ११।६;१२।१,५ से १०,१२ से १७;१४।३७ उ १।२,३४,४६,७४;३।१५६;५।२६

जाइज्जमाण (याच्यमान) उ १।१०५

जाइणाम (जातिनामन्) प २३।३८,४०,८५,८७ से ८६,१५०

जाइनामनिहत्ताउय (जातिनामनिधत्तायुष्क) प ६।१२१

जाइय (याचित) उ ३।३८

जाइविसिट्ठया (जातिविशिष्टता) प २३।५८

जाईहिंगुलय (जातिहिङ्गुलक) प १७।१२६

जाउकण्ण (जातुकर्ण) ज ७।१३२।१

जाउकण्णिया (जातुकर्णिका) सू १०।६६

जाउलग (जातुलक) प १।३७।५

जागर (जागर) प ३।१७४;२३।१६५,१६६ से २०१

जागरमाण (जाग्रत्) उ १।१५;३।४८,५०,५५,८७, ६८,१०६,१३१;५।३६

जागरिया (जागरिका) उ १।६३

√जाण (ज्ञा) जाण प १।४८।५६ ज ७।११२।५ जाणइ प ११।११; १७।१०८ से ११०;२३।१३; ३०।२७,२८ ज २।७१;७।११२ उ १।६८ जाणंति प २।६४।१३;१५।४६ से ४६;३३।२ से १३,१५ से १८;३४।१।१,३४।६ से ६,११, १२ जाणति प ११।१२ से २०; १५।४४,४५; १७।१०६ से १०८,११०;१११;३०।२५ से २८;३६।८०,८१ जाणाहि सू १०।२२६

जाण (यान) ज २।१२,३३;३।१०३ उ १।१७,१६, २४;४।१२,१३,१५

जाणमाण (जानत्) ज २।७१

जाणय (ज्ञ) ज ३।३२

जाणवय (जानपद) ज १।२६;३।१,१२,४१,४६, ५८,६६,७४,१४७,१६८,२१२ से २१४ सू १।१

जाणविमाण (यानविमान) ज ५।३,५,२२,२६,२८, ३०,३२,४४,४५ उ ३।७,६१

जाणविमाणकारि (यानविमानकारिन्) ज ५।४६

जाणिउकाम (ज्ञातुकाम) प २३।१३

जाणित्ता (ज्ञात्वा) प २३।१३ ज ३।१२३ उ १।६८; ५।४०

जाणियव्व (ज्ञातव्य) प १५।१४३;१६।१५;२३।१३

जाणु (जानु) ज ३।६,१२,८८;५।२१,५८

जाणुकोप्परमाया (जानुकूर्परमातृ, जानुकूर्परमात्र) उ ३।६७,१३१;३।१०५,१३१

जात (यात) प १।७५

जात (जात) ज २।१४६;३।३

जातकम्म (जातकर्मन्) उ १।६३;३।१२६

जातरूववडेंसग (जातरूपावतंसक) प २।५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाति (जाति) प १।५०,५१,८१,८११;२।६४, २।६४।२२;११।८ से १०;३६।६४।१ ज २।१०; ५।५

जातिआरिय (जात्यार्य) प १।६२,६४

जातिणाम (जातिनामन्) प २३।८६,१५०,१५१

जातिणामणिहृत्ताउय (जातिनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८,१२०,१२३

जातिनामनिहत्ताउय (जातिनामनिधत्तायुष्क) प ६।११९,१२३

जातिपुड (जातिपुट) ज ४।१०७

जातिविसिट्ठया (जातिविशिष्टता) प २३।२१

जातिविहीणया (जातिविहीनता) प २३।२२:५८

जातीय (जातीय) ज ३।१०९

जाधे (यदा) सू १९।२४

जाय (जात) ज १।६;२।७१,८५,१२८,१४६; ३।८०,९५,९६,१०३ उ १।६९,९३;२।९; ३।१३,४९,१०५,११३,१४४,१४९;४।२१, २७,३४,३८

√जाय (जन्) जायइ ज ३।९२,११९ जायंति ज ३।९२,११९

√जाय (याच्) जायेइ उ १।१०२

जायकोउहल्ल (जातकौतूहल) ज १।६

जायणी (याचनी) प ११।३७।१

जायतेय (जाततेजस्) ज २।१२९,१५८

जायय (जातक) उ ३।३८

जायरूव (जातरूप) ज २।६८;४।२५५;५।५

जायरूवखंड (जातरूपखण्ड) प ११।७४

जायरूअवडेंसय (जातरूपावतंसक) प २।५९

जायसंसय (जातसंशय) ज १।६

जायसड्ढ (जातश्रद्ध) ज १।६ उ १।४;५।२२

जार (जार) ज ५।३२

जारु (जारु) प १।४८।२

जाल (जाल) प ११।१५ ज ३।९,१७,२१,३४,३५, १७७,१२२,१७८;५।२८

जालंतर (जालान्तर) प २।४८

जालघरग (जालगृहक) ज २।१३

जाला (ज्वाला) प १।२६

जाव (यावत्) प १।१३;२।३२ से ४०,४२ से ४६,४८,५० से ६३;४।५५;७।६ से ३०; ८।३,४,६ से ११;९।२२;१०।१६ से २५,२७ से ३०,३२ से ४३,४५ से ५३;२०।५२,५९, ६०,६३,६४ ज १।९ चं १० सू १।१ उ १।२; २।१;३।१;४।१;५।१

जावइ (यावी) प १।३७।५

जावइय (यावत्) ज २।६;४।१४०।२

जावज्जीव (यावज्जीव) उ ३।५०

जावति (यावी) प १।४३।१

जावतिय (यावत्) प १५।५१,५२ सू ९।३;१३।२

जावय (ज्ञापक) ज ५।२१

जावेंत (ज्ञापयत्) ज ३।१७८

जासुमण (जपासुमनस्) प १।३७।१ ज ३।३५

जासुमणकुसुम (जपासुमनस्कुसुम) प १७।१२६

जासुवण (जपासुमनस्) प १।४०।३

जाहा (जाहक) प १।७६

जाहिं (यत्र) प २४।९

जाहे (यदा) ज ७।५६ सू १९।२७ उ १।५२; ३।१०९

√जि (जि) जयति चं १।१

जिण (जिन) प १।९३।६;११।१०१।३,४,१२; ३६।८३।२ ज १।४०;२।६३,७१,७८,८०, ५।५,२१,४६; सू १९।२२।१

√जिण (जि) जिणाहि ज ३।१८५

जिणसकधा (जिन 'सकधा') सू १८।२३

जिणसकहा (जिन 'सकहा') ज २।१२०;४।१३४; ७।१८५

जिणघर (जिनगृह) ज ४।१३९

जिणपडिमा (जिनप्रतिमा) ज १।४०;४।४७,१२६, १३९,१४७,२१९

जिणभत्ति (जिनभक्ति) ज २।११३

जिणवर (जिनवर) प १।१।२ चं १।४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणवरिंद (जिणवरेन्द्र) प १।१।१ ज ५।५८

जिणिंद (जिनेन्द्र) प ५।४१

जिब्भगार (जिह्वाकार) प १।९७

जिब्भिदिय (जिह्वेन्द्रिय) प १५।१,२,९,१३,१६, ३० से ३३,४२,५८,६४,६९,७०,८०;२८।४२, ४५,४६,७१ उ ३।३३

जिब्भिदियपरिणाम (जिह्वेन्द्रियपरिणाम) प १३।४

जिब्भिया (जिह्विका) ज ४।२४,३९,६६,७४,९०, ९१

जिमिय (जिमित) ज ३।८२ उ ४।१६

जिय (जित) ज ३।१२५।२,१८५,२०९

जियंतय (जीवन्तक) प १।४४।२ जीवंत शाक

जियंति (जीवन्ती) प १।४०।४ अन्य वृक्षों पर रहकर फैलने वाली लता

जियनिद्द (जितनिद्र) ज ३।१०९

जियपरीसह (जितपरीषह) ज ३।१०९

जियसत्तु (जितशत्रु) ज १।३ चं ८ सू १।३ उ ४।६

जीमूय (जीमूत) प १७।१२३

जीय (जीत) ज २।९०,११३;३।२६,३९,४७,५६, १३३,१३८,१४५;५।३,२२,२७

जीव (जीव) प १।४७।१,१।४८।७ से ४३,४५, ४७,४९ से ५१,५५ से ५९,१।८४,१०१।२; २।६४;३।१।२,३।१,९६ से ११३,१२३ से १२५,१४१ से १४३,१५० से १५२,१७४, १८३;६।१२०,१२३;९।१२,१९,२५,२६; १०।३१;११।३०,३८,३९,४३,४६,४७,७० से ७२,८० से ८२,८४,८५,९०;१२।१०; १४।११ से १५,१७,१८;१६।२,१०,१९, २१,२३;१७।५६ ८४,८६,११२,११३; १८।१।१,१८।१;१९।१;२०।१,६३;२१।८४; २२।७ से १०,१२ से २२,२४ से २७,२९ से ४०;४२ से ४५,४८ से ५०,५२ से ५६,५८, ५९,६७ से ६९,७५ से ८६,८८ से ९४,९६, ९७,१००;२३।१।१,२३।३,५ से ७,९ से ११, १३ से २३,१३४,१३५,१३७ से १३९,१५५, १५७,१६०,१६१,१६४,१६७,१७१,१७६, १९३;२४।२ से ४,९ से ११,१३ से १५; २५।२,३,५;२६।२से ४,८,९;२७।२,३,६; २८।१०६,१०८,१०९,१११ से ११८,१२० से १२६,१२८ से १३३,१३६ से १४५;२९।४, १६,१७,२२;३०।४,१४ से १६,२४;३१।१,४; ३२।१,६।१;३५।९;३६।१।१,३६।३०,३२, ३५,४६ से ४८,५२,५९,६२ से ६६,६९,७०,७२, ७३,७४,७७,७८,९४ ज २।६८,७१;५।५,४६; ६।४;७।२११,२१२ उ १।९०,९१;३।१४२, १४४;५।३४

√जीव (जीव्) जीव ज ३।१२६।२ जीविस्सइ उ १।१५

जीवंजीव (जीवंजीव) प १।७८

जीवंजीवग (जीवंजीवक) ज २।१२

जीवंत (जीवत्) उ १।१०९,११०,११४

जीवंतय (जीवत्क) उ १।९६,१०३,१३३

जीवघण (जीवघन) प २।६४।१२;३६।९३,९४

जीवणिकाय (जीवनिकाय) प २२।१०,७८ ज २।७२

जीवत्थिकाय (जीवास्तिकाय) प ३।११४,११५, ११९,१२२

जीवदय (जीवदय) ज ५।२१

जीवपज्जव (जीवपर्यव) प ५।१ से ३,१२२

जीवपण्णवणा (जीवप्रज्ञापना) प १।१,१० से १५, ४९ से ५२,१३८

जीवपरिणाम (जीवपरिणाम) प १३।१,२,२०

जीवमाण (जीवत्) उ १।१५,२१,२२

जीवमिस्सिया (जीवमिश्रिता) प ११।३६

जीवलोक (जीवलोक) ज २।६५;३।३१,१२४

जीवा (जीवा) ज १।२०,२३,४८;३।२४;४।५५, ६२,८१,८६,९८,१०८,१७२,२६२,२६५,२७१, २७४ सू १।१९;२।१;१०।१४२,१४७;१२।३०; २०।१ उ १।१३८

जीवाजीवमिस्सिया (जीवाजीवमिश्रिता) प ११।३६

जीवाभिगम (जीवाभिगम) ज १।११;५।४९,५१

जीविय (जीवित) प १।४८।५,४१;२२।६ ज २।७० उ १।२२,२५,२६,३४,१४०;३।९८,१०१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३१,१५९
जीवियंतकरण (जीवितान्तकरण) ज ३।२४
जीवियारिह (जीवितार्ह) ज ३।६
जीहा (जिह्वा) प २।३१; १५।७७,८१,८२
ज २।१५;३।१०९;७।१७८
जुइ (द्युति) प २।३१ ज ३।१२,७८,८८,९२,११९,
१२६,१८०;५।२२,२६
√जुंज (युज्) जुंजइ प ३६।८६,८७,८९,९०
जुंजति प ३६।८६ से ९० सू १५।१०
जुंजमाण (युञ्जान) प ३६।८७,८९ से ९१
जुंजित्ता (युक्त्वा) सू १५।१०
जुग (युग) ज २।४,६,१४१ से १४५; ३।३,११५,
११६,१२२,१२४;७।१२७ सू ६।१;८।१;
१०।१२२,१२३,१२७;१२।९;१३।३;१५।३५
से ३७
जुगंतकरभूमि (युगान्तकरभूमि) ज २।८४
जुगप्पत्त (युगप्राप्त) सू १२।८
जुगमच्छ (युगमत्स्य) प १।५६
जुगव (युगपत्) प ३६।९२ ज ५।५
जुगसंवच्छर (युगसंवत्सर) ज ७।१०३,१०५,११०
सू १०।१२५,१२७
जुग्ग (युग्य) ज २।१२,३३
जुज्झसज्ज (युद्धसज्ज) उ १।१२७,१२८,१३३
√जुज्झ (युध्) जुज्झंति उ १।१३९ जुज्झह उ १।१२९
जुज्झामो उ १।१२८ जुज्झित्था उ १।१२७
जुण्णकुमारी (जीर्णकुमारी) उ ४।९
जुण्णा (जीर्णा) उ ४।९
जुति (द्युति) प २।३०,३१,४१,४९ ज ५।२०९
जुत्त (युक्त) ज २।१५;३।३,३५,७७,९५,१०९,
१३८,१५९,२११;४।२७;५।२८,५८;७।१४१
से १४४,१५० से १५२,१७८ सू १०।२० से
२२,२५,१७२,१७३;१९।२२।२७;२०।७
उ १।१७,११९,१२८
जुत्ति (युक्ति) ज ३।२०९
जुत्ति (युक्ति,द्युति) उ ५।२।१
जुद्धणोइ (युद्धनीति) ज ३।१६७।९,१७८
जुद्धसज्ज (युद्धसज्ज) उ १।११५ से ११७
जुम्ह (युष्मत्) सू १।६ उ १।२२;३।२९;४।११
जुय (युग) ज ७।११०
जुयणद्ध (युगनद्ध) सू १२।१२९
जुयल (युगल) ज १।२४;२।१५,१००;३।२११;
४।२७,३०; ५।५,२८,५८,६७; ७।१७८
उ ३।१३४
जुयलग (युगलक) ज २।४९ उ ३।१२९
जुवराय (युवराज) प १६।४१ ज २।२५
जुवलय (युगलक) प २।४०।२
जुवाण (युवन्) ज ५।५
जुव्वण (यौवन) ज ३।१३८
जूय (यूप) ज २।१५
जूया (यूका) प १।५० ज २।६,४०
जूव (यूप) ज ३।३ उ ३।४८,५०,५५
जूस (यूष) सू १०।१२०
जूहिया (यूथिका) प १।३८।२ ज २।१०; ३।३
जूहियापुड (यूथिकापुट) ज ४।१०७
जेट्ठ (ज्येष्ठ) ज १।५;३।१०९ चं १० सू १।५
जेट्ठपुत्त (ज्येष्ठपुत्र) उ ३।१३,५०,५५
जेट्ठा (ज्येष्ठा) ज ७।१२८,१२९,१३४।२,
१३५।२,१३६,१४०,१४९,१५२,१६६ सू १०।२
से ६,१८,२३,५१,६२,७३,७५,८३,११६,१२०,
१३१ से १३५
जेट्ठामूल (ज्येष्ठामूल) ज ७।१०४,१४६,१४९,
१५५ सू १०।१२४ उ ३।४०
जेट्ठामूली (ज्येष्ठामूली) ज ७।१३७,१४०
सू १०।७,१८,२२,२३,२६
जेणामेव (यत्रैव) प ३४।२२ ज ३।५
जोअ (द्योत) सू १९।२२।२७
जोइ (ज्योतिष्) सू १४।८,९,११ से १३
जोइस (ज्योतिस्,ज्यौतिष) प २।४८;३४।१८
ज १।२४;२।९४ से ९६,१००,१०२,१०४,
१०९,११०,११३ से ११७;५।४७,६७,७२ से
७४;७।१७१ से १७४ चं ५।४ सू १।९।४;
१९।२२।२

जोइसगणरायपण्णत्ति (ज्योतिर्गणराजप्रज्ञप्ति) चं १।३
जोइसपह (ज्योतिःपथ) प २।२०,२४,२५,२७ ज १।२४
जोइसप्पह (ज्योतिःपथ) प २।२२,२३,२६
जोइसराय (ज्योतीराज) ज ७।१८३ से १८५
जोइसरायपण्णत्ति (ज्योतीराजप्रज्ञप्ति) चं १।४
जोईसिंद (ज्योतिरिन्द्र) प २।४८ ज ७।१८३ से १८५ उ ३।६,१५ से १८
जोईसिंदत्त (ज्योतिरिन्द्रत्व) उ ३।१४
जोइसिणी (ज्यौतिषी) प ३।१३८,१८३;४।१७४ से १७६;१७।५३,७८,८२,८३;२०।१३
जोइसिय (ज्यौतिषिक) प १।१३०,१३३;२।४८; ३।२८,१३७,१८३;४।१७१ से १७३;५।३, २६,१२२;६।२६,४६,५६,५९,६५,६६,८५,९४, १०६,१११,११७;७।६;९।११,१८,२४;१५।३५, ४८,८७,९९,१२४;१६।१६;१७।२७,३०,५३, ७८,८१,८३,९९,१०५;२०।१३,१९,२५,३०, ४८,५४,६०;२१।५५,६१,७०,९०;२२।३१, ३९,८८,१००;२८।७३,११७;२९।१५;३१।५; ३३।१५,३०;३५।१५,२२,२३ ज २।९४ ४।२४८,२५० से २५२;५।५३,५९,७२ से ७४; ७।१८५
जोइसियत्त (ज्यौतिषिकत्व) प १५।१२६
जोइसियराय (ज्योतीराज) प २।४८
जोईरस (ज्योतीरस) ज ५।५
जोएअव्व (योजयितव्य) प १०।२६
जोएत्ता (युक्त्वा) सू १०।५;१५।८६
जोएमाण (युञ्जत्) ज ७।१४१ से १४५,१५०, १५१
जोग (योग) प ३।१।१;११।३३।१;१८।१।१; २८।१०६।१;३६।९२ ज २।६५,७१,८८,९५; ३।१५९,२२५;७।१,११२।२,१२७।१,१२९, १३०;१३४।१,४,१३५,१३८ से १४०,१६७।१ चं २।३;५।१ सू १।६।३,१।९।१;१०।१,५,१७२, १७३;१२।२९;१५।१०;१९।२२।१० उ ३।३१
जोगपरिणाम (योगपरिणाम) प १३।२,१४,१६, १७,१९
जोगसच्च (योगसत्य) प ११।३३
जोगि (योगिन्) प ३६।९२
जोग्ग (योग्य) ज ३।१०९;५।७,४१ उ ३।७
जोणय (जोनक) ज ३।८१ म्लेच्छ
जोणि (योनि) प १।१।४,१।४८।६३;२।६४;९।१ से ४,६ से ११,१३ से १७,१९ से २३,२६ ज २।१३५ से १३७;३।३
जोणिप्पमुह (योनिप्रमुख) प १।२०,२३,२६,२९, ४८,५०,५१,६०,६६,७५,८१
जोणिब्भूय (योनिभूत) प १।४८।५१
जोणिय (योनिक) ज ३।१११।१
जोणिसूल (योनिशूल) ज २।४३
जोणीपमुह (योनिप्रमुख) प १।४९,७६
जोण्ह (ज्योत्स्न) सू १०।१३१;१८।१,५,६; १९।२२।१६,२०;१९।३१
जोतिस (ज्योतिष्) प २।४८;३१।६।१;३४।१६ सू १०।१३१;१८।१,५,६;१९।३१
जोतिसराय (ज्योतीराज) सू १८।२१ से २४; २०।४,६,७,९।१
जोतिसिंद (ज्यौतिरिन्द्र,ज्यौतिषेन्द्र) सू १८।२१ से २४,२०।४,६,७
जोतिसिणी (ज्यौतिषी) सू १८।२६
जोतिसिय (ज्योतिषिक) प १२।६,३७;१३।२०; १५।१०४,१०७;१६।१९;१७।३३,३४,९१; १९।४;२०।३५,३७;२२।७५;२९।२२;३२।५; ३३।२३,३४,३७;३४।४,१०;३५।२३;३६।२६, ४१,७२ सू १८।२३,२५;१९।२२
जोतिसियत्त (ज्योतिषिकत्व) प १५।१११;३६।२२
जोत्तग (योक्त्रक) ज ७।१७८
जोय (योग) ज ३।१७८;७।१२९ सू १०।२,३,५, ७५,१२२,१२३,१२९।१,१३२ से १३४,१३६, १६२ से १६६;१२।२९,३०;१५।८,११,१२, १३;१९।१,५,८,१५,१९,२१,१९।२२।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√जोय (युज्) जोइंति ज ७।१२६ जोइंसु ज ७।१२६ जोइस्संति ज ७।१२६ सू १६।१ जोएइ ज ७।१२६ जोएंति ज ७।१,११२।२ सू १०।५,१२६।१,२ जोएंसु ज ७।१ सू १०।७५ जोएति सू १०।२० जोएस्संति ज ७।१ सू १०।७५ जोयंति ज ७।११२।१

जोयण (योजन) प १।७४,७५,८४;२।२१ से २७, २९ से ३६,३८,४१ से ४३,४६,४८ से ५५, ५९,६३,६४;११।७२;१२।२७,३६;१५।४० से ४२;२१।३८,४१ से ४३,४५,४७।१,२;२१।६३, ६८ से ७०,८७;३३।१०,११;३६।६६,६८, ७०,७२,७४ ८१ ज १।७,८,१२,१४,१६, १७।१,१८,२०,२३.२८,३२,३५,४६,४८,५१; २।६;३।१,१८,२५,३१,३८,४६,५२,६१,६९, ७९,८१,९५,९६,१११,११६,११८,१३१,१३२, १३७,१४१,१५९,१६०,१६४,१८०,१९२; ४।१,३,६,७,१४,२३ से २५,३१,३६,३८ से ४३,४५,४७,४९,५२,५५,५७,५९,६२,६४ से ६८,७२ से ७८,८१,८६,८८,९० से ९५,९८, १०३,१०८,११०,११२,११४ से ११६,११८ से १२८,१३२,१३९ से १४१ १४२।१,१४३, १४५,१४६,१५३,१५४,१५६,१६३ से १६५, १६९,१७४ से १७६.१७८,१८३,२००,२०१, २०३;२०५ से २०७,२१३,२१५ से २१९, २२१,२२६,२३४,२४० से २४३,२४५,२५७ से २५९,२६२;५।३,५,७,२२ से २४,२८.३५, ४३,४४,४९,५०,५३;६।६।१,६।८;७।३ से २५,३१ से ३४,५८,६२ से ८४,८६,८८,८९, ९१ से ९६,१७१ से १७४,१८२,२०७ सू १।१४,२० से २४,२६ से ३१;२।१,३; ४।३ से ५,७,८,१०;१८।१,५,६,९ से ११,२०; १९।४,७,१०,१४,१८,२०,२२।२८,२९, १९।२३,२६,३०,३४;३७, उ १।१३४;३।७, ९१;५।४

जोयणपुहत्तिय (योजनपृथक्त्विक) प १।७५

जोयणसत्तपुहत्तिय (योजनशतपृथक्त्विक) प १।७५

जोयणसहस्सपुहत्तिय (योजनसहस्रपृथक्त्विक) प १।७५

जोव्वण (यौवन) प २।३१;३४।२० ज २।१५; ३।९२,११९,१३८;५।६८,७० सू २०।७ उ ३।१२७

जोव्वणग (यौवनक) उ ३।१२७ १२८;५।४३

जोह (योध) ज ३।१५,२१,२२,३१,३४,३६,७७, ७८,९१,९८,१६७।९,१७३,१७५,१९९ उ १।१२३;५।१८

झ

झंझावाय (झञ्झावात) प १।२९

झय (ध्वज) ज १।३७;२।१५,२०;३।७,३१,३५, १७८,१७९

झया (ध्वजा) उ १।२२,१४०

झल्लरि (झल्लरी) प ३३।२३ ज ३।१२,७८, १८०,२०९

झस (झस) ज ३।३

√झा (ध्यै) झियाइ उ १।१५;३।९८ झियामि उ १।४० झियासि उ १।३७ झियाह उ १।४२ झियाहि उ १।४१

झाण (ध्यान) उ ३।३१

झाणंतरिया (ध्यानान्तरिका) ज २।७१

झाणकोट्ठोवगय (ध्यानकोष्ठोपगत) ज १।५; २।८३ उ १।३

√झाम (दह्) झामेंति ज २।१०८ झामेह ज २।१०७

झिंगिर (दे०) प १।५०

झिंगिरिड (दे०) प १।५०

√झिया (ध्यै,ध्मा) झियायंति ज ३।१०५

झियायमाण (ध्यायत्) उ १।३६,३७,४२,७१

झिल्लिया (झिल्लिका) प १।५०

झिल्ली (झिल्ली) प १।४८।४२

झुसिर (शुषिर) ज ५।५७ सू २०।१

√झूस (शोषय्) झूसेइ उ ३।८२ झूसेहिइ उ ५।४३

झूसणा (जोषणा) ज ३।२२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झूसित्ता (शोपयित्वा) उ ५।१८
झूसिय (जुष्ट) ज ३।२२४
झूसेत्ता (शोपयित्वा) उ ३।८३;५।४३
झोसेत्ता (शोपयित्वा) उ २।१२;३।१०

ट

टंक (टङ्क) प १।१
टिट्टिय (दे०) ज ५।१६
टोलकिति (दे०) ज २।१३३

ठ

√ठव (स्थापय्) ठवइ ज २।६५ ठविस्संति ज २।१४६ ठवेइ ज २।६५ उ १।१९;३।५१; ४।१८ ठवेंति ज २।१०४ ठवेसि उ ३।७९ ठवेहि प १।४८।५८,५९
ठवणा (स्थापना) प ११।३३।१
ठवणासच्च (स्थापनासत्य) प ११।३३
√ठवाव (स्थापय्) ठवावेइ उ १।४६
ठवावित्ता (स्थापयित्वा) उ १।४६
ठवेत्ता (स्थापयित्वा) उ १।१९
ठविय (स्थापित) ज ३।८१
ठवेत्ता (स्थापयित्वा) ज २।६५
ठा (स्था) ठाइ उ १।२२
ठाईऊण (स्थित्वा) ज ३।२४
ठाण (स्थान) प १।१।४,८४; २।१ से ३९,४१ से ४३,४६,४८ से ५२,५४ से ६४; ६।११०; १४।५,११ से १५,१७; १७।११४।१,१७।१४३ से १४५; २३।१।१;२३।६,७,१९० ज ३।२४, ८९,१०२,१५६,१६२; ५।२१; ७।५६ से ६० सू १०।१३८ से १४१,१४३ से १४६,१४८ से १५१;१९।२४,२७ उ १।२२,१४०;३।५१।१; ३।८३,११५,१२०;४।२१,२२,२४
ठाणठित (स्थानस्थित) सू १९।२६
ठाणमग्गण (स्थानमार्गण) प २८।६,५२
ठाणिज्ज (स्थानीय) उ १।४४,४५
√ठाव (स्थापय्) ठावेमि उ ३।१३
ठावेत्ता (स्थापयित्वा) उ ३।५०

ठिइ (स्थिति) प १।१।४;४।५;५।५,८४,११५, १४८,२१४; २३।१९३ ज २।५६,७१,१५९; ७।१६८।२,१८७ उ १।४१,४३;२।१२,२२; ३।१६,८५,१२४,१५०,१६४,१६९,१७१; ४।२५;५।२९,४२
ठिइकल्लाण (स्थितिकल्याण) ज २।८१
ठिइक्खय (स्थितिक्षय) उ ३।१८,१२५,१५२;४।२६; ५।३०
ठिइय (स्थितिक) उ १।२६,१४०;२।२०
ठिईय (स्थितिक) ज १।२४,३१;४६,४७;२।४४; ३।२२५;४।२२,३४,५४,६०,६१,६४,८०,८५, ८९,९७,१०२,१४१,१४२,१६१,१६७,१७७, १८६,१९६,२०८,२६१,२७०,२७२;७।५५, ५८,२१३
ठिच्चा (स्थित्वा) प १७।१०७;३४।२२,२३ उ १।२०;३।२९
ठितलेस्स (स्थितलेश्य) प २।४८
ठिति (स्थिति) प ४।१ से ४,६ से ४९,५६ से ५८, ६५,७१,७९,८८,९५,९८,१०१,१०४,११३, १३१,१४०,१४९,१५८,१६५,१६८,१७१, १७४,१८३,२०७,२१०,२१३,२९४,२९७, २९९;५।७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४ से २६,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४९,५०,५३, ५६,५९,६३,६८,७१,७२,७४,७८,८३,८६,८९, ९३,९४,९७,१०१,१०२,१०४,१०५,१०७, १११,११२,११९,१२२,१२९,१३१,१३४, १३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७,१४८, १५०,१५४,१६३,१६६,१६९,१७०,१७२, १७४,१७५,१७७,१७८,१८१,१८२,१८४, १८५,१८७,१८८,१९०,१९३,१९७,२००, २०३,२०७,२११,२१८,२२१,२२४,२२८, २३०,२३२,२३४,२३५,२३७,२३९,२४०, २४२;१०।५३।१;२३।१३ से २३,६० से ६४, ६६,६८,६९,७२ से ७७,८०,८१,८३,८५ से ९०,९२,९३,९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,

१७६,१७७,१७६,१८१,१८२,१८३,१८५,
१८७,१६० से १६३;२८१५;३६।८२।१,८३।१
गु १८।२५,२६ से ३४
ठितिणामनिहत्ताउय (स्थितिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।१२२
ठितिनामणिहत्ताउय (स्थितिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।११८
ठितिपडिया (स्थितिपतिता) उ १।६३
ठितीचरिम (स्थितिचरम) प १०।३४,३५
ठितीणामणिहत्ताउय (स्थितिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।११६
ठिय (स्थित) प ११।४७,४८,८० से ८३
ज ३।६२,११६,१३८;५।३,२८;७।५८ सू १।१७
उ १।१६

ड

डंस (दंश) ज २।४०
डब्भ (दर्भ) प १।४२।१
डमर (डमर) ज २।४२
डमरबहुल (डमरबहुल) ज १।१८
√डह (दह्) डहेज्जा ज २।६
डाव (दे०) उ १।१३८
डिंब (डिम्ब) ज २।४२
डिंबबहुल (डिम्बबहुल) ज १।१८
डिंभय (डिम्भक) उ ३।६२,११४,१२३,१३०
डिंभिया (डिम्भिका) उ ३।६२,११४,१२३,१३०,
१३१,१३४
डोंगरू (दे०) ज २।१३१
डोंब (दे०) प १।८६
डोंबिलग (दे०) प १।८६

ढ

ढंक (ध्वांक्ष) प १।७६ ज २।४०,१३७
ढिंकुण (दे०) प १।५१।१ ज २।४०

ण

ण (न) प १।१०१।३ ज १।६ सू १।१४;१०।१२६
णई (नदी) ज ४।२००,२०२,२१२
णउति (नवति) गु १८।१
णउय (नवति) ज १।१८;४।२५;६।८;७।८२,
१७३
णउल (नकुल) प १।७६
णं (दे०) प १।२० ज १।३ सू १।२ उ १।५;२।१;
३।१;४।१;५।१
णंगल (लाङ्गल) ज ३।३
णंगलई (लाङ्गलिकी) प १।४८।६
णंगलिय (लाङ्गलिक) ज २।६४;३।१८५
णंगूल (लाङ्गूल) ज ७।१७८
णंगोलि (लाङ्गूलिन्) प १।८६
णंद (नन्द) ज ७।११८
णंदणवण (नन्दनवन) ज २।६५,६६;४।२१४,
२३४,२३६,२३७,२३६,२४०;५।५५
णंदणवणकूड (नन्दनवनकूट) ज ४।२,३६
णंदणवणविवरचारिणी (नन्दनवनविवरचारिणी)
ज २।१५
णंदा (नन्दा) ज ४।१८०;५।८।१,६८;७।११८,
सू १०।६०
णंदापुक्खरिणी (नन्दापुष्करिणी) ज ४।२२१
णंदावत्त (नन्दावर्त्त) प १।५१।१ ज ३।३,३२
णंदिघोष (नन्दिघोष) ज २।१६;३।३०;५।५२
णंदिपुर (नन्दिपुर) प १।६३।३
णंदिय (नन्दित) ज ५।२१
णंदियावत्त (नन्द्यावर्त) प १।४६ ज ३।१७८;
४।२८;५।४६।३
णंदिरुक्ख (नन्दिरूक्ष) प १।३६।२
णंदिवद्धणा (नन्दिवर्धना) ज ५।८।१
णंदिस्सर (नंदिस्वर)) ज २।१६;५।४४,५२,७४
सू १६।३१
णंदुत्तरा (नन्दोत्तरा) ज ५।८।१
णक्क (नक्र) प १।५६
णक्क (नक्त) प १।८६
णक्ख (नख) ज २।१५,१३३;७।१७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णक्खत्त (नक्षत्र) प २।२० से २२,४६,५१; १५।५५।३ ज १।२४; २।६५,७१,८८,१३८; ३।२०६,२२५; ७।१,५५,५८,९५,९६,१००, १०३,१०४,१११,११२।१,२,११३,१२६, १२८,१२९।१,१३० से १३३,१३४।२,३,४, १३५।४,१३८ से १४५,१४७,१४८,१५०, १५१,१५२,१५६ से १६७,१७०,१७५, १७७।३,१७८।२;१८०,१८१,१९७ चं ५।४ सू १०।१ से ५,८ से २५,२७ से ३१,३३ से ४२,४४,४६ से ५९,६१ से ७५,७७ से ८३, ९२ से १०७,१०९ से १२०,१२२,१२३,१२८, १२९।१,२,१३० से १३५,१५२ से १६९, १७१ से १७३; ११।२ से ६;१२।१९ से २८, ३०; १३।११,१४; १५।१,२,४,६ से ९,११, १२,१४ से १६,१९ २२,२५,२८,३४,३७; १८।४,७,१८,१९,३७; १९।१।१,५।२,८।२, ११।३,१५।३,१९,१९।२१।४,७,२२।३,२२,३१, १९।२३,२६; २०।७ उ ५।४१,

णक्खत्तमंडल (नक्षत्रमण्डल) ज ७।८५ से ९४,९७, ११३ सू १०।१२६,१३०

णक्खत्तमास (नक्षत्रमास) सू १२।२,१२

णक्खत्तविजय (नक्षत्रविजय) सू १।९।४; १०।१३२, १७३

णक्खत्तविमाण (नक्षत्रविमान) प ४।१९५ से २०० ज ७।१९३,१९४ सू १८।८,१२,१६,३३,३४

णक्खत्तसंठिति (नक्षत्रसंस्थिति) सू १०।२७

णक्खत्तसंवच्छर (नक्षत्रसंवत्सर) ज ७।१०३,१०४ सू १०।१२५,१२६,१२९;१२।२

णख (नख) सू २०।२

णखीमंस (नखीमांस) सू १०।१२० कंथारी की जड

णगर (नगर) प २।४१ से ४३,२।६४।१७; ज १।२६;२।२२,६९,७०,१३१;३।१८,३१,५२, ६१,६९,८१,१३१,१३७,१४१,१६४,१६७।२, १८०,१८५,२०९;५।५,४४

णगरणिद्धमण (नगर'णिद्धमण') प १।८४

णगरावास (नगरावास) प २।४१,४२,४६ ज १।२६;४।१७२

णग्गोह (न्यग्रोध) प १।३६।२ ज २।७१

णग्गोहपरिमंडल (न्यग्रोधपरिमण्डल) प १५।३५; २३।४६ ज ७।१६७ सू १०।७४

√णच्च (नृत्) णच्चंति ज ३।१०४,१०५;५।५७

णच्चण (नर्तन) प २।४१

√णज्ज (ज्ञा) णज्जइ ज ३।१०५

णट्ट (नाट्य) प २।३१,४१ ज २।३२;३।८२, १६७।१०,१८५,१८७,२०९,२१८;५।१,१९, ५७;७।५५,५८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६

णट्टमालग (नाट्यमालक) ज ३।१५०,१५१

णट्टमालय (नाट्यमालक) ज १।२४,४६; ६।१६

णट्टमाल (नाट्यमाल) ज २।८

णट्टविहि (नाट्यविधि) ज ३।१६७।१०;५।५७,५८

णट्टाणीय (नाट्यानीक) ज ५।४१,४४

णट्ठरय (नष्टरजस्) ज ५।७

णडपेच्छा (नटप्रेक्षा) ज २।३२

णत (नत) सू २०।७,२०।९।६

णत्तंभाग (नक्तंभाग) सू १०।४,५

णत्तु (नप्तृ) ज २।१३३

णत्थि (नास्ति) प १।७५,८०;२।५२,६४।१८; ५।४३,६९,८०,९९,१८०;१२।९,११,२१,२८; १३।१६; १५।८७,९४ से १०१,१०३ से १०६, १०८ से ११०,११२ से ११७,११९ से १२३, १२५,१२६,१२८ से १३२,१३८ से १४१, १४३;१७।७०;२१।९२ से १०१; २२।४२; २३।१३७,१३९;२८।१४२,१४५;३०।१७; ३६।८ से ११,१५ से २३,२५,२६,२८,३०, ३१,३३,३४,४४ सू १।१३,१४;१०।२२,२५

√णद (नद्) णदंति ज ५।५७

णदी (नदी) प ११।७७ ज २।३१

णदीबहुल (नदीबहुल) ज १।१८

णपुंसग (नपुंसक) प १।९६,७९;११।५ से १०,२५ से २८

णपुंसगवयण (नपुंसकवचन) प ११।२९,८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णपुंसगवेद (नपुंसकवेद) प १८।६२; २३।३६,८२, १४३,१४८,१५०
णपुंसगवेदग (नपुंसकवेदक) १३।१४,१५,१८
णपुंसगवेदय (नपुंसकवेदक) प २८।१४०
णपुंसगवेय (नपुंसकवेद) प २३।१४५
णपुंसगवेयपरिणाम (नपुंसकवेदपरिणाम) प १३।१३
णपुंसय (नपुंसक) प ३।१८३
णभ (नभ) ज २।६५ सू २०।२
णभसूरय (नभःशूकक) सू २०।२
√णमंस (नमस्य्) नमंसइ ज २।६०;५।२१,५८,६८ णमंसति उ १।२१ णमंसामि उ १।१७
णमंसण (नमस्यन) उ १।१७
णमंसमाण (नमस्यत्) ज १।६;२।६०;३।२०५, २०६;५।५८
णमंसित्ता (नमस्यित्वा) ज २।६० उ १।२१
णमि (नमि) ज ३।१३७ से १३६
णमिय (नत) ज २।१५
णमो (नमस्) ज १।१;३।२४।१,१३१
णमोत्थु (नमोऽस्तु) ज ५।५,२१,४६,५८,६५
णय (नय) प १६।४६
णय (नत) ज ४।१३
णयगति (नयगति) प १६।३८,४६
णयट्ठया (नयार्थता) सू १२।१३
णयण (नयन) प २।३१ ज २।१५,६०,१०३,१०६, १०८,१३३;३।३,६,३५,१०६,१३८;५।२१
णयणमाला (नयनमाला) ज २।६५; ३।१८६,२०४
णयर (नगर) ज ५।७०,७२ उ ३।१०१
णयरी (नगरी) १।६३।६ ज १।२,३;७।२१४
णयविहि (नयविधि) प १।१०१।६
णर (नर) ज १।३७; २।१०१,१३३;३।६२,११६, १७८,१८६,२०४;४।२७;५।२८
णरकंता (नरकान्ता) ज ४।२६६,२६८,२६६।२; ६।२१
णरग (नरक) प २।२० से २७ ज २।१३५ से १३७
णरगावास (नरकावास) प २।२६
णरदावणिय (नरदापनिक) प १।६६
णरवइ (नरपति) ज ३।६,१७,१८,२१,२४।४, ३।२८,३०,३४,३५,३७।२,४१,४५।२,४६,८८, ६१ से ६३,१०६,१३१।४,१३६,१४१,१७७, १८०,१८३,२०१,२१४,२२२
णरवति (नरपति) ज ३।१२६।२
णरवरिंद (नरवरेन्द्र) ३।१३५।२
णरवसभ (नरवृषभ) ज ३।१८,६३,१८०
णरसीह (नरसिंह) ज ३।१८,६३,१८०
णरिंद (नरेन्द्र) ज ३।६,६,१८,३२।१,२,६३,११७, १२६।१,१८०,२२१,२२२
णल (नल) प १।४१।१
णल (नड,नल) प १।४१।१,१।४८।४६ ; ११।७५
णलिण (नलिन) ज २।४;४।३,२५,२१२,२१२।१ चं १।१
णलिणंग (नलिनांग) ज २।४
णलिणकूड (नलिनकूट) ज ४।१६० से १६३
णलिणा (नलिना) ज ४।१५५।१,२२२।१
णव (नवन्) प १।५१ ज १।२० सू १०।२
णव (नव) प २।५० ज ५।१८ चं १।१
णवइ (नवति) ज ४।२१३
णवग (नवक) प १।८१
णवणउइअंगुलपरिणाह (नवनवत्यङ्गुलपरिणाह) ज ३।१०६
णवणवति (नवनवति) ज ४।२१३
णवणिहिवति (नवनिधिपति) ज ३।१२६।२,१७५
णवणीइया (नवनीतिका) प १।३८।३ ज २।१०
णवणीत (नवनीत) सू १०।१२०;२०।७
णवणीय (नवनीत) प ११।२५ ज ४।१३
णवम (नवम) प १७।६६ ज ७।११४।२ सू १०।७७, १२४।२; १३।१०
णवमालिया (नवमालिका) ज ३।१२,८८,१०६; ५।५८
णवमिपक्ख (नवमीपक्ष) ज २।६४
णवमिया (नवमिका) ज ५।१०।१
णवमी (नवमी) ज ७।१२५
णवय (नवक) प २२।४०,४३,४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवरं (दे०) प २।४५,५२ से ५६,६१ ; ५।२१,२६,
३५,३८,४३,५७,६०,६६,७२,७५,८०,८१,८४,
९०,९४,१०२,११६,१५१,१६०,१६१,१६४,
१६१,१९५,२०१ ; ६।६६,६५,६८,१०४,११३;
१०।३० ; ११।८५ ; १२।२६,३१,३६ से ३८;
१३।१६ से १८,२० ; १५।१८,१६,२६,३०,३४,
३५,३८,४६,५५,६३,६५,६७,७५,८५,८६,६१,
९७,९८,१०२,१०३,११५,१२१,१२२,१२५,
१२६,१३६,१३७,१३८,१४०,१४१,१४२ ;
१६।४,१२ ; १७।२३,२५,२७,२६,३०,३२,३३,
३५,५८,६०,६३,७०,६१,६३,६६,१०५,१४५,
१७२ ; १८।८० ; २०।४ ३२,५४ ५५,५७,५८;
२१।३५,६१,७०,७१,६२;२२।४१,४२,४४,
७६,८०,८२,६० ; २३।१०,१२,५६,५८,१५६,
१६६,१६७,१७०,१७२,१७५,१८८,१६० ;
२४।३,११;२६।६;२८।२७,३१,३८,४३,४७,
७३,७४,१०६,११५,१३३,१३८;२६।१४,२१;
३०।१७;३३।१६;३४।३,५,१४;३५।७ ; ३६।६,
७,११,१३,१५,२४,२६,२८ से ३४,३८,४६,
५२,५६,६५,६८,६६,७२,७३ ज २।५२ सू
१।१७ ; १०।२५;१८।२४
णवरि (दे०) ज ३।५०
णवविह (नवविध) प १।६२,१३७;२१।५५;
२३।१४ ३६
णह (नख) ज २।१५,४३,१३३ ; ३।६२,११६,१४५
णहिया (नखिका) प १।४७
णही (नखी) प १।४८।५
णाइ (न) ज ३।१२६
णाइ (ज्ञाति) ज ३।१८७
णाइय (नादित) उ १।१२१,१२२,१२५,१२६,
१३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८,५।१६
णाउं (ज्ञातुम्) सू १६।२२।२६
णाग (नाग) प २।४०।१,८ ; ५।३;१५।५५।३;
ज २।३१ ; ३।२४।१,२,१३१।१,२,१७६ ;
४।२१२;५।५२ ; ७।१२३ से १२५ सू १६।३८
णागकुमार (नागकुमार) प २।३४ से ३६,३८,३६;
७।३,५;२८।७२;३३।११,१४;३६।२०
ज ३।१११ से ३१५,१२४ से १२६ ; ४।१४१
णागकुमारत्त (नागकुमारत्व) प ३६।२०
णागकुमारराय (नागकुमारराज) प २।३४,३५
णागकुमारिंद (नागकुमारेन्द्र) प २।३४ से ३६
णागधर (नागधर) ज ३।१७६
णागफड (नागस्फटा) प २।३०
णागपुप्फ (नागपुष्प) ज ३।२
णागरुक्ख (नागरूक्ष) प १।३५।३
णागलया (नागलता) प १।४०।३
णागोद (नागोद) सू १६।३८
णाडइज्ज (नाटकीय) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८,
६६,१४७,१६८,२१२,२१३,२२१
णाडग (नाटक) ज ३।१७८,२०४,२१४,२२१
णाडगविहि (नाटकविधि) ज ३।१६७।१०
णाडय (नाटक) ज ३।८२,१८६.१८७,२१८;
५।२२,२६
णाण (ज्ञान) प १।१०१।१०;३।१।१,३।५,२८,३०,
३२,३४,३७,४३,४५,६८,६६,७२,७४,८०,८३,
८४,८७,८६,६४,६६,१०१,१०२,१०५,१०७,
११२,११७ ; १७।११२,११३;१८।१।१ ;
२८।१०६।१;३०।२६,२८ सू २०।६।४,५
णाणत्त (नानात्व) प २।४५ ; ६।६८;१५।४४,४५;
२३।१६० ; ३६।१४,१५ ज २।५२,५६,१५६,
१६१;४।१३६,१४१,१६२,२६२ ; ५।४८ से ५० ;
७।३५,५८
णाणपरिणाम (ज्ञानपरिणाम) प १३।२,६,१४,१६,
१७,१६
णाणा (नाना) प २।४८;१५।६,१६,२६;२१।२१,
२२,२७,५६,६०,६१,७८,७६;३३।२१ ;
ज १।३७;३।१६,३०,५६,१०६,१४५,२२२ ;
४।३,५,७,१३,२५ से २७,४६,६३,११४ ;
५।१६,३८,६७;७।१७८
णाणारिय (ज्ञानार्य) प १।६२,६६
णाणावरण (ज्ञानावरण) प २४।६,११

णाणावरणिज्ज (ज्ञानावरणीय) प २२।२६,२७; २३।१,३,६,७,६ से १३,२४,२५,६०,१३४, १३६,१५४,१५५,१६०,१६४,१६७,१७६, १७८,१८६,१६१,१६४ से १६६,२०२;२४।१ से ५,८,१५;२५।१,२;२६।१ से ४,७,१२; २७।१ से ३

णाणाविध (नानाविध) ज २।७;३।१८६ से १६२

णाणाविह (नानाविध) प १।४७।१;२।४१ ज १।१३,२१,२६,३३,३७,४६;२।१२,५७, १२२,१२७,१४७,१५०,१५६,१६४;३।७, १०६,१८४,१६२;४।६३;५।३२

णाणि (ज्ञानिन्) प १८।७६; २३।२००; २८।१३५ ज ५।१५,४६

णाणोवउत्त (ज्ञानोपयुक्त) प ३६।६३,६४

णात (ज्ञात) प १।६५

णाभ (नाभ) ज २।१५

णाभि (नाभि) ज २।५६,६२,६३;४।२६०।१;५।१३

णाभिणाल (नाभिनाल) ज ५।१३

णाम (नामन्) प १।१०१।१०;२।४८,५० से ५२ ५४ से ५७,५६,६०,६२ से ६४,६४।१७;११।३, ११।३३।१;२२।२८;२३।१,१२,३८;२४।१५; २६।११;२७।५;३६।८२,६२ ज १।२,३,५,१६, १८ से २०,२३,३५,४१,४५,४६,४८;५१;२।८, १३,५१,५४,६० से ६३,१२१,१२६,१३०, १४१ से १४५,१४६,१५४,१६०,१६३; ३।१, २,२६,३०,३५,३६,४७,५६,६७,१०३,१०६, १११,११५;१३३,१४५,१६१,१६७।३,२२५; ४।१,३,२५,३१,३४,४०,४१,४५,४८,४६,५१, ५२,५५,५७,६२,६४,६७,६८,७५,७६,८१,८४, ८६,८८,६२,६८,१०३,१०६,१०८,११०,१४१, १४३,१५६ से १६५,१६७ से १६६,१७२ से १७८,१८० से १८२,१८४,१८५,१८७,१८८, १६०,१६१,१६३,१६४,१६६,१६७,१६६ से २०३,२०५ से २०६,२१०।१,२१२,२१३, २१४,२२६,२३४,२३७,२३६ से २४२,२४५, २४६,२५१,२५२,२६१,२६२,२६५,२६६, २६८,२७२,२७४,२७७;५।१८,२८,४६,५७; ७।११४,२१३,२१४ चं १।४ सू १०।१२४; १२।२६; १६।२,६,६,१२,१६; २२।३,२८,३६ उ १।१७

णामक (नामक) ज ३।२६,३६,४७,१३३,१३५

णामग (नामक) ज ४।२००

णामधेज्ज (नामधेय) ज १।४७; ३।८१,२२१, २२६;४।२२,३४,५४,६४,१०२,१०७,११३, १५७।२,१७७,२६०; ७।११४,११७,१२० सू १०।८६,८८,१२४;२०।२

णामधेय (नामधेय) ज ५।२१

णामय (नामक) ज १।४६; २।१७; ४।१०६,१६३, २०४,२१०,२११

णामसच्च (नामसत्य) प ११।३३

णामसूरय (दे०) सू २०।२

णामाहयक (नामाहतक) ज ३।२६,३६,४७,१३३

णायग (ज्ञायक) ज ५।५,४६

णायय (ज्ञातक) ज २।२६

णायव्व (ज्ञातव्य) प १।१०१।३,६,७,६,११; १८।१।२;३५।१।१

णारग (नारक) प १२।६;२४।१०,११;२६।८,६

णाराय (नाराच) प २३।४५,४६ ज ३।३,३१

णारिकंता (नारीकान्ता) ज ४।२६२;६।२१

णारी (नारी) ज ३।१८६,२०४

णारीकंता (नारीकान्ता) ज ४।२।६६

णारीकूड (नारीकूट) ज ४।२६३।१

णाल (नाल) ज ४।७

णालबद्ध (नालवद्ध) प १।४८।४०

णालिएरीवण (नालिकेरीवन) ज २।६

णालिया (नालिका) ज २।६

णालिया (नालिका, नाडीका) पं १।४०।१

णावा (नौ) प १६।४५ ज ३।८०,८१,१५१; ७।१३३।१ सू १०।३३

णावागति (नौगति) प १६।३८,४५

णावासंठिय (नौसंस्थित) सू १०।३३

√**णास** (नाश्) णासेति ज ३।२५ १५६

णासा (नासा) प २।३१ ज २।१५,१३३
णिइय (नित्य) ज ७।२१०
णिउण (निपुण) ज २।१५;३।६,२४,८७,१३८,
२२२;५।५,२१,२८ सू २०।७
णिओग (नियोग) ज २।१३३;५।४३
णिओय (निगोद) प ३।६१,६३
√**णिंद** (निन्द्) णिंदेहि उ ३।११५
णिंब (निम्ब) प १।३५।१;१७।१३०
णिंबछल्ली (निम्बछल्ली) प १७।१३०
णिंबफाणिय (निम्बफाणित) प १७।१३०
णिंबसार (निम्बसार) प १७।१३०
णिकुरंब (निकुरम्ब) ज २।१०
णिक्कंकड (निष्कंकट) ज १।८,२३,३१
निक्कंकडछाया (निष्कङ्कटछाया) प २।३१ ४१
णिक्खमंत (निष्क्रामत्) सू १६।२२।१४
णिक्खमण (निष्क्रमण) ज ४।२७७ सू १३।१७
णिक्खममाण (निष्क्रामत्) ज ३।२०३;७।१०,१६,
२० से २२,२६,२७,६६,७५,८१ चं ४।२
सू १३।६,१२
णिक्खित्त (निक्षिप्त) ज ३।२०,२३,५४,६३,७१,
८४,१३७,१४३,१६७,१८२
√**णिक्खिव** (नि+क्षिप्) णिक्खिवइ ज ३।६२;
५।६७
णिक्कुड (दे०, निष्कुट) प २।१० ज ३।७६,७७,
१०६,१२८,१५१,१७०;५।२५
√**णिगच्छ** (नि+गम्) णिगच्छइ ज २।६५;३।१४,
१७२,२०४,२२६ णिगच्छंति ज ५।६३
णिगच्छित्ता (निर्गत्य) ज २।६५
णिगम (निगम) ज २।२२ उ ३।१०१
णिगर (निकर) ज ३।१२,३५,८८,६५,१५६;
४।१२५;५।५८
णिगरिय (निकरित, निगडित) ज ३।२४।३,
३७।१,४५।१,१३१।३
√**णिगिण्ह** (नि+ग्रह्) णिगिण्हइ) ज ३।२८
णिगिण्हित्ता (निगृह्य) ज ३।२८
णिगोद (निगोद) प ३।६२,८६;१८।३८
णिगोय (निगोद) प १८।४५,५३ ज २।१३३
णिग्गंथी (निर्ग्रन्थी) ज २।७२
णिग्गय (निर्गत) ज १।४;३।६,१७,२१,३१,३४,
१७७,२२२
णिग्गुंडी (निर्गुण्डी) प १।३७।३
णिग्गुण (निर्गुण) ज २।१३५
णिग्घाय (निर्घात) प १।२६
णिग्घायण (निर्घातन) ज २।७०
णिग्घोस (निर्घोष) ज ३।८८,१८०,१८३;५।५,
२६,४६,४७,५६,६७ उ १।१२१,१२२ १२५,
१२६,१३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८;
५।१६
णिचिय (निचित) ज ३।३;५।५;७।१७८
णिच्च (नित्य) प २।२० से २७ ज १।११,२४,
४७;२।११,६७,१३३;३।२२६;४।२२,५४,
६१,६४,१०२,१६६,१६७,१७७,२०३,२१०,
२६४,२७३;५।२६;७।२१०,२१३
सू १६।२२।१७
णिच्चमंडिया (नित्यमण्डिता) ज ४।१५७।१
णिच्चालोय नित्यालोक) सू २०।८
णिच्चुजोत (नित्योद्योत) सू २०।८
णिच्चुज्जोय (नित्योद्योत) सू २०।८।६
णिच्छिण्ण (निश्छिन्न) प २।६४।२२;३६।६४।१
णिच्छीर (निःक्षीर) प १।४८।३६
√**णिच्छुभ** (नि+क्षिप्) णिच्छुभइ प ३६।७३,७४
णिच्छुभति प ३६।५६,६१,६६,७०,७६
णिच्छूढ (निक्षिप्त) प ३६।६२,७७
णिजुत्त (नियुक्त) प २।४१
णिज्जरा (निर्जरा) प १५।४३ से ४७,४६;३६।७६
से ८१
णिज्जाणभूमि (निर्याणभूमि) ज ५।४६
णिज्जाणमग्ग (निर्याणमार्ग) ज ५।४६
णिज्जिय (निर्जित) ज ३।१७५,२२१
णिज्जुत्त (निर्युक्त) ज ३।१७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिज्झरबहुल (निर्झरबहुल) ज १।१८
णिद्दिट्ठयट्ठ (निर्दिष्टतार्थ) प ३६।६३,६४
णिडाल (ललाट) ज २।१५;३।३६,३९,४७,१३३
णिण्णग (निम्नग) प १।८६
णिण्णथल (निम्नस्थल) ज ७।११२।५
णिण्णथलय (निम्नस्थलक) सू १०।१२६।५
णिण्णुण्णय (निम्नोन्नत) ज २।१३१
णिण्हइया (निह्नविका) प १।९८
णितंब (नितम्ब) ज १।५१; ३।६१,१३७;४।१७४, १७५,१७६,१८२,१८८
णित्थारण (निस्तारण) ज ३।१०६
णिदा (दे०) प ३५।१११,३५।१६
णिदाया (दे०) प ३५।१७,१८,२०,२२,२३
णिदाह (निदाघ) सू १०।१२४।२
निद्दा (निद्रा) प २३।१४,२६,२७,१३४,१५५, १७७,१८०
णिद्दाणिद्दा (निद्रानिद्रा) प २३।१४
णिद्ध (स्निग्ध) प १।६;२।३१;५।१५४,२११; ११।५६,६०; १३।२२।१,२; २८।२६,३२,६६ ज २।१५;३।३,२४,३५; ७।१७८
णिद्धंत (निर्ध्मात) प २।३१
णिद्धया (स्निग्धता) प १३।२२।१
णिद्धाइत्ता (निर्धाव्य) ज २।१३४
√णिद्धाव (निर्+धाव्) णिद्धाइस्संति ज २।१३४, १४६
णिप्पंक (निष्पंक) ज १।८,२३
णिप्पच्चक्खाणपोसहोववास (निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवास) ज २।१३५
√णिप्फज्ज (निर्+पद्) णिप्फज्जइ ज २।६
णिप्फत्ति (निष्पत्ति) ज ३।१६७।६
णिप्फाइय (निष्पादित) ज ३।१२०
णिप्फायय (निष्पादक) ज ३।११९
णिप्फावग (निष्पावक) ज २।३७
णिब्भय (निर्भय) ज ३।१२६;५।५८
णिब्भिज्जमाण (निर्भिद्यमान) ज ४।१०७
णिभ (निभ) ज ३।३०,१७८

√णिमज्जाव (नि+मज्जय्) णिमज्जावेइ ज ३।९८
णिमुग्गजला (निमग्नजला) ज ३।९७ से १०१, १६१
णिम्मम (निर्मम) ज २।७०; ५।५,४६,५८
णिम्मल (निर्मल) प २।३०,३१ ज १।८,२३,३१; २।१५; ४।१२५; ५।६२; ७।१७८
णिम्माणणाम (निर्माणनामन्) प २३।३८,१२८
णिम्माय (निर्मात) ज ३।१
णिम्मिय (निर्मित) ज ३।३५
णिम्मेर (निर्मर्याद) ज २।१३५
√णियंस (नि+वस्) णियंसंति ज २।१०० णियंसेइ ज २।९९
णियंसण (निवसन) प २।४१
√णियंसाव (नि+वासय्) णियंसावेंति ज ३।२११
णियंसावेत्ता (निवास्य) ज ३।२११
णियंसेत्ता (न्युष्य) ज २।९९
णियग (निजक) ज २।९४; ३।३,१८७,१८८ सू २०।७
√णियच्छ (निर्+दा) णियच्छति प २३।३
णियत (नियत) ज ३।८१
णियतिया (नैयतिकी) प १७।११,२२,२३
णियत्थ (दे०) ज ३।१२५,१२६
णियम (नियम) प १।२०,२३,२६,२९; ६।११४, ११६; १०।२;११।५३,५७,५९,६९,६९।१; २१।६६,९९,१००,१०३; २२।४८,५१,६८, ६९,७१ से ७४; २३।१०,१२;२४।१४;२५।२, ४;२७।६;२८।१९,३८,६५,९८ से १०१;३६।५९ ज ७।५०,५३,१६९ सू १८।३
णियमा (नियमा) ज ७।३२।१ सू २०।९
णियय (नियत) ज १।११,४७;३।२२६; ४।२२, ५४,६४,१०२,१५९;५।२२,२६
णियय (निजक) सू १९।२२।१४
णियया (नियता) ज ४।१५७।१
णियर (निकर) ज २।१५
णिरइ (निर्ऋति) ज ७।१२०,१३०,१८६।४ सू १०।८३

णिरइदेवता (निर्ऋतिदेवता) सू १०।८३

णिरइयार (निरतिचार) प ११।२६

णिरंतर (निरन्तर) प १०।३२ से ३४,४०;११।४१, ७१;२०।२७,३१,५६;२२।१३,१५,१७,१९ से २१;३६।८,६ ज २।१५

णिरय (निरय) प २।१,१०;२३।३९,८१,१११, १४६,१७१

णिरय (निरत) ज २।१३१

णिरयगतिपरिणाम (निरयगतिपरिणाम) प १३।३

णिरयगतिय (निरयगतिक) प १३।१४

णिरयगामि (निरयगामिन्) ज १।२२,५०;२।५८, १२३,१२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१

णिरयावास (निरयावास) प २।२० से २४

णिरवसेस (निरवशेष) प ६।९२;१०।२८;१७।२८; २१।९४;३४।२४;३६।२८,४६,६५,६९,७२

णिरहंकार (निरहंकार) ज २।७०

णिराणंद (निरानन्द) ज २।९०;१०३,१०६,१०८

णिरातंक (निरातङ्क) ज २।१६

णिरालय (निरालय) ज २।६८

णिरालोय (निरालोक) ज २।१३१

णिरावरण (निरावरण) ज २।७१,८५

√**णिरुंभ** (नि + रुध्) णिरुंभइ प ३६।९२ णिरुंभति प ३६।९२

णिरुंभित्ता (निरुध्य) प ३६।९२

णिरुद्ध (निरुद्ध) प २३।१९३

णिरुवकिट्ठ (निरुपक्लिष्ट) ज २।४।१

णिरुच्छाह (निरुत्साह) ज २।१३३

णिरुवलेव (निरुपलेप) ज २।३

णिरुवहय (निरुपहत) ज २।१५

णिरुव्विग्ग (निरुद्विग्न) ज ३।११६

णिरुहा (नीरुहा) प १।४८।३

णिरेयण (निरेजन) प ३६।९३,९४

णिरोगय (नीरोगक) ज २।१२

णिरोह (निरोध) प ३६।९२

णिल्लज्ज (निर्लज्ज) ज २।३३

णिल्लेव (निर्लेप) ज २।६

णिवइय (निपतित) ज ३।२६,३९

णिवड्ढेत्ता (निवृध्य) ज ७।३०

णिवड्ढेमाण (निवर्धमान) ज ७।१३,१९,२२,७२, ७८,८४

णिवण्ण (निषण्ण) ज ७।१७८

णिवतित (निपतित) ज २।१४२ से १४५

णिवत्त (निवृत्त) उ ३।१२६

√**णिवय** (नि + पत्) णिवयंति ज ५।६४

णिवह (निवह) ज ३।१०६

णिवात (निपात) प ३६।८१ ज २।१३१

णिवाय (निपात) ज ३।३५,१०९

णिविट्ठ (निविष्ट) प २०।३९

णिवुड्ढि (निवृद्धि) सू १३।१७

णिवुड्ढेत्ता (निवर्ध्य) सू ९।१

णिवुड्ढेमाण (निवर्धमान) सू ९।२

णिवेइत्ता (निवेद्य) ज ३।८१

√**णिवेद** (नि + वेदय्) णिवेएइ ज ३।८१;५।५८ णिवेदम ज ३।५ णिवेदेमो ज ३।९०

णिवेस (निवेश) प १।७४ ज ३।२८,३१,४१,४६, ५२,११५,१३५,१४१,१५१,१६४,१६७।२,१८०

√**णिवेस** (नि + वेशय्) णिवेसेइ ज ५।२१,५८

णिवेसेत्ता (निवेश्य) ज ५।२१

णिव्वण (निर्व्रण) ज २।१५;३।१७७;७।१७८

√**णिव्वत्त** (निर् + वृत्) णिव्वत्तेइ सू ९।२ णिव्वत्तेति प २३।१९३ सू ९।१

णिव्वत्त (निर्वृत्त) ज ३।३०,४३,५१,६०,६८,७६, १३६,१५१,१७०,१७८,२१९

णिव्वत्तणया (निर्वर्तन) प ३४।२,३

णिव्वत्तणा (निर्वर्तना) प १५।५८।१,१५।६१

णिव्वत्तिय (निर्वर्तित) प २३।१३ से २३

णिव्वय (निर्व्रत) ज २।१३५

णिव्वाघाय (निर्व्याघात) प १६।५५;२१।९५; २८।३१ ज २।७१,८५

णिव्वाणमग्ग (निर्वाणमार्ग) ज २।७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**णिव्वाण** (निर्+वापय्) णिव्वाविस्सति ज २।१४१ णिव्वाहि ज ५।२८ णिव्वावेंति ज २।११२ णिव्वावेह ज २।१११
णिव्वुइकर (निर्वृतिकर) ज २।६४; ३।३; ४।१४६
णिव्वुइकरण (निर्वृतिकरण) प १।१।२
णिव्वुतिकर (निर्वृतिकर) ज ४।१०७
णिसंत (निशान्त) ज ५।२६
णिसग्ग (निसर्ग) प १।१०।१।२
णिसट्ठ (निःसृष्ट) ज ३।२५,३८,४६,४७,१३२
णिसढ (निषध) प १६।३० ज ४।६६
णिसढकूड (निषधकूट) ज ४।६६
णिसण्ण (निषण्ण) ज २।८८; ३।६,८१,२२२
णिसम्म (निशम्य) ज ३।६
णिसह (निषध) ज ४।८१,८६,८७,६७,६८,२०१ से २०३,२०६,२०७,२०६,२३८,२६२
णिसहकूड (निषधकूट) ज ४।२३६
णिसहद्दह (निषधद्रह) ज ४।२०७
√**णिसिर** (नि+सृज्) णिसिरइ ज ३।२४,२६, ३७,३६,४५,४७,१३१,१३३ णिसिरंति ३।१६२; ४।५,७; ५।५,७ णिसिरति प ११।७१,७२,८४,८५
णिसिरण (निसृजत) प ११।७१
णिसिरमाण (निसृजत्) प ११।७१
णिसीइत्ता (निषद्य) ज ३।४६
√**णिसीय** (नि+षद्) णिसीएज्ज प ३६।६१ णिसीयइ ज ३।८,४१,४६,५८,६६,७४,१४७, २१५,२२२ णिसीयंति ज १।१३,३०,३३; २।७; ४।२; ५।४२ णिसीयति ज ३।१८८
√**णिसीयाव** (नि+षादय्) णिसीयावेंति ज ५।१४,१७
णिसीयवेत्ता (निषाद्य) ज ५।१४
णिसेग (निषेक) प २३।६० से ६४,६६,६८,६६, ७३,७५ से ७७,८१,८३,८५ से ६०,६२,६५, से ६६,१०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,१७६,१७७, १८२,१८३,१८७
णिस्संग (निःसङ्ग) ज ५।५८
णिस्सग्गरुइ (निसर्गरुचि) प १।१०।१।३
णिस्सा (निश्रा) प १।२०,२३,२६,२६,४८
णिस्साय (निश्राय) ज ३।१०६
णिस्सील (निःशील) ज २।१३५
णिस्सेस (निःश्रेयस्) ज २।७१
णिहट्टु (निहृत्य) ज ३।६
√**णिहण** (नि+हन्) णिहणंति ज ५।१३
णिहणित्ता (निहत्य) ज ५।१३
णिहयरय (निहतरजस्) ज ५।७
णिहि (निधि) प १५।५५।२ ज ३।१६७।१३,१४, १६८
णिहिय (निहित) ज ३।११६,२२१
णिहिरयण (निधिरत्न) ज ३।१६७,१७०;७।२०१, २०२
णिहुय (स्निहूक) प १।४८।४१
√**णी** (नी) णेइ ज ७।१५६,१५७,१६१,१६५, १६६; ३।१६३ णेति ज ७।१५६ सू १०।६३ णेति सू १०।६३
√**णी** (गम्) णीति ज ३।१०६
णीइ (नीति) ज ३।१६७
णीणिया (नीनिका) प १।५१
णीम (नीप) प १।३६।३
णीय (नीत) प १५।१०२
णीयतर (नीचतर) ज ४।५४
णीयागोय (नीचगोत्र) प २३।२२,५७,५८,१३२
णीरय (नीरजस्) प २।३०,३१,६३; ३६।६३,६४ ज १।१८,२३,३१;२।६; ५।५८
णीरागदोस (नीरागदोष) ज ५।५८
णील (नील) प १।६ से ८;२।३१,२।४०।११; ५।५,७; १३।६; १७।६४;२३।१०४; २८।३२, ६६ ज ३।३१; ४।२६४ सू २०।२,८,२०।८।३
णीलकणवीरय (नीलकरवीरक) प १७।१२४
णीलकूड (नीलकूट) ज ४।२६३।१
णीलबंधुजीवय (नीलबन्धुजीवक) प १७।१२४
णीलय (नीलक) प १७।१२६ सू २०।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीललेस (नीललेश्य) प १७।८३,९२,९४,९५, १०२,१०३,१०८,१६८; १८।७०
णीललेसट्ठाण (नीललेश्यास्थान) प १७।१४६
णीललेसा (नीललेश्या) प १७।१२१,१२४; २८।१२३
णीललेस्स (नीललेश्य) प ३।९९;१३।१४;१७।३१, ४६,४७,४९,६१,६४,६६ से ६८,७१ से ७४, ७६,८१ से ८५,८७,१००,१०३,१०९ से १११, १६७
णीललेस्सट्ठाण (नीललेश्यास्थान) प १७।१४६
णीललेस्सा (नीललेश्या) प १६।४९; १७।३६, ११५ से १२८,१२४,१२९,१३१,१३६,१४४, १४५,१४८ से १५२
णीललेस्सापरिणाम (नीललेश्यापरिणाम) प १३।६
णीलवंत (नीलवन्त) प १६।३० ज ४।९८,१०३, १०८,११०,१४०।८,१४१ से १४३,१६२,१६५, १६७,१७३ से १७६,१७८,१८० से १८२, १८४,१८५,१८७,१८८,१९०,१९१,१९३, १९४,१९६,१९७,१९९,२००,२२५।१,२२७, २६२ से २६५
णीलसुत्तय (नीलसूत्रक) प १७।११९
णीली (नीली) ज ३।२४
णीलुप्पल (नीलोत्पल) प १७।१२४
णीसंद (निष्यन्द) प १।१।३ चं १।१
णीसल्ल (निःशल्य) ज ५।५८
√**णीसस** (निर् + श्वस्) णीससंति प १७।२,२५; २८।२१,३३,३८,६७
णीसास (निःश्वास) ज २।१६
णीहम्ममाण (निर्हन्यमान) ज ३।३१
णीहारिम (निर्हारिम) ज २।१२
णीहु (स्निहु) प १।४८।१
णूणं (नूनं) प ११।१;१७।९४,९५,९९ से १०४, ११५,११८,१२०,१२८,१४८,१४९,१५१,१५४; ३६।८१
णेउर (दे०) प १।४९,५१
णेग (नैक) प २८।४०,४३,६९ ज ३।३,३२
णेगम (नैगम) प १६।४६
णेतव्व (नेतव्य) सू ६।१;८।१;९।३;१०।२३,२५; १५।६;१८।१;१९।१,३५;२०।८
णेतु (नेतृ) सू १०।६३
णेत्त (नेत्र) प १५।७७,८२
णेत्तविण्णाणावरण (नेत्रविज्ञानावरण) प २३।१३
णेत्तावरण (नेत्रावरण) प २३।१३
णेद्दूर (दे० नेहुर) प १।८९
णेम (नेम) ज १।११
णेमि (नेमि) ज ३।३०,९५,१५९,१७८
णेमिपास (नेमिपार्श्व) ज ३।२२
णेम्म (नेम) ज ४।२६
णेय (ज्ञेय) प २१।५३ ज ३।७७,१०९,१२९, ७।१२७।१,१६७।१ चं ५।२ सू १।९।२
णेयत्तिया (नैयत्तिकी) प १७।२५
णेयव्व (नेतव्य) प ४।५५; ५।१६१;८।३; ११।८१; १५।१०२,१०८,१४३; १७।८८; २१।५२; २२।७६; ३६।२२,२६,३२,४६ ज १।१२ से १४,२५,४६;२।४,६,४६,५६,९४,१३९,१५९; ३।६४,१५०,१५१,२१७; ४।१०,४७,५३,५६, ६०,६४,७९,८४,९०,९२,९६,१०९,१४१, १४७,१६०,१६३ से १६५,१७३,१७४,१९७, २०७,२१०,२३८,२४३,२६२,२६८,२७४, २७७; ५।५३; ६।५; ७।३५,५०,५८ १३०, १३१,१३५,१५५,१७६ सू ७।१,९।२; १०।२२
णेयु (नेतृ) सू १।९
णेरइअत्त (नैरयिकत्व) प १५।९४
णेरइय (नैरयिक) प २।२०,२१; ३।१९,२२; ४।३; १०।३२ से ३८,४० से ४२,४४ से ५२; ११।४४,८०; १२।२,११ से १३,१५,३६; १३।१४,१६ से १९; १४।२,३,५,७,९,११ से १५,१८; १५।१७,१८,३५,४६,४८,५९,६२, ६३,६५,६६,७१,७५,७८,८२,८३,९१,९४ से ९७,१००,१०२,१०७,१०८,११८ से १२०;

१२४,१३४,१३५,१३८,१४०,१४१;१६।३,६,११,१४,२०,२५,२६,३१,३२;१७।१ से ६,८ से १४,१७,१८,२३,२५,२८,२९,३२,३७,४०,४२,४६,५७,८५,९० से ९२,१००,१०६ से १११;१८।२,५,८,९,११;१९।१;२०।१।१;२०।१ से ३,६,७,९,१०,१४,१५,१७ से २०,२३ से २५,२७,३२,३४,३५,३८ से ४२,४९,५२;२१।५१,५२,५८,५९,६५,६६,७७,८१,८७;२२।११,१३,१५,१७,१९ से २१,२३,२४,२६,२७,३०,३१,३३,३५,३७ से ४५,४७,५३,५७,६६,७३,७५,७६,७९,८२,८७,८८,९०,९८,१००;२३।२,४,६,७,१०,१८,३७,५४,७८,८०,१४६,१९४ से १९६,१९८;२४।१,३,५,८,१४,१५;२५।१,२,४;२६।१,३;२७।१,६;२८।१,३ से ५,२१ से २६,३० ३८,९८,१०१,१०२,१०४,१०९,११७,११९,१३३,१४३ से १४५;२९।५ से ७,१५,१८,१९,२२;३०।५ से ७,१४,१७,२४;३१।२,४,६।१;३२।२,५;३३।१ से ७,१९,२७,३०,३१,३४,३५,३७;३४।१,३,५,६,१०,१३,१४;३५।२,५,७,९,११,१३,१५,१७,१८,२१;३६।४,८,९,११ से १३,१५,१८,२० से २२,२४,३० से ३४,३६,४३ से ४७,४९,५४,६५,६८,६९,७२ ज २।७१

णेरइयअसण्णिआउय (नैरयिकासंज्ञ्यायुष्) प २०।६२,६४

णेरइयत्त (नैरयिकत्व) प १५।१०३,१०४,१०९,१११,११५,११८,१२२,१२६,१२९,१४१,३६।१८,१९,२१,२३,२५,२६,३० से ३४,४६,४७

णेरइयाउय (नैरयिकायुष्) प २३।१८,३७,७८,८०,१४६,१६९,१७०

णेरतिय (नैरयिक) प १०।३९

णेवच्छ (नेपथ्य) प २।४१

णेवत्थ (नेपथ्य) ज ५।४३;७।१०१

णेव्वाण (निर्वाण) प २।६४।२०

णेसप्प (नैसर्प) ज ३।१६७।२,१७८

णो (नो) प ११।६८ ज २।६ सु ८।१

णोअपरित्त (नोअपरीत) प १८।११२

णोअसंजय (नोअसंयत) प १८।९२

णोअसण्णि (नोअसंज्ञिन्) प ३१।५,६

णोइंदिय (नोइन्द्रिय) प १५।७०

णोकसायवेयणिज्ज (नोकषायवेदनीय) प २३।१७,३४,३६

णोपज्जत्तयणोअपज्जत्तय (नोपर्याप्तकनोअपर्याप्तक) प १८।११५

णोपरित्त (नोपरीत) प १८।११२

णोभवसिद्धियणोअभवसिद्धिय (नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिक) प १८।१२४;२८।११३,११४

णोभवोववातगति (नोभवोपपातगति) प १६।३७

णोभवोववायगति (नोभवोपपातगति) प १६।२४,३३ से ३७

णोमालिया (नवमालिका) प १।३८।१ ज २।१०;४।१६६

णोमालियापुड (नवमालिकापुट) ज ४।१०७

णोसंजतणोअसंजतणोसंजयासंजय (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३२।१,२

णोसंजतणोअसंजयणोसंजतासंजय (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३२।४

णोसंजय (नोसंयत) प १८।९२

णोसंजयणोअसंजयणोसंजयासंजय (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प २८।१३१;३२।३,६

णोसंजयासंजय (नोसंयतासंयत) प १८।९२

णोसण्णिणोअसण्णि (नोसंज्ञिनोअसंज्ञिन्) प १८।१२१;२८।१२०,१२१,१३४,१३६;३१।१ से ३,५,६

णोसुहुमणोबादर (नोसूक्ष्मनोबादर) प १८।११८

√**ण्हाण** (ष्णा) ण्हाणेइ उ १।६७ ण्हाणेंति ज २।१०० ण्हाणेति ज २।६६

ण्हाणपीढ (स्नानपीठ) ज ३।६,२२२

ण्हाणमंडव (स्नानमण्डप) ज ३।६,२२२

ण्हाणमल्लियापुड (स्नानमल्लिकापुट) ज ४।१०७

ण्हाणेत्ता (स्नात्वा) ज २।६६

ण्हात (स्नात) सू २०।७

ण्हाय (स्नात) ज ३।५८,६६,७४,७७,८२,८५, १२५,१२६,१४७,१५३ उ १।१६,४२,७७, १२१,१२२,१२६; ३।२६,११०,१४१;४।१२, १८;५।१७

ण्हारु (स्नायु) ज २।१३३; ३।२४

√**ण्हाव** (स्नापय्,स्नपय्) ण्हावेइ उ ३।११४

ण्हावेत्ता (स्नपयित्वा, स्नापयित्वा) ज २।१००

त

त (तत्) प १।१ सू १।१ उ १।१

तइय (तृतीय) प ३।२१; १।८०।१; १५।१४३ ज ३।१३५।१; ४।५६,६७,१४२।३; ७।१०८, १५८ चं ४।३ सू १।८।३ उ २।२२; ३।६८; ४।१

तइया (तृतीया) ज ७।१२५ सू १०।१४८,१५०

तइविह (ततिविध) प १५।५६

तउखंड (त्रपुखण्ड) प ११।७४

तउय (त्रपुक) प १।२०।१

तउस (त्रपुस) प १।४८।४८ ज ३।११६ खीरा

तउसमिंजिया (त्रपुसमिञ्जिका) प १।५०

तउसी (त्रपुषी) प १।४०।१ खीरा की लता

तए (ततस्) प १।४; २।८; ३।११; ५।१३

तओ (ततस्) प ३४।२ से ३; ३६।७७,६२ उ ३।५१,५३,५४,८६,१०७,११०,१३६; ४।२१

तंजहा (तद्यथा) सू १।१२

तंडव (ताण्डवय्) तंडवेंति ज ५।५७

तंडुल (तण्डुल) ज ३।१२,८८;५।५८ उ ३।५१

तंत (तान्त) उ १।५८

तंतवा (तान्त्रवक) प १।५१

तंती (तन्त्री) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५; २।६५;३।८२,१८५ से १८७,२०४,२०६, २१८;५।११,१६; ७।५५,५८,१८४ सू १८।२३; १६।२३,२६

तंतु (तन्तु) ज ३।१०६

तंतुवाय (तन्तुवाय) प १।६७

तंदुल (तण्डुल) उ ३।५१

तंदुलमच्छ (तण्डुलमत्स्य) प १।५६

तंदुलेज्जग (तन्दुलीय) प १।४४।१ वायविडंग, चोलाई का साग

तंब (ताम्र) प १।२०।१;२।३१;१७।१२५ ज २।१५;३।१३८।१

तंबकरोडय (ताम्र'करोडय') प १७।१२५

तंबखंड (ताम्रखण्ड) प ११।७४

तंबच्छिकरण (ताम्राक्षिकरण) प १७।१३४

तंबछिवाडिया (ताम्र'छिवाडिया') प १७।१२५

तंबिय (ताम्रिक) उ ३।५०,५५

तंस (त्र्यस्र) प १।४ से ६;१०।१५,१६

तक (तकत्) ज ३।६५,१५६

तक्करबहुल (तस्करबहुल) ज १।१८

तक्कलि (तर्किल) प १।४३।१ चक्रमर्द वृक्ष, चकवड

तगरमेला (तगरमेला) ज ३।११।३

तगरपुड (तगरपुट) ज ४।१०७

तच्च (तृतीय) प ३।१८३;२१।६०;३३।१६;३६।६२ ज ७।१६२ सू १।१४,१६,१७,२१ उ १।३६, ४०,११५,११६; ३।१,२,२३,५४,६०,६१,७७, ७८,८७,८८,१०८

तच्चा (तृतीया) सू १२।२१

तच्छण (तक्षण) ज २।७०

तट्ट (दे०, स्थल) प २।८

तट्ठ (त्रस्त) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२

तट्ठदेवया (त्वष्टृदेवता) सू १०।८३

तट्ठु (त्वष्टृ) ज ७।१३०,१८६।४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तड (तट) ज ३।१०६ उ ५।५

तडाग (तटाक) प २।१३

तडित (तडित्) ज ३।२४

तण (तृण) प १।३३।१,१।४२,४४।१,१।४८।४६; ३८।६१ ज १।१३,२१,२६,२६,३३,४६;२।७, २६,५७,१२२,१२७,१४४ से १४७,१५०, १५६,१६४; ३।६८,१६२;४।६३,८२; ५।५

तणमूल (तृणमूल) प १।४८।८

तणय (तृणक) ज २।३६

तणवणस्सइकाइय (तृणवनस्पतिकायिक) ज २।१३१

तणविंटिय (तृणवृन्तक) प १।५०

तणविहूण (तृणविहीन) ज १।१४

तणसोल्लिया (दे०मल्लिका) ज ३।३५

तणाहार (तृणाहार) प १।५०

तणु (तनु) प २।६४ ज १।५१;२।१५,१३३; ४।४५,१५६;७।१७८

तणुक (तनुक) ज ३।१०६

तणुतणु (तनुतनु) प २।६४

तणुय (तनुक) ज १।८,३५,५१; २।१५; ३।१३८।१; ४।४५,११०,११४,१५६,२१३, २४२

तणुयतर (तनुकतर) प १।४८।३४ से ३७

तनुयरी (तनुतरी) प २।६४

तणुवाय (तनुवात) प १।२६; २।१०

तणुवायवलय (तनुवातवलय) प २।१०

तण्हा (तृष्णा) प २।६४।१६ ज ३।१२२।१

तत (तत) ज ५।५७

ततगति (ततगति) प १६।१७,२२

तति (तति) प १५।१३४

ततिय (तृतीय) प १०।१४।१ से ३; ११।४२,८८; १२।३२,३८;३६।८५,८७ सू १०।६५,६६,७३, ७७;१२।१६;१३।१० उ १।६३

ततिविह (ततिविध) प १६।२०

तते (ततस्) ज १।६

ततो (ततस्) प ३४।१,३;३६।८५ ज ३।३५

तत्त (तप्त) प १।४८।५६;२।३१,४८ ज ३।११७

तत्तकवेल्लुयभूय (तप्त'कवेल्लुय'भूत) ज २।१३२, १४१

तत्तजला (तप्तजला) ज ४।२०२

तत्ततव (तप्ततपस्) ज १।५

तत्तसमजोइभूय (तप्तसमज्योतिर्भूत) ज २।१३२, १४१

तत्तिय (तावत्) प १५।१०३ ज ७।२०० सू १०।६५,६६,७३,७७;१२।१६;१३।१०

तत्तो (ततस्) प ११।७,१।४८।१;२।६४।४; २१।४७।१,२; ३४।१,२

तत्थ (तत्र) प १।२० ज १।१३ सू १।१४ उ १।१०

तत्थ (त्रस्त) प २।२० से २७ ज ३।१११,१२५ उ १।८६

तत्थगय (तत्रगत) ज ५।२१

तदणुरूव (तदनुरूप) ज २।१४१ से १४५

तदुभय (तदुभय) प १४।३; २२।४ से ६; २३।१३ से २३

तप्प (तप्र) प ३३।१६

तप्पभिइ (तत्प्रभृति) ज २।६७ उ ३।११८

तप्पाउग्ग (तत्प्रायोग्य) प २३।२००,२०१

तम (तमस्) ज २।१३१

तमतमप्पभा (तमस्तमःप्रभा) प १।५३;२।१,२०; १०।१

तमतमा (तमस्तमा) प २।२७,२।२७।३

तमप्पभा (तमःप्रभा) प १।५३; २।१,२०,२६; ३।१६; ४।१६ से २१; १०।१

तमस (तमस्) प २।२० से २७

तमा (तमा) प ३।१८,१६,१८३; ६।१५,७८,६१; २०।४२;२१।६७;३३।८,१६

तमाल (तमाल) प १।४३।१

तय (त्वच्) उ ३।५०,५१,५३

तयणंतर (तदनन्तर) ज ४।२१३

तयणुरूव (तदनुरूप) प १।७४

तया (त्वच्) प १।३५,३६; १।४८।१३,२३,६३; १।४८ ज २।६७,१४५,१४६

तया (तदा) सू १।१४; १०।२६ उ ३।६२

तयाणंतर (तदनन्तर) सू १।१४,१६,२१,२४,२७; २।३

तयावरणिज्ज (तदावरणीय) ज ३।२२३

तयाविस (त्वग्विष) प १।७०

तयाहार (त्वगाहार) उ ३।५०

तरंग (तरङ्ग) २।१५,१३३; ५।३२

तरच्छ (तरक्ष) प १।६६; ११।२१ ज २।३६,१३६

तरच्छी (तरक्षी) प ११।२३

तरमल्लिहायण (तरोमल्लिहायन) ज ७।१७८

तरुण (तरुण) ज २।१५; ३।३,२४,३०,१७८; ५।५,७

तरुणी (तरुणी) ज ३।८२,१८७,२१८

तल (तल) प २।२० से २७,३०,३१,४१,४६ ज १।४५; २।६५; ३।७,८२,१७८,१८४,१८६, १८७,२०४,२०६,२१८; ४।३,२५,४६,६७,८२, ८५,१२५,१४२; ५।१,५,१६,६२; ७।५५,५८, १७४,१७८,१८४ सू १८।२३; १९।२३,२६

तलऊडा (त्रपुटी) प १।३७।३ छोटी इलायची

तलभंगय (तलभङ्गक) प २।३१

तलवर (तलवर) प १६।४१ ज २।२५; ३।९,१०, ७७,८६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६, २१६,२२१,२२२ उ १।६२; ३।११,१०१; ५।१०

तलाग (तडाग) प ११।७७ ज २।३१

तलाय (तडाग) प २।४,१६ से १६,२८

तलिण (तलिन) ज २।१५

तलिय (तलित) उ १।३४,४६,७४

तल्लेस (तल्लेश्य) प १७।६२,१०२ से १०४

तव (तपस्) प १।१०१।१० ज १।५; २।७१,८३; ३।२२१,११७,२२१; ७।१६६ उ १।२,३; ३।२६,३१,६६,१३२; ५।२६,३२

तव (तप्) तवइंति सू १६।१ तवइंसु ज ७।१ सू १६।१ तवइस्संति सू १६।१ तवंति ज ५।५७ तवयंति ज ७।५४ सू ४।१० तविंसु सू १६।१ तविस्संति ज २।१३१ सू १०।१३२ तवेंति ज ७।१ सू ३।१ तवेंसु सू १६।८ तवेति सू ३।२

तवणिज्ज (तपनीय) प १।४८।५६; २।३१,४८ ज ३।२४,३५,१०६,११७; ४।४६; ५।३८,६७; ७।१७८

तवणिज्जमय (तपनीयमय) ज ४।७,१३,८६,२०६, २५१,२५२; ५।३४

तवविसिट्ठया (तपोविशिष्टता) प २३।२१

तवविहीणया (तपोविहीनता) प २३।२२

तविय (तप्त) ज ३।३५,१०६; ७।११२।५ सू १०।१२६।५

तवोकम्म (तपःकर्मन्) उ २।१०; ३।१४,५०; ४।२४; ५।२८,३६,४३

तवोवहाण (तपउपधान) उ ३।८३

तव्वइरित्त (तद्व्यतिरिक्त) प २३।१९१,१६३

तव्वतिरित्त (तद्व्यतिरिक्त) प २३।१६२

तसकाइय (त्रसकायिक) प ३।५० से ५२,५६,६०, ७२ से ७४,८३ से ८७,६५,१७१ से १७३; १८।२८,३०,३६,४७,५४

तसकाय (त्रसकाय) प १५।५३,५४

तसणाम (त्रसनामन्) प २३।३८,११७

तसरेणु (त्रसरेणु) ज २।६

तसित (तृषित) प २।२३

तसिय (तृषित) प २।२० से २२,२४ से २७ उ १।८६

तह (तथा) प १।१।३ ज ३।११ चं ४।१ सू १।८ उ ३।७६

तह (तथ्य) उ १।२४; ३।१०३

तस्संठित (तत्संस्थित) ज ४।३

तहत्ति (तथेति) ज ३।५३,१००

तहप्पगार (तथाप्रकार) प १।२०,२३,२६,२६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५ से ३७,३६ से ५१,५६,६०,६३ से ६६,
७०,७१,७५,७६,७८,८६,६६;११।२१ से २५

तहा (तथा) प १।३५।३ ज ३।१०७ सू ८।१
उ १।७

तहारूव (तथारूप) उ १।१७;२।१०,१२;३।१४,
१६१;५।३६,४१,४३

तहाविह (तथाविध) प १।४८।७,१० से ३७,४१,
४३

तहिं (तत्र) प २।६४।५

तहेव (तथैव) प १।४८।२ ज १।५१ सू १।१७
उ १।७

ता (तावत्) सू १।१०

ताओ (ततस्) ज १।२० उ २।१३;३।१८

तागंधत्त (तद्गन्धत्व) प १६।४६;१७।११५,११६,
११८,१४८,१४६

ताडिज्जमाण (ताड्यमान) सू ६।३

ताण (त्राण) ज ५।२१

ताफासत्त (तत्स्पर्शत्व) प १६।४६;१७।११५,
११६,११८,१४८,१४६

तामरस (दे०) प १।४६

तामलित्ति (ताम्रलिप्ति) प १।६३।१

ताय (तात) उ १।४२ से ४४

तायत्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) प २।३२,३३,३५,५०,५१
ज २।६०

तार (तार) प ११।२५

तारंतर (तारान्तर) ज ७।१६८।२

तारग्ग (तारकाग्र) चं ५।२ सू १।६।२

तारग (तारक) सू १६।२२।११

तारग्ग (ताराग्र) ज ७।१२७।१,१३१।२,१६७।१
सू १०।५५;१६।२२।२,२६

तारया (तारका) प २।४८ ज ५।२१
सू १०।५५;१६।२२

तारसत्त (तद्रसत्व) प १६।४६;१७।११५,११६,
११८,१४८,१४६

तारा (तारा) प १।१३३ ज ३।७६,११६,१८५,
२०६;७।१३१,१७७।३,१८२ सू १०।५५,
५६,५७,५६,६१,६२;१५।१;१८।४,१८,१६,
३७;१६।२२।१,१६।२२,३१

तारागण (तारागण) ज ३।६,१७,२१,३४,१७७,
२२२;७।१।१,१७० सू १८।४;१६।१,५।३,
८।३,११।४,१५।४,१६,२१।५,८,१६।२२।३२,
१६।३१,३५,३८

तारापिण्ड (तारापिण्ड) सू १६।२२।१

तारारूव (तारारूप) प २।४६ से ५१.६३
ज ४।२७;७।५५,५८,१६८,१७३,१७४,
१७८।२,१७६ से १८२,१६७ सू १५।१;
१८।१ से ३,१८ से २०,३७;१६।२३,२६;
२०।७ उ २।१२;५।४१

ताराविमाण (ताराविमान) प ४।२०१ से २०६;
६।८५ ज ७।१६५,१६६ सू १८।१,८,१३,
१७,३५,३६

तारिस (तादृश) १०।१६४;२०।७

तारिसग (तादृशक) सू २०।७ उ १।३३;२।८,२०;
५।१३,१५,३१

तारूवत्त (तद्रूपत्व) प १६।४६;१७।११५,११६,
११८ से १२८,१४८ से १५२,१५४,१५५

ताल (ताल) प १।४७।१;२।३०,३१,४१,४६
ज १।४५;२।६५;३।८२,१८६,२०४,२०६,
२१८,२२२;५।१,१६;७।५५,५८,१८४
सू १८।१३;१६।२३,२६

ताल (ताड) प १।४३।१

√**ताल** (ताडय्) तालेइ उ ५।१६ तालेहिं
उ ५।१५

तालण (ताडन) ज ७।१७८

तालपुडग (तालपुटक) उ १।८६,६०

तालायार (तालाचार) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८
६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

तालिय (ताडित) उ ५।१७

तालियंट (तालवृन्त) ज ३।११;५।१०,५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालु (तालु) प २।३१ ज २।१५; ३।३५,१०९, ७।१७८

ताव (तावत्) प २४।७ उ १।५१

ताव (ताप) ज ७।३२ उ ३।५०

तावइय (तावत्) ज १।१६,३।८;४।१२१,१४०।२, २१७

तावक्खेत्त (तापक्षेत्र) सू २।३; ४।५; ९।१; १९।२२।१४,१९।२३,२६

तावक्खेत्तसंठिति (तापक्षेत्रसंस्थिति) ज ७।३१,३५, सू ४।१,३,४,९

तावखेत्त (तापक्षेत्र) ज ७।३२,५५,५८,१६८,२१२, २१३

तावखेत्तपह (तापक्षेत्रपथ) सू १९।२२।५

तावण्णत्त (तद्वर्णत्व) प १६।४९; १७।११५, ११६,११८,१४८,१४९

तावतिय (तावत्) प १५।५१,५२,६२ ज ४।१०

तावत्तीस (त्रायस्त्रिंश) ज ५।५०

तावत्तीसग (त्रायस्त्रिंशक) प २।३२,३३,३५,४९ से ५१ ज ५।१९

तावत्तीसय (त्रायस्त्रिंशक) ज २।९०

तावत्तीसा (त्रायस्त्रिंशक) प २।३० से ३२

तावस (तापस) प २०।६१ उ ३।५०,५५

तावसत्त (तापसत्व) उ ३।५०,५५

ताहिं (तत्र) प २४।९

ताहे (तदा) ज ७।५६ उ १।५२; ३।१२३

ति (त्रि) प १।१३ ज १।७ चं ३।३ सू १।७ उ १।१४

तिउड (दे०) ज ४।२०२

तिंदु (तिन्दु) प १।३६।१

तिंदुय (तिन्दुक) प १६।५५

तिंदूय (तिन्दुक) प १।४८।४८

तिक्ख (तीक्ष्ण) ज २।१३३; ७।१७८

तिक्खग्ग (तीक्ष्णाग्र) ज ७।१७८

तिक्खधार (तीक्ष्णधार) ज २।१३१; ३।१०९

तिक्खुत्तो (त्रिस्) ज १।६; २।९०; ३।५,८८,८९, ९८,१३१,१३५,१५५,१५६;५।५,२१ से २४, ४४,४६,५८ उ १।१९,२१; ३।१०३,११३; ४।१३,१९

तिग (त्रिक) ज २।६५; ३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३; ७।१३१।१ उ १।९८

तिगिंछद्दह (तिगिच्छद्रह) ज ४।८८ से ९१

तिगिच्छकूड (तिगिच्छकूट) ज ४।२७५

तिगिच्छायण (चिकित्सायन) सू १०।११६

तिगुण (त्रिगुण) ज २।६; ७।७,६६,९०,११८,१२१, सू १०।९०,९१,१८।९ से १३

तिगुणित (त्रिगुणित) सू १९।२२।२३,२५

तिजमलपय (त्रियमलपद) प १२।३२

तिट्ठाणवडित (त्रिस्थानपतित) प ५।१२,१४,१६, २०,२६,५३,५७,५९,६३,६८,७२,७४,७८,८३, ९४,९७,१०१,११२,११५,११९,१२२

तिट्ठाणवडिय (त्रिस्थानपतित) प ५।१८

तिणिस (तिनिश) ज ३।३५,१७८

तिण्ण (तीर्ण) ज ५।२१

√तितिक्ख (तितिक्ष्) तितिक्खइ ज २।६७

तित्त (तृप्त) प २।६४।१९

तित्त (तिक्त) प १।४ से ९;५।५,७,२०५;११।५८, १३।२८;२३।४९;२८।२०,३२,६६ ज २।१४५

तित्तिर (तित्तिरि) प १।७९ सू १०।१२०

तित्तीस (त्रयस्त्रिंशत्) ज ४।९८

तित्थ (तीर्थ) ज ३।१४,१५,१८,२०,२२,३०,३१; ४।३,२५;५।५५;६।६,१२ से १४

तित्थकर (तीर्थंकर) ज २।६३,१२५

तित्थगर (तीर्थंकर) प २०।११।१ ज २।९०,९५, १०१ से १०३,११३ ११४,११६,१५३; ५।७,२२,७०,७३

तित्थगरचियगा (तीर्थंकरचितका) ज २।१०५ से ११२

तित्थगरणाम (तीर्थंकरनामन्) प २३।३८,५६, १२९,१४६,१७४,१८६

तित्थगरणामगोय (तीर्थंकरनामगोत्र) प २०।३९

तित्थगरत्त (तीर्थंकरत्व) प २०।३८ से ४०,४५, ४९,५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थगरवंस (तीर्थकरवंश) ज २।१२४,१५५
तित्थगरसरीरग (तीर्थकरशरीरक) ज २।६६
तित्थगरसिद्ध (तीर्थकरसिद्ध) प १।१२
तित्थयर (तीर्थकर) ज ४।२४८,२५० से २५२, ५।१.३.५,८ से १४,१६,१७,२१.२२,४४,४६, ६०,६२,६४,६६ से ६६.७२.७३;७।१६८
तित्थयरमाउ (तीर्थकरमातृ) ज ५।६ से १२
तित्थयरमायरा (तीर्थकरमातृ) ज ५।५,१४,१७
तित्थयरमाया (तीर्थकरमातृ) ज ५।७,८,४६,६७
तित्थयराइसय (तीर्थकरातिशय) उ ४।१३
तित्थयरातिसय (तीर्थकरातिशय) उ १।१६;४।१८
तित्थयराभिसेय (तीर्थकराभिषेक) ज ५।५४ से ५६
तित्थसिद्ध (तीर्थसिद्ध) प १।१२;१६।३६
तिधा (त्रिधा) ज १।१८
तिपएसिय (त्रिप्रदेशिक) प ५।१३१,१५६;१०।८
तिपडोयार (त्रिप्रत्यवतार,त्रिपदावतार) सू १६।३५
तिपदेस (त्रिप्रदेशिक) प १०।१४।१
तिभाग (त्रिभाग) प २।६४।४,६,७,६;६।११६; २१।६१;२३।७८,७६,१४७,१६२,१६६, ज १।२०;४८;२।५८,१२६,१५५,१५७,१५६; ३।१;७।३२,३४ सू १।२३;४।५८;६।३
तिभागतिभाग (त्रिभागत्रिभाग) प ६।११६
तिभागतिभागतिभागावसेसाउय (त्रिभागत्रिभागत्रिभागावशेषायुष्क) प ६।११५, ११६
तिभागतिभागावसेसाउय (त्रिभागत्रिभागावशेषायुष्क) प ६।११५
तिभागावसेसाउय (त्रिभागावशेषायुष्क) प ६।११५, ११६
तिभागूण (त्रिभागोन) प २।६४।७ सू १।२३
तिभाय (त्रिभाग) ज २।५५ से ५७,५६,१५६,१५८
तिमि (तिमि) प १।५६
तिमिंगिल (तिमिङ्गिल) प १।५६
तिमिर (तिमिर) प १।४१।१ ज ३।६५,१५६
तिमिसगुहा (तिमिस्रागुहा) ज १।२४;३।६८,६६, ८३,८५,८८ से ६०,६३,६५ से ६७ १०५, १०६,१५५;४।३७.१७२।१,१७४;६।१६
तिमिसगुहाकूड (तिमिस्रागुहाकूट) ज १।२४
तिय (त्रिक) प १६।१५ ज ७।१२१।१
तिय (इंदिय) त्रीन्द्रिय प १७।१६
तियभंग (त्रिकभंग) प २४।७,१३;२६।४,६; २८।११२,११६,११६,१२१,१२३,१२५,१२६, १२८,१२६,१३२,१३३,१३६ से १४५
तिरिक्ख (तिर्यञ्च्) प १०।३३;२१।७
तिरिक्खजोणिणी (तिर्यग्योनिकी) प ३।३६,१२८, १८३;१७।४४,६३,६५ से ६६,८६;१८।४,१०; २०।१३;२३।१६४,१६६,१६८
तिरिक्खजोणिय (तिर्यग्योनिक) प १।५२,५४,५५, ६० से ६२,६६ से ६८,७५,७७,८१;२।२८; ३।२४,३८,३६;१२७,१८३;४।१०४ से १५७; ५।३,२२,८२,८३,८५,८६,८८,८६,६२,६३, ६६,६७;६।२१,२२,४८,५४,६५,७०,७१,७८, ८१,८२,८३,८७,८६,६२,६६,६६ से १०३, १०५,१०७,११३-११६;८।६,७;६।६,७,१६, १७,२२,२३;११।४६;१२।४,२१;१३।१८; १५।३५,४६,८७,१०५,१२१,१३८;१६।७,१४, २५,२७;१७।२३,३५,३८,४१ से ४३,५८, ६३ से ६६,८६ ८७,८६,६७,१०४;१८।३,१०; १६।४;२०।१३,१७,२३,२५,२६,३४,३५,४८; २१।८ से १६,२६ से ३२,४३,५३,६०,६८, ७७,८२,८८;२२।३१,७४,८७,६६;२३।७६, १६४,१६६,१६८,१६६;२४।७;२८।४७,४८, ११६,१३०,१३६,१३७,१४४;२६।१५,२२; ३१।४;३२।२;३३।१,१२,२१,२८,३२,३६; ३४।३,८,३५।१४,२१;३६।७,४०,५१,५७, ७२,७३ ज २।६७,१३५ से १३७
तिरिक्खजोणियअसंखेज्जआउय (तिर्यग्योनिकासंख्यायुष्क) प २०।६४
तिरिक्खजोणियत्त (तिर्यग्योनिकत्व) प १५।६७, १०३,१००६

तिरिक्खजोणियाउय (तिर्यग्योनिकायुष्)
प २०।६३;२३।७६,१४७,१५८,१६२,१६५,
१७०
तिरिच्छ (तिर्यच्) सू १।६।१
तिरिच्छगति (तिर्यग्गति) सू २।१ चं २।१
तिरिय (तिर्यच्) प २।४१ से ४३,४६,४८;
११।६५,६६;१५।५२;२०।५३;२१।८७,९० से
९३;२३।३९,८२,११२,११५,१४८;२८।१५,
१६,६१,६२;३१।६।१;३२।६।१;३३।१६,१७
ज २।४६,७१,९०,१३७;३।७९.११६,११८;
४।५२;५।५,४४;७।४४.५४ सू २।१;४।१०;
१८।१;१९।२२।१२
तिरियगति (तिर्यग्गति) प ६।२-७;२३।१७२
तिरियगतिपरिणाम (तिर्यग्गतिपरिणाम) प १३।३
तिरियगतिय (तिर्यग्गतिक) प १३।१६ से १८
तिरियगामि (तिर्यग्गामिन्) ज १।२२,५०;२।५८,
१२३,१२८.१४८,१५१ १५७;४।१०१
तिरियलोग (तिर्यक्लोक) प २१।८६
तिरियलोय (तिर्यक्लोक) प २।१.४,८,१०,१३,
१६ से १९.२८;३।१२५ से १७३,१७५,१७७
तिरियवाय (तिर्यग्वात) प १।२९
तिरियाउय (तिर्यगायुष्) प २३।१८
तिरीड (किरीट) प २।४९ ज ३।३१
तिल (तिल) प १।४५।१,१।४७।३ ज २।३७,११९
तिलक (तिलक) ज ३।१०९
तिलग (तिलक) ज ३।१२,८८,१७२;५।५८;
७।१७८
तिलचुण्ण (तिलचूर्ण) प ११।७६
तिलतंदुलग (तिलतण्डुलक) सू १०।१२०
तिलपप्पडिया (तिलपर्पटिका) प १।४७।३
तिलपुप्फवण्ण (तिलपुष्पवर्ण) सू २०।८.२०।८।३
तिलय (तिलक) प १।३६।३;२।४८;१५।५५।२
ज ४।४९ उ ३।११४
तिलसिंगा (तिल'सिंगा') प ११।७८ तिल की फली
तिवई (त्रिपदी) ज ३।१७८;५।५७
तिवण्ण (त्रिवर्ण) प ७।१७८
तिवलि (त्रिवलि) ज ३।१३८।१
तिवलियवलिय (त्रिवलिकवलित) ज २।१५
तिवलिया (त्रिवलिका) ज ३।२६,३९,४७
उ १।२२,११५,११७,१४०
तिविह (त्रिविध) प १।१।१;१।५४.६०.६६,७५,
७९,८१,८५;९।१,९,१३,२०,२६;१३।७,१०,
११,१३;१५।७५;१६।४,२४;१७।११,२५,
३०,१३९;१८।५९,६४,७७ ९०,१०५;२१।८;
२२।४ से ६;२३।३३,४२;२९।७;३०।३;
३५।१,६,८ से १० चं १।४ उ ३।३८,४२
तिव्व (तीव्र) प २।२७,२९
तिसत्तखुत्तो (त्रिसप्तकृत्वस्) प ३६।८१
तिसमइय (त्रिसामयिक) प ३६।६०,६७ से ६९,
७१,७५
तिसरय (त्रिसरक) ज ३।९,२२२
तिहा (त्रिधा) ज १।२०;२।५५;१५५
तिहि (तिथि) ज ३।२०९;७।११८,१२१ सू १।९
तीत (अतीत) ज ७।३९
तीतवयण (अतीतवचन) प ११।८६
तीय (अतीत) प १५।५८।२ ज २।९०;३।२६,३९,
४७,५६,१३३,१३८,१४५;५।३,२२;७।५२
तीर (तीर) ज ४।३,२५,६७
तीस (त्रिंशत्) प १।८४ ज १।२० सू १।१८
उ ३।१४
तीसइ (त्रिंशत्) सू १०।४
तीसति (त्रिंशत्) सू १०।३५
तीसतिविह (त्रिंशद्विध) प १।८७
तु (तु) सू १९।२२
तुंग (तुङ्ग) प २।३१,४८ ज २।१५; ३।८१,१५१,
४।४९; ५।४३ उ ५।५
तुंड (तुण्ड) ज ३।२४
तुंब (तुम्ब) प १।४८।४८ उ ३।३०,३५,११९
तुंबी (तुम्बी) प १।४०।१
तुच्छ (तुच्छ) ज ७।११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुच्छत्त (तुच्छत्व) प १५।४४,४५

तुच्छा (तुच्छा) सू १०।६०

तुट्ठ (तुष्ट) ज २।१४६; ३।२,६.८,१५,१६,२६, ३१,४२,५०,५२,५३,५६,६१,६२,६७,६६, ७०,७५,७७,८४,६१,१००,११४,१३७,१४१, १४२,१४८,१५०,१६५,१६६.१७३,१८१, १८६.१६२,१६६,२०८,२१३;५।५,१५,२१, २३,२७ से २६,४१,५५,५७,७० उ १।२१, ४२,४५,१०८; ३।१३,१०१,१०३,११३,१३६, १६०; ४।११,१४,२०; ५।५,३८

तुट्ठि (तुष्टि) ज २।७१ उ १।७१,७२

तुडित (तूर्य) प २।३०,३१,४६

तुडित (त्रुटिक) ज १।३१;३।२६

तुडित (त्रुटित) प २।३०,३१

तुडिय (त्रुटित) प २।३०,३१,४१ ज ३।६,६,२६, ३६,४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५,२११, २२१; ५।२१,५८

तुडिय (दे० त्रुटित) ज २।४ संख्या विशेष

तुडिय (तूर्य) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।१४५; २।६५; ३।१४,३०,४३,५१,६०,६८,८२,१३०, १३६,१४०,१४६,१७२,१८०,१८५,१८६, १८७,२०४,२१८; ५।१,१६,२२,२६; ७।५५, ५८,१८४

तुडिय (दे०) ज ७।१६८।२ सू १८।२३ अन्तःपुर

तुडियंग (दे० त्रुटितांग) ज २।४

तुडियंग (तूर्याङ्ग) ज ३।१६७।१०

तुण्णाग (तुन्नाय) प १।६७

√तुयट्ट (त्वक् + वृत्) तुयट्टंति ज १।१३,३०, ३३; २।७; ४।२ तुयट्टेज्ज प ३६।६१

तुरग (तुरग) ज १।३७; २।१०१; ३।३,२३,२८, ३५,३७,४१,४५,६७,४६,१७८; ४।२७; ५।२८

तुरगरूवधारि (तुरगरूपधारिन्) सू १८।१४ से १७

तुरय (तुरग) ज ३।१३१,१३५

तुरिय (तूर्य) ज ३।१२,७८

तुरिय (त्वरित) ज २।६५,६०; ३।६,२६,३६ ४७, ५६,६४,७२,७८,११३,१२३,१३८,१४५,१८०, २०६; ५।५,२१,२६,२८,४४,४७,६७

तुरुक्क (तुरुष्क) प २।३०,३१,४१ ज २।६५,१०६, ११०; ३।७,१२,८८; ५।७,५८ सू २०।७

तुल (तुला) ज ७।१३३।२

तुलसी (तुलसी) प १।३७।१,१।४४।३

तुलासंठिय (तुलासंस्थित) सू १०।८०

तुल्ल (तुल्य) प ३।३८ से १२०,१२२ से १२४, १७४,१७६,१७८ से १८२; ५।५,७,१०,१२,१६, १८,२०,२४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४६, ५३,५६,५६,६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६, ८६,६३,६७,१०१,१०२,१०४,१०७,१११, ११५,११६,१२६,१३१,१३४,१३६,१३८, १४०,१४२,१४५,१४७,१५०,१५४,१६२, १६६,१६६,१७०,१७२,१७४,१७७,१८४, १८७,१६०,१६३,१६७,२००,२०३,२०७, २११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३४, २३५,२३७,२३६,२४२; ६।१२३;८।५,७,६, ११; ६।१२,१६,२५; १०।३ से ५,२६ से २६; ११।७६,६०; १५।१३,१६,२६,२८,३१,३३, ६४; १७।५६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३, १४४ से १४६; २०।६४; २१।१०४,१०५; २२।१०१,२८।४१,४४,७०; ३४।२५,३६।३५ से ४१,४८,४६,८३।१ ज ३।३,३५; ७।१६८,१६७ सू १८।२,३,३७

तुल्लत्त (तुल्यत्व) ज ७।१६६ सू १८।३

तुवर (तुवर) ज ३।२०६;५।५५,५६

तुवरी (तुवरी) सू १०।१२०

तुसार (तुषार) प २।६४

तुसिणीय (तूष्णीक) ज २।६० उ १।३८,६१,६२, ८६,८७,१००; ३।५६.५६.६१,६४,६८,७१, ७४.७६

तूल (तूल) ज २०।७

तूलफास (तूलस्पर्श) ज ४।१३

तूली (तूली) ज ४।१३

तूवरी (तुवरी) प १।३७।३

तेइंदिय (त्रीन्द्रिय) प १।५०;२।७;३।८,४० से ४२,४६,४९,१४७ से १४९,१८३;४।९८ से १००;५।३,२१,८१;६।२०,६५,७१,८३,८६, १०४,११५;९।४;११।४५;१५।३४,७५,८१, ८६,१३७;१७।४०,६२,१०३;१८।१५,२२; २०।८,२३,२८,३३,४७;२१।६,२८,४२; २२।३१;२३।८७,१५१,१६०,१६१;२८।४५ से ४७,१०१,१२५,१३६;२९।१३;३०।११, २१,३१।३;३४।६

तेइंदियत्त (त्रीन्द्रियत्व) प १५।९७,१४२

तेउ (तेजस्) प ६।८६,९२,१०४,११५;१३।६, १६;१७।४०,९६;१८।२६;२०।८.२३,२८, ५७;२१।८५;२२।२४

तेउकाइय (तेजस्कायिक) प १।१५;२।७ से ९;३।५० से ५२,५६,६० से ६३,६७,७१ से ७४,७८,८४ से ८७,९१,९५,१६२ से १६४,१८३;४।७२,७५ से ७७;५।३,१३,१४;६।१६,१०२

तेउकाइयत्त (तेजस्कायिकत्व) ज ७।२१२

तेउक्काइय (तेजस्कायिक) प १।२४;२।७;३।४, १६४,१८३;९।५;१२।२२;१५।२९,८५,१३७; १७।६१ से ६३,१०३;१८।३,३८,४०,५१; २०।२७,२९,३१,४५;२१।२५,४०;२२।३१

तेउलेस (तेजोलेश्य) प १३।१५;१७।९५,९९, १०२,१६८

तेउलेसट्ठाण (तेजोलेश्यास्थान) प १७।१४६

तेउलेसा (तेजोलेश्या) प १७।५५,१२१,१४६

तेउलेस्स (तेजोलेश्य) प ३।९९;१३।१६,२०; १७।३३,५६,५९,६०,६२,६४,६६ से ६८,७१ से ७६,७८ से ८४,८७,८९,९५,१०१,१०२, १६७;१८।७२;२८।१२३

तेउलेस्सट्ठाण (तेजोलेश्यास्थान) प १७।१४६

तेउल्लेस्सा (तेजोलेश्या) प १६।४९;१७।३४ से ३६,३९,५०,५३,५४,९३,९६,११७,११८, १२१,१२२,१२६,१२९,१३३,१३७,१४४, १५३,१६२ से १६४;२८।१२३

तेउलेस्सापरिणाम (तेजोलेश्यापरिणाम) प १३।६

तेंदिय (त्रीन्द्रिय) प १।१४,५०;३।४२,४६,४९

तेंदुय (तिन्दुक) प १७।१३२,१३३

तेंदूस (तिन्दुस) प १।४८।४८

तेगिच्छायण (चिकित्सायन) ज ७।१३२।४

तेणबहुल (स्तेनबहुल) ज १।१८

तेण (तेन) सू ६।१

तेणउति (त्रिनवति) सू १२।१२

तेणउय (त्रिनवति) ज ४।६२

तेणामेव (तत्रैव) प ३४।२२ ज ३।५

तेतलि (तेजस्तलिन्,तेतलिन्) ज २।५०,१६४; ४।१०९,२०५

तेतालीस (त्रिचत्वारिंशत्) सू ११।६

तेत्तीस (त्रयस्त्रिंशत्) प २।६४।६ ज ४।९८ सू १।२० उ १।१२६

तेंदुरणमज्जिया (दे०) प १।५०

तेपण्ण (त्रिपञ्चाशत्) सू १२।२०

तेय (तेजस्) प २।२०,३१,४१.४९;२८।१४१ ज २।१३३;३।३,१८,९३,१८०,१८८;७।११२।५ सू १०।८८,१२९।५ उ ३।४८,५०,५५,६३, ६७,७०,७३,१०६,११८

तेयंसि (तेजस्विन्) ज ३।७७,१०९

तेयग (तैजस) प २१।७६;३६।३२

तेयगसमुग्घाय (तैजससमुद्घात) प ३६।८,१२,२९, ३२,३५,३७,४१,५३,५५,५७,५८,७३

तेयगसरीर (तैजसशरीर) प २१।७५ से ८१,८३, ९०.९४,१००,१०३,१०४

तेयगसरीरय (तैजसशरीरक) प १२।१०

तेयय (तैजस) प १२।१ से ५;२१।१;३६।१।१

तेयलि (दे०) प १।४३।१

तेयलेस्स (तेजोलेश्य) ज १।५

तेयस्सि (तेजस्विन्) ज २।६८,१३८

तेया (तैजस) प १२।१४,१८,२१,२५,२६,२९,३५. २१।९६,१०२,१०४,१०५;२३।९२;३६।९२

तेया (तेजा) ज ७।१२०।२ सू १०।८८।२
तेयाल (त्रिचत्वारिंशत्) ज १।२३
तेयालीस (त्रिचत्वारिंशत्) सू १०।१५६
तेयासमुग्घाय (तैजससमुद्घात) प ३६।१,५,७,४०
तेयासरीर (तैजसशरीर) प २१।८४ से ९३
तेयाहिय (त्र्याहिक) ज २।४३
तेरस (त्रयोदशन्) प ३६।८१ ज १।७ सू १।१४
तेरसक (त्रयोदशक) सू १३।१२,१३,१७
तेरसम (त्रयोदश) प १०।१४।३ सू १०।७७; १३।१०
तेरसविह (त्रयोदशविध) प १६।७
तेरसी (त्रयोदशी) ज २।८८;७।१२५
तेरिच्छिय (तैरश्चिक) प २०।६१ ज ३।९२,११९
तेलापूय (तैलापूप) प ३६।८१ ज १।७ सू १।४
तेलोक्क (त्रैलोक्य) प १।१।१;३।१२५ से १७३, १७५,१७७
तेल्ल (तैल) प १।१०१।७;१५।१।२;१५।५० ज ३।११।३,५।१४ उ ३।१३०
तेल्लकेला (तैलकेला) उ ३।१२८
तेल्लसमुग्ग (तैलसमुद्ग) ज ५।५५
तेल्लसमुग्गहत्थगय (हस्तगततैलसमुद्ग) ज ३।११
तेल्लोक (त्रैलोक्य) उ ५।५
तेवट्ठ (त्रिषष्टि) ज ७।२० सू २।३
तेवट्ठि (त्रिषष्टि) ज २।६४
तेवण्ण (त्रिपञ्चाशत्) प ४।१३४ ज ४।६२ सू ११।३
तेवत्तरि (त्रिसप्तति) ज २।४
तेवीस (त्रिविंशति) प २।४९ ज २।१२५ सू २।३
तेवीस (त्रिविंशतितम) प १०।१४।३
तेवीसइम (त्रिविंशतितम) प १०।१४।२
तेवीसतिम (त्रिविंशतितम) सू १२।१६
तेसट्ठि (त्रिषष्टि) ज ७।३३
तेसीइ (त्र्यशीति) ज २।६४
तेसीत (त्र्यशीति) सू १।२३
तेसीति (त्र्यशीति) सू १।२३
तेसीय (त्र्यशीति) सू १।१४
तेहिय (त्र्याहिक) ज २।६
तो (ततस्) प २।२७।३
तोट्ठ (दे०) प १।५१
तोण (तूण) प ३।३१,३५,१७८ ज ३।३१,३५, १७८ उ १।१३८
तोमर (तोमर) ज ३।३५,१७८
तोयधारा (तोयधारा) ज ५।११,६३,६४
तोरण (तोरण) प २।१,३०,३१,४१ ज १।३७; २।१५,२०;३।७,१७८,१९५;४।५,२३,२७ से ३०,३५,३७,३८,४०,४२,६५,६७,७१,७३, ७५,७७,९० से ९२,९४,११८,१२८,१४४, १७४,१८३,१८९,१९५,२२१,२४६; ५।३१
त्ति (इति) प ११ च १४
त्थिभग (स्तिभक) प १।४८।१
त्थिमिय (स्तिमित) ज १।२,२६;३।१,३,१८,३१, १८० चं ६ सू १।१ उ १।१,६,२८; ३।१५७; ५।२४
त्थिहु (स्तिभु) प १।४८।१

थ

थंभणया (स्तम्भन) प १६।५३
थंभिय (स्तम्भित) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।९, २२२;५।२१,२८
√थक्कार (दे०) थक्कारेंति ज ५।५७
थण (स्तन) ज २।१५; ३।१३८ उ ३।९८,१३०; ४।६
थणगंतर (स्तनकान्तर) उ ४।२१
थणपाय (स्तनपाय) उ ३।१३०
थणमूल (स्तनमूल) उ ३।९८
थणित (स्तनित) सू २०।१
थणिय (स्तनित) प २।३०।१,२।४०।२,८,१० ज ५।२२
थणियकुमार (स्तनितकुमार) प १।१३१;४।५५; ५।३,८,५१;६।१८,५२,६१,८१,८५,१०२,१०९, ११४;७।३; ८।३;९।३,१५;११।४४; १२।२, १९;१३।१५; १५।१९,७१,७८,८४,१३६;

१६।३,११;१७।१७,६३,१०१;१९।१;२०।८,
१२,२१,२३,२४,२७,३५;२१।५५,६१,७०,९०;
२२।२३,३०,३९,७३,९८;२४।५;२८।२७,९८,
११९;२९।७,१९;३०।७,१७;३१।२;३३।११,
२०,२७,३१,३५;३४।२;३५।१८;३६।५,२४,
३७,७२

थणियकुमारत्त (स्तनितकुमारत्व) प १५।९५,१४१;
३६।२२,२५

थद्ध (स्तब्ध) ज ३।१०९ सू २०।९।२

थल (स्थल) प १।७५ ज २।१३१,१३४;३।३२,९८
उ ३।५५

थलय (स्थलज) प १।४८।४०

थलय (स्थलक) ज ५।७

थलयर (स्थलचर) प १।५४,६१,६२,६६ से ६८
७६;३।१८३;४।१२२ से १४८;६।७१,७८;
२१।८,११ से १६,३५,४४,५३,६०

थवईरयण (स्थपतिरत्न) ज ३।३२।१

थाल (स्थाल) प ११।२५ ज २।१५;३।११;५।५५

थालइ (स्थालकिन्) उ ३।५०

थारुकिणिया (थारुकिनिका) ज ३।११।१

थालीपाक (स्थालीपाक) सू २०।७

थालीपाग (स्थालीपाक) ज २।३०

थावरणाम (स्थावरनामन्) प २३।३८,११७

थासग (स्थासक) ज ३।१०९,१७८;७।१७८

थिग्गल (दे०) प १५।१।२

थिबुग (स्तिबुक) प १५।२९;२१।२४

थिर (स्थिर) ज ७।१२४,१२५,१७८

थिरणाम (स्थिरनामन्) प २३।३८,१२२

थिरीकरण (स्थिरीकरण) प १।१०१।१४

थिल्ली (दे०) ज २।३३

थी (स्त्री) प १।८४

थीणद्धि (स्त्यानर्द्धि) प २३।१४,२७

थीविलोयण (स्त्रीविलोचन) ज ७।१२३ से १२५

थुरय (दे०) प १।४२।२

थूणा (स्थूणा) प १५।१।२,१५।५२

थूभ (स्तूप) प ११।२५ ज २।१५,२०,३१;
४।१२५,१२६

थूभियग्ग (स्तूपिकाग्र) प २।६४

थूभिया (स्तूपिका) प १।१६,३७;४।१०,४९

थूभियाग (स्तूपिका) प २।४८ ज १।३८;४।१०,
११५,२१७,२२६

थेज्ज (स्थैर्य) उ ३।१२८

थेर (स्थविर) प १६।५१ सू २०।९।४ उ २।१०,
१२;३।१४,१५९,१६१,१६७;५।३९ ४१,४३

थेरग (स्थविरक) ज २।१३३

थोव (स्तोक) प ३।१ से १७,२४ से १२०,१२२
से १८१,१८३;६।१२३;७।२,३;८।५,७,९,११;
९।१२,१९.२५;१०।३ से ५,२६,२७;११।७९,
९०;१५।१३,१६,२६,२८,३१,३३,३४,६४;
१७।५६ से ५९,६१.६४,६६ से ६८,७१ से
७४,७६,७८ से ८३,१४४ से १४६;२०।६४;
२१।१०४,१०५;२२।१०१;२८।४१,४४,७०;
३४।२५;३६।३५ से ४१,४८ से ५१,८२
ज२।४।२,६९ सू ८।१;२०।५

थोवतराग (स्तोकतरक) प ३५।२

थोवूण (स्तोकोन) ज २।१५

द

दओदर (दकोदर) ज २।४३

दंड (दण्ड) प २।३०,३१,४१;३६।८५ ज २।६,
६० से ६२;३।३,१२,८८,११७,१७८,१९२;
४।२९;५।५,७,५८;७।१७८ उ १।३१

दंडग (दण्डक) प ६।१२३;११।८३,८५;१४।६,८,
१०,१८;२०।५;२२।२०,२५,२८,४५,५६,५८
७६;२३।८,१२;२८।१४५;३६।८,१२,२०,२६
से ३१,३३,३४,४४,४५

दंडणायग (दण्डनायक) ज ३।९,७७,२२२

दंडणीइ (दण्डनीति) ज २।६० से ६२;३।१६७।९

दंडदारु (दण्डदारु) उ ३।५१।१

दंडपति (दण्डपति) ज ३।१०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंडय (दण्डक) प ११।८०,८२ से ८४;१४।३४;
१५।१०२.१४०;१७।८६;२२।३३,३५,४१,५४

दंडरयण (दण्डरत्न) ज ३।८८,८६,१५५,१५६,
१७८,२२०

दंडरयणत्त (दण्डरत्नत्व) प २०।६०

दंडि (दण्डिन्) ज ३।१७८

दंडिया (दण्डिका) ज ३।३५

दंत (दन्त) प २।२१ ज २।४३,१३३,१३४;
३।१०६,१७८;७।१७८

दंतंतर (दन्तान्तर) उ १।६७

दंतग्ग (दन्ताग्र) ज ७।१७८

दंतमाल (दन्तमाल) अ २।८

दंतमूसल (दन्तमूसल) उ १।६७

दंतार (दन्तकार) प १।६७

दंति (दन्तिन्) प १।४८।४ ज ३।२२१ उ १।१४.
१५,२१,२२,२५,२६,१२१,१२५,१२६,१३२,
१३३,१३६,१३७,१४०,१४७

दंतुक्खलिय (दन्त'उक्खलिय') उ ३।५०

दंस (दंश) उ ३।१२८

दंसण (दर्शन) प १।१०१।१०;२।६४।१२;
३।१।१;५।२१,२४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,
४६,८०,८३,८४,८६,८७,८६,६४,६६,१०१,
१०२,१०४;१०५,१०७,१११,११२,११५,
११७;१३।१६;१८।११,२०।६१;२३।२६,
२८,६२,१३४,१७८;३०।२६,२८ ज २।७१,
८५;३।१७८,२२३;५।४३ उ ३।४४;५।१३,
३१

दंसण (उवउत्त) (दर्शनोपयुक्त) प ३६।६३,६४

दंसणधर (दर्शनधर) ज ५।२१

दंसणपरिणाम (दर्शनपरिणाम) प १३।२,१४,१६,
१८,१६

दंसणमोहणिज्ज (दर्शनमोहनीय) प २३।३,३२,३३

दंसणवत्तिय (दर्शनप्रत्यय) ज ५।२७

दंसणारिय (दर्शनार्य) प १।६२,१०० से ११०

दंसणावरण (दर्शनावरण) प २४।६

दंसणावरणिज्ज (दर्शनावरणीय) प २३।१,३,८,
१२

दक्ख (दक्ष) ज ५।५,५२

दक्खिण (दक्षिण) ज १।४६;४।५२,५५,८१,८६,
६८,१०८,१४३,१५१।१,१५६,१६४,१६५,
१८५,१६३,१६७,१६६,२००,२०४,२०६
से २०८,२१३,२२७,२३०,२३७,२३८,२४६,
२६२,२६५,२६८,२७१,२७७;५।४८;६।२३;
७।१२६

दक्खिणकूल (दक्षिणकूल) उ ३।५०

दक्खिणा (दक्षिणा) उ ३।४८,५०

दक्खिणिल्ल (दाक्षिणात्य) ज १।२६;३।१६३;
४।३५,६५,७१,६०,११०,१४१,२०२,२१२,
२२८,२२६,२३८;५।४६;७।१७८

दग (दक) प १७।१२८ ज ३।१२;५।७;
७।११२।४ सू १०।१२६।४,२०।८,२०।८।३

दगकलसग (दककलशक) ज ५।७

दगकुंभग (दककुम्भक) ज ५।७

दगथालग (दकस्थालक) ज ५।७

दगपणवण्ण (दकपंचवर्ण) २०।८,२०।८।३

दगपिप्पली (दकपिप्पली) प १।४४।२

दगरय (दकरजस्) प २।३१,६४;१७।१२८
ज २।१५

दगवण्ण (दकवर्ण) सू २०।८

दगवारग (दकवारक) ज ५।७

दट्ठव्व (द्रष्टव्य) प १५।२६

दड्ढ (दग्ध) प ३६।६४

दढ (दृढ) ज ३।२४;५।५;७।१७८

दढपइण्ण (दृढप्रतिज्ञ) उ १।१४१;२।१३

दढरह (दृढरथ) उ ५।२।१

दत्त (दत्त) उ ३।२।१,३।१७१

दद्दर (दे०) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,२४,१८४,
२२१;५।५५

दद्दु (दद्रु) ज २।१३३

दद्दुर (दर्दुर) सू २०।२ प २।४६ सू २०।२

दधि (दधि) ज ४।१२५;५।६२ सू १०।१२०

दप्पण (दर्पण) ज ३।१२,१७८;४।२८;५।५८

दप्पणिज्ज (दर्पणीय) प १७।१३४ ज २।१८

दप्पिय (दर्पित) अ ३।२४;७।१७८

दब्भ (दर्भ) ज ७।१२२।३ उ ३।५१,५६

दब्भपुप्फ (दर्भपुष्प) प १।५०

दब्भसंथार (दर्भसंस्तार) ज ३।२०,३३,५४,६३, ७१,८४,१३७,१६७,१८२ उ ५।४३

दब्भसंथारग (दर्भसंस्तारक) ज ३।२०,३३,५४, ६३,७१,८४,१३७,१४३,१६६

दब्भियायण (दार्भ्यायन) सू १०।११२

दमणग (दमनक) प १।४४।३ ज ५।५८ दौनावृक्ष, द्रोणलता

दमणगपुड (दमनकपुट) ज ४।१०७

दमणय (दमनक) ज ३।१२,८८

दमिल (द्रविल,द्रविड) प १।८९

दमिली (द्रविडा,द्रमिला) ज ३।११।२

दरि (दरि) ज २।३८;३।८८,१०९

दरिवहुल (दरिवहुल) ज १।१८

दरिय (दृप्त) ज २।१२;३।३४

दरिसणावरणिज्ज (दर्शनावरणीय) प २२।२८; २३।१४,२८;२६।७;२७।४

दरिसणिज्ज (दर्शनीय) प २।३०,३१,४१,४८, ४९,५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१,४२;२।१२, १४,१५;३।१७८;४।३,९,१३,२५,२७,२९, ३३,४९,११६;५।२८,४३,६२ सू १।१ उ ५।४ से ६

दरी (दरी) उ ३।५५

दल (दल) ज २।१५;३।१०९ चं १।१

दलइत्ता (दत्वा) ज ३।६

√**दलय** (दा) दलयइस्संति उ ३।१२८ दलाइ ज ३।६;४।६१;५।४६ उ १।१०२;३।११४ दलयंति ज ५।५७ दलंति ज ३।८८ दलयह उ १।१०२ दलयामि उ १।१०३;३।११२ दलयामो उ ४।१८

दलयित्ता (दत्वा) ज ३।८८

दलिय (दलिक) ज ३।३५

दव (द्रव) प २।४१

दवकारग (द्रवकारक) ज ३।१७८

दव्व (द्रव्य) प १।१०।१६;३।१२४,१७७,१७८; १०।५;११।४७,५३,५५,५७,५९,७० से ७३,७९ से ८५;१५।५७,१६।५०;२१।११।१;२१।२२; २२।१३,१५,१७,१९,८०,८२;२८।५; ३५।१।१ उ १।४०

दव्वओ (द्रव्यतस्) प ११।४८,४९;१२।७,१०; २८।५,५१;३५।४,५ ज २।६९

दव्वजाय (द्रव्यजात) ज २।६९

दव्वट्ठ (द्रव्यार्थ) प ३।११६ से १२०,१२२, १७९ से १८२;१०।३ से ५,२६ से २९; १७।१४४ से १४६;२१।१०४

दव्वट्ठता (द्रव्यार्थ) प ३।११६ से ११८

दव्वट्ठया (द्रव्यार्थ) प ३।११४,११९,१२०,१२२, १७९ से १८२;५।५,७,१२,१४,१६,१८,२०, २४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४९,५३, ५६,५९,६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६,८९, ९३,९७,१०१,१०४,१०७,१११,११५,११९, १२९,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५, १४७,१५०,१५४,१६३,१६६,१६९,१७२, १७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३, १९७,२००,२०३,२०७,२११,२१४,२१८, २२१,२२४,२२८,२३०,२३२,२३४,२३७, २३९,२४२;१०।३ से ५,२६ से २९, १७।१४४ से १४६;२१।१०४ ज ७।२०९ उ ३।४४

दव्वहलिया (द्रव्यहलिका) प १।४७

दव्विंदिय (द्रव्येन्द्रिय) प १५।५८।२,१५।७६ से ८४,८६,९१,९४ से ९७,१००,१०४ से १०६, १०८,१०९,११४,११५,११७ से १२०,१२३, १३१,१३२,१४०,१४२,१४३

दव्वी (दार्वी) प १।४४।२ दारुहरिद्रा

दव्वीकर (दर्वीकर) प १।६९,७०

दव्वेंदिय (द्रव्येन्द्रिय) प १५।१०३,१२६,१२६, १४३
दस (दशन्) प १।६६ ज १।२३ सू १।२४ उ १।१७
दस (दशम) प १०।१४।३
दसगुण (दशगुण) प ५।१५१;२८।७,५३
दसण (दशन) ज २।१५;३।३५,१३८;५।२१
दसणह (दशनख) ज ३।२६,३६,४७,५६,६४,७२, ७७ १३३,१८८;५।२१
दसण्ण (दशार्ण) प १।६३।४
दसद्धवण्ण (दशार्धवर्ण) ज २।१०;३।१२,८८; ४।१६६;५।७,५८
दसधणु (दशधनुष्) उ ५।२।१
दसपएसिय (दशप्रदेशिक) प ५।१३०,१६१,१७६, १६५,२१६
दसपदेसिय (दशप्रदेशिक) प ५।१२७,१७६
दसम (दशम) प १०।१४।२;११।२३।१,११।३४।१ ज ७।६७,१०२,११४।२ चं ५।४ सू १।६; १०।७७,१२४।२;१२।२६;१३।८ उ १।७; २।१०,२२;३।१४,८३,१५०,१६१;४।२४; ५।२८,३६,४३
दसमी (दशमी) ज ७।११८,१२५ सू १०।६०
दसरह (दशरथ) उ ५।२।१
दसविध (दशविध) सू १२।२६
दसविह (दशविध) प १।३,१०१,१३१;५।१२४; ११।३३,३४,३६;१३।२,२१;२३।१३
दससमयट्ठिईय (दडसमयस्थितिक) प ५।१४८
दसहा (दशधा) प २।३०।१
दसार (दसार) उ ५।५,१०,१७,१६
दसारवंस (दसारवंश) ज २।१२४,१५२
दह (द्रह) प २।४,१३,१६ से १६,२८;११।७७; १५।५५।२ ज २।३१;३।१३३;४।३,६४,८८, १४०।२,१४१,१४२,२०७,२६८,२७४;५।५५; ६।६।१
√दह (दह्) दहइ ज ३।१२
दहफुल्लइ (दे०) प १।४०।५
दहबहुल (द्रहबहुल) ज १।१८
दहावई (द्रहावती) ज ४।१८८,,१८६
दहावईकूड (द्रहावतीकूट) ज ४।१८८
दहावती (द्रहावती) ज ४।१८७,१६०
दहि (दधि) प ११।२५;१७।१२८ ज २।१५; ७।१७८
दहित्ता (दग्ध्वा) ज ३।१२
दहिघण (दधिघन) ज २।३१;१७।१२८
दहिमुह (दधिमुख) ज २।११६
दहिमुहपव्वय (दधिमुखपर्वत) ज २।११८,११६
दहिवण्ण (दधिपर्ण) प १।३६।३
√दा (दा) दिंति सू १०।१२६ देइ ज ७।११२।४ सू १०।१२६ उ १।११० देंति ज ७।११२।३; उ ३।६८
दाइज्जमाण (दर्शयमान) ज ३।१८६,२०४
दाइय (दायिक) ज २।६४
दाऊण (दत्वा) ज ५।५८
दाडिम (दाडिम) प १।३६।१ ज २।१५
दाढा (दंष्ट्रा) ज ७।१७८
दाण (दान) ज ३।११७।१
दाणंतराइय (दानान्तरायिक) ब २३।५६
दाणंतराय (दानान्तराय) प २३।२३
दाणकम्म (दानकर्मन्) ज ३।३२
दाणव (दानव) ज ३।११५,१२४,१२५
दाम (दामन्) प २।४८ ज ३।१६७;४।४६,१२६; ५।३८
दामणिसंठिय (दामनीसंस्थित) सू १०।४६
दामणी (दामनी) ज ७।१३३।३ सू १०।४६
दामिणी (दामिनी) ज २।१५
दामिली (द्राविडी) प १।६८
दाय (दाय) ज २।६४ उ २।६;५।१३,२५,५२
दायव्व (दातव्य) सू २०।६।५
दार (द्वार) प २।१ ज १।१५ से १७,३८; ३।१०६,१६३;४।१०,६४,११५,१२१,१२२, १४७,२१७,२६२ चं ५।४ सू १।६।४;१०।१३१

दार (दार) उ ३।४८,५०
दारग (दारक) उ १।५३ से ५५,५७ से ५६,६१ से ६३,७८,८६,८२;२।६;३।६२,६८,१०१, १०६,१३०,१३१
दारगरूव (दारकरूप) उ ३।१२६,१३४
दारय (दारक) ज ५।५७ उ १।५१,५४,५६,६० से ६२,७६,७६;२।६,१०;३।११४,१२३,१२४
दारियत्त (दारिकात्व) उ ३।१२५
दारिया (दारिका) उ ३।६२,६८,१०१,१०६,११४, १२३,१२६,१२८,१३०;४।५,६,११ से १६,१८, १६,२०
दारु (दारु) ज ३।३२
दारुग (दारुक) ज ३।७८
दालयित्ता (दारयित्वा) ज ४।३५
दालित्ताणं (दलयित्वा) प १।७४
दालिम (दाडिम) प १६।५५;१७।१३२
दास (दास) ज २।२६;३।१०३ उ १।५४,५५,७६, ८०
दासी (दासी) प १।३७।५ काकजंघा, नीलाम्ला, नीलभिंटी
दासी (दासी) ज ३।१०३
दाह (दाह) ज २।४३
दाहिण (दक्षिण) प २।१०,३२,३३,३५,४३,५० से ५२,५४,५६ ५८ से ६०;३।१ से २७,१७६, १७८ ज १।१८,२०,२३,२५,२८,३२,४६,४८, ५१;२।६५,११३;३।१ ६,१२,३६,१३६,१३७, १४६,१५०,१८६,२०४;४।१,३,१६,२३,२६, ३७,५५,६२,६५,८१,८४,८६,८८,६०,६८, १०३,१०६,१०८,१२६,१६२,१६७ से १६६, १७२ से १७४,१७७,१७८ १८० १८१,१८३, १८७,१८६ से १६१,१६४,१६६ २०१ से २०३,२०५,२१०,२१४,२२० २३८,२६२, २६८,२७१,२७४;५।३,२१,३६,५३,५८; ७।१०१,१०२,१२६ १७८ उ १।१५ से १७, १६;२।१;८।१;१०।७५;१३।७,८;१८।१४; २०।२ उ ३।५१,५३,६२
दाहिणअवर (दक्षिणापर) ज ३।८१
दाहिणउत्तरायया (दक्षिणोत्तरायता) ज ४।१४१
दाहिणओ (दक्षिणतस्) प २।४०।३
दाहिणड्ढ (दक्षिणार्ध) प २।५० सू २।१;८।१
दाहिणड्ढकच्छ (दक्षिणार्धकच्छ) ज ४।१६८ से १७४
दाहिणड्ढभरह (दक्षिणार्धभरत) ज १।१६,२१ से २३,४५ से ४७;३।१,२०८;४।३५ उ ५।१०
दाहिणड्ढभरहकूड (दक्षिणार्द्धभरतकूट) ज १।३४, ४१,४५,४६
दाहिणदारिया (दक्षिणद्वारिका) सू १०।१३१
दाहिणद्धभरह (दक्षिणार्द्धभरत) ज १।२०
दाहिणपच्चत्थिम (दक्षिणपाश्चात्य) प ३।१७६, १७८ ज ३।३०,३१,१७२,१७३;४।१६,१६३, २०८,२०६,२२३,२२६,२३०;५।३६,४६ सू २०।२
दाहिणपच्चत्थिमिल्ल (दक्षिणपाश्चात्य) ज ४।२३८
दाहिणपडीण (दक्षिणापाचीन) सू १।१६
दाहिणपुरत्थिम (दक्षिणपौरस्त्य) प ३।१७६,१७८ ज ४।१६,१०६,२०३,२२२,२२७,२२८;५।३६, ४६ सू २।१,२०।२
दाहिणपुरत्थिमिल्ल (दक्षिणपौरस्त्य) ज ४।२३८; ५।४४,४६ सू १।१६;२।१;१२।३०
दाहिणभुयंत (दक्षिणभुजान्त) सू २०।२
दाहिणवाय (दक्षिणवात) प १।२६
दाहिणवेयालि (दक्षिण'वेयाली') प १६।४५
दाहिणिल्ल (दाक्षिणात्य) प २।३२,३३,३५,३६, ३८,४३,४४,४७;३।१८ से २३;१६।३४ ज १।२६,५१;२।११६;३।१४ ज १।२६,५१; २।११६;३।१४,१५,१८,३६,५१,५७,६१,८३, ८५,८८ से ६०,६२,६३,१२६,१६२,२०६,२१६; ४।१७४ से १७६,१८२,१८३,१८८,१६५, २०१,२०२,२१२,२४८,२५१;५।१४,४२,४५,

५२ सू १०।१४२,१४७
दिगिंदलय (दे०) उ ३।११४
दिट्ठ (दृष्ट) प १।१०१।३,८ ज ३।१२६
दिट्ठंत (दृष्टान्त) प १७।१४८; उ ३।८,२६,६३
दिट्ठंतिय (दार्ष्टान्तिक) ज ५।५७
दिट्ठाभट्ठ (दृष्टाभाषित) उ ३।५५
दिट्ठि (दृष्टि) प २८।१०६।१ ज ३।१०५;५।६७
दिट्ठिवाय (दृष्टिवाद) प १।१।३;१।१०१।८
दिट्ठीविस (दृष्टिविष) प १।७०
दिणकर (दिनकर) सू १९।११।२,१९।२१।३, १९।२२।१२,१३
दिणयर (दिनकर) ज ३।१८८ सू १९।२२।३० उ ३।४८,५०,५५,६३,६७,७०,७३,१०६,११२
दिण्ण (दत्त) प २।३०,३१ ज ३।७,१८४;५।२६ उ १।९६,१०३,१०९,११०,११३,११४; ३।४८;५०
दित्त (दीप्त) प २।४९ ज ३।९,१८,९३,१०३, १८०,२२२;७।१७८ सू १९।११।२,२१।३, १९।२२।३०
दित्त (दृप्त) ज ३।१०३
दित्ततव (दीप्ततपस्) ज १।५
दित्तसिरय (दीप्तशिरस्क) ज ३।९,१८
दिन्न (दत्त) प २।४१
दिप्पंत (दीप्यमान) ज ३।९,१७,२१,३४,१७७, २२२
दिप्पमाण (दीप्यमान) ज ३।१८,९३,१८०
दिली (दे०) प १।५८
दिवड्ढ (द्वयर्ध,द्वयपार्ध) प २३।७३,८३,१३५, १५२,१७२;३३।७,८ ज ६।८।१ सू ३।२;९।३; १८।१
दिवड्ढखेत्त (द्वयपार्धक्षेत्र) सू १०।४,५
दिवस (दिवस) प २८।२७,७३ से ७६ ज २।६४; ३।७९,९५,९६,११६,१२०,१३९,१६०,२०९; ७।२६ से ३०,११२।५,११७,११८,१२६,१५६ से १६७ चं ५।२ सू १।९।३,१।१३,१४,१६, २१,२२,२४,२७;२।३;३।२;४।८,९;६।१; ८।१;९।२,३;१०।५,६३ से ७४,८६।३,१२९।५ १९।२२।१८ उ १।६३;३।६४,६८,७१,७४, ७६,१२६;५।१३,४५
दिवसखेत्त (दिवसक्षेत्र) ज ७।२७,३०
दिवसतिहि (दिवसतिथि) सू १०।८९,९०
दिवा (दिवा) ज ७।१२५
दिव्व (दिव्य) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।३१, ४५;२।६७,९०,१००;३।४,५,१२,१४,१५,१८, २६,३०,३१,३९,४३,४४,४७,५१,५२,५६, ६०,६१,६४,६८,६९,७२,७९,८८,९२,९५, १०९,११३,११६,११७,११९,१२२,१२३,१२६, १३०,१३१,१३३,१३६ से १३८,१४०,१४१, १४५,१४९,१५०,१५९,१७२,१७३,१७८, १८०,२०९,२११;५।१,३,५,७,१९,२२,२६, २८,३०,४१,४३ से ४५,४७,५५,५७,५८, ६७;७।५५,५८,१८४,१८५ सू १८।२२,२३; १९।२६ उ ३।१७,८५,९४,१२२,१२३,१६३; ४।२५
दिव्वा (दिव्याक) प १।७१
दिसा (दिशा) प २।३०,३१;२।४०।२,८,१०, २।४१,४९ ज १।३८; २।१३१; ३।१४,१५, २२,३०,३१,४३,४४,५१,५२,६०,६१,६८,६९, १०० से १११,१२५,१३०,१३१,१३६,१३७, १४०,१४१,१४९,१५०,१७२,१७३,१९५, २११; ४।१०,१२१,१५३,१६३,२१२,२१७, २३८; ५।५२,७४; ७।१७८ सू १।४; ५।१ उ १।२२,१४०; ३।५१,५३,५५,६३,६७,७०, ७३
दिसाकुमार (दिशाकुमार) प १।१३१; ५।३; ६।१८
दिसाकुमारी (दिशाकुमारी) ज ५।१ से ३,५ से १०,१२ से १७
दिसाचक्कवाल (दिशाचक्रवाल) ३।५०
दिसाणुवाय (दिशानुपात) प ३।१ से १७,२४ से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७,१७६,१७८

दिसादि (दिशादि) ज ४।२६०।२ मेरुपर्वत

दिशापोक्खि (दिशाप्रोक्षिन्) उ ३।५०

दिसापोक्खिय (दिशाप्रोक्षिक) उ ३।५०,५५

दिसापोक्खिय(तावस) (दिशाप्रोक्षिकतापस) उ ३।५०

दिसाहत्थिकूड (दिशाहस्तिकूट) ज ४।२२५ से २३३

दिसि (दिश्) प २।२७,२।३०।१;२।६३;३।१।१; ११।६९,६९।१;२१।९५,९६;;२८।१९,३१,६५; ३६।५९,६६,६८,७०,७२ से ७४ ज ४।२०४, २१०,२१६,२२०;५।३०;७।४८,५०,५२,५३ उ १।२४;३।५१,५३,६२,८१,१४३,१५६

दिसीभाग (दिग्भाग) ज ३।२०८;५।५,४४,४५ उ ३।११३;४।२०

दिसीभाय (दिग्भाग) ज १।३;३।१९२,२०४, २०८;४।१२०,१३६;५।५,७ चं ७ सू १।२ उ ५।५

दीण (दीन) उ १।१५,३५;३।९८

दीणस्सर (दीनस्वर) ज २।१३३

दीणस्सरता (दीनस्वरता) प २३।२०

दीव (द्वीप) प १।७४,७५,८०,८१,८४;२।१,४,७, १३,१६ से १९,२८,२९,३०।१,२।३२,३३,३५, ३६,४०।२,९,११,२।४३,५०,५१;१५।१।२, १५।५४,५५;१६।३०;३३।१० से १२,१५ से १७;३६।८१ ज १।७,१५ से १८,२०,२३, ३४,३५,४६,४८,५१;२।१,७,५२,५६,९०,११६, १६१,१६४;३।२६,३९,४७,५६,११३,१३३, १३८;४।१,३१,३२,३४,४१,५२,५५,६२,६८, ६९,७६,८१,८६,९०,९३,९८,११४,१५९, १६०,१६५,१६७,१६९,१७२ से १७४,१७८, १८१,१८२,२०१ से २०३,२०९,२१३,२६२, २६५,२६८,२७१,२७४,२७७;५।३,२१,२२, २६,४४,५२,७४;६।१ से ५,७ से २६;७।१, ३,४,८ से १४,३१,३३,३६ से ३९,५२,५४, ६२,६३,६७ से ७२,८६,८७,९१,९२,१०१, १०२,१७५,१८२,१९८ से २०८,२१० से २१३ सू १।१४,१६,१७,१९ से २२,२४,२७;२।१, ३;३।१,२;४।३,४,७,१०;६।१;८।१;१०।१३२, १४२,१४३;१२।३०;१८।७,२०;१९।१,२,६, ७ ८।३,९,१२ से १४,१५।३,१९।१६,१९।२२, २४,१९।२८,३१ से ३४ उ १।९;३।७,९१, १२५,१५७;५।२४,४३

दीवकुमार (द्वीपकुमार) प १।१३१;५।३;६।१८

दीवग (द्वीपिक) सू १०।१२०

दीवणिज्ज (दीपनीय) प १७।१३४ ज २।१८

दीविग (द्वीपिक) ज २।३६

दीविय (द्वीपिक) प १।६६;११।२१ ज ३।१३६; ५।३२

दीवियग्गाह (दीपिकग्राह) ज ३।१७८

दीविया (दीपिका) प ११।२३

दीवियाहत्थगय (हस्तगतदीपिका) ज ५।१२

√दीस (दृश्) दीसंति प १।४८।५७ ज ७।३६,३८

दीह (दीर्घ) प २।६४।४;१३।२३ ज २।१५,६९; ३।१०९,१६७।११

दीहतर (दीर्घतर) ज ४।८०

दीहवेयड्ढ (दीर्घवैताढ्य) ज ६।१०

दीहिया (दीर्घिका) प २।४,१३,१६ से १९,२८; ११।७७ ज २।१२

दु (द्वि) प १।१३ सू १।१४

दुइय (द्वितीय) प ३।२२

दुंदुभय (दुन्दुभक) ज ७।१८६।२ सू २०।८

दुंदुहय (दुन्दुभक) सू २०।८।२

दुंदुहि (दुन्दुभि) ज ३।१२,७८,१८०,२०९;५।५, २२,२६,४६,४७,५६,६७ उ १।१२१,१२२, १२५,१२६,१३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८; ५।१९

दुक्कालबहुल (दुष्कालबहुल) ज १।१८

दुक्ख (दुःख) प २।६४।२२;६।११०;२०।१८; ३५।१।१,२,३५।१०,११;३६।८८,९२,९४।१ ज १।२२,२७,५०;२।५८,७१,८८,८९,१२३,

१२८,१५१,१५७; ३।७७,६२,१०६.११६,
१२११,१२५;४।१०१,१७१ सू १६।२२।१३
उ १।६३,१४१;३।८६;५।४३
दुक्खत्त (दुःखत्व) प २८।२४
दुक्खभागि (दुःखभागिन्) ज २।१३३
दुक्खुत्तो (द्विस्) सू १।१२
दुखुर (द्विखुर) प १।६२,६४
दुग (द्विक) ज ७।१२१।२
दुगुंछा (जुगुप्सा) प २३।३६,७७,१४५
दुगुण (द्विगुण) सू १६।२२।२३
दुगुणिय (द्विगुणित) ज २।२५
दुगूल (दुकूल) सू २०।७
दुग्ग (दुर्ग) उ ३।५५
दुग्गइगामि (दुर्गतिगामिन्) प १७।१३८
दुग्गंध (दुर्गन्ध) ज २।१३३ उ ३।१३०,१३१,१३४
दुग्गम (दुर्गम) ज ३।७७,१०६
दुग्गबहुल (दुर्गबहुल) ज १।१८
दुग्गुल (दुकूल) ज ४।१३
दुघण (द्रुघण) ज ५।५
दुजडि (द्विजटिन्) सू २०।८
दुज्जम्मय (दुर्जन्मक) उ ३।१३१,१३४
दुज्जाय (दुर्जात) उ ३।१३१,१३४
दुट्ठाणवडिल (द्विस्थानपतित) प ५।१३४,१४३,
१४८,१५१,१६३,१६४,१८१,१६७,२१८
दुट्ठु (दुष्टु) उ १।८८,६२
दुतीस (द्वात्रिंशत्) ज ४।६४
दुद्दंत (दुर्दान्त) उ ५।१०
दुद्दंसणिज्ज (दुर्दर्शनीय) ज २।१३३
दुद्ध (दुग्ध) प ११।२५ उ ३।६८
दुधा (द्विधा) सू १६।१६
दुन्निकम्म (दुर्निष्क्रम) ज २।१३२
दुपएसिय (द्विप्रदेशिक) प ५।१५३,१५४,१५७,
१५६,१६०,१७६,१७७,१६२,१६३,२१३,
२१४; १०।७;११।४६; ३०।२६
दुपदेस (द्विप्रदेशिक) प १०।१४।१
दुपदेसिय (द्विप्रदेशिक) प ५।१२७,१३०,१३१;
१६।३६
दुप्पउत्तकाइया (दुष्प्रयुक्तकायिकी) प २२।२
दुप्पव्वइय (दुष्प्रव्रजित) उ ३।५८,६०,७६ से ७६
दुप्पवेस (दुष्प्रवेश) ज १।२४
दुफास (दुःस्पर्श) ज २।१३३
दुबत्तीस (द्वि द्वात्रिंशत्) सू १०।१३८ से १४१,
१४८,१५२,१२।२२
दुब्बल (दुर्बल) ज २।१३३
दुब्भि (दुर्) प १३।२७,३१;२३।१०७
दुब्भिक्खबहुल (दुर्भिक्षबहुल) ज १।१८
दुब्भिगंध (दुर्गन्ध) प १।४ से ६; २।२० से २७;
५।५,७,२०५; ११।५६;१७।१३६; २८।२०,
३२,६६ ज ५।५
दुब्भूय (दुर्भूत) ज २।४३
दुभागमंडल (द्विभागमण्डल) सू १५।३७
दुम (द्रुम) ज २।८,१३,२०;५।५०
दुय (द्रुत) ज ५।५७ अभिनय का प्रकार
दुरंतपन्तलक्खण (दुरन्तप्रान्तलक्षण) ज ३।२६,
३६,४७,१०७,११४,१२२,१२४,१३३
उ १।८६,११५,११६
दुरभि (दुरभि) प २३।४८
दुरस (दूरस) ज २।१३३
दुरहियास (दुरध्यास,दुरधिसह) प २।२० से २७
दुरुढ (आरूढ) ज ३।१७,२१,२२,३५,३६,७७,
६१,१७७,१७८,१८३,२०१,२०२,२१४,२१७;
५।२२,२६,४३
√दुरुह (आ+रुह्) दुरुहइ ज ३।२०,३३,५४,६३,
७१,८१,८४,१०६,११७,१३७,१४३,१६६,
२०४,२२४;५।४१,४२ उ १।१६ दुरुहंति
ज ३।१११;;४।५;५।५ दुरुहति प १७।१०६,
१११
दुरुहित्ता (आरुह्य) प १७।१०६ ज ३।२० उ १।१६
दुरूढ (आरूढ) उ १।१२४,१३१;४।१२;५।१४
दुरूव (दूरूप) ज २।१३३

√दुरूह (आ+रुह्) दुरूहइ उ १।११०;४।१५ दुरूहेइ उ ४।१८

दुरूहित्ता (आरुह्य) उ १।११०;४।१५

दुरूहेत्ता (आरुह्य) उ ४।१८

दुल्लह (दुर्लभ) ज ३।११७ सू २०।६।१

दुव (द्वि) ज १।२५ चं ४।३ सू १।८।३ उ १।१११

दुवयण (द्विवचन) प ११।८६

दुवण्ण (दुर्वण) ज २।१५,१३३

दुवार (द्वार) ज ३।८३,८५,८८ से ६०,६३,१०३, १५४,१५७,१६२,१८६

दुवालस (द्वादशन्) प २।६४ ज १।२० सू १।१३ उ २।१०

दुवालसंसिय (द्वादशास्रिक) ज ३।६४,१३५,१५८

दुवालसक्खुत्तो (द्वादशकृत्वस्) सू १२।२ से ६,११

दुवालसमा (द्वादशी) सू १०।१४१,१४६,१४८,१५५, १६०

दुवालसमी (द्वादशी) सू १०।१४८,१५०

दुवालसविह (द्वादशविध) प १।३४; १२।३७ ज ७।१०४ सू १०।१२६ उ ३।७६,१४३

दुविध (द्विविध) सू ४।१

दुविह (द्विविध) प १।१,२,४,१०,११,१६ से १८ २० से ३२,३४,४८ से ५१,५३,५७,५६ से ६१,६६,६७,६६,७५,७६,८१,८२,८८,६०, १००,१०२ से १२३,१२५ से १२६,१३१ से १३८;५।१,१२३;६।११५,११६;११।३१,३२, ३५,३६,४१;१२।७ से १३,१६ से १८,२०, २१,२३,२४,२७,३१ से ३३;१३।१,८,२२ २३,२७,३१;१५।१८,१६,४८,४६,६८,७१, ७२,७५,७६;१६।५,२८,३३,३५;१७।२,४,६, ६,१६,२३,२५-२७;१८।१३,२५,५५,६३,६७ ६८,७६,७६,८६,६४,६७,६६ १०१,१०६, १०६,१११,१२७;२१।४ से ७,६ से २०,४६, ५५-५८,५६,६१,६५,६६,७०; २२।२,३,८; २३।६,२६,२६,३२,३४,४८,५६,५७;२८।४, ४०,५०,६६; २६।१-५,८,६,११,१४;३०।१,५, ७,११,१२;३३।१;३४।१२;३५।१।२,३५।१२, १४,१६,१८,२३ ज २।१,५,६;५।१६;७।११४ सू १०।८६,१२१,१२४; १८।२०; २०।३ उ ३।३१,३८,४०,४२,४४

दुव्विसय (दुर्विषय) ज २।३१

दुसमइय (द्विसामयिक) प ११।७१;३६।६०,६७, ६८,७१,७५

दुसमयट्ठितीय (द्विसमयस्थितिक) प ११।५१

दुसमसुसमा (दुष्षमसुषमा) ज २।१४६

दुस्समदुस्समा (दुष्षमदुष्षमा) ज २।२,३,६

दुस्समसुसमा (दुष्षमसुसमा) ज २।२,३,६,४६

दुस्समा (दुष्षमा) ज २।२,३,६

दुहओ (द्वितस्,द्वय) ज ४।६१ सू १०।१३६;२०।७

दुहओवत्त (द्वितआवर्त) प १।४६

दुहणाम (दुःखनामन्) प २३।२०

दुहट्ट (दुघाट्ट) उ १।५२,७७

दुहता (दुःखता) प २३।१६

दुहतो (द्वितस्,द्वय)सू १०।१७३

दुहतोनिसहसंठिय (द्वितोनिषधसंस्थित) सू ४।३

दुहत्त (दुःखत्व) प २८।२६

दुहया (दुःखता) प २३।३१

दुहा (द्विधा) ज १।१६,२०,२३;४।१,४२,६२,६४, १०८,१७२

दूइज्जमाण (द्रूयमाण) ज ३।१०६ उ १।२,१७; ३।२६,६६,१३२;५।३६

दूभगणाम (दुर्भगनामन्) प २३।३८,१२४

दूमिय (दे० धवलित) सू २०।७

दूमिय (दून) उ १।५६,६३,८४

दूय (दूत) ज ३।६,७७,२२२ उ १।६२,१०७ से ११६,१२७

दूर (दूर) प २।४६,५०,५२,५३,६३;१७।१०६ ज ७।३६,३८ सू।२।१

दूरतराग (दूरतरक) प १७।१०८,११०

दूस (दूष्य) ज २।२४,६५,६६;३।६,२२२

दूसमदूसमा (दुष्षमदुष्षमा) ज २।१३०,१३८, १३६

दूसमसुसमा (दुष्षमसुसमा) ज २।१२१
दूसमा (दुष्षमा) ज २।१२६,१४०
दूसरणाम (दुःस्वरनामन्) प २३।३८,१२५
दूसि (दूष्य) प १७।११६
देय (देय) सू २०।६।२
देयड (दे० दृतिकार) प १।६७
देव (देव) प १।५२,१३०,१३८; २।३० से ३६, ४१ से ४३,४६,४७।१,४८ से ६३,२।६४।१४; ३।२६ से ३६,३८,२६,१३१,१३३,१३५,१३७, १३६,१८३;४।२५ से २७,३१ से ३३,३७ से ३६,४३ से ४५,४६,५५,१६५ से १६७,१७१, १७७ से १७६,१८३ से १८५,१८६ से १६१, १६५ से १६७,२०१ से २०३,२०७,२१३ से २१५,२२५ से २२७,२३७ से २४३,२४६, २४६,२५२,२५५ से २६६;६।२७ से ३८,४१ से ४३,५०,५२,५६,६५,७०,८१,८२,८५ से ८७,८६,६०,६२,६३,६५,६६,६८,६६,१०१, १०३,१०५,१०६,११०,११२,११३;७।८ से ३०;८।१०,११;६।११; १५।४५,५५।३,८७ से ६३,१०८,१०६,११४,११५,११७,१२५,१२६, १३२,१३६,१४३;१६।२५,२६,३१;१७।४६, ५१,५२,७१,७३,७४,७६,७८ से ८१,८३,८६; १८।५,११;२०।४६,२१।५१,५५,६१,६२,७०, ७१,७७,८३,६१ से ६३;२२।४१,४२,४५,७६; २३।३६,५४,८४,११४,१४६,१७२,१६४, १६६,१६८;२८।६७,१०२,१०५,१३३,१४३ से १४५;३३।१,१६ से १८,२४,२५;३४।१५, १६,१८ से २५;३६।५०,८१ ज १।१३,२४, ३०,३१,३३,३६,४५ से ४७,५१;२।६४,६०, ६५ से ६६,१०० से १०२,१०४ से ११६, १२०;३।२०;२४।१,२,२५ से २८,३०,३२।२, ३३,३८ से ४१,४३,४६ से ४६,५१,६३ से ६५,६८,७१ से ७४,७६,८४,६२,१११ से ११५,११६,१२३ से १२५,१३१।१,२,१३२ से १३४,१३६,१५०,१५१,१६७।१३,१७८,१८४, से १८६,१८८,१८६,१६१,१६२,१६८,१६६, २०७ से २१०,२१६,२२१,२२४,२२६;४।२, १३,१६,२०,५१ से ५४,६०,६१,८०,८४,८५, ६७,१०२,१०६,१०७,११२,११३,११४,१२०, १४१,१४२,१५०,१५६ से १६१,१६३,१६५, १६६,१७७,१८०,१८४,१८६,१८७,१६३, १६६ से २००,२०३,२०४,२०८ से २१२, २१५,२२६ से २३४,२३६,२४७,२४८,२५० से २५२,२६१,२६४,२६६,२६७,२७०,२७२, २७३,२७६,२७७; ५।१,३ से ५,१४,१५,१६, २२,२३,२६ से २६,३६,४२,४३,४५,४७,४६, ५०,५३ से ५६,६१,६७,६६ से ७४;६।१६; ७।५५,५६,५६,१६६,१७८।१,१८५,१८७, १८६,१६१,१६३,१६५,२१३,२१४ सू ६।१; १३।१७;१७।१;१८।२ से ४,१४ से १७,२१, २३,२५,२७,२६,३१,३३,३५;१६।२३,२४, २६,२७;२०।१,२,४,७ उ २।१३;३।५१,५६ से ६२,६५,६६,६६,७२,७५ से ६१,१५१, १५२,१५६,१६२ से १६५ ;५।५,२६,३०,४२, ४३
देव (देव) सू १६।३६,३८ देव नामक द्वीप
देवअणिणआउय (देवासंज्ञ्यायुष्) प २०।६२,६४
देवउल (देवकुल) ज ५।५,७
देवकहकहग (देवकहकहक) ज ५।५७
देवकुमार (देवकुमार) उ ३।६२
देवकुमारिया (देवकुमारिका) उ ३।६२
देवकुरा (देवकुरु) ज ४।६४,६६,२०३,२०६ से २०८,२१३
देवकुरु (देवकुरु) प १।८७;१६।३०;१७।१६४ ज २।६;४।२०४।१,२०७,२०८,२१०।१
देवकुल (देवकुल) ज २।६५ उ ३।३६
देवगइ (देवगति) ज २।६०;३।२६,३६,४७,५६, ६४,७२,११३,१३३,१४५;५।५,४४,४७,६७
देवगइय (देवगतिक) प १३।२०
देवगति (देवगति) प ६।४,६
देवगतिपरिणाम (देवगतिपरिणाम) प १३।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवगतिय (देवगतिक) प १३।१५

देवगामि (देवगामिन्) ज १।२२,५०;२।५८;१२३, १२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१

देवच्छंदग (देवच्छंदक) ज ४।२१६

देवच्छंदय (देवच्छंदक) ज १।४०;४।१३६,१४७, २१६

देवजुइ (देवद्युति) ज ३।२६,३६,४७,१२२,१२६, १३३

देवजुति (देवद्युति) ज ५।४४ उ ३।८५,१२२

देवज्जुइ (देवद्युति) उ ३।१२३

देवड्ढि (देवर्द्धि) ज ३।२६,३६,४७,१२२,१३३

देवता (देवता) चं ५।२ सू १।६।२

देवत्त (देवत्व) प १५।६६ से १०१,१०४ से १०६, १०८,११२,११४ से ११७,११६ से १२३, १२५,१२७ से १२६,१३१,१३२,१४३, उ २।१२;३।१५०,१६१;५।२८,४१

देवदारु (देवदारु) प १।४०।२

देवदाली (देवदाली) प १।३६।२;१७।१३०

देवदालिपुप्फ (देवदालीपुष्प) प १७।१३०

देवदुहदुहग (देवदुहदुहक) ज ५।५७

देवदूस (देवदूष्य) ज २।६५,१००,२११;५।५८ उ ३।१४,८३,१२०,१६१;४।२४

देवपव्वय (देवपर्वत) ज ४।२१२

देवमइ (देवमति) ज ३।१०६

देवय (देवता) प २।४८ ज ७।१२७।१,१६७।१

देवय (दैवत) ज २।६७;३।८१ सू १८।२३, उ १।१७,७२,८८,६२;५।३६

देवया (देवता) ज ३।३२,१०४,१०५;४।५३, १०६,२०४,२१०;७।३० सू १०।७८ से ८३

देवराय (देवराज) प २।५० से ५६ ज १।३१; २।८६ से ६३,६५,६७,६६,१०१,१०३,१०५, १०७,१०६,१११,११३,११४,११७ से ११६, १८६,२१७;४।२२१;५।१८;२० से २३,२६ से २६,३६ से ४१,४३ से ४८,५४,५६,६०, ६१,६२,६५ से ६८,७१ से ७३ उ ३।१२२, १५०

देवलोग (देवलोक) प २०।६१ ज २।४६,१५६; ३।१ उ २।१३;३।१८,८६,१२५,१५२,१६५; ४।२६;५।३०,४३

देवलोय (देवलोक) ज २।४६ उ ५।४

देवसंघाय (देवसंघात) ज ७।१७६

देवसयणिज्ज (देवशयनीय) उ ३।१४,८३,१२०, १६१;४।२४

देवसयसहस्सीसर (देवशतसहस्रेश्वर) ज ३।१२६।३

देवसिरि (देवश्री) उ ३।१७१

देवाउय (देवायुष्क) प २०।६३,२३।१८,३७,८०, १४६,१७०

देवाणंदा (देवानन्दा) ज ७।१२० सू १०।८८।३ उ ३।११३;४।२०

देवाणुप्पिय (देवानुप्रिय) ज २।६५,६७,१०१, १०५,१०७,१०६,१११,११४,१४६;३।५,७, १२,१५,१८,२१,२६,२८,३१,३४,३६,४१, ४७,४६,५२,५६,५८,६१,६४,६६,६६,७२, ७४,७६,७७,८३,६०,६१,६६,१०५,१०७, ११३,११४,१२५,१२६।४,१२८,१३३,१३८, १४१,१४५,१४७,१५१,१५४,१५७,१६४, १६८,१७०,१७३,१७५,१८०,१८३,१८८, १६१,१६६,२०७,२१२;५।३,५,७,१४,२२, २६,२८,४६,५४,६८,६६,७२,७३ उ १।१७, ३७,३६,४१,४४,५४,५७,६६,७६,८८,६८, १०७,१०६,१११,११३,११५,११६,१२१, १२३,१२७,१२६,१३१;३।१३,७८ से ८१, १०२,१०३,१०६,१०८,११२,११५,१३६, १३८,१३६,१४८;४।११,१४ से १६,१६,२२; ५।१५,१८,२७,३२,४०

देवाणुभाग (देवानुभाग) ज ३।१२६

देवाणुभाव (देवानुभाव) ज ३।२६,३६,४७,१२२, १३३;५।४४ उ ३।८५,१२२,१२३

देवाहिव (देवाधिप) ज ५।५४

देविंद (देवेन्द्र) प २।५० से ५६ ज १।३१;२।८६ से ६५,६७,६६,१०१,१०३,१०५,१०७,१०६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१११,११३,११४,११८,११९;४।२२१;५।१८,
२० से २३,२६ से २९,३९,४०,४३ से ४८,
५४,५६,६० से ६२,६५ से ६८,७१ से ७३
उ ३।१२३,१५०

देविड्ढि (देवर्द्धि) ज ५।४४ उ ३।१७,८५,९४,
१२२,१२३,१६३;४।२५

देवित्त (देवीत्व) उ ३।१२०

देवी (देवी) प २।३० से ३३,३५,४१,४३,४८ से
५१;३।३९,१३२,१३४,१३६,१३८,१४०,
१८३;४।२८ से ३०,३४ से ३६,४० से ४२,
४६ से ४८,५२,५५,१६८ से १७०,१७४,१८०
से १८२,१८६ से १८८,१९२ से १९४,१९८
से २००,२०४ से २०६,२१० से २१२,२१६
से २२४,२२८ से २३६;१७।५०,७२,७३,७५,
७६,७८,८०,८२,८३;१८।६,८,१२;२३।
१९४,१९६,१९८ ज १।३,१३,३०,३३,३६,
४५;२।९०;३।५२ से ५८,६०,१४०,१४१,
१४३ से १४७,१४९;४।२,१७ से २०,२२,३३,
३४,५३,६४,८९,१५९,१६४,२०३,२३७,
२३८,२४८,२५० से २५२;५।१,५,१९,२६ से
२८,४२,४३,४५,४७,६७,७२,७३;७।१८३,
१८५,१८८,१९०,१९२,१९४,१९६,२१४;
चं ८ सू १।३;१८।२१,२३,२६,२८,३०,३२,
३४,३६;२०।४ उ १।१० से १३,१५,१७,१९
से २४,३० से ४१,४३,४४;४६,४८ से ५५,
५७,५८,७० से ७४,८८,९५,९७,९९ से १०२,
१०९,११०,११३,११४,१४४ से १४६;२।४ से
९,१६,१७,१९,२०;३।९०,९२,९४,१२१ से
१२५;४।२५,२६;५।१०,१२,१३,१७,२५,३०,
३१

देवुक्कलिया (देवोत्कलिका) ज ५।५७

देवोद (देवोद) सू १९।३८

देस (देश) प १।३,४;२।६४।११;४।४३,४५,४६,
४८,४९,५१,५२,५४;५।१२४,१२५;१५।५३;
५४,५७;१८।५९,६४,७७,८१,८३,८४,८९ से
९१,९६,१०८;२१।७४,२२।५५,५६,५८,७६
ज १।३०;३।३,२२४;४।२२,३४,८३,११३,
११४,१६६;५।२६;७।२१३ सू १।१९;६।१;
९।३;१०।१३८ से १५१,१६२ से १६९;
१२।३०;१३।२

देसपंत (देशप्रान्त) उ १।१३३,१३४

देसभाग (देशभाग) प २।१६,१७,३०,३१,४१,५०,
५२ ज २।१२,६५;३।३,११७;५।३५ सू ३।९८

देसभाय (देशभाग) प २।१८,१९,२८,५१,५९,६४
ज ३।७;५।३३,३८

देसमाण (दिशत्) ज २।७२

देसि (देशिन्) प २।४१

देसिय (देशित) ज ३।२२,३६,९३,९९ १०६,१६३,
१८०

देसूण (देशोन) ज १।१२,१४,१७,२३,३५,३७,५१;
२।४४,४५;४।११४

देसूणग (देशोनक) ज ३।२२५;४।९,३२,१४७,
१५५,२४२

देसोहि (देशावधि) प ३३।११,३३।३१ से ३३

देह (देह) ज ३।१०९

देहधारि (देहधारिन्) प २।४१ ज ३।३

देहमाण (दे० पश्यत्) ज ३।२२२;५।६७

दो (द्वि) प २०।५६ ज १।७० १।१४ उ १।१३५

दोच्च (द्वितीय) प ६।८०।१;३३।१६,३६।९२
ज ३।१२८,१५१,१९२;७।२३,२५,२८ से
३०,१५७,१६१,१६५,१७० सू १।१३,१४,
१६,१७,२१,२४,२७;२।३;६।१;१०।६४,६८,
१२७,१३९,१४०,१४४,१४५,१५८;११।२ से
४;१२।३,२०,२५;१३।१,१२,१३ उ १।३९,
४०,१११,१४३;२।१,१५,२१;३।१,२०,२२
२३,५१,५३ ६०,६१,७७,७८,१०८

दोच्चा (द्वितीया) प ३।१८३

दोणमुह (द्रोणमुख) प १।७४ ज २।२२,१३१;
३।१८,३१,३२,१६७।२,१८०;१८५,२०९,
२२१ उ ३।१०१

दोला (दे०) १।५१

दोवारिय (दौवारिक) ज ३।६,७७,२२२

दोस (दोष) प ११।३४।१; २२।२०; २३।६ ज ३।३२,११७ सू २।२; २०।६।६ उ ३।३५

दोसणिस्सिया (दोषनिश्रिता) प ११।३४

दोसपुरिया (दोषपूरिका) प १।६८

दोसिणा (दे० ज्योत्स्ना) चं २।४ सू १।६।४; १४।१ से ४; १६।१,२

दोसिणापक्ख ('दोसिणा'पक्ष) सू १३।१; १४।१ से ४,६,७

दोसिणाभा ('दोसिणा'आभा) ज ७।१८३ सू १८।२१;२०।६

दोसिणलक्खण ('दोसिणा'लक्षण) चं २।४ सू १।६।४

दोसिणालक्खण ('दोसिणा'लक्षण) सू १६।१

दोस्सिय (दौष्यिक) प १।६६

दोहग्ग (दौर्भाग्य) ज २।१५

दोहल (दोहद) उ १।३४,३५;४०,४१,४३,४४, ४६,७४

ध

धंत (ध्मात) प १।४८।५६ ज ३।२४

धंतधोयरुप्पपट्ट (ध्मातधौतरूप्यपट्ट) प १७।१२८

धण (धन) ज २।६४,६६;३।१०३; १६७।१४

धणंजय (धनञ्जय) ज ७।११७।२,१३२।१ सू १०।८६।२ ६७

धणवइ (धनपति) ज ३।१,३,१८,३१,६३,१८० १८३

धणिट्ठा (धनिष्ठा) ज ७।११२।१,१२८ से १३०, १३६,१३८,१४१,१४६,१५६,१५७ सू १०।१ से ६,८,२०,२३,२६,५७,६३,६४,७५,८०,९४, १२०,१३१ से १३३,१५२

धणु (धनुष्) प १।७५; २।६४।६; २१।४६,४७, ४७।१,२;२१।६५ से ६७;३६।८१ ज १।७,६, १०,२३,२५,३८,४०,४३;२।६,१६,५२,५६, ५८,८६,१२३,१५१,१५७,१५६,१६१; ३।३, २३,२४,३५,३७,६५,१३१,१५६,१६०,१७८; ४।१०,१२,५५,६२,८१,८६,६८,१०१,१०८, ११०,११४,१४७, ५४,२४८,२६२,२६५, २६८,२७१,२७४; ७।१८२,२०७ सू १।१४; १८।१३,२० उ १।२२,१३८,१४०

धणुग्गह (धनुर्ग्रह)ज २।४३

धणुप्पट्ठ (धनुष्पृष्ठ) ज १।१८,२०,२३,४८; ४।१,१७२

धणुपुहत्तिय (धनुःपृथक्त्विक) प १।७५

धणुवर (धनुर्वर) ज २।६६;३।७६,११६,११६, १२०,१६७।३,१८५,२०६

धणुह (धनुष्) ज ३।३१

धण्ण (धान्य) प ११।२६ से २८ ज २।६६;३।७६, ११६,११६,१२०,१६७।३,१८५,२०६ उ ३।४०;५।१४

धण्ण (धन्य) ज ५।५,४६,५८ उ १।३४,४०,४१, ४३,४४,७४;३।६८,१०१,१३१;५।३६

धन्न (धन्य) ज २।६४ उ ३।३८

धमाससार (धमाससार) प १७।१२५

धम्म (धर्म) प २०।१७,१८;२२,२५,२८,२६,३४, ४५ ज १।४;२।६४,७२,११३,१३३ चं ६ सू १।४ उ १।२,२०,२१;३।१३,१०२,१०३,१३४ से १३६,१३८,१४२,१४७; ४।१४; ५।२०,२७

धम्मंत (ध्मायमान) ज ३।११७

धम्मकहा (धर्मकथा) उ ३।७१

धम्मचरण (धर्मचरण) ज २।१२६,१५८

धम्मजागरिया (धर्मजागरिका) उ २।११;५।३६

धम्मणायग (धर्मनायक) ज ५।२१

धम्मत्थिकाय (धर्मास्तिकाय) प १।३;३।११४ से ११६,१२२; ५।१२४; १५।५३,५४,५७; १८।१२५

धम्मदय (धर्मदय) ज ५।२१

धम्मदेसय (धर्मदेशक) ज ५।२१

धम्मरुइ (धर्मरुचि) प १।१०१।१,१२

धम्मरुक्ख (धर्मरुक्ष) प १।४३।१

धम्मवर (धर्मवर) ज २।६३;५।२१,२८

धम्मसारहि (धर्मसारथि) ज ५।२१,
धम्मिय (धार्मिक) उ १।१७,१६,२४;४।१२,१३, १५
धय (ध्वज) उ ३।१०८,१८४
धर (धर) प २।३०,३१,४०।१०,२।४१,४६ से ५४
√**धर** (धृ) धरेइ ज ५।४६,६०,६६
धरण (धरण) ज २।३४,३५,४०।६ ज ३।१८५, २०६;५।५२
धरणि (धरणि) ज २।१३२
धरणिखील (धरणिकील) सू ५।१
धरणितल (धरणितल) प १७।१०७,१०६,१११ ज ३।६।१२,३५,१०९;४।२१३,२१५;५।२१, ५८
धरणिसिंग (धरणिश्रृंग) सू ५।१
धरणीयल (धरणीतल) ज ३।१०६,११७;५।५,४४ उ १।२३,६१
धरिज्जमाण (ध्रियमाण) ज ३।६,१८,७७,७८,९३, १८०,२२२
धरेंत (धरत्) ज ३।६२
धव (धव) प १।३६।३
धवल (धवल) प २।३१ ज १।३७;२।१५;३।६, १७,२१,३१,३४,३५,११७,१७७,१७८,२११, २२२;५।५८,७।१७८
धवलवसभ (धवलवृषभ) ज ५।६२,६३
धस (दे०) उ १।२३,६१
धाइकम्म (धातृकर्म) उ ३।११५
धाई (धातृ) उ १।६४
धाय (धातृ) प २।४७।२
धायइसंड (धातकीषण्ड) प १५।५५;१६।३०; १७।१६५ सू ८।१;१६।७,८।१,२,१६।६; १६।२२।२५
धायई (धातकी) प १।३५।२;१५।५५।१
धायईसंड (धातकीषण्ड) सू १६।२२।२३,२४
√**धार** (धारय्) धारे ज ३।१२६।१
धारणा (धारणा) ज ३।३
धारणिज्ज (धारणीय) प २२।१५,८०
धारा (धारा) ज २।१४१ से १४५;३।१२,११५, ११६,१२२,१२४
धाराहय (धाराहत) ज ५।२१
धारि (धारिन्) प २।३०,३१,४१,४६
धारिणी (धारिणी) ज १।३;२।१५ चं ८ सू १।३
धारेयव्व (धर्तव्य) सू २०।६।५
धावण (धावन) ज ३।१७८;७।१७८
धिइ (धृति) ज ४।८६ उ ४।२।१
धिइकूड (धृतिकूट) ज ४।९६
धिक्कार (धिक्कार) ज २।६२
धिति (धृति) सू २०।९।३,५
धुर (धुर) सू २०।८
धुरय (धुरक) सू २०।८।५
धुरा (धूर्) ज ३।३५,१७८,१८८
धुव (ध्रुव) ज १।११,४७;३।१६७,२२६;४।२२, ५४,६४,१०२,१५६;७।२१०
धुवराहु (ध्रुवराहु) सू २०।३
धूमकेउ (धूमकेतु) प २।४८ सू २०।८।४
धूमकेतु (धूमकेतु) सू २०।८
धूमप्पभा (धूमप्रभा) प १।५३;२।१,२०,२५; ३।१५,१६,२०,१८३;४।१६ से १८; ६।१४,७७,७८;१०।१;२०।७,४१;२१।६७; २३।७,१६
धूमवट्टि (धूमवर्ति) ज ३।१२,८८;५।५८
√**धूमाय** (धूमाय्) धूमाहिंति) ज २।१३१
धूया (दुहितृ) ज २।२७,६६ उ ३।११४;४।६,१६
धूलि (धूलि) ज २।१३१,१३२
धूव (धूप) प २।३०,३१,४१ ज १।४०;२।६५; ३।७,९,११,१२,२१,३४,८५,८८,४।१३०, १३६,२१८,२४२;५।७,५७,५८ सू २०।७ उ ३।५०,११०
धोत (धौत) ज ३।११७
धोय (धौत) प २।३१ ज ३।२४
धोरण (दे०) ज ३।१७८;७।१७८
√**धोव** (धाव्) धोवइ उ ४।२१ धोवसि उ ४।२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धोव्व (दे०) ज ३।१६७।६

न

न (न) उ १।३७
नउय (नयुत) ज २।४
नउयंग (नयुताङ्ग) ज २।४
नंद (नन्द) ज २।६४;३।१८५,२०६
नंदण (नन्दन) उ २।२।१
नंदणवण (नन्दनवन) उ ५।६,७,३६ ३७
नंदा (नन्दा) उ १।३०,३१
नंदि (नन्दि) प १५।५५।१
नंदिघोस (नन्दिघोष) ज ३।१७८
नंदिय (नन्दित) ज ३।५,६,८,१५,१६ ३१,५३, ६२,७०,७७,८४,६१,१००,११४,१४२,१६५, १७३,१८१,१८६,१६६.२१३;५।२७
नंदीमुह (नन्दिमुख) ज २।१२
नंदीसरवर (नन्दीश्वरवर) ज २।११६
नक्खत्त (नक्षत्र) प १।१३३;२।२३ से २७,४८,५०, ६३ उ २।१२
नगर (नगर) प १।७४ ज २।७१;३।६,७७,२२२
नगरावास (नगरावास) प २।४३
नगरी (नगरी) उ १।११०
नग्गभाव (नग्नभाव) उ ५।४३
नच्चंत (नृत्यत्) ज ३।१७८ उ १।१३६
√नज्ज (ज्ञा) नज्जइ उ १।५४
नट्ट (नाट्य) प २।३०,३१,४६ ज १।४५
नट्टविहि (नाट्यविधि) उ ३।७,२१,२५,६२,१५६, १६६;४।५
नट्ठ (नष्ट) ज २।१३३
नत्ती (नप्त्री) उ ३।११४,११५,११६
नत्तु (नप्तृ) ज २।६६ उ २।२२
नत्तुय (नप्तृक) उ १।१०६,११०,११३,११४; ३।११४
नत्थि (नास्ति) प १।८१;५।१५५;३६।३३
नदी (नदी) प २।४,१३.१६ से १६,२८; १५।५५।२
नपुंसकलिंगसिद्ध (नपुंसकलिङ्गसिद्ध) प १।१२
नपुंसग (नपुंसक) प १।४६ से ५१,६०,७५,७६, ८१;११।२७
नपुंसगवेद (नपुंसकवेद) प १८।६२;२३।७५
नपुंसगवेदग (नपुंसकवेदक) प ३।६७;१३।१६
नपुंसय (नपुंसक) प ६।७६
नभ (नभस्) ज २।६५
√नमंस (नमस्य्) नमंसइ ज १।६;५।५८ उ १।१६;३।८१;४।१३;५।२० नमंसंति उ ४।१६;५।३६ नमंसीहामि उ ३।२६ नमंसेज्ज ज २।६७
नमंसमाण (नमस्यत्) उ १।१६
नमंसित्ता (नमस्यित्वा) ज १।६ उ १।१६;३।८१; ४।१४;५।२०
नमिऊण (नत्वा) चं १।२
नय (नय) सू १।२५;२।२;४।२ उ १।३८,४०,४२
नयण (नयन) उ १।१५,३५;३।६८
नयर (नगर) उ १।१२,२८,२६,१२१,१२२;३।४, २१,२४,८६,१५५,१६८,१७१;४।४,६.७,१३, १५,१८,२८;५।२४ से २६,४३
नयरी (नगरी) चं ६,७,८ सू १।१ से ३ उ १।६, १०,१२,१६ ६३,६५ ६७,६८,१०५ से १०७, ११०,१११,११५,१२२,१२५,१२६,१३०, १३२,१४४.१४५;२।४,५,१६,१७;३।६,११, २१ २७ से २६,४६,४८,५०,५५,६५,६६,६६, १००,१११,१५७,१५८,१६६,१७१;५।४,५,६, ११,१६,३०,३३
नर (नर) ज २।६५,७१
नरग (नरक) प २।२२ से २७,२।२७।३,४ उ १।२६
नरच्छाया (नरच्छाया) प १६।४७
नरय (नरक) प २।२३;६।८०।२ उ १।१४०
नरवइ (नरपति) उ १।१२४,१३१;५।१६
नलिण (नलिन) प १।४६,१।४८।४४
नलिणहत्थगय (हस्तगतनलिन) ज ३।१०
नलिणिगुम्म (नलिनीगुल्म) उ २।२।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव (नवन्) प १।८१।१ ज ३।१०९ सू १।१४ उ १।५३
नव (नवम) प १०।१४।३
नवणउति (नवनवति) सू १।२१
नवणउय (नवनवति) सू १।२६
नवणवति (नवनवति) सू १।२१
नवति (नवति) सू २।३
नवम (नवम) प १०।१४।१,२ उ १।७;२।२२
नवरं (दे०) प २।४०,४४,६२;५।४२,४३,४६, ५०,५४,६४,८७,९८,१०२,१०५,१०८,११२, ११७,१२२,१३२,१४८,१५१,१६७,१७०, १७५,१७८,१७९,१८२,१८५,१८८,१९४, १९८,२०४,२०५,२०८,२१३,२१५,२१६, २१९,२२२,२२५,२३५,२४०,२४३;६।४६, ५९,७४ से ७८,८०,८१,८३,८४,८६,८९;९२, ९४,१००,१०७,१०८,११२;११।८२,८३; १२।३१;१३।१५;१५।६०,६२,६६,९७,१४३; १७।६९;३६।९ सू १।२२ उ १।१४८;२।२०; ३।७,१३;४।५;५।१३
नवविह (नवविध) प १७।१३९
नह (नख) उ १।३६,५५,५८,८०,८३,९९,११६ ११८;३।१०६,१३८;५।१७
नाइ (ज्ञाति) उ ३।४२,११०,१११;४।१६,१८
नाइय (नादित) ज ३।७८;५।२२
नाग (नाग) प २।३०।१,२।४०।१० ज ३।१८५, २०९
नागकुमार (नागकुमार) प १।१३१;२।३५;४।४३ से ४५,५५;५।८;६।१८,६१
नागकुमारत्त (नागकुमारत्व) प ३६।२४
नागकुमारराय (नागकुमारराज) प २।३६
नागकुमारी (नागकुमारी) प ४।४६ से ४८
नागपव्वय (नागपर्वत) ज ४।२१२
नागमाल (नागमाल) ज २।८
नागलता (नागलता) प १।३९।१
नाडइज्ज (नाटकीय) ज ३।७४
नाण (ज्ञान) प २।६४।१२;५।४३,८७,१०२,१०५, ११५ ज २।७१,८५;३।२२३;५।२१ उ ३।४४
नाणत्त (नानात्व) प २।४०
नाणा (नाना) ज ४।१३
नाणाविह (नानाविध) उ ५।५
नादित (नादित) ज ३।२०९
नाम (नामन्) प १।१०१।५;२।३०।१,२।५८,६१; २३।१५१ ज १।४६;३।२४;४।२६२ चं ६,७, ८,१० सू १।१ मे ३,५,९ उ १।१ से ३,९ से १३,२८ से ३२,९५,१४४ से १४६,१४८; २।४ से ७,१६ से २०,२२;३।४,९;१०,२१, २७,२८,४८,५०,५५,८९,९५ से ९७,१३२, १५५,१५७,१५८,१७१;४।७ से ९,२८; ५।२।१,४ से ७,९,११ से १३,२१,२४ से २६, ४०,४१
नामधिज्ज (नामधेय) प २।६४
नामधेज्ज (नामधेय) ज ३।१३५।१ सू १०।८४ उ १।६३;२।९;३।१२६
नामय (नामक) चं ५।२ सू १।९।२
नायव्व (ज्ञातव्य) प १।४८।९,१।१०१।४,१२ सू १।२५;२।२
नारी (नारी) ज २।६५
नालिएरी (नालिकेरी) प १।४३।२,१।४७।१
नालियावद्ध (नालिकाबद्ध) प १।४८।४१
नासा (नासा) ज ३।२११;५।५८
निउण (निपुण) प २।४१ ज ५।७
निओय (नियोग) ज ३।१७८
√निंद (निन्द्) निंदंति उ ३।११६
निंदिज्जमाण (निन्द्यमान) उ ३।११८
निंबकरय (निम्बकरज) प १।३५।३
निकुरंब (निकुरम्ब) उ ३।४९
निक्कंकड (निष्कङ्कट) ज १।३१
निक्कंकडछाया (निष्कङ्कटछाया) प २।३०,४९, ५९,६३,६४
निक्कंखिय (निष्काङ्क्षित) प १।१०१।१४
निक्कट्ठ (निकृष्ट) उ १।१३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निक्खंत (निष्क्रान्त) उ ३।१७०;४।२८;५।२७
√**निक्खम** (निर्+क्रम्) निक्खमइ उ १।११६
निक्खमण (निष्क्रमण) ज ४।१७७ उ ३।१०६; ४।१६
निक्खममाण (निष्क्रामत्) सू १।८।२,१।१२,१४, १६,१८,१६,२१ २४,२७;२।३;६।१
निक्खमित्ता (निष्क्रम्य) उ १।११६
निक्खित्त (निक्षिप्त) उ ३।४८,५०,५५
निक्खेव (निक्षेप) उ १।१४८
निगम (निगम) प १।७४ ज ३।६,७७,२२२
निगर (निकर) ज ३।१२,८८;५।५८
√**निगिण्ह** (नि+ग्रह्) निगिण्हइ ज ३।२३,३७, ४४
निगिण्हित्ता (निगृह्य) ज ३।२३
निगोद (निगोद) प ३।६१ से ६३,७० से ७४,८२, ८४ से ८७,६४,६५,१८३; १८।४६
निगोय (निगोद) प १।४८।५६ से ५८;३।८७
निग्गंथ (निर्ग्रन्थ) ज २।७२ उ ३।३८,४०,४२, १०३,१३६;४।१४;५।२०
निग्गंथी (निर्ग्रन्थी) ज ३।१०२,११५,११७,११८; ४।२२ उ ३।१०२,११५,११७,११८;४।२२
√**निग्गच्छ** (निर्+गम्) निग्गच्छइ उ १।१६; ३।१३;४।१३;५।१६
निग्गच्छित्ता (निर्गत्य) उ १।१६;३।२६;४।१३
निग्गय (निर्गत) चं ६ सू १।४ उ १।२,१६;२।६; ३।५,१२,२४,८६,१४७ १५५,१५६;४।४,१०; ५।१४,२६,२७,३७,३८
निग्घोस (निर्घोष) ज ३।१२,७८
निघस (निकष) ज १।५
निचिय (निचित) ज ५।५
निच्च (नित्य) प २।२४,२६,२७
निच्चच्छणय (नित्यासनक, नित्यक्षणक) उ ५।५
निच्चालोय (नित्यालोक) सू २०।८।६
निच्चिट्ठ (निश्चेष्ट) उ १।६०,६१
निच्छुभिउकाम (निक्षेप्तुकाम) उ १।७३
निच्छय (निश्चय) उ ३।११
√**निच्छुहाव** (नि+क्षेपय्) निच्छुहावेइ उ १।११७
निच्छुहाविय (निक्षेपित) उ १।११६
निच्छूढ (निक्षिप्त) उ १।११८
√**निज्जर** (निर्+जॄ) निज्जरंति प १४।१८ निज्जरिंसु प १४।१८ निज्जरिस्संति प १४।१८ निज्जरेंसु प १४।१८
निज्जरा (निर्जरा) प १४।१८।१
निज्जाणसंठिय (निर्याणसंस्थित) सू ४।३
निज्जाणभूमि (निर्याणभूमि) ज ५।४८
निज्जाणमग्ग (निर्याणमार्ग) ज ५।४४ उ ३।६१
निज्जुत्त (निर्युक्त) प २।३०
निज्झर (निर्झर) ज २।४,१३ १६ से १६,२८
निट्ठियट्ठ (निष्ठितार्थ) प ३६।६४
निण्ण (निम्न) ज ३।७७,१०६
नितंब (नितम्ब) ज ४।१६४
नित्तेय (निस्तेजस्) उ १।३५
निदाया (दे०) प ३५।१८,१६
निदाह (निदाघ) ज ७।११४।२
निद्दा (निद्रा) प २३।६१
निद्दायमाण (निद्रायमाण) उ ३।१३०
निद्ध (स्निग्ध) प १।४ से ६;५।५,७,१२६,२१४, २१८,२२१,२२६;१३।२२;१७।१३८ ज ३।१०६
निन्न (निम्न) उ ३।५५
निप्पंक (निष्पङ्क) प २।३०,३१,४६,५६,६३, ६४ ज १।३१
निप्पट्ठपसिणवागरण (निःस्पृष्टप्रश्नव्याकरण) उ ३।२६
निप्पाण (निष्प्राण) उ १।६०,६१
√**निप्फज्ज** (निर्+पद्) निप्फज्जए ज ७।११२।४ सू १०।१२६।४ निप्फज्जंति प ६।२६
निप्फन्न (निष्पन्न) ज २।१८
निप्फाव (निष्पाव) प १।४५।१ ज ३।११६ सेस
√**निब्भंछ** (निर्+भर्त्स्) निब्भंच्छेइ उ १।५७
निब्भंच्छणा (निर्भर्त्सना) उ १।५७,८२

निभ (निभ) ज ३।१०६
निमज्जग (निमज्जक) उ ३।५०
निमित्त (निमित्त) उ १।४१,४३
निम्मंस (निर्मांस) उ १।३५
निम्मम (निर्मम) प २।६४।१
निम्मल (निर्मल) प २।३१,४१,४६,५६.६३,६४ ज ७।१७८
नियग (निजक) ज २।६३ उ १।१६,१३६; ३।५०, ६८,११०,१११,१२८; ४।१३,१६,१८
नियत्त (निकृत्त) उ १।२३,६१
नियत्थ (दे०निवसित) उ ३।५१,५३,५५,६३,६७, ७०,७३
नियम (नियम) प ६।११६; १०।६,२१; ११।५५; २१।१०३; २२।५० से ५२,६७; २७।२ उ ३।३१
नियमसो (नियमशस्) प २।६४।११
नियमा (नियमा) ज ७।४८
नियल (निगड) उ १।६५,६६,६८,७२,८८,६२
निरंगण (निरङ्गण) प ११।२५
निरंजण (निरञ्जन) ज २।६८
निरंतर (निरन्तर) प ६।४७ से ५८,१०६,११०; १०।३५ से ३६,४१ से ५३; ११।७०; २०।१६, ४४,६०; २२।११,२७,५३; ३६।२४ ज ५।५,७
निरय (निरय) प २।१,१० ज २।१३३
निरयगति (निरयगति) प ६।१,६
निरयपत्थड (निरयप्रस्तर) प २।१
निरयावलिया (निरयावलिका) प २।१,१० उ १।५ से ८,१४२,१४३,१४८; २।१; ५।४५
निरयावास (निरयावास) प २।२५
निरवकंख (निरवकाङ्क्ष) ज २।७०
निरवयव (निरवयव) उ ३।७६
निरवसेस (निरवशेष) प ३४।२१ ज ४।१६०,२७७ उ १।१४७
निरालंबण (निरालम्बन) ज २।६८
निरालोय (निरालोक) उ १।२२,१४०
निरावरण (निरावरण) ज ३।२२३
निरुवक्कमाउय (निरुपक्रमायुष्क) प ६।११५,११६
निरुवलेव (निरुपलेप) ज २।६८
निरुवहय (निरुपहत) उ ३।३२
निरोदर (निरुदर) ज २।१५
निलाड (ललाट) उ १।२२,११५,११७,१४०
निवइय (निपतित) ज ३।२५,३८,४६
√निवज्जाव (नि + सादय्) निवज्जावेइ उ १।४६
निवज्जावेत्ता (निप.द्य) उ १।४६
निवडिय (निपतित) उ १।२२,१४०
निवड्ढेत्ता (निवर्ध्य) ज ७।२७
निवड्ढेमाण (निवर्धयत्) ज ७।२५,२७,३० सू १।२०
निवत्त (निवृत्त) उ १।६३
निवयउप्पय (निपातोत्पात) ज ५।५७
निवह (निवह) ज २।६५; ३।६३,१५७,१६३
√निवार (नि+वारय्) निवारेंति उ ३।११७
निवारिज्जमाण (निवार्यमाण) उ ३।११८
निवुड्ढित्ता (निवर्ध्य) सू १।१४
निवुड्ढेत्ता (निवर्ध्य) सू ६।१
निवुड्ढेमाण (निवर्धमान) सू १।१४,२१,२७; २।३; ६।१
निवेदण (निवेदन) ज २।३०
निवेस (निवेश) प १।७४ ज ३।१८,६१,६६, १३१,१३७ उ १।१३३,१३४
निवेसिय (निवेशित) उ ३।६८
निव्वत्त (निर्वृत्त) प २।६७।१ ज ३।१४,४३,१४६
निव्वत्तणया (निर्वर्त्तन) प ३४।१,२,३
निव्वत्तणा (निर्वर्त्तना) प १५।६०,६५
निव्वत्तणाहिकरणिया (निर्वर्तनाधिकरणिकी) प २२।३
निव्वत्ति (निर्वृत्ति) प १४८।५३
निव्वाघाइय (निर्व्याघातिक) ज ७।१८२
निव्वाघातिम (निर्व्याघातिन्,निर्व्याघातिम) सू १८।२०
निव्वाघाय (निर्व्याघात) ज २।७ ज ३।२२३
निव्विट्ठ (निर्विष्ट) ज ३।३२।१,२२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्विट्ठकाइय (निर्विष्टकायिक) प १।१२७
निव्विण्ण (निर्विण्ण) उ १।५२,७७
निव्वितिगिच्छा (निर्विचिकित्सा) प १।१०१।१४
निव्विसमाण (निविशमान) प १।१२७
निव्वुइकर (निर्वृतिकर) ज ५।३८
√निव्वुड्ढ (नि+वर्धय्) निव्वुड्ढेइ सू ६।१
निव्वुय (निर्वृत) उ १।६१,६२,८६,८७
√निव्वेड्ढ (निर्+वेष्टय्) निव्वेड्ढेइ सू २।२
निव्वेढेंति सू २।२
निव्वेयण (निर्वेदन) उ १।६१,६२,८६,८७
निसंत (निशान्त) उ ३।१३८
निसढ (निषध) ज ४।६४ उ ५।२।१,५।१३,२०,
२२,२३,३१,३२,३४ से ४३
निसम्म (निशम्य) ज ३।६१ उ १।२१;३।१३;
४।१४;५।३०
निसामित्तए (निशमितुं) उ ३।१०२,१३४
निसास (निःश्वास) ज ३।२२१ उ ५।४३
√निसीय (नि+षद्) निसीयइ उ १।४१
निसीयित्ता (निषद्य) उ १।४१
निसीहिया (निषीधिका,नैषेधिकी) उ ४।२१ से २३
निसेग (निषेक) प २३।७४
निस्संकिय (निःशंकित) प १।१०१।१४
निस्सग्ग (निसर्ग) प १।१०१।१
निस्सासविस (निःश्वासविष) प १।७०
निहाण (निधान) प १।१।२
निहिरयण (निधिरत्न) ज ३।१६६ से १६८
√नीण (नी) नीणेइ उ १।६७
नीय (नीच) उ ३।१००,१३३
नीरय (नीरजस्) प २।४१,४६,५६,६३,६४
नील (नील) प १।४ से ६; ५।२०५;११।५३;
२८।२० ज ४।२६
नीलपत्त (नीलपत्र) प १।५१
नीलमत्तिया (नीलमृत्तिका) प १।१६
नीललेस्स (नीललेश्य) प १७।६४
नीललेस्सा (नीललेश्या) प १७।३७
नीलवंत (नीलवत्) ज ४।१४२।३,१७८,१८०,२०७
२२७
नीलासोय (नीलाशोक) प १७।१२४
नीली (नीली) प १।३७।१ नील
नीव (नीप) ज ५।२१
√नीसस (निर्+श्वस्) नीससंति प ७।१ से ४,
६ से ३०; १७।२५
नीसा (निश्रा) ज २।१३३
नीसास (निःश्वास) प १।४८।५३ ज २।४।१;
५।५८
नीहरण (निर्हरण) उ १।६२
नूणं (नूनम्) उ ३।३८
नेउर (नुपूर) ज १।२६
नेमि (नेमि) ज ३।३५
नेयव्व (नेतव्य) प २।४७।३; ३६।२७ ज ४।७५
सू २।२;४।२ उ १।१४८; २।२२;५।४५
नेरइय (नैरयिक) प १।५२,५३;२।२० से २७;
३।१० से २३ ३८,३९,१२६,१८३;४।१,२४
से २४;५।३ से ५,८,२२,२७ से ३४,३६,३७,
४०,४१,४४,४५;६।१० से १६,४५,४७,५१,
५८,६०,६५,६८,७०,७३ से ७८,८० से ८४,
८७,८८,९० से ९३,९६,९९,१०१ से १०३,
१०५,१०६,११०,११४,११७,११९,१२१;
७।१;८।२,४,५;९।२,१४,२१,२४;१०।५०,
५१;११।४०,४१,१५।६०,६१,८८;१६।३३;
१७।९,१०१;१८।२;२०।६३;२१।३६;
२८।१०६;३६।२२ उ १।२६,१४०
नेरइयअसण्णिआउय (नैरयिकासंज्ञ्यायुष्क)
प २०।६४
नेरइयत्त (नैरयिकत्व) उ १।२६,२७,१४०
नेवत्थ (नेपथ्य) ज ३।१७८
नेसप्प (नैसर्प) ज ३।१६७।१
नेह (स्नेह) उ १।७२,७३,८७,८८,९२
नो (नो) प ५।२ सू १।१८ उ १।१५,३।३४;
४।२२
नोइंदियउवउत्त (नोइन्द्रियोपयुक्त) प २।१७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोइंदियजवणिज्ज (नोइन्द्रिययापनीय) उ ३।३२, ३४

नोजुग (नोयुग) सू १२।७

नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तग (नोपर्याप्तकनोअपर्याप्तिक) प ३।११०

नोपज्जत्तनोअपज्जत्त (नोपर्याप्तनोअपर्याप्त) प ३।११०

नोपरित्तनोअपरित्त (नोपरीतनोअपरीत) प ३।१०६

नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिय (नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिक) प ३।११३

नोसंजतनोअसंजतनोसंजतासंजत (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३।१०५

नोसंजयनोअसंजयनोसंजतासंजत (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३।१०५

नोसण्णिनोअसण्णि (नोसंज्ञिनोअसंज्ञिन्) प ३।११२

नोसुहुमनोबादर (नोसूक्ष्मनोबादर) प ३।१११

प

पइट्ठ (प्रतिष्ठ) ज ७।११४।१

पइट्ठा (प्रतिष्ठा) ज ५।२१

पइट्ठाण (प्रतिष्ठान) ज ३।१६७।११,३।२०६, २१०;४।२६;५।५६

पइट्ठित (प्रतिष्ठित) प २।६४।२

पइट्ठिय (प्रतिष्ठित) प २।६४।३; १४।१८।१

पइण्ण (प्रकीर्ण) ज ३।१२०

पइण्णग (प्रकीर्णक) प १।१०१।८

√पउंज (प्र+युज्) पउंजइ ज २।६०,६३;३।५६, १४५;५।२१,५८ पउंजंति ज २।१८; ३।११३; १८५,२०६; ५।३

पउंजमाण (प्रयुञ्जान) ज ३।१७८

पउंजित्ता (प्रयुज्य) ज २।६०

पउट्ठ (प्रकोष्ठ) ज ७।१७८

पउम (पद्म) प १।४६,१।४८।४१,४४,६२; २।४६;११।२५ ज १।५१;२।४,१५,१६;३।३, १०,१०६;२०६;४।६,७,१४,१५,१७ से २२, ३०,६०,६४,८४,१५४,१५५,२६६,२७२; ५।५५ ५६;७।१७८ उ २।२,६ से १३

पउम (कंद) (पद्मकन्द) प १।४८।४२

पउमंग (पद्माङ्ग) ज २।४

पउमगुम्म (पद्मगुल्म) उ २।२।१

पउमद्दह (पद्मद्रह) ज ४।३,४,६,२२,२३,३७, ३८,६४,८६,१४१;५।५५

पउमपत्त (पद्मपत्र) ज ५।३२

पउमप्पभा (पद्मप्रभा) ज ४।१५४,१५५।१,२२१

पउमभद्द (पद्मभद्र) उ २।२।१

पउमलता (पद्मलता) प १।३६।१

पउमलया (पद्मलता) ज १।३७; २।११,१०१; ४।२७;५।२८,३२ ३४;७।१७८

पउमवरवेइया (पद्मवरवेदिका) ज १।१० से १२, १४,२३,२५,२८,३२,३५,५१;४।१,३,२५,३१, ३६,४३,४५,५७,६२,६८,७२,७६,७८,८६, ६५,१०३,११०,११८,१४१,१४३,१४८,१४६, १७८,१८३,२००,२०१,२१३,२१५,२३४,२४० से २४२

पउमसेण (पद्मसेन) उ २।२।१

पउमा (पद्मा) प १।४८।४ ज ४।१५५।१,२२१

पउमहत्थगय (हस्तगतपद्म) ज ३।१०

पउमावई (पद्मावती) ज ५।१०।१ उ १।११, ६६ से १०२,१४४;२।४,७ से ६,१६;५।२५

पउमुत्तर (पद्मोत्तर) प १७।१३५ ज ४।२२५।१, २२६

पउमुत्तरा (पद्मोत्तरा) ज २।१७ चीनी,खांड

पउमुप्पलपिधाण (पद्मोत्पलपिधान) ज ३।२०६

पउय (प्रयुत) ज २।४

पउयंग (प्रयुताङ्ग) ज २।४

पउर (प्रचुर) ज २।१३१; ३।१०३ उ ५।५

पउरजंघा (प्रचुरजंघा) ज २।५३,१६२

पउरजण (पौरजन) ज २।६५

पउल (दे०) प १।४८।६

पउस (पऔस) प १।८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउसिया (बकुसिका) ज ३।१११।१
पएस (प्रदेश) प १।४,१।४८।५८,५६;२।६४,
२।६४।११;३।१८०;५।१३२,१३६ से १४५,
१६०,१६१,१७६ १६५,२१४,२१६;१०।२ से
५,१८ से २४,२६ से ३०;११।५०;१५।१।१;
१५।१२,२५,५४;१७।१४१;२१।२।१;
२२।५६;३६।८२ ज २।१५;३।११७;५।३८;
६।१,३;७।१७८
पएसट्ठया (प्रदेशार्थ) प ३।१२२,१८०;५।२४,
२८,६८,७८,८६,११५,१३६,१३८,१४०,१४३,
१४७,१५०,१५४,१६३,१६६,१६३,१६७,
२००,२१४,२१८,२२१,२३०,२४२;१०।३,२७
से २६;१५।१३,२६,३१;१७।१४४ से १४६;
२१।१०४ उ ३।४४
पओग (प्रयोग) प १।१।५;१६।१ से ८,१८
ज ३।१०३,११५,१२४,१२५
पओगगति (प्रयोगगति) प १६।१७ से २१
पओगि (प्रयोगिन्) प १६।१० से १५
पओय (प्रयोग) उ ३।१०१
पंक (पङ्क) प १६।५४
पंकगति (पङ्कगति) प १६।३८,५४
पंकप्पभा (पङ्कप्रभा) प १।५३;२।१,२०,२४;
३।१४,२०,२१,१८३;४।१३ से १५;६।१३,
७६,७७;१०।१;२०।६,१०,४०;२१।६७;३३।६,
१६ उ १।२६,२७,१४०
पंकबहुल (पङ्कबहुल) ज २।१३२
पंकय (पङ्कज) ज ३।३५
पंकावई (पङ्कावती) ज ४।१६३ से १६६
पंकावती (पङ्कावती) ज ४।१६५
पंच (पञ्चन्) प १।७४ अ १।६ च ३।३ सू १।७
उ १।२
पंच (पंचम) प १०।१४।४ से ६
पंचक (पञ्चक) प २३।१६४
पंचग (पञ्चक) प २३।१५५,१७७,१८०
ज ७।१३१।२
पंचगुलितल (पंचांगुलितल) ज ३।५६
पंचंगुलिया (पञ्चाङ्गुलिका) प १।४०।१
पंचग्गि ((पञ्चाग्नि) उ ३।५०
पंचणउय (पञ्चनवति) ज ४।११८
पंचतीस (पञ्चत्रिंशत्) सू १३।२५
पंचपएसिय (पञ्चप्रदेशिक) प १०।१०
पंचम (पञ्चम) प ३।१६,१८३;६।८०।१;
१०।१४।३;१२।३२;१७।६५;२२।४१,४२;
३३।१६;३६।८५,८७ ज २।८८;४।१०६;
७।१०१ से ११०,१३१।१ सू १०।७७,१२७;
१३।३;१४।२,६;१२।६;१३।१० उ २।२२;
३।७४,७६,१५४,१६६,१६७;५।१,३,४५
पंचमी (पञ्चमी) ज ३।२४।४;३७।२;४५।२,११८,
१२५,१३१।४ सू १०।६०;१२।२८
पंचमुट्ठिय (पंचमुष्टिक) ज ३।२२४ उ ३।११३
पंचय (पञ्चक) प २३।२६,२७,६१
पंचराइय (पञ्चरात्रिक) ज २।७०
पंचलइया (पंचलतिका) ज ३।८८
पंचवण्ण (पंचवर्ण) ज १।१३,२१,२६,३३,३७,
३६;२।७,५७,१२२,१२७,१४७,१५०,१५६,
१६४;३।१,७,२६,३६,४७,५६,६४,७२,८८,
११३,१२२,१३८,१४५,१६२;४।६३,११४;
५।३२,४३ सू २०।२
पंचवण्णिय (पंचवर्णिक) ज ३।११७
पंचविध (पञ्चविध) सू २०।७
पंचविह (पञ्चविध) प १।४,१४,१५,५५,५८,६६,
१२४,१३३,१३८;११।७२;१३।४,६,१२,२४
से २६,२८;१५।५८ से ६०,६२,६३,६५ से
६७;१६।५,१७,२५,२७;२१।२,३,५५,७५,७६,
६४;२३।१७,२३,२५,२७,४०,४१,४३,४४,४६,
५६;२४।१७,१८ ज २।१४५;३।८२,१८७,
२१८;७।१०५,१११,११२ सू १०।१२७ से
१२६;१६।२२।२१ उ ३।१५,८४,१२१,१६२;
४।२४;५।२५
पंचवीस (पञ्चविंशति) सू १।२१

पंचसइय (पञ्चशतिक) ज ४।१९२,१९८,२०४,
२१०,२३७,२६३,२६९,२७५
पंचसतर (पञ्चसप्तति) सू १९।२२।३२
पंचसत्तर (पञ्जसप्तति) सू १८।४
पंचाणुव्वइय (पञ्चानुव्रतिक) उ ३।७९
पंचाल (पाञ्चाल) प १।९३।२
पंचावण्ण (दे० पञ्चपञ्चाशत्) ज ७।८१,८४
पंचासीइ (पञ्चाशीति) ज ७।२५
पंचासीत (पञ्चाशीति) सू १३।१
पंचासीति (पञ्चाशीति) सू २।३
पंचिंदिय (पञ्चेन्द्रिय) प १।५२,५४,५५,६६,
१३८; २।१९,२८;३।१५३ से १५५,१८३;
४।१०५;५।३;६।१०७;१२।५;१३।१४;१५।३५;
१७।२३;२०।३४,३५; २१।४३,७०; २२।३१;
२३।१९५ ज ३।१६७।५
पंचिंदियरयण (पञ्चेन्द्रियरत्न) ज ३।२२०;
७।२०३,२०४
पंचेंदिय (पञ्चेन्द्रिय) प १।१४,६० से ६२,६६ से
६८,७६,७७,८१; ३।२४,४० से ४२,४८,४९,
१८३;४।१०४,१०६ से १५७;५।२२,८२,८३,
८५,८६,८८,८९,९२,९३,९६,९७;६।२१,२२,
५४,६५,७१,७८,८३,८७,८९,९२,१००,१०२,
१०५,१०७,११६; ९।६,७,१६,१७,२२,२३;
११।४६;१२।३१;१३।१८,१९;१५।१७,४६,
८७,९७,१०२,१०३,१०९,१२१,१३८;१६।७,
१४,२७;१७।३३,३५,४१ से ४३,६३ से ६८,
८९,९७,१०४;१८।१६,१८,२४;१९।४;
२०।१३,१७,२३,२५,२९,३४,४८;२१।२,७ से
१६,१९,२०,२९ से ३२,३६,४९,५१ से ५५,
५८ से ६२,६५,६८,६९,७१,७७,८२,८८,९४;
२२।७४,८७,९९;२३।४०,८९,१५०,१६७,
१७१,१७६,१७७,१९६,१९९ से २०१;२४।७;
२८।४७,४८,९८,११९,१३०,१३६,१३७,
१४२,१४४;२९।१५,२२;३१।४;३२।३;३३।१,
१२,२१,२८,३२,३६;३४।३,८;३५।१४,२१;
३६।७,४०,५१,५७,७२,७३,९२
पंजर (पञ्जर) प २।४८ ज ३।११७;४।४९
पंजलिउड (प्राञ्जलिपुट) ज ३।१२५,१२६;५।५७
उ १।१९
पंजलियड (प्राञ्जलिपुट) ज १।६;२।९०;३।२०५,
२०६;५।५८
पंडग (पण्डक) उ ३।३६
पंडगवण (पण्डकवन) प २१।८७ ज ३।२०८;
४।२१४,२४१,२४२,२४४,२४५,२४९,२५१,
२५२;५।४७,५५
पंडर (पाण्डुर) प २।३१;४०।८
पंडिय (पण्डित) ज ३।३२
पंडुकंबलसिला (पाण्डुकम्बलशिला) ज ४।२४४,
२४९
पंडुमत्तिया (पाण्डुमृत्तिका) प १।१९
पंडुय (पाण्डुक) ज ३।१६७।३
पंडुयय (पाण्डुक) ज ३।१६७।१,१७८
पंडुर (पाण्डुर) ज ३।११७,१८८
पंडुरोग (पाण्डुरोग) ज २।४३
पंडुलइयमुही (पाण्डुरकितमुखी) उ १।३५
पंडुसिला (पाण्डुशिला) ज ४।२४४ से २४७
पंति (पङ्क्ति) ज २।६५;३।२०४;४।११९
सू १९।२२।७,८,९
पंतिया (पङ्क्तिका) उ ३।११४
पंसु (पांशु, पांसु) ज २।१३३;३।१०९
पंसुकीलियय (प्रांशुक्रीडितक) उ ३।३८
√पकड्ढ (प्र + कृष्) पकड्ढइ ज ५।४६
पकड्ढिज्जमाण (प्रकृष्यमाण) ज ५।४४
√पकर (प्र + कृ) पकरेंति प ६।११४ से ११६;
२०।८ से १३ ज ७।५६ सू १९।२४
पकरेति प २०।६३
पकरेमाण (प्रकुर्वत्) प ६।१२३;२०।६३
पक्क (पक्व) प १६।५५
पक्कणिय (दे०) प १।८९
पक्कणी (दे०) ज ३।११।२

पक्कमंत (प्रकामत्) ज ३।१०९

पक्किट्टगसंठाणसंठित (पक्वेष्टकसंस्थानसंस्थित) सू १९।२६

पक्किट्टगसंठाणसंठिय (पक्वेष्टकसंस्थानसंस्थित) ज ७।५८

पक्कीलिय (प्रक्रीडित) ज ३।१,१२,२८,४१,४९, ५८,६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

पक्ख (पक्ष) प ७।२,७ से ३० ज २।४,६४,६९, ८८;७।११५,११६,११८,११९,१२६,१२७ सू ६।१;८।१;१०।८५,८७,९०,९१

पक्खच्छाया (पक्षच्छाया) सू ९।४

√पक्खल (प्र+स्खल्) पक्खलेज्ज उ ३।५५

पक्खि (पक्षिन्) प ६।८०।१; ११।४; २१।४७।१ ज २।१३१ सू २०।२

पक्खित्त (प्रक्षिप्त) प १२।३२ उ १।९०

√पक्खिप्प (प्र+क्षिप्) पक्खिप्पई ज ३।९८

√पक्खिव (प्र+क्षिप्) पक्खिवइ उ १।४६;३।५१ पक्खिवंति ज २।१२०;५।१६ पक्खिवेज्जाहि सू २०।९।३

पक्खिवित्ता (प्रक्षिप्य) ज २।१२० उ १।६१; ३।४१

पक्खिविराली (पक्षिविराली) प १।७८

पक्खुभिय (प्रक्षुभित) ज ३।२२,३६,७८,९३,९९, १०६,१६३,१८०

पक्खेवाहार (प्रक्षेपाहार) प २८।४०,६९,१०२,१०३

पक्खेवाहारत्त (प्रक्षेपाहारत्व) प २८।४०,६९

पक्खोलणय (प्रस्खलत्) उ ३।१३०

पगइ (प्रकृति) ज २।१६; ३।३,११७; ७।१८० उ ५।४०,४१

पगइभद्द (प्रकृतिभद्र) ज १।४१;२।३६,४१

पगडि (प्रकृति) प २३।१।१

पगय (प्रगत) उ ५।२।१

पगरेमाण (प्रकुर्वत्) प ६।१२३

पगार (प्रकार) ज ३।८१

पगास (प्रकाश) प २।३१ ज २।१५; ३।३५,११७, १८८;४।१२५; ५।६२; ७।१७८ उ ५।६

√पगास (प्र+काश्) पगासइ ज ४।६१,२७३, ७।१७८ पगासेति सू ३।१ पगासेति सू ३।२

पगिज्झिय (प्रगृह्य) उ ३।४२

√पगिण्ह (प्र+गृह्) पगिण्हइ ज ३।२०,३३,५४, ६३,७१,८४,१३१,१३७,१४३,१६६,१८२ पगिण्हंति ज ३।१११

पगिण्हित्ता (प्रगृह्य) ज ३।२०

पग्गहेत्तु (प्रगृह्य) ज ३।१२,८८; ५।५८

पघसिय (प्रघर्षित) ज ३।३५

पच्चक्ख (प्रत्यक्ष) ज ३।१,२४।३,३७।१,४५।१, १३१।३ उ ५।४

पच्चक्खयाविणीय (प्रत्यक्षविनीत) ज ३।१०९

पच्चक्खवयण (प्रत्यक्षवचन) प ११।८६

पच्चक्खाण (प्रत्याख्यान) प २०।१७,१८,३४

पच्चक्खाणावरण (प्रत्याख्यानावरण) प १४।७; २३।३५

पच्चक्खाणी (प्रत्याख्यानिनी) प ११।३७।१

पच्चणुब्भवमाण (प्रत्यनुभवत्) प २।२० से २७

पच्चणुभवमाण (प्रत्यनुभवत्) ज १।१३,३०,३६; ३।१२९,४।२ सू २०।७ उ १।११,९८,९९; ३।११४,११५,११९

पच्चत्थाभिमुहि (पश्चिमाभिमुखिन्) ज ४।४२,७७, २६२

पच्चत्थिम (पाश्चात्य) प ३।१ से ३७,१७६ १७८, ज १।१६,१८,२०,२३,२४,३५,४१,४६,४८, ५१; ३।१,४४,६८,६९,९७,१२८;४।१,१९, २६,३७,४२,४५,४८,५५,५७,६२,७७,८१,८४, ८६,९४,९८,१०३,१०८,१२९,१३५,१४३, १५१।२,१६२,१६७,१६९,१७२ से १७८,१८१, १८२,१८४,१८५,१९०,१९१,१९३,१९४, १९६,१९७,१९८,२०० से २०३,२०५,२०६, २०८,२०९,२१३,२१५,२२९,२३२,२३८, २५१,२६२,२६५,२६६,२७१,२७२,२७४, ५।१०,३९; ६।१९ से २४,२६; ७।१७८ सू २।१; ८।१;१३।३२,१४,१६;१८।१४;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०।२ उ ३।५४

पच्चत्थिमलवणसमुद्द (पाश्चात्यलवणसमुद्र) ज ४।२६८,२७७

पच्चत्थिमिल्ल (पाश्चात्य) प १६।२४ ज १।२०, २३,४८;२।११६,३।४७,७६,६५,१४६,१५०, १५६,१६१,१६४;४।३७,५५,६२,८१,८६,६८, १०८,१७२,२१२,२१३,२३०,२३१,२३८; ७।१७८ सू २।१;१०।१४२;१३।१४,१६

पच्चत्थुय (प्रत्यवस्तृत) ज ३।११७

√पच्चप्पिण (प्रति+अर्पय्) पच्चप्पिणइ ज ३।३२,१७१;५।७१ पच्चप्पिणंति ज ३।८, १३,१६,२६,४२,५०,५६,६७,७५,१४८,१६६, १७४,१७६,१८८,२००,२१३;५।७०,७३ पच्चप्पिणति ज ३।१६,५३,६२,७०,१४२, १६५,१८१;५।५ पच्चप्पिणह ज २।१०५; ३।७,१२,१५,४१,४६,५८,६६,७४,१३०,१४७, १६८,१७३,१७५,१६१,१६६,२१२;५।६६ ७२ उ १।१७;४।१६;५।१८ पच्चप्पिणामि उ १।१०६ पच्चप्पिणामो उ १।१२७ पच्चप्पिणाहि ज ३।१८,३१,५२,६१,६६,७६, ८३,६८,१२८,१४१,१५१,१५४,१६४,१७०, १८०;५।२८,६८ उ १।११५ पच्चप्पिणिज्जइ उ १।१२८ पच्चप्पिणेज्जा प ३६।६१

पच्चय (प्रत्यय) ज ३।१०६

पच्चामित्त (प्रत्यमित्र) ज २।२८

√पच्चाया (प्रति+आ+जन्) पच्चायांति ज ६।४ पच्चायाति ज २।६४ पच्चायाहिइ उ ५।४३

पच्चायात (प्रत्याजात) ज २।१३३

पच्चावड (प्रत्यावर्त) ज ५।३२

पच्चावरण्ह (प्रत्यपराण्ह) उ ३।५६,६४,६८,७१, ७४,७६

पच्चुट्ठित्तए (प्रत्युत्थातुम्) उ ३।५५

√पच्चुण्णम (प्रति+उत्+णम्) पच्चुण्णमइ ज ५।२१,५८

पच्चुण्णमित्ता (प्रत्युन्नम्य) ज ५।२१

√पच्चुत्तर (प्रति+उत्+तृ) पच्चुत्तरइ ज २।२८, ४१,४६ उ ३।५१

पच्चुत्तरित्ता (प्रत्युत्तीर्य) ज ३।२८ उ ३।५१

पच्चुप्पण्ण (प्रत्युत्पन्न) ज २।६०;३।२६,३६,४७, ५६,१३३,१३८,१४५;५।३,२२

√पच्चुवसम (प्रति+उप+शम्) पच्चुवसमंति ज ५।७

पच्चुवसमित्ता (प्रत्युपशम्य) ज ५।७

√पच्चुवेक्ख (प्रति+उप+ईक्ष्) पच्चुवेक्खइ ज ३।१८७

पच्चुवेक्खित्ता (प्रत्युप्रेक्ष्य) ज ३।१८७

पच्चोयड (दे०) ज ४।३,२५

पच्चोरुभित्ता (प्रत्यवरुह्य) ज ४।१३

√पच्चोरुह (प्रति+अव+रुह्) पच्चोरुहइ ज ३।६,२०,३३,५४,६३,७१,१४३,१५१,१६६, १८२,१८६,२०४,२१४;५।२१,४४ उ १।१६; ३।५१ पच्चोरुहंति ज ३।२१५;५।५,४५ पच्चोरुहति ज ३।२८,४१ पच्चोरुहेइ ज ३।१११;४।१८

पच्चोरुहित्ता (प्रत्यवरुह्य) ज २।६५ उ १।१६, ३।५१;४।१५

√पच्चोसक्क (प्रति+अव+ष्वष्क्) पच्चोसक्कइ ज ३।१२,८८,१५५ पच्चोसक्कति सू २०।२ पच्चोसक्कित्था ज ३।८६,१०२,१५६,१६२

पच्चोसक्कित्ता (प्रत्यवष्वष्क्य) ज ३।१२

पच्छंभाग (पश्चाद्भाग) सू १०।४,५

पच्छा (पश्चात्) प ३४।१,२;३६।८५,८८ सू १०।५ उ ३।७,५१,५३,५४,६१,१०७,११८,१३६; ४।२१

पच्छाकड (पश्चात्कृत) सू ८।१

पच्छिम (पश्चिम) ज २।५५,५७ से ५६,६४,१२६, १५५,१५६;३।१३५।१

पच्छिमकंठभाओवगता (पश्चिमकण्ठभागोपगता) सू २।४

पच्छिमदारिया (पश्चिमद्वारिका) सू १०।१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्छिमग (पश्चिमक) प १७।७०

पच्छिमड्ढ (पश्चिमार्ध) प १६।३०

पच्छिमद्ध (पश्चिमार्ध) प १६।३०;१७।१६५

√पच्छोल (प्र+क्षालय्) पछोलेंति ज ५।५७

पच्छोववण्णग (पश्चादुपपन्नक) प १७।४,६,१६,१७

पजंपिय (प्रजल्पित) उ ३।६८

पज्जत्त (पर्याप्त) प १।१७,२२,३१,४८।६०, १।४६ से ५१,६०,६६,७५,७६,८१;२।१६ से ३६,४१ से ४३,४८ से ६३; ३।१२,४३ से ४६,५३ से ६०,६४ से ७१,७५ से ८४,८८ से ६५,११०,१७४;४।५५,७८,८७,६०,६१, ६४,६७,१००,२३६,२४२,२४५,२४८,२५१, २५४,२५७,२६०,२६३,२६६,२६६,२७२, २७५,२७८,२८१,२८४,२८७,२६०,२६३, २६६,२६६;६।६८; १८।१।२;२१।६,१६,१८, २३ से ३४,३६,४०,४१,४४,४८,५०,५३,५५; २३।१६३,१६५

पज्जत्तग (पर्याप्तक) प १।२०,२३,२५,२६,२८, २६,४८ से ५१,५३,१३१ से १३३,१३५, १३७,१३८;२।१ से १६; ३।४२ से ४६,५२ से ६०,६३ से ७१,७४ से ८४,८७ से ८६,६१,६२, ६४,६५,११०,१४३,१४६,१८३; ६।७१,७२, ८३,६७,१०२,११३;११।३६,४१;१५।४६; २१।५,१०,१३,२०,४१,५२ से ५५,७२; ३४।१२; ३६।६२

पज्जत्तगणाम (पर्याप्तकनामन्) प २३।३८,१२०

पज्जत्तभाव (पर्याप्तभाव) उ ३।१५,८४,१२१, १६२;४।२४

पज्जत्तय (पर्याप्तक) प ३।७४,८७,८६,६०,६२, ६३,६५,१४६,१५२,१५५,१५८,१६१,१६४, १६७,१७०,१७३,१७४,१८३;४।३,६,६,१२, १५,१८,२१,२४,२७,३०,३३,३६,३६,४२, ४५,४८,५१,५४,५८,६१,६४,६७,६८,७१,७४, ७५,८१,८४,१०३,१०६,१०६,११२,११५, ११८,१२१,१२४,१२७,१३०,१३३,१३६, १३६,१४२,१४५,१४८,१५१,१५४,१५७, १६०,१६४,१६७,१७०,१७३,१७६,१७६, १८२,१८५,१८८,१६१,१६४,१६७,२००, २०३,२०६,२०६,२१२,२१५,२१८,२२१,२२४, २२७,२३०,२३३,२३६;६।७१,७२,७६,८३, ६७,६८,१०२;११।३१ से ३४;१८।६ से १२, १६ से २४,३१ से ३६,४०,४६ से ५१,५३, ५४,११३;२१।४०,४२,४४,४५;२३।१६६, १६६ से २०१; २८।१४२;३६।६२

पज्जत्ति (पर्याप्ति) प १।८४;२३।१६५,१६६, १६६ से २०१;२८।१०६।१,२८।१४२ उ ३।१५,८४,१२१,१६२;४।२४

पज्जव (पर्यव) प ३।१२४;५।१ से ७,६ से २०, २३,२४,२७ से ३४,३६ से ३८,४० से ४२, ४४,४५,४८,४६,५२,५३,५५,५६,५८,५६, ६२,६३,६७,६८,७०,७१,७३,७४,७७,७८, ८२,८३,८५,८८,८६,६२,६३,६६,६७,१०० से १०७,११० से ११२,११४,११५,११८, ११६,१२८ से १३०,१३३ १३७ से १३६, १४४,१४६,१४६,१५०,१५४,१५६,१६३, १६०,१६३,१६७,२००,२०३,२०५,२०७, २११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३० से २३२,२३७,२३६,२४१,२४२,२४४;१०।५ ज २।५१,५४,७१,१२१,१२६,१३०,१३८, १४०,१४६,१५४,१६०,१६३;७।२०६ उ ३।४७

पज्जवसाण (पर्यवसान) प ११।६६,६७; १४।१८; २८।१६,१७,६२,६३;३६।२० ज २।६४;५।५६; ७।२३,२५,२८,३०,४५ सू १।१४,१६,१७, २१,२४,२७;२।३;६।१;१०।१;११।२ से ६ उ ३।४०

पज्जवसित (पर्यवसित) सू ११।२ से ६

पज्जवसिय (पर्यवसित) प ११।३०

पज्जुण्ण (प्रद्युम्न) प ५।१०

पज्जुवट्ठिय (प्रत्युपस्थित) प १६।५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**पज्जुवास** (परि+उप+आस्) पज्जुवासइ ज २।६०,६३;५।४८,५०,५८,६५ उ १।१६; ३।१३; ४।१३;५।१६ पज्जुवासंति ज ३।२०५, २०६; ५।४६ उ ५।३६ पज्जुवासामि उ १।१७ पज्जुवासिज्जा उ ५।३६ पज्जुवासीहामि उ ३।२६ पज्जुवासेज्ज ज २।६७
पज्जुवासणया (पर्युपासन) उ १।१७
पज्जुवासणिज्ज (पर्युपासनीय) ज ७।१८५ सू १८।२३
पज्जुवासमाण (पर्युपासीन) ज १।६ चं १० उ १।४; ५।२२
पज्झंझमाण (प्रझञ्झमान) ज ५।३८
पट्ट (पट्ट) ज ३।२४,३५,७७,१०७,११७,१२४; ४।१३ सू २०।७ उ १।१३८
पट्टगार (पट्टकार) प १।६७
पट्टण (पत्तन) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८, ३१,३२,८१,१६७।२,१८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१
पट्टणपति (पत्तनपति) ज ३।८१
पट्टिया (पट्टिका) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८
पट्ठ (पृष्ट) ज २।१५;३।१०६।११७ उ १।६७
पट्ठविय (प्रस्थापित) प २०।३६
पट्ठित (प्रस्थित) प १६।५२
पट्ठिय (प्रस्थित) प १६।५२
पड (पट) ज ३।६,८१,१२५,१२६,२२२
√**पड** (पत्) पडइ उ १।५१
पडमंडव (पटमण्डप) ज ३।८१
पडल (पटल) ज २।१३१; ३।११; ४।३,२५
पडलग (पटलक) ज ५।५५
पडलहत्थग (पटलहस्तक) ज ३।११
पडसाडय (पटशाटक) ज २।६६
पडह (पटह) ३३।२२ ज३।१२,७८,१८०,२०६
पडाग (पताका) प २।४१,४८ ज १।३७ २।१५; ३।३,३१
पडागसंठिय (पताकासंस्थित) सू १०।४२
पडागा (पताका) प १।५६,७१;१५।२६;२१।२६, ५७ ज ३।३५,१०८ से १११,१७८; ४।४६; ५।४३; ७।१३३।२,१८४ उ १।२२,१४०
पडागाइपडागा (पताकातिपताका) ज ३।७,१८४; ४।३०
पडागातिपडागा (पताकातिपताका) प १।५६
पडिंसुया (प्रतिश्रुत्) ज २।६५
√**पडिकप्प** (प्रति+कृप्) पडिकप्पेइ ज ३।१५, २१,३३ पडिकप्पेह ज ३।२१,३४,७७,६१, १७३,१७५,१६६उ १।१२३
पडिक्कंत (प्रतिक्रान्त) उ २।१२; ३।१५०,१६१; ५।२८;३६,४१
√**पडिक्कम** (प्रति+क्रम्) पडिक्कमेहि उ ३।१११५
पडिगय (प्रतिगत) ज १।४;३।१२५;५।७४ चं ६ सू १।४ उ १।२,२४;३।७,२१,२५,४५,६२, ६६,६६,७२,८१,१४३,१५६;४।५;५।२०
√**पडिचर** (प्रति+चर्) पडिचरइ सू १।१८ पडिचरंति सू १।१८ पडिचरति सू १३।१२
√**पडिच्छ** (प्रति+इष्) पडिच्छइ ज ३।४०,४८, ५७,६५,७३,१३४,१३६,१४६,१५१,१५२ पडिच्छंति ज ५।१५ पडिच्छंतु ज ३।२६,३६, ४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५ उ ३।११२; ४।१६ पडिच्छाहि ज ३।७६,१२८,१५१
पडिच्छण्ण (प्रतिच्छन्न) ज २।८,६,१३
पडिच्छमाण (प्रतीच्छत्) ज २।६५;३।१८,३१, १८०,१८६,२०४
पडिच्छायण (प्रतिच्छादन) ज ४।१३ सू २०।७
पडिच्छित्ता (प्रतीष्य) ज ३।७६ उ १।३३
पडिच्छिय (प्रतीष्ट) उ ३।१३८
पडिजागरमाण (प्रतिजाग्रत्) ज ३।२०,३३,८४, १८२,१६० उ १।६५ १०५
पडिण (प्रतीचीन) सू १।१६
पडिणिकास (प्रतिनिकाश) ज ३।६५,१५६
√**पडिणिक्खम** (प्रति+निर्+क्रम्) पडिणिक्खमइ ज ३।५,१२,१४,१७,२१,२८,३०,३४,४१,४३, ४६,५१,५८,६०,६६,६८,७४,७७,८४,८५, १३६,१३६,१४०,१४७,१४६,१६८,१७२,

१७७,१८७,१८८,१९९,२१४,२१८,२१९,
२२२,२२४;५।२३ पडिणिक्खमंति ज ३।८,
१५३;५।७३ पडिणिक्खमेंति ज ३।१३
पडिणिक्खमित्ता (प्रतिनिष्क्रम्य) ज ३।५
पडिणिक्खमेत्ता (प्रतिनिष्क्रम्य) ज ३।१३
पडिणियत (प्रतिनियत) ज ३।८१
पडिणिव्वुड (प्रतिनिर्वृत) ज २।६८
पडिणीय (प्रत्यनीक) ज २।२८ सू २०।९।२
पडिदिसि (प्रतिदिश्) सू २०।२
पडिदुवार (प्रतिद्वार) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,
१८३
√**पडिनिक्खम** (प्रति+निर्+क्रम्) पडिनिक्खमइ
उ १।४२; ३।४६;४।१२ पडिनिक्खमंति
उ १।४५;३।१४५ पडिनिक्खमति उ ३।२९
पडिनिक्खमह उ १।१२१
पडिनिक्खमित्ता (प्रतिनिष्क्रम्य) उ १।४२;३।२९;
४।१२
पडिनिग्गच्छित्ता (प्रतिनिर्गत्य) उ १।१२४;५।१९
√**पडिनियत्त** (प्रति+नि+वृत्) पडिनियत्तति
प ३६।८८
पडिनियत्तित्ता (प्रतिनिवृत्य) प ३६।८८
पडिपाति (प्रतिपातिन्) प २३।१३४,१३५,१३८,
१४०,१४२,१४३,१५१ से १५५,१५७,१६०,
१६१,१६४,१६६ से १६८,१७१ से १७३
पडिपाद (प्रतिपाद) ज ४।१३
पडिपुच्छण (प्रतिप्रच्छन) उ १।१७
पडिपुच्छणिज्ज (प्रतिप्रच्छनीय) उ ३।११
पडिपुण्ण (प्रतिपूर्ण) प २१।७४ ज २।१५,७१,
८५; ३।११७,१६७।१२,२०९,२२३,२२५;
५।५६,७।१७८
पडिपुण्णचंद (प्रतिपूर्णचन्द्र) प २।५४,६०;३६।८१
ज १।७ सू १।१४
पडिबंध (प्रतिबन्ध) ज २।६९ उ ३।१०३,११२,
१३६,१४८;४।११
पडिबुद्ध (प्रतिबुद्ध) उ १।३३; २।८; ५।१३
पडिबोहण (प्रतिबोधन) ज ५।२६
पडिमंजरी (प्रतिमंजरी) ज ७।२१३
पडिमोयण (प्रतिमोचन) ज २।१२
पडिय (पतित) उ ३।१३१,१३४;४।९
पडियाइक्खिय (प्रत्याख्यात) ज ३।२२४
√**पडियागच्छ** (प्रति+आ+गम्) पडियागच्छइ
सू २।१
पडियागच्छित्ता (प्रत्यागत्य) सू २।१
पडिरह (प्रतिरथ) उ १।२२,१४०
पडिरूव (प्रतिरूप) प २।३० से ३२,३४,३५,३७,
३८,४१ से ४३,४५;४५।१,२,४६,४८ से ५२,
५८ से ६१,६३,६४ ज १।८ से १०,२३,२४,
२६,३१,३५,४२,५१;२।१२,१४,१५; ३।१,
१९५;४।१,३,९,१३,२५,२७ से ३०,३३,४९,
१४६,१७८,२०३;५।३१,३३,३४,६२ सू १।१;
१८।८उ ५।४ से ६
पडिरूवग (प्रतिरूपक) ज ३।१९५;४।४,५,२६,
२७,८९,११८,१४४,२४६;५।३०,३१,४६,६७
पडिरूवय (प्रतिरूपक) ज ३।१९५,२०४ से २०६,
२१४,२१६;५।४१,४२,४४,४५
पडिरूविय (प्रतिरूपित) ज ३।१२०
√**पडिलाभ** (प्रति+लाभय्) पडिलाभेइ उ ३।१३४
पडिलाभेत्ता (प्रतिलाभ्य) उ ३।१०१
√**पडिलेह** (प्रति+लिख्) पडिलेहेइ ज ३।२२४
पडिलेहित्ता (प्रतिलिख्य) ज ३।२२४
पडिलोम (प्रतिलोम) ज २।६,६७
पडिलोमच्छाया (प्रतिलोमच्छाया) सू ९।४
पडिवक्ख (प्रतिपक्ष) प ५।२२६
√**पडिवज्ज** (प्रति+पद्) पडिवज्जइ प ३६।९२
उ ३।१०४;५।२० पडिवज्जति सू ८।१
पडिवज्जाहि उ ३।११५ पडिवज्जिसु
ज २।५१,५४,१२१ पडिवज्जिस्सइ
ज २।१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,
१६३;३।१३४
पडिवज्जित्तए (प्रतिप्रत्तुम्) प २०।१७,१८,३४
उ ३।१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिवज्जित्ता (प्रतिपद्य) ३।४५,१०४,१४३;५।२०

पडिवडितसम्मद्दिट्ठि (प्रतिपतितसम्यक्दृष्टि) प ३।१८२

पडिवण्ण (प्रतिपन्न) प ३६।६२ ज ३।१४,२६, ३०,३६,४३,४७,५१,५६,६०,६४,६८,७२, ११३,१३०,१३६,१३८,१४०,१४५,१४६, १७२ सू ८।१ उ ३।६६,७६

पडिवत्ति (प्रतिपत्ति) चं ६ सू १।७।३,१।८।१,२, ३,१।२० से २३,२५,२६;२।१ से ३;३।१;४।२, ३;५।१;६।१;७।१;८।१;६।१ से ३;१०।१, १३१;१७।१;१८।१;१९।१;२०।१,२ उ १।११६

पडिवया (प्रतिपत्) ज २।१३८

पडिवा (प्रतिपत्) ज ७।१२५

पडिवाइ (प्रतिपातिन्) प ३३।१।१,३३।३५

पडिवाति (प्रतिपातिन्) प १।११४

पडिवादिवस (प्रतिपत्दिवस) ज ७।११६ सू १०।८५

पडिवाराइ (प्रतिपत्रात्रि) ज ७।११६

पडिवाराति (प्रतिपत्रात्रि) सू १०।८७

पडिवालेमाण (प्रतिपालयत्) उ १।१३३

√पडिविसज्ज (प्रति+वि+सर्जय्) पडिविसज्जइ उ ३।१०४ पडिविसज्जेइ ज ३।६,२,७,४०, ४८,५७,६५,७३,१२७,१३४,१३६,१४६,१५२, १७१,१८६,२१६ उ १।१०६;३।१३७

पडिविसज्जिय (प्रतिविसर्जित) ज ३।१७१ उ १।३३,११०

पडिविसज्जेत्ता (प्रतिविसर्ज्य) ज ३।६

पडिसंखेवेमाण (प्रतिसंक्षिपमाण) ज ५।४४

√पडिसंवेद (प्रति+सं+वेद्) पडिसंवेदेति प १५।३८

पडिसत्तु (प्रतिशत्रु) ज ३।१३५।१

√पडिसाहर (प्रति+सं+हृ) पडिसाहरइ ज ५।६७ पडिसाहरंति ज ३।१२५ पडिसाहरति प ३६।८५

पडिसाहरित्ता (प्रतिसंहृत्य) प ३६।८५ ज ३।१२५

पडिसाहरेमाण (प्रतिसंहरत्) ज ५।४४

√पडिसुण (प्रति+श्रु) पडिसुणंति ज ५।७३ पडिसुणेइ ज ३।१६,५३,६२,७०,७७,८४, १००,१४२,१६५,१८१;५।२३,६६ उ १।५५; ३।१४० पडिसुणेंति ज ३।८,१३,१०७,११३ १८६,१६२ उ १।४५ पडिसुणेमि उ १।८३

पडिसुणेत्ता (प्रतिश्रुत्य) ज ३।८ उ १।४५

पडिसेविय (प्रतिसेवित) ज २।७१

√पडिसेह (प्रतिषेध) प ६।७४ से ७८,८०,११०; २०।२५

√पडिसेह (प्रति+सेध्) पडिसेहेइ ज ३।११० पडिसेहेंति ज ३।१०८

पडिसेहित्तए (प्रतिषेद्धुम्) ज ३।११५,१२४,१२५

पडिसेहित्ता (प्रतिषिध्य) उ १।११६

पडिसेहिय (प्रतिषिद्ध) ज ३।६५,१०६,१११,१५६ उ १।२७

पडिसेहेयव्व (प्रतिषेधव्य) प ६।६८; १०।६ से ६

पडिस्सुइ (प्रतिश्रुति) ज २।५६,६०

√पडिहण (प्रति+हन्) पडिहणंति सू ५।१

पडिहत (प्रतिहत) प २।६४।२,३ ज ४।२५

पडिहता (प्रतिहता) सू ६।४

पडिहय (प्रतिहत) चं २ सू १।६;५।१

पडीण (प्रतीचीन) प २।१०,५० से ६२ ज १।१८, २०,२४,३।१;४।१,३,८६,८८,६८,१०३,१०८, १४१,१६२,१६७,१६६,१७८,१८५,१८७, १६१,२००,२०३,२४५,२५१;७।१०१ सू १।१६;२।१

पडीणउदीण (प्रतीचीनोदीचीन) सू ८।१

पडीणवाय (प्रतीचीनवात) प १।२६

पडीणा (प्रतीची) ज १।१८,२०,२३,२५, २८,३२,४८;३।१;४।१,३,५५,६२,८१,८६,८८, ६८,१०३,१०८,१७२,२०५,२१४,२४६, २५२,२६२,३६८

पडु (पटु) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५;३।८२, १८५,१८७,२०६,२१८;५।१,१६;७।५१, ५८,१८४ सू १८।२३;१६;१६।२३,२६

पडुच्च (प्रतीत्य) प १।७४;२।७;६।६३;८।४,६,८,१०;११।४६,५३,५५,५७,५६;१४।५;१८।१;२१।६५;२३।६३,१७६;२८।६,६,२०,२६,३१,५२,५५,६८ से १०१ ज ४।५४ सू ६।२

पडुच्चसच्च (प्रतीत्यसत्य) प ११।३३,११।३३।१

पडुप्पण्ण (प्रत्युत्पन्न) प १२।१२,३२,३८ ज ७।३६,५२ सू १।२७

पडुप्पण्णभाव (प्रत्युत्पन्नभाव) प २८।६८ से १०१

पडुप्पण्णवयण (प्रत्युत्पन्नवचन) प ११।८६

पडेंसुया (प्रतिश्रुत्) ज ५।२५

पडोयार (प्रत्यवतार) प ३०।२५,२६ ज १।७,२१,२२,२६,२७,२६,३३,४६,५०;२।७,१४,१५,२०,५२,५६,५८,१२२,१२३,१२७,१२८,१३१,१३२,१३३,१३६,१४७,१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१५६,१६४;७।५६,८२,६६ से १०१,१०६,१३०,१३१

पडोल (पटोल) प १।३७।२,१।४०।१,१।४८।४८

पढम (प्रथम) प १।१०३,१०६,१०७,१०६,११०,११३,११४,११६,११६,१२०,१२२,१२३;२।३१;६।८०।१;१०।१४।१ से ३;१२।१२,१६,३१,३२;२२।३३,४१;३६।८५,८७,६२ ज २।५५,५६,६३,६४,१३८,१५५ से १५८;३।३०,१३५,२१७;४।१४२।३,१५३,१५४,१८०;७।१८,२०,२३,२६,२८,६७,१०१,१०६,१५६,१६०,१६४ चं ३।३ सू १।७,१३,१४,१६,२१,२४,२७;२।३;६।१;८।१;१०।६३,६७,७७,१२७,१३८,१३६,१४३,१४४,१४८,१५०,१५२;११।२,३;१२।२,१६,२०,२४;१३।१,७,६,१०;१४।३,७ उ १।६ से ८,६३,१४२,१४३,१४८;२।१,३,१४,१५,२२;३।३,१६,२० ५०,५१;४।३,२७;५।३,४४

पढमणरीसर (प्रथमनरेश्वर) ज ३।१२६।३

पढमसा (प्रथम) प १।४८।५१

पढमया (प्रथम) ज ३।२११;४।१८०,५।५८ सू १०।५

पण (पञ्चन्) सू १०।५७

पणगजीव (पनकजीव) प ३६।६२

पणगमत्तिया (पनकमृत्तिका) प १।१६

√पणच्च (प्र+नृत्) पणच्चंति ज ५।५७

पणट्ठ (प्रनष्ट) प १।४८।३६

पणतालीस (पञ्चचत्वारिंशत्) प १।८४ सू १६।२०

पणतीस (पञ्चत्रिंशत्) सू १।२०

पणतीसतिभाग (पञ्चत्रिंशत्भाग) प २३।८६,८८,६५ से ६८;११८,१५१

पणपण्ण (दे० पञ्चपञ्चाशत्) प ४।२८ ज ४।१७२ सू १२।७

पणय (दे०) प १।४६,१।४८।१,१।६५ ज २।१३३

पणय (प्रणत) ज ३।८१,१०६

पणयबहुल ('पनक'[1]बहुल) ज २।१३२

पणयाल (पञ्चचत्वारिंशत्) ज ७।१३४ सू १।२१

पणयालीस (पञ्चचत्वारिंशत्) ज १।६ सू ४।३ उ ५।२८

पणव (प्रणव) ज ३।१२,७८,१८०,२०६;५।५

पणवण्ण (पञ्चपञ्चाशत्) ज ४।५५

पणवण्णिय (पणपन्निक) प २।४१

पणवन्निय (पणपन्निक) प २।४७।१

पणवीस (पञ्चविंशति) प २।२२ ज १।२३ सू १।२१

पणवीसतिविध (पञ्चविंशतिविध) सू ६।४

पणाम (प्रणाम) ज ३।५,६,१२,८८

√पणाव (प्र+नामय्) पणावेइ उ १।११६ पणावेहि उ १।११५

पणावेत्ता (प्रणाम्य) उ १।११५

पणासित (प्रणाशित) सू २०।७

पणिधाय (प्रणिधाय) प १७।१११ सू ६।१

पणिय (पणित) ज २।२३

पणिवइय (प्रणिपतित) ज ३।१२५

पणिवय (प्र+नि+पत्) पणिवयामि ज ३।२४।१,१३।१

---

१. पनकः प्रतलः कर्दमः—टीका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणिहाय (प्रणिधाय) प १७।१०६ से १११ ज ४।५४,८०; ७।२७,३० सू १।१४,२४

पणुवीस (पञ्चविंशति) प ४।२७३ उ ३।७

पणुवीसइम (पंचविंशतितम) प १०।१४।३

पणट्ठ (प्रणष्ट) ज ३।३

पण्णट्ठ (पञ्चषष्टि) ज ७।६५,६६

पण्णट्ठि (पञ्चषष्टि) ज ४।१६५ सू १०।१५२

पण्णत्त (प्रज्ञप्त) प १।१ ज १।७ सू १।१४ उ १।४

पण्णत्तर (पञ्चसप्तति) ज ४।४५

पण्णत्तरि (पञ्चसप्तति) ज ४।१४२

पण्णत्ति (प्रज्ञप्ति) सू २०।९।१ उ ३।१६०

पण्णर (पञ्चदशन्) प १०।१४।४,५

पण्णरस (पञ्चदशन्) प १।७४ ज १।२३ सू १।१३

पण्णरसइ (पञ्चदशन्) सू १९।२२।१९

पण्णरसति (पञ्चदशन्) सू २०।३

पण्णरसम (पञ्चदश) ज ७।९७ सू १०।७७; १२।६; १३।१,१०९; १४।३,७; १९।२२, २०।३

पण्णरसविह (पञ्चदशविध) प १।८८; १६।१,२; ८,१८,१९

पण्णरसी (पञ्चदशी) सू १०।९०; १३।१; १४।३,७

पण्णरसीदिवस (पञ्चदशीदिवस) ज ७।११६ सू १०।८५

पण्णरसीराइ (पञ्चदशीरात्रि) ज ७।११९

पण्णरसीराति (पञ्चदशीरात्रि) सू १०।८७

√पण्णव (प्र + ज्ञापय्) पण्णवेइ ज ७।२१४ उ १।९८ पण्णवेहिंति सू १९।२२।३

पण्णवणा (प्रज्ञापना) प १।१।२,४,४६,१३८; २८।९८ से १०१ उ ३।१०९

पण्णवणी (प्रज्ञापनी) प ११।४ से १०,२६ से २९, ३७।१,८७

पण्णवित्तए (प्रज्ञप्तुम्) उ ३।१०९

पण्णवीस (पञ्चविंशति) प २।२७।४

पण्णा (दे०) प २।४०।३ ज ५।४९

√पण्णा (प्र + ज्ञा) पण्णायए ज ७।१६९

पण्णावग (प्रज्ञापक) ज ३।९५,१५९

पण्णास (पञ्चाशत्) प २।५५ ज १।२३ सू १२।३, ८ उ ५।१३

पण्हय (प्रस्नत) उ ३।९८

√पतणतण (प्र + तनतनाय्) पतणतणाइस्सइ ज २।१४१,१४५ पतणतणायंति ज ३।११५; ५।७

पतणतणाइत्ता (प्रतनतनाय्य) ज २।१४१

पतर (प्रतर) प १२।१२,१६

√पतव (प्र + तप्) पतवंति ज ५।५७

√पताव (प्र + तापय्) पतावेंति सू ९।१

पतिट्ठिय (प्रतिष्ठित) प १४।३

पतिसम (प्रतिसम) ज ३।९२,११९

पत्त (प्राप्त) प २।६४।२०; ६।९८; ८१।७२; २३।१३ से २३; ३६।६४।१ ज २।८५; ३।२६,३६,४७, १२२,१२६,१३३; ४।७ उ ३।८५,९८,१०१, १२२,१५०,१६१; ४।२५; ५।२३,२८,३१,३६, ४१

पत्त (पत्र) प १।३५,३६,४७।१,१।४८।६,१६,२९, ३९,४५,४७,४९,५१,६३ ज २।८,९,१२,१५, ६८,१४५,१४६; ३।११।३,३।१२,८८,९८, १०९; ४।३,२५; ५।५,५८; ७।१७८ उ ३।५०, ५१,५५

पत्त (प्राप्त, पात्र) उ १।१२८

पत्तउर (पत्तूर) प १।३७।३

पत्तकयवर (पत्रकचवर) ज २।३९

पत्तच्छण्ण (पत्राच्छन्न) ज २।१२

पत्तट्ठ (दे०) ज ५।५

पत्तपुड (पत्रपुट) ज ४।१०७

पत्तल (पत्रल) ज २।१५; ३।१०९; ७।१७८ चं १।१

पत्त (वासा) (पत्रवर्षा) ज ५।५७

पत्तविच्छुय (पत्रवृश्चिक) प १।५१

पत्तामोड (पत्रामोट) उ ३।५१

पत्तासव (पत्रासव) प १७।१३४

पत्ताहार (पत्राहार) प १।५० उ ३।५०

पत्तिय (पत्रित) उ ३।४९

√**पत्तिय** (प्रति +इ) पत्तिएज्जा प २०।१७, १८,३४ पत्तियामि उ ३।१०३

पत्तेय (प्रत्येक) प १।४८।४७,४७,४९,६०;२।४८; ६।१८;९।४;१०।१४;१६।१५ ज १।४६; ३।२०९;४।५,२७,११०,११४,११६,११८, १२२,१२५,१२८,१३९;५।१ से ३,५,७,३१, ४२,५९ उ १।१२१,१२२,१२९

पत्तेयजिय (प्रत्येकजीव) प १।४८।९

पत्तेयजीविय (प्रत्येकजीवित) प १।३५,३६

पत्तेयबुद्धसिद्ध (प्रत्येकबुद्धसिद्ध) प १।१२

पत्तेयसरीर (प्रत्येकशरीर) प १।३२,३३,४७; ४७।२,३; ३।७२ से ७४,८१,८४ से ८७,९५, १८३;१८।४४,५२

पत्तेयसरीरणाम (प्रत्येकशरीरनामन्) प २३।३८, १२१

पत्थ (पथ्य) ज ४।३,२५

पत्थड (प्रस्तट) प २।१,४,१०,१३,४८,६० से ६२ ज ४।४९

पत्थाइत्तए (प्रस्थातुम्) उ ३।५५

पत्थाण (प्रस्थान) उ ३।५१,५३,५५

पत्थिज्जमाण (प्रार्थ्यमान) ज २।६५; ३।१८६,२०४

पत्थिय (प्रार्थित) ज ३।२६,४७,५६,८७,१२२, १२३,१३३,१४५,१८८;५।२२ उ १।१५,५१, ५४;६५,७६,७९,९९,१०५;३।२९,४८,५०, ५५,९८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

पत्थिय (प्रस्थित) उ ३।५१,५३,५५

पत्थिव (पार्थिव) ज ३।३

पद (पद) प १।१०१।७;१२।३२;१८।१।२; २८।१४५;३६।७२ ज ३।३२ सू १०।६३ से ७४

पदाहिण (प्रदक्षिण) सू १९।२२।१०,११; १९।२३

√**पदीस** (प्र+दृश्) पदीसई प १।४८।१० से १७,१९ से २३ पदीसए प १।४८।११ से १३ पदीसति प १।४८।२५ से २९ पदीसती प १।४८।१८,२४

पदेस (प्रदेश) प १।३,४;२।६४।१,११;३।१२४, १८०,१८२;५।१२४,१२५,१३१,१६१,१७७, १७९,१९३,२१६,२१८;१०।२,४,५,१८,१९, २१ से २३,२५,२६;१२।३०,५३,५७; १७।११४।१;२२।५८,७६;२८।५,५१ ज २।६५; ४।१४३ सू १९।२६

पदेसघण (प्रदेशघन) प २।६४।५

पदेसट्ठता (प्रदेशार्थ) प ३।११६ से १२०,१२२

पदेसट्ठया (प्रदेशार्थ) प ३।११५,११६,१२०,१२२, १७९ से १८२;५।५,७,१०,१४,१६,१८,२०,३०, ३२,३४,३७,४१,४५,४९,५३,५६,५९,६३,७१, ७४,८३,८६,९३,९७,१०१,१०४,१०७,१११, ११९,१२९,१३१,१३४,१४५,१६९,१७२, १७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१९०,२०३, २०७,२११,२२४,२२८,२३२,२३४,२३७, २३९;१०।३,४,५,२६,२७;१७।१४४,१४६; २१।१०४

पदेसणामणिहत्ताउय (प्रदेशनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८

पदेसणामनिहत्ताउय (प्रदेशनामनिधत्तायुष्क) प ६।११९,१२२

√**पधार** (प्र+धृ) पधारेइ ज ५।७२,७३ पधारेति प २२।४

पधोत (प्रधौत) ज ३।१०९

पन्नरस (पञ्चदशन्) प १।८४

पन्नरसविह (पञ्चदशविध) प १।१२; १६।३६

पप्प (प्राप्य) प १६।४९; १७।११५ से १२२, १४८,१५४; २३।१३ से २३; २८।१०५; ३४।१९

पप्पडमोदय (पर्पटमोदक) प १७।१३५

पप्पडमोयय (पर्पटमोदक) ज २।१७

पप्फुल (प्रफुल्ल) ज ४।३,२५

पब्भट्ठ (प्रभ्रष्ट) ज ३।१२,८८;५।७,५८

पब्भार (प्राग्भार) प २।१ ज ३।८८,१०९ उ १।२७,१४०;५।५

पभंकर (प्रभङ्कर) सू २०।८,२०।८।७

पभंकरा (प्रभङ्करा) ज ४।२०२;७।१८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सू १८।२१,२४;२०।६

पभंजण (प्रभञ्जन) प २।४०।७

पभणिय (प्रभणित) उ ३।६८

पभव (प्रभव) प ११।३०।२

√पभव (प्र+भू) पभवति प ११।३०।१

पभा (प्रभा) प २।३०,३१,४०।१०;२।४१,४६ ज ३।३५;२११;४।२२,३४,६०,२७२;५।१८, ३२

पभाव (प्रभाव) ज ३।६५,१५६,२२१

पभावई (प्रभावती) उ १।३३

पभावणा (प्रभावना) प ११।०१।१४

पभास (प्रभास) ज ४।२७२;६।१२ से १४

√पभास (प्र+भाष्) पभासइ ज ४।२११

√पभास (प्र+भास्) पभासंति ज ७।१ पभासिंसु ज ७।१ सू १६।१६ पभासिस्संति ज ७।१ सू १६।१ पभासेंति ज ७।५१,५८ सू १६।१ पभासेंसु सू १६।१ पभासेति सू १६।१

पभासंत (प्रभासमान) सू १६।१५।२

पभासतित्थ (प्रभासतीर्थ) ज ३।४३,४४,४६

पभासतित्थाधिपति (प्रभासतीर्थाधिपति) ज ३।४६

पभासतित्थाहिवइ (प्रभासतीर्थाधिपति) ज ३।४७

पभासतित्थकुमार (प्रभासतीर्थकुमार) ज ३।४७ से ४६,५१

पभासेमाण (प्रभासमान) प २।३० से ३३,३५,३६, ४१,४८ से ५२,५८

पभिइ (प्रभृति) ज २।१४६;३।८६,१७८,१८६, १८८,१८६,२००,२१०,२१६,२१६,२२१ उ ३।१०१;५।१०,१७,१६,३६

पभिति (प्रभृति) ज ३।१० सू १६।२२।२५

पभु (प्रभु) ज ५।५,४६;७।१८३,१८४,१८५ सू १८ से २३ उ ५।३२

पभूय (प्रभूत) ज ३।८१,१०३,१६७।१४;५।७

√पमज्ज (प्र+मृज्) पमज्जइ ज ३।१२,२०,३३, ५४,६३,७१,८८,१३७,१४३,१६६

पमज्जित्ता (प्रमृज्य) ज ३।१२

पमत्त (प्रमत्त) प १७।३३;२१।७२ ज ५।२६

पमत्तसंजत (प्रमत्तसंयत) प ६।६८

पमत्तसंजय (प्रमत्तसंयत) प ६।६८;१७।२५;२२।६१

पमद्द (प्रमर्द) ज ७।१२६ सू १०।७५ उ १।१३६

पमद्दण (प्रमर्दन) ज ५।५

पमाण (प्रमाण) प १।१०१।६;१२।१२,३८; १५।१०,२३;२१।१।१,२१।८४,८६,८७,६० से ६३;३०।२५,२६;३३।१३;३६।५६,६६,७०, ७४ ज १।३२,३५,४१;२।४;६।१,१५,१३३, १३८,१४१ से १४५;३।१०६,११७,१३८, १६७।३;४।१,६,२५,६४,७०,७६,८६,६०, १०६,१२३,१३३,१३६,१४०।२,१३४ से १६०, १६२ से १६५,१७४,१७५,१६४,२०२,२२२।१, २३५,२३६,२४६,२५०,२५१;५।४६,४६; ७।३५,१६८।२,१७८ सू १।२७;२।३;४।६ उ १।१३८;३।१११

पमाणभूय (प्रमाणभूत) उ ३।११

पमाणमित्त (प्रमाणमात्र) ज ३।६५,११५,११६, १५६;५।३८

पमाणमेत्त (प्रमाणमात्र) ज १।४०;२।१३३,१३४, १४१ से १४५;३।८६,८८,६२,११६,११६, १२२,१२४;४।१०;५।७,५८;६।७

पमाणसंवच्छर (प्रमाणसंवत्सर) ज ७।१०३,१११ सू १०।१२५,१२८

पमुइय (प्रमुदित) प २।४१ ज १।२६;२।६५;३।१, १२,२८,४१,४६,५८,६६,७४,१४७,१६८, २१२,२१३ सू ११।१

पमुह (प्रमुख) ज ७।१७८ सू २०।८;२०।८।५

पमोय (प्रमोद) ज ३।२१२,२१३,२१६

पम्ह (पक्ष्मन्) प २।४६;४।२०६,२१०,२१२; २१२।१

पम्ह (पद्म) ज १।५,२५१

पम्हकूड (पक्ष्मकूट) ज ४।१८४ से १८७,२१०

पम्हगंध (पद्मगंध) ज २।५०,१६४;४।२०६,२०५

पम्हगावई (पक्ष्मावती) ज ४।२१२,२१२।१

पम्हल (पक्ष्मल) ज ३।६,२११,२१२;५।५८

पम्हलेस (पद्मलेश्य) प १७।१६८

पम्हलेसट्ठाण (पद्मलेश्यास्थान) प १७।१४६

पम्हलेसा (पद्मलेश्या) प १७।१२१

पम्हलेस्स (पद्मलेश्य) प ३।६६;१३।२०;१६।४६;
१७।३५,५६,६४,६६ से ६८,७१.७३,७६ से
८१,८३,८४,११२,१६७,१८।७३;२८।१२३

पम्हलेस्सट्ठाण (पद्मलेश्यास्थान) प १७।१४६

पम्हलेस्सा (पद्मलेश्या) प १६।४६;१७।३५,३६,
५४,११७,११८,१२१,१२५,१२७,१२६,१३४,
१३७,१४४,१५३ से १५५

पम्हलेस्सापरिणाम (पद्मलेश्यापरिणाम) प १३।६

पम्हावई (पक्ष्मावती) ज ४।२०२।२,२१२

पय (पद) प १।१०१।७;२२।४५;२३।१४६;
२८।१।२;२८।१२३;३६।६६,७२ ज ३।६,१२,
८८,१५५,१६७।७;५।२१,५८;७।१५६ से
१६७ उ ३।१०१,१३४

पयंग (पतङ्ग) प १।५१।१

पयग (पतग, पदक) ज २।४१,२।४७।१

पयडि (प्रकृति) प २३।१।१

पयणु (प्रतनु) ज २।१६

पयत (पतग,पदग) प २।४७।३

पयत (प्रयत) ज ३।१२ ८८;५।५८

पयत्त (प्रवृत्त) ज ५।२४,५७

पययपइ (पतगपति,पदगपति) प २।४७।३

पयर (प्रतर) प १।४८।६०;१२।८,२७,३६,३७

पयरग (प्रतरक) ज ३।१०६;५।३८,६७

पयरय (प्रतरक) प ११।७५

पयराभेद (प्रतरभेद) प ११।७५,७६

पयराभेय (प्रतरभेद) प ११।७३

पयला (प्रचला) प २३।१४

पयलाइय (दे०) प १।७६

पयलापयला (प्रचलाप्रचला) प २३।१४

पयलिय (प्रचलित,प्रगलित) ज ३।६;५।२१

पयल्ल (प्रकल्प) सू २०।८,२०।८।५

पया (प्रजा) ज २।६४;३।१८५,२०६

√पया (प्र+जन्) पयाएज्जा उ ३।१०१ पयामि
उ १।७८;३।६८ पयाहिइ उ ३।१३६

पयात (प्रयात) ज ३।१४,१५,३१,४३,४४,५१,
५२,६०,६१,६८,६६,१३०,१३१,१३६,
१३७,१४०,१४१,१४६,१५०,१७२

पयाय (प्रयात) ज ३।३०,१४६,१६७,१७२

पयाय (प्रजात) उ १।५३;३।१३४

पयायमाण (प्रजनयत्) उ ३।१२६

पयार (प्रचार) ज २।१३१

पयालवण[1] (प्रगालवन) ज २।६

पयावइ (प्रजापति) ज ७।१३०,१८६।३

पयावइदेवया (प्रजापतिदेवता) सू १०।८३

पयाहिण (प्रदक्षिण) ज १।६;२।६०;३।५;५।५,
४४,४६ उ १।१६,२१;३।११३;४।१३

पयाहिणावत्त (प्रदक्षिणावर्त) ज २।१५;७।५५

पयोहर (पयोधर) ज २।१५

पर (पर) प १।१०१।४;२।६३;३।३६;६।८०।२;
१४।३;२२।४ से ६;२३।१३ से २३ सू १।१६;
६।१;१३।१२, १४ से १७

पर (परं) प ११।८६

परंगण्य (पर्यङ्गत्) उ ३।१३०

परंपर (परम्पर) प २०।६ से ८ ज ७।४२

परंपरगत (परम्परगत) प २।६४।२१

परंपरसिद्ध (परम्परसिद्ध) प १।११,१३;१६।३५,
३७

परंपरा (परम्परा) उ १।१११,११२

परंपराघाय (परम्पराघात) प ३६।६४,७८

परंपरोगाढ (परम्परावगाढ) प ११।६३

परंपरोववण्णग (परम्परोपपन्नक) प १५।४६;
३४।१२

परक्कम (पराक्रम) प २३।१६,२० ज २।५१,५४,
१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,

१. पियालवण इति कल्पनापि जायते।

१६०,१६३; ३।३,७७,१०६,१११,१२६,१२६, १८८; ७।१७८ सू २०।१
परक्कममाण (पराक्रममाण) उ ३।१३०
परघर (परगृह) उ ५।४३
परट्ठाण (परस्थान) प ६।६३;१५।१२१;३६।२०, २४,२७,४७
परपरिवाय (परपरिवाद) प २२।२०
परपुट्ठ (परपुष्ट) प १७।१२३
परभवियाउय (परभविकायुष्क) प ६।११,११४ से ११६
परम (परम) प २।२० से २७; २३।१६६ ज २।४, ६६,७१,१३३; ३।३,५,६,८,१५,१६,३१,५३, ६२,७०,७७,८१,८२,८४,६१,१००,११४, १४२,१६५,१७३,१८१,१८६,१६६,२१३; ५।२१,२७ उ १।२१,४२; ३।५१,५६,१३०, १३१,१३४,१४४
परमत्थ (परमार्थ) प १।१०१।१३
परमाणु (परमाणु) प १०।१४।१ ज २।६।३
परमाणुपोग्गल (परमाणुपुद्गल) प १।४; ३।१७६, १८२;५।१२५,१२७ से १२६,१७३,१७४,१८६, १६०,२०२,२१०,२११,२२६; १०।६;१६।३४, ३६,४३;३०।२६,२८
परलोय (परलोक) ज २।७०
परवस (परवश) उ ३।१२६
परसु (परशु) उ १।२३,८८,८६,६१
परस्सर (पराशर) प १।६६;११।२१ ज २।१३६
परस्सरी (पराशरी) प ११।२३
परहुय (परभृत) ज ३।२४
पराघायणाम (पराघातनामन्) प २३।३८,५३,११०
√**पराजय** (परा + जि) पराजिणिस्सइ उ १।१५
परामुट्ठ (परामृष्ट) ज ३।७६,८०,११६,११८
√**परामुस** (परा + मृश्) परामुसइ ज ३।१२,२३, ३७,४५,७८,८८,६४,११६,११७,११६,१३१, १३५ उ १।२२
परामुसित्ता (परामृश्य) ज ३।१२ उ १।२२
√**परावत्त** (परा + वृत्) परावत्तेइ ज ३।२८,४१, ४६,१३५
परावत्तेत्ता (परावृत्य) ज ३।२८
√**परिकह** (परि + कथय्) परिकहेइ उ १।२०;४।१४ परिकहेंति उ ३।१३५ परिकहेमो उ ३।१०२ परिकहेह उ १।४२
परिकहण (परिकथन) उ ५।१३
परिकहेउं (परिकथयितुम्) प २।६४।१७
परिकिण्ण (परिकीर्ण) उ ३।१४१; ४।१२,१३
परिक्खित्त (परिक्षिप्त) ज ३।२२,२४,३०,३६,७६, ७८,१७८; ४।११०,११६,११८;५।२८,४४ उ १।१६; ५।१७
परिक्खेव (परिक्षेप) प २।५०,५६,६४; ३६।८१ ज १।७,१०,१२,१४,२०,२३,३५,४८,५१; २।६;४।१,२१,२५,३१ ४०,४१,४५,४८,५३ से ५५,५७,६२,६७,६८,७५,७६,८०,८१,८४, ८६,६२,६३,६६,६८,१०८,११०,११४,११८, १४३,१६५,२१३,२२६,२४१,२४२; ७।७,१४ से १६,३१,३३,६६,७३ से ७८,६०,६३,६४, ६८ से १००,२०७ सू १।१४,१६,१७,१६,२१, २४,२६,२७;२।३;३।१; ४।४,७;६।१;१०।१३२; १५।२ से ४; १८।६;१६।१,४,५।१,७,१०,१४, १८,२०,३०,३१,३४,३५,३७
परिगय (परिगत) ज ३।३०,११७;४।२७;५।२८ उ ५।५
परिगर (परिकर) ज ३।२४।३,३१;३७।१,४५।१, १३१।३
परिगायमाण (परिगायत्) ज ५।५,७ से १२,१७ उ ३।११४
परिग्गह (परिग्रह) प २२।१८,१६ ज २।४६
परिग्गहसण्णा (परिग्रहसंज्ञा) प ८।१,२,४ से ११
परिग्गहिय (परिगृहीत) प ४।२१६ से २२१,२३१ से २३३ ज २।१५६;३।५,६,८,१२,१६,२६, ३६,४७,५३,५६,६२,६४,७०,७२,७७,८४,८८, ६०,१००,११४,१२६,१२७,१३३,१३८,१४२, १४५,१५१,१५७,१६५,१७८,१८१,१८६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०५,२०६,२०६,५।५,२१,४६,५८ उ १।३६,
४५,५५,५८,६४,८०,८३,६६,१०७,१०८,
११६,११८,१२२;३।१०६,१३८,१४८;४।१५;
५।१७

परिग्गहिया (पारिग्रहिकी) प १७।११,२२,२३,
२५; २२।६०,६२,६७,७०,७६,६२,१०१

परिघट्ठ (परिघृष्ट) ज ४।१२८;५।४३

परिछण्ण (परिच्छन्न) ज २।१२

√**परिजाण** (परि+ज्ञा) परिजाणइ उ १।३८;
३।५८ परिजाणाइ उ १।१०० परिजाणेंति
उ ३।११८

परिज्जय (दे०) सू २०।२

परिणत (परिणत) प १।४ से ६,१।४८।५६

√**परिणम** (परि+णम्) परिणमंति प २८।२४
से २६,३६,४२,४५,४६,७१,७४,१०५;३४।२०,
२२ से २४ ज ७।१२२।१,३,५ मू १०।१२६।१,
३,५ परिणमति प १६।४६;१७।११५ से १२२,
१३६,१४८ से १५२,१५४,१५५

परिणममाण (परिणमत्) ज ३।२१,३४,५५,६४,
७२,८५,११२,१३८,१४८,१६८,१८३,१६१
उ १।६०

परिणय (परिणत) प १।४,६ से ६ ज २।१६;५।५
उ ३।३८,४०,१२७,१२८; ५।४३

परिणयव्व (परिणन्तव्य) ज २।१३३

परिणाम (परिणाम) प १।१।५; १३।१;१७।११४।१,
१३६; २३।१३ से २३,१६५,१६६ से २०१
२८।१।१ ज २।१६,१३१; ३।२२३; ७।१३६।१,
२११

√**परिणाम** (परि+नमय्) परिणामेंति प १७।२;
२८।२१,३३,६७

परिणामणया (परिणामन) प ३४।१ से ३

परिणामिय (परिणामित) प २३।१३ से २३

परिणामेमाण (परिणमयत्) उ १।४१,४३

परिणाह (परिणाह) ज ४।१०२

परिणिट्ठिय (परिनिष्ठित) ज ३।३५

√**परिणिव्वा** (परि+नि+वा) परिणिव्वंति
ज १।२२,५०; २।५८,१२३,१२८;४।१०१
परिणिव्वाइ प ३६।८८ परिणिव्वायंति
प ६।११० परिणिव्वाति प ३६।६२
परिणिव्वाहिंति ज २।१५१,१५७

परिणिव्वाण (परिनिर्वाण) ज २।११६

परिणिव्वुड (परिनिर्वृत) ज २।६८;३।२२५

परिणिव्वुय (परिनिर्वृत) ज २।८५,६०

परितंत (परितान्त) उ १।५५,७७

परित्त (परीत) प १।४८।२० से २६,३४ से ३७,
४३,५२,५६; ३।११२,१०६;१८।१२,१०६;
सू १३।२;१४।४,८

परित्तमिस्सिया (परीतमिश्रिता) प ११।३६

परित्तास (परित्रास) ज २।७०

√**परिधाव** (परि+धाव्) परिधावेंति ज ५।५७

√**परिनिव्वा** (परि+नि+वा) परिनिव्वाहिइ
उ ५।४३

परिनिव्वुड (परिनिर्वृत) ज २।८८,८६

परिपीलइत्ता (परिपीड्य) प २८।२०,३२,६६

परिपीलिय (परिपीडित) ज २।१३३

परिपुंछणा (परिप्रच्छन) ज ७।१७८

परिभट्ठ (परिभ्रष्ट) ज २।१३३

परिभाएत्ता (परिभाज्य) ज २।६४

परिभाएमाण (परिभाजयत्) उ १।३४,४६,७४

परिभाग (परिभाग) सू १०।१७३

परिभुंजेमाण (परिभुञ्जान) उ १।३४,४६,७४

परिभुज्जमाण (परिभुज्यमान) ज ४।१०७

परिभोगत्त (परिभोगत्व) ज २।२४,३४,३५,३७;
७।२०२,२०४,२०७

परिमंडल (परिमण्डल) प १।४ से ६;१०।१५ से
२४,२६ से ३०; ११।२५;१३।२४ ज ५।५,७,
२२ से २४

परिमंडिय (परिमण्डित) ज १।३७; ३।१,३५,
१०६,११७,११८,१७८;५।४३;७।१७८

परिमाण (परिमाण) ज २।६; ४।१६८,२४३

परियच्छिय (परिकक्षित) ज ५।४३

परियण (परिजन) ज ३।१८७
√परियर (परि+चर्) परियरइ चं ३।१ सू १।७।१
परियाइत्ता (पर्यादाय) प १६।२०
परियाइयणया (पर्यादान) प ३४।१ से ३
परियाग (पर्याय) उ २।१२; ३।१४,८३,१२०, १५०,१६१; ४।२४; ५।२८,३६,४१,४३
परियागय (पर्यागत) प १६।५५
परियाण (परि+ज्ञा) परियाणइ उ ३।१०८
√परियादि (परि+आ+दा) परियादियंति ज ३।१६२
परियादित्ता (पर्यादाय) ज ३।१६२
परियाय (पर्याय) ज २।८३,८४; ४।२७२ उ २।२२; ३।१६६
परियायंतकरभूमि (पर्यायान्तकरभूमि) ज २।८४
परियायसंगइय (पर्यायसाङ्गतिक) उ ३।५५
परियारणया (परिचारण) प ३४।१ से ३
परियारणा (परिचारणा) प ३४।२; ३४।१ से ३, १७,१८
परियारणिड्ढि (परिचारणर्द्धि) सू १८।२३
परियारिड्ढि (परिचारर्द्धि) ज ७।१८५
परियारिय (परिवारित) प २।३१
परियारेमाण (परिचारयत्) सू २०।२
परियाल (परिवार) ज २।१३३; ५।२२,२६ उ १।१६,६३,६७,६८,१०५ से १०७
√परियाव (परि+तापय्) परियावेंति प ३६।६२
परियावण्ण (पर्यापन्न) प १७।१३३
परियावण्णग (पर्यापन्नक) प २।३,६,६,१२,१५
परिरय (परिरय) ज ४।१४२।२,१५६।१,२३४, २४०; ७।१६,१६,७५,७८ सू १।२७; १८।६ से १३; १६।८।१,११।१,१५।१,२१।२
परिलिंत (परिलीयमान) ज २।१२
परिली (दे०) प १।३७।५
परिवंदिय (परिवन्दित) चं १।२
परिवज्जिय (परिवर्जित) उ ४।६
√परिवड्ढ (परि+वृध्) परिवड्ढति सू १६।२२।१८ परिवड्ढिज्जंति प ५।१६१
परिवड्ढमाण (परिवर्धमान) प ११।७२ ज ४।३६, ४३,७२,७८,६५,१०३,१७८ उ ३।४६
परिवड्ढि (परिवृद्धि) ज २।१३८,१४०,१४६, १५४,१६०,१६३
परिवड्ढेमाण (परिवर्धमान) ज २।१३८,१४०, १४६,१५४,१६०,१६३
परिवय (परि+व्रज्) परिवयंति ज ५।५७
√परिवस (परि+वस्) परिवसइ प २।३८ ज १।४५,४७; ३।१२१; ४।५१,५४,६०,६१, ६४,८०,८६,६७,१०२,१०७,१६१,१६६, १८६,१६३,१६६,१६६,२०३,२०८,२१०, २६१,२६४,२६६,२६७,२७०,२७२,२७३, २७६; ७।२१३ उ ३।२८ परिवसई उ ३।१५८; ४।७ परिवसंति प २।२० से २७,३० से ३६, ४१ से ४३,४८,४६,५१ से ६४ ज १।२४,२६, ३१; ३।१०३; ४।१०२ परिवसति प २।३२,३३, ३५,३६,३६,४४,५१,५३ से ५५,५७ से ५६ परिवसह ज ३।१२७ परिवसामो ज ३।१२६।४
परिवसण (परिवसन) ज २।१६
√परिवह (परि+वह्) परिवहइ उ १।५० परिवहंति ज ७।१७८ सू १८।१४ परिवहति सू १८।१६ परिवहामि उ १।७५
परिवाडी (परिपाटी) प १५।५५; २३।१०८
परिवायणी (परिवादनी) ज ३।३१
परिवार (परिवार) ज २।६३,६४; ५।५६; ७।१६८।१,१७०,१८३ सू १८।४,२१,२३; १६।२२।३१,३२ उ १।१६; ४।५,१३
परिवारणा (परिचारणा) ज ४।१४०।१
परिवारिय (परिवारित) प २।३०,४१
√परिविद्धंस (परि+वि+ध्वंस्) परिविद्धंसेज्जा ज २।६
परिविद्धंसइत्ता (परिविध्वस्य) प २८।२०,२२
परिवुड (परिवृत) ज ५।४४ उ ४।११,१३
परिवुड्ढि (परिवृद्धि) प ५।१३२,१६१,१७६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६५,२१६; ११।७२;१३।१७; १५।३४,७५ ज ४।१०३,१७८

परिवेढिय (परिवेष्टित) प १५।५१ ज २।१३३

परिव्वायग (परिव्राजक) प २०।६१ ज ३।१०६

परिसडिय (परिशटित) ज ३।१३३ उ ३।५०

परिसप्प (परिसर्प) प १।६१,६७,७६; ६।७१; २१।११,१४,५३,६०

परिसा (परिषत्) प २।३० से ३३,३५,४१,४३, ४८ से ५१ ज १।४,४५; २।६४,६०;४।१६; ५।१६,३६,४६ से ५१,५६; ७।५५,५८ चं ६ सू १।४; १८।२३; १६।२३,२६ उ १।२,१६, २०;२।६; ३।५,१२,२४,२८,८६,१५५,१५६; ४।४,१०,१४; ५।१४,२६,३७

परिसाड (परिशाट) प १।८४

√परिसाड (परि+शाटय्) परिसाडेंति ज ३।१६२; ५।५,७

परिसाडइत्ता (परिशाट्य) प २८।२०,३२,६६

परिसाडेत्ता (परिशाट्य) ज ३।१६२;५।५

परिहत्थ (दे०) ज ४।३,२५

√परिहव (परि+भू) परिहवेति सू २।२

परिहा (परिखा) प २।३०,३१,४१ ज ३।३२

परिहा (परि+हा) परिहायति सू १६।२२।१४

परिहाण (परिधान) प २।४०

परिहाणि (परिहाणि) प २।६४ ज २।५१,५४, १२१,१२६,१३०; ४।१०३,१४३ सू १६।२२।१६,२०

परिहायमाण (परिहीयमाण) प २।६४ ज २।५१, ५४,१२१,१२६,१३०; ४।१०३,१४३,२००, २१०,२१३ उ ३।४७

परिहारविसुद्धिय (परिहारविशुद्धिक) प १।१२४, १२७

परिहारविसुद्धियचरित्तपरिणाम (परिहारविशुद्धिकचरित्रपरिणाम) प १३।१२

परिहावेतव्व (परिहापयितव्य) सू ८।१

परिहित (परिहित) सू २०।७

परिहिय (परिहित) प २।३१,४१,४६ ज ३।२६, ३६,४७,५६,६४,७२,८५,११३,१३३,१३८, १४५ उ १।१६

परिहीण (परिहीण) प २।६४।६; ३६।६२ ज ५।२२,२६ से २८ सू १६।८।१; २०।६।४

परीसह (परीषह) ज २।६४

परुप्पर (परस्पर) ज ४।१८०

परूढ (प्ररूढ) ज २।६,१३३,१४५,१४६

√परूव (प्र+रूपय्) परूवेइ ज ७।२१४ उ १।६८

परूवण (प्ररूपण) ज २।६

परेंत (दे० पर्यन्त) ज ३।१२६

परोक्खवयण (परोक्षवचन) प ११।८६,८७

परोप्पर (परस्पर) प २२।५१,७३,७४ ज १।४६

√पलंघ (प्र+लङ्घ्) पलंघेज्ज प ३६।६१

पलंडु (कन्द) (पलाण्डुकन्द) प १।४८।४३

पलंब (प्रलम्ब) प २।३०,३१,४१,४६ ज २।१५; ३।१७८;५।१८;७।१७८ सू २०।८

पलंबमाण (प्रलम्बमान) ज ३।६,६,२२२;५।२१, ३८

पलवमाण (प्रलपत्) उ ३।१३०

पलास (पलाश) प १।३५।१ ज ४।२२५।१

पलिओवम (पल्योपम) प १।२४,४।३०,३४,३६, ४०,४२,४३,४५,४६,४८,४६,५१,५२,५४, १०४,१०६,११०,११२,१२४,१४६,१५१, १५५,१५७,१५८,१६०,१६२,१६४,१६५, १६७,१७१,१७३,१७७,१७६,१८०,१८२, १८३,१८५,१८६,१८८,१८६,१६१,१६२, १६४,१६५,१६७,१६८,२००,२०१,२०३, २०४,२०६,२०७,२०६,२१०,२१२,२१३, २१५,२१६,२१८,२१६,२२१,२२२,२२४, २२५,२२७,२२८,२३०,२३१,२३३,२३४, २३६;६।४३; १२।२४; १८।४,६,१०,१२,६०, ७० से ७२; २०।६३;२३।६१,६४,६६,६८,७३, ७५ से ७७,७६,८१,८३ से ८६,८८ से ६०, ६२,६५ से ६६,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११७,११८,१३४,१३५,१३८,१४०,१४२,

१४३,१५१ से १५३,१५५ से १५७,१६०, १६१,१६४,१६६ से १६६,१७१ से १७३ ज १।२४,३१,४५ से ४७; २।५,६,४४,५२, ५६,५६,१५६,१६१; ३।१६७,२२६; ४।२२, ३४,५४,६०,६१,६४,८०,८५,८६,६७,१०२, १४२,१६१,१६६,१६७।१३,१७७,१८६,१६६, २०८,२६१,२६६,२७०,२७२; ७।१८७ से १६६ सू ६।१; ८।१; १८।२५ से ३६ उ ३।१६,८५, १२४; ४।२५

पलिभाग (प्रतिभाग) प १२।२७,३६,३७; १५।५० ज २।६८

पलिभागभाव (प्रतिभागभाव) प १७।१५०,१५२

पलिमंथ (परिमन्थ[1]) प १।४५।१

पलिय (पलित) ज २।१५,१३३

पलियंक (पर्यङ्क) ज १।१८,४८; ४।५५,६२,६८, १६७,१६६; ७।१३३।२

पलुग (पलुआ) प १।४८।६ सन की जाति का एक पौधा

पल्ल (पल्य) ज २।६

पल्लग (पल्यक) प ३३।२० ज ४।५७

पल्लल (पल्वल) प २।४,१३,१६ से १६,२८

पल्हत्थ (पर्यस्त) ज ३।१०५

पल्हत्थमुह (पर्यस्तमुख) उ १।१५; ३।६८

पल्हव (पल्हव) प १।८६

पल्हविया (पल्हविका) ज ३।१११।१

पल्हायणिज्ज (प्रह्लादनीय) प १७।१३४ ज २।१८, १८५

पवंच (प्रपञ्च) प २।६४

पवग (प्लवक) ज २।३२

√**पवड** (प्र+पत्) पवडइ ज ४।२३ से २५,३८ से ४०,६५ से ६७,७३ से ७५,६० से ६२ पवडेज्ज उ ३।५५

पवडणया (प्रपतन) प १६।५३

पवण (पवन) प २।३०।१ ज ३।३५,१०६; ५।५

√**पवत्त** (प्र+वर्तय्) पवत्तइ प १।६८; १६।३६

१. वनस्पतिकोश में हरिमन्थ शब्द मिलता है।

४०,५५ पवत्तति प १६।४३

पवत्त (प्रवृत्त) ज ३।११५,१२३

पवत्ति (प्रवर्तिन्) प १६।५१

पवत्ति (प्रवृत्ति) ज ४।२३,३८,६५,७३,६०,६१

पवयण (प्रवचन) प १।१०१।५,११ सू २०।६।४

पवर (प्रवर) प २।३०,३१,४१,४६ ज ३।७,६, १२,१५,१७,२१,२२,२४,२६,३१,३२,३४ से ३६,३६,४७,५६,६४,७२,७७,७८,८१, ८५,८८,६१,१०८ से १११,११३,१३३,१३८, १४५,१६७।५,१७३,१७५,१७७,१७८,१६६, २२२; ५।५,७,४६,५८ सू २०।७ उ १।१७, १६,२२,२४,१२३,१४०; ४।१२,१३,१५; ५।१८

पवह (प्रवह) ज ४।३६,४३,७२,७८,६०,६५, १७४,१८३,२६२; ६।१८

पवा (प्रपा) ज २।६५; ५।५,७ उ ३।३६

पवाइत (प्रवादित) प २।३१,४६

पवाइय (प्रवादित) प २।३०,३१,४१ ज १।४५; ३।१२,७८,८२,१८०,१८५,१८७,२०६,२१८; ५।१,५१,६; ७।५५,५८,१८४ सू १८।१३; १६।२३,२६

पवात (प्रपात) उ ५।५

पवादित (प्रवादित) ज ३।२०६

पवाय (प्रपात) ज २।३८; ३।८८; ४।२३,३८,४२, ६५,६७,६८,७१,७३,६० से ६४

पवायबहुल (प्रपातबहुल) ज १।१८

पवाल (प्रवाल) प १।२०।२,१।३५,३६; १।४८।१५, २५,६३; २।३१ ज २।२४,६४,६६,१३१,१४४, १४५,१४६; ३।३५,११७,१६७।८

पवालंकुर (प्रवालाङ्कुर) प १७।१२६

पवालि (प्रवालिन्) ज ७।११२।३ सू १०।१२६।३

पविचरिय (प्रविचरित) ज ४।३

√**पविज्जुय** (प्र+विद्युत्) पविज्जुयाइस्सइ ज २।१४१ से १४५ पविज्जुयायंति ज ३।११५

पविज्जुयाइत्ता (प्रविद्युत्य) ज २।१४१

पविज्जुयायित्ता (प्रविद्युत्य) ज ३।११५

पविट्ठ (प्रविष्ट) प १५।१।१,१५।३६,४०,४२ ज ३।१०५,१७८.२२३;७।१७८

पविट्ठित्ता (प्रविश्य) सू १०।१३६,१३।५,६

√पवित्थर (प्र+वि+स्तृ) पवित्थरइ ज ३।७६, ११६,११८

पविभत्त (प्रविभक्त) ज १।१८,२०,४८;४।१६७, २१५

पविभत्ति (प्रविभक्ति) सू १५।३७

पवियरिय (प्रविचरित) ज ४।३,२५

पवियारण (प्रविचारण) प १।१।७

पविरल (प्रविरल) ज २।१३३;५।७

√पविस (प्र+विश्) पविसंति ज ३।१८३

पविसंत (प्रविशत्) चं ४।२ सू १।८।२;१६।२२।४

पविसमाण (प्रविशत्) ज ३।२०३;७।१३,१६,२३ से २५,२८ से ३०,७२,७८,८४ सू १।१२,१४, १६,१८,१६,२१.२४,२७;२।३;६।१;१३।६ से १०,१४ से १६

√पवुच्च (प्र+वच्) पवुच्चइ सू ५।१

पवूढ (प्रव्यूढ) ज ३।६७,१६१;४।२३,३५,३८,४२, ६५,७१,७३,७७,६०,६१,६४,१७४,१८३, १६५,२६२

पवेस (प्रवेश) ज १।१६,३८;३।१२,४१,४६,५८, ६६,७४,७७,१०६,१४७,१६८,२१२,२१३; ४।१०,११५,१२१,२१७ उ ५।४३

पव्व (पर्वन्) प १।४८।४७;११।२५ ज ७।१०६ से ११० सू १०।१२७;१२।१६,१७;१३।१,२

पव्वइत्तए (प्रव्रजितुम्) प २०।१७,१८ उ ३।५०; ५।३२

पव्वइय (प्रव्रजित) ज २।६५.६७,८५,८७ उ २।६; ३।१३,२१,५०,५५,५८,६०,७६,७७,७६,११३, ११८;५।३८

पव्वंस (दे०) उ ५।२५ शिशिर ऋतु

पव्वग (पर्वक) प १।३३।१;१।४१,१।४८।४६ ज २।१४४ से १४६;३।३१

√पव्वज्ज (प्र+व्रज्) पव्वज्जिहिइ उ ५।४३

पव्वज्जा (प्रव्रज्या) उ ३।१६६

पव्वत (पर्वत) प २।३२,३६,५०,५१;१७।१११ ज १।४६;३।२२४ सू ५।१;१६।२६

पव्वतराय (पर्वतराज) सू १६।२३

पव्वतिंद (पर्वतेन्द्र) सू ५।१

पव्वय (पर्वक) प १।४२।१

पव्वय (पर्वत) प २।३३,३५,४३,४४;१६।३०; १७।१०६ ज १।१६,१६,२०,२३ से २५,२८, ३२,३३,४६।१,४७,४८,५१;२।३१,६०,११७, ११८,११६,१३१,१३३;३।१,६१,८१,१३०, १३१,१३५ से १३७,२२४;४।२३,३८,४८, ५७,५८,६०,६५,७१,७३,८४,६०,६१,६४, १०३,१०६,११०,१११,११३,११४,१४२, १६०,१६२,१६३,१६७,१६८,१७२,१७३, १७५,१७६,२००,२०५ से २०६,२१२ से २१६,२२०,२२१,२२५,२२६,२३४,२३५, २३७,२३६ से २४१,२५३,२५४,२५७,२५६, २६० से २६२;५।४४,४७,४८,४६,५५;६।६।१; ६।१०,१६,२३,२४;७।८ से १३,३१,३३,५५, ५८,६७ से ७२,६१,६२,१७१ सू ४।४,७;७।१; ८।१;१८।५ उ ३।५५;५।५,६

√पव्वय (प्र+व्रज्) पव्वयाइ उ ३।११२ पव्वयामि उ ३।१३;४।१४ पव्वयाहि उ ३।१०७

पव्वयग (पर्वतक) ज १।१३

पव्वयबहुल (पर्वतबहुल) ज १।१८

पव्वयराय (पर्वतराज) ज ७।५५ सू ५।१;७।१

पव्वयसमिया (पर्वतसमिका) ज १।२३,२५;२८

पव्वयाउय (पर्वतायुष्) ज ५।१६

पव्वराहु (पर्वराहु) सू २०।३

पसंत (प्रशान्त) ज २।६८;५।७,२६

पसढिल (प्रशिथिल) प २।४६

पसण्णा (प्रसन्ना) उ १।३४,४६,७४

पसत्त (प्रसक्त) ज ५।२६

पसत्थ (प्रशस्त) प १७।१३३,१३४,१३८;२३।५६, १०६,११६;३४।१३ ज १।३७;२।१५;३।३,६,

१८,३५,६३,१०१,१८०,२२२,२२३;७।१७८
पसय (दे०) प १।६४ ज २।३५
√पसर (प्र+सृ) पसरइ उ ३।५१ पसरई १।१०१।७
पसरित्ता (प्रसृत्य) उ ३।५१
√पसव (प्र+सू) पसवंति ज २।४६
√पसार (प्र+सारय्) पसारेइ उ ३।६२
पसासेमाण (प्रशासयत्) ज ३।२ उ ५।९,११
पसिण (प्रश्न) ज ७।२१४ उ ३।२९
पसिय (प्रसृत) ज ३।३५
पसु (पशु) प ११।४ उ ३।३६,४८,५०
पसूय (प्रसूत) ज ३।१०९ उ ३।४८,५०,५५
पसेढी (प्रश्रेणी) ज ५।३२
पसेणइ (प्रसेनजित्) ज २।५९,६२
पसेणी (प्रश्रेणी) ज ३।१२,१३,२८,२९,४१,४२, ४६,५०,५८,५९,६६,६७,७४,७५,१४७,१४८, १६८,१६९,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०, २१६,२१९,२२१
पह (पथ) ज ३।१८५,१८८;२१२,२१३;५।७२, ७३ सू १९।२२।१५ उ १।६८
पहंकरा (प्रभङ्करा) ज ४।२०२।२
पहकर (दे०) ज २।१२ ६५;३।१७,२१,१७७
पहगर (दे०) ज ३।२२,३६,७८
पहत (प्रहत) ज २।१३१
पहरण (प्रहरण) ज ३।३१,३५,७७,१०७,१२४, १६७।६,१७८;४।१३७ उ १।१३८
पहरणरयण (प्रहरणरत्न) ज ३।३५
पहराइया (प्रभाराजिका, प्रहारातिगा) प १।९८
पहव (प्रभव) प ११।३०
पहसिय (प्रहसित) प २।४८ ज १।४२;४।४६, २२१;७।१७६ सू १८।८
पहा (प्रभा) प २।३१ ज १।२४
पहाण (प्रधान) ज २।१५,६४,१३३;३।३,३२, ११७।१,१३८,१७५;७।१७८
पहार (प्रहार) ज ३।१०९ उ ३।१३१,१३४
√पहार (प्र+धारय्) पहारेत्थ ज २।९;३।९, १८३ उ १।८८
पहारेमाण (प्रधारयत्) प ३४।२४
पहाविय (प्रधावित) ज २।६५
पहिय (प्रथित) ज ३।१७,१८,२१,३१,६३,१७७. १८०
पहीण (प्रहीण) ज २।८८,८९;३।२२५
पहु (प्रभु) ज ७।१६८।२
पाई (पाची) प १।४४।१ एकलता, मरकतपत्री
पाइक्क (दे०) ज २।६५
पाईण (प्राचीन) प २।१०,५० से ५२,५४ से ६२ ज १।२०,२३ से २५,२८,३२,४८;३।१, १२६।४;४।१,३,५५,६२,८१,८६,८८,९८, १०३.१०८,१४१,१६२.१६७.१६९,१७२, १७८,१८५,१८७,१९१,२००,२०३,२०५, २१५,२४५,२४९,२५१,२६२,२६८;७।१०१, १०२ सू ८।१
पाईणपडिणायता (प्राचीनापाचीनायता) सू १।१९; २।१;१०।१४२,१४७;१२।३०
पाईणपडीणायता (प्राचीनापाचीनायता) प २।५० से ६२ ज १।२०
पाईणपडीणायया (प्राचीनापाचीनायता) ज १।२०; ३।१;४।१,३,८६,८८,९८,१०८
पाईणवाय (प्राचीनवात) प १।२९
√पाउण (प्र+आप्) पाउणइ उ ३।१४;५।३९ पाउणति प ३६।९२ पाउणिस्सइ उ ५।४३
पाउणित्ता (प्राप्य) प ३६।९२ ज २।८८;३।२२५ उ २।१२;३।१४;४।२४;५।२
पाउप्पभाय (प्रादुष्प्रभात) ज ३।१८८ उ ३।४८, ५० ५५,६३,६७;७० ७३,१०६,११८
√पाउब्भव (प्रादुस्+भू) पाउब्भवंति ज ५।२७ पाउब्भवह ज ५।२२,२६ उ १।१२१ पाउब्भवत्था़मि उ ३।२९ पाउब्भवित्था ज ३।१०४ पाउब्भविस्सइ ज २।१४१ से १४५
पाउब्भवमाण (प्रादुर्भवत्) ज ५।२८
पाउब्भूय (प्रादुर्भूत) ज ३।१०५.११३,१२५;

५।७४ सू ११४ उ १।२४,३४,४०,४३,७४; ३।५७,६२,६५,६६,७२,७५,८१,१४३,१५६
पाउभविलए (प्रादुर्भवितुम्) ज ३।११३
पाउया (पादुका) ज ३।६,१७८;५।२१
पाउस (प्रावृष्) ज ७।१२६ सू १२।१४ उ ५।२५
पाओ (प्रातस्) प २।१
पाओवगय (प्रायोपगत) उ २।११
पाओसिया (प्रादोषिकी) प २२।४६,५६
पागड (प्रकट) ज ३।३ च १।३
पागडभाव (प्रकटभाव) ज २।६८
पागडिय (प्रकटित) ज २।४८,४६
पागड्ढि (प्राकर्षिन्) ज ५।५,४६
पागत (प्राकृत) सू १६।२२।३
पागसालग (पाकशालक) प २।५० ज ५।१८
पागार (प्राकार) प २।३०,३१,४१ ज ३।१; ४।११४,११६; ७।१३३।२
पागारच्छाया (प्राकारच्छाया) सू ६।४
पागारसंठिय (प्राकारसंस्थित) सू १०।४३
√**पाड** (पातय्) पाडेइ उ ३।५१ पाडेंति ज ५।१६
पाडण (पातन) उ १।५१,८६
पाडल (पाटल) ज ३।१२,८८;५।५८
पाडला (पाटला) प १।३७।५
पाडलिपुत्त (पाटलिपुट) ज ४।१०७
पाडिएक्क (प्रत्येक) ३।११८;४।२२
पाडिसए (पातयितुम्) उ १।५१,७६,७७
पाडियंतिय (प्रात्यन्तिक) ज ३।५७
पाडिवया (प्रतिपद्) सू २०।३
पाडिहारिय (प्रातिहारिक) प ३६।६१
पाडेत्ता (पातयित्वा) ज ५।१६ उ ३।५१
पाढा (पाठा) प १।४८।४; १७।१३१
पाण (प्राण) प २।६४; ३६।६२,७७ ज २।१३१; ३।१०८ से १११; ७।२१२
पाण (प्राण, पान) ज २।४।१,२
पाण (पान) उ ३।५०,५५,१०१,११०,११४,१३४; ४।१६
पाणक्खय (प्राणक्षय) ज २।४३
पाणत (प्राणत) प १।१३५
√**पाणम** (प्र+अन्) पाणमंति प ७।१ से ४,६
पाणय (प्राणत) प २।४६,५८,५६,५६।२,६३; ३।१८३; ४।२५८ से २६०; ६।३६,५६,६६; ७।१७; १५।८८; २१।७०; २८।८४; ३३।१६; ३४।१६,१८ ज ५।४६ उ २।२२
पाणय (पानक) उ ३।११४;४।२१
पाणयग (प्राणतज) ज ५।४६
पाणयवडेंसय (प्राणतावतंसक) प २।५८
पाणाइवातकिरिया (प्राणातिपातक्रिया) प २२।१
पाणाइवाय (प्राणातिपात) प २२।६ से ११,२१ से २३
पाणाइवायकिरिया (प्राणातिपातक्रिया) प २२।६, ४६,४७,५०,५२,५७,५६
पाणाइवायविरत (प्राणातिपातविरत) प २२।८३, ८४,६१ से ६४,६६
पाणाइवायवेरमण (प्राणातिपातविरमण) प २२।७७ से ७६
पाणातिवालकिरिया (प्राणातिपातक्रिया) प २२।६
पाणि (प्राणिन्) ज ३।१७८
पाणि (पाणि) ज ५।५ उ १।११ से १३,३०,३२; २।७;४।८;५।१२,२५
पाणिग्गहण (पाणिग्रहण) उ ५।१३
पाणिय (पानीय) उ ३।१३०
पाणियग (पानीयक) ज २।१३१
पाणिलेहा (पाणिरेखा) ज २।१५
पाणी (पाणि) प १।४०।४
पात (प्रातस्) सू १०।५,१३६
पाती (पात्री) ज ३।११;५।५
पाद (पाद) प १७।१११ ज ४।१३
पादपीढ (पादपीठ) ज ३।१७८ उ १।११५
पादीणपडीणायया (प्राचीनाप्रतीचीनायता) ज १।१८
√**पादुब्भ** (प्रा+दुर्+भू) पादुब्भवंति प ३४।१६,२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पादो (प्रातस्) सू २।१
पादोसिया (प्रादोषिकी) प २२।१,४,५६
पामोक्ख (प्रमुख,प्रमुख्य) ज १।२६; २।७४,७७; ४।१३७ उ ५।१०,१७,१६
पाय (पाद) ज ३।१२५,१२६,२२०,२२४;५।५,७ सू २०।६।६ उ १।११,१३,३० से ३२,७१, ११५,११६; २।७; ३।११४; ४।८,२१; ५।१२
पाय (प्रातस्) सू १०।१३६
पायचारविहार (पादचारविहार) ज २।३३
पायच्छित्त (प्रायश्चित्त) ज ३।७७,८१,८२,८५, १२५,१२६ सू २०।७ उ १।१६,७०,१२१; ३।११०,११५; ५।१७
पायत्त (पादात) ज ३।१७८
पायत्ताणीय (पादातानीक,पादात्यनीक) ज ३।१७८
पायत्ताणीयाहिवई (पादातानीकाधिपति, पादात्यनीकाधिपति) ज ५।२२,२३,२६,४८ से ५२,५३
पायत्तिय (पादातिक) उ १।१३८
पायदद्दरय (पाददर्दरक) ज ५।५७
पायपीढ (पादपीठ) ज ३।६; ५।२१ उ १।११५
पायमूल (पादमूल) उ ३।१२५
पायरास (प्रातराश) उ १।११०,१२६,१३३
पायव (पादप) ज २।६५,७१; ३।१०४,१०५ उ १।१,६१; ३।५६,६४,६६,६८,७१,७४,७६
पायवंदय (पादवन्दक) उ १।७०;४।११
पायविहारचार (पादविहारचार) उ ३।२६
पायसीस (पादशीर्ष) ज ४।१३
पायहंस (पादहंस) प १।७६
पायाल (पाताल) प २।१,४,१०,१३
पायावच्च (प्राजापत्य) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
पाईण (प्राचीन) ज २।५३
पायोवगय (प्रायोपगत) ज ३।२२४
√पार (पारय्) पारेइ ज ३।२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१३६,१४७,१८७
पारगत (पारगत) प २।६४।२१
पारगामि (पारगामिन्) ज ३।७०
पारणग (पारणक) उ ३।५१,५३,५४
पारस (पारस) प २।८६
पारसी (पारसी) ज ३।११।२
पारिणामिया (पारिणामिकी) उ १।४१,४३
पारिप्पव (पारिप्लव) प १।७६
पारियावणिया (पारितापनिकी) प २२।१,५,५०, ५२,५६
पारेत्ता (पारयित्वा) ज ३।२८
पारेवत (पारापत) प १६।५५; १७।१३२
पारेवय (पारापत) प १।७६; ज ३।३५
पारेवयगीवा (पारापतग्रीवा) प १७।१२४
√पाल (पालय्) पालेमाहि ज ३।१८५ पालेंति ज १।२२,५०,५८,१२३,१२८; ४।१०१ पालेहिंति ज २।१४८
पालइत्ता (पालयित्वा) ज २।८८
पालंब (प्रालम्ब) ज ३।६,६,२२२; ५।२१
पालक्का (पालक्या) प १।४४।१
पालण (पालन) ज ३।१८५,२०६
पालय (पालक) ज ५।२८,२६,४६।३
पालियायकुसुम (पारिजातकुसुम) प १७।१२६
पालेत्ता (पालयित्वा) ज १।२२
पालेमाण (पालयत्) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५;३।१८५,२०६,२२१; ५।१६ उ १।६५,६६,७१,६४,१११,११२; ५।१०
√पाव (प्र+आप्) पावे प २।६४।१५
पाव (पाप) प १।१०।१२;११।८६
पावयण (प्रवचन) उ ३।१०३,१३६; ४।१४;५।२०
पाववल्ली (पावकवल्ली) प १।४०।२
पावा (पावा) प १।६३।५
√पास (दृश्) पासइ प १७।१०८ से ११०; ३०।२८ ज २।७१,६०,६३;३।५,१५,२६,३१, ३६,४४,४७,५२,५६,६१,१०६,११६,१३१, १३७,१४१,१७३;५।३,२१,२८,६३ उ १।१६; ३।७;४।१३,५।२२ पासउ ज ५।२१ पासंति

प २।६४।१३;१५।४६ से ४६;३३।२ से १३, १५ से १८;३४।६ से ६,११,१२ ज ३।१०५, ११३ उ १।३६ पासति न १५।३७,४१,४४, ४५;१७।१०६ से १११;२३।१४;३०।२५ से २८;३६।८०,८१ पासह ज ३।१२४ पासिज्जा उ १।१५ पासिहिति ज २।१४६ पासिहिसि उ १।२२ पासेइ उ १।५७ पासेज्जा उ १।२१

पास (पास) प १।८६

पास (पार्श्व) ज २।१५;३।३२;४।१४२,२०२,२१२; ५।१७,४३,४६,६०,६६; ७।३१,३३ सू ४।३,४; २०।२ उ ३।१२,१४,२१,२८,२६,४६,५१,७६; ४।१०,११,१३,१५,१६,२०,२८

पाश (पाश) ज ३।१०६

पासंडबहुल (पाषण्डबहुल) ज १।१८

पासंडधम्म (पाषण्डधर्म) ज २।१२६

पासग (पाशक) ज ७।१७८

पासग्गाह (पाशग्राह) ज ३।१७८

पासणया (दर्शन,पश्यत्ता) प १।१।७;३०।१,५,८,१०

पासत्थविहारि (पार्श्वस्थविहारिन्) उ ३।१२०

पासमण (पश्यत्) ज २।७१

पासवण (प्रस्रवण) प १।८४

पासाईय (प्रासादीय,प्रासादिक) प २।३१,४८,५६, ६३ ज १।२३,४१;२।१५;४।३,६,१३,२५,२६, ३३,४६,१४६;५।६२ उ ५।६

पासाण (पाषाण) ज ३।१०६;४।३,२५;७।१७८

पासाद (प्रासाद) २।६५

पासादच्छाया (प्रासादच्छाया) सू ६।४

पासादसंठित (प्रासादसंस्थित) सू ४।२

पासादीय (प्रासादीय,प्रासादिक) प २।३०,४१,४६, ६४ ज १।८,३१;२।१२,१४,४।२७ सू १।१ उ ५।४,५

पासाय (प्रासाद) ज १।४२,४३; २।२०,६५;३।३२, ८२,१८७,२१८,२१६;४।३,४६,५०,५३,५६, १०६,११२,११६,११६;१२०,१४७,१५५,१५६, २२१ से २२४,२२६,२३५,२३७,२३८,२४०, २४३;५।१,६,२५ उ १।४६,६४;२।६;५।१३, २०,२७,३१

पासायवडेंसय (प्रासादावतंसक) ज ४।१०२,११६, २२१,२२२,२२३।१,२२४।१

पासि (पार्श्व) ज १।२३,२५,२८,३२;३।१७६; ४।१,४३,६२,७२,७८,८६,६५,६६,१०३,१७८, १८३,२००,२०१;५।४६,६०,६६

पासिउं (द्रष्टुम्) प १।४८।५७

पासिउकाम (द्रष्टुकाम) प २३।१४

पासित्ता (दृष्ट्वा) प २३।१४ ज २।६० उ १।१६; ३।१०१,४।१३;५।१३

पासित्ताणं (दृष्ट्वा) उ १।३३; २।८

पासियव्व (द्रष्टव्य) प २३।१४

पासेत्ता (दृष्ट्वा) उ १।५७

पाहाण (पाषाण[1]) ज ५।१६

पाहुड (प्राभृत) ज ३।८१ चं ३।२,३; ५।४ सू १।७; ६।४,२५;१०।१७३

पाहुडत्थ (प्राभृतस्थ) सू २०।६

पाहुडपाहुड (प्राभृतप्राभृत) चं ५।४ सू १।६

पाहुणिय (प्राघुणिक) ज ७।१८६।१ सू २०।८

पाहुय (प्राभृत) प १।५०

पि (अपि) उ ३।३०

पिइ (पितृ) उ १।६१;५।४३

पिइदेवया (पितृदेवता) सू १०।८३

पिउ (पितृ) ज ७।१३०,१८६।४ उ १।५२,५४, ७६,७६;३।५१,५६

पिउसेणकण्ह (पितृसेनकृष्ण) उ १।७

पिंगल (पिङ्गल) ज ३।६,१६७।४,२२२

पिंगलक्ख (पिंगलाक्ष) ज ७।१७८

पिंगलक्खग (पिंगलाक्षक) ज २।१२

पिंगलग (पिंगलक) ज ३।१६७

पिंगलय (पिंगलक) ज ३।१६७।१,१७८ सू २०।२, ८,२०।८।४

पिंगायण (पिङ्गायन) ज ७।१३२।३ सू १०।१०८

---

1. दे १।२६२

पिंडय (पिण्डक) ज ६।६।१
पिंडवाय (पिण्डपात) उ ५।४३
पिंडित (पिण्डित) प २।६४।१५,१६
पिंडिम (पिण्डिम) ज २।१२;५।५
पिक्क (पक्व) प १७।१३३
पिक्खुर (दे०) ज ३।८१
पिच्छय (पिच्छक) उ १।५६,६३,८४
पिच्छि (पिच्छिन्) ज ३।१७८
पिट्ट (दे०) उ ३।११४
पिट्ठओ (पृष्ठतस्) ज ३।१०,११,८६,८७,१७६; ५।४६,६०,६६
पिट्ठओउदग्गा (पृष्ठतउदग्रा) सू ६।४
पिट्ठंत (पृष्ठान्त) उ ३।३
पिट्ठंतर (पृष्ठान्तर) उ २।१६; ५।५
पिट्ठीय (पृष्ठ) उ ३।११४
पिट्ठिकरंडक (पृष्ठकरण्डक) ज २।१६
पिट्ठिकरंडग (पृष्ठकरंडक) ज २।४८,१५६
पिट्ठिकरंडुक (पृष्ठकरण्डक) ज २।५२,१६१
पिट्ठिकरंडुय (पृष्ठकरण्डक) ज २।५६
पिडग (पिटक) सू १६।२२।४,५,६
पिडय (पिटक) सू १६।२२।४,५
पिणद्ध (पिनद्ध) ज ३।६,७७,१०७,१२४,२२२ उ १।३८
√**पिणद्ध** (पि+नह्) पिणद्धेंति ज ३।२११
√**पिणद्धाव** (पि+नाहय्,पि+नि+धापय्) पिणद्धावेइ ज ५।५८
पिणद्धावित्ता (पिनाह्य,पिनिधाप्य) ज ५।५८
पिणद्धेत्ता (पिनह्य) ज ३।२११
पितिपिंड (पितृपिण्ड) ज २।३०
पित्त (पित्त) प १।८४
पित्तिय (पैत्तिक) उ ३।३५,११२,१२८
पिप्परि (पिप्पली) प १।३६।२
पिप्पलिचुण्ण (पिप्पलिचूर्ण) प ११।७६;१७।१३१
पिप्पलिया (पिप्पलिका) प १।३७।२
पिप्पली (पिप्पली) प १७।१३१
पिप्पलीमूलय (पिप्पलीमूलक) १७।१३१
पिप्पीलिया (पिपीलिका) प १।५०
पिय (प्रिय) प २।४१; २८।१०५ ज २।६४; ३।५, ६०,१५७,१८५,२०६; ५।५८ उ १।४१,४४; ३।१२८;५।२२
√**पिय** (पा) पियंति उ ३।६८
पिय (पितृ) उ १।७२,८८,६२; ४।२८
पियंगाल (दे०) १।५१
पियंगु (प्रियङ्गु) प २।४०।६
पियट्ठया (प्रियार्थ) ज ३।५,११५,१२५
पियतर (प्रियतर) ज २।१८; ४।१०७
पियतरिया (प्रियतरका) प १७।१२६ से १२८, १३३ से १३५ ज २।१७
पियदंसण (प्रियदर्शन) ज ३।६,१७,२१,२८,३४, ४१,४६,१३६,१७७,२२२ सू २०।४ उ ५।५,२२
पियर (पितृ) प ११।१३,१८
पियस्सरता (प्रियस्वरता) प २३।१६
पिया (पितृ) ज २।२७
पिया (प्रिया) ज २।६६ उ ४।८,६
पियाल (प्रियाल) ज १।३५।२
पिरिली (पिरिली) ज ३।३१
पिलग (पिलक) ज २।१३७
पिलुक्खरुक्ख (प्लक्षरूक्ष) १।३६।२
पिल्लण (प्रेरण) ज ३।१०६
पिव (इव) ज ३।२२ उ १।१३८; ३।५०
पिवासा (पिपासा) उ ३।११४,११५,११६,१२८
पिसाय (पिशाच) प १।१३२; २।४१ से ४३,४५ ४६; ६।८५
पिसायइंद (पिशाचेन्द्र) प २।४२ से ४४
पिसायराय (पिशाचराज) प २।४२ से ४४
पिसुय (पिशुक) प १।५० ज २।४०
पिधान (पिधान) ज ५।५६
पिहुजण (पृथक्जन) प ६।२६
पिहुल (पृथुल) ज २।१५; ७।३१,३३ सू ४।३,४, ६,७
पीइगम (प्रीतिगम) ज ५।४६।३; ७।१७८
पीइदाण (प्रीतिदान) ज ३।६,२६,२७,३६,४०,

४७,४८,५६,५७,६४,६५,७२,७३,१३३,१३४,
१३८,१३६,१४५,१४६
पीइमण (प्रीतिमनस्) ज ३।५,६,८,१५,१६,३१,५३,
६२,७०,७७,८४,६१,१००,११४,१४२,१६५,
१७३,१८१,१८६,१६६,२१३;५।२१,२७
उ १।२१,४२;३।१३६
पीइवद्धण (प्रीतिवर्धन) ज ७।११४।१
पीढ (पीठ) प ३६।६१ उ ३।३६
पीढग्गाह (पीठग्राह) ज ३।१७८
पीढमद्द (पीठमर्द) ज ३।६,७७
√पीण (प्रीणय्) पीणेंति ज ५।५७
पीण (पीन) ज २।१५
पीणणिज्ज (प्रीणनीय) प १७।१३४
पीणित (प्रीणित) सू १२।२६
पीतय (पीतक) सू २०।२
पीति (प्रीति) उ १।१११,११२
पीतिदाण (प्रीतिदान) ज ३।१५०
पीतिवद्धण (प्रीतिवर्धन) सू १०।१२४।१
पीय (पीत) ज ३।२४,३१
पीयकणवीरय (पीतकरवीर) प १७।१२७
पीयबंधुजीवय (पीतबन्धुजीवक) प १७।१२७
पीयासोग (पीताशोक) प १७।१२७
पीलु (पीलु) प १।३५।१
पीवर (पीवर) ज २।१५;७।१०८
पीलिज्जमाण (पिष्यमाण) ज ४।१०७
पीहगपाय ('पीहग'पान) उ ३।१३०
पुंख (पुङ्ख) ज ३।२४
पुंज (पुञ्ज) प २।३०,३१,४१ ज २।१०;३।७,८८
४।१६६;५।७
पुंडरीका (पुण्डरीका) ज ५।११।१
पुंडरीगिणी (पुण्डरीकिणी) ज ४।२००।१
पुंडरीय (पुण्डरीक) प २।४८ ज ३।१०;४।४६,२७४
√पुक्कार (पुक्कारय्) पुक्कारेंति ज ५।५७
पुक्खर (पुष्कर) प १५।५५।१ ज २।६८
सू १६।२१।१
पुक्खरकण्णिया (पुष्करकर्णिका) प २।३०,३१,४१;
३६।८१ ज १।७ सू १।१४
पुक्खरद्ध (पुष्करार्ध) प १५।५५;१७।१६५
सू १६।२१।२,५
पुक्खरवर (पुष्करवर) सू १६।१२ से १६;२१।३,२८
पुक्खरवरदीवड्ढ (पुष्करवरद्वीपार्ध) प १६।३०
सू १६।२१
पुक्खरवरोद (पुष्करवरोद) सू १६।२८ से ३१
पुक्खरसारिया (पुष्करसारिका) प १।६८
पुक्खरिणी (पुष्करिणी) प २।४,१३,१६ से १६,
२८;११।७७;२१।८७ ज १।१३,३३;२।१२;
४।१४०,१५४,२२१ से २२४,२३५,२४३
पुक्खरोद (पुष्करोद) ज ५।५५ सू १६।२८ से ३१
पुक्खल (पुष्कल) ज ४।१६६
पुक्खलकूड (पुष्कलकूट) ज ४।१६८
पुक्खलचक्कवट्टिविजय (पुष्कलचक्रवर्तिविजय)
ज ४।१६४,१६५
पुक्खलविजय (पुष्कलविजय) ज ४।१६७
पुक्खलसंवट्टय (पुष्कलसंवर्तक) ज २।१४१,१४२
पुक्खलावइचक्कवट्टीविजय (पुष्कलावतीचक्रवर्ति
विजय) ज ४।२००
पुक्खलाई (पुष्कलावती) ज ४।१६६
पुक्खलावईकूड (पुष्कलावतीकूट) ज ४।१६६
पुग्गल (पुद्गल) प २८।३५
√पुच्छ (प्रच्छ्) पुच्छइ चं १।४ उ २।१२
पुच्छिज्जंति सू १०।६२
पुच्छिस्सामि उ १।१७;३।२६
पुच्छणी (प्रच्छनी) प ११।३७।१
पुच्छा (पृच्छा) प २।४४;४।५० से ५४,५६ से ६४;
६६,६७,६६,७०,७१,७३,७४,७६,७७,८०,८१
से ८७,८६,६०,६२ से ६४,६६,६७,६६,१००,
१०२,१०३,१०५ से ११२,११४ से १३०,
१३२ से १३६,१४१ से १४८,१५० से १५७,
१५६ से १६४,१६६,१६७,१६६,१७०,१७२,
१७३,१७५ से १८२,१८४ से २०६,२०८,
२०६,२११,२१२,२१४ से २६३,२६५,२६६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६८; ५।१३,१५,१६,५५,५८,६२,६७,७०, ७३,८८,६६,१३०,१३३,१३५,१३७,१३६, १४२,१४४,१४६,१४६,१५३,१५६,१५६, १६२,१६५,१६८,१७१,१७३,१७६,१८०,१८३, १८६,१८६,१६२,१६६,१६६,२०२,२०६, २१०,२१३,२१७,२२०,२२३,२२७,२२६, २३३,२३६,२३८;६।२४ से २६,२८ से ४२, ७४,७६,७७,११०,११२;६।२२; १०।७ से १३, २२ से २४;१२।२४,३३;१४।१५;१५।४ से ६, ६,१०,४२,५७,८१,८२,८५,८६,६२,६३; १६।४,६ से ८; १७।१४,१७,२८,२६,३३,४१ से ५५,६५,१०२,१०४,१३१ से १३४,१५८, १६२,१६४; १८।२६,६२,११२,११८,१२१, १२३,१२४,१२७;१६।२,३,५;२०।४,७,१६, ३०,३५,४१ से ४४,४६ से ४८,५३,५४; २१।३७,६७; २२।६८,६६,६५,६६;२३।४८ से ५०,६५,६६ से ७६,८१,८३ से ८६,८८ से ६०,६५,६८,६६,१०१ से १०४,१०६,१११ से ११८,१२८,१२६,१३१ से १३३,१५४,१७३; २४।६,८;२६।६,१०; २८।७६ से ६७,६६, १०६,११०,१२६,१४५;२६।८,११,२०,२१; ३०।१२,१८,२०,२२;३१।२,३,६;३२।३,४,६; ३३।७ से ६,२० से २६,२८,२६,३२,३३,३६; ३४।७ से ६,११;३५।२,११,१६,२२;३६।३४, ५०,५१,५५ से ५७ ज ४।२०४,२१०,२५८, २५६;७।६३,७४,७७,८३,८४,१०८,१४२ से १४४ सू ६।३;१०।१५१;१८।१० से १३,३५, ३६;१६।५,८,११,१५,१६,२१,३१,३५,३८ उ २।१३;३।८,२१,२६,६४,१५६,१६६; ४।५; ५।२३

√**पुच्छिज्ज** (प्रच्छ्) पुच्छिज्जइ प ३।१२१ पुच्छिज्जंति प ११।८२,८३,८५;१७।३०; २१।६१; २८।११५,११७ पुच्छिज्जति प २८।१४५

पुट्ठ (स्पृष्ट) प २।६४।१०,११; ११।६१,६२, ६६।१;१५।१।१,१५।३६ से ४०,४५;२०।३६; २२।५६;२३।१३ से २३;२८।११,१२,५७,५८ ज १।१८,२०,२३,४८; ३।३५; ४।१,५५,६२, ८१,८६,६८,१०८,१७२; ६।१,३; ७।४०,५०, ५३

पुड (पुट) ज ५।१४,१७ उ १।५५,५७,६१,६२, ८०,८२,८६,८७;३।११४

पुढवि (पृथ्वी) प १।२०।१,१।४८।३८;१।५३, २।१,२० से २७,३० से ३७,४१ से ४३,४६, ४८ से ५१,६३,६४;३।११ से २३,१८३;४।४ से २४;६।१० से १६,४५,५१,७३ से ७८,८०; ८०।१,२;६।८८,६१,६२,१००,१०६;१०।१ से ३;११।२६ से २८;१५।५५।२;१६।२६; १७।३३; १८।१०७,११६;२०।६ से १०,३८ से ४२,४६,५६;२१।५२,५६,६६,८५,८७, ६०;२२।२४; २८।१२३; ३०।२५ से २८, ३३।३ से ८,१६,१७ ज २।१६,१७,६८; ३।२२४; ४।२५४; ७।११२।४,२११,२१२ सू १०।१२६।४

पुढविकाइय (पृथ्वीकायिक) प १।१५,१६; २।१ से ३;३।२,५० से ५२,५४,६० से ६३,६५ ७१ से ७४,७६,८४ से ८७,८६,६५,१५६ से १५८.१८३;४।५६ से ६४,६८;५।३,६,१०, ५२,५३,५५,५६,५८,५६,६२,६३;६।१६,५३, ६२,८२,८३,८६,८६,१०२,१०३,११५; ७।४;८।३;६।४,१६;१२।२०,२१,२३,२५,२६; १३।१६;१५।२० से २८,५३,५४,७२ से ७४, ७६.१३७;१६।१२;१७।६५,१०२;२०।२४; २२।३७; २८।२८;२६।२० ज २।७२ सू २।१

पुढविकाइयत्त (पृथ्वीकायिकत्व) प १५।६६;३६।२२ ज ७।२१२

पुढविक्काइय (पृथ्वीकायिक) प १२।३,२४; १५।५७,८५;१६।४;१७।१८ से २२,४०,६०, ८७,६४,६५,६७,१०२;१८।२६,३२,३८,४०,

पुढविकाय (पृथ्वीकाय) सू २।१

४२,५०;१६।२;२०।१३,२२,२४ से २६,२८,
३२,३५ ; २११३ से ५,२३,४०,७६,८० ;
२२।३१,७३;२४।६;२८।२६.३०.३३ से ३६,
३८,६६;२६।८ से १०,२०;३०।८,६,१८,१६;
३१।३;३४।३;३५।१६.२०;३६।६;२५.२६.
३८,५१

पुढविक्काइयत्त (पृथ्वीकायिकत्व) प १५।१४१;
३६।२६

पुढविसिलापट्टक (पृथ्वीशिलापट्टक) उ ५।८

पुढविसिलापट्टग (पृथ्वीशिलापट्टक) ज ३।२२३

पुढविसिलापट्टय (पृथ्वीशिलापट्टक) उ १।१

पुढविसिलावट्टय (पृथ्वीशिलापट्टक) ज १।१३

पुढवी (पृथ्वी) सू २।१;६।३;१८।१ उ १।२६,२७,
१४०,१४१

पुण (पुनर्) प ६।८०।१ सू १।२० उ १।१७

पुणं (पुनर्) उ ३।१०२

पुणब्भव (पुनर्भव) प २।६४

पुणरवि (पुनरपि) प ३६।६४ ज २।६;३।८१;
७।११८,१२१ सू २।१

पुणव्वसु (पुनर्वसु) ज ७।१२८,१२६;१३४ से
१३६,१४०,१४६,१६१ सू १०।२ से ६,१३,
२४,४०,६२,६८,७५,८३,१०५,१२०,१३१
से १३३,१५५,१६१;११।२ से ४

पुणो (पुनर्) ज ३।१०६ सू १६।२२ उ ३।६८

पुण्ण (पूर्ण) प २।४०।६ ज २।६०,१०३,१०६,
१०८,१७८;३।६,२२२ ; ४।३,२५,१७२।१;
५।४६;७।१७८

पुण्ण (पुण्य) प १।१०१।२ ज ३।११७।१ ; ५।५,४६

पुण्णकलस (पूर्णकलश) प २।३० ज ५।४३

पुण्णचंद (पूर्णचन्द्र) ज ३।३,११७

पुण्ण (भद्द) (पूर्णभद्र) उ ३।२।१

पुण्णभद्द (पूर्णभद्र) प २।४५,४५।१ ज ४।१६२।१,
१६५ उ १।६.१६,१४४; २।१४,१६;३।१५६,
१५८,१६० से १६५.१६६.१७१;५।८

पुण्णभद्दकूड (पूर्णभद्रकूट) ज १।३४,४६;४।१६५

पुण्णमासी (पौर्णमासी पूर्णमासी) ज ७।११२।२,
१४२ चं ५।१ सू १।६।१;१०।२१

पुण्णा (पूर्णा) सू १०।६०

पुण्णाग (पुन्नाग) प १।३५।३ ज ३।१२,८८;५।८

पुण्णिमा (पूर्णिमा) ज ७।१२५,१२७।१,१३७ से
१४५,१५४,१५५,१६७।१ सू १०।६ से १७,
१६ से २२,२६

पुण्णिमासी (पौर्णमासी) ज ७।१३८,१४१ चं ५।१
सू १०।७,८,१८,२०,२२,१२६।२,१३६ से
१५६ ; १३।१ से ३,६

पुत (पुत) उ ४।६

पुत्त (पुत्र) ज २।२७,६४,६६,१३३ उ १।१०,१३,
१५,२१ से २३,३१,४३,५७,७२,७४,८२,८७,
६५,१०६,११०,११३,११४,१४६ ; २।६,६,१८,
२२; ३।४८,५०,५५,११४

पुत्तंजीवय (पुत्रजीवक) प १।३५।२

पुत्तत्त (पुत्रत्व) उ ५।३०,४३

पुप्फ (पुष्प) प १।३५,३६;१।४८।१७,२७,४०,४१,
४७,६३;२।३०,३१,४०।१०,४१;१५।२ ज २।८
से १०,१२;१५ से १८,६५;१४५,१४६ ; ३।७,
११,१२,२१,३४,७८,८५,८८,१०६,१८०,
२०६ ; ४।१६६;५।७,२२,२६,४८,४६,५५;
७।३१,३३,३५,५५,११२।३,४ सू ४।३,४,६,
७,६; १०।२०,१२६।३,४;१६।२२।२,१५;
१६।२३;२०।८।६ उ १।३५;३।५०,५१,५३,
११०,११४;५।६

√**पुप्फ** (पुष्प्) पुप्फंति ज ३।१०४,१०५

पुप्फकेतु (पुष्पकेतु) सू २०।८

पुप्फचंगेरी (पुष्प 'चंगेरी') प ३३।२५ ज ३।११;
५।७,५५

पुप्फचूला (पुष्पचूला) उ ४।२०,२२,२८

पुप्फचूलिया (पुष्पचूलिका) उ १।५ ; ४।१ से ३,
२७ ; ५।१

पुप्फछज्जिया (पुष्पछादिका) ज ५।७

पुप्फपटलहत्थगय (हस्तगतपुष्पपटल) ज ३।११

पुप्फपडलग (पुष्पपटलक) ज ५।७

पुप्फबद्दलय (पुष्पवार्दलक) ज ५।७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुप्फमाला (पुष्पमाला) ज ५।१।१
पुप्फय (पुष्पक) ज ५।४६।३
पुप्फ (वासा) (पुष्पवर्षा) ज ५।५७
पुप्फविटिय (पुष्पवृन्तक) प १।५०
पुप्फाराम (पुष्पाराम) उ ३।४८ से ५०,५५
पुप्फारुहण (पुष्पारोहण पुष्पारोपण) ज ३।१२,८८
पुप्फासव (पुष्पासव) प १७।१३४
पुप्फाहार (पुष्पाहार) उ ३।५०
पुप्फिय (पुष्पित) उ ३।४६
पुप्फिया (पुष्पिका) उ १।५;३।१ से ३,१६,२०,
२२,२३,८७,८८,१५३,१५४,१६६,१६७,१७०;
४।१
पुप्फुत्तर (पुष्पोत्तर) प १७।१३५
पुप्फुत्तरा (पुष्पोत्तरा) ज २।१७ शक्कर की जाति
पुप्फोदय (पुष्पोदक) ज ३।६,२२२;
पुप्फोवयार (पुष्पोपचार) ज ७।१३३।१
पुप्फोवयारसंठिय (पुष्पोपचारसंस्थित) सू १०।१३०
पुम (पुंस्) प ११।५ से १०,२४,२६ से २८
पुमवयण (पुंस्वचन) प ११।२६,८६
पुर (पुर) ज २।६४
पुरओ (पुरतस्) ज ३।१२,८८,१७८,१७६,२०२,
२१७;४।५,२७,१२२,१२४,१२७;५।३१,४३,
४४,४६,५७,५८,६०,६६ उ ३।५०,११२;४।१६
पुरओउदग्गा (पुरतउदग्रा) सू ६।४
पुरंदर (पुरन्दर) प २।५० ज ५।१८
पुरक्खड (पुरस्कृत) सू ८।१
पुरजण (पुरजन) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८,६६,
७४,१४७,१६८,२१२,२१३
पुरतो (पुरतस्) सू २।२
पुरत्थाभिमुह (पौरस्त्याभिमुख) ज ३।६,१२,२८,
४१,४६,५८,६६,७४,१४७,१८८,२०४,२१६,
२२२;५।२१,४१,४७,६० उ १।४१;३।६१
पुरत्थाभिमुहि (पौरस्त्याभिमुखिन्) ज ४।२३,३५,
२६२
पुरत्थिम (पौरस्त्य,पूर्व) प ३।१ से ३७,१७६,१७८
ज १।१६,१८,२०,२३,२४,३५,४१,४६,४८,
५१;३।१,१४,१५,२२,२६,५१,५२,१६१;४।१,
१८,२६,३५,४५,५५,५७,६२,७१,८१,८४,८६,
६०,१०३,१०६,१०८,१२६,१५१।१,१५३,
१६२,१६७,१६६,१७२,१७८,१८१,१८२,
१८४,१८५,१६०,१६१,१६३,१६४,१६६,
१६७,१६६ से २०३,२०५,२०६,२०८,२०६,
२१३,२१५,२१६,२२८,२३३,२३५,२३८,
२४३,२४५,२६२,२६५,२६६,२७१,२७२,
२७४,२७७;५।८,१०,३६,४७;६।१६ से २४;
७।१७८ सू २।१;८।१;१३।१२,१५;१५।८ से
१३;१८।१४ से १७;२०।२ उ ३।५१
पुरत्थिमपच्चत्थिम (पौरस्त्यपाश्चात्य) सू २।१;
८।१
पुरत्थिमलवणसमुद्द (पौरस्त्यलवणसमुद्र) ज ४।२६८
पुरत्थिमिल्ल (पौरस्त्य) प १६।३४ ज १।२०;२३,
४८;२।११७;३।२६,६५,६७,६६,१३५,१५१,
१५६,१७०,२०४,२१४;४।१,२३,५५,६२,८१,
८६,६८,१०८,१४३,१४७,१५६,१७२,२२६,
२२७,२३७,२३८,२६२;५।१४,४४;७।१७८
सू २।१;१०।१४७;१३।१५
पुरवर (पुरवर) ज ३।३२,३५,२२१
पुरा (पुरा) ज १।१३,२०,३३,३७;४।२
पुराण (पुराण) ज ३।१६७
पुरिसकंठभाओवगता (पूर्वकण्ठभागोपगता) सू ६।४
पुरिमड्ढ (पूर्वार्द्ध) प १६।३०
पुरिमताल (पुरिमताल) ज २।७१
पुरिमड्ढ (पूर्वार्द्ध) प १६।३०;१७।१६५
पुरिस (पुरुष) प १।६०,६६,७५,७६,८१,८४;
२।६४।१६;३।१८३;६।७६;१६।४८,५२,५४;
१७।१०८,१०६,१११ ज ३।७,८,१५,१६,२१,
३१,३४,३५,७७,८१,१२५,१६७।४,१७३,
१७६,१७८,१८३,१६६,२००,२१२,२१३
चं ४।२ सू १८।२;२०।७ उ १।१७,१८,४४,
४५,१२३,१३१;३।११०,१११;४।१६ से १८;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५।५,१५ से १८
पुरिसकार (पुरुषकार) सू २०।९।३
पुरिसक्कार (पुरुषकार) प २३।१९,२० ज २।५१, ५४,१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४, १६०,२६३;३।१२६,१८८;७।१७८ सू २०।१
पुरिसच्छाया (पुरुषच्छाया) ज ७।२२,२५ सू २।३
पुरिसजुग (पुरुषयुग) ज २।८४
पुरिसवरगंधहत्थि (पुरुषवरगन्धहस्तिन्) ज ५।२१
पुरिसवरपुंडरीय (पुरुषवरपुण्डरीक) ज ५।२१
पुरिसलिंगसिद्ध (पुरुषलिङ्गसिद्ध) प १।१२
पुरिसवेद (पुरुषवेद) प १८।६१;२३।१४२,१८७; २८।१४०
पुरिसवेदग (पुरुषवेदक) प ३।९७;१३।१४,१८,१९
पुरिसवेय (पुरुषवेद) प २३।२९,७४,८४,१४४
पुरिसवेयग (पुरुषवेदक) प १३।१५
पुरिसवेयपरिणाम (पुरुषवेदपरिणाम) प १३।१३
पुरिससीह (पुरुषसिंह) ज ५।२१
पुरिसादाणीय (पुरुषादानीय) उ ३।१२,२९,७९; ४।१०,११,१३,१४,१९
पुरिसोत्तम (पुरुषोत्तम) ज ५।२१
पुरीष (पुरीष) उ ३।१३०,१३१,१३४
पुरेक्खड (पुरस्कृत) प १५।८३ से ८५,८७,८९ से १०१,१०३ से १०६,१०८ से ११०,११२ से १२३,१२५ से १३२,१३५ से १४३;३६।८ से २६,३० से ३४,४४,४५,४७
पुरेखडिय (पुरस्कृतक) प १५।५८।२
पुरोहियरयण (पुरोहितरत्न) ज ३।१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६,२१९,२२०
पुरोहियरयणत्त (पुरोहितरत्नत्व) प २०।५८
पुलग (पुलक) प १।५८ ज १।५;५।५
पुलय (पुलक) प १।२०।४ ज ३।३५
पुलाकिमिया (दे०) प १।४९
पुलिंद (पुलिन्द) प १।८९
पुलिंदी (पुलिन्दी) ज ३।११।२
पुलिण (पुलिन) ज ४।१३ सू २०।७
पुलिय (पुलित) ज ३।१७८;७।१७८
पुव्व (पूर्व) प १६।२१;३६।९२ ज २।४,१६१; ३।१८५,२०९,२२१;४।१३५,२३८;७।३८, २१२ चं १।३ सू ३।१।८।१;१८।१,२१ उ १।९६,१०९,११०,११३,११४
पुव्वंग (पूर्वाङ्ग) ज २।४;७।११७।१ सू ८।१; १०।८६।१
पुव्वंभाग (पूर्वभाग) सू १०।४,५
पुव्वकोडाकोडि (पूर्वकोटिकोटि) ज ३।१८५,२०९
पुव्वकोडि (पूर्वकोटि) प ४।१०७,१०९,११३,११५, ११६,११८,११९,१२१,१३१,१३३,१३७,१३९, १४०,१४२,१४६,१४८;१८।४,६०,८१,८४, ८९,९६;२३।७८,७९,१४७,१५८,१६२,१६५, १६९ ज २।१२३,१५१;३।१८५,२०९;४।१०१
पुव्वग (पूर्वक) प ११।४६
पुव्वचिंतिय (पूर्वचिन्तित) उ ३।७९
पुव्वण्णत्थ (पूर्वन्यस्त) ज ५।४२
पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) ज २।७१,८८
पुव्वदारिया (पूर्वद्वारिका) सू १०।१३१
पुव्वपडिवण्ण (पूर्वप्रतिपन्न) उ ३।८१,८२
पुव्वपोट्ठवया (पूर्वप्रौष्ठपदा) सू १०।६४
पुव्वफग्गुणी (पूर्वफल्गुनी) ज ७।१२८,१२९,१३६
पुव्वभद्दवया (पूर्वभद्रपदा) ज ७।१२८,१२९,१३६, १३९,१४२ सू १०।६
पुव्वभव (पूर्वभव) उ ३।९,२१,२६,१४९,१५६, १६९,१७१;४।५,२८
पुव्वभाव (पूर्वभाव) प २८।९८ से १०१
पुव्वरइतगुणसेढीय (पूर्वरचितगुणश्रेणिक) प ३६।९२
पुव्वरत्त (पूर्वरात्र) उ १।५१,६५,७६;३।४८,५०, ५५,५७,६६,७२,७५,७९,८८,१०६,१३१
पुव्ववण्णिय (पूर्ववर्णित) ज २।५२,१६१;३।१७१; ४।९६,१०१,१०९,१६०,२३७,२४३;५।६,७; ७।३५,१६७
पुव्वविदेह (पूर्वविदेह) प १६।३०;१७।१६१ ज २।६;४।९६,९९,२१३,२६३।१
पुव्ववेयाली (पूर्व 'वेयाली') प १६।४५

पुव्वसंगइय (पूर्वसांगतिक) उ ३।५५
पुव्वसयसहस्स (पूर्वशतसहस्र) ज २।६४,८७,८८; ३।१८५,२२५
पुव्वाणुपुव्वी (पूर्वानुपूर्वी) उ १।२,१७;३।२६,६६, १३२,१४६,१५६;४।११;५।३६
पुव्वा (पूर्व) सू १०।५,१२०;११।३;१२।२३
पुव्वापोट्ठवता (पूर्वप्रौष्ठपदा) सू १०।५६
पुव्वापोट्ठवया (पूर्वप्रौष्ठपदा) सू १०।४,५,६,२१, २३,३१,८२,६६,१३१,१३२
पुव्वाफग्गुणी (पूर्वफल्गुनी) ज ७।१४०,१४८, १५१,१६३ सू १०।२ से ६,१५,२३,४४,६२, ७०,७५,८३,१०६,१२०,१३१ से १३३,१५२; १२।२३
पुव्वाभद्दवया (पूर्वभद्रपदा) ज ७।१४६,१५७ सू १०।२,३,५,७५,१३१,१३३
पुव्वामेव (पूर्वमेव) प ३६।६२ उ ४।२१
पुव्वावर (पूर्वापर) ज १।२६;४।२१,१४२,२५६; ६।१०,११,१४,१५,१८ से २२,२६;७।४,६३, ८७,११०,१८३
पुव्वासाढा (पूर्वाषाढा) ज ७।१२८,१३६,१४०, १४६,१६७ सू १०।२ से ६,१६,२३,५३,६२, ७४,८३,११८,१३१ से १३५
पुव्विं (पूर्वम्) उ ३।११८
पुव्विल्ल (पूर्वीय) ज ५।४१
पुव्वोववण्णग (पूर्वोपपन्नक) प १७।४,६,१६,१७
पुस (पुष्य) ज ७।१२६।१
पुस्स (पुष्य) ज ७।१३६,१४०,१४६,१६१,१६२ सू १०।२,३,५,६,१३,२४,४१,६२,६८,६६, ७५,८३,१०६,१२०,१३१ से १३३,१५६; ११।६;१६।२२।१७
पुस्सदेवया (पुष्यदेवता) सू १०।८३
पुस्सफल (पुष्यफल) प १।४८।४८
पुस्सायण (पुष्यायण) ज ७।१३२।२ सू १०।६८
पुहत्त (पृथक्त्व) प ७।३,६ से ६;११।८१,८३,८४; १२।६;१५।६;१८।४,१६,२४,३१,३६,४६,५४, ६०,६१,११३,११६;२२।४४ से ४७,४७।१, २,६,२१।६८;२४।१४,१५;२५।२,४;२७।२,६; २८।२७,७३ से ७६,१२१,१२४,१२७ से १३२,१३६,१४३,१४५;३६।१७,३४
पुहत्तय (पार्थक्त्विक) प ११।८५
पुहवी (पृथ्वी) ज ३।३,३५;५।१०।१
पूअफलीवण (पूगफलीवन) ज २।६
पूइ (पोई) प १।३५।३
पूइत्त (पूतित्व) ज २।६
पूइय (पूजित) ज ३।८१;५।५
पूजित (पूजित) उ ३।४८,५०
पूय (पूज) प १।८४;२।२० से २७ ज ३।१२० उ १।५६,६१,६२ ८४,८६,८७
पूयणय (दे०) प १।६५
पूयणवत्तिय (पूजनप्रत्यय) ज ५।२७
पूयणिज्ज (पूजनीय) सू १८।२३
पूयफली (पूगफली) प १।४३।२
पूया (पूजा) उ ३।५१
√पूर (पूरय्) पूरयंते ज ३।३१ पूरेइ प ३६।८५ ज ७।११२।५ पूरेंति ज ५।१३ पूरेति सू १०।१२६।५
पूरग (पूरक) ज ३।८८
पूरयंत (पूरयत्) ज २।६५;३।३१
पूरिम (पूरिम,पूर्य) ज ३।२११
पूरेंत (पूरयत्) ज ३।३०,४३,५१,६०,६८,१३०, १३८ से १४०,१४६;७।१७८
पूरेत्ता (पूरयित्वा) ज ५।१३
पूस (पुष्य) ज ७।१२८,१३०,१८६।३ सू १०।४; १२।१६ से २३,२६
पूसफली (पुष्यफली) प १।४०।१
पूसमाणय (पुष्यमाणव) ज ३।१८५
पूसमाणव (पुष्यमाणव) २।६४;५।३२
पेच्छणिज्ज (प्रेक्षणीय) ज २।१५
पेच्छा (प्रेक्षा) ज २।२०,३२
पेच्छाघरसंठिल (प्रेक्षागृहसंस्थित) सू ४।२
पेच्छाघरमंडव (प्रेक्षागृहमण्डप) ज ३।१६३;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।१२३,१२४;५।३३
पेच्छिज्जमाण (प्रेक्ष्यमान) ज २।६५;३।१८६,२०४
पेज्ज (प्रेयस्) प ११।३४।१;२२।२०
पेज्जणिस्सिया (प्रेयोनिश्रिता) प ११।३४
पेढ (पीठ) ज ४।१४३,२०८;५।१३
पेम्म (प्रेमन्) ज २।२७
पेरंत (पर्यन्त) ज १।१६;३।१२६।४;४।१४३,
२४५,२४६,२५१;७।१७८
पेलव (पेलव) ज ३।२११;५।५८
पेस (प्रेष्य) ज २।२६
√**पेस** (प्र+इष्) पेसिज्जइ उ १।१२८ पेसेइ
उ १।११० पेसेमि उ १।१०६ पेसेमो
उ १।१२७ पसेह उ १।१०७ पेसेहि उ १।११५
पेसल (पेशल) प १७।१३४
पेसित्तए (प्रैषितुम्) उ १।१०७
पेसिय (प्रेषित) उ १।११६,१२७
पेसुण्ण (पैशुन्य) प २२।२०
√**पेह** (प्र+ईक्ष्) पेहति प १५।५०
पेहमाण (प्रेक्षमाण) प १५।५०
पेहुणमिंजिया ('पेहुण' मञ्जिका) प १७।१२८
पोंडरीय (पौण्डरीक) प १।४६,७६ ज ४।३,२५
पोंडरीयदल (पौण्डरीकदल) प १७।१२८
√**पोक्ख** (प्र+उक्ष्) पोक्खेइ उ ३।५१
पोक्खरत्थिभय (पुष्करास्थिभाग) ज ४।७
पोक्खरपत्त (पुष्करपत्र) ज ३।१०६
पोक्खरवर (पुष्करवर) सू १६।१५।१,२
पोक्खरवरदीव (पुष्करवरद्वीप) सू १६।१५
पोक्खल (पुष्कर) प १।४६
पोक्खलत्थिभय (पुष्करास्थिभाग) प १।४६
पोक्खलावतीचक्कवट्टिविजय
(पुष्कलावतीचक्रवर्तिविजय) ज ४।१६७
पोग्गल (पुद्गल) प १।८४;३।१।२,१२४,१७५,
१७६,१८० से १८२;५।१४०,१४३,१४५,
१४७,१५०,१५४,२३३,२३४,२३६ से २३९,
२४१,२४२;६।२६;१५।४० से ४७,४९;
१६।३३,३४;१७।२,२५;२१।१।१,६५,६६;
२३।१३ से २३;२८।२०,२२ से २४,३२,३४,
३६,३९ से ४२,४४,४५,४८,६६,६८ से ७१,
१०५;३४।१।१,३४।६,१९,२०;३६।५९,६१,
६२,६६,७०,७३,७४,७६,७७,७९ से ८१;
ज २।६;३।१९२;५।५,७;७।२११ सू ५।१;
७।१;९।१;२०।२
पोग्गलगति (पुद्गलगति) प १६।३८,४३
पोग्गलत्थिकाय (पुद्गलास्तिकाय) प ३।११४
११५,१२०,१२२
पोग्गलपरियट्ट (पुद्गलपरिवर्त) प १८।३,२७,४५,
५९,६४,७७,८३,९०,१०८
पोच्चड (दे०) उ ३।१३०
पोट्ट (दे०) ज २।४३
पोट्टलिया (पोट्टलिका) ज ५।१६
पोट्ठवई (प्रौष्ठपदी) ज ७।१३९,१४२,१४८,१५१,
१५५
पोट्ठवती (प्रौष्ठपदी) सू १०।७,९,२१,२३,२६
पोट्ठवय (प्रौष्ठपद) सू १०।५,१२०,१५३
पोडइल (पोटगल) प १।४२।१ नल तृण
पोत्तिया (दे०) प १।५१।१
पोत्तिय (पौत्रिक) उ ३।५०
पोत्थगग्गाह (पुस्तकग्राह) ज ३।१७८
पोत्थयरयण (पुस्तकरत्न) ज ४।१४०
पोत्थार (पुस्तकार) प १।९७
पोरग (पोर) प १।४४।१ इक्षु
पोराण (पुराण) प २८।२०,२६,३२,६६
ज १।१३,३०,३३,३६;४।२
पोरिसिच्छाया (पौरुषीच्छाया) सू १।६।३;९।१ से ३
पोरिसी (पौरुषी) ज ७।१५६ से १६७ सू १०।६४
से ७४
पोरिसीच्छाया (पौरुषीच्छाया) चं २।३
पोरेवच्च (पौरपत्य पौरोवत्य) प २।३० से ३३,
३५,४१,४८ से ५१ ज १।४५;३।१८५,२०९,
२२१;५।१९ उ ५।१०
पोलिंदी (पौलिन्दी) प १।९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोस (पौष) ज २।१६;७।१०४ सू १०।१२४ उ ३।४०
पोसह (पौषध) ज २।१३५
पोसहघर (पौषधगृह) ज ३।३२
पोसहसाला (पौषधशाला) ज ३।१८ से २१,३१,३३,३४,५२ से ५४ ५८,६१,६३,६६,६९,७०,७१,७४,८४,८५,१३७,१३९,१४१ से १४३,१४७,१६४ से १६८,१८० से १८३,१९०,१९९ उ ५।३५
पोसहिय (पौषधिक) ज ३।२०,३३,३५,५४,६३,७१,८४,१३७,१४३,१६७,१८२
पोसहोववास (पौषधोपवास) प २०।१७,१८,३४,
पोसी (पौषी) ज ७।१३७,१४०,१४६,१४९,१५५, सू १०।७,१३,२२,२३,२६
पोहत्त (पृथक्त्व) प १५।१।१,१५।८ से १०,२३,३०,१४०;२४।९
पोहत्तिय (पार्थक्त्विक) प २२।२५,२८;२३।८,१२

फ

फग्गुण (फाल्गुन) ज २।७१;७।१०४ सू १०।१२४ उ ३।४०
फग्गुणी (फल्गुनी) ज ७।१३७,१४०,१४९,१५३,१५५;१०।१२०;१२।२३ सू १०।७,१५,२३,२५,२६,१२०,१५३,१५८;१२।२३
फणस (पनस) प १।३६।१;१६।५५;१७।१३२
फणिज्जय (फणिज्झक) प १।४४।३ मरुआ
फरिस (स्पर्श) ज ३।८२,१८७,२११,२१८;५।५८ सू २०।७ उ ५।२५
फरुस (परुष) ज २।१३१,१३३
फल (फल) प १।३५,३६;१।४८।९,१८,२८,६३;२३।१३ से २३ ज १।१३,३०,३३,३६;२।८,९,१२,१६,१७,१८,७१,१४५,१४६;३।११७,२२१;४।२;७।११२।३,४ सू १०।१२०,१२९।३,४ उ १।३४,९८,९९;३।५०,५३,९८,१०१,१३१;५।६
फलग (फलक) प ३६।६१ ज ३।३१ उ ३।३६
फलगग्गाह (फलकग्राह) ज ३।१७८
फलय (फलक) ज ४।२६ उ १।१३८
फल (वासा) (फलवर्षा) ज ५।५७
फलविंटिय (फलवृन्तक) प १।५०
फलहसेज्जा (फलकशय्या) उ ५।४३
फलासव (फलासव) प १७।१३४
फलाहार (फलाहार) उ ३।५०
फलिय (फलित) उ ३।४९
फलिहकूड (स्फटिककूट) ज २।५१,५९
[1]**फलिहामय** (स्फटिकमय) सू १८।८
फाणिय (फाणित) प १५।१।२,१५।५०
फालिय (स्फटिक) ज ४।३,२५
फालियामय (स्फटिकमय) प २।४८ ज ७।१७६,१७८
फास (स्पर्श) प १।४ से ९;२।२० से २७,३०,३१,४१,४८,४९;३।१८२;५।५,७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४,२८,३०,३२,३४,३७ ३९,४१,४५,५३,५६,५९,६१,६३,६८,७१,७४,७६,७८,८३,८६,८९,९१,९३,९७,१०१,१०४,१०७,१०९,१११,११५,११९,१२९,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७,१५०,१५२,१५४,१६३,१६६,१६९,१७२,१७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३,१९७,२००,२०७,२११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३०,२३२,२३४,२३७,२३९,२४२,२४४;१०।५३।१;११।५९;१५।३८,७७,८१,८२;१७।१३२ से १३४;२३।१३ से २३,१०९,२८।९,१०,२०,३२,५५,५६,६६;३४।११२;३६।८०,८१ ज १।१३;२।७,१८,६८,१४२;३।१३८;४।२७,४९,८२;५।१३२;७।२०९ सू २०।७,८,२०।८,४
फासओ (स्पर्शतस्) प १।५ से ९;११।६०;२८।१०,२०,२६,५६
फासचरिम (स्पर्शचरम) प १०।५२,५३

१ हे० ११।१९७

फासणाम (स्पर्शनामन्) प २३।३८,५०
फासतो (स्पर्शतस्) प १।६ से ६;२८।३२,६६
फासपज्जव (स्पर्शपर्यव) ज २।५१,५४,१२१,१२६, १३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,१६३; ७।२०६
फासपरिणाम (स्पर्शपरिणाम) प १३।२१,२६
फासपरियार (स्पर्शपरिचार) प ३४।२१
फासपरियारग (स्पर्शपरिचारक) प ३४।२८,२१,२५
फासपरियारणा (स्पर्शपरिचारणा) प ३४।१७,२१
फासमंत (स्पर्शवत्) प ११।५२,५६;२८।५,६,५१; ५५
फासविण्णाणावरण (स्पर्शविज्ञानावरण) प २३।१३
फासादेस (स्पर्शादेश) प १।२०,२३,२६,२६,४८
फासावरण (स्पर्शावरण) प २३।१३
फासिंदिय (स्पर्शेन्द्रिय) प १५।१,६,७,१० से १८, २० से २७,३०,३१,३५,४२,५८ से ६४,६६,७०, ७३,७४,८०,८५,१३३;२८।४२,४५,४६,७१ उ ३।३३
फासिंदियत्त (स्पर्शेन्द्रियत्व) प २८।२४,२६;३४।२०
फासिंदियपरिणाम (स्पर्शेन्द्रियपरिणाम) प १३।४
फासु (प्रासु) उ ३।३६
फासुय (प्रासुक,स्पर्शुक) उ ३।११४
फासुयविहार (प्रासुकविहार) उ ३।३०,३६
फासेंदिय (स्पर्शेन्द्रिय) प १५।१६,२८,३१ से ३३, ६४ से ६७,७६,१३४;२८।३६
फुट्ट (दे०) ज २।१३३
√फुट्ट (स्फुट्) फुट्टउ उ ५।७२ फुट्टिहि ज ५।७३
फुट्टमाण (स्फुटत्) ज ३।८२,१८७,२१८
फुड (स्पृष्ट) प १५।५३ से ५७;३६।५६,६०,६६ से ६८,७०,७१,७४,७५,८१ चं १।३
फुडित्ता (स्फुटित्वा) प ११।७८
फुडिय (स्फुटित) प २।१३३
फुल्ल (फुल्ल) ज ३।१८८
फुल्लावलि (फुल्लावलि) ज ५।३२
√फुस (स्पृश्) फुसइ ज ३।१२१ फुसई प २।६४।११ फुसंति प ११।७२ सू ५।१ फुसंतु ज ३।११२
फुसमाण (स्पृशत्) प १३।२३
फुसमाणगति (स्पृशद्गति) प १६।३८,३६
फुसित्ता (स्पृष्ट्वा) प १५।५१;१६।३६;३६।७६,८१ ज ३।१३१
फुसिय (स्पृष्ट) ज ५।७
फेण (फेन) ज ३।३५;४।१२५;५।६२;७।१७८
फेणमालिनी (फेनमालिनी) ज ४।२१२

ब

बउल (बकुल) प १।३५।१
बउस (बकुश) प १।८६
बंध (बन्ध) प ३।१।२;१३।२२।१,२;१४।१८।१; २६।१२ ज २।१३३
√बंध (बन्ध्) बंधइ प २३।३,१६८;२४।१३ से १५ उ ३।५५ बंधंति प १८।१८;२२।२२,२३, ८६,६०;२३।५,७,१३४,१३५,१३७ से १४०, १४२,१४३,१४६,१४७,१५१ से १५८,१६० से १६२,१६४,१६६,१६७,१६६,१७१ से १७४,१७६,१७७,१८१,१८५,१८६,१६०; २४।४,५,१० से १२,१५;२६।४,६ ज ५।१३ बंधति प २२।२१,८३,८६,८७;२३।१।१, २३।४,६,१६४ से १६६,१६८ से २०१;२४।२, ३,१०,१५;२६।२,३,८ बंधिंसु प १४।१७ बंधिस्संति प १४।१८ बंधेंसु प १४।१८ बंधेसि उ ३।७६
बंधग (बन्धक) प ३।१७४;२२।२२,२३,८४,६०; २३।६३; २४।४ से ८,१० से १३;२६।४ से ६,८ से १०;२७।५
बंधण (बन्धन) प २।६४।२२;१६।५५,३६।८२।१, ८३।१,६४।१ ज २।२७,२६,८६,८६,१३३; ३।२२५ उ १।६६,६८,७२,८८,६२
बंधणछेदणगति (बन्धनछेदनगति) प १६।१७,२३
बंधणपरिणाम (बन्धनपरिणाम) प १३।२१,२२
बंधणविमोयणगति (बंधनविमोचनगति) प १६।३८,५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधमाण (बध्नत्) प २२।२६,२७;२४।२ से ५,६ से १५;२५।२,४,५

बंधय (बन्धक) प १।१।६२;२२।२१ ८३,८६,८७; २३।१।१,२३।१६१ से १६३; २४।२,३,७,८, १०,१२;२६।२ से ४,६,८ से १०

बंधित्ता (बद्ध्वा) ज ५।१३ उ ३।५५

बंधुजीवग (बन्धुजीवक) प १।३८।१ ज २।१०; ३।३५

बंधेउकाम (बद्धुकाम) उ १।७३

बंधेत्ता (बद्ध्वा) ज ५।१६ उ ३।७६

बंभ (ब्रह्मन्) प २।५४;१५।८८ ज ७।१२२।१ सू १०।८४।१

बंभचेर (ब्रह्मचर्य) ज ७।१६६ सू १८।३

बंभचेरवास (ब्रह्मचर्यवास) उ ५।४३

बंभण्णय (ब्राह्मण्यक) उ ३।२८,३८,४०,४२

बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) ज ३।२०,३३,५४,६३,७१, ८४,१३७,१४३,१६७,१८२

बंभलोग (ब्रह्मलोक) प २।४६,५४,५५,६०;७।१२; ३३।१६; ३४।१६

बंभलोय (ब्रह्मलोक) प १।१३५;२।४६,५४ से ५७, ६३,३।३३,१८३;४।२४३ से २४५;६।३१,५६, ६५; २०।६१;२१।७०;२८।७६; ३४।१८ उ २।२२;५।२८

बंभलोयग (ब्रह्मलोकज) ज ५।४६

बंभलोयवडिंसय (ब्रह्मलोकावतंसक) प २।५४

बंभी (ब्राह्मी) प १।६८ ज २।७५

बकुल (बकुल) ज ३।१२,८८;५।५८

बग (बक) प १।७६

√बज्झ (बंध) बज्झति उ ३।१४२

बत्तीस (द्वात्रिंशत्) प २।२२ सू २।३ उ ३।१२६; ५।३५

बत्तीसइ (द्वात्रिंशत्) ज ३।१८६,२०४

बत्तीसइविह (द्वात्रिंशत्‌विध) ज ५।५७ उ ३।१५६

बत्तीसग (द्वात्रिंशत्) ज ७।१३३।१

बत्तीसजणवयसहस्सराय (द्वात्रिंशद्‌जनपदसहस्र-राजन्) ३।१२६।२

बत्तीसमंगुलमूसियसिर (द्वात्रिंशदङ्गुलोच्छ्रितशिरस्क) ज ३।१०६

बत्तीसविह (द्वात्रिंशत्‌विध) ज ३।१५६

बदर (बदरा) प १।३७।२ कपास का पौधा

बद्ध (बद्ध) प १५।५८।२; २०।३६; २३।१३ से २३ ज ३।२४,३५,७७,८२,१०७,१२४,१७८,१८६, १८७,२०४,२१४,२१८,२२१; ४।३,२५ उ १।१३८

बद्धग (दे०) ज ७।१७८ एक आभूषण

बद्धेल्लग (दे०) प १२।८ से १३,१६,२०,२१,२३, २४,२७,२८,३१ से ३३;१५।८३ से ८६,८६ से ६३,६५ से ६७,६६ से १०६,१०८ से १२३, १२५ से १३२,१३५,१३६ से १४१,१४३

बद्धेल्लय (दे०) प १२।७,८,१२,२०; १५।६४

बब्बर (बर्बर) प १।८६ ज ३।८१

बब्बरी (बर्बरी) ज ३।११।१

बम्ह (ब्रह्मन्) ज ७।१३०,१७६,१८६।३

बम्हदेवया (ब्रह्मदेवता) सू १०।७८

बरग (दे०) ज ३।११६ शालि विशेष

बरहिण (बर्हिन्) प १।७६

बल (बल) प २०।१।१;२३।१६,२० ज २।५१,५४, ६४,७१,१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६, १५४,१६०,१६३;३।३,१२,३१,७७,७८,८१, १०१,१०३,१०६,११७,१२६,१२६,१५१, १८०,१८८,२०६;४।२३६;;५।५,२२, २६,७।१७८ सू २०।१,७,६।३,५ उ १।६६, ६६;११५,११६;३।२।१,१७१

बलकर (बलकर) ज ३।१३८

बलकूड (बलकूट) ज ४।२३६,२३६

बलदेव (बलदेव) प १।७४,६१;६।२६ ज २।१२५, १५३;७।२०० उ ५।१० से १२,३०

बलदेवत्त (बलदेवत्व) प २०।५५

बलव (बलवत्) ज ५।५;७।१२२।१ सू १०।८४।१

बलवग (बलात्क) उ २।५

बलविसिट्ठया (बलविशिष्टता) प २३।२१

बलविहीणया (बलविहीनता) प २३।२२
बलाग (बलाक) ज ३।३५
बलागा (बलाका) प १।७९
बलावलोय (बलावलोक) ज ३।८१
बलाहगा (बलाहका) ज ५।६।१
बलाहया (बलाहका) ज ४।२१०,२३८
बलि (बलि) प २।३१,३३;४०।७ ज २।११३, ११६;५।५१ उ ३।५१,५६,६४
बलिकम्म (बलिकर्मन्) ज ३।५८,६६,७४,७७,८२, ८५,१२५,१२६,१४७ सू २०।७ उ १।१६, ७०,१२१;३।११०;५।१७
बलिपेढ (बलिपीठ) ज ४।१४०
बलिमोडय (दे०) प १।४८।४७
बव (बव) ज ७।१२३ मे १२५
बहल (बहल) ज ३।१०९
बहलतर (बहलतर) प १।४८।३० से ३३
बहलिय (बहलीक) प १।८९
बहली (बहली) ज ३।११
बहव (बहु) ज १।१३,३१;२।७,१०,२०,६५,१०१, १०२,१०४,१०९,११४ से ११६,१२०;३।१०, ८६,१०३,१७८,१८५,२०६,२१०;४।२२,८३, ९७,११३,१३७,१६६,२०३,२६६,२७६;५।२६, ७२ से ७४ सू १८।२३ उ ३।४८ से ५०,५५, ९२,१२३;५।१७
बहस्सइ (बृहस्पति) सू २०।८,२०।८।४
बहस्सइदेवया (बृहस्पतिदेवता) सू १०।८३
बहस्सति (बृहस्पति) प २।४८
बहस्सतिमहग्गह (बृहस्पतिमहाग्रह) सू १०।१२६
बहिं (बहिस्) प २।४८
बहिता (बहिस्तात्,बहिस्) सू १९।२२।२७
बहिया (बहिस्तात्,बहिस्) ज १।३; २।७१;७।५८ सू १।२;९।१।३;१९।२२।१ उ १।२;३।२९, ४६,४८,५०,५५,१४५;५।५,३३
बहु (बहु) प १।४८।५४;२।२० से २७,३० से ३५, ३७ से ३९,४१ से ४३,४६,४८ से ५५,५८ से ६१,६३,६४;३।१८३;९।२६;११।२२;१७। १३९;२२।१०१;३६।८२ ज १।४५; २।११,१२,५८,६५,८३,८८,९०,१२३, १२८ १३३,१३४,१४५,१४८,१५१,१५७; ३।९,११,२४,३२।१,८१,८७,१०३,१०४ १०५,११७,१७८,१८५,१८६,१८८,२०४, २०९,२१६,२१९,२२१,२२२,२२५;४।२,३, २५,२८ से ३०,३४,६०,१४०,१५९,२४८, २५०,२५१,२५२;५।१,५,१९,४३,४६,४७, ६७;७।११२।१,२,७।१६८,१८५,१९७,२१३, २१४ चं २।४ सू १।६।४;२।१;१०।१२९।१, २;१४।१ से ८;१८।२३;१९।१६;२०।७ उ १।१९,४१,४३,५१,५२,७६,७७,९३,९८; २।१०,१२;३।११,१४,२८,५५,८३,१०१,१०६, १०९,११४,११५,११९,१२०,१३० से १३२, १३४,१५०,१६१,१६९;४।२४;५।७,१०
बहुआउपज्जव (बह्वायुःपर्यव) ज १।२२,२७,५०
बहुउच्चत्तपज्जव (बहूच्चत्वपर्यव) ज १।२२,२७,५०
बहुग (बहुक) प २।४९,५०,५२,५३,५५,६३
बहुजण (बहुजन) ज ३।१०३
बहुणाय (बहुज्ञात) उ ३।१०१
बहुतराग (बहुतरक) प १७।१०८ से १११
बहुतराय (बहुतरक) प १७।२,२५
बहुपडिपुण्ण (बहुप्रतिपूर्ण) ज २।८८;३।२२५ उ १।३४,४०,४३,५३,७४,७८;२।१२;५।२८, ३९,४१
बहुपढिय (बहुपठित) उ ३।१०१
बहुपरियार (बहुपरिवार) उ ३।९९,१५९;५।२६
बहुपरिवार (बहुपरिवार) उ ३।१३२
बहुपुत्तिय (बहुपुत्रिक) उ ३।९०,१२०
बहुपुत्तिया (बहुपुत्रिका) उ ३।२।१,९०,९२,९४, १२०,१२५;४।५
बहुप्पयार (बहुप्रकार) ज २।१३१
बहुबीयग (बहुबीजक) प १।३४,३६
बहुबीया (बहुबीजक) प १।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुमज्झदेसभाग (बहुमध्यदेशभाग) ज १।३७; ४।३५ सू १९।१६

बहुमज्झदेसभाय (बहुमध्यदेशभाग) ज १।१०,१९, ४०,४२,४३;३।१,९७,१६१,१६३,१६४,१६७; ४।३,६,९,१२,३१,३३,४१,४७,४९,५७,५९, ६४,६८,७०,७६,८४,८८,९३,९८,११२,११८, ११९,१३९,१४१,१४३,१४५ से १४७,१५६, १६८,१७७,२०७,२०८,२१३,२१८,२२१,२४२, २४८,२५०,२५२,२६६,२७२;५।१३

बहुमय (बहुमत) उ ३।१२८

बहुय (बहुक) प १।४७।३,१।४८।५४;३।३८ से १२०, १२२ से १२४,१७४,१७९ से १८२;६।१२३; ८।५,७,९,११;९।१२,१९,२५;१०।३ से ५,२६ से २९;११।७९,९०;१५।१३,१६,२६,२८,३१, ३३,६४;१७।५६ से ६९,७१ से ७६,७८ से ८३,१०६,१०७,१४४ से १४६;२०।६४; २१।१०४,१०५;२८।४१,४४,७०;३४।२५; ३६।३५ से ४१,४८,४९ सू १८।३७

बहुल (बहुल) प २।४१ ज २।१२,६४,६५,७१, ८८,१३३,१३४,१३८;४।२७७;७।१२६

बहुलपक्ख (बहुलपक्ष) ज ७।११५,१२५ सू २०।३

बहुवत्तव्व (बहुवक्तव्य) प १।१४

बहुवयण (बहुवचन) प ११।८६

बहुविह (बहुविध) प २।६४।१७;१७।१३९ ज ३।९,२२२

बहुसंघयण (बहुसंहनन) ज १।२२,२७,५०

बहुसंठाण (बहुसंस्थान) ज १।२२,२७,५०

बहुसच्च (बहुसत्य) ज ७।१२२।१ सू १०।८४।१

बहुसम (बहुसम) प २।४८ से ५१,६३;३।३६; १७।१०७,१०९,१११ ज १।१३,२१,२५,२६, २८,२९,३२,३३,३६,३७,३९,४०,४२,४९; २।७,१०,३८,५२,५६,५७,१२२,१२७,१४७, १५०,१५६,१५९,१६१,१६४;३।८१,१९२, १९३,१९६,१९७;४।२,३,८,९,११,१२,१६, ३२,४६,४७,४९,५०,५६,५८,५९,६३,६९,७०, ८२,८७,८८,१००,१०४,१०९,१११,११२, ११७,११८,१३१,१६६,१७०,१७९,२३४,२४० से २४२;२४७,२४८,२५०;५।३२,३५ सू २।१; ९।३;१८।१,२०।७

बहुस्सुय (बहुश्रुत) उ ३।९९,१५९;५।२६

बाउच्चा (बाकुची) प १।३७।२

बाण (बाण) प १।३८।२ बाण का फल

बाणउति (द्वानवति) सू १।१९।१;१९।१५।१

बाणउय (द्वानवति) ज १।४८

बाणकुसुम (बाणकुसुम) प १७।१२४

बाताल (द्विचत्वारिंशत्) सू १३।१

बातालीस (द्विचत्वारिंशत्) सू १९।१;२१।२

बादर (बादर) प २।१,२,४,५,७,८,१०,११,१३, १४;३।७२ से ९५,१११,१८३;४।६२ से ६४, ६९,७०,७६,७७,८५ से ८७,९२ से ९४;६।८३, १०२;११।६४;१८।४१ से ४४,४६,४७,४९, ५०,५४,११७;२१।४,५,२५,४०,४१,५०; २८।१४,१५,६०,६१ सू २०।१

बादरआउक्काइय (बादरअप्कायिक) प १।२१,२३

बादरकाय (बादरकाय) प १।२०।२

बादरणाम (बादरनामन्) प २३।३८,११९

बादरतेउक्काइय (बादरतेजस्कायिक) प १।२४,२६

बादरवणस्सइकाइय (बादरवनस्पतिकायिक) प १।३०,३२,३३,४७,४८

बादरवाउकाइय (बादरवायुकायिक) प १।२७,२९

बादरसंपराय (बादरसंपराय) प १।११४

बायर (बादर) प ६।१०२;११।६५,६९।१;१८।५२; २१।२३,२४,२६,२७ ज ७।४३

बायरसंपराय (बादरसम्पराय) प १।११२;२३।१९२

बायाल (द्विचत्वारिंशत्) ज ४।८६,१०८ सू ३।१

बायालीस (द्विचत्वारिंशत्) प २।६४ ज २।६ सू ३।१ उ ५।९

बायालीसविह (द्विचत्वारिंशत्विध) प २३।३८

बार (द्वादश) प १०।१४।३

बारवई (द्वारवती) उ ५।४,५,९,११,१९,३०,३३

बारवती (द्वारवती) प १।९३।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारस (द्वादशन्) प १।७४ ज १।८ सू ३।१ उ ५।४५

बारस (द्वादश) ज ७।११४।२ सू १०।१२४।२

बारसग (द्वादशक) प २३।६८,१४०,१८३,१८४

बारसम (द्वादश) प १०।१४।२ सू १०।७७; १२।१७;१३।८

बारसविह (द्वादशविध) प १।१३५; २१।५५

बारसाह (द्वादशाह) उ १।६३; ३।१२६

बारसी (द्वादशी) ज ७।१२५

बाल (बाल) ज २।६५; ३।२४;७।१७८

बालग (बालक) ज १।३७

बालचंद (बालचन्द्र) उ ३।२४

बालदिवागर (बालदिवाकर) प १७।१२६

बालभाव (बालभाव) उ ३।१२७,१२८; ५।४३

बालव (बालव) ज २।१३८;७।१२३ से १२६

बालिंदगोव (बालेन्द्रगोप) प १७।१२६

बालुया (बालुका) ज ४।१३

बावट्ठ (द्वाषष्टि) ज ४।४७

बावट्ठि (द्विषष्टि) प २१।६७ सू १०।१३७

बावण्ण (द्विपञ्चाशत्) ज १।१७ सू १।२१

बावत्तर (द्वासप्तति) ज ४।११०

बावत्तरि (द्वासप्तति) प २।३० ज २।६४ सू २।३; १९।११;२१।३

बावीस (द्वाविंशति) प ४।१९ ज २।८१ चं ५।४ सू १।९

बावीसइम (द्वाविंशतितम) प १०।१४।५

बावीसग (द्वाविंशतितम) प १०।१४।४

बासीत (द्वयशीति) सू १।१२

बाहल्ल (बाहल्य) प १।७४;२।२१ से २७,३० से ३६,४१ से ४३,४६,४८,६४;१५।१।१;१५।७, २२.३०;२१।८४,८६,८७,९० से ९३;३६।५९, ६६,७०,७४ ज १।४३;२।१४१ से १४५; ४।६,७,१२,१४,१५,२४,३९,६६,७४,९१, ११४,११८,१२३,१२४,१२६ से १२८,१३२, १३९,१४०,१४३,१४५,१४७.२१७,२४५, २४८,२५७,२५८,२५९;५।३५;७।७,६६,९०; १७७।१,२,३ सू १।२६,२७;१८।१,९ से १३

बाहा (बाहु) ज १।२३,४८;२।१५;३।९९ से १०१; ४।१,२६,५५,६२,८१,८६,९८,११५,१७२; ५।१४,१७;७।३१,३३,१६८।१.१७८ सू ४।३, ४,६,७ उ ३।५०

बाहाओ (बाहुतस्) सू ४।३,४,६,७

बाहिं (बहिस्) प २।२० से २७,३० से ३९.४१ से ४३; ३३।२७ से २९ ज १।१२,३१;४।४९, ११४,२३४,२४०; ७।३१,३३,१६८।१ सू ४।३, ४,६,७;१९।२२।१५,१९

बाहिर (बाह्य) प १।४८।४५; १।१०१।६; १५।५५;३३।१।१ ज २।१२;४।७.२१;५।३९; ७।१० से १३.१६,१८.१९,२२,२५.२७ से ३०,३५,५५,५८,६९ से ७२,७५,७७,७८,८१, से ८४,९६,१२९।१,१७५ सू १।११,१२,१४, १६,१७,२१,२२.२४,२७ से ३१;२।३;३।२; ४।९; ६।१;९।१,२;१०।७५;१३।१३ से १६; १९।२२।१२; १९।२३,२६;२०।७

बाहिरओ (बाह्यतस्) ज ३।२४।१,१३१।१; ७।१२९

बाहिरपुक्खरद्ध (बाह्यपुष्करार्द्ध) सू १९।१६

बाहिरय (बाहिरक, बाह्यक) ग १।७५,८०,८१ ज ७।५,१७,६४,७६,८८ सू १।१२

बाहिरिया (बाहिरिका) ज ३।५,७,१२,१७,२१, २८,३४,४१,४९,५८,६६.७४,७७,१३५,१४७, १५१,१७७,१८४,१८८,२१९;४।१९;७।३१, ३३ सू ४।३,४,६,७ उ १।१९,४१,४२,१२४; ४।१२;५।१९

बाहिरिल्ल (बाह्य) प २१।९० सू १८।७

बाहु (बाहु) ज ३।१२७;५।५

बि (द्वितीय) प १०।१४।४ से ६ सू १।२६

बि (द्वि) ज ४।९३; ६।१४ सू १।२६

बिइंदिय (द्वीन्द्रिय) प १७।९६

बिइय (द्वितीय) प २।३१; ३६।८५ ज ३।३;

७।१०७ उ २।२२;३।६४
बिइया (द्वितीया) ज ७।११७,१२५ सू १०।१४८, १५०
बिइयादिवस (द्वितीयादिवस) ज ७।११६
बिंदु (बिन्दु) प १।१०।१७;१५।२६;२१।२४ ज ३।१०६;७।१३३।२
बिंब (बिम्ब) प २।३१,३२
बिंबफल (बिम्बफल) प २।३१ ज ३।३५
बिंहणिज्ज (बृंहणीय) ज २।१८
बिगुण (द्विगुण) ज २।४
बिडाल (बिडाल) प १।६६ ज २।३६
बितिय (द्वितीय) प ११।४२,८८;१२।१२,३८; २२।३३,४१;३६।८७ ज ३।१९५;४।१४२।३ सू १०।७२,७७,८५,८७;१३।१,८;१४।३,७ उ १।६३
बितियादिवस (द्वितीयादिवस) सू १०।८५
बितियाराति (द्वितीयरात्रि) सू १०।८७
बिब्बोयण (दे०) ज ४।१३
बिभेलय (बिभीतक) प १।३५।२
बिराल (बिडाल) ज २।१३६
बिल (बिल) प २।४,१३,१६ से १९,२८ ज २।१३४,१४६
बिलपंतिया (बिलपङ्क्तिका) प २।४,१३,१६ से १९,२८ ज ४।६०,११३
बिलवासि (बिलवासिन्) ज २।१३३ उ ३।५०
बिल्ल (बिल्व) प १।३६।१;१६।५५;१७।१३२ सू १०।१२०
बिल्लाराम (दे०) उ ३।४८,५५
बिल्ली (चिल्ली) प १।३७।२ एकसण, बथुआ
बिल्ली (बिल्वी) प १।४४।१
बीभच्छ (बीभत्स) उ ३।१३०
बीय (बीज) प १।४५।२,१।४८।१९,२९,५१,६३; ३६।६४ ज २।१०,१३३;३।१६७।३ उ ३।५१, ५३
बीय (द्वितीय) प १२।१२ सू १०।७७
बीयय (बीजक) प १।३८।१ बिजौरानीबु
बीयरुइ (बीजरुचि) प १।१०१।११,७
बीयरुह (बीजरुह) प १।४८।३
बीय (बासा) (बीजवर्षा) ज ५।५७
बीयविंटिय (बीजवृन्तक) प १।५०
बीयाहार (बीजाहार) उ ३।५०
√बुक्कार (दे०) बुक्कारेंति ज ५।५७
√बुज्झ (बुध्) बुज्झइ प ३६।८८ बुज्झंति प ६।११० ज १।२२,५०;२।५८,१२३,१२८; ४।१०१ बुज्झति प ३६।९१ बुज्झिहिइ उ १।१४१;३।८६;५।४३ बुज्झिहिंति ज २।१५१,१५७ बुज्झेज्जा प २०।१७,१८,२९,३४
बुज्झित्ता (बुद्ध्वा) उ ५।४३
बुद्ध (बुद्ध) प २।६४।२१ ज २।८८,८९;३।२२५; ५।५,२१,४६,५८
बुद्धंत (बुध्नान्त) सू २०।२
बुद्धबोहिय (बुद्धबोधित) प १।१०५,१०७,१०८, १२०
बुद्धबोहियसिद्ध (बुद्धबोधितसिद्ध) प १।१२
बुद्धि (बुद्धि) ज ३।३,३२;४।२६९।१ उ ४।२।१
बुध (बुध) सू २०।८
√बुय (ब्रू) बुयापि प ११।११,१६
बुयमाण (ब्रुवाण) प ११।११,१६
बुह (बुध) प २।४८ सू २०।८।४
√बू (ब्रू) बेमि सू १०।१७३ उ १।१४२;२।१४; ३।१९;५।४४
बूर (दे०) प २०।७
बे (द्वि) प १२।३७ सू १३।६
बेइंदिय (द्वीन्द्रिय) प १।४९;२।६;३।७,४० से ४२,४५,४९,१४४,१४५,१८३;४।९५ से ९७; ५।३,१९,२०,६७,६८,७०,७१,७३,७४,७८; ६।२०,५४,६४,७१,८३,८६,१०२,१०४,११५; ९।४,२२;११।४५;१२।२७,१३।१७,१५।३० से ३३,७५,८०,८६,१३७;;१६।६,१३;१७।४०,६२,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०३;१८।१५,२१;१९।३;२०।८,२३,२८,३२,
४७;२१।६,२८,४२,८६,८८;२२।३१;२३।८६,
१५१,१५५ से १५७,१६३,१६६,१६७,१७५;
२८।३७ से ४०,४२,१००,१०३,११९,१२५,
१३६;२९।११ से १३,२१;३०।१० से १२,
२०,२१;३१।३;३६।३९,९२

बेइंदियत्त (द्वीन्द्रियत्व) प १५।९७,१४२

बेंटट्ठाइ (वृन्तस्थायिन्) ज ५।७

बेंदिय (द्वीन्द्रिय) प १।१४,४९;३।४२,४५,४९,
१४६;५।५७;६।७१

बेतेयालसतविह (द्वित्रिचत्वारिंशत्शतविध)
प १७।१३९

बेयाहिय (द्व्याहिक) ज २।४३

बेहिय (द्व्याहिक) अ २।६

बोंडइ (दे०) प १।३७।१

बोंदि (दे०) प २।३०,३१,४१,४९;६।४२,३
ज ५।१८

बोद्धव्व (बोद्धव्य) प १०।१४।२;३४।१।२
ज ४।१५६।१,१६२।१,२०४।१,२१०।१;
७।११७।२,१२०।१,१३२।१,१६७।१,
१७७।१,२,१८६।४ सू १०।८६,८८;२०।८।८
उ १।१७;३।२।१;४।२।१

बोधव्व (बोद्धव्य) प १।२०।४,३३।१,३५।२,
३६।२,३७।३,४२।२,४३।२,४८।८,४०,
१।८१।१;२।६४।६,७;६।८०।२;१०।५३।१;
११।३७।२;१७।१।१;२८।१।१ सू २०।८।७

बोर (बदर) प १६।५५;१७।१३२

बोल (दे०) प २।४१ ज २।४२,६५;३।२२,३६,
७८,९३,९९,१०६,१६३,१८०;५।२६;७।५५,
१७८ सू १९।२३ उ १।१३८

बोहग (बोधक) ज ५।५,४६

बोहय (बोधक) ज ३।१८८;५।२१

बोहि (बोधि) प २०।१७,१८,२९,३४

बोहिदय (बोधिदय) ज ५।२१

बोहिय (बोधित) ज २।१५;३।३

भ

√भइज्ज (भज्) भइज्जंति प २२।७४
भइज्जति प २२।७३

भइत्ता (भक्त्वा) सू १२।१० से १२

भइत्त (भक्त) प २।६४।१६

भंग (भङ्ग) प १।४८।१० से २९;१०।६ से ९;
१४।२।६;१६।१०,१५,२१;२२।२५,८४,८९;
२४।५,८,१२;२६।४,६,९,१०;२८।११८

भंगुर (भङ्गुर) ज २।१५

भंगी (भृङ्गी) प १।४८।५;१७।१२१

भंगी (भङ्गी) प १।९३।५

भंगीरय (भृङ्गिरजस्) प १७।१३१

भंड (भाण्ड) ज ३।७२,१५०;४।१०७,१४०
सू २०।४ उ १।९३,१०५,१०६,११९;३।५०,
५५,६३,७०,७३,१२८

भंडग (भाण्डक) उ ३।५०,५५

भंडवेयालिय (भाण्डवैचारिक) प १।९६

भंडार (भाण्डकार) प १।९७

भंडी (भण्डी) प १।३७।५ शिरीष का पेड़

भंत (भदन्त) प १।७४,८४;२।१ से ३९,४१ से
४३,४६,४८ से ६४;३।३८ से १२०,१२२ से
१२४,१७४,१७९ से १८३;४।१ से ४९,५२,
५६ से ५८,६५,७२,७९,८८,९५,९८,१०१,
१०४,११३,१२१,१४०,१४९,१५८,१६५,
१६८ से १७१,१७४,१७७,१७८,१८०,१८१,
१८३,२०७,२१०,२१३,२९४,२९७;५।१ से
७,९ से १२,१४,१६ से १८,२०,२३,२४,२७
से ३४,३६,३७,४०,४१,४४,४५,४८,४९,५२,
५३,५५,५६,५८,५९,६२,६३,६७,६८,७०,७१,
७७,७८,८२,८३,८५,८६,८८,८९,९२,९३,
९६,९७,१००,१०१,१०३,१०४,१०६,१०७,
११०,१११,११४,११५,११८,११९,१२३ से
१२९,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,
१४५,१४७,१५०,१५३,१५४,१५६,१५७,
१६२,१६३,१६५,१६६,१६८,१६९,१७१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७३,१८०,१९२,१९६,१९९,२०२,२०३,
२१०,२१७,२२७,२२९,२३१,२३३,२३६,
२३८,२४१;६।१ से २३,२७,४३ से ४५,४७
से ५५,५७,५८,६० से ६४,६७,६८,७०,७५,
७८,८० से ८२,८७,९०,९३,९४,९६,९९,
१०१,१०३,१०५,११०,११४ से ११६,११८
से १२१,१२३;७।१ से ४,६ से ३०;८।१ से
११;९।१ से ४,६ से १६,१९ से २१,२५,२६;
१०।१ से १३,१५ से २४,२६ से ५३;११।१
से ४४,४६ से ४८,६१ से ७३,७९ से ९०;
१२।१ से ५,७ से १३,१५;१६,२०,२१,
२३,२७,३१ से ३३;१३।१ से ३१;
१४।१ से ३,५,७,९,११ से १५,१७;१५।१ से
३,७,८,११ से २८,३० से ३३,३६ से ४१,४३
से ५४,५६ से ७४,७६ से ८०,८३,८४,८९,
९१,९४ से ९७,१००,१०३ से १०६,१०९,
११४,११५,११७,११८ से १२०,१२३,१२६,
१२९,१३२ से १३५,१४०,१४१;१६।१ से
३,१० से १३,१५,१७,१९ से २१;१७।१ से
६,८ से १६,१९ से २१,२४,२८,२९,३३,३६
से ४०,५१,५६ से ६९,७१ से ७६,७८ से ८७,
९० से ९२,९४,९५,९९ से १०४,१०६ से
११६,११८ से १२०,१२२ से १३०,१३५ से
१३७,१३९ से १५२,१५४ से १५७,१५९ से
१६१,१६६,१६७,१६९ से १७२;१८।१ से
१०,१२ से ३७,३९,४१ से ४७,४९ से ५१,
५४ से ८२,८४ से ९०,९३ से १११,११३,
११४,११६ से १२०,१२२,१२३,१२५ से
१२७;१९।१;२०।१ से ३,६,७,९ से १५,१७
से २५,२७ से २९,३२ से ३४,३८ से ४०,
४५,४९ से ५१,६१ से ६४;२१।१ से १५,
१९ से २५,२८ से ३२,३६,३८,४०
से ४२,४८,४९,५६ से ६६,६८ से ८१,
८३ से ९६,९८ से १०१,१०३ से १०५;
२२।१ से १९,२१ से २३,२६,२७,२९,३०,
३२ से ५०,५२ से ६९,७६ से ७९,८१ से
८४,८६,८७,८९ से ९४,९७ से ९९,१०१;
२३।१ से ७,९,११,१३ से ४८,५७ से ६२,
८१,९०,१३४,१३५,१३७ से १४०,१५४,
१५५,१५७,१६०,१६१,१६४,१६७,१७१,
१७६,१७७,१९१ से १९६,१९८ से २०१;
२४।१ से ५,८,११,१२,१४;२५।१,२,
४,५;२६।१ से ४,८,९;२७।१ से ३,६;
२८।१,३ से ५,११ से १९,२१ से २५,२८
से ३१,३३ से ४२,४४,४५,४८ से ५०,
५१,५७ से ६०,६२ से ६५,६७ से ७१,
९८,१०२,१०४,१०६ से १०८,१११ से
१२०,१२२,१२३,१२५,१२७,१२८,१३२;
२९।१ से ३,५ से ७,९,१०,१२,१३,१६ से
१९;३०।१ से ३,५ से ११.१३,१५ से १७,
१९,२१.२५ से २८;३१।१;३२।१,२,४;३३।१
से ३,५,६,१२ से १८,२०,२२;३५।१,२,४ से
१३,१६ से १८,२०,२३;३६।१ से २२,३०
से ४९,५३,५४,५८ से ६७,७०,७१,७३ से
८८,९२,९४ ज १।७,१५ से १८,२० से २३,
२६,२७,२९,३३ से ३५,४१,४५ से ५१;२।१,
४,७,१४,१५,१७,४३,५२,५६,५७,५८,१२२,
१२३,१२७,१२८,१३१ से १३७,१३९,१४७,
१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१६१,१६४;
३।१,९८;४।१,२२,३४,४४,४५,४८,५१,५२,
५४.५५,५६.५७,६०,६२,७९ से ८२,८४ से
८६,९६ से ९८,१०० से १०३,१०६ से ११०,
११३,११४,१४१,१४३.१५९ से १६७,१६९
से १७८,१८० से १८२,१८४,१८५,१८७,
१८८,१९० से १९४,१९६,१९७,१९९ से
२०३,२०५ से २०९,२११ से २१५,२२५,
२२६,२३४,२३६,२३७,२३९ से २४१,२४४,
२४५,२४९,२५१ से २५५,२५७,२६० से
२७७;६।१,२,४,७ से २६;७।१ से४८,५०,
५२ से ७३,७६.७८ से १०७,१११ से १४५,
१४७ से १५१,१५४ से १६७,१६९ से १७८,
१८० से १८५,१८७,१९७ से १९९,२०१ से

२१३ उ १।४,६,८,२१,२४,२५,१४१,१४३; २।१,३,१३,१५; ३।१,३,८,१६,१८,२० २३, २६,३० से ३२,३५ से ४१,४४,८६,८८,९३, ९४,१२३ से १२५,१५२,१५४,१६४,१६५, १६७; ४।१,३,१४,२६; ५।१,३,२०,२२,२३, ३२,४०,४३

भंतसंभंत (भ्रान्तसम्भ्रान्त) ज ५।५७

भंभा (दे०) ज ३।३१

भंभाभूय (भंभाभूत) ज २।१३१,१३९

भक्खेय (भक्ष्य) उ ३।३७ से ४२

भग (भग) ज ७।१३०,१३३,१८६।४ सू १०।३५

भगंदर (भगंदर) ज २।४३

भगदेवया (भगदेवता) सू १०।८३

भगव (भगवत्) प १।१।३; ३६।८१ ज १।५,६; २।६८,७०,७२,९०,९३,९५,९६,१०१ से १०३,११३,११४; ५।३,५,७ से १४,२१,२२, २६,४४,४६,५८,६०,६२,६४,६७ से ७०,७२ से ७४; ७।२१४ चं १० सू १।५; २०।९।६ उ १।२,४ से ८,१६,१७,१९ से २६,१४२, १४३; २।१ से ३,१० से १२,१४,१५,२१; ३।१ से ३,७,८,१९,२०,२२,२३,२६,८७,८८,९०, ९३,१५३,१५४,१५९,१६१,१६६,१६७,१७०; ४।१ से ३,२७; ५।१ से ३,४४

भगवंत (भगवत्) प २।६४ ज २।६९,७१,८३; ५।१,२१ उ १।१७

भगवती (भगवती) सू २०।९।१

भगसंठिय (भगसंस्थित) सू १०।३५

भगिणी (भगिनी) ज २।२७,६९

भग्ग (भग्न) प १।४८।१० से २९ उ ३।१३१,१३४

भग्गवेस (भार्गवेश) ज ७।१३२।२ सू १०।१००

भज्जमाण(भज्यमान) प १।४८।३८

भज्जा (भार्या) ज २।२७,६९ उ १।१२,१४५; २।५,१७

भज्जिय (भर्जित) उ १।३४,४९,७४

भट्टित्त (भर्तृत्व) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।४५; ३।१८५,२०९,२२१; ५।१९ उ ५।१०

भट्टिदारय (भर्तृदारक) प ११।१५,२०

भट्ठरय (भ्रष्टरजस्) ज ५।७

भट्ठि (दे०) ज २।१३१

भड (भट) ज ३।१७,२१,२२,३६,७८,१७७

भडग (भटक) प १।८९

√भण (भण्) भणइ उ ३।६९ भणंति प १७।८९

भणित (भणित) प १।४८।९,४७; १।९३।६; २।४०; ३।१८२; ५।२४४; ६।५९,६९,८३,८९,९२, १००; १५।५५; २१।७७ सू १०।१४८; २०।७

भणितव्व (भणितव्य)सू ८।१; १०।१४८,१५०; १५।९

भणिय (भणित) प १।४८।५२; २।२७।३,४७; ६।४।४,६,८; ५।१५२; ११।८०; १२।१३,१५, २१; १५।१८,३०,१४०; १६।१८; १७।७,९७; २०।२६,३५; २१।७६,९४; २२।५४; २३।१००, १०८,१५६,१७९,१८१,१८५,१९०; २४।८,९; २९।१५; ३६।२०,२४,४६ ज २।४।३,२।१५; ३।१०९,१३८; १६७।३,४; ४।२०० चं ४।३ सू १।८।३; १०।१५०; १९।२२।१,२

√भण्ण (भण्) भण्णइ प ५।२२६ ज ७।१४६ भण्णंति प ५।२०५ भण्णति प ५।२०५,२११; ३६।६८

भत्त (भक्त) ज २।६५,७१,८८; ३।२२५ उ २।१२; ३।१४,१२०,१५०,१६१,१६९; ५।२८,३९,४१, ४३

भत्तपाण (भक्तपान) ज ३।१०३,२२४

भत्तसाला (भक्तशाला) ज ३।३२

भत्ति (भक्ति) ज ३।१६७।६

भत्तिचित्त (भक्तिचित्र) प २।४८ ज १।३७; २।१०१; ३।३९,१२,५६,८८,१०९,११७, १४५,२२२; ४।२७,४९; ५।१६,२८,३२,३४, ५९ सू १८।८; १९।२२।१,२

भत्तिय[1] (दे०) प १।४२।१

भद्द (भद्र) प २।३१ ज २।६४,८१; ३।३,१२,५६, ८८,११७,१३८,१८५,२०९; ४।४९; ५।२८;

१. वनस्पति कोष में भूतीक शब्द मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७।११८ उ २।२; ३।९६ से ९८,१००,१०१, १०६ से ११२

भद्दग (भद्रक) ज २।१६

भद्दमुत्था (भद्रमुस्ता) ज १।४८।६

भद्दय (भद्रक) ज ३।१०९ उ ५।४०,४१

भद्दवत (भाद्रपद) सू १०।१२४

भद्दवय (भाद्रपद) ज ७।१०४,११३।१,११४ सू १०।१२६ उ ३।४०

भद्दसालवण (भद्रशालवन) ज ४।९४,२१४,२१५, २१६,२२०,२२१,२२५,२२६,२३४,२६२

भद्दसेण (भद्रसेन) ज ५।५२

भद्दा (भद्रा) ज ५।१०।१;५।६८;७।११८ सू १०।२, ९०

भद्दासण (भद्रासन) ज ३।३,५६,१७८;४।२८, ११२;५।३९,४२

भद्दिलपुर (भद्दिलपुर) प १।९३।३

भमंत (भ्रमत्, भ्रम्यत्) ज ४।३,२५

भमर (भ्रमर) प १।५१;१७।१२३ ज २।१२;३।२४

भमरावली (भ्रमरावली) प १७।१२३

भमास (दे०) प १।४१।१,१।४८।४६

भय (भय) प १।१।१;२।२० से २७;११।३४।१; २३।३६,७७,१४५ ज २।६९,७०;३।९२,१११, ११९,१२१।१,१२५,१२७ उ १।८९;३।११२, १५९;४।१९

भयंकर (भयङ्कर) ज २।१३१

भयग (भृतक) ज २।२६

भयणा (भजना) प १।४८।५०

भयणिस्सिया (भयनिश्रिता) प ११।३४

भयभेरव (भयभैरव) ज २।६४

भयव (भगवत्) प १।१।२ ज २।९०;५।३,१४, १६,१७,२१,६६

भयसण्णा (भयसंज्ञा) प ८।१,२,४,५,७,९,११

√भर (भृ) भरेइ उ ३।५१

भरणी (भरणी) ज ७।११३।१,१२८,१२९,१३४।२, १३५।२,१३६,१४०,१४४,१४९,१५९, १७५ सू १०।१ से ६,११,२३,३५,६२,६६, ७५,८३,१००,१२०,१३१ से १३४;१८।७

भरह (भरत) प १।८८;१६।३०;१७।१६० ज १।१८ से २०,२३,४६,४७,५१; २।७ से १५,२१ से ४५,५०,५२,५६,५७,५८,६०,१२२, १२३,१२७,१२८,१३१,१३२,१३३,१३९, १४१ से १४७,१५०,१५६,१५७,१५९,१६१, १६४;३।१ से १३,१५,१७,१९ से २३, २५ से ३४,३६ से ४२,४४ से ५०,५२ से ५९, ६१ से ६७,६९,७७,८३,८४,९० से ९४,९६, ९९,१००,१०१,१०३,१०६ से १०९,११५ से १२९,१३१ से १३५।१,१३७,१३८,१३९,१४१ से १४८,१५० से १५४,१५७,१५८,१६०, १६३ से १७०,१७३,१७५,१७७,१७८,१७९, १८१ से १९२,१९८,१९९,२०१,२०२,२०४ से २२६;४।१,४८,५३,१०२,१७२,१७४,१७७, २७७;५।५५;६।७,९,१२,१९

भरहकूड (भरतकूट) ज ४।४४,४८

भरहवास (भरतवर्ष) ज २।१५;४।३५

भरहवासपढमवति (भरतवर्षप्रथमपति) ज ३।१२६।२

भरहाहिव (भरताधिप) ज ३।१८,८१,९३,१२१।१, १३५।२,१६७।१४,१८०,२२१

भरिय (भृत) ज २।६; ३।१७८

भरिली (भरिली) प १।५१

भरु (भरु) प १।८९

भरेत्ता (भृत्वा) उ ३।५१

भल्लाय (भल्लात) प १।३५।२

भल्ली (भल्ली) प १।४०।४

भव (भव) प २।६४।५,९; ३।१।२;१०।५३।१; १८।१।२,१८।९५; २३।१३ से २३ ज ३।२४, १३१

भव (भवत्) उ ३।४३

√भव (भू) भवइ ज १।४७; २।६९ सू १।१३ उ १।२० भवउ ज २।६४,१५७ भवंति प १।४९ से ५१,६०,८०,८१; ५।४३;१६।१५; २१।८४;२३।१५२;३६।२०,८२,९३

ज ४।१५११ सू ३।१ उ १।१४१; ३।५०
भवति प १४।५ २८,३२,६६; २।४७।३;
१५।५८।१;३६।१।१ ज १।२६ सू १।१३
भवतु ज २।६४ भवह उ १।४२ भविस्सइ
ज १।४७,१२७; २।७१,१३१ उ १।४१;५।४३
भविस्संति ज २।१३३ भवे प १।४८।३० से
३८ ज २।६ सू १६।१।१;५।३;१५।१,४,
१६।२२।१३,१५;२११४,५ भवेज्जा उ ३।८१

भवंत (भवत्) ज ३।२४।१,२,१३।१।१,२

भवक्खय (भवक्षय) प २।६४।१० उ ३।१८,१२५,
१५२;४।२६;५।३०,४३

भवचरिम (भवचरम) प १०।३६,३७

भवण (भवन) प २।१,४,१०,१३,३० से ४०,
४०।३,४,२।४२,४३;११।२५ ज १।३१,५१;
२।१५,२०,६५,१२०; ३।३,२५,२६,३२।२,
३८,३६,४६,४७,५१,५२,१०३,१४०,१४१,
१८३,१८६,२०४;४।६,१०,११,३३,४१,७०,
६०,६३,१४७,१५३,१५६,१७४,१८२,२२८,
२४३;५।१,५ से ७,१७,४४,६७,७० उ १।३३

भवणपति (भवनपति) ज ३।१८६,२०४

भवणपत्थड (भवनप्रस्तट) प २।१

भवणवइ (भवनपति) प १६।२६;२०।५४ ज २।६५,
६६ १०० से १०२,१०४,१०६,११०,११३ से
११६,१२०;४।२४८,२५०,२५१;५।४७,५६,
६७,७२ से ७४

भवणवति (भवनपति) प ६।१०६;३४।१६,१८

भवणवासि (भवनवासिन्) प १।१३०,१३१;२।३०,
३०।१,२।३२; ३।२६,१३३,१८३;४।३१ से
३३;६।८५;१७।५१,७४,७६,७७,८१,८३;
२०।६१;२१।५५,६१,७० ज २।६४;५।५२
सू २०।७

भवणवासिणी (भवनवासिनी) प ३।१३४,१८३;
४।३४ से ३६;१७।५१,७५,७६,८२,८३

भवणावास (भवनावास) प २।३० से ३६

भवत्थकेवलि (भवस्थकेवलिन्) प १८।६६,१०१

भवधारणिज्ज (भवधारणीय) प १५।१८,१६;
२१।५८,५६,६१,६२,६५ से ६७,७०,७१

भवपच्चइय (भवप्रत्ययिक) प ३३।१

भवसिद्धिय (भवसिद्धिक) प ३।११३,१८३;
१८।१२२;२८।१११,११२

भवित्ता (भूत्वा) प २०।१७ ज २।६५ उ ३।१३
४।१४;५।३२

भविय (भविक) प १।१।२;२८।१०६।१

भविय (भव्य) ज ५।५८ उ ३।४३,४४

भवोवग्गह (भवोपग्रह) प ३६।८३।१

भवोववायगति (भवोपघातगति) प १६।२४,३१,
३२

भव्व (भव्य) प १६।५५; १७।१३२ कमरख,
करेला

भव्वपुरा (भव्यपुरा) ज ३।१६७।७

भसोल (दे०) ज ५।५७

भाइणेज्ज (भागिनेय) उ ३।१२८

भाइयव्व (भेतव्य) ज ५।५,७ से १०,१२,१३,४६

भाइल्लय (दे०) ज २।२६

भाग (भाग) प २।१०,११;२३।१६०,१६४,१६७,
१७५; २८।४०,४३,६६ ज २।६४ चं ५।१
सू १।१६,२४ २६,२७,२६,३०; २।१,३;३।२;
४।४,५,७,१०; ६।१;६।३;१०।२,१३३,१३५,
१३८ से १४२,१४४ से १६३;११।२ से ६;
१२।२,३,६ से ६,१२,१३,१६ से २८,३०;
१३।१,३,४,७ से १२,१४ से १७;१४।३,७;
१५।२ से २०,२२ से २६ ३१,३२,३४;१८।६,
१०,२५,२६;१६।२२।१६;२०।३

भागसय (भागशत) ज ७।८१,८४,६८,६६,१००

भागसहस्स (भागसहस्र) ज ७।८१,६५,६६

भाणितव्व (भणितव्य) प २।३२,४०,४२,५०;
३।१८२;४।६८;५।२२,३६,४३,६१,७६,६६,
१०६,११७,१२२,१५२,२०६,२२६,२४४;
६।४६,५६,६६,८१,८३,८६,८६,६२,६५,
१००,१०२,१०३ १०७,१०८;१०।१४;१६।२०
सू १।१४,२२,२५

भाणिय (भणित) ज ३।२४,१३१

भाणियव्व (भणितव्य) प २।४३,४५,४७,६२; ५।६१,११७,१२०,२०५;६।६१,१२३;६।४; १०।२८; ११।४१,४६,८३,८५;१२।८ से १३, १५ से १७,२१,२५;१५।३०,५६,६२,८४, १०२,१०३,१२१,१३४,१३८,१४०;१६।१८, २१,३२;१७।७,२८,२६,३३,३५,६५,७०,७७, ८६,६७,१०२,१०३,१०५,१४६,१४८,१६५, १६७;२०।२५,२६;२१।३५,४३,७७,८०,६४; २२।२०,२५,२८,३३,३५,४१,४५,५४,५८, ८३,८४,८६;२३।१००,१०८,१५२,१५६, १६०,१६४,१६७,१७५,१७६,१६०,१६१; २४।८,६,११,१५;२५।५;२६।६ से १२;२७।४, ५;२८।१०,२५,५६,८७,१०२,१४५;२६।१५; ३४।२१;३६।२०,२४,२६ से ३०,३२,३४,४६, ४७,६५ ज १।१६,२३,२६,४४,४६;२।७, ७२,६३;३।१२६,१५५,१७१;४।३,४,२५,३१, ३६,४१,५२,५७,७०,७६,८२,८४,६०,६३, १०६,११०,११२,११६,११८,१२८,१६५, १७५,१७७,१८४,१६३,१६६,२०१,२०२, २०४,२०८,२१२,२१५;२१७,२२० से २२२,२२६,२३७,२४०,२४८,२४६,२६२, २६५,२७१;५।३,७,१३,३२,४६,५५,५६,६५; ६।३;७।१८६ सू ४।६;५।१;८।१;१५।११; २०।६ उ १।१४७,१४८;२।२२;४।२८; ५।१७,२५

भाणी (दे०) प १।४६,१।४८।६२

√भाय (भाज्) भाएंति ज ५।५७

भाय (भाग) ज १।१८,४८;३।१,१३५।१;४।१, २३,३८,५५,६२,६५,८१,८६,६१,६८,१०३, १०८,११०,१४१,१६७,१७८,२००,२०५,२०७, २१२,२१४,२४०;७।७,६,१०,१२,१३,१५, १६,१८ से २५,३१,३३,५४,६५,६६,६८,६६, ७१,७२,७६,१३४,१७७।१,२ उ १।६६,६४

भाय (भ्रातृ) ज २।२७,६६ उ १।६५

भायण (भाजन) ज ३।३२ उ १।४६

भारंडपक्खि (भारण्डपक्षिन्) प १।७८

भारग्गस (भाराग्रशस्) ज २।१०६,११०

भारद्दाय (भारद्वाज) ज ७।१३२।२ सू १०।१०३

भारह (भारत) ज १।३४,३५;२।१;३।१३५।२ सू १।१८,१६;४।३ उ १।६,३।१२५,१५७; ५।२४

भारहग (भारतक) ज ४।२५०

भारहय (भारतक) सू १।१६

भारियत्त (भार्यत्व) उ ३।१२८

भारिया (भार्या) ज २।६३ सू २०।७ उ ३।६७, ११२,१२८;४।८

भाव (भाव) प १।१।२,१०।१३,४,६;२।६४।१३; ११।३३।१ ज २।६६,७१ उ ३।४३,४४

भावओ (भावतस्) प ११।४८,५२,५३,५५; २८।५,६,६,५१,५२,५५;३५।४,५ ज २।६६

भावकेउ (भावकेतु) ज ७।१८६

भावकेतु (भावकेतु) उ २०।८,२०।८।६

भावचरिम (भावचरम) प १०।४४,४५;५३।१

भावणा (भावना) ज २।७१

भावणागम[1] (भावनागम) ज २।७२

भावतो (भावतस्) प ११।५७,५६

भावरुइ (भावरुचि) प १।१०१।१०

भावसच्च (भावसत्य) ज ११।३३

भाविअप्प (भावितात्मन्) प १५।४३

भाविंदिय (भावेन्द्रिय) प १५।५८।२,१५।७६,१३३ से १३५,१४०,१४१,१४३

भावित्ता (भावयित्वा) उ ३।१६१

भाविय (भावित) प १७।८८

भावियप्प (भावितात्मन्) प ३६।७६ ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२

भावेमाण (भावयत्) ज १।५;२।७१,८३ उ १।२, ३;२।१०;३।१४,२६,८३,६६,१३२,१४४,१५०; ४।२४;५।२६,२८,३२,३६,४३

१. आयारचूला पञ्चदशाऽध्ययनानुसारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावेयव्व (भावयितव्य) प २२।४५

√**भास** (भाष्) भासइ ज ७।२१४ उ १।६८ भासंति प ११।४३ से ४६ भासती प ११।३०।१,२ भासिति प १।६८

भास (भस्मन्) सू २०।८,२०।८।८

भासंत (भाषमाण) प ११।८६

भासग (भाषक) प ३।१।२;१०८;११।३८ से ४१; १८ गा २

भासज्जात (भाषाजात) प ११।४२

भासज्जाय (भाषाजात) प ११।८८,८६

भासत्त (भाषात्व) प ११।४७,७० से ७२,८० से ८५

भासमणपज्जत्ति (भाषामनःपर्याप्ति) उ ३।१५,८४ १२१;४।२४

भासमाण (भाषमाण) प ११।८६

भासय (भाषक) प १८।१०४

भासरासि (भस्मराशि) प २।५०,५६,६० सू २०।८

भासरासिप्पभ (भस्मराशिप्रभ) प २।५४,५८

भासरासिवण्णाभ (भस्मराशिवर्णाभ) सू २०।२

भासा (भाषा) प १।१।५,१।६८;२।३१; १०।५३।१;११।१ से १०,२६ से ३०,३०।१, २,११।३१ से ३७,३७।१,२;११।४३ से ४६, ८२,८३,८७,८६; २८।१४२,१४४,१४५ ज ३।७७,१०६

भासाचरिम (भाषाचरम) प १०।३८,३६

भासारिय (भाषार्य) प १।६२,६८

भासासमिय (भाषासमित) ज २।६८ उ ३।६६

भासुर (भासुर) प २।३०,३१,४१,४६ ज ५।७,१८

भिउडि (भृकुटि) ज ३।२६,३६,४७,१३३ उ १।२२,११५,११७,१४०

भिंग (भृङ्ग) प १७।१२४

भिंगनिभा (भृङ्गनिभा) ज ४।२२३।१

भिंगपत्त (भृङ्गपत्र) प १७।१२४

भिंगप्पभा (भृङ्गप्रभा) ज ४।१५५।२

भिंगा (भृङ्गा) ज ४।१५५।२,२२३।१

भिंगार (भृङ्गार) प ११।२५ ज ३।३,११,१७८; ५।६,४३,५५

भिंगारग (भृङ्गारक) ज २।१२

भिंडिमाल (भिण्डिमाल, भिन्दिपाल) ज ३।३१,१७८

भिक्खायरिया (भिक्षाचर्या) उ ३।१००,१३३

भिज्जमाण (भिद्यमान) प ११।७६

भिण्ण (भिन्न) प ११।७२ सू २०।२

भित्तिकडग (भित्तिकटक) ज ३।६७

भित्तुं (भेत्तुम्) ज २।६।१

भिब्भिसमाण (बाभाष्यमाण) ज ४।२७;५।२८

भिस (बिस) प १।४६,१।४८।४२ ज २।१७; ४।३,२५

भिसंत (दे० भासमान) ज ३।१७८;७।१७८

भिसकंद (विषकंद) प १७।१३५

भिसमाण (दे०) ज ४।२७;५।२८

भीत (भीत) प २।२० से २७

भीम (भीम) प २।२० से २७,४५;४५।१ उ १।१३६

भीय (भीत) ज २।६०;३।१११,१२५ उ १।८६; ३।११२;४।१६

√**भुंज** (भुज्) भुंजइ ज ३।३ भुंजए ज ४।१७७ भुंजाहि उ ३।१०७

भुंजमाण (भुञ्जान) प २।३० से ३२,४१,४६ ज १।३३,४५;२।६१,१२०;३।८२,१७१, १८५,१८७,२०६,२१८;४।११३;५।१,१६; ७।५५,५८,१८४,१८५ सू १८।२२,२३; १६।२६ उ ३।६०,६८,१०१,१०६,१२६ से १३१,१३४;५।२५

√**भुंजाव** (भोजय्) भुंजावेइ उ ३।११४

√**भुकंड** (दे०) भुकंडेति ज ३।२११

भुक्खा (दे० बुभुक्षा) उ १।३५ से ३७,४०

भुजंग (भुजङ्ग) ज २।१५

भुज्जो (भूयस्) प १६।४६;१७।११५ से १२२, १५४;२८।२४ से २६,३६,४२,४५,४६,७१, ७४;३४।२०,२२ से २४ ज ३।१२६;७।२१४

भुत्त (भुक्त) ज २।७१;३।८२ सू २०।७ उ ४।१६
भुत्तभोइ (भुक्तभोगिन्) उ ३।१०७,१३६
भुमगा (भ्रू) ज २।१५
भुयग (भुजग) प २।४६ चं १।२
भुयगवइ (भुजगपति) प २।४१
भुयपरिसप्प (भुजपरिसर्प) प १।६७,७६;४।१४० से १४८;६।७१.७५; २१।१४,१६,३५,४६,६०
भुयमोयग (भुजमोचक) प १।२०।३
भुयय (भुजग) प २१।४७।१
भुयरुक्ख (भूतवृक्ष) प १।४३।२
भुया (भुजा) प २।३०,३१,४१,४६ ज ५।२१,५८, उ ३।६२
भुस (बुस) प १।४२।१
भू (भू) सू २।१
भूत (भूत) प २।६४ सू १६।३८
भूतिकम्म (भूतिकर्मन्) ज ५।१६
भूतोद (भूतोद) सू १६।३८
भूमि (भूमि) प १।७४ ज १।२६
भूमिगय (भूमिगत) ज ३।१०५
भूमिचवेडा (भूमिचपेटा) ज ५।७
भूमितल (भूमितल) ज ५।५
भूमिभाग (भूमिभाग) प २।४८ से ५१,६३; १७।१०७,१०६,१११ ज १।१३,२१,२५,२६, २८,२६,३२,३३,३६,३७,३६,४०,४२,४६; २।७,१०,३८,५२,५६,५७,१२२,१२७,१४१, १४७,१५०,१५६,१५६,१६१,१६४; ३।८१, १६२,१६३,१६६,१६७; ४।२,३,८,६,११,१२, १६,३२,४६,४७,४६,५०,५६,५८,५६,६३,६६, ७०,८२,८७,८८,६३,१००,१०४,१०६,१११, ११२,११७,११८,११६,१२२,१२३,१३१, १६६,१७०,१७६,२१७,२३४,२४० से २४२, २४७,२४८,२५०;५।३२,३३,३५;७।३३ सू २।१;६।३; १८।१;२०।७
भूमिया (भूमिका) ज ३।३२
भूमी (भूमि) ज १।२।१३२,१४२,१४३;४।११६
भूय (भूत) प १।१३२;२।४१,४५,६४;१५।५५।३; ३६।६२,७७ उ २।१०,३१,१३१;३।१,६,२२, ३६,७८,८०,८१,६२,६३,६५,६६,११६,१२१, १५१,१५६,१६०,१६३,१८०,२२२; ७।२१२ उ १।१३८;३।४३,४४,४६;५।४
भूय (भूयस्) ज ३।३
भूयग्गह (भूतग्रह) ज २।४३
भूयणय (भूतृणक) प १।४४।३
भूयत्थ (भूतार्थ) प १।१०१।२
भूयवाइय (भूतवादिक) प २।४१,२।४७।१
भूया (भूता) उ ४।६,११ से १६,१८ से २४
भूयाणंद (भूतानंद) प २।३४,३६,४०।७
भूसण (भूषण) प २।३०,३१,४१ ज ३।८१,१६८; ७।१७८
भूसणधर (भूषणधर) ज ३।६,२२१;५।२१
भूसिय (भूषित) ज ३।३०,३५,१७८
भे (भोस्) उ ३।३८,४०,४२,४४
भेद (भेद) प १।४८।३८;६।८३;११।७४,७६ से ७८; १५।५३;२१।१६,४०,४३,४४,५२,५५,७६,७७, ६४,२२।२०;३३।१।१
भेदग (भेदक) ज ३।१०६
भेदपरिणाम (भेदपरिणाम) प १३।२१,२५
भेय (भेद) प ११।७२,७३,७५; १६।३२;२१।७७ उ १।३१
भेयघाय (भेदघात) चं ४।१,३ सू १।८।१,३; २।२
भेयपरिणाम (भेदपरिणाम) प १३।२५
भेरि (भेरि) ज ३।१२,७८,१८०,२००
भेरी (भेरी) उ ५।१५ से १७
भेरुतालवण (भेरुतालवन) ज २।६
भेसज्ज (भैषज्य) उ ३।१०१
भेसण (भीषण) ज २।१३३
भो (भोस्) ज २।६५,६७,१०१,१०५,१०७,१०६, १११,११४;३।७,१२,२६,३६,४७,४६,५२, ५६,६१,६६,८३,६१,६६,११३,११५,१२२, १२४,१२७,१२८,१३३,१४१,१४७,१५१, १५४,१६८,१७०,१७५,१८०,१६६,२०७,

२१२;५।३,१४,२२,२६,५४,६८,६६,७२
उ १।१७,१२३,१३१;४।१६;५।१५,१८
भोग (भोग) प १।६५ ज २।६५;३।३ सू १८।२२,
२३;१६।२६ उ १।२७,६३,१४०;३।६८,१०१,
१०६,१०७,१२६ से १३१ १३४,१३६
भोगंकरा (भोगङ्करा) ज ४।१०६;५।११।
भोगंतराय (भोगान्तराय) प २३।२३
भोगत्थिय (भोगार्थिक) ज ३।१८५
भोगभोग (भोगभोग) प २।३०,३१,४१,४६
ज २।६१,१२०;३।१७१,१८५,२०६;५।१,१६;
७।५५,५८,१८४,१८५
भोगमालिणी (भोगमालिनी) ज ४।१६४;५।११।
भोगवइया (भोगवतिका) प १।६८
भोगवई (भोगवती) ज ४।१०६;५।१।१;७।१२१
सू १०।६१
भोगविस (भोगविष) प १।७०
भोच्चा (भुक्त्वा) सू १०।१२०
भोत्तूण (भुक्त्वा) प २।६४।१६
भोम (भौम) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३
भोमेज्ज (भौमेय) प २।४१,४३ ज ३।२०६;
५।५५,५६
भोमेज्जग (भौमेयक) प २।४१,४३,४६
भोमेज्जा (भौमेयक) प २।४१,४२
भोयण (भोजन) प २।६४।१६ ज २।१८ चं ५।३
सू १।६।३;१०।१२०;२०।७ उ ३।११०,११४
भोयणजाय (भोजनजात) ज २।१८
भोयणमंडव (भोजनमण्डप) ज ३।२८,४१,४६,
५८,६६,७४,१३६ १४७,१४६,१८७,२१८

म

मइ (मति) ज ३।३२
मइअण्णाणि (मत्यज्ञानिन्) प ३।१०२,१०३;
१८।८३;२८।१३७
मइल (दे० मलिन) ज २।१३१ उ ३।१३०
मउड (मुकुट) प २।३०,४८ से ५०;५।१८
ज ३।३,६,६,१८,२६,३१,४७,६३,१८०,२११,
२२१,२२२;५।१८,२१
मउय (मृदुक) प १।४ से ६;३।१८२;५।५७,२०६;
१५।१५,१६,२७,२८,३२,३३;२८।२६,३२,६६
ज २।१५;३।३;५।५,७,१७८
मउल (मुकुट) प २।४१
मउल (मुकुल) ज २।१५;३।१७८;७।१७८
मउलि (मुकुलिन्) प १।६६,७१
मउलि (मौलि) प २।३०,३१,४१,४६'
मउलिय (मुकुलित) ज ३।६;५।२१
मंकुणहत्थि (मत्कुणहस्तिन्) प १।६५
मंख (मङ्ख) ज २।६४;३।१८५
मंगल (मंगल) ज २।६७;३।६,१२,१८,७७,८२,
८५,८८,६३,१२५,१२६,१८०,२२२;५।५,४६
सू १८।२३;२०।७ उ १।१७,१६,७०,१२१;
३।११०;५।१७,३६
मंगलग (मंगलक) ज ३।१७८;४।१५८;५।५८
उ ५।१६
मंगलावई (मंगलावती) ज ४।१६१,२०२,२०३
मंगलावईकूड (मंगलावतीकूट) ज ४।२०४।१
मंगलावत्त (मंगलावर्त) ज ४।१६३,१६५
मंगलावत्तकूड (मङ्गलावर्तकूट) ज ४।१६२
मंगल्ल (मांगल्य) ज २।६४;३।८५,१८५,२०६;
५।५८ उ १।४१,४४
मंगुस (दे०) प १।७६
मंच (मञ्च) सू १२।२६
मंचाइमंच (मञ्चातिमञ्च) ज ३।७,१८४
मंचातिमंच (मञ्चातिमञ्च) सू १।२६
मंजरिका (मञ्जरिका) ज ५।७२,७३
मंजिट्ठावण्णाभ (मञ्जिष्ठावर्णाभ) सू २०।२
मंजु (मञ्जु) ज २।६५;३।१८६,२०४
मंजुघोसा (मंजुघोषा) ज ५।५२,५३
मंजुपाउयार (मञ्जुपादुकाकार) प १।६७
मंजुल (मञ्जुल) उ ३।६८
मंजुस्सर (मंजुस्वर) ज ५।५२,५३
मंजूसा (मञ्जूषा) ज ३।१६७;४।२००।१

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

मंडण (मण्डन) ज ३।१०६

मंडल (मण्डल) ज ३।३०,३५,६५,६६,१०६,१५६, १६०;७।२,१०,१३,१६,१६ से ३१,३५,५५, ५६,७२,७५,७८ से ८४,६५,६६,६८,६६, १००,१०४,१२६।१ चं २।१;३।२ सू १।६।१; १।७।२;१।११,१२,१४,१८ से २५,२७;२।१ से ३;३।२;४।४,७,६;६।१;६।२;१०।७५, १३८ से १५१,१७३;१२।३०;१३।४,५,१३; १५।२ से ४,१४ से ३६;१६।२२।१० से १२, १६।२३

मंडलगइ (मण्डलगति) प २।४८

मंडलग्ग (मण्डलाग्र) ज ३।३५

मंडलपति (मण्डलपति) ज ३।८१

मंडलरोग (मण्डलरोग) ज २।४३

मंडलवत (मण्डलवत्) सू १।२५ से ३१

मंडलसंठिति (मण्डलसंस्थिति) सू १।२५

मंडलि (मण्डलिन्) प १।७१

मंडलिय (माण्डलिक) प १।७४;२०।११

मंडलियत्त (माण्डलिकत्व) प २०।५७

मंडलियराय (माण्डलिकराज) ज ३।२२५

मंडलियावाय (मण्डलिकावात) प १।२६

मंडव (मण्डप) ज ३।८१;५।३५

मंडवग (मण्डपक) ज १।१३;२।१२

मंडव्वायण (माण्डव्यायन) ज ७।१३२।३ सू १०।१०७

मंडित (मण्डित) प २।३१ ज ३।१८४

मंडिय (मण्डित) प २।३१ ज ३।७,१८,३१,१८०; ५।२१,३८

मंडुक्की (मण्डूकी) प १।४४।२

मंडूकपुत्त (मण्डूकपुत्र) सू १२।२६

मंडूय (मण्डूक) प १६।४४

मंडूयगति (मण्डूकगति) प १६।३८,४४

मंत (मन्त्र) ज ३।११५,१२४,१२५ उ ३।११,१०१

मंति (मन्त्रिन्) ज ३।६,७७,२२२

मंथ (मन्थ) प ३६।८५

मंद (मन्द) ज २।६५;५।३८,५७;७।५८ सू २।३; १८।१८

मंदकुमारय (मन्दकुमारक) प ११।११ से १५

मंदकुमारिया (मन्दकुमारिका) प ११।११ से १५

मंदगइ (मन्दगति) चं ४।२ सू १।८।२

मंदर (मन्दर) प २।३२,३३,३५,३६,४३,४४,५०, ५१;१५।५५।३;१६।२० ज १।१६,२६,४६,५१; २।६८;३।२;४।६४,१०३,१०६,१०८,११४, १४३,१६०,१६२,१६३,२०३,२०५,२०८, २०६,२१२ से २१६,२१६ से २२२,२२५, २३३ से २३५,२३७ से २४१,२५३,२५४, २५७,२५६,२६०।१,२६१,२६२;५।४७ से ५०, ५३;६।१०,२३,२४;७।८ से १३,३१,३३,६७ से ७२,६१,६२,१६८।१,१७१ सू ४।४,७; ५।१;७।१;८।१;१८।५ उ १।१०,२६.६६

मंदरकूड (मन्दरकूट) ज ४।२३६;६।११

मंदरचूलिया (मन्दरचूलिका) ज ४।२४१,२४२, २४३,२४५,२४६,२५१,२५२

मंदरपव्वय (मन्दरपर्वत) प १६।३० सू ४।४,७

मंदलेस (मन्दलेश्य) सू १६।२२।३०;१६।२६

मंदायवलेस (मन्दातपलेश्य) ज ७।५८ सू १६।२६

मंदिर (मन्दिर) सू ७।१

मंस (मांस) प १।४८।४६;२।२० से २७ सू १०।१२० उ १।३४,४०,४३ से ४६,४८, ४६,५१,५४,७४,७६,७६

मंसकच्छभ (मांसकच्छप) प १।५७

मंसल (मांसल) ज २।१५;७।१७८

मंसाहार (मांसाहार) ज २।१३५ से १३७

मंसु (श्मश्रु) ज २।१३३

मक्कार (माकार) ज २।६१

मगइत (दे०) उ १।१३८

मगइय (दे०) ज ३।३१

मगत (दे०) उ १।१३८

मगदंतिया (मदयंतिका) प १।३८।२ ज २।१० मेंहदी

मगर (मकर) प १।५५,५९;२।३० ज १।३७; २।१०१;४।२४,२७,३९,६६,९१;५।३२ सू २०।२
मगरंडग (मकराण्डक) ज ५।३२
मगरज्झय (मकरध्वज) ज २।१५
मगरमुहविउट्टसंठाणसंठिय (मकरमुखविवृतसंस्थानसंस्थित) ज ४।२४,७४
मगसिरी (मार्गशिरी) सू १०।७,१२
मगसीसावलिसंठिय (मृगशीर्षावलिसंस्थित) सू १०।३८
मगह (मगध) प १।९३।१
मगूस (दे०) प ११।७८
मग्ग (मार्ग) ज २।६४;३।२२,३६,९३,९९,१०६, १६३,१७५,१८०
मग्गओ (दे० पृष्ठतस्) ज ५।४३
मग्गण (मार्गण) ज ३।२२३
मग्गदय (मार्गदय) ज ५।२१
मग्गदेसिय (मार्गदेशिक) ज ५।५,४६
मग्गमाण (मार्गयत्) उ ३।१३०
मग्गरिमच्छ (मकरीमत्स्य) प १।५६
मग्गसिर (मार्गशीर्ष) ज ७।१०४,१४५,१४९ सू १०।१२४ उ ३।४०
मग्गसिर (मृगशिरस्) ज ७।१४०,१४५,१४९
मग्गसिरी (मार्गशिरी) ज ७।१३७,१४०,१४५, १४९,१५२,१५५ सू १०।७,१२,२३,२५,२६
√मग्गिज्ज (मार्गय्) मग्गिज्जइ प १२।३२
मघमघेंत (दे० प्रसरत्) प २।३०,३१,४१ ज ३।७, ८८;५।७ सू २०।७
मघव (मघवन्) प २।५० ज ५।१८
मघा (मघा) ज ७।१२८,१२९,१३६,१४० सू १०।५,६२
मच्छ (मत्स्य) प १।५५,५६;६।८०।२ ज २।१५, १३४;३।१७८;४।३,२५,२८;५।३२,५८ सू २०।२
मच्छंडग (मत्स्याण्डक) ज ५।३२
मच्छंडिया (मत्स्यण्डिका) प १७।१३५ ज २।१७
मच्छाहार (मत्स्याहार) ज २।१३५ से १३७
मच्छिय (मक्षिका) प १।५१।१
मच्छियपत्त (मक्षिकापत्र) प २।६४
मज्जण (मज्जन) ज ३।९,२२२
मज्जणघर (मज्जनगृह) ज ३।९,१७,२१,२८,३१, ३८,४१,४९,५८,६६,७४,७७,८५,१३९,१४७, १५३,१६८,१७७,१८७,१८८,२०१,२१८, २१९,२२२ उ १।१२४;५।१९
मज्जणय (मज्जनक) उ १।९७
मज्जणविहि (मज्जनविधि) ज ३।९,२२२
मज्जाया (मर्यादा) ज २।१३३
मज्जार (मार्जार) प १४।१ चित्रक
√मज्जाव (मज्जय्) मज्जावेंति ज ५।१४
मज्जावेत्ता (मज्जयित्वा) ज ५।१४
मज्जिय (मज्जित) ज ३।९,२२२
मज्झ (मध्य) प १।४८।६३;२।२१ से २७,२७।३, २।३० से ३६,३८,४१ से ४३,४६,५० से ५९, ६४;११।६६,६७;२८।१६,१७,६२,६३ ज १।८,३५,४६,४७।१,५१;३।९,१७,२१, २४।३,३४,३७।१,४५।१,१०९,१३१।३,१७७, १८५,२०९,२२२,२२४,२२५;४।१३,४५, ११०,११४,१२३,१४२।१,२,१५५,१५६।१, २१३,२२२,२४२,२६०।१;५।१४,१५,१७,३३, ३८;७।४५,२२२।१ सू १२।३०;२०।७
मज्झंमज्झ (मध्यंमध्य) ज २।६५,९०;३।१४, १७२,१८३,१८४,१८५,२०४,२२४;५।४४ सू २०।२ उ १।१९,९७,११०,१२५,१२६, १३२,१३३;३।२९,१११,१४१;४।१३,१५, १८;५।१९
मज्झंतिय (मध्यान्तिक) ज ७।३६,३७,३८
मज्झगय (मध्यगत) ज ७।२१४
मज्झयार (दे० मध्य) ज ७।३२।१
मज्झिम (मध्यम) प २।६४।७;२३।१९५ ज २।५५, ५६,१५५,१५९;४।१९,२१;५।१३,१६,३९ सू २।३ उ ३।१००,१३३
मज्झिमउवरिम (मध्यमउपरितन) प २८।९२

मज्झिमउवरिमगेवेज्जग (मध्यमउपरितनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२८२ से २८४;७।२५

मज्झिमग (मध्यमक) प २।६१

मज्झिमगेवेज्ज (मध्यमग्रैवेयक) प ६।४०

मज्झिमगेवेज्जग (मध्यमग्रैवेयक) प २।६१,६२; ३।१८३;६।५६;३३।१६

मज्झिममज्झिम (मध्यममध्यम) प १८।६१

मज्झिममज्झिमगेवेज्जग (मध्यममध्यमग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७९ से २८१;७।२४

मज्झिमय (मध्यमक) प २।६२।१

मज्झिमहेट्ठिम (मध्यमाधस्तन) प २८।९०

मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जय (मध्यमाधस्तनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७६ से २७८;७।२३

मज्झिमिल्ल (मध्यम) ज ४।२५३,२५५,२५८

मज्झिय (मध्यक) ज २।१५

मज्झिल्ल (मध्यम) ज ३।१

मट्टिया (मृत्तिका) ज ३।२०९;५।५५,५६

मट्ठ (मृष्ट) प २।३०,३१,४१,४९,५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१;२।१५;४।१२८;५।४३ सू २०।७

मट्ठमगर (मृष्टमकर) प १।५९

मडंब (मडम्ब) प १।७४ ज २।२२,१३१;३।१८, ३१,८१,१६७।२,१८०,१८५,२०९,२२१ उ ३।१०१

मण (मनस्) प २२।४;२३।१५,१६ ; ३४।१।२, ३४।२४ ज २।६४,७१;३।३,३५,१०५,१०९; ४।१०७,१४६ ; ५।३८,७२,७३ सू २०।७ उ १।१५,३५,४१ से ४४,७१;३।९८

मणगुत्त (मनोगुप्त) ज २।६८ उ ३।९९

मणजोग (मनोयोग) प ३६।८६,८८,८९,९२

मणजोगपरिणाम (मनोयोगपरिणाम) प १३।७

मणजोगि (मनोयोगिन्) प ३।९६;१३।१४,१९; १८।५६;२८।१३८

मणपज्जत्ति (मन:पर्याप्ति) प २८।१४२,१४४,१४५

मण (पज्जवणाण) (मन:पर्यवज्ञान) प २९।१७

मणपज्जवणाण (मन:पर्यवज्ञान) प ५।२४,११५, १७।११२,११३; २०।१८,३२,४७; २९।२; ३०।२

मणपज्जवणाणारिय (मन:पर्यवज्ञानार्य) प १।९९

मणपज्जवणाणि (मन:पर्यवज्ञानिन्) प ३।१०१, १०३;५।११७।१८।८१;२८।१३६;३०।१६,१७

मणपज्जवनाण (मन:पर्यवज्ञान) प २०।३३

मणपज्जवनाणपरिणाम (मन:पर्यवज्ञानपरिणाम) प १३।९

मणपरियारग (मन:परिचारक) प ३४।१८,२४,२५

मणपरियारणा (मन:परिचारणा) प ३४।१७,१८, २४

मणभक्खण (मनोभक्षण) प २८।१०५

मणभक्खत्त (मनोभक्षत्व) प २८।१०५

मणभक्खि (मनोभक्षिन्) प २८।१।२,२८।१०४, १०५

मणसमिय (मन:समित) ज २।६८

मणसाइय (मन:स्वादित) ज ३।११३

मणसीकत (मनीकृत) प २८।१०५

मणसीकय (मनीकृत) प ३४।१९,२१ से २४

मणसीकरेमाण (मनीकुर्वत्) ज ३।५४,६३,७१, १११,११३,१३७,१४३,१६७

मणहर (मनोहर) ज २।१२,६५;३।१३८,१८६, २०४;४।१०७;५।५,२८,३८;७।१७८

मणाभिराम (मनोभिराम) ज ३।१०९

मणाम (दे० 'मन' आप) प २८।१०५ ज २।६४; ३।१८५,२०९;५।५८ उ १।४१,४४; ३।१२८; ५।२२

मणामतर (मन:आपतर) ज २।१८;४।१०७

मणामतरिय ('मन' आपतरक) प १७।१२६ से १२८,१३३ से १३५ ज २।१७

मणामत्त ('मन' आपत्व) प २८।२६;३४।२०

मणि (मणि) प १।२०।२;२।३१।४१,४८;१५।१।२, १५।५० ज १।१३,२१,२६,३३,४९;२।७,२४, ५७,६४,६९,१२२,१२७,१४७,१५०,१५६, १६४;३।१,९,२०,२४,३०,३३,३५,५४,५६,

१. भिक्षुशब्दानुशासन ८।२।१९ अरुर्मनश्चक्षु····

६३,७१,८१,८४,६५,१०६,११७,१३७,१४३, १४५,१५६,१६७।८,१२,१७८,१८२,१६२, २२२;४।३,१६,२५,४६,६३,८२,११४;५।१६, ३२,३८ सू २०।७,१८
मणिकंचण (मणिकाञ्चन) ज ४।२६६।१
मणिदत्त (मणिदत्त) उ ५।२४,२६
मणिपेढिया (मणिपीठिका) ज १।४३,४४;४।१२, १३,३३,१२३,१२४,१२६,१२७,१३२,१३३, १३६,१३६,१४५,१४६,१४७,२१८,२१६; ५।३५
मणिमय (मणिमय) प २।४८ ज १।४३;३।२०६; ४।५,७,१२,१३,२६,२७,४६,११४,१२३, १२४;५।३५,५५
मणिरयण (मणिरत्न) अ ३।६,१२,२४,३०,८८, ६२,६३,११६,१२१,१७८,२२०,२२२;४।१६, ४६,६७;५।२८,५८;७।१७८
मणिरयणक (मणिरत्नक) ज १।३७;३।६३
मणिरयणत्त (मणिरत्नत्व) प २०।६०
मणिवइया (मणिमती) उ ३।१५०,१५८
मणिवई (मणिमती) उ ३।१६६
मणिवर (मणिवर) ज ३।६२,११६
मणिसिलागा (मणिशलाका) प १७।१३४
मणुई (मनुजी) ज २।१५
मणुण्ण (मनोज्ञ) प २३।१५,३०;२८।१०५; ३४।१६,२१ ज २।६४;३।८५,२००; ४।१०७;५।३८,५८ सू २०।७ उ १।४१,४४; ३।१२८;५।२२
मणुण्णतर (मनोज्ञतर) ज २।१८;४।१०७
मणुण्णतरिय (मनोज्ञतरक) प १७।१२६ से १२८, १३३ से १३५ ज २।१७
मणुण्णत्त (मनोज्ञत्व) प ३४।२०
मणुण्णस्सरता (मनोज्ञस्वरता) प २३।१६
मणुय (मनुज) प ६।८०।२,६।८१;२०।५३, २३।३६,८३,११३,१४६,१७२;२८।१४४, १४५;३१।६।१;३२।६।१ ज १।२२,२७,५०; २।१४,१६,१६,२१ से २६,२८ से ३७,४१ से ४६,५६,५८,६४,१२३,१२८,१३३,१३४, १३५,१४६,१४८,१५१,१५७,१५६;४।८५, १०१,१७१ उ १।१४,१५,२१;३।६८,१०१, १३१;५।२३,३१
मणुयअसण्णिआउय (मनुजासंज्ञ्यायुष्क) प २०।६४
मणुयगति (मनुजगति) प ६।३,८
मणुयगतिय (मनुजगतिक) प १३।१६
मणुयगामि (मनुजगामिन्) ज १।२२,५०;२।१२३, १२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१
मणुयगतिपरिणाम (मनुजगतिपरिणाम) प १३।३
मणुयरयण (मनुजरत्न) ज ३।२२०
मणुयलोग (मनुजलोक) सू १६।२१।८
मणुयलोय (मनुजलोक) सू १६।२२।१,३ से ६
मणुयवइ (मनुजपति) ज ३।३
मणुयाउय (मनुजायुष्क) प २०।६३,२३।१८,१५८
मणुस्स (मनुष्य) प १।५२,८२ से ८५,१२६; २।२६;३।२५,३८,३६,१२६,१८३;४।१५८ से १६४;५।३,२३,२४,१००,१०१,१०३,१०४, १०६,१०७,११०,१११,११४,११५,११८ से १२०;६।२३,२४,४६,५५,६५,६६,७०,७२, ७६,८१,८२,८४,६०,६२,६४,६६,६७,६६ से १०४,१०८,११०,११३,११६;७।४;८।८,६; ६।८ से १०,१६,१७,२२,२३;११।२१,२२, २४,२६;१२।५,३२;१३।१६;१५।१२२; १७।४५,४६,१२६,१६४,१७१;१६।४;२१।७, ४८;२२।३६;२३।१६४,१६८;२६।१५; ३४।३;३६।१।१,३६।४१,५२ ज २।६,७,५०, ५३,१६२,१६४;३।६८,१७८,२२१ सू २।३; १६।२२।१३;२०।२ उ १।१२१,१२२,१२६, १३३,१३६,१३७,१४०
मणुस्सखित्त (मनुष्यक्षेत्र) प १।७४
मणुस्सखेत्त (मनुष्यक्षेत्र) प १।८४;२।७,२६ सू १६।२२।२१
मणुस्सगामि (मनुष्यगामिन्) ज २।५८
मणुस्सरुहिर (मनुष्यरुधिर) प १७।१२६
मणुस्सलोय (मनुष्यलोक) सू २०।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुस्साउय (मनुष्यायुष्क) प २३।१४७,१६२,१६५,
१७०

मणुस्सी (मानुषी) प ३।३६,१३०,१८३; ११।२३;
१७।४८,१६०; २३।१६४,१६८,२०१ ज २।७

मणूस (मनुष्य) प ६।८४,८७;१५।३५,४४,४५,
४७ से ५० ८७,६१,६८,१०३ से १०६,११५,
१२१ १२३,१२६,१३८; १६।८,१५,२५,२८;
१७।२४,२५,३०,३३,३५ ४७,७०,६७,१०४,
१५७,१५६ से १६३,१६६,१६७ १७०,१७२;
१८।४,१०; २०।४,१३ १८,२५,३०,३२.३५,
३६,४८; २१।१६,२०,३६,५४,६०,६६,७२,
७७,८२,८६;२२।३१,४५,७५,७६ ८०,८३ से
८५,८८,६०,६६,१००;२३।१०,१२,७६,
१६६,२००;२४।३,८,१०,१२;२५।४,५;
२६।३,४,६,८,१०;२७।२,३; २८।२,४६ से
५१,६७ से ६६,७१,१०३,११६ से १२१,
१२४,१२८,१३०,१३६ से १३८,१४१ से
१४३;२६।२२; ३०।१४,२४;३१।४;३२।४;
३३।१,१३,२१,२६,३३,३६;३४।६;३५।१४,
२१;३६।७,१०,११,१३ से १५,१७,२६,३०,
३१,३३,३४,५८,७२.८०,८१ ज ४।१०२;
७।२० से २५,७६,८२ सू २।३

मणूसखेत्त (मनुष्यक्षेत्र) प २१।६२,६३

मणूसत्त (मनुष्यत्व) प १५।६८,१०४,११०,११५,
१२६,१३०;३६।२२,२६ ३०,३१,३३,३४

मणूसाउय (मनुष्यायुष्क) प २३।७६

मणूसी (मनुष्यणी) प २७।१५८,१५६,१६१ से
१६४;१८।४,१०; २०।१३;२३।१६६,२०१

मणोगम (मनोगम) ज ७।१७८

मणोगय (मनोगत) ज ३।२६,३६,४७,५६,१२२,
१२३,१३३,१४५,१८८;५।२२ उ १।१५,५१,
५४,६५,७६,७६,६६,१०५;३।२६,४८,५०,
५५,६८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

मणोगुलिया (मनोगुलिका) ज ४।१२६

मणोज्ज (मनोज्ञ) प १।३८।१ ज २।१०

मणोणुकूल (मनोनुकूल) सू २०।७

मणोमाणसिय (मनोमानसिक) उ १।६३

मणोरम (मनोरम) प २४।१६,२१,२२
ज ४।२६०।१;५।४६।३;७।१७८ सू ५।१
उ ५।२८

मणोरह (मनोरथ) ज ३।८८,२२१

मणोहरमाला (मनोरथमाला) ज २।६५;३।१८६,
२०४

मणोसिला (मनःशिला) प १।२०।२ ज ३।११।३

मणोहर (मनोहर) प ३४।१६,२१ ज २।१२;
७।११७।१ सू १०।८६।१

√मण्ण (मन्) मण्णामि प ११।१ मण्णे १।१५;
३।६८

मति (मति) प १३।१० ज ३।१

मतिअण्णाण (मत्यज्ञान) प ५।५,७,१०,१२,१४,
१६,१८,२०,५६,६३;२६।२,६,६,१२,१७,१६
से २१

मतिअण्णाणपरिणाम (मत्यज्ञानपरिणाम) प १३।१०

मतिअण्णाणि (मत्यज्ञानिन्) प ३।१०३;५।८०,६६,
११७;१३।१४,१६,१७;१८।८३

मतिणाण (मतिज्ञान) प २६।६

मत्त (मत्त) ज २।१२

मत्त (अमत्र) सू २०।४ उ १।६३,१०५,१०६

मत्तंग (मत्ताङ्ग) ज २।१३

मत्तजला (मत्तजला) ज ४।२०२

मत्तियावई (मृत्तिकावती) प १।६३।४

मत्थगसूल (मस्तकशूल) ज २।४३

मत्थय (मस्तक) ज ३।५,६,८,१२,१६,२६,३६,
४७,५३,५६,६२,६४,७०,७७,८१,८२,८४,
८८,६०,१००,११४,१२६,१३३,१३८,१४२,
१४५,१५१,१५७,१६५,१८१,१८७,१८६,
२०५,२०६,२०६,२१८;५।५,२१,४६,५८
उ १।३६,४५,५५,५८,८०,८३,६६.१०७,
१०८,११६,११८,१२२;३।१०६,१३८;४।१५;
५।१७

मदणसलागा (मदनशलाका) प १।७९

मदणसाला (मदनशाला) उ ५।५५

मद्दग (दे०) प १।३७।४

मद्दव (मार्दव) ज २।१६,७१

मद्दुग (मद्गुक) ज २।१३७

मधु (मधु) प १७।१३४ ज २।१०९,११०

मधुर (मधुर) ज ३।१८६,२०४

√**मन्न** (मन्) मन्ने ज ३।१०५

मम्म (मर्मन्) उ १।६६

मम्मण (मन्मन) उ ३।९८

मय (मद) च १।१

मयकिच्च (मृतकृत्य) उ १।९२

मयणिज्ज (मदनीय) प १७।१३४ ज २।१८

मयूर (मयूर) प १।७९ ज २।१५ उ ५।५५

मरगय (मरकत) प १।२०।३ ज ३।१०९

मरण (मरण) प १।१।१; २।६४;२।६४।९,२२; ३६।१।१,३६।८३।२,९४।१ ज २।७०,८८, ८९,१०३,१०४;३।२२५ सू २०।९।६ उ ३।११२,१५९;४।१९

मरीइ (मरीचि) ज १।३७

मरीइया (मरीचिका) ज ५।३२

मरुदेव (मरुदेव) ज २।५९,६२

मरुदेवा (मरुदेवा) ज २।६३

मरुय (मरुक) प १।८९

मरुयग (मरुबक) प १।४४।३ मरुआ

मरुयरायवसभकप्प (मरुद्राजवृषभकल्प) ज ३।१८,९३,१८०

मरुयापुड (मरुबकपुट) ज ४।१०७

मलय (मलय) प १।८९,१।९३।३ ज १।२६;३।२, २११;५।५५ उ १।१०,२९,६९;५।११

मलयगिरि (मलयगिरि) ज ३।२४

मलिण (मलिन) ज २।१३३

मलिय (मृदित) ज ३।२२१ उ १।३५;३।५०, ११०,११३;४।२०

मल्ल (माल्य) प २।३०,३१,४१,४९ ज २।१२०; ३।९,११,१२,२१,३४;५।५५,५७ उ १।३५; ३।५०,११०

मल्ल (मल्ल) ज २।३२;३।७८,८५,८८,१८०, २०९,२११,२२१;५।२२,२६

मल्लइ (मल्लकि) उ १।१२७ से १३०,१३२

मल्लदाम (माल्यदामन्) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,९,१२,१८,२८,३०,३५,४१,४९,५८; ६६,७४,७७,७८,८८,९३,११७,११९,१४७, १६८,१७८,१८०,२१२,२१३,२२२

मल्ल (वासा) (माल्यवर्षा) ज ५।५७

मल्लि (मल्लि) ज ३।१०९

मल्लिया (मल्लिका) प १।३८।२ ज २।१०; ३।१२,८८,१७८;५।५,५८;७।१७८

मल्लियापुड (मल्लिकापुट) ज ४।१०७

मविज्जमाण (माप्यमान) प १।४८।५९

मवेज्जमाण (माप्यमान) प १।४८।५८

मसग (मशक) प १।५१।१ ज २।४० उ ३।१२८

मसारगल्ल (दे०) प १।२०।३ ज ३।१०९;५।५

मसि (मसि, मषि) ज २।२३

मसूर (मसूर) प १।४५।१,१।७९;१५।३,२१; २१।२३,८० ज २।३७

मह (महत्) प २।३०,३१,४१,४९,६२;२३।१९३; ३६।८१ ज १।१२,१४,३७,४०,४२,४३; २।३१;३।२४,१९१,१९३,१९४,१९७;४।३, ६,९,१२,१३,२४,२५,३१,३३,३९ से ४१,४७, ४९,५९,६६ से ६८,७०,७४,७५,७६,८८,९३, १५६,२१६,२१८,२२१,२३५,२४३,२५०; ५।५,७,३५ से ३८,५४,६७;७।५०

√**मह** (मथ्) महिति ज ५।१६ महेइ उ ३।५१

महआस (महाश्व) ज ३।१७९

महइ (महती) प २।२७ ज १।१०;२।११४,११५; ५।४३

महइमहालिय (महतीमहत्) ज १।२०;४।१४

महंत (महत्) प २३।१९३ ज १।९,२६;३।२ उ १।१०,२९,६९;५।११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महंततर (महत्तर) ज ४।९०,१०२
महग्गय (महाग्रह) ज ७।११३
महग्गह (महाग्रह) ज ७।१,१०४,१७०
सू १०।१३०; १९।५,८; ११।३,१५।३,१९, २१।४,७;१९।२२।६,१३; २०।८ उ ३।२५, ८४ से ८६
महग्गहत्त (महाग्रहत्व) उ ३।८३
महग्घ (महार्घ) ज ३।८५,२०७,२०८,२२२; ५।५४ सू २०।७ उ १।१९,४२; ३।२९,१४१;४।१२
महज्जुइ (महाद्युति) ज १।२४,३१;३।११५,१२४, १२५,२२६; ४।१६५; ५।१८
महज्जुइय (महाद्युतिक) प २।४९
महज्जुतीय (महाद्युतिक) प २।३०,४१; ३६।८१
महड्ढिय (महर्द्धिक) प २।४६
महड्ढीय (महर्द्धिक) ज ४।१७७
महण (मथन) ज ३।२२१
महत (महत्) सू १८।२३
महति (महती) ज ३।३१
महतिमहालय (महतीमहत्) प २।६३
महत्तरग (महत्तरक) उ १।१९
महत्तरगत्त (महत्तरकत्व) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।१८५,२०९,२२१;५।१९ उ ५।१०
महत्तरिया (महत्तरिका) ज ४।१८; ५।१ से ३,५ से १०,१२ से १७ उ ३।९०; ४।५
महत्थ (महार्थ) ज ३।२०७,२०८;५।५४,५५
महदंडय (महादण्डक) प ३।१।२
महद्दह (महाद्रह) ज ५।५५; ६।१७
महप्पत्थाण (महाप्रस्थान) उ ३।५५
महप्प (महात्मन्) ज ३।७७,१०९
महब्बल (महाबल) प २।३०,३१; ३६।८१ उ ५।२५
महया (महत्) ज १।२६,४५;२।१२,६५;३।२,१२, २२,३६,७८,८२,८८,८९,९३,९९,१०२,१०६, १५५,१५६,१८०,१८५,१८७,२१२,२१३, २१४,२१८; ४।२३,३८,६५,७३,९०,९१,१७७; ५।२२,२६,५६,५७,५८,७२,७३;७।५५,५८, १७८,१८४ सू १९।२३,२६ उ १।१०,२३, २९,६०,६२,६५,६८,६९,७२,८५,८७,९१ से ९३,१३८,१३९;५।८,११,१६,२०,२७
महरिह (महार्ह) ज ३।९,८१,११७,२०७,२०८, २२२;५।५४
महव्वय (महाव्रत) ज २।७२
महा (मघा) ज ७।१४७,१५०,१६२,१६३ सू १०।१ से ४,६,१४,२३,६९,७०,७५,८३,१२०,१३१ से १३३
महाओहस्सर (महौघस्वर) ज ५।५१
महाकंदिय (महाक्रन्दित) प २।४१,४२,४७।१
महाकण्ह (महाकृष्ण) उ १।७
महाकच्छ (महाकच्छ) ज ४।१८२ से १८५
महाकच्छकूड (महाकच्छकूट) ज ४।१८६
महाकम्मतराग (महाकर्मतरक) प १७।४,१६
महाकाय (महाकाय) प २।४१,४५,४५।२
महाकाल (महाकाल) प २।२७,४४,४५,४५।१, २।४६,४७ ज ३।१६७।१,८,१७८ सू २०।८, २०।८।५ उ १।७
महाघोस (महाघोष) प २।४०।७ ज ५।४८,४९
महाचाव (महाचाप) ज ३।२४।४,३७।२,४५।२, १३१।४
महाजस (महायशस्) सू १७।१; २०।१,२
महाजाइ (महाजाति) प १।३८।३ ज २।१०
महाजुतिय (महाद्युतिक) प १७।१;२०।१,२
महाजुतीय (महाद्युतिक) प २।३४
महाजुद्ध (महायुद्ध) ज २।४२
महाणई (महानदी) ज १।१६,१८,२०,४८;२।१३३; १३४;३।१,१४,१५,१८,५१,५२,७६,७८,८१, ९७ से १०१,१११,११३,१२८,१४९ से १५१, १६१,१६४,१७०;४।२३,२४,२५,३५,३६,३८ से ४०,४२,५७,६५ से ६७,७१,७३,७४,७७, ७८,८४,९० से ९२,९४,९५,११०,१४१,१४३, १६७,१६९,१७४,१७७,१७८,१८१,१८३ से १८५,१८७,१८९,१९०,२००,२०१,२०२,

२०६,२०८,२१२,२१५,२३२,२६२;४।५५;
६।१ से २२ उ १।६७;३।७१,५६,५८
महाणक्खत्त (महानक्षत्र) सू १०।२५,४३,१०८
महाणदी (महानदी) ज ४।१६५,२६८
महाणिरय (महानिरय) प २।२७
महाणिहि (महानिधि) ज ३।१७८,१८३,२२०,
२२१
महाणुभाग (महानुभाग) प २।३०,३१,४१,४६;
३६।८१ ज १।२४,३१;३।११५,१२४,१२५,
२२६;४।६०;५।१८ सू १७।१;२०।१,२
महाणुभाव (महानुभाव) सू १७।१;२०।१,२
महातव (महातपस्) ज १।५
महादंडय (महादण्डक) प ३।१८३
महादुदुम (महाद्रुम) ज ५।५१
महाधणु (महाधनुष्) उ ५।२।१
महानिहि (महानिधि) ज ३।१६७।१,१०
महानील (महानील) प २।३१ से ३३
महापउम (महापद्म) ज ३।१६७।१,६,१७८
उ २।२,२०
महापउमद्दह (महापद्मद्रह) ज ४।६४,६५,७३,८६
महापउमा (महापद्मा) उ २।१६,२०
महापम्ह (महापक्ष्म) ज ४।२१२,२१२।१
महापह (महापथ) ज ३।१८५,२१२,२१३;५।७२,
७३ उ १।१८
महापाताल (महापाताल) प २।१६।१
महापुंडरीय (महापुण्डरीक) ज ४।२६८
महापुंडरीयहत्थगय (हस्तगतमहापुंडरीक) ज ३।१०
महापुरा (महापुरा) ज ४।२१२।२
महापुरिस (महापुरुष) प २।४५,२।४५।२
महापुरिसपडण (महापुरुषपतन) ज २।४२
महापोंडरीय (महापौण्डरीक) प १।४६ ज ४।३,२५
महाफल (महाफल) उ १।१७
महाबल (महाबल) प २।३१,४१,४९ ज १।२४,
३१;३।७७,१०९,११५,१२४,१२५,१२६,
२२६;५।१८ सू १७।१,२०।१,२ उ २।६;
५।१३,२५
महाभीम (महाभीम) प २।४५,२।४५।१
महामंडलिय (महामाण्डलिक) प १।७४
महामंति (महामन्त्रिन्) ज ३।६,७७,२२२
महामहिम (महामहिमन्) ज २।११७,११८;
३।१२,१३,१४,२८,३०,४१,४२,४९ से ५१,
५८ से ६०,६६ से ६८,७४ से ७६ १३६,१३९,
१४७ से १५१,१६८,१६९,१७०;५।७४
महामेह (महामेघ) ज २।१०,१४१,१४२,१४५;
३।६,१७,२१,३१,३४,३५,१७७,२२२ उ ३।४९
महायस (महायशस्) प २।३०,३१,४१,४९;
३६।८१ ज १।२४,३१,३।११५,१२४,१२५,
२२६;५।१८
महारह (महारथ) ज ३।३५
महाराय (महाराज) ३।२०७,२०८,२२५ उ ३।५१,
५३,५४
महारायवास (महाराजवास) ज २।६४
महारुधिरपडण (महारुधिरपतन) ज २।४२
महारोरुय (महारौरुक) प २।२७
महालय (महत्, महालय) प २।२७,६३
ज २।११४,११५;५।४३
महावच्छ (महावत्स) ज ४।२०२।१,२०३
महावप्प (महावप्र) ज ४।२१२,२१२।३
महाविजय (महाविजय) ज २।१७
महावित्त (महावृत्त) ज ५।५८
महाविदेह (महाविदेह) प १।७४,८८;२।७
ज ४।८६,९८ से १०३,१०८,१६२,१६७,
१६६,१७२ से १७४,१७८,१८१,१८२,१८४,
१८५,१८७,१८८,१९०,१९१,१९३,१९४,
१९६,१९७,१९९,२०० से २०३,२०५,२०६,
२१३,२६२;६।६,१४,२२ उ १।१४१,१४७;
२।१३,२२;३।१८,२१,८६,१५२,१६५,१६९;
४।२६,२८;५।४३
महाविमाण (महाविमान) प २।६४
महावीर (महावीर) प १।१।१ ज १।५,६;७।२१४
चं १० सू १।५ उ १।२,४ से ८,१६,१७,१९
से २६,१४२,१४३;२।१ से ३,१० से १२,१४,

१५,२१; ३।१ से ३,७,८,१२,१६,२०,२२, २३,२६,८७,८८,६१,६३,१५३,१५४,१६६, १६७,१७०; ४।१ से ३,२७;५।१ से ३,४४

महाविदणतराग (महाविदनतरक) प १७।६,२७

महासंगाम (महासंग्राम) ज २।४२

महासत्थपडण (महाशस्त्रपतन) ज २।४२

महासमुद्द (महासमुद्र) ज ३।२२,३६,७८,६३,६६, १०६,१६३,१८०

महासरीर (महाशरीर) प १७।२,२५

महासुक्क (महाशुक्र) प २।४६,५६,५७; ३।३५, १८३; ४।२४६ से २५१; ६।३३,५६; ७।१४; २१।७०; २८।८१; ३३।१६; ३४।१६,१८ उ २।२२

महासुक्कग (महाशुक्रज) ज ५।४६

महासुक्कवडेंसय (महाशुक्रावतंसक) प २।५६

महासुमिण (महास्वप्न) उ १।४० ४३

महासेणकण्ह (महासेनकृष्ण) उ १।७

महासेत (महाश्वेत) प २।४७।३

महासोक्ख (महासौख्य) प २।३०,३१,४१,४६; ३६।८१ ज १।२४,३१; ३।११५,१२४,१२५, २२६; ५।१८ सू १७।१; २०।१

महाहिमवंत (महाहिमवत्) प १६।३० ज ४।५४, ५५,६१ से ६३,७६ से ८१,२६८

महिड्ढिय (महर्द्धिक) प २।३१,३७,३६,४२,४३, ४८,५०,५२; १७।८४ से ८७,८६; ३६।८१ ज १।२४,३१,४५,४७,५१; ३।११५,१२४, १२५,२२६; ४।२२,३४,५१,५४,६०,६१,६४, ८०,८४,८५,६७,१०२,१०७,११३,१५६, १६१,१६५,१६६,१७७,१८०,१८४,१८६, १६६,१६८,२०३,२११,२६१,२६४,२६६, २७२; ५।१८; ७।१८१,२१३ सू १७।१; १८।१६; २०।१,२

महिंद (महेन्द्र) ज १।२६; ३।२ उ १।१०,२६,६६; ५।११

महिंदज्झय (महेन्द्रध्वज) ज ४।१२८,१३३,१३६; ५।४३,४४,४६,५०,५२,५३ उ ३।७

महिड्ढीय (महर्द्धिक) प २।३०,३४,३५ से ३७, ३६,४१,४६,४६,५०,५८

महित्ता (मथित्वा) ज ५।१६

महित्थ (दे०) प १।३७।४

महिमा (महिमन्) प २।३१,६०,११६;५।३,७,२२, ४६,७४ ज २।३१,६०,११६;५।३,७,२२,४६, ७४

महिय (महित) प २।३०,३१,४१ ज १।३७;३।७, १०८ से १११

महिय (मथित) उ १।२२,१४०

महिया (महिका) प १।२३

महिला (महिला) ज २।१५,६४; ३।१३८,१६७।४

महिलिया (महिलिका) ज ३।१२६।३

महिवइ (महीपति) ज ३।११७

महिस (महिष) प १।६४; २।४६;११।२१ ज ३।२४,१०३

महिसी (महिषी) प ११।२३ ज २।३४; ७।१६८।२

महु (मधु) ज ७।१७८ उ १।३४,४६,७४; ३।५१

महु (मधुक) प १।४८।३

महुयरी (मधुकरी) ज २।१२

महुर (मधुर) प १।४ से ६; ५।५,७,२०५; ११।५८; १३।२८;२३।४६,१०८; २८।२६, ३२,६६ ज २।१२,१५,६५,१४५;४।३,२५; ५।२८; ७।१७८ उ १।४१,४४;३।६८

महुरतण (मधुरतृण) प १।४२।२

महुरयर (मधुरतर) ज ५।२२ से २४

महुररस (मधुररस) प १।४८।४

महुरा (मथुरा) प १।६३।५

महुसिंगी (मधुश्रृङ्गी) प १।४८।३

महुस्सर (मधुस्वर) प ५।५२

महेत्ता (मथित्वा) उ ३।५१

महेसर (महेश्वर) प २।४७।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महोरग (महोरग) प १।६८,७५,१३२; २।४५ ज ३।११५,१२४,१२५

महोरगच्छाया (महोरगच्छाया) प १६।४७

मा (मा) उ १।४१; ३।१०३,११२; ४।११

माइ (मातृ) उ १।४८; २।२२; ४।२८; ५।४३

माइमिच्छद्दिट्ठि (मायिमिथ्यादृष्टि) प १५।४९; १७।२२; ३४।१२; ३५।२३

माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णग (मायिमिथ्यादृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७,२९

माइमिच्छद्दिट्ठीउववण्णग (मायिमिथ्यादृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७

माइय (मायिक) ज २।१५

माईवाह (मातृवाह) प १।४९

माउय (मातृक) ज ५।९ से १२,१७,४६,७२,७३

माउलिंग (मातुलिङ्ग) प १।३६।१

माउलिंगाराम (मातुलिंगाराम) उ ३।४८,५५

माउलिंगी (मातुलिङ्गी) प १।३७।१

माउलुंग (मातुलिङ्ग) प १६।५५; १७।१३२

मागह (मागध) ज ५।५५; ६।१२ से १४

मागहकुमार (मागधकुमार) ज ३।१३१

मागहतित्थ (मागधतीर्थ) ज ३।१४,१५,१८,२२; २६; ५।५५

मागहतित्थकुमार (मागधतीर्थकुमार) ज ३।२०, २६,२७,२८,३०

मागहतित्थाधिपति (मागधतीर्थाधिपति) ज ३।२५

मागहतित्थाहिवइ (मागधतीर्थाधिपति) ज ३।२६

माघी (माघी) ज ७।१४०

माडंबिय (माडम्बिक) प १६।४१ ज २।२५; ३।६, १०,७७,८६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०, २१६,२१९,२२१,२२२ उ १।९२; ३।११, १०१; ५।१०

माढरी (माठरी) प १।४८।४

माढी (माठी) ज ३।३१

माण (मान) प ११।३४।१; १४।४,६,८,१० से १४; २२।२०; २३।६,३५,१८४ ज २।१६,६९,१३३; ३।६५,१३८,१५६,१६७।३,२२१ सू १२।१७।१ उ ३।३४

माणकसाइ (मानकषायिन्) प ३।९८; २८।१३३

माणकसाय (मानकषाय) प १४।१

माणकसायपरिणाम (मानकषायपरिणाम) प १३।५

माणकसायि (मानकषायिन्) प ३।९८

माणणिस्सिया (माननिश्रिता) प ११।३४

माणभूरण (मानभञ्जन?) ज ५।५८

माणवग (माणवक) ज २।१२०; ३।१६७।१,९, ३।१७८; ४।१३५ सू २०।८

माणवय (मानवक) ज ४।१३३; ७।१८५ सू १८।२३; २०।८४

माणस (मानस) प ३५।१।२,३५।६,७ ज ५।२६

माणसंजलणा (मानसंज्वलना) प २३।७०

माणसण्णा (मानसंज्ञा) प ८।१,२

माणसमुग्घाय (मानसमुद्घात) प ३६।४२,४६, ४८ से ५२

माणि (मानिन्) ज ४।१७२।१ सू २०।९।२

माणिक्क (माणिक्य) ज ३।१०९

माणिभद्द (माणिभद्र) प २।४५,२।४५।१ ज १।३; ७।२१४ चं ७,९ सू १।२,४ उ ३।२।१,३।१६९

माणिभद्दकूड (माणिभद्रकूट) ज १।३४,४६

माणुस (मानुष) प २।६४।१४ ज २।१५,६७; ३।९२,११९,४।१७७ सू १९।२२।२; २०।२

माणुसखेत्त (मानुषक्षेत्र) सू १९।२१।१,२,१९।२६

माणुसणग (मानुषनग) सू १९।२२।२७,२९

माणुसलोग (मानुषलोक) सू १९।२१।६; २०।२

माणुसुत्तर (मानुषोत्तर) ज ७।५५,५८ सू १९।१६

माणुस्सग (मानुष्यक) उ ३।१३७

माणुस्सय (मानुष्यक) ज ३।८२,१८७,२१८, २२१; ४।१७७ सू २०।७ उ १।११,३४; ५।२५

माता (माता) प २।६४

√**माय** (मा) मायज्जा प २।६४।१६

मायंजण (मातांजन) ज ४।२०२

मायकसाइ (मायाकषायिन्) प ३।९८,१८।६५

मायणि (मादनि) उ ५।२।१

---

१. हे० ४।१०६

माया (माया) प ११।३४।१;१४।४,६,८,१० से १४;२२।१०;२३।६,३५,१८४ ज २।१६,६६, १३३ उ ३।३४
माया (मातृ) ज २।२७,६६;५।५,७ से १०,१२, १४,१७,४६,६७ उ १।१४८
माया (मात्रा) ज ४।३६,४३,७२,७८,९५,१०३, १४३,१७८,२००,२१३
मायाकसाइ (मायाकषायिन्) प २८।१३३
मायाकसाय (मायाकषाय) १४।१
मायाकसायपरिणाम (मायाकषायपरिणाम) १३।५
मायानिस्सिया (मायानिश्रिता) ११।३४
मायामोस (मायामृषा) प २२।२०,८०
मायामोसविरय (मायामृषाविरत) प २२।८५,८६
मायावत्तिया (मायाप्रत्यया) प १७।११,२२,२३, २५; २२।६०,६३,६८,७१,९३,९६,१०१
मायासंजलण (मायासंज्वलन) प २३।७१
मायासण्णा (मायासंज्ञा) प ८।१,२
मायासमुग्घात (मायासमुद्घात) प ३६।४६
मायासमुग्घाय (मायासमुद्घात) प ३६।४२,४८ से ५१
मारणंतियसमुग्घाय (मारणान्तिकसमुद्घात) प १५।४३; २१।८४ से ९३; ३६।१,४,७,२७, २९,३५ से ४१,४६,५३ से ५८,६६
मार (मार) ज ५।३२
√मार (मारय्) मारिस्सइ उ १।८९
मारिबहुल (मारिबहुल) ज २।१८
मारुय (मारुत) ज ५।५
मारेउकाम (मारयितुकाम) उ १।७३
माल (मालक) प १।३७।५ नीम
माल (माला) प २।५० ज ५।१८
मालव (मालव) प १।८९
मालवंत (माल्यवत्) ज ४।१०८,१४२।३,१४३, १६२।१,१६३ से १६७,१६९,१७२ से १७४, २०३,२०७,२०९,२१०,२१५,२६२
मालवंतकूड (माल्यवत्कूट) ज ४।१६३
मालवंतद्दह (माल्यवत्द्रह) ज ४।२६२
मालवंतपरियाय (माल्यवत्पर्याय) प १६।३० ज ४।२७२
माला (माला) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।९,२०, ३३,४७,५४,६३,७१,८४,११३,१३७,१४३, १६७,१८२,१८६,२०४,२२२
मालागार (मालाकार) ज ५।७
मालि (मालिन्) प १।७१ सांप विशेष
मालिया (मालिका) ज ७।१७८
मालुय (मालुक) प १।३५।१
मालुया (मालुका) प १।४०।५,१।५०
मास (मास) प ४।१०१,१०३; ६।५,१३ से १६, ३५,३६,४४; १८।२३; २३।६९,७०,१६५, १८४ ज २।४,६४,६६,८३,८८; ३।११९; ७।११४।२,११५,१२६,१२७,१३६।१,१५६ से १६७ चं ५।३ सू १।९; ६।१; ८।१; १०।६३ से ७४,१२४; १२।३ से ६,१० से १२,१५; १३।३,१४,१७; १५।१४ से २८; २०।३ उ १।३९,४०,४३,५३,७४,७८;३।४०
मास (माष) प १।४५।१ ज २।३७; ३।११९ उ ३।३९,४०
मासखमण (मासक्षपण) उ २।१०; ३।१४,८३; ४।२४; ५।२८,३९,४३
मासचुण्ण (माषचूर्ण) प ११।७६
मासद्ध (मासार्ध) उ २।१०; ३।१४ ८३;४।२४; ५।२८,३९,४३
मासपण्णी (माषपर्णी) प १।४८।५
मासपुरी (मासपुरी) प १।९३।५
मासल (मांसल) प १७।१३४
मासासिंगा (मास 'सिंगा') प ११।७८ उडद की फली
मासवल्ली (माषवल्ली) प १।४०।४
मासिय (मासिक) ज ३।२२५
मासिया (मासिकी) उ २।१२;३।५०,१६१,१६९; ५।२८,४३
माह (माघ) ज २।८८;७।१०४ सू १०।१२४ उ ३।४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माहण (माहन) उ ३।२८,२९,४५;४७,४८,५०,
५५,५८,६०,७५,७६,७९

माहणकुल (माहनकुल) उ ३।१२५

माहणरिसी (माहनर्षि) उ ३।५१ से ५७,६२,८२

माहणी (माहनी) उ ३।१२९ से १३१,१३४ से
१४४,१४७,१४८

माहिंद (माहेन्द्र) प १।१३५;२।४९,५३,५४,६३;
३।३२,१८३;४।२४० से २४२;६।३०,५६,६५,
१५।८८;२१।७०;२८।७८;३४।१६,१८
ज ५।४९;७।१२२।१ सू १०।८४।१ उ २।२२

माहिंदग (माहेन्द्रक) प २।५३;७।११;३३।१६

माहिंदवडेंसय (माहेन्द्रावतंसक) प २।५३

माही (माघी) ज ७।१३७,१४९,१५३,१५४
सू १०।७,१४,२३,२५,२६

माहेसरी (माहेश्वरी) प १;९८

मिउ (मृदु) ज २।१६;३।११७;७।१७८

मिंजा (मज्जा) प १।४८।४५,४९

मिग (मृग) प २।४९ सू १०।१२०

मिगसिरा (मृगशिरा) ज ७।१३६,१६०,१६१
सू १०।२ से ५,१२,२३,३८

मिगसीसावलि (मृगशीर्षावलि) ज ७।१३३।१

मिच्छत्त (मिथ्यात्व) प २३।३ उ ३।४७

मिच्छत्तवेदणिज्ज (मिथ्यात्ववेदनीय) प २३।१६८,
१८२

मिच्छत्तवेयणिज्ज (मिथ्यात्ववेदनीय) प २३।१७,
३३,६६,१३८,१५७,१६१,१६६

मिच्छत्ताभिगमि (मिथ्यात्वाभिगमिन्) प ३४।१४

मिच्छद्दिट्ठि (मिथ्यादृष्टि) प १।७४,८४;
३।१००,१८३;६।९७;१३।१४,१६,१७;
१७।११,२३,२५;१८।७७;१९।१ से ५;
२१।७२;२३।१९९,२००;२८।१२९

मिच्छादंसणपरिणाम (मिथ्यादर्शनपरिणाम)
प १३।११

मिच्छादंसणवत्तिया (मिथ्यादर्शनप्रत्यया)
प १७।११,२२,२३,२५;२२।६०,६५,६६,
६९,७२ से ७४,९४,९५,९७ से ९९,१०१

मिच्छादंसणसल्ल (मिथ्यादर्शनशल्य) प २२।२०,२५

मिच्छादंसणसल्लविरय (मिथ्यादर्शनशल्यविरत)
प २२।८६,८७,८९,९०,९७ से ९९

मिच्छादंसणसल्लवेरमण (मिथ्यादर्शनशल्यविरमण)
प २१।८१,८२

मिच्छादंसणि (मिथ्यादर्शनिन्) प २२।६५

मिच्छादिट्ठि (मिथ्यादृष्टि) प २३।१९५

मिज्जमाण (मीयमान) सू १२।२

मित (मित) उ १।४१,४४

मित्त (मित्र) ज २।२९;३।१८७;७।१२२।१,
१३०,१८६।४ सू १०।८४।१ उ ३।३८,५०,
११०,१११;४।१६,१८

मित्तदेवया (मित्रदेवता) सू १०।८३

मिय (मृग) प १।६४;११।४ ज २।३५ उ ५।५

मिय (मित) ज २।१५

मियंक (मृगाङ्क) सू २०।४

मियगंध (मृगगन्ध) ज २।५०,१६४;४।१०९,२०५

मियलुद्ध (मृगलुब्ध) उ ३।५०

मियवालुंकी (मृगवालुंकी) प १।४८।४;१७।१३०

मियवालुंकीफल (मृगवालुंकीफल) प १७।१३०

मिरिय (मरिच) प १७।१३१

मिरियचुण्ण (मरिचचूर्ण) प ११।७६;१७।१३१

मियसिर (मृगशीर्ष) ज ७।१२८

मिरीइ (मरीचि) ज ३।११७

मिरीचि (मरीचि) सू २।१

मिरीया (मरीचि) सू २।१

मिलक्खु (म्लेच्छ) प १।८८,८९ ज ३।७७,१०९

मिलाइत्ता (मिलित्वा) ज ५।६४

√मिलाय (मिलय्) मिलायइ उ १।१२५ मिलायंति
ज ३।१११

मिलायित्ता (मिलित्वा) ज ३।१११

मिलिय (मिलित) प १६।१५;२२।८४

मिसिमिसित (दे०) ज ३।१०९;५।२१

मिसिमिसेंत (दे०) ज ३।९,२४,२२२;५।२८

मिसिमिसेमाण (दे०) ज ३।२६,३६,४७,१०७, १०६,१३३ उ १।२२,५७,८२,११५,१४०

मिस्स (मिश्र) प १।४७।२

मिस्सकेसी (मिश्रकेशी) ज ५।११।१

मिस्साकूर (मिश्राकूर) सू १०।२०

मिहिला (मिथिला) प १।६३।३ ज १।२,३; ७।२१४ चं ६ से ८ सू १।१ से ३ उ ३।१७१

मिहुण (मिथुन) ज २।१२;४।३,२५ उ ५।५

मीसग (मिश्रक) प ३२।६।१

मीसजोणि (मिश्रयोनि) प ९।१६

मीसजोणिय (मिश्रयोनिक) प ९।१६

मीसय (मिश्रक) ज २।६५,६६

मीसाहार (मिश्राहार) प २८।१,२

मीसिय (मिश्रित) प ९।१३ से १७

मुइंग (मृदंग) प २।३०,३१,४१,४६;३३।२४ ज १।४५;३।१२,२८,४१,४६,५८,६६,७४, ७८,८२,१४७,१६८,१८०,१८५,१८७,२०६, २१२,२१३,२१८;५।१,५,१६;७।५५,५८, १८४ सू १८।२३;१६।२३,२६

मुइंगपुक्खर (मृदंगपुष्कर) ज २।१२७

√मुंच (मुच्) मोच्छिहिति ज २।१३१

मुंजपाउयार (मुञ्जपादुकाकार) प १।६७

मुंड (मुण्ड) प २०।१७,१८ ज २।६५,६७,८५,८७ उ ३।१३,१०६ से १०८,११२,११८,१३६, १३८,१३६;४।१४,१६;५।३२

मुंडभाव (मुण्डभाव) उ ५।४३

मुंडि (मुण्डिन्) ज ३।१७८

मुक्क (मुक्त) प २।३०,३१,४१ ज २।१०,१५; ३।७,८८;४।१६६।५।७

मुक्केलग (दे०) प १२।८ से १३,१६,२०,२१, २३,२४,२७,२८,३१ से ३३

मुक्केलय (दे०) प १२।७ से १०,१६,२०,२४,२७, २८,३६

मुगुंद (मुकुन्द) ज ३।३१

मुग्ग (मुद्ग) प १।४५।१ ज २।३७;३।११६

मुग्गचुण्ण (मुद्गचूर्ण) प ११।७६

मुग्गपण्णी (मुद्गपर्णी) प १।४८।५

मुग्गसिंगा (मुद्ग'सिंगा') प ११।७८ मूंग की फली

मुग्गसूव (मुद्गसूप) सू १०।१२०

√मुच्च (मुच्) मुच्चइ प ३६।८८ मुच्चंति प ६।११० ज १।२२,५०;२।५८,१२३,१२८; ४।१०१ उ ३।१४२ मुच्चति प ३६।६१ मुच्चिहिइ उ १।१४१;३।४६;५।४३ मुच्चिहिंति ज २।१५१ मुच्चेज्जा प २०।१८

मुच्छिय (मूर्च्छित) ज ५।२६ उ १।४७;३।११४, ११५,११६

मुट्ठि (मुष्टि) ज २।१४१ से १४५;३।११५, ११६,१२२,१२४

मुट्ठिय (मौष्टिक,मुष्टिक) ज २।३२;५,५

मुणाल (मृणाल) प १।४६,१।४८।४२;२।६४ ज ३।१०६;४।३,२५

मुणालिया (मृणालिका) प २।३१

मुणेयव्व (ज्ञातव्य) प १।३८।३;२।४०।६,११; १५।१४३ ज ४।१४२।३;७।१३४।४ सू १६।२२।११,२२

मुत्त (मुक्त) २।८८,८६;३।७६,११६,११७,२२५; ५।५,२१,४६

मुत्त (मूत्र) उ ३।१३०,१३१,१३४

मुत्तजाल (मुक्तजाल) ज ३।१७७

मुत्तमाण (मूत्रयत्) उ ३।१३०,१३१,१३४

मुत्ता (मुक्ता) ज ४।२७

मुत्ताजाल (मुक्ताजाल) ज ३।३०,४७,२२२

मुत्तादाम (मुक्तादामन्) ज ५।३८

मुत्तालय (मुक्तालय) प २।६४

मुत्तावलि (मुक्तावलि) ज ३।२११;४।२३,३८, ६५,७३,६०,६१

मुत्ति (मुक्ति) प २।६४ ज २।७१

मुत्तियाजालय (मौक्तिकजालक) ज ३।१०६

मुत्तिसुह (मुक्तिसुख) प २।६४।१५

मुत्तोली (दे०) ज ३।१०६

मुद्दा (मुद्रा) प २।३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्दिया (मृद्वीका) प १।४०।४
मुद्दिया (मुद्रिका) ज ३।६,२११,२२२
मुद्दियासारय (मृद्वीकासारक) प १७।१३४
मुद्ध (मूर्धन्) ज ५।२१,५८,६४,७२,७३; ७।१७८
मुद्धंत (मूर्द्धान्त) मु २०।२
मुद्धय (दे०) प १।५८
मुद्धागय (मूर्द्धगत) ज ३।९२,११९
मुम्मुर (मुर्मुर) प १।२६
मुम्मुरभूय (मुर्मुरभूत) ज २।१३२,१४१
√मुय (मुच्) मुञ्चति दु २०।२
मुयंत (मुञ्चत्) ज २।१२
मुरव (मुरज) ज ३।१२,७८,१८०,२०९
मुरुंड (मुरुण्ड) प १।८९
मुरुंडी (मुरुण्डी) ज ३।११।२
मुसल (मुसल) प २।३०,३१,४१ ज २।६,१४१, १४५; ३।३,२०,३३,५४,६३,७१ ८४,११५, ११६,१२२,१२४,१३७,१४३,१६७,१८२; ७।१७८
मुसावाय (मृषावाद) प २२।१२,१३,८०
मुसावायविरय (मृषावादविरत) प २२।८५
मुसुंढी (दे०) प १।४८।१; २।३०,३१,४१
मुह (मुख) ज २।७१,१३३; ३।१०५,१०९, १६७।११; ४।२३,३६,३८,३९,४३,६५,६६, ७२,७३,७८,९०,९१,९५,१८३,२६२; ७।१७८ उ ३।५५,५६,६३,६४,६७,६८,७०,७१,७३, ७४,७९; ४।२१
मुहफुल्लय (मुखफुल्लक) ज ७।१३३।२
मुहफुल्लसंठिय (मुखफुल्लसंस्थित) सू १०।४७
मुहभंडग (मुखभाण्डक) ज ३।१७८
मुहमंगलिय (मुखमाङ्गलिक) ज २।६४; ३।१८५
मुहमंडव (मुखमण्डप) ज ४।१२२
मुहुत्त (मुहूर्त्त) प ६।१ से ४,६ से १०,१७,१८,२२ से ३०,४५; ७।३,६ से ९; २३।६३,१२७,१३१, १८८ ज २।४।२,३,२।६९,१३४; ३।३२।२, २०९; ७।२० से ३०,३६ से ३८,७९ से ८२, ९५,९६,९८ से १००,१२२,१२६,१२७, १३४।१,२,३,१३५।१ से ४ चं ३।१; ४।१; ५।२ सू १।७।१,१।८।१,१।९।२,१।१०,१३,१४,१६। से १८,२१,२२,२४,२७; २।३; ३।२; ४।८,९; ६।१; ८।१; ९।२; १०।२ से ५,८४,१३३,१३४, १५२ से १६५; ११।२ से ६; १२।२ से ९, १२,१३,१९ से २८; १३।१,३; १४।३,७; १५।२ से ४,८,९,११,१२,३७; १७।१ उ १।२४,४७, ९०,९२
मुहुत्तगइ (मुहूर्त्तगति) चं ४।३
मुहुत्तग्ग (मुहूर्त्ताग्र) चं ५।१ सू १।९।१; १०।२; १२।२ से ९
मूल (मूल) प १।३५,३६; १।४८।१०,२०,३०,३४, ५१ ज १।८,३५,५१; २।९; ३।२२२०; ४।७,१५, ४३,४५,७२,७८,९०,९५,११०,११४; १२०, १४२।१,१४६,१५६।१,१७४,२१३,२४२; ५।६७; ७।३६,३८,१२४।१,१२८,१२९, १३२।४,१३६,१४०,१४९,१५२,१६६,१६७, १७५ सू १०।२ से ६,१८,२३,५२,६२,७३ से ७५,८३,११७,१२०,१३१ से १३३; १२।२७; १८।७ उ ३।५०,५१,५३
मूलग (मूलक) प १।४४।२,१।४५।२ ज ३।११९
मूलग्ग (मूलाग्र) प १।४८।६३
मूलपासायवडेंसय (मूलप्रासादावतंसक) ज ४।१२०
मूलय (मूलक) प १।४८।२
मूलाग (मूलक) उ १।९२
मूलापण्ण (मूलकपर्ण) सू १०।१२०
मूलावीय (मूलकबीज) ज २।३७
मूलाहार (मूलाहार) उ ३।५०
मूसग (मूषक) प ११।७८
मूसा (मूषक) प १।७६
मेइणी (मेदिनी) ज २।१५
मेइणीय (मेदिनीक) ज ३।१८,३१,१८०
मेंढक (मेंढक) सू १०।१२० मेढासिंगी लता
मेंढमुह (मेंढमुख) प १।८६

मेघ (मेघ) ज ३।२२४
मेघमालिनी (मेघमालिनी) ज ४।२३८
मेघस्सर (मेघस्वर) ज ५।५२
मेच्छ (म्लेच्छ) प २।६४।१७
मेच्छजाइ (म्लेच्छजाति) ज ३।८१
मेढी (मेढी) उ ३।११
मेढीभूय (मेढीभूत) उ ३।११
मेत्त (मात्र) प १।४८।६०,१।७४,८४; १२।१२, २४,३८;१५।१०,२३; २१।८४,८६,८७,६० से ६३;३३।१३;३६।५६,६६,७०,७४ ज २।१३४ उ ३।८३,१२०,१२१,१२७,१२८,१६१; ४।२४;५।२३
मेद (मेदस्) प २।२० से २७
मेधावि (मेधाविन्) ज ५।५
मेय (मेद) प १।८६
मेरग (मैरेय) उ १।३४,४६,७४
मेरय (मैरेय) प १७।१३४
मेरा (मर्यादा) ज ३।२६,३६,४७,७६,१३२,१३३, १३८,१५१,१८८ सू २०।६।४
मेराग (मर्यादाक) ज ३।१२८,१५१,१७०,१८५, २०६,२२१ उ ५।१०
मेरु (मेरु) ज ४।२६०।१;७।३२।१,७।५५ सू ५।१; ७।१;१६।२२।१०,११,१६।२३
मेरुतालवण (मेरुतालवन) ज २।६
मेलिमिंद (दे०) प १।७०
मेसर (दे०) प १।७६
मेह (मेघ) ज २।१३१; ३।७,६३,१०६,१२५, १५७,१६३;५।२२ से २४ उ २।११
मेहंकरा (मेघंकरा) ज ४।२३७;५।६।१
मेहकुमार (मेघकुमार) उ २।१११,११२
मेहमालिणी (मेघमालिनी) ज ५।६।१
मेहमुह (मेघमुख) प १।८६ ज ३।१११ से ११५ १२४ से १२६
मेहवई (मेघवती) ज ४।२३८;५।६।१
मेहवण्ण (मेघवर्ण) उ ५।२४,२६
मेहा (मेघा) ज ३।३
मेहाणीय (मेघानीक) ज ३।११५,१२४,१२५
मेहावि (मेधाविन्) ज ३।१०६
मेहुण (मैथुन) प २२।१६,१७,८०
मेहुणवत्तिय (मैथुनप्रत्ययिक) ज ७।१८५ सू १८।२३, २४;२०।६
मेहुणसण्णा (मैथुनसंज्ञा) प ८।१ से ५,७ से ६,११
मोंढ (दे०) प १।८६
मोक्ख (मोक्ष) ज २।७१
मोगली (मोगली) एक जंगली पेड़ प १।४०।५
मोग्गर (मुद्गर) प १।३८।२; २।४१ ज २।१०
मोग्गलयण (मौद्गलायन) ज ७।१३२।१ सू १०।६२
मोत्ति (मौक्तिक) ज ३।१६७।८
मोत्तिय (मौक्तिक) प १।४६ ज २।२४,६४,६६; ३।३५
मोद्दाल (दे०) ज २।८
मोयई (मोची) प १।३५।१ हिलमोचिका साग
मोयग (मोचक) ज ५।२१
मोरगीवा (मयूरग्रीवा) प १७।१३४
मोसभासग (मृषाभाषक) प ११।६०
मोसमण (मृषामनस्) प १६।१,७
मोसमणजोग (मृषामनोयोग) प ३६।८६
मोसवइजोग (मृषावाक्योग) प ३६।६०
मोसा (मृषा) प ११।२ से १० २६ से २६,३२, ३४,४२,४३,४५,४६,८२,८४,८५,८७ से ८६
मोह (मोह) प २३।१६१ ज २।२३३
√मोह (मोहय्) मोहंति ज १।१३
मोहणिज्ज (मोहनीय) प २२।२८; २३।१,१२, १७,३२,१६२; २४।१३;२६।१२; २७।६
मोहरिय (मौखरिक) ज ३।१७८

य

य (च) प १।१० ज १।७ सू १।७ उ १।७; ३।२।१;४।२।१;५।२।१
या (च) उ ३।२।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√याण (ज्ञा) याणंति प १५।४६,४८,४६; ३४।११,१२ याणति प २३।१३ याणामो उ १।३६

याव (यावत्) प १।२०,२३,२६,२६,३६,३७,३६ से ४७,१।४८।७,१० से ३७,४१,४३,१।४८ से ५१,५६,६०,६३ से ६६,७०,७१,७५,७६,७८, ६६,६७

र

रइ (रति) प २।४१ ज ५।२६

रइकरग (रतिकरक) ज ५।४८,४६

रइकरगपव्वय (रतिकरकपर्वत) उ ५।४४

रइत (रचित) प ३६।६२

रइत (रतिद) ज ३।३५

रइय (रचित) प २।३०,३१,४१ ज १।३७;२।१५, ३।६,६,१८,२४,२५,६३,१०६,११७,१७८, १८०,२२१,२२२;५।४३;७।५५

रइय (रतिक) प २।४८

रइय (रतिद) ज २।१५

रइयामय (रजतमय) ज ४।१३

रउस्सल (रजस्वल) ज २।१३१

रएत्ता (रचयित्वा) उ १।१३७; ३।५१

रंग (रङ्ग) ज ३।१६७।६

रक्खस (राक्षस) प १।१३२; २।४१,४५ ज ७।१२२ सू १०।८४।३

रक्खा (रक्षा) ज ५।१६

रज्ज (राज्य) ज २।६४;३।२,१७५,१८८ उ १।६६, ६४,६६,१०३,१०६,११०,११३,११४,१२१, १२२,१२६;५।६,११

√रज्ज (रञ्ज्) रज्जति सू १३।१

रज्जधुरा (राज्यधूर्) उ १।३१

रज्जवास (राज्यवास) ज २।८७

रज्जसिरि (राज्यश्री) उ १।६५,६६,७१,६४,६८, ६६,१११,११२

रज्जु (रज्जु) ज ३।१०६; ७।१७८

रज्जुच्छाया (रज्जुच्छाया) सू ६।४

रट्ठ (राष्ट्र) उ १।६६,६४,६६

रट्ठकूड (राष्ट्रकूट) उ ३।१२८ से १३१,१३३, १३६,१३८ से १४०,१४७,१४६

रणभूमि (रणभूमि) उ १।१३५

रतण (रत्न) प २।४८

रतणप्पभा (रत्नप्रभा) प २।४८,४६; ३।१८३; ६।६१; १०।२,३

रतणवडेंसय (रत्नावतंसक) प २।५१

रतणामय (रत्नमय) प २।४६

रति (रति) प २३।३६,७६,१४४

रतिणाम (रतिनामन्) प २३।६४

रतिपसत्त (रतिप्रसक्त) सू २०।७

रत्त (रक्त) प २।३१,२।४०।१० ज ३।७,२४,२५, १८४,१८८; ७।१७८ सू १३।१; २०।३,७ उ १।७२,७३,८७,८८,६२

रत्त (रात्र) ज २।६।१,२।१४१ से १४५;३।११५, ११६,१२१,१२२,१२४

रत्तंसुय (रक्तांशुक) ज ४।१३ सू २०।७

रत्तकंबलसिला (रक्तकम्बलशिला) ज ४।२४४, २५२

रत्तकणवीरय (रक्तकरवीरक) प १७।१२६

रत्तचंदण (रक्तचन्दन) प २।३०,३१,४१

रत्तबंधुजीवय (रक्तबन्धुजीवक) प १७।१२६

रत्तरयण (रक्तरत्न) ज २।२४,६४,६६;३।१६७

रत्तवई (रक्तवती) ज ४।२७४; ६।१६

रत्तवईकूड (रक्तवतीकूट) ज ४।२७५

रत्तसिला (रक्तशिला) ज ४।२४४,२५१

रत्ता (रक्ता) ज ४।२७४; ६।१६

रत्ताकूड (रक्ताकूट) ज ४।२७५

रत्ताभ (रक्ताभ) प २।४६

रत्तासोग (रक्ताशोक) प १७।१२६

रत्ति (रात्रि) ज ३।६५,१५६

रत्तुप्पल (रक्तोत्पल) प १७।१२६ ज २।१५; ७।१७८

रत्था (रथ्या) ज ३।७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√रम (रम्) रमंति ज १।१३,३०,३३;३।७;४।२
रमंत (रममाण) ज ३।१७८
रमण (रमण) ज ३।१३८
रमणिज्ज (रमणीय) प २।३१,४८ से ५१,६३; १७।१०७,१०६ १११ ज १।१३,२१,२५,२६, २८,२६,३२,३३,३६,३७,३६,४०,४२,४६; २।७,१०,१५,३८,५२,५६,५७,१२२,१२७, १४७,१५०,१५६,१५६,१६१,१६४;३।६,८१, १६२,१६३,१६६,१६७,२२२;४।२,३,८,६,११, १२,१६,३२,४६,४६,४७,४६,५०,५६,५८,५६, ६३,६६,७०,८२,८७,८८,१००,१०४,१०६, १११,११२,११७,११८,१३१,१६६,१७०, १७६,२०२।१,२३४,२४० से २४२,२४७, २४८,२५०,२६७;५।३२,३५;७।१७८ सू २।१;६।३;१८।१
रम्म (रम्य) ज २।१०,१२;३।८१;४।२०२।१ उ ३।४६;५।६
रम्मग (रम्यक) ज ४।१०२,२०२
रम्मगकूड (रम्यककूट) ज ४।२६३।१,२६६।१
रम्मगवास (रम्यकवर्ष) प १।८७;१६।३० ज ४।१०२,१६२,२६६ से २६८;६।६,२१
रम्मय (रम्यक) प १७।१६४ ज ४।२०२।१,२६५ से २६७
रम्मयवास (रम्यकवर्ष) ज २।६
रय (रजस्) ज ३।२२३;५।७
√रय (रचय्) रएइ उ १।१३७;३।५१ रएंति ज २।६६ रएह ज २।६५ रयइ उ ३।११४
रयण (रत्न) प १।१।२;१।३,४८;२।३०,३१,४१, ४८;११।२५;१५।५५।२;२०।१।१ ज २।६४, ६६;३।६,१२,१८,२४,३०,३१;३।२।१,३५, ५६,६४,७६,७७,८१,११७,१२५ से १२८, १३८,१४५,१५१,१५२,१६७।१,५,१२,१४; ३।१६८,१७५,१७८,१८०,१८४,१६२,२११, २२१,२२२;४।४६,१३७;५।५,७,१३,१६, ३८,५८;७।१७८ सू १८।८;२०।७ उ १।१११, ११२,१२३,१३१
रयणकरंड (रत्नकरण्ड) ज ३।११
रयणकरंडग (रत्नकरण्डक) ज ५।५५ उ ३।१२८
रयणकुच्छिधारिय (रत्नकुक्षिधारिका) ज ५।५,४६
रयणचित्त (रत्नचित्र) ज ३।५६,१४५
रयणप्पभा (रत्नप्रभा) प १।५३;२।१ २०,२१, ३० से ४६,४१ से ४३,४६,५०,५१,६३; ३।११ २१;४।४ से ६;६।१०,४५,५१,७३, ८८,६१,१०६;१०।१ से ३,२८,३०;१६।२६; २०।६,६,३८,३६ ४६,५०,५६;२१।५२,५६, ६६;३०।२५ से २८;३३।३,१६ सू २।१; ६।३;१८।१
रयणप्पभापुढविणेरइय (रत्नप्रभापृथिवीनैरयिक) प २०।५०,५१
रयणवडेंसय (रत्नावतंसक) प २।५६
रयण (वासा) (रत्नवर्षा) ज ५।५७
रयणमय (रत्नमय) प २।३०,३१,४१ से ४३, ४६,५० से ५२,५८ से ६०,६३ ज १।६,१०, ३१,३५,४०,४६।१;२।११४,११५;३।६६, १००,१०१;४।२८,३०,४१,४५,५७,६२,७४, ७६,१०३,११४,१३६,१७८,२१२,२१७,२७६; ५।३७
रयणसंचया (रत्नसंचया) ज ४।२०२।२
रयणावली (रत्नावली) ज ३।२११
रयणि (रत्नि) प १।७५;२१।४।७,८;२१।६६,६७, ७०,७१,७४ ज २।१३३
रयणि (रजनि) सू १।१४;६।१
रयणिकर (रजनिकर) ज ३।१०६ सू १६।२२।१२, १३
रयणिखेत्त (रजनिक्षेत्र) ज ७।२७,३०
रयणिगर (रजनिकर) ज ३।११७
रयणिपुहत्तिय (रत्निपृथक्त्विक) प १।७५
रयणिय (रत्निक) उ ४।१०
रयणियर (रजनिकर) ज २।१५;३।११७
रयणी (रत्नि) ज २।६,१२८,१३३,१४८

रयणी (रजनी) ज २।१२८,१३३;३।१८८;७।१२० सू १०।८८।३ उ ३।४८,५०,५५,६३,६७,७०, ७३,१०६,११८

रयणुच्चय (रत्नोच्चय) सू ५।१

रयणोच्चय (रत्नोच्चय) ज ४।२६०।१

रयत्ताण (रजस्त्राण) ज ४।१३ सू २०।७

रयमत्त (रतमत्त) ज २।१२

रयय (रजत) ज ३।१०३;४।२५,१२५,१४६; १६२।१,२३८,२५५;५।५,६२;७।१७८

रययकूड (रजतकूट) ज ४।१६४,२३६

रययखंड (रजतखण्ड) प ११।७४

रययवालुया (रजतवालुका) ज ४।३

रययामय (रजतमय) ज १।२३;३।१२,८८;४।३, १३,२५,६४,८८,२०३;५।५८;७।१७८

रव (रव) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।४५;२।६५ ३।२२,३६,७८,८३,९३,९६,१६३,१८०,१८३, १८५,१८७,२०४,२०९,२१३,२१९;५।१,५, ९,२२,२६,४४,४६,४७,५६,६७;७।५५,५८, १७८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६ उ १।१२१,१२२,१२५,१२६,१३३,१३४,१३८; ३।१११;४।१८;५।१९

रवभूय (रवभूत) ज ३।१०६

रवि (रवि) ज २।१५;३।३,३०;७।१२७।१,१६७ सू १०।७७;१९।८।२;२२।३

रविकिरण (रविकिरण) ज २।१५

रस (रस) प १।४ से ९;३।१८२;५।५,७,१०,१२, १४,१६,१८,२०,२४,२८,३०,३२,३४,३७,३९, ४१,४५,५३,५६,५९,६१,६३,६८,७१,७४, ७६,७८,८३,८६,८९,९१,९३,९७,१०१,१०४, १०७,१०९,१११,११५,११९,१२९,१३८, १५०,१५२,१५४,१६०,२०५,२०७,२११, २१४,२२८,२४२,२४४;१०।५३।१;११।५७, ५८;१५।३८;१७।११४।१;२३।१५,१६,१९, २०,१०८;२८।२०,३२,६६;३६।८०,८१ ज २।१८,४५,१४२;३।८२,१८७,२१८; ७।११२।४,२०९ सू १०।१२९।४;२०।७ उ ५।२५

रसओ (रसतस्) प १।५ से ९;२८।२६,३२,६६

रसचरिम (रसचरम) प १०।५०,५१

रसणाम (रसनामन्) प २३।३८,४९

रसतो (रसतस्) प १।६,८,९;११।५८;२८।८,२०, ५४

रसदेवी (रसदेवी) उ ४।२।१

रसपज्जव (रसपर्यव) ज २।५१,५४,१२१,१२६, १३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३

रसपरिणाम (रसपरिणाम) प १३।२१,२८

रसभेय (रसभेद) प १।४८।५

रसमंत (रसवत्) प ११।५२,५७;२८।५,५१

रसमेह (रसमेघ) ज २।४५

रसविण्णाणावरण (रसविज्ञानावरण) प २३।१३

रसादेस (रसादेश) प १।२०,२३,२६,२९,४८

रसावरण (रसावरण) प २३।१३

रसिंदियत्त (रसेन्द्रियत्व) प ३४।२०

रसिय (रसित) ज ३।३५;५।२२ से २४,२६

रसोदय (रसोदक) प १।२३

रस्सि (रश्मि) ज ३।३,१८८

रह (रथ) ज १।२६;२।१२,३३,६५,१३४;३।३, १५,१७,२१ से २३,२८,३१,३६,३७,४१,४५, ४९,७७,७८,९१,९८,१०९,१३१,१३५,१७३, १७५,१७७ से १७९,१९९,२२१;५।५७ उ १।१४,१५,२१,२२,१२१,१२६,१३३,१३६ से १३८;४।१५;५।१८

रहचक्कवाल (रथचक्रवाल) प ३६।८१ ज १।७ सू १।४

रहच्छाया (रथच्छाया) प १६।४७

रहनेउरचक्कवाल (रथनूपुरचक्रवाल) ज १।२६

रहपह (रथपथ) ज २।१३४

रहमुसल (रथमुसल) उ १।१४,१५,२१,२२,२५, २६,१३६,१३७,१४०

रहरेणु (रथरेणु) ज २।६

रहवर (रथवर) ज २।१५;३।२२,३६,४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहसिर (रथशिरस्) ज ३।१३१,१३५
रहस्स (रहस्य) उ ३।११
रहस्सियग (राहसिक) उ १।४६
रहस्सियय (राहसिक) उ १।४४
√**रहस्सीकर** (रहस्यीकृ) रहस्सीकरेसि उ १।३९
रहिय (रहित) प ३२।६।१;३५।१।२ ज २।१५, १३३ सू २०।९।६
रहोकम्म (रहःकर्मन्) ज २।७१
राइ (रात्रि) ज २।१५; ३।११७,७।२६ से ३०, १२०,१२१ चं ५।२ सू १।९।३ ; २।१,३; १९।११।१
राइ (राजन्) उ ५।१०
राइंदिय (रात्रिंदिव) प ६।३० ; १८।३३,५१; २३।१६२ ज २।४९,५२,५६,१५९,१६१ ; ७।२७,३०,१५८,१६१से १६७ सू १।११, १४,२२ से २४,२७ ; २।३ ; ६।१;८।१; १०।१६६ से १६९; १२।२ से ९,१३,१५; १५।३२,३४,३७ उ १।५३,७८
राइंदियग्ग (रात्रिंदिवाग्र) सू १।११; १२।२ से ९, १५
राइण्ण (राजन्य) प १।९५ ज २।६५
राईसर (राजेश्वर) ज ३।९,७७,८६,१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६,२१९,२२१,२२२ उ ३।११,१०१;५।१०,१७,३६
राग (राग) प २।४१ ; १७।११६ ; २३।६ ज २।२९; ३।७,३५,१८४,१८८ सू १३।२
राति (रात्रि) सू १।१३,१४,१६,२१,२२,२४,२७; २।३ ; ३।२ ; ४।८,९;६।१ ; ८।१;९।२ ; १०।५, ८८।३
रातिंदिय (रात्रिंदिव) प ४।७२,७४,७६,७८,९८, १००;६।११,२९,३१ से ३४; १८।२२
रातीतिहि (रात्रितिथि) सू १०।८९,९१
राम (राम) प १।९३।६
रामकण्ह (रामकृष्ण) उ १।७
राय (राजन्) प १६।४१ ज १।३,२६ ; २।१९,२५, ६३;३।२ से ७,९ से १३,१५,१७ से २४,२६ से २९,३१ से ३४,३६ से ४२,४४ से ५०,५२ से ५९,६१ से ६७,६९ से ७४,७६,८३,८८, ९० से ९४,९६,९९ से १०१,१०६ से १०९, ११५ से १२०,१२१।१,१२२ से १२५; १२६।१,१२७,१२८,१३१ से १३४,१३५।१, १३७ से १३९,१४१,१४३,१४५ से १४७, १५० से १५४,१५७ से १६०,१६३ से १६७, १७०,१७३,१७५,१७७,१८१ से १८३,१८५ से १९२,१९८,१९९,२०१,२०२,२०४ से २१२,२१४,२१५,२१८,२१९,२२१ से २२३; ४।१७७,१८१,२००;५।५,७ चं ८ सू १।३,४ उ १।१० से १२,१४,१५,२१,२२,२५,२६,२९ से ३२,३४,३६ से ४४,४६,४९,५७,५८,६१, ६२,६५,६६,६८ से ७४,८२,८३,८६ से ९६, ९८ से ११९,१२१,१२७,१२९ से १४५ ; २।४,५,१६,१७;३।४,१५ से १८,२१,२४,८९, १५५,१६८;४।४,६;५।९,११ से १३,२५,३०
रायकुल (राजकुल) उ १।१११,११२;५।४३
रायगिह (राजगृह) प १।९३।१ उ १।१,२,२८,२९, ९३;३।४,२१,२४,८९,१५५,१६८ ; ४।४,६,७, १३,१५,१८
रायग्गल (राजार्गल) सू २०।८;२०।८।९
रायत (राजत) ज ३।११७
रायतेय (राजतेजस्) ज ३।१८,९३,१८०,१८७
रायधम्म (राजधर्म) ज २।१२९,१५८
रायपवर (राजप्रवर) ज ३।९५,९९,१५९
रायप्पसेणइज्ज (राजप्रश्नीय) ज ४।११५;५।३२
रायबहुल (राजबहुल) ज १।१८
रायमग्ग (राजमार्ग) ज २।६५
रायलच्छी (राजलक्ष्मी) ज ३।११७
रायवण्णय (राजवर्णक) ज १।२६;३।३
रायवर (राजवर) ज ३।८२,३६,९३,९९,१०६, १६३,१७५,१७८,१८०,१८८,२१९,२२४
रायवल्ली (राजवल्ली) प १।४८।४
रायसरिस (राजसदृश) उ १।१२८
रायहंस (राजहंस) प १।७९

रायहाणी (राजधानी) प १।७४ ज १।१६,४५, ४६,५१; २।२२,६५; ३।१,२,७,८,१४,१७२, १७३,१८०,१८२ से १८५,१६१,१६२,२०४, २०८,२०६,२१२,२२०,२२१,२२४; ४।५२, ५३,६०,८४,६६,१०६,११४ से ११७,१५६, १६०,१६३ से १६५,१७४,१७५,१७७ १८०, १८१,१६२,२००,२०२,२०४,२०६,२०७, २०८,२१०,२१२,२२६ से २३३,२३७ से २३६,२६३,२६६,२६६ २७२,२७५; ५।५०; ६।१६;७।१८४,१८५ उ ३।१०१

रायाभिसेय (राज्याभिषेक) ज २।८५;३।१८८, २०६,२१२,२१४ उ १।६५,६८,७२

रायारिह (राजार्ह) ज ३।८१

रालग (रालक) प १।४५।२ ज २।३७; ३।११६ दक्षिण भारत के जंगलों में मिलने वाला एक सदाबहार पेड़

√राव (रावय्) रावेंति ज ५।५७

रावेंत (रावयत्) ज ३।१७८

रासि (राशि) प २।६४।१६; १२।३२;१७।१२६

राहु (राहु) प २।४८ सू २०।२,८,२०।८।४

राहुकम्म (राहुकर्म) सू २०।२

राहुदेव (राहुदेव) सू २०।२

राहुविमाण (राहुविमान) सू १६।२२।१७; २०।२

रिउव्वेय (ऋजुर्वेद) उ ३।२८

रिक्ख (ऋक्ष) ज ३।६,१७,२१,३४,१७७,२२२ सू १५।३७; १६।२२।२६

रिगिसिगि (दे०) ज ३।३१ वाद्य विशेष

रिट्ठ (रिष्ट) ज ३।६२; ५।५,७,२१

रिट्ठपुरा (रिष्टपुरा) ज ४।२००।१

रिट्ठा (रिष्टा) ज ४।२००।१

रिट्ठामय (रिष्टमय) ज ४।७,२६

रिद्ध (ऋद्ध) ज १।२,२६;३।१ चं ६ सू १।१ उ १।१,६,२८;३।१५७;५।२४

रिसह (वृषभ) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३

रुइल (रुचिर) प २।४८ ज २।१५;३।३५;४।४६; ७।१७८

रुंद (दे०) ज ७।३२।१

रुक्ख (रूक्ष) प १।३३।१,१।३४,३६,४७।१; १७।१११ ज २।२०,३१,१३१,१४४ से १४६; ३।३२,१०६,१२६ उ ५।५

रुक्खगेहालय (रूक्षगेहालय) ज २।१६,२१

रुक्खमूल (रूक्षमूल) प १।४८।६१ ज २।८,६

रुक्खबहुल (रूक्षबहुल) ज १।१८

रुक्खमूलिय (रूक्षमूलिक) उ ३।५०

रुट्ठ (रुष्ट) ज ३।२६,३६,४७,१०७,१०६,१३३ उ १।२२,१४०

रुद्द (रुद्र) ज ७।१३०,१८६।३

रुद्ददेवया (रुद्रदेवता) सू १०।८३

रुप्प (रूप्य) प १।२०।१ ज ३।१६७।८ उ ३।४०

रुप्पकला (रूप्यकला) ज ४।२६८,२६६।१,२७२; ६।२०

रुप्पपट्ट (रूप्यपट्ट) ज ४।२६,२७०

रुप्पमणिमय (रूप्यमणिमय) ज ५।५५

रुप्पमय (रूप्यमय) ज ४।२६; ५।५५

रुप्पामय (रूप्यमय) ज ३।२०६;४।२७०

रुप्पि (रुक्मिन्) प १६।३० ज ४।२६५,२६८, २६६।१,२७०,२७१ सू २०।८,२०।८।३

रुप्पिणी (रुक्मिणी) उ ५।१०

रुप्पोभास (रूप्यावभास) सू २०।८

रुयग (रुचक) प २।३१ ज १।२३,२।१५;३।३२; ४।१,६२,८६,२३८; ५।८ से १७ सू १६।३५

रुयगकूड (रुचककूट) ज ४।६६,२३६

रुयगवर (रुचकवर) सू १६।३५

रुयगवरोद (रुचकवरोद) सू १६।३५

रुयगवरोभास (रुचकवरावभास) सू १६।३५

रुयय (रुचक) प १।२०।३ सू १६।३२ से ३४

रुरु (रुरु) प १।४८।२ ज १।३७;२।३५,१०१; ४।२७;५।२८

रुहिर (रुधिर) प २।२० से २७ ज ३।३१ उ १।४४ से ४६

रुहिरकद्दम (रुधिरकर्दम) उ १।१३६
रुहिरबिंदु (रुधिरबिन्दु) ज ७।१३३।२
रुहिरबिंदुसंठिय (रुधिरबिन्दुसंस्थित) सू १०।३६
रूत (रूत) ज ४।१३ सू २०।७
रूयंसा (रूपांशा) ज ५।१३
रूयगावई (रूपकावती) ज ५।१३
रूया (रूपा) ज ५।१३
रूव (रूप) प ११।२५,३३।१; १२।३२; १५।३७, ४१;२२।१७,८०; २३।१५,१६,१६,२०, ३४।१,२,३४।२० से २२ ज २।१५,१३३; ३।३,६,७६,८२,१०३,१०६,११६,११७,११६, १३८,१७८,१८६,१८७,२०४,२१८,२२२; ४।२७,४६;५।२८,४१,४३,५७,६८,७० सू २०।७ उ ३।१२७;५।२५
रूवग (रूपक) ज ४।२७; ५।२८;७।१७८
रूवपरियारग (रूपपरिचारक) प ३४।१८,२२,२५
रूवपरियारणा (रूपपरिचारणा) प ३४।१७,२२
रूवविसिट्ठया (रूपविशिष्टता) प २३।२१
रूवविहीणया (रूपविहीनता) प २३।२२
रूवसच्च (रूपसत्य) प ११।३३
रूवि (रूपिन्) प १।२,४,६; ५।१२३,१२५,१४४ सू १३।१७
रूवी (रूपिका) प १।३७।१ सफेद आक का वृक्ष
रूसमाण (रुष्यत्) उ ३।१३०
रेणु (रेणु) ज २।६,६५,१३१;५।७
रेणुबहुल (रेणुबहुल) ज २।१३२
रेणुया (रेणुका) प १।४८।५ रेणुका, संभालू के बीज
रेरिज्जमाण (राराज्यमान) उ ३।४६
रेवई (रेवती) ज ७।११३।१,१२८,१२६,१३६, १४०,१४३,१४६,१५८ सू १०।१ उ ५।१२, १३,३० ३१
रेवतय (रैवतक) उ ५।५
रेवती (रेवती) सू १०।२ से ६,१०,२२,२३,३३, ६१,६५,७५,८३,६८,१२०,१३१ से १३३; १२।२२
रेवयग (रैवतक) उ ५।६
रोइंदग (रोविन्दक) ज ५।५७
रोग (रोग) ज २।४३,१३१ उ ३।३५,११२
रोगबहुल (रोगबहुल) ज १।१८
रोज्झ (दे०) प १।६४
रोद्द (रौद्र) ज ७।१२२।१,१२६ सू १०।८४।१
रोम (रोमन्) प १।८६ ज २।१५,१३३
रोमक (रोमक) ज ३।८१
रोमकूव (रोमकूप) ज ५।२१
रोमग (रोमक) प १।८६
रोमराइ (रोमराजि) ज २।१५
√रोय (रुच्) रोएइ प १।१०।१२ रोएज्जा प २०।१७ १८,३४ रोयए प १।१०।१५
√रोय (रोचय्) रोएमि उ ३।१०३
रोय (रोग) उ ३।१२८
रोयणागिरि (रोचनगिरि) ज ४।२२५।१,२३३
रोयमाण (रुदत्) उ १।६२; ३।१३०
रोरुय (रोरुक,रौरव) प २।२७
√रोवाव (रोदय्) रोवावेइ उ ३।४८
रोवावित्तए (रोदयितुम्) उ ३।४८
रोवाविय (रोदित) उ ३।५०,५५
√रोह (रुह्) रोहंति ज ३।७६,११६
रोहिणिय (रोहिणीक) प १।५०
रोहिणी (रोहिणी) ज ७।१३।१,१२८,१२६, १३४।३,१३५।३,१३६,१४०,१४५,१४६,१६० सू १०।२ से ६,१२,२३,३७,६२,६७,७५,८३, १०२,१२०,१३१ से १३३
रोहियंस (रोहितांश) प १।४२।१ एक प्रकार का तृण
रोहियंसकूड (रोहितांशकूट) ज ४।४४
रोहियंसदीव (रोहितांशद्वीप) ज ४।४१
रोहियंसप्पवायकुंड (रोहितांशाप्रपातकुण्ड) ज ४।४० से ४२
रोहियंसा (रोहितांशा) ज ४।३८ से ४०,४२,४३, ५७,१८२,२७०;६।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोहियकूड (रोहितकूट) ज ४।७६

रोहियदीव (रोहितद्वीप) ज ४।६८,६६

रोहियप्पवायकुंड (रोहितप्रपातकुंड) ज ४।६७,६८,७१

रोहियमच्छ (रोहितमत्स्य) प १।५६

रोहिया (रोहिता) ज ४।६५ से ६७,७१,७२,२६८; ६।२०

रोहीडय (रोहितक) उ ५।२४ से २६

ल

लउड (लकुट) ज ३।११

लउय (लकुच) प १।३६।३

लउल (लकुट) ज ३।१७८

लउस (लकुश) प १।८६

लउसिया (लकुशिकी) ज ३।१११२

लंख (लङ्ख) ज २।६४;३।१८५

लंघण (लङ्घन) ज ३।१०६,१७८;५।५;७।१७८

लंतग (लान्तक) प २।४९,५५,६३;६।२२,५६,६५;७।१३;१५।८८;२१।७०;३३।१६;३४।१६,१८ ज ५।४९

लंतगवडेंसय (लान्तकावतंसक) प २।५५

लंतय (लान्तक) प १।१३५;२।५५,५६;३।३४,१८३;४।२४६ से २४८;२०।६१;२८।८० उ २।२२

लंबिय (लम्बित) ज ७।१७८

लंबूसग (लम्बूसक) ज ५।३८,६७

√**लंभ** (लभ्) लंभंति ज ३।३५

लंभणमच्छ (लम्भनमत्स्य) प १।५६

लक्ख (लक्ष) प १।८१।१ ज ३।१०३

लक्खण (लक्षण) प १।४८।५५;२।६४।१२ ज २।१४,१५,६६;३।३,३५,७७,१०६,१३८,१६७।१२;७।१७८ च २।४ सू १।६।४;१६।२,४,६ उ १।३४

लक्खणधर (लक्षणधर) ज २।१५

लक्खणधारि (लक्षणधारिन्) ज २।१५

लक्खणसंवच्छर (लक्षणसंवत्सर) ज ७।१०३,११२ सू १०।१२५,१२६

लक्खणसहस्सधारक (लक्षणसहस्रधारक) ज ३।१२६।१

लक्खारस (लाक्षारस) प १७।१२६

लख (लक्ष) ज ३।३१

लच्छिकूड (लक्ष्मीकूट) ज ४।२७५

लच्छिमई (लक्ष्मीमती) ज ५।६।१

लच्छी (लक्ष्मी) ज ३।१८,६३,१८० उ ४।२।१

लज्जिय (लज्जित) ज २।६० उ १।५८,८३

लट्ठ (लष्ट) ज १।३७;२।१५;३।६,३५,११७,२२२;४।१२८;५।४३;७।१७८

लट्ठदंत (लष्टदंत) प १।८६

लट्ठि (यष्टि) ज २।१५

लट्ठिग्गाह (यष्टिग्राह) ज ३।१७८

लडह (दे०) ज २।१५

लण्ह (श्लक्ष्ण) प २।३०,३१,४१,४६,५६,६३,६४ ज १।८,२३,३१;४।१

लता (लता) प १।३३।१

लद्ध (लब्ध) ज ३।२६,३६,४७,१०३,११७,१२२,१२६,१३३,१८५,२०६ उ १।१७,५७,८२,६६,१०७,१२७;३।१३,२६,३८,८५,१२२,१४७,१६०;४।११,२५;५।१५,२३,३१,३८,४२

लद्धट्ठ (लब्धार्थ) सू २०।७

लद्धि (लब्धि) प १।४६;१५।५८।१,१५।६२

√**लब्भ** (लभ्) लब्भइ ज ७।१४३

√**लभ** (लभ्) लभइ ज ७।१५१ लभति सू १०।५ लभेज्जा प २०।१७,१८,२२ २५,२८,२६,३४,३८,३६,४१ से ४३,४५,४६ से ५२,५४,५५,५६

लय (लता) ७।१७८

लया (लता) प १।३६ ज २।११,६७,१३१,१४४ से १४६;३।१०६ उ १।२३;५।५

लयाबहुल (लताबहुल) ज १।१८

लयावण्ण (लतावर्ण) ज २।११
√लल (लल्,लड्) ललंति ज १।१३,३०,३२; २।७
ललंत (ललत्) ज ३।१७८;७।१७८
ललाड (ललाट) ज ७।१७८
ललित (ललित) ज ३।६,२२
ललिय (ललित) ज ३।६,१७८,२२२;७।१७८
ललियबाहा ([1]ललितबाहु) ज २।१५
लव (लव) २।४।२,२।६६;७।११२।५ सू ८।१; १०।१२६।५
√लव (लप्) लवंति सू २०।१
लवंगरुक्ख (लवङ्गरूक्ष) प १।४३।२
लवण (लवण) प १५।५५।१ ज ६।१,२,४;७।४, ३२।१,६३,८७ सू ८।१; १६।२,३,५; १६।२२।२३
लवणजल (लवणजल) सू १६।५।३
लवणतोय (लवणतोय) सू १६।५।२;१६।२२।२४
लवणसमुद्द (लवणसमुद्र) प १५।५५; १६।३० ज १।१६,१८,२०,२३,३५,४८,४६; ३।१,२२, २८,३६,४१,४४,४६; ४।१,३५,३७,४२,४५, ५५,६२,७१,७७,८१,८६,६०,६४,६८,२००, २०१,२६२,२६५,२७१,२७४;६।३,५,१६ से २६; ७।३१,३३,८७ सू १।२२;४।४,७; ८।१; १६।३ से ६
लवणोदधि (लवणोदधि) सू १६।५।१
लवणोदय (लवणोदक) प १।२३
लहु (लघु) ज ३।३५,४८,४६; ७।१७८
लहुपरक्कम (लघुपराक्रम) ज ५।४८,४६
लहुभूय (लघुभूत) ज २।७०
लहुय (लघुक) प १।४ से ६;३।१८२; ५।५,७, २०६; १५।१५ से १७,२८,३२,३३;२८।२६, ३२,६६
लहुयत्त (लघुकत्व) प १५।४४,४५
लाइय (दे०) प २।३०,३१,४१ ज १।३७;३।७;१८४
लाउय (अलाबुक) ज ३।११६
लाउयवण्णाभ (अलाबुकवर्णाभ) सू २०।२
लाघव (लाघव) ज २।७१
लाढ (लाढ) प १।६३।५
लाभ (लाभ) ज ३।१७८; ७।१७८
लाभंतराय (लाभान्तराय) प २३।२३
लाभत्थिय (लाभार्थिक) ज ३।१८५
लाभविसिट्ठया (लाभविशिष्टता) प २३।२१
लाभविहीणया (लाभविहीनता) प २३।२२
लायण्णत्त (लावण्यत्व) प ३४।२०
लाला (लाला) ज ७।१७८
लालाविस (लालाविष) प १।७०
लावग (लावक) प १।७६
लावणग (लावणिक) सू १६।२२।२३
लावण्ण (लावण्य) प २३।१६,२० ज २।१५; ५।६८,७० उ ३।१२७
√लास (लासय्) लासेंति ज ५।५७
लासग (लासक) ज २।३२
लासिया (लासिका,ल्हासिका) ज ३।११।२
लिक्खा (लिक्षा) ज २।६,४०
लित्त (लिप्त) प २।२० से २७
लिवि (लिपि) प १।६८
लिहिय (लिखित) ज ७।१७८
लीला (लीला) ज ५।३,२८
लुक्ख (रूक्ष) प १।४ से ६; ५।५,७,१२६,१५२, १५४,२११,२१८,२२१,२२६,२४४; ११।५६ से ६१;१३।२२।२,१३।२२,२६;१७।१३८; २३।५०; २८।६ से ११,२०,३२,५५ से ५७,६६
लुक्खत्तण (रूक्षत्व) प १३।२२।१
लुक्खया (रूक्षता) प १३।२२।१ ज २।१३१
लुद्धग (लुब्धक) उ ३।६८
√लूह (मृज्,रूक्षय्) लूहेइ ज ५।५८ लूहेंति ज ३।२११
लूहिय (मृष्ट,रूक्षित) ज ३।६,२२२
लूहेत्ता (मृष्ट्वा,मार्जयित्वा,रूक्षयित्वा) ज ३।२११; ५।५८

---

1. टीका में 'ललितो बाहु' है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेक्ख (लेख्य) १।९८
लेच्छइ (लिच्छवि,लेच्छवि) उ १।१२७ से १३०, १३२
लेट्ठु (लेष्टु) ज २।७०,७१; ३।३५,९५
लेप्पार (लेप्यकार) प १।९७
√लिस (लिश्) लेसेंति प ३६।६२
लेसणया (श्लेषण) प १६।५३
लेसा (लेश्या) प १।११५; २।३०,३१,४९;३।११; १७।४३ से ४५,४७,९६,९७,११४,१४७,१५६ से १५८,१६१,१७२ च २।२ ज ३।९५,१५९, २२३;७।३८,५८ मू १।६।२; १।७।१;९।१ से ३;१९।२६;२०।२,३
लेसागति (लेश्यागति) प १६।३८
लेसापडिघाय (लेश्याप्रतिघात) ज ७।३८
लेसापरिणाम (लेश्यापरिणाम) प १३।२
लेसाहिताव (लेश्याभिताप) ज ७।३८
लेसुद्देस (लेश्योद्देश) सू ९।२
लेस्सा (लेश्या) प २।४१;१६।५०;१७।११,१७।७, १७,१८,३०,३६ से ४१,८८,९७,११४,१२९, १३६,१३७,१४७,१५६,१५७,१५९,१६० से १६३;१८।११;२८।१०६।१
लेस्सागति (लेश्यागति) प १६।४९
लेस्साणुवायगति (लेश्यानुपातगति) प १६।३८,५०
लेस्सापरिणाम (लेश्यापरिणाम) प १३।६,१४,१६, १८ से २०
लेह (लेख) ज २।६४ उ १।११५.११६
लेहट्ठ (रेखास्थ) ज ७।१५८,१६१,१६४,१६७ सू १०।६५,६८,७१,७४
लोअण (लोचन) ज २।१५
लोइय (लौकिक) ज ७।११४ सू १०।१२४ उ १।९२
लोउत्तरिय (लोकोत्तरिक) ज ७।११४ सू १०।१२४
लोक (लोक) ज ३।१०९,१६७
लोग (लोक) प १।४८।६०; २।१०,१६,३०,३२. ३४,३५,३७,३८,४१ से ४३,४८,५० से ५२, ५८ से ६१,६३;१०।२,३,५;१२।७,१०,२०; १५।१।२;१५।४३,४५,५६;१६।३४; १८।३, २६,२७,३७,३८; ३६।७९,८१,८५ ज २।६५, ७१;३।३५,९५,१५९,१६७;४।२६०।१ सू १९।२२
लोगंत (लोकान्त) प २।६४;११।३०;२१।८४,८६, ८९ ज ७।१,६८,१६८।१,१७२
लोगणाली (लोकनाली, लोकनाडी) प ३३।१८
लोगणाह (लोकनाथ) ज ५।५,२१,४६
लोगपईव (लोकप्रदीप) ज ५।२१
लोगपज्जोयगर (लोकप्रद्योतकर) ज ५।२१
लोगपाल (लोकपाल) प २।३० से ३३,३५,४९ से ५१ ज २।९०,११८,११९;५।१९,५०,५६
लोगमज्झ (लोकमध्य) ज ४।२६०
लोगमज्झावसाणिय (लोकमध्यावसानिक) ज ५।५७
लोगसण्णा (लोकसंज्ञा) प ८।१,२
लोगहिय (लोकहित) ज ५।२१
लोगागास (लोकाकाश) प १।४८।५८; २।१०
लोगाधिवति (लोकाधिपति) प २।५०,५१
लोगालोग (लोकालोक) प १०।५
लोगाहिवइ (लोकाधिपति) ज २।९१;५।१८,४८
लोगुत्तम (लोकोत्तम) ज ५।५,२१,४६
लोण (लवण) प १।२०।१
लोद्ध (लोध्र) प १।३६।३
लोभ (लोभ) प ११।३४।१;१४।४,६,८,१० से १५,१७; २२।२०;२३।६,३५,१८४ ज २।१६, १३३ उ ३।३४
लोभकसाइ (लोभकषायिन्) प ३।९८;१३।१४; १८।६६; २८।१३३
लोभकसाय (लोभकषाय) प १४।१,२;३६।४६
लोभकसायपरिणाम (लोभकषायपरिणाम) प १३।५
लोभणिस्सिया (लोभनिश्रिता) प ११।३४
लोभसंजलणा (लोभसंज्वलना) प २३।७२,१४०
लोभसण्णा (लोभसंज्ञा) प ८।१,२
लोभसमुग्घात (लोभसमुद्घात) प ३६।४७

लोभसमुग्घाय (लोभसमुद्घात) प ३६।४२,४४ से ४६,४८ से ५१
लोम (लोमन्) प २।२० से २७ ज ३।३,१०६; ७।१७८
लोमपक्खि (लोमपक्षिन्) प १।७७,७९
लोमहत्थ (लोमहस्त) ज ३।८८
लोमहत्थग (लोमहस्तक) ज ३।१२
लोमहत्थगपटलहत्थगय (हस्तगतलोमहस्तकपटल) ज ३।११
लोमाहार (लोमाहार) प २८।१२,२८।४०,६६, १०२,१०३
लोमाहारत्त (लोमाहारत्व) प २८।६०,६६
लोय (लोक) प १।४८।५८,५६;२।१ से ३१,४६, ४९;३३।१३ सू २।१;१६।१,२१ उ ३।१३
लोय (लोच) ज २।६५;३।२२४ उ ३।११३
लोयंत (लोकान्त) प २।६४।१०;११।७२ सू २।१; १८।६
लोयग्ग (लोकाग्र) प २।६४,२।६४।३
लोयग्गथूमिया (लोकाग्रस्तूपिका) प २।६४
लोयग्गपडिबुज्झणा (लोकाग्रप्रतिबोधना) प २।६४
लोयण (लोचन) ज ७।१७८
लोयणाभि (लोकनाभि) सू ५।१
लोयमज्झ (लोकमध्य) सू ५।१
लोयाणी[1] (दे०) प १।४८।६
लोल (लोल) ज २।१२
लोह (लोभ) ज २।६६
लोह (लोह) ज ३।३,३५,१६७।८
लोहकडाह (लोहकटाह) उ ३।५०,५५
लोहकसाइ (लोभकषायिन्) प ३।६८
लोहदंडग (लोहदण्डक) ज ३।१०६
लोहबद्ध (लोहवर्ध) ज ३।३५
लोहयक्खमय (लोहिताक्षमय) ज ४।१३
लोहि (लोहि) प १।४८।१ सफेद सुहागा
लोहिच्च (लौहित्य) ज ७।१३३।२
लोहिच्चायण (लौहित्यायन) सू १०।१०४

१. लोचनी—बड़ी गोरखमुण्डी।

लोहित (लोहित) प ५।२०५ सू २०।२
लोहितक्ख (लोहिताक्ष) ज ७।१८६।१ सू २०।८
लोहिय (लोहित) प १।४ से ६;५।५,७;११।५३; १७।१२६;२३।१०३;२८।३२,६६ ज ४।२६ सू २०।२
लोहियक्ख (लोहिताक्ष) प १।२०।३;२।३१,३२ ज ४।१०६;५।५ सू २०।८।१
लोहियक्खकूड (लोहिताक्षकूट) ज ४।१०५
लोहियक्खमणि (लोहिताक्षमणि) प १७।१२६
लोहियक्खमय (लोहिताक्षमय) ज ४।२६
लोहियक्खामय (लोहिताक्षमय) ज ३।३०
लोहियपत्त (लोहितपत्र) प १।५१
लोहियमत्तिया (लोहितमृत्तिका) प १।१६
लोहियसुत्तय (लोहितसूत्रक) प १७।११६
ल्हसणकंद (लशुनकन्द) प १।४८।४३
ल्हसिय (ल्हासिक,लासिक) प १।८६

व

व (वा) प १।१०१।६ ज ३।११३ चं २।१ सू १।६
वइ (वाच्) प १६।१,७;२३।१५,१६ ज २।६८
वइउल (दे० व्याल) प १।७१
वइगुत्त (वाग्गुप्त) ज २।६८
वइजोग (वाग्योग) प २८।१३८;३६।८६,८८,९०, ९२
वइजोगपरिणाम (वाग्योगपरिणाम) प १३।७
वइजोगि (वाग्योगिन्) प ३।६६;१३।१४;१८।५६; २८।१३८
वइत्ता (वंदित्वा) ज ५।३
वइयरिय (व्यतिचरित) सू २०।२
वइयोगि (वाग्योगिन्) प १३।१७
वइर (वज्र) प १।२०।१;२।३० ज ३।१२,१८, २४,३५,८८,१०९,१८४,२१९;४।३,२५,४६, ६७,२३८,२५४;५।५,१३,२८,५८;७।१७८
वइरउसह (वज्रऋषभ) ज ३।३
वइरकूड (वज्रकूट) ज ४।२३६
वइर (वासा) (वज्रवर्षा) ज ५।५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइरवेइया (वज्रवेदिका) ज १।३७;४।२७;५।२८
वइरसारमइया (वज्रसारमतिका) ज ३।८८
वइरसेणा (वज्रसेना) ज ४।२३८
वइराड (वैराट) प १।६३।४
वइरामय (वज्रमय) ज १।७,८,११,२४;२।१२०; ३।३०;४।३,७,१३,१५,२४ से २६,२९,३१, ३६,६६,६८,७४,९१,९३,१२८,१४६;५।३८, ४३;७।१७८,१८५ सू १८।२३
वइरोयणराय (वैरोचनराज) प २।३३ ज २।११३
वइरोयणिंद (वैरोचनेन्द्र) प २।३३ ज २।११३
वइरोसभणाराय (वज्रऋषभनाराच) प २३।४५, ६४ ज २।४६
वइसमिय (वाक्समित) ज २।६८
वइसाह (वैशाख) ज ३।२४;७।१०४,१४६,१५५ सू १०।१२४ उ १।२२,१४०;३।४०
वइसाही (वैशाखी) ज ७।१२७ सू १०।७,१७,२३, २६
वइस्सदेव (वैश्वदेव) उ ३।५१,५६,६४
वउ (वाच्) प ११।५,८,२१ से २६
वंक (वक्र,वङ्क) ज २।१३३
वंकगति (वङ्कगति, वक्रगति) प १६।३८,५३
वंग (वङ्ग) प १।६३।१ ज २।१५
वंजण (व्यञ्जन) ज २।१४ सू २०।७
वंजणोग्गह (व्यञ्जनावग्रह) प १५।५८।२, १५।६८,६९,७१ से ७३,७५
वंजुलग (वञ्जुलक) प १।७९
वंझा (वन्ध्या) उ ३।९७,१३१
वंत (वान्त) प १।८४ सू २०।२
√वंद (वन्द्) वंदइ ज १।६;२।९०;५।२१,६५ उ १।१९;३।८१;४।१३;५।२० वंदंति उ ४।१६;५।३६ वंदामि प १।१।१ ज ५।२१ सू २०।९।६ उ १।१७ वंदिज्जा उ ५।३६ वंदीहामि उ ३।२९ वंदेज्ज ज २।६७
वंद (वृन्द) ज ३।२२,३६,७८ उ १।१९
वंदण (वन्दन) उ १।१७
वंदणकलस (वन्दनकलश) ज ३।७,८७;५।५५
वंदणकलसहत्थगय (हस्तगतवन्दनकलश) ज ३।११
वंदणवत्तिय (वन्दनप्रत्यय) ज ५।२७
वंदणिज्ज (वन्दनीय) सू १८।२३
वंदिऊण (वन्दित्वा) चं १।४
वंदित्ता (वन्दित्वा) ज १।६ उ १।१९;३।८१; ४।१४;५।२०
वंदिया (वन्दिका) उ ४।११
वंस (वंश) प १।४१।२ बांस
वंस (वंश) प ११।७५ ज २।१२४,१५२;३।३१, १०९ उ ५।४३
वंसमूल (वंशमूल) प १।४८।८
वंसी (वंशी) प १।४७
वंसीपत्त (वंशीपत्र) प ९।२६
वंसीमुह (वंशीमुख) प १।४९
वक्कंत (अवक्रान्त) प १।४८।५३ ज २।८५
वक्कंति (अवक्रान्ति) प १।१।४
√वक्कम (अव+क्रम्) वक्कमइ प १।४८।५१ वक्कमंति प १।२०,२३,२६,२९,४८;९।२६ वक्कमति सु १९।२२।१९
वक्कल (वल्कल) उ ३।५१।१
वक्कवासि (वल्कवासिन्) उ ३।५०
वक्ख (वक्षस्) ज २।१५
वक्खार (वक्षस्कार) प २।१;१५।५५।२ ज ४।२१२; ६।१०
वक्खारकूड (वक्षस्कारकूट) ज ४।२०२;६।११
वक्खारपव्वय (वक्षस्कारपर्वत) ज ४।९४,१०३ से १०८,१४३,१६२,१६३,१६६,१६७,१६९, १७२ से १७४,१७६,१७८ से १८१,१८४, १८५,१९०,१९१,१९६,१९७,१९९,२००, २०२ से २०५,२०८ से २१२,२१५,२६२; ५।५५;६।१०
वग (वृक) प ११।२१ ज २।१३६
वगी (वृकी) प ११।२३
वग्ग (वर्ग) प २।६४।१५,१६;१२।१०,३२,३६, ३७ उ १।५ से ८;२।१;३।१,२;४।१,३;५।१,

३,४५
√**वग्ग** (वल्ग्) वग्गंति ज ५।५५
वग्गण (वल्गन) ज ३।१७८
वग्गणा (वर्गणा) प ११।७२;१७।११४।१,१४२
वग्गमूल (वर्गमूल) प १२।१२,१६,२७,३१,३२,३८
वग्गु (वल्गु) प २।६४।१५ ज २।६४;३।१८५,
२०६;४।२१२,४।२१२।३;५।५८
वग्गु (वाच्) उ १।४१,४४
वग्गुरा (वागुरा) उ ५।१७
वग्गुलि (वल्गुलि) प १।७८
वग्घ (व्याघ्र) प १।६६;११।२१ ज २।३६,१३६
वग्घमुह (व्याघ्रमुख) प १।८६
वग्घारिम (दे०) ज ३।८८
वग्घारिय (दे०) प २।३०,३१,४६ ज २।७,८८,
११७
वग्घावच्च (व्याघ्रापत्य) ज ७।१३२।४ सू १०।११६
वग्घी (व्याघ्री) प ११।२३
√**वच्च** (वच्) वच्चंति ज ७।१३५।२,३
√**वच्च** (व्रज्) वच्चइ सू १।६
वच्छ (वक्षस्) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।३,६,
९,१८,६३,१८०,२२१,२२२;५।२१
वच्छ (वत्स) प १।६३।४ ज ४।२०१,२०२।१,२४८
वच्छगावई (वत्सकावती) ज ४।२०२।१
वच्छमित्ता (वत्समित्रा) ज ४।२०४,२३८;५।६
वच्छल (वत्सल) प ३।१२५;५।५,४६
वच्छल्ल (वात्सल्य) प १।१०१।१४
वच्छाणी (वत्सादनी) प १।४०।४ सू १०।१२०
गजपीपल, गुडूची
वच्छावई (वत्सावती) ज ४।२०२
वज्ज (वज्र) प १।४८।७ वज्रकंद, कोकिलाक्षवृक्ष,
तालमखाना
√**वज्ज** (वर्जय्) वज्जेज्ज प १०।१४।४
वज्ज (वज्र) ज २।१५
वज्ज (वर्ज्य) प २।४०।५,२।५२;६।४६,५९,६६,
८६,९४,९५,१०२,१०४;१०।३६;११।४१,८०,
८४;१२।३,१३।२२।२;१५।६८,११५,१२१,
१२९;१६।३२;१७।५८;२०।५६ से ५८;
२२।२५;२३।१९१,१९७;२४।१३;२५।३;
२६।४;२८।११२,१२३,१२६,१२७,१२९,
१३२,१३३,१३७ से १४१,१४३ ज २।७०,
१३१;३।६;४।१७७,२१०,२४०,२४८;५।१३,
४६,५२।१
वज्ज (वाद्य) ज ५।५७
वज्जकंदय (वज्रकंदक) प १७।१३०
वज्जण (वर्जन) प १।१०१।३
वज्जणिज्ज (वर्जनीय) ज २।१४६
वज्जपाणि (वज्रपाणि) प २।५० ज ५।१८,४६,६६
वज्जमाण (वाद्यमान) उ १।१३८
वज्जरिसभणाराय (वज्रऋषभनाराच) ज १।५;
२।४६
वज्जरिसहणाराय (वज्रऋषभनाराच) ज २।१६,८६
वज्जरिसहनाराय (वज्रऋषभनाराच) सू १।५
वज्जसंठिय (वज्रसंस्थित) प ११।३०
वज्जसूलपाणि (वज्रशूलपाणि) ज ५।५७
वज्जिऊण (वर्जयित्वा) प २।२७।३
वज्जित्ता (वर्जयित्वा) प २।२२,३२,३४ ज ४।१३४
वज्जिय (वर्जित) प १०।१४।६ ज ५।५२ सू २०।७
वज्जेत्ता (वर्जयित्वा) प २।२१,२३ से २७,३०,
३१,३३,३५,३६,४१ से ४३,४६
वज्झ (बध्य) ज ३।९२,११९
वज्झार (वर्ध्रकार) प १।६७
वज्झियायण (वध्यायन) ज ७।१३२।४ सू १०।११८
√**वट्ट** (वृत्) वट्टंति उ ३।१३३ वट्टति प १६।२२
वट्ट (वृत्त) प १।४ से ६,१।६३।५;२।२० से २७,
३० से ३९,४१ से ४३;१०।१५,२६;३६।८१
ज १।७,३१;२।१५;३।७,८८,११७;४।३,२५,
६७,११४,१२८,२३४,२४०,२४१;५।५,४३;
७।३१,३३,१६७,१७८ सू १।१४;४।३ से ७;
१०।७४;१९।२,६,९,१२,१६,२८,३२,३६
वट्टग (वर्तक) प १।७९ ज ५।१६
वट्टगमंस (वर्तकमांस) सू १०।१२० कमलकंद
वट्टमाण (वर्तमान) प २।३१ ज २।७१;३।१३८,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५।५७

वट्टवेयड्ढ (वृत्तवैताढ्य) प १६।३० ज ४।४२, ५७,५८,६०,७१,७७,८४,२६६,२७२;५।५५; ६।१०

वट्टि (वर्ति) प १।४७।२

वट्टिय (वर्तित) ज २।१५; ७।१७८

वट्टिया (वर्तिका) प १।४७।२

वड (वट) प १।३६।१ उ ३।७१

वड (दे०) प १।५६ मत्स्य विशेष

वडगर (दे०) प १।५६ मत्स्य विशेष

वडभी (वडभी) ज ३।१११।१

वडिंसग (अवतंसक) प २।५४,५८

वडिय (पतित) ज ३।१२५,१२६

वडेंस (अवतंस) ज ४।२२५,२३२,२६०।१

वडेंसग (अवतंसक) प २।५०,५२,५५ से ५६ ज १।४३;३।१७८,१८३;४।५०,१०६,११२, ११६,१५५,१५६,२३७,२३८,२४०,२४३

वडेंसगधर (अवतंसकधर) ज ७।२१३

वडेंसय (अवतंसक) प २।५० से ५३,५६ ज १।४२;३।१८६;४।४६,५६,१०२,११६, १२०,१४७,२२१ से २२४,२३७;५।१,६,१८; ७।१८४,१८५

√वड्ड (वृध्) वड्ढति सू १९।२२।१६,२० वड्ढते सू १९।२२।१४ वड्ढिज्जंति प ५।१७९, २१६

√वड्ढ (वर्धय्) वड्ढेइ उ ३।५१ वड्ढेसि उ ३।७९

वड्ढइरयण (वर्द्धकिरत्न) ज ३।१८,१६,३१,५२, ५३,६१,६२,६६,७०,६६,१००,१४१,१४२, १६४,१६५,१७८,१८०,१८१,१८६,१८८, २०६,२१०,२१६,२१६,२२०

वड्ढइरयणत्त (वर्द्धकिरत्नत्व) प २०।५८

वड्ढमाणय (वर्धमानक) प ३३।३५

वड्ढावय (वर्धापक) उ ३।११

वड्ढियय (वर्धितक) उ ३।३८

वड्ढेत्ता (वर्धयित्वा) उ ३।५१

वड्ढोवुड्ढि (वृद्ध्यपवृद्धि) चं ३।१ सू १।७।१, १।१०,१४; १३।१

वण (वन) ज ४।२००,२०१,२१२,२१४,२१५, २३४,२३६,२३७,२४०,२४१,२४४,२४५, २४६,२५१,२५२;५।५५,५७; ७।११४

वणप्फइ (वनस्पति) प १८।१४,१०५,११०,१२०; २०।२२

वणप्फइकाइय (वनस्पतिकायिक) प ६।११६,८३; १२।२६;१३।१६; १५।२६,५३,५५,७४;१४०; १६।४;१७।६२,६६,१०२;१८।३८; १६।२; २०।१३,२६,४६; २१।३,२७,७६,८५;२२।२४; २८।३६,१२३;२६।१०,२०; ३०।६;३६।१३ से १६,३४,३८

वणप्फइकाइयत्त (वनस्पतिकायिकत्व) प १५।६६

वणप्फतिकाइय (वनस्पतिकायिक) प १६।१२; १७।४०

वणमाला (वनमाला) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।३८,४।१०,१२१,१४७,२१७; ५।१८

वणयर (वनचर) ३१।६।१

वणराइ (वनराजि) प १७।१२४ ज २।१२

वणलय (वनलता) प १।३६।१

वणलया (वनलता) ज १।३७;२।१०१;४।२७; ५।२८

वणविरोह (वनविरोध) ज ७।११४।२

वणविरोहि (वनविरोधिन्) सू १०।१२४।२

वणसंड (वनषण्ड) ज १।१२ से १४,२३,२५,२८, ३२,३५;४।१,३,२५,३१,३६,४३,४५,५७,६२, ६८,७२,७६,७८,८६,६०,६३,६५,१०३,११०, ११६,११८,१४१,१४३,१५२ १५३,१५४, १५६,१७४,१७६,१७८,१८३,२००,२१२, २१३,२१५,२२१,२३४,२४०,२४१,२४२, २४५;७।२१३ उ ५।८

वणस्सइ (वनस्पति) प ६।१०४; १७।३३; १८।५७,६२; २०।२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणस्सइकाइय (वनस्पतिकायिक) प १।१५,३०; २।१३ से १५; ३।६,५० से ५२,५८,६० से ६३, ६६,७१ से ७४,८० ८१,८४ से ८७,६३,६५, १६८ से १७०,१८३; ४।८८,६० से ६४;५।३, १७,१८,६६;६।५३,८६,१०२,११५;६।२१; १५।८५,१२१,१३७;१८।२७,३५,४०,४३, ४४,५२;२०।८;२१।५,४१;२२।३१;३६।३३ ज २।१३१,१४४

वणस्सइकाइयत्त (वनस्पतिकायिकत्व) ज ७।२१२

वणस्सति (वनस्पति) प ६।१०२;६।४

वणस्सतिकाइय (वनस्पतिकायिक) प ३।५०,५१, ६०,६३,६५,१८३;४।८६;५।१८;६।६३,८३; १५।७६; २४।६;३०।१६

वणिज (वणिज) ज ७।१२३ से १२५ करण नाम

वणिय (वणिज्) ज २।२३

वणीमगबहुल (वनीपकबहुल) ज १।१८

√वण्ण (वर्णय्) वण्णइस्सामि प १।१।३

वण्ण (वर्ण) प १।४ से ६; २।२० से २७.३०,३१, ४०,४०।६;२।४१,४८,४६,६४;३।१८२,५।५, ७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४.२५,२८,३०, ३२,३४,३७ से ३६,४१,४५,४६,५३,५६,५६, ६१,६३,६८,७१,७४.७६,७८,८३,८६,८६,६१, ६३,६७,१०१,१०४,१०७,१०६,१११,११५, ११६,१२६,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०, १४३,१४५,१४७,१५०,१५२,१५४,१६३, १६६,१६६,१७२,१७४,१७७,१८१;१८४, १८७,१६०,१६३,१६७,२००,२०३,२०७, २११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३०, २३२,२३४,२३७,२३६,२४२,२४४; १०।५३।१;११।५३;१७।१।१,१७।७,१७,१८; ११४।१,१२३ से १२६,१३२ से १३४; २३।१०८,१६०;२८।६,७,२०,२६,३२,५२, ५३,६६; ३०।२५,२६;३६।८०,८१ ज १।१३, २६; २।७,१८,१३३,१४२; ३।३,११,१२,८८, २११;४।२२,३४,३६,६०,८२.८४,८६,६४, १३५,१६६,२६६,२७२;५।३२,५८; ७।१७८

वण्णओ (वर्णतस्) प १।५ से ६;११।५४; २८।७, २०,२६,५३

वण्णग (दे०वर्णक) उ ३।११४

वण्णग (वर्णक) ज १।३२; ३।६,२०,३३,५४,६३, ७१,८४,१३७,१४३,१६७,१८२,१६३,१६७, २२२;४।१,११७;५।१३;७।५५

वण्णचरिम (वर्णचरम) प १०।४६,४७

वण्णणाम (वर्णनामन्) प २३।३८,४७,१०१ से १०६,१०६

वण्णतो (वर्णतस्) प १।८,६;२८।३२,६६

वण्णनाम (वर्णनामन्) प २३।१०१

वण्णपज्जव (वर्णपर्यव) ज २।५१,५४,१२१,१२६, १३०.१४०,१४६,१५४,१६०,१६३;७।२०६

वण्णपरिणाम (वर्णपरिणाम) प १३।२१,२६

वण्णमंत (वर्णवत्) प ११।५२,५३;२८।५,६,५१, ५२

वण्णय (वर्णक) प २।३२,४२,४३ ज १।२,३,१२, १६,२३,२५,२८,३१,३५,३८; २।११,८३; ४।३,२५,३१,३६,४०,४७.५७,६७,७६,११०, ११२,११५ से १२०,१२६,१२८,१३५,१३६, १४१ से १४४,१४७ से १४६,१५३ से १५६, १७८,१८३,२००,२०१,२१३,२१५,२१६, २२१,२३४,२४०,२४५,२४६,२४८; ५।३, २६ से ३३,३५ से ३७ चं ६,७,८ सू १।२,३ उ १।१; ३।६१;४।१०; ५।१४

वण्णय (दे०वर्णक) उ ३।११४

वण्ण (वासा) (वर्णवर्षा) ज ५।५७

वण्णादेस (वर्णादेश) प १।२०,२३,२६,२६,४८

वण्णाभ (वर्णाभ) प २।२० से २५,५०,५६,६० ज ४।२२,३४,६०,६४,८४,११३,२६६,२७२

वण्णावास (वर्णव्यास) ज १।११,४६;३।१६५, १६७;४।४,७,१५,२६,८४,१४६; ५।१३

वण्णिय (वर्णित) प १।१।३;१६।२१

वण्हिदसा (वृष्णिदशा) उ १।५,६;५।१ से ३
√वत्त (वर्तय्) वत्तइस्सामि प ३।१८३ वत्तेंति प ३६।६२
वत्तमंडल (वृत्तमण्डल) ज ३।१७८
वत्तव्व (वक्तव्य) ज ४।२६६;७।१४१ से १४५, १५० से १५२,१५४,१८६ सू १०।२० से २२ २५
वत्तव्वया (वक्तव्यता) प २।४०,४४;५।१५२, २०५,२४४;११।८०;१५।१८ ज ३।१५०, १६१,२७७;४।५३,६४,७५,७६,८३,८६,६०, ६२,१०६,११५,१२६,२००,२०५,२०७,२०८, २४०,२४६,२६२,२६८,२७७;७।१०२
वत्थ (वस्त्र) प २।३०,३१,४१,४६ से ५४; १५।५५।२;१७।११६ ज ३।६,११,१२,२६, ३६,४७,५६,६४,७२,७८,८१,८५,११३,१३३, १३८,१४५,१६७।६,१८०,२२१ सू २०।७, उ १।१६,३५;३।५१,५३,६३,६७,७०, ७३,११०
वत्थधर (वस्त्रधर) ज २।६१;५।४८
वत्थव्व (वास्तव्य) ज ५।१ से ३,५ से ७
वत्थारुहण (वस्त्रारोहण, वस्त्रारोपण) ज ३।१२,८८
वत्थि (वस्ति) ज २।१५; ३।११७
वत्थिकम्म (वस्तिकर्मन्) उ ३।१०१
वत्थिपुडग (दे०) उ १।४४ से ४६
वत्थिभाग (वस्तिभाग) ज ३।११६
वत्थु (वस्तु) प १४।५ ज ३।३२;७।१०१,१०२ सू १०।१; १५।१,३७
वत्थुपरिच्छा (वस्तुपरीक्षा) ज ३।३२
वत्थुप्पएस (वस्तुप्रदेश) ज ३।३२
वत्थुल (वास्तुक) प १।३७।२,३८।२,४४।१ ज २।१०
√वद (वद्) वदह उ ३।७७ वदंति सू २०।२ वदह ज ३।११३;५।७२ उ १।२८ वदामो सू ५।१ वदिस्संति ज २।१४६ वदेज्जा सू ६।१२
वदित्ता (उदित्वा) ज ३।१२५
वद्ध (वर्ध) ज ३।३५
वद्धमाण (वर्धमान) प २।३० ज ३।३२
वद्धमाणग (वर्धमानक) ज २।६४;३।३,१२,१७८; ४।२८;५।३२;७।१३३।२ सू २०।८,२०।८।६
वद्धमाणगसंठिय (वर्द्धमानकसंस्थित) सू १०।४१
वद्धमाणय (वर्धमानक) ज ३।१८५
√वद्धाव (वर्धय्) वद्धाविइ ज ३।५,२६,३६,४७, ५६,६४,७२,६०,१३३,१४५,१५१,१५७ उ १।११० वद्धावेंति ज ३।११४,१२६,१३८, २०५,२०६ उ १।१२२;५।१७ वद्धावेहि उ १।१०७
वद्धावेत्ता (वर्धयित्वा) ज ३।५ उ १।१०७
वध (वध) उ ३।४८,५०
वप्प (वप्र) ज ४।३,२५,२१२,२१२।३,२५१
वप्पगावई (वप्रकावती) ज ४।२१२।३
वप्पावई (वप्रावती) ज ४।२११
वप्पिण (दे०) प २।४,१३,१६ से १६,२८
वमण (वमन) उ ३।१०१
वममाण (वमत्) उ ३।१३०
वमिय (वमित,वान्त) उ ३।१३०,१३१,१३४
वम्म (वर्मन्) ज ३।३१
वम्मिय (वमित) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८
√वय (वच्) वुच्चइ चं २।१ वोच्छं प २।६४।१८ चं १।३
√वय (व्रज्) वएज्जा ज ७।३१ सू १०।१० वयंति ज २।६।१,६४ वयह उ ३।१०३;४।१४ वयामि उ १।७६ वयामो सू १।२० वयासी ज १।६; २।६४,६०,६५,६७,१०१,१०५,१०७,१०६, १११,११४;३।५,७,१२,१८,२१,२६,२८,३१ से ३४,३६,४१,४७,४६,५२,५६,५८,६१,६४, ६६,६६,७२ ७४,७६,७७,८३,६०,६१,६६, १०५,१०७,११३ से ११५,१२४,१२५,१२७, १२८,१३३,१३८,१४१,१४५,१५१,१५४, १५७,१६४,१६८,१७०,१७३,१७५,१८०,१८५,

१८८,१९१,१९९,२०६;५।३,५,१४,२१,२२,२६ २८,४६,५४,६६,७२ चं १० सू १५ उ १।४; ३।२९;४।१४;५।१५ वयाहि ज ५।२२ उ १।१०७

वय (वयस्) ज २।३१

वय (व्रत) प २०।१७,१८,३४ उ ३।४८,५०,५५

वयंस (वयस्य) ज २।२९

वयगुत्त (वचोगुप्त) उ ३।९९

वयण (वचन) प ११।८६ ज २।१३३; ३।३,८, १३,१६,२४,३२।२,५३,६२,७०,७७,८४, १००,१३१,१४२,१६५,१८१,१९२,२१३; ५।१५,२३,२६,२७,६६,७३ उ १।३३,४५,१०८

वयण (वदन) ज २।१५,१६;३।६;५।२१ उ १।१५,३५;३।९०

वयणमाला (वदनमाला) ज २।६५;३।१८६,२०४

वयमाण (वदत्) प ११।२६,८७

वर (वर) प २।४०।८,२।४९;३६।८३।२ ज १।१६,३७,३८;२।१५,२०,६५,७१,८५, ९५,९६,१००,१२०; ३।३,६,७,१२,१८,२२, २४,२८,३१,३२,३५,४१,४६,५२,५८,६१, ६६,६९,७४,७६,७७,७८,८२,८८,९३,१०७, १०९,१२४,१२५,१२८,१३१,१३७,१३८, १४१,१४७,१५१,१५२,१६३,१६४,१६८; १७५,१७८,१८३,१८६,१८७,२०९,२१०, २१३,२१८,२२१,२२३; ४।१०,११५,२१७; ५।७,२१,४३,५६,५८; ७।१७८ सू १९।११।१ उ १।१,४१,४६,६४,९१,१२१,१३८;२।९; ३।५६,६४,६६,६८,७९,८१; ५।५,१३,१६, २०,२५,२७,३१

वर (वरक) प १।४५।२ तृण धान्य, चीनाधान

√वर (वरय्) वरति सू १९।२२।१९ वरयंति चं २।२ सू १।६।२ वरयति सू ७।१

वरकणगणिहस (वरकनकनिकष) प १७।१२७

वरग (वरक) ज २।३७ तृणधान्य

वरग (वरक) उ ४।९

वरगंध (वरगन्ध) प २।३०,३१,४१

वरगंधघर (वरगन्धधर) सू १७।१

वरगंधित[1] (वरगन्धिक) सू २०।७

वरगय (वरगत) ज ३।६,१२,१८,२८,४१,४६, ५८,६६,७४,७८,८२,९३,१३९,१४७,१८०, १८७,१८८,२१२,२१३,२१८,२१९,२२२; ५।४७,६०

वरचंपग (वरचम्पक) ज ३।३ राजचंपक

वरण (वरण) प १।९३।४

वरदत्त (वरदत्त) उ ५।२१,२२,२४,३१,४०,४१,४३

वरदाम (वरदामन्) ज ३।३०,३१,३३,३६,३९,४१; ६।१२ से १४

वरदामतित्थकुमार (वरदामतीर्थकुमार) ज ३।३३, ३९ से ४१,४३

वरदामतित्थाधिपति (वरदामतीर्थाधिपति) ज ३।३८

वरपसण्णा (वरपसन्ना) प १७।१३४

वरपुरिसवसण (वरपुरुषवसन) प १७।१२७

वरबोंदिधर (वरबोंदिधर) सू १७।१;२०।१

वरमल्लधर (वरमाल्यधर) सू १७।१;२०।१,२

वरवत्थधर (वरवस्त्रधर) सू १७।१;२०।१,२

वरवारुणी (वरवारुणी) प१७।१३४

वरसीधु (वरसीधु) प १७।१३४

वराडा (वराटक) प १।४९

वराभरणधर (वराभरणधर) सू १७।१

वराभरणधारि (वराभरणधारिन्) सू २०।१,२

वराह (वराह) प १।६४;२।४९ उ २।३५

वराहमंस (वराहमांस) सू १०।१२० वाराहीकंद

वराहरुधिर (वराहरुधिर) प १७।१२६

वरिट्ठ (वरिष्ठ) ज ३।८१;५।२१

वरिस (वर्ष) ज ३।१७५

वरिसारत्त (वर्षरात्र) सू १२।१४ उ ५।२५

वरुट्ट (वरुड) प १।९७ पिच्छिकार, बेंत का काम करने वाला

वरुण (वरुण) प १५।५५।१ ज ७।१३०,१८६।३ उ ३।५४

---

१. अतोऽनेकस्वरात् इति इक प्रत्ययः ।

वरुण (काइय) (वरुणकायिक) ज १।३१
वरुणदेवया (वरुणदेवता) सू १०।८१
वरुणवर (वरुणवर) सू १९।३१
वरुणोद (वरुणोद) सू १९।३१
वरेल्लग (दे०) प १।७९
वलभीघर (वलभीगृह) ज २।२०
वलभीसंठित (वलभीसंस्थित) सू ४।२
वलय (वलय) प १।३३।१,१।४३ ज ३।६,२२२
वलयाकारसंठाणसंठिय (वलयाकारसंस्थानसंस्थित) ज ४।२३४,२४०,२४१
वलयागार (वलयाकार) सू १९।२,६,९,१२,१६, २८,३२,३६
वलवा (वडवा) प ११।२३
वलि (वलि) ज २।१५,१३३ उ १।३४,४०,४३, ४६,४८,४९,५१,५४,७४,७६,७९
वलिय (वलित) ज २।१५; ३।१०९; ५।५
वल्लभ (वल्लभ) ज १।२६
वल्लि (वल्ली) ज २।१३१,१४४ से १४६; ३।३२ उ ५।५
वल्ली (वल्ली) प १।३३।१ १।४०,१।४८।६१
वल्लीबहुल (वल्लीबहुल) ज १।१८
ववगय (व्यपगत) प १।१।१; २।२० से २७ ज १।२४; २।१५,२३,२५,२६,२८,३० से ३२, ३९,४०,४२,४३; ७०; ३।२०,३३,५४,६३,७१, ८४,१३७,१४२,१६७,१८२
√**ववरोव** (वि+अप+रोपय्) ववरोवेइ प २२।६ उ १।२२
ववरोविय (व्यपरोपित) उ १।२५,२६
ववसाय (व्यवसाय) ज ४।१४०।१
ववसायसभा (व्यवसायसभा) ज ४।१४०
ववहार (व्यवहार) प ११।३३।१; १६।४६ उ ३।११
ववहारसच्च (व्यवहारसत्य) प ११।३३
√**वस** (वस्) वसइ ज ३।१२२ वसाहि ज ३।१८५
वस (वश) ज ३।५,६,८,१५,१९,३१,५३,६२,७०, ७७,८४,९१,१००,११४,१४२,१६५, १६७।१४,१७३,१८१,१८९,१९९,२१३; ५।२१,२७,४१ उ १।२१,४२; ३।३३,१३६
वसंत (वसन्त) प ७।१४४।२ सू १२।१४ उ ५।२५
वसंतमास (वसन्तमास) सू १०।१२४।२
वसंतलय (वासन्तीलता) ज ५।३२
वसट्ट (वशार्त) उ १।५२,७७
वसण (वसन) प २।४०।१०,११ ज ३।७,१८४ उ ३।१३०
वसणब्भूय (व्यसनभूत) ज २।४३
वसभमंस (वृषभमांस) सू १०।१२०
वसभवाहण (वृषभवाहन) प २।५१ ज २।९१; ५।४८
वसभाणुजाल (वृषभानुजात) सू १२।२९
वसमाण (वसत्) प ३।१८,३१,१८० उ १।११०, १२६,१३३
वसह (वृषभ) ज २।६१; ७।१७८ चं १।४
वसहरूवधारि (वृषभरूपधारिन्) ज ७।१७८ सू १८।१४
वसहि (वसति) ज २।१९; ३।१८,३१,१४० उ १।११०,१२६,१३३; ३।३६
वसा (वसा) प २।२० से २७; १५।१।२,१५।५०
वसिट्ठकूड (वाशिष्ठकूट) ज ४।२०४।१
वसु (वसु) ज ७।१३०,१८६।३
वसुंधरा (वसुन्धरा) ज ५।६।१
वसुदेवया (वसुदेवता) सू १०।८०
वसुहर (वसुधर) ज ३।१२६।१
वसुहा (वसुधा) ज ३।१८,३१,१८०
√**वह** (वध्) वहंति ज ७।१६८।२
वह (वध) उ १।१३९; ३।४८,५०
वह (व्यथ) उ ५।२।१
वह (वह) उ ५।२।१
वहय (वधक) ज २।२८
वहस्सइ (बृहस्पति) ज ७।१३०,१८६।३
वहिय (व्यथित) ज ३।१११,१२५

वा (वा) प ११।८७ ज २।३६ सू १।१४ उ १।२७; ३।१०१

√**वा** (वा) वाहिंति ज २।१३१

वाइ (वादिन्) ज २।८०

वाइंगण (दे० वातिकुण) प १।३७।१ बैंगन का गाछ

वाइंगणिकुसुम ('वाइंगणि'कुसुम) प १७।१२५

वाइत (वादित) प २।३०,३१,४९

वाइय (वादित) प २।४१

वाइय (वाद्य) ज १।४५;२।६५; ३।८२,१८५, १८६,१८७,२०४,२०९,२१८;५।१,१९;७।५५, ५८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६

वाइय (वातिक) उ ३।११२,१२८

वाउ (वायु) प ६।८६,१०४,११५; ९।४; १३।१६; १७।४०,९६; २०।८,२३,२८,५७;२१।८५; २२।२४ ज २।१६;३।१७८;४।४९;५।४३,५२; ७।१२२।१,१३०,१८६।४ सू १०।८४।१

वाउकाइय (वायुकायिक) १।१५;२।१० से १२; ३।५,५० से ५२,५७,६० से ६३,६८,७१ से ७४,७९,८४ से ८७,९२,९५,१६५ से १६७, १८३;४।७९,८०,८२,८३,८५ से ८७; ५।३, १५,१६;६।१९,६२,९२,१०२

वाउकाय (वायुकाय) सू २०।१

वाउकुमार (वायुकुमार) प १।१३१; २।४०।१, ९,११;५।३;६।१८ ज २।१०७,१०८

वाउक्कलिया (वातोत्कलिका) प १।२९

वाउक्काइय (वायुकायिक) प १।२७; २।११; १२।३,४,२३; १५।२९,८५,१३७; १६।५,१२; १७।६१,१०३; १८।२६,३४,३८,४०.४२,५२; २०।३१,४५;२१।२६,४०,५०,५७,६४;२२।३१; ३४।३; ३६।६,३८,५६,७२.७५

वाउकाइयत्त (वायुकायिकत्व) ज ७।२१२

वाउक्काय (वायुकाय) ज २।१०७,१०८

वाउब्भाम (वातोद्भ्राम) प १।२९

वाउभक्खि (वायुभक्षिन्) उ ३।५०

वाउल (व्याकुल) ज २।१३१

वाकरेमाण (व्यागृणत्) ज २।७८

√**वागरा** (वि+आ+कृ) वागरेहिति उ ३।२९ वागरेहिती उ ३।२९

वागरण (व्याकरण) ज ७।२१४ सू ९।३ उ १।१७; ३।२९

वागल (वल्कल) उ ३।५१,५३,५५,६३,६९,७०, ७३

वागली (दे०) प १।४०।२ बागुची, एक औषधि

वाघाइय (व्याघातिक) ज ७।१८२

वाघात (व्याघात) प १।७४; २१।९५

वाघातिम ([1]व्याघातिम,व्याघातिन्) सू १८।२०

वाघाय (व्याघात) प २।७; २८।३१ उ १।६५,६६

वाण (वाण) प १।३७।४

वाणपत्थ (वानप्रस्थ) उ ३।५०

वाणमंतर (वानव्यन्तर) प १।१३०,१३१;२।४१, ४३; ३।२७,१३५,१८३;४।१६५ से १६७; ५।३,२५,१२१;६।२५,५६,६५,८५,९३,१०९, १११,११७;७।५;९।११,१८,२४;१२।६,३६; १३।२०;१५।३५,४८,८७,९९,१०४,१०७, १११,१२४;१६।९,१६; १७।२६,३०,३२,३४, ५२,७७,८१,८३,९८,१०५;१९।४; २०।१३, १९,२५,३०,३५,३७,४८,५४,६१;२१।५५,६१, ७७,९०;२२।३१,३९,७५,८८,१००;२४।८; २८।७२,११७,११९; २९।१५,२२; ३१।४; ३२।५; ३३।१४,२२,३०,३४,३७; ३४।४,१०, १६,१८; ३५।१५,२१; ३६।२५,४१,७२ ज १।१३,३०,३३,३६; २।९४,९५,९६,१०० से १०२,१०४,१०९,११०,११३ से ११६, १२०; ४।२,२४८,२५० से २५२; ५।४७, ५३,५९,६७,७२ से ७४ सू २०।७

वाणमंतरत्त (वानव्यन्तरत्व) प ३६।२२,२६

वाणमंतरी (वानव्यन्तरी) प ३।१३६,१८३;

---

१. भावादिमः इति सूत्रेण इमः ,

४।१६८ से १७० ; १७।५२,८२,८३ ; २०।१३
वाणारसी (वाराणसी) प १।६३।१ उ ३।२७ से २६ ४६,४८,५०,५१,६५,६६,६६,१००,१११
वाणिज्ज (वाणिज्य) ज २।२३
वातिय (वातिक) उ ३।३५
वाबाध (व्याबाध) ज २।३६,४१
वाम (वाम) ज २।११३ ; ३।६.१२,२४।४,३७।२, ४५।२,८८,११७,१३१।४ ; ५।२१.५८ उ १।११५,११६ ; ३।६२
वामण (वामन) प १५।३५ ; २३।४६
वामणी (वामनी) ज ३।११११
वामभुयंत (वामभुजान्त) सू २०।२
वामेय (वामेय) प २।३१
वाय (वात) प २।४८ ज २।६.१०,१३१,१३३ ; ३।११,२४।३,३७।१,४५।१,११७,१३१।३, २११ ; ४।१६६ ; ५।३८,५८
√वाय (वाचय्) वाएंति ज ५।५७
वायंत (वादयत्) ज ३।१७८
वायकरग (वातकरक) ज ३।११ ; ५।५५
वायमंडलिया (वातमण्डलिका) प १।२६
वायस (वायस) प १।७६
वायुदेवया (वायुदेवता) सू १०।८३
वारि (वारि) ज ३।२०६ ; ५।५६
वारिसेणा (वारिषेणा) ज ४।२१० ; ५।६।१
वारुण (वारुण) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
वारुणी (वारुणी) ज ५।११।१
वारुणोदय (वारुणोदक) प १।२३
वाल (व्याल) ज ३।२२२ उ ३।१२८
वाल (वाल) ज ७।१७८
वालग (व्यालक) ज १।३७ ; २।४१,१०१ ; ३।२० ; ४।२७ ; ५।२८
वालग्ग (वालाग्र) ज २।६ ; ७।१७८
वालग्गपोइया (दे०) ज २।२०
वालग्गपोतियासंठित ('वालाग्रपोतिका'संस्थित) सू ४।२,३
वालपुच्छ (व्यालपुच्छ) ज ७।१७८
वालिघाण (वालधान) ज ७।१७८
वालिहर (वालिधर) ज ७।१७८
वाली (पाली) ज ३।३०
वालुंक (वालुक) प १।४८।४८ कपित्थ की छाल
वालुयप्पभा (वालुकाप्रभा) प १।५३ ; २।१,२०, २३ ; ३।१३,२१,२२,१८३ ; ४।१० से १२ ; ६।१२,७५,७६ ; १०।१ ; २०।६,३६ ; २१।६७ ; ३३।५
वालुया (वालुका) प १।२०।१ ; २।४८ ज ३।१११, ११३ ; ४।१३,२५,४६ सू २०।७ उ ३।५१,५६
वावण्ण (व्यापन्न) प १।१०१।१३
वावण्णग (व्यापन्नक) प २०।६१
वावहारिय (व्यावहारिक) ज २।६
वाविय (व्यापित) ज ३।७६,११६
वावी (वापी) प २।४,१३,१६ से १६,२८ ; ११।७७ ज १।३३ ; २।१२,१५ ; ४।६०,११३ ; ७।१३३।१
वास (वर्ष) प १।४६ ; २।१ ; ४।१,३,४,६,२५,२७, २८,३०,३१,३३,३४,३६,३७,३६,४०,४२, ४३,४५,४६,४८,४६,५१.५२,५४,५६,५८, ६२,६४,६५,६७,६६,७१,७६,८१,८५,८७, ८८,६०,६४,१२५,१२७,१३४,१३६,१४३, १४५,१५२,१५४,१६५,१६७,१६८,१७०, १७१,१७३,१७४,१७६,१७७,१७६,१८०, १८२,१८३,१८५,१८६,१८८ ; ६।३७ से ४१ ; १६।३० ; १८।२,६,६,१२,२०,२१,२८,३२, ३४,३५,४७,५०,५२ ; २०।६३ ; २३।६० से ६४, ६६,६८,६६,७३ से ७८,८१,८३,८५ से ६०, ६२,६५ से ६६,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,१४७, १५८,१६६,१७६,१७७,१८२,१८३,१८७, २८।२५,७४ से ८७,६७ ज १।१८ से २३, ३४,३५,४७ से ५१ ; २।१,४,६ से १५,२१ से ४५,५०,५२,५६ से ५८,६५,७१,८८,६०, १२२,१२३,१२६ से १२८,१३० से १३४,

१३८ से १५०,१५४,१५६,१५७,१५९,१६१, १६४; ३।१,३,२६,३२,३९,४७,५६,६४,७२, ७७,७६,१०३,१०९,११३,१२४,१२६,१३३, १३५।२,१४५,१६७,१७५,१८५,१८८,२०९, २२१,२२५,२२६;४।१,३५,४२,५५,५६,६१, ६२,७१,७७,८१ से ८३,८५,८६,९४,९८, ९९ से १०३,१०८,१६२,१६७।७,१६९ १७२ से १७४,१७८,१८१,१८२,१८५,१८७,१९३, १९४,१९६,१९९ से २०३,२०५,२०९,२१३, २६२,२६५,२६६,२७१ से २७३,२७७; ५।५५; ६।६।१,६।९,१२,१३,१४,१९; ७।१५६ से १५९,१८७ से १९० सू ४।३;६।१; १०।६३ से ६६; ८।१;१८।२५ से ३०;२०।७ उ १।६, १४१,१४७; २।१२,१३,२२; ३।१४,१६,१८, २१,८३,८६,१०४,११८,१२५,१५०,१५२, १५७,१६१,१६५,१६९; ४।२४,२६,२८; ५।२४,२८,३९,४१,४३

वास (वर्ष) वर्षा ज ३।११५,११६; ५।७; ७।११२।३,४ सू १०।१२९।३,४

√**वास** (वृष्) वासंति ज ३।१८४; ५।७,५७ वासति सू १०।१२९।३ वासह ज ३।१२४ वासिस्सइ ज २।१४१ से १४५ वासिहिति ज २।१३१

वासंतिय (वासन्तिक) ज २।१०

वासंतिलता (वासन्तीलता) प १।३९।१

वासंती (वासन्ती) प १।३८।२ ज २।१५

वासघर (वासगृह) ज ३।३२ सू २०।७ उ १।३३; ३।२८

वासपुड (वासपुट) ज ४।१०७

वासमाण (वर्षत्) ज ३।११६

वासयंत (वासयत्) ज २।६५

वासरेणु (वासरेणु) ज २।६५

वासहर (वर्षधर) प १५।५५।२ ज २।६५;३।१३१; ४।१०३,१०८,११०,१४३,१६२,१६७,१८१, १८२,१८४,१९०,२००;६।१०,१८

वासहरकूड (वर्षधरकूट) ज ६।११

वासहरपव्वय (वर्षधरपर्वत) प २।१; १६।३० ज १।१८,४८,५१;३।१३१;४।१,२,४४,४५, ४८,५४,५५,६१ से ६३,७९ से ८१,८६,८७, ९६ से ९८,१०२,१०३,१०८,११०,१४३, १६२,१६६,१७३ से १७६,१७८,१८०,१८४, १९०,२०० से २०६,२०८,२०९ २६२ से २६४ २६८ से २७०,२७३ से २७६; ५।१४,१५; ६।१०,१८

वासावास (वर्षावास) ज २।७०

वासिउं (वर्षितुम्) ज ३।११५

वासिकी (वार्षिकी) सू १२।१८ से २३

वासिट्ठ (वाशिष्ठ) ज ७।१३२।२ सू १०।१५

वासित्ता (वर्षयित्वा) ज ५।७

वासी (वासी) ज २।७०

वासुदेव (वासुदेव) प १।७४,९१;६।२६;२०।११ ज २।१२५ १५३;७।२०० उ ५।९,१५,१७ से १९

वासुदेवत्त (वासुदेवत्व) प २०।५६

वाहण (वाहन) ज २।६४; ३।१७,२१,३१,३२, ८१,१०३,१०९,१७७;५।१८,२२,२६ उ १।६६,९४,९९,११५,११६

वाहि (व्याधि) ज २।१५,१३१,१३३

वाहिनी (वाहिनी) उ ३।११०; ४।१६,१८

वि (अपि) प १।५ ज १।१६ सू १।९ उ १।१७

विइक्कंत (व्यतिक्रान्त) ज २।७१,१३८,१४०

√**विउक्कम** (वि + उत् + क्रम्) विउक्कमंति प ६।२६

√**विउट्ट** (वि + वृत्) विउट्टेहि उ ३।११५

विउट्ट (निवृत्त) ज ४।३९,६६,९१

विउल (विपुल) प २।३०,३१,४१ ज १।५; २।६४,६५,९१,१२०,३।३,६,७,१०३ १८५, २०९;५।२६,५४; ७।१७८ उ १।१७,६३; २।११; ३।७,२०,५५,९१,९८,१०१,१०६ १०७,११०,१२९,१३१,१३४,१३६,१४९; ४।१६

विउलमइ (विपुलमति) ज २।८०
√**विउव्व** (वि + कृ) विउव्वइ ज ५।४१,४६,६०, ६६ उ ३।९२ विउव्वंति प ३४।१९ २१ से २३ ज २।१०२,१०६,१०८;३।११५,१९२,१९४, १९५,१९७,१९८; ५।५५,५७ विउव्वह ज २।१०१,१०५;५।३ विउव्वाहि ज ५।२८ विउव्वेह ज ३।१९१
विउव्वणगिड्ढिपत्त (विकिर्णर्द्धिप्राप्त) सू १३।१७
विउव्वणया (विकरण) उ ३४।१ से ३
विउव्वणा (विकरणा) उ ३।७
विउव्वमाण (विकुर्वाण) सू २०।२
विउव्वित्तए (विकर्तुम्) ज ७।१८३ सू १८।२१
विउव्वित्ता (विकृत्य) प ३४।१९,२१ से २३ उ ३।१२३
विउव्विय (विकृत) प २।४१
विउव्वेत्ता (विकृत्य) ज ३।१९१
विउसमण (व्यवशमन) सू २०।७
विंज्झगिरि (विन्ध्यगिरि) उ ३।१२५
विंट (वृन्त) प १।४८।४९
विंहणिज्ज (बृंहणीय) प १७।१३४
√**विकंप** (वि + कम्प्) विकंपइ चं ३।२ सू १।७।२
विकंपइत्ता (विकम्प्य) सू १।२४
विकंपमाण (विकम्पमान) सू १।२४
विकप्प (विकल्प) ज ३।३२
विकप्पिय (विकल्पित) ज ३।१०९
विकल (विकल) ज २।१३३
विकिण्ण (विकीर्ण) ज ७।१७८
विकियभूय (विकृतभूत) ज ५।५७
विकिरणकर (विकिरणकर) ज ३।२२३
विकिरिज्जमाण (विकीर्यमाण) ज ४।१०७
विकुस (विकुश) ज २।८,९
विक्कंत (विक्रांत) ज ३।१०३
विक्कम (विक्रम) ज ३।३;७।१७८ चं १।१
विक्खंभ (विष्कम्भ) प १।७४; २।५०,५९,६४; २१।८४,८६,८७,९० से ९३; ३६।५९,६६, ७०,७४,८१ ज १।७ से १०,१२,१४,१६,१८, २०,२३ से २५,२८,३२,३५,३७,३८,४०,४२, ४३,४८,५१;२।६,१४१ से १४५;३।९५,९६, १५९,१६०.१६७;४।१.३,६,७,९,१०,१२,१४, २४,२५,३१,३२,३६,३९ से ४१,४३,४५,४७, ४८,५९,५२ से ५५,५७,५९,६२,६४,६६ से ६९,७२,७४,७५,७६,७८,८०,८१,८४ से ८६, ८८,८९,९१ से ९३,९५,९६,९८,१०२,१०३, १०८,११०,११४ से ११६,११८ से १२७, १३२,१३९,१४०,१४३,१४५ से १४७,१५४ से १५६,१६२,१६५,१६७।१९,१६९,१७२, १७४,१७६,१७८,१८३,२००,२०१,२०५, २१३,२१५ से २१९.२२१,२२६,२३४,२४० से २४२,२४५,२४८; ५।३५;७।७,१४ से १९, ६६,७३ से ७८,९०,९३,९४,१७७,२०७ चं ३।२ सू १।७।२;२।१४,२६,२७; १८।९ से १३; १९।४,७,१०,१४.१८,२०,२१।१,३०, ३१,३४,३५,३७
विक्खंभसूइ (विष्कम्भसूचि) प १२।१२,१६,२७, ३१ ३६ से ३८
विक्खय (विक्षत) ज २।१३३
विक्खुर (दे०) प ७।१७८
विग (वृक) ज २।३६
विगत (विगत) प १।८४
विगतजोइ (विगतज्योतिस्) सू १४।१०; १५।८ से १३
विगय (विकृत) ज २।१३३
विगयमिस्सिया (विगतमिश्रिता) प ११।३६
विगलिंदिय (विकलेन्द्रिय) प ११।८३ से ८५; १५।१०३; २०।३५;२२।८२;२८।११५,१२७, १३८;३१।६।१,३४।१४;३५।१२,३५।७; ३६।५६
विगलेंदिय (विकलेन्द्रिय) प ११।८२
विगोवइत्ता (विगोप्य) ज २।६४
विग्गह (विग्रह) प ३६।६०,६७ से ६९,७१,७५ ज ५।४४ उ ३।९१

विचारि (विचारिन्) सू १६।१
विचित्त (विचित्र) प २।३०,३१,४१,४६ ज २।१२;
३।६,१०६,२२२;७।१७८ सू २०।७ उ २।१०;
३।१४,८३,१०२,१३५,१४२;४।२४,५।२८,
३६,४३
विचित्तकूड (विचित्रकूट) उ ६।१०
विचित्तपक्ख (विचित्रपक्ष) प १।५१
विचित्ता (विचित्रा) ज ५।११।१
विच्छड्डयित्ता (विच्छर्द्य) ज २।६४
विच्छड्डिय (विच्छर्दित) ज ३।१०३
विच्छिण्ण (विस्तीर्ण) प २।५१,५२,५४,५६,६०
ज १।८.१८,२०,२३,२५,३२,३५,४८,५१;
२।१५;३।१,१८,३१,३५,५२,६१,६६,१०३,
१०६,१३१,१३७,१३८।१,१४१ १६४,१८०;
४।१,३,४५,५५,६२,८६,८८,६८,१०३,१०८,
११०,११४,१४१,१५६,१६२,१६७,१६६,
१७२,१७८,१८५,१८७,१६१,२००,२०३,
२०५,२१३,२१५,२४२,२४५,२४६,२५१,
२५२,२६२,२६८;५।३,२८,४६;७।१७७।१,२
उ ३।३७
विच्छिण्णतर (विस्तीर्णतर) ज ४।१०२
विच्छिप्पमाण (विस्पृश्यमान[1]) ज २।६५;
३।१८६,२०४
विच्छुत (वृश्चिक) प १।५१
विच्छुयअल (वृश्चिककाल) ज ७।१३३।३
विच्छुयनंगोलसंठिय (वृश्चिकलांगूलसंस्थित)
सू १०।५२
विजडि (द्विजटिन्) सू २०।८,२०।८।८
विजय (विजय) प १।१३८;२।१,४८,६३;
४।२६४ से २६६;६।४२,५६;७।२६;
१५।५५।२,१५।८६,६२,१००,१०५,१०८,
१०६,११३,११४,११६,१२०,१२१,१२३,
१२५,१२६,१३१,१३६;२८।१६ ज १।१५,
१६,४६,५१;२।१७;३।५,१८,२४।४,२६,
३१,३५,३७।२,३६,४५।२,४७,५२,५६,६१,
६४,६६,७२,८१,६०,११४ से ११६,१२२,
१२४,१२६,१३१।४,१३३,१३५,१३७,१३८
१४१,१४५,१५१,१५७,१६४,१७२,१७८,
१८०,२०५,२०६,२०८,२०६;४।४६ ५२,
१०३,१६२,१६७ से १७८,१८१ से १८४,
१८७ से १६१,१६३,१६६,१६७,१६६ से
२०३,२०६,२१२,२६२;५।४३,५५,५७,५८;
६।६।१;७।१२४,१२२।२ से ५।४ सू १०।८४।
२,१२४।१ उ १।१०७,११०,११६,११८,
१२२,१३०;५।१७
विजय (विजय) सू १।६
विजयखंधावार (विजयस्कन्धावार) ज ३।१७२
विजयदूस (विजयदूष्य) ज ३।२४८;५।३७
विजयपुरा (विजयपुरा) ज ४।२१२
विजयवेजइया (विजयवैजयिकी) ज ३।१२,२८,
४१,४६,५८,६६,७४,१४७,१६८
विजया (विजया) ज ४।२२२,२२२।४;५।८।१;
७।१२०।२,१८६
√विजह (वि+हा) विजहति सू १५।८
√विज्ज (विद्) विज्जइ ज ३।१२२।१
विज्जल (दे०, विज्जल) ज २।३८
विज्जा (विद्या) उ ३।१०१
विज्जाहर (विद्याधर) प १।६१,२१।६३ ज ३।१३७
से १३६,२६०;४।२७,२७२;५।२८ उ ५।५
विज्जाहरसेढी (विद्याधरश्रेणी) ज १।२५ से २८;
४।१७२;६।१५
विज्जु (विद्युत्) प १।२६;२।३०।१,२।४०।६,११
ज ४।२१०।१ सू २०।१
विज्जुकुमार (विद्युत्कुमार) प १।१३१;५।३;
६।१८
विज्जुकुमारिंद (विद्युत्कुमारेन्द्र) प २।४०।२
विज्जुदंत (विद्युद्दन्त) प १।८६
विज्जुप्पभ (विद्युत्प्रभ) ज ४।८,२०७ से २१०
विज्जुप्पभकूड (विद्युत्प्रभकूट) ज ४।२१०
विज्जुप्पभद्दह (विद्युत्प्रभद्रह) ज ४।६४

1. हे० ४।२५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विज्जुप्पह (विद्युत्प्रभ) ज ४।२१५
विज्जुप्पहवक्खार (विद्युत्प्रभवक्षस्कार) ज ४।२०५
विज्जुमुह (विद्युन्मुख) प १।८६
विज्जुसेह (विद्युत्...) ज २।१३१;४।२११; ५।५२
√विज्जुय (विद्युत्) विज्जुयायंति ज ५।७
विज्जुयाइत्ता (विद्युतयित्वा) ज ५।७
विज्झडिय (दे०, विध्वित) ज २।१३३
विज्झडियमच्छ ('विज्झडिय'मत्स्य) प १।५६
विट्ठि (विष्टि) ज ७।१२३ से १२५
विडंबिय (विडम्बित) ज ७।१७८
विडिम (दे०, विटप) प २।४९ ज ४।१४६
विडिमंतर (दे०, विटपान्तर) ज २।१६
विड्डा (व्रीडा) उ १।५८,८३
विणट्ठ (विनष्ट) ज २।१०३,१०४
विणमि (विनमि) ज ३।१३७,१३८,१३९
विणय (विनय) प १।१०१।१० ज १।६;२।६०, ९०,१३३;३।८,१३,१९,५३,६२,७०,७७,८४, १००,१४२,१४७,१६५,१८१,१८६,१९२, २०५,२०६,२१३;५।१५,२३,५८,६९,७३ सू २०।९।४,६ उ १।१९,४५,५५,५८,६७, ८०,८३,१०८,११६,१२०,३।१२०
विणास (विनाश) प १।७४
विणासण (विनाशन) ज ३।८८,१०९;५।७
विणिगच्छंत (विनिर्गच्छत्) ज ३।१०९
विणिम्मुयंत (विनिर्मुञ्चत्) ज १।३७;३।१२, ८८,५।५८
√विणी (वि+नी) विणेइ उ १।४९ विणेंति उ १।३४ विणेमि उ १।७४
विणीता (विनीता) ज ३।१८२
विणीय (विनीत) उ ५।४०,४१
विणीया (विनीता) ज २।१६,६५;३।१२,७,८, १४,८७,८८,१०९,१७२,१७३,१८०,१८३ से १८५,१९१,१९२,२०३,२०४,२०८,२०९, २१२,२२०,२२२,२२४;४।१७७
विण्णय (विज्ञक) उ ३।१२७,१२८;५।४३
√विण्णव (वि+ज्ञपय्) विण्णवेइ उ १।१०१
विण्णवणा (विज्ञापना) उ ३।१०९
विण्णविज्जमाण (विज्ञप्यमान) उ १।१०२
विण्णवित्तए (विज्ञपयितुम्) उ १।९९
विण्हु (विष्णु) ज ७।१३०,१८६।३
विण्हुदेवया (विष्णुदेवता) सू १०।७९
वितत (वितत) ज ५।३२,५७
विततपक्खि (विततपक्षिन्) प १।७७,८१
वितत्त (वितृप्त) सू २०।८,२०।८।८
वितत्थ (वित्रस्त) सू २०।८,२०।८।८
वितत्थि (वितस्ति) ज २।६
वितिमिर (वितिमिर) प २।६३;३६।९३,९४
वितिमिरतराग (वितिमिरतरक) प १७।१०८,११०
वित्त (वित्त) ज ३।१०३;५।५८
वित्त (वेत्र) ज ३।१०९
वित्ति (वृत्ति) ज १।१३,३०,३३,३६;२।१३४; ४।२
वित्थड (विस्तृत) ज ३।११७;७।३०,३१,३३ सू ४।३,४,६,७;१९।२२।१५
वित्थय (विस्तृत) ज ३।३२,१०९
वित्थर (विस्तर) ज २।१३४
वित्थाररुइ (विस्ताररुचि) प १।१०१।१,९
वित्थिण्ण (विस्तीर्ण) प २।५०,५६,५८ ज १।२४, २८ उ ३।९१;५।४
विदिसा (विदिशा) ज ४।१०६,१५५,२०४,२१०, २१२,२३५,२३७;५।१२
विदिसि (विदिश्) प ३६।७०,७२ ज ५।१२
विदिसीवाय (विदिक्वात) प १।२९
विदेह (विदेह) प १।९३।३,९४।१ उ १।१२६, १३३
विदेहजंबू (विदेहजम्बू) ज ४।१५७।१
विद्दुम (विद्रुम) ज ३।३५
विद्ध (विद्ध) ज ३।२५
विद्धंस (विध्वंस) प ११।७२;२८।४०,४३,६९
√विद्धंस (वि+ध्वंस्) विद्धंसइ सू २।१ उ १।५१ विद्धंसेहिंति ज २।१३१

विद्धंसइत्ता (विध्वस्य) प २८।६६
विद्धंसण (विध्वंसन) उ १।५१,५२,७६,७७
विद्धंसित्तए (विध्वंसितुम्) उ १।५१,५२,७६,७७
विद्धि (वृद्धि) ज ७।१८६।३
विधाउ (विधातृ) प २।४७।२
विधुय (विधुत) ज २।१०;४।१६६
विपुल (विपुल) ज २।६६;३।८८,१०६
विपुलतर (विपुलतर) ज ४।१०२
विप्पजढ (विप्रहीण) उ १।६०,६१
√**विप्पजह** (वि + प्र + हा) विप्पजहंति प ३६।६२
सू १५।८
विप्पजहण (विप्रहाण) प ३६।६२
विप्पजहित्ता (विप्रहाय) प ३६।६२
विप्पडिवण्ण (विप्रतिपन्न) उ ३।४७
विप्पमुक्क (विप्रमुक्त) प २।६४।१,६;१६।५५;
३६।८३।२ ज ३।१२,८८,६२,११६;५।७,
५८ उ ३।१५६
विप्परिणामइत्ता (विपरिणम्य) प २८।२०,३२,६६
विप्पलायमाण (विप्रलायत्) उ ३।१३०
विप्पवसित (विप्रोषित) सू २०।७
विप्पहय (विप्रहत) उ ३।१३१,१३४
विबुद्ध (विबुद्ध) ज ३।३
विब्बोयण (दे०) सू २०।७ उपधान
विब्भल (विह्वल) ज २।१३३
विभंगअण्णाणपरिणाम (विभंगाज्ञानपरिणाम)
प १३।१०
विभंगणाण (विभङ्गज्ञान) प ५।५,७;२६।२,६,
१७,१६;३०।६
विभंगणाणि (विभंगज्ञानिन्) प ३।१०२,१०३;
५।६६,१०७;१३।१४,१७;१८।८४;२८।१३७;
३०।१६
विभंगनाण (विभंगज्ञान) प ३०।२
विभंगु (दे०) प १।४२।२
√**विभज** (वि+भज्) विभज्जइ ज २।५५
विभजिस्सइ ज २।१५५
विभत्त (विभक्त) ज २।१५,१३३
विभयमाण (विभजमान,विभजत्) ज १।१६,४७;
४।४२,७१,७७,६४,१६८,१८३,१८६,१६५,
२६२ सू १६।१६
विभाग (विभाग) ज ३।३२
विभावणा (विभावना) प २८।१।२
√**विभास** (वि+भाष्) विभासिज्जा ज ५।५५
विभासेज्जा ज ५।५७
विभासियव्व (विभाषितव्य) ज ५।४०,५७
विभु (विभु) ज ५।५,४६
विभूइ (विभूति) ज ३।१२,७८,१८०;५।२२,२६
विभूति (विभूति) ज ३।२०६
विभूसा (विभूषा) ज ३।१२,७८,१८०,२०६;
५।२२,२६
विभूसिय (विभूषित) ज २।६६,१००;३।६,३५,
७८,१०६,२११,२२२;५।१४,४१,४३,५८;
७।१७८ उ १।७०;३।११०;४।१८;५।१७
विभेल (विभेल) उ ३।१२५,१३२,१३३,१४१,१४५
विमण (विमनस्) ज २।६०,१०३,१०६,१०८
उ १।३५
विमय (दे०) प १।४१।२
विमल (विमल) प २।३१,६४ ज १।३७;२।१५;
३।६,१२,१८,७७,८१,८८,१०७,११७,१२४,
१५१,१७८,२२२;४।३,२५,१२५,२०४।१;
५।५,४६।३,५८,६२;७।१७८ सू २०।८।८
उ १।१३८
विमलवाहण (विमलवाहन) ज २।५६,६१
विमाण (विमान) प २।१,४,१०,१३,४८ से ५२,
५६।२,२।५६ से ६३;७।२६;११।२५;२१।६२,
६३;३३,१६,१७ ज २।१२०;३।३,११७;
४।११५;५।३,५,१८,२२,२५,२६,२८,३०,३२,
४१,४३ से ४५,४६,५०,५२,५३;७।१७८।१,
१७६,१८४ से १६६ सू ६।१,१८।२२ से २४;
२०।२ से ४ उ ३।६,७,१४,२५,८३,६०,१२०,
१५६,१६१,१६६,१७१;४।५,२४,२८;५।२८,
४१

विमाणकारि (विमानकारिन्) ज ५।४८ से ५०,५३
विमाणवास (विमानवास) ज ३।११७
विमाणावलिया (विमानावलिका) प २।१,४,१०,१३
विमाणावास (विमानावास) प २।४८ से ६३
ज ५।१८,१९,२४,४८
विमाणोववण्णग (विमानोपपन्नक) सू १९।२३,२६
विमुक्क (विमुक्त) प २।६४।१०,१९,२२; ३६।६४।१
विमोक्खण (विमोक्षण) ज २।७१
वियट्टछउम (विवृत्तछद्मन्) ज ५।२१
वियड (विकट) प ९।२० से २३ ज २।१५ चं १।३
सू २०।८,२०।८
वियडजोणिय (विकटयोनिक) प ९।२५
वियडावइ (विकटापातिन्) ज ४।७७,८४,२६६
वियडावति (विकटापातिन्) प १६।३०
वियत्थि (वितस्ति) प १।७५
वियत्थिपुहत्तिय (वितस्तिपृथक्त्विक) प १।७५
√वियर (वि+तॄ) वियरह ज ३।१८८
वियरम (दे०) ज ५।१३
वियरिय (विचरित) ज २।१२
वियल (विकल) प २४।७
वियसंत (विकसत्) प २।४१
वियसिय (विकसित) प २।३१,४८ ज ३।६;
४।४९; ५।२१
√वियाण (वि+ज्ञा) वियाणाहि प १।४८।३८,३९
वियाणंत (विजानत्) प २।६४।१७
वियाणय (विज्ञायक) ज ३।३२,७७,१०९
वियाणित्ता (विज्ञाय) उ ५।३७
वियाणिय (विज्ञात) ज ३।८७
वियालय (विकालक) ज ७।१८६।१ सू २०।८।१
विरइय (विरचित) ज ३।३,९,२२२
√विरज्ज (वि+रञ्ज्) विरज्जति सू १३।१
विरत (विरत) प २६।१०
विरति (विरति) प २०।४१
विरत्त (विरक्त) सू १३।१;२०।३
विरय (विरजस्) सू २०।८,२०।८।७
विरयाविरति (विरताविरति) प २०।४२
विरल्लिय (तत[1]) प १५।५१
√विरव (वि+रचय्) विरवेइ उ १।४६
विरवेत्ता (विरच्य) उ १।४६
विरसमेह (विरसमेघ) ज २।१३१
विरह (विरह) उ १।६५,६६,१०५
विरहित (विरहित) प ६।५ से ७,४३ सू १९।२५
विरहिय (विरहित) प ६।१ से ४,८ से २३,२७,
४४,४५ ज २।४०;७।५७,६० सू १०।७७
विराइय (विराजित) प २।३०,३१,४१,४९
ज २।१५;३।११७;७।१७८
विराग (विराग) सू १३।२
विरायंत (विराजमान,विराजत्) ज ३।६;५।२१
विराल (विडाल) प ११।२१
विराली (विडाली) प ११।२३
√विराय (वि+राधय्) विरावेंहिंति ज २।१३१
विराहणी (विराधनी) प ११।३
विराहय (विराधक) प ११।८९
विराहिय (विराधित) उ ३।१४,२१,८३
विराहियसंजम (विराधितसंयम) प २०।६१
विराहियसंजमासंजम (विराधितसंयमासंयम)
प २०।६१
√विरिंच (वि+भज्) विरिंचइ उ १।९४
विरिंचित्ता (विभज्य) उ १।६६,९४
विरिय (वीर्य) प २३।१९,२० ज ३।१०७,११४
विरेयण (विरेचन) उ ३।१०१
विलंब (विलम्ब) प २।४०।६
विलवमाण (विलपत्) उ १।९२;३।१३०
विलास (विलास) ज २।१५;३।१३८ सू २०।७
विलिय (व्रीडित) ज २।६० उ १।५८,८३
विलिहिज्जमाण (विलिख्यमान) प २।५०
ज ५।१८
विलेवण (विलेपन) ज ३।९,२०,३३,५४,६३,७१,
८४,१३७,१४३,१६७,१८२,२२२
विव (इव) ज १।३८,६८ उ १।२३;३।१२८

१. हे० ४।१३७

विवंचि (विपञ्ची) ज ३।३१

विवज्जिय (विवर्जित) उ ३।३६

विवडिय (विपतित) ज ३।१०८ से १११

√**विवड्ढ** (वि+वृध्) विवड्ढंति ज ३।६५,१५९

विवड्ढंत (विवर्धमान) प १।४८।५२

विवण्ण (विवर्ण) उ १।१५;३।६८

विवत्थ (विवस्त्र) सू २०।८

विवर (विवर) ज २।६५ उ ५।५

विवरीत (विपरीत) सू २०।९।२

विवरीय (विपरीत) ज ३।११७।१

विवाग (विपाक) प २३।१३ से २३

विवाह (विवाह) सू २०।७

विविह (विविध) प २।४१,४८ ज ३।२४,११७, १६७।१२;४।२७,४९;५।३८,६७;७।१७८ सू १८।८ उ ३।३५,११२,१२८

विस (विष) उ १।८९,९०

विसंधि (विसन्धि) सू २०।८।५

विसंधिकप्प (विसन्धिकल्प) सू २०।८

विसज्जिय (विसर्जित) ज ३।८१

विसप्पमाण (विसर्पत्) ज २।१५;३।५,६,८,१५, १९,३१,५३,६२,७०,७७,८४,९१,१००,११४, १४२,१६५,१७३,१८१,१८९,१९९,२१३; ५।२१,२७,४१ उ १।२१,४२;३।१३६

विसम (विषम) प १३।२२।२;१६।५२;३६।८२।१ ज २।३८,१३१,१३३;३।७६,८८,१०९,१२८, १५१,१७०;७।११२।३ सू १०।१२९।३ उ ३।५५

विसमचउक्कोणसंठिय (विषमचतुष्कोणसंस्थित) सू १।२५;४।२

विसमचउरंससंठाणसंठित (विषमचतुरस्रसंस्थान-संस्थित) सू १।२५

विसमचउरंससंठित (विषमचतुरस्रसंस्थित) सू ४।२

विसमचक्कवालसंठाणसंठित (विषमचक्रवालसंस्थान-संस्थित) सू १९।९

विसमचक्कवालसंठित (विषमचक्रवालसंस्थित) सू १।२५;४।२;१९।३,६,१३,१७,२९,३३,३६

विसमचारि (विषमचारिन्) ज ७।११२।२ सू १०।१२९।२

विसमबहुल (विषमबहुल) १।१८

विसमाउय (विषमायुष्क) प १७।१३

विसमेह (विषमेघ) ज २।१३१

विसमोववण्णग (विषमोपपन्नक) प १७।१३

विसय (विषय) प २।४८;११।६९।१;१५।१।१, १५।४०,४१;३३।१।१ ज २।४;३।१०४,१०५, १०७,११४,१२६।४;५।४६;७।१७८ सू १८।१

विसय (विशद) ज २।४,६५,१२६

विसयवासि (विषयवासिन्) ज ३।२४।२,३।२६, ३९,४७,५६,६४,७२,१३१।२,१३३,१३८,१४५

विसयाणुपुव्वी (विषयानुपूर्वी) ज ७।५०

विसह (विषय) ज २।६८

विसहरण (विषहरण) ज ३।९५,१५९

विसाएमाण (विस्वादयत्) उ १।३४,४९,७४

विसायणिज्ज (विस्वादनीय) ज २।१८

विसारय (विशारद) ज ३।७७,१०९ उ १।३१

विसाल (विशाल) प २।४७।२ ज २।१५;३।१७८; ४।१५७।२;७।१७८ सू २०।८,२०।८।८

विसाहा (विशाखा) ज ७।१२८,१२९,१३४।३, १३५।३,१३६,१४०,१४९,१६५,१६६ सू १०।२ से ६,१७,२३,४९,६२,७२,७३,७५, ८३,११४,१२०,१३१ से १३३;१२।२१

विसाही (वैशाखी) ज ७।१४०

विसिट्ठ (विशिष्ट) प २।४०।७ ज १।३७;२।१५, २०;३।९,३५,१०९,११७,२२१,२२२;५।४३; ७।१७८

विसिट्ठतर (विशिष्टतर) सू २०।७

विसुज्झमाण (विशुज्झमान) प १।११३,१२८; २३।२००,२०१ ज ३।२२३

विसुद्ध (विशुद्ध) प २।६३;१७।१३८;३६।९३,९४ ज २।८,९;३।२,१०९;५।५८ उ ५।४३

विसुद्धतर (विशुद्धतर) ज २।७१

विसुद्धतराग (विशुद्धतरक) प १७।१०८ से १११

विसुद्धलेस्सतराग (विशुद्धलेश्यातरक) प १७।७

विसुद्धवण्णतरग (विशुद्धवर्णतरक) प १७।६,१७

विसेस (विशेष) प १।१।४;२।६४।१८,१२।३१; १५।२६,३०;१७।३०,१४६ ज १।१३,३० ३३,३६;२।४५,१४५;३।३२;४।२,२५ सू २।२;४।४,७;१५।५ से ७;१६।८;२२।१३

विसेसाहिय (विशेषाधिक) प २।६४;३।१ से ६, २४ से ३२,३७ से १२०,१२२ से १२५,१२७, १४१ से १४३,१५६ से १७०,१७४ से १८३, ६।१२३;८।५,७,६,११;६।१२,१६,२५;१०।३ से ५,२६ से २६;११।७६,६०;१५।१३,१६, २६ से २८,३१,३३;१५।५८।१,१५।६४; १७।५६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३,१४४ से १४६;२०।६४;२१।१०४,१०५; २२।१०१;२८।४१,४४,७०;३४।२५;३६।३५ से ४१,४८,४६,५१,८१ ज १।७,२०,४।४५, ५७,६२,६८,११०,१४३,२१३,२३४,२४१; ७।१४,१६,७३ से ७५,६३,१६७,२०७ सू १।१४,२७;१८।३७;१६।१०

√विसोह (वि+शोधय्) विसोहेहिइ ३।११५

विस्स (विश्व) ज ७।१३०,१८३।४

विस्संभर (विश्वम्भर) प १।७६

विस्सदेवया (विश्वदेवता) सू १०।८२

विस्सुत (विश्रुत) ज ३।३५

विस्सुय (विश्रुत) ज ३।७७,१०६,१२६,१६७

विहंगु (दे०) प १।४८।४६

विहग (विहग) ज १।३७;२।६८,१०१;४।२७; ५।२८

विहप्फइ (बृहस्पति) ज ७।१०४

√विहर (वि+हृ) विहरइ प २।५० से ५३ ज १।५,४५;२।७० ६१,३।२,२०,२३,३३, ८२,८४,१५३,१७१,१८२,१८६,२१८,२१६, २२४;४।१५६;५।१६ उ १।२;२।७;३।६; ४।११;५।६ विहरंति प २।२० से २७,३० से ३७,३६ से ४२,४६,४८ से ५२,५४,५५,५७ से ५६ ज १।१३,३०,३३;२।८३,१२०;४।२, ११३;५।१,३,८ से १३,६८;७।५६,५६ सू १६।२४ उ ३।५०;५।२६ विहरति प २।३२,३३,३५,३६,४३ से ४५,४८,५१ ५३ से ५६ ज २।७२;३।१२६;५।८ से १३ सू २०।७ विहरसि उ ३।८१ विहरामि उ १।७१;३।३६ विहराहि ज ३।१८५,२०६ विहरिस्संति ज १।१३४,१४६ विहरेज्जा सू २०।७ उ ५।३६

विहरमाण (विहरत्) ज २।७१ उ १।२,२०

विहरित्तए (विहर्तुम्) ज ७।१८४,१८५ सू १८।२२ उ १।६५,३।५०

विहरिय (विहृत) उ ३।५५

विहव (विभव) ज ५।४३

√विहाड (वि+घटय्) विहाडेइ ज ३।६०,१५७ विहाडेहि ज ३।८३,१५४

विहाडिय (विघटित) ज ३।६०

विहाडेत्ता (विघट्य) ज ३।८३

विहाण (विधान) प १।२०।२,१।२०,२३,२६,२६, ४८,६८

विहाणमग्गण (विधानमार्गण) प २८।६,६,५२,५५

विहायगति (विहायोगति) प १६।१७,३८,५५

विहायगतिणाम (विहायोगतिनामन्) प २३।३८, ५६,११६,११७,११६,१२८,१३२

विहार (विहार) ज २।७१

विहि (विधि) प २।४५;२१।११ ज ३।२४।२, सू १६।२२

विहिण्णु (विधिज्ञ) ज ३।३२

विहूण (विहीन) प १०।१४।५ ज ४।६४,८६,१३६, २०८

विहूसण (विभूषण) ज ४।१४०।१

वीइ (वीचि) ज ३।१५१

वीइक्कंत (व्यतिक्रान्त) ज २।५१,५४,७१,८८, ८६,१२१,१२६,१३०,१४६,१५४,१६०,१६३; ३।२२५ उ १।५३,७८;३।१२६

वीइभय (वीतिभय) प १।६३।४
वीइय (वीजित) ज ३।६,२२२
वीइवइत्ता (व्यतिव्रज्य) ज १।१६,४६,४।५२ उ ५।४१
वीईवयमाण (व्यतिव्रजत्) ज २।६०; ३।२६,३६, ४७,५६ ६४,७२,१३३,१४५;५।४४,४७,६७;
वीचि (वीचि) ज २।१५;३।८१
वीणग्गाह (वीणाग्राह) ज ३।१७८
वीतराग (वीतराग) प १।१०७ से ११०,११५, ११७ से १२३
वीतरागसंजय (वीतरागसंयत) प १७।२५
वीतसोग (वीतशोक) सू २०।८
वीतिमिर (वितिमिर) । २।६३
वीतिवयमाण (व्यतिव्रजत्) ज ३।११३;५।४४
√**वीतीवय** (वि+अति+व्रज्) वीतिवयति सू २०।२
वीतीवतित्ता (व्यतिव्रज्य) प २।६३
वीयणी (वीजनी) ज ३।३
वीयराग (वीतराग) प १।१००,१०४ से १०७, १०६ से १११,११५,११६,११८,१२१ से १२३
वीयराय (वीतराग) प १।१०२ से १०४,११६, ११७,११६,१२०,१२२
वीयसोय (वीतशोक) ज ४।२१२,२१२।२ सू २०।८।७
वीर (वीर) ज ३।६,१०३,१०८ से १११,२२२ चं १।१ उ १।२२,१४०;२।५,१०
वीरंगय (वीराङ्गद) उ ५।२५,२७ से ३०
वीरकण्ह (वीरकृष्ण) उ ५।१०
वीरण (वीरण) प १।४१।१
वीरवर (वीरवर) सू २०।६।६
वीरसेण (वीरसेन) उ ५।१०
वीरिय (वीर्य) प २३।६ ज २।५१,५४,७१,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०, १६३; ३।३,१२६,१८८; ७।१७८ सू २०।१, २०।६।३,५
वीरियंतराइय (वीर्यान्तरायिक) प २३।५६
वीरियंतराय (वीर्यान्तराय) प २३।२३
वीवाह (विवाह) ज २।१३०
वीस (विंश) प २।२० से २७
वीस (विंशति) प २।२४ ज १।२३ सू ७।१ उ ५।२८
वीस (विंशतितम) प १०।१४।४
वीसइ (विंशति) ज ३।१०६ चं २।५ सू १६।५
वीसइअंगुलबाहाक (विंशत्यंगुलबाहुक) ज ३।१०६
वीसति (विंशति) प २३।७५
वीसतिम (विंशतितम) सू १२।१७
वीसधा (विंशतिधा) सू १२।३०
वीससा (विस्रसा) प १६।५५; २३।१३ से २३
वीससेण (विश्वसेन) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
वीसहा (विंशतिधा) सू १०।१४२,१४७
वीसायणिज्ज (विस्वादनीय) प १७।१३४
वीसुत (विश्रुत) ज ३।३५,११६
वीहि (व्रीहि) प १।४५।१ ज २।३७
√**वुच्च** (वच्) वुच्चइ प ५।७,३४,१०१,११६,१६६; ११।३,४१; १७।२,१३,२०,२७,११६;११६, १५२,१५५;२०।३६ ज १।४५,४७; २।४।१; ३।१,६८,२२६; ४।२२,३४,५१,५४,६०,६१, ८०,८५,८६,६७,१०२,१०७,११३,१५६,१६१, १६६,१७७,२०८,२११,२६१,२६४,२७०, २७३,२७६;७।१६६,१८५,२०६,२१३,२२६ उ ३।३८ वुच्चंति प २२।४५;३०।१७ वुच्चति प ५।३,५,७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४, २८,३०,३२,३७,४१,४५,४६,५३,५६,५६; ६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६,८६,६३,६७, १०४,१०७,१११,११५,१२७,१२६,१३१, १३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७, १५०,१५४,१५७,१६३,१६६,२०३,२४२; १०।३;११।३,३६,४१; १५।४५,४८,६८; १७।२,४,६,६,११,१६,१६,२०,१०७,१०६, १११,११३,११६,१५०,१५५; २०।३६,५१; २२।८,४५; २३।१६०; २६।१७,१६ से २१;

३०।१६,१६,२१,२३,२६,२८;३४।१२,१६,१८;३५।१८,२०,२३;३६।२८,८१,६४
वुट्ठि (वृष्टि) ज ३।११७
वुड्ढकुमारी (वृद्धकुमारी) उ ४।६
वुड्ढय (वृद्धक) ज २।६५
वुड्ढा (वृद्धा) उ ४।६
वुड्ढि (वृद्धि) प ३३।१।१ ज ७।१,१०,१३,१६,१६,६६,७२,७५,७८ चं २।४ सू १।६।४,१।२७;१३।१७
वुत्त (उक्त) ज ३।८,१३,१६,२६,४२,५०,५३,५६,६२,६८,७०,७५,७७,८४,१००,१२५,१२६,१४२,१४८,१६५,१६६,१८१,१८६,१६२;५।१५,२२,२६,७० चं २।४,५;५।२ सू १।६।४,१।६।३ उ १।४०,४५,५५,५८,८०,८२,१०८;३।७८,८२;११३;४।२०
√वेअ (वि+इ) वेअति सू ६।१
वेइगा (वेदिका) ज ४।१२८
वेइया (वेदिका) प २।१;२१।६० ज २।२०;४।३,२५,३६,५७,६३,११०,१४८,१५६,२२१,२४५
वेउव्वि (वैक्रियिन्) प २।४६
वेउव्विय (वैक्रियक) प १२।१,२,४,५,८,१४,१८,२४,२८,३३,३६;१६।५;२१।१,८३,१०४,१०५;२३।४२,६०,६२,१४६,१७३;३६।११,३६।३२ ज २।८०;५।४०,५६;७।५५,५८ सू १६।२३ २६
वेउव्वियमीससरीर (वैक्रियमिश्रशरीर) प १६।१,३,७,१०
वेउव्वियमीसासरीर (वैक्रियमिश्रकशरीर) प १६।११,१२,१५;३६।८७
वेउव्वियसमुग्घाय (वैक्रियसमुद्घात) प ३६।१,४ से ७,२८,३५ से ३८,४०,४१,५३ से ५८,७० ७३ ज ३।११५,१६२,२०८;५।५,७,२६,५५
वेउव्वियसरीर (वैक्रियशरीर) प १२।१२,१६;१६।१,३,७,१२,१५;२१।४६ से ६५,६८ से ७१,७७,८१,६६,६८,१०१,१०४,१०५;३६।८७
वेउव्वियसरीरग (वैक्रियशरीरक) प १२।३६
वेउव्वियसरीरय (वैक्रियशरीरक) प १२।८,२१,३१
वेउव्वियसरीरि (वैक्रियशरीरिन्) प २८।१४१
वेंट (वृन्त) प १।४८।४५
वेंटबद्ध (वृन्तबद्ध) प १।४८।४०
वेग (वेग) प २।२१ से २७,३० ज २।१६
वेगच्छिग (वैकक्षिक) ज ७।१७८
वेच्च (दे०,व्युत,व्यूत) ज ४।१३
वेजयंत (वैजयन्त) प १।१३८;२।६३;४।२६४ से २६६;६।४२,५६;७।२६;१५।८६,६२,१००,१०५,१०८,१०६,११३,११४,११६,१२०,१२१,१२३,१२५,१२६,१३१,१३६;२८।६६ ज १।१५
वेजयंती (वैजयन्ती) प २।४८ ज ३।३१,१७८;४।४६,२१२;५।८।१,५।४३;७।१२०।२,१८६
वेज्झ (वेध्य) ज ३।३२
वेड्ड (दे० व्रीडित) ज २।६०
वेढ (वेष्ट) ज २।१३६
√वेढ (वेष्ट्) वेढेइ उ १।४६
वेढय (वेष्टक) ज २।१३६
वेढल (दे०) प १।५८
वेढिम (वेष्टिम) ज ३।१११
वेढिय (वेष्टित) ज ३।३२
वेढेत्ता (वेष्टित्वा) उ १।४६
वेणइया (वैनयिकी,वैणकिया) प १।६८ उ १।४१,४३
वेणुदालि (वेणुदालि) प २।३७,३६,४०।७
वेणुदेव (वेणुदेव) प २।३७,३८;४०।६ ज ४।२०८
वेणुयाणुजात (वेणुकानुजात) सू १२।२६
वेत्त (वेत्र) प १।४१।१;११।७५ ज २।६७
√वेद (वेदय्) वेदेइ प २३।१।१;२५।४ वेदेंति प १७।२०;२३।११;२५।४,५;२७।२,३;३५।२,३,५,७,६,११,१३,१४,१७ से २०,२२,२३ वेदेति प २३।६,१०,१२ से २३;२५।२;२७।२,५,६

वेद (वेद) प १।१।६;३।१।२ ; १८।१।१; २८।१०६।१ उ ३।४८,५०

वेदग (वेदक) प १।६४।१;२५।५;२७।३

वेदणा (वेदना) प २।२३,२६;१७।१७.२०,२७, २६,३२,३३;२२।५ ; ३५।१।१,३५।१ से ७,६, ११ से १४,१६ से २०,२२,२३ ज २।१३१

वेदणासमुग्घाय (वेदनासमुद्घात) प ३६।१,२,४ से ८,१२,१८ से २०,३२,३६ से ४१,४६,५३ से ५६,६५

वेदणिज्ज (वेदनीय) प २३।१,१२;२४।१२;२५।५; २६।६.११;२७।५ ; ३६।८२,६२

वेदपरिणाम (वेदपरिणाम) प १३।२,१४,१५,१८, १६

वेदय (वेदक) प २७।२

वेदि (वेदि) उ ३।५१,५६,६४,६८,७१,७४,७६

वेदिया (वेदिका) ज १।१४

वेदेमाण (वेदयत्) प २६।२ से ४,८,६,१२ ; २७।२, ३.५,६

वेमाणिणी (वैमानिकी) प ३।१४०;४।२१० से २१२; १७।५५,८०,८२,८३ ; २०।१३

वेमाणिय (वैमानिक) प १।१३०,१३४,१३८; २।४६ से ५१; ३।१३६;४।२०७ से २०६; ५।३,२६,१२२;६।४६,५६,६६,८५,८६,६२, ६५,१०६,१११.११७,११६,१२१;७।७; ८।३;६।११,१८,२४;१०।३२ से ५३;११।४६, ८०,८१,८४;१२।६,३८; १३।२०;१४।२,३, ५,७,६,११ से १५,१८;१५।३५,४६,५६ से ६३,६५ से ६७,७५,८२,१३४; १६।८,१६, २०,२१.२६;१७।२७,२८,३०,३४,३५,५४,७६ से ८१,८३,८६ से ६१.६६.१०५;१६।४; २०।१,४,५,१३,१६.२५,३०,३५,३७,५४,५६; २१।५५,६२,७१;२२।११ १३,१५,१७,१६, २०,२६,२७ ३१,३५,३७.३६.४१,४२,४४, ४७,५३ से ५८,६६,७५.७६,७६,८२,८८, ६०,१००;२३।२,४ से ७,१०,११;२४।१,३, ८,१०,११,१४,१५ ; २५।१,२,४; २६।१,३,४, ८,६ ; २७।१,२,६ ; २८।१,७४,१०१,१०२, १०५,१०६,१०६,१११,११५ से ११७,१२२, १२७,१३२; २६।१५,२२;३०।१४,२४; ३१।५,६।१;३२।५ ; ३३।३०,३४,३७; ३४।४,५,११ से १४; ३५।३,५,७,६,११११५, २३; ३६।७ से ६,११ से १३,१५,२०, २६,२७,३०,३२ से ३४,४१,४३ से ४५,४७, ५०,६५,६६,७२,७३ ज १।६०,६५,६६, १००,१०१,१०२,१०४,१०६,११०,११३ से ११६,१२०;४।२४८,२५० से २५२;५।१६, २६,२८,४७,६७,७२,७३,७४

वेमाणियत्त (वैमानिकत्व) प ३६।१८,२०,२२,२४, २६,२७,३० से ३४,४६,४७

वेमायत्त (विमात्रत्व) प २८।३६,४२,४५,४६,७१

वेमाया (विमात्रा) प ७।४; १३।२२।१;२८।३८

√**वेय** (विद्) वेइंसु प १४।१८ वेइस्संति प १४।१८ वेएइ प २३।१५,१६,१८ से २० वेएंति प १४।१८

वेय (वेत्र) प १।४२।१

वेय (वेद) प १४।१८।१

वेयग (वेदक) प २७।५

वेयड्ढ (वैताढ्य) ज १।१८ से २०,२३ से २५, २८,३२,३३,४६।१,४७,४८; २।१३३ ; ३।१, ६१,१३७.२२०;४।१६७ से १६६,१७२।१, १७३,१७७

वेयड्ढकूड (वैताढ्यकूट) ज १।३४,४६;६।११

वेयड्ढगिरि (वैताढ्यगिरि) ज २।१३१;३।२२० उ ५।१०

वेयड्ढगिरिकुमार (वैताढ्यगिरिकुमार) ज १।४७; ३।६३ से ६६,६८,७२

वेयड्ढपव्वय (वैताढ्यपर्वत) ज १।३४,३५,४१; ३।६०,६१,१३६,१३७;४।३५,३७,१६७,१७४

वेयणा (वेदना) प १।१।७;२।२० से २२,२४,२५, २७;३५।८,१०,२०;३६।१।१ ज २।४३ उ १।६०,६२,८५,८७

वेयणासमुग्घाय (वेदनासमुद्घात) प ३६।३५,३७, ३६,४१
वेयणिज्ज (वेदनीय) प २२।२८;२३।२६;२४।१०, ११;२५।३,४;२६।८;३६।८२ ज ३।२२५
वेयय (वेदक) प २५।४
वेयवेयय (वेदवेदक) प १।१६
वेर (वैर) ज १।४२,१३३
वेरमण (विरमण) प २०।१७,१८,३४
वेराणुबंध (वैरानुबन्ध) ज २।४२
वेराणुसय (वैरानुशय) ज २।२८
वेरिय (वैरिक) ज २।२८
वेरुलिय (वैडूर्य) प १।२०।४ ज १।३७;३।१२, ८८,६२,११६,१६७।१२,१७८;४।२४२, २६४;५।५,२१,५८;७।१७८
वेरुलियकूड (वैडूर्यकूट) ज ४।७६
वेरुलियमणि (वैडूर्यमणि) प १७।११६,१४८ ज ४।३,२५
वेरुलियमय (वैडूर्यमय) ज ३।१२,८८;४।७,२६, १६२,२४२,२६४;५।५८
वेलंबग (विडम्बक) ज २।३२
वेलंबय (विडम्बक) ज २।३२
वेला (वेला) प २।१ उ ३।११०
वेलु (वेणु) प १।४१।२
वेलुय (वेणुक) प १।४८।६१
वेस (वेष) प २।४१ ज २।१५;३।१३८,१७८ सू २०।३
वेसमण (वैश्रमण) ज ३।१८,२१,६३,१८०; ४।१७२।१;५।६८ से ७१;७।१२२।२ सू १०।८४।२ उ ६।५४
वेसमण (काइय) (वैश्रमणकायिक) ज १।३१
वेसमणकूड (वैश्रमणकूट) ज १।२४,४६;४।४४, ६३,२०२
वेसाणिय (वैशाणिक) प १।८६
वेसाली (वैशाली) उ ११।०५ से १०७,११०,१११, ११५,११६,१२६,१३०,१३२
वेसासिय (वैश्वासिक) उ ३।१२८
वेहल्ल (वैहल्ल) उ ११६५ से ६६,१०२ से ११७, ११६,१२७,१२८ राजा श्रेणिक का एक पुत्र।
वेहास (विहायस्) ज ३।१३१,१३२;५।६४ उ ११६७
वेहासक्कडच्छाया (विहायसक्कडच्छाया) सू ६।४
वोक्काण (दे०) प १।८६
√वोच्छ (ब्रू) वोच्छामि ज ७।१३५।१ सू १६।२२।३१
√वोच्छिद (वि + अव + छिद्) वोच्छिजिस्सइ ज २।१२६,१५८
वोच्छिण्ण (व्यवच्छिन्न) सू ८।१ उ ३।३४
वोच्छिण्णदोहल (व्यवच्छिन्नदोहद) ११५०,७५
वोच्छेयकडुइ (व्यवच्छेदकटुकी) प १७।१३४
√वोज्झ (वह्) वोज्झीहिति ज २।१३४
वोज्झ (उह्य) ज ३।२११;५।५८
वोडाण (दे०) प १।४४।१
वोयड (व्याकृत) प ११।३७।२
वोलीण (दे[1]) सू २०।६।४
वोसट्ठकाय (व्युत्सृष्टकाय) ज २।६७
वैसाह (वैशाख) ज ७।१०४
व्व (इव) प १।२०।७;२।४८ ज २।१५; ३।२४।३,२७।१,४५।१,१३१।३ उ १।३५

स

स (स्व) प २।३०,३१,४१ ४६,५०,५८ ज १।१६; २।१२०;३।१२,१७८ सू १०।७४ उ ३।२६, ५५,१४१;४।१२
स (स) प १।४८।४६;२।३०,३१,३२,४१,४६,५६, ६३,६६ ज १।८,१६,२३,२६,३१,३५;२।६४, ७१,७२,७७ से ८२;३।६,१७,१८,२१,२८, ३०,३५,४१,४६,५८,६६,७४,७६,८१,१०१, ११६ से ११८,१२८,१४७,१५१,१६७,१६८, १८०,२१२,२१३,२२२;४।३,१३,२१,२५, ३६,४०,४१,५०,५१,५६,६७,११२,११४,

1. दे० ४।१६२

११६,१३५,१४७,१५५,१५६,२२१ से २२४,
२५६,२७७;५।१,२१,३२,४१,४३,५०,५८;
६।१०,११,१४,१५,१८,१९,२१,२२,२६;
७।४,४६,६३,६६,८७,९०,११०,११४,१३२,
१६७,१८३,१९४ सू १८।२१; २०।२,७
उ १।२९,४४ से ४६,९३,१०५,१०६,११५,
११६,११९,१३८,१४८; ४।५;५।२८

सअंतर (सान्तर) प ६।१।१

सइं (सकृत्) सू १।१२,१४

सइंदिय (सेन्द्रिय) प ३।४० से ४३,४९;१८।१३,
१८,१९

सइय (शतिक) ज ४।१९२,१९८,२०४,२१०,
२३६,२६९,२७५

सउण (शकुन) ज २।१२;४।३,२५

सउणरुय (शकुनरुत) ज २।६४

सउणि (शकुनि) ज २।१६;७।१२३ से १२५,
१३३।१

सउणिपलीणगसंठिय (शकुनिप्रलीनकसंस्थित)
सू १०।२९

संकड (संकट) ज ३।२११

संकप्प (संकल्प) ज ३।२६,३९,४७,५६,१०५,
१२२,१२३,१३३,१४५,१८८;४।१४०।१;
५।२२ उ १।१५,३५,४१ से ४४,५१,५४,६५,
७१,७६,७९,९९,१०५; ३।२९,४८,५०,५५,
९८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

संकम (संक्रम) प १०।३० ज ३।९९ से १०१,१६१
सू १९।२२।१२

√संकम (सं+क्रम्) संकमति सू २।२

सं:मण (संक्रमण) सू १९।२२।१२

संकममाण (संक्रामत्) ज ७।१०,१३,१६,१९,२२,
२५,२७,३०,६९,७२,७५,७८,८१,८४
सू १।१४,१६,१७,२१,२४,२७;२।२,३;६।१

संकला (शृंखला) ज ३।३

संकाइय (दे०) ३।५१,५३,५५,५६,६३,६४,६७,६८,
७१,७३,७४,७९

संकाइयग (दे०) उ ३।५१

संकास (संकाश) प १।४८।५६ ज २।७८; ३।१

संकिलिट्ठ (संक्लिष्ट) १७।११४।१,१३८;
२३।१९५

संकिलिस्समाण (संक्लिश्यमान) प १।११३,१२८

संकिलेसबहुल (संक्लेशबहुल) ज १।१८

संकुचियपसारिय (संकुचितप्रसारित) ज ५।५७

संकुड (दे० संकुच) सू १९।२२।१५

संकुडिय (दे० संकुचित) ज २।१३३

संकुय (संकुच) ज ७।३१,३२ सू ४।३,४,६,७

संकुल (संकुल) ज २।६५;३।१७,२१,१७७; ५।२५

संख (शंख) प १।४९; २।३१;१७।१२८ ज २।१५,
२४,६४,६८,६९; ३।३,१२,७८,१६७।१,१०,
१७८,१८०,२०९;४।८५,१२५,२१२,२१२।१;
५।६२;७।१७८ सू २०।८,२०।८।२

संखणग (शंखनक) प १।४९

संखणाभ (शङ्खनाभ) सू २०।८

संखदल (शङ्खदल) प २।६४

संखधमा (शंखध्मायक) उ ३।५०

संखमाल (शङ्खमाल) ज २।८

संखवण्णाभ (शङ्खवर्णाभ) सू २०।८

संखसणाम (शंखसनामन्) ज ७।१८६।२

संखायण (शंखायन) ज ७।१३२।१ सू १०।९३

संखार (शंखकार) प १।९७

संखावत्त (शंखावर्त) प ९।२६

संखिज्ज (संख्येय) ज ३।१९२;५।५

संखित्त (संक्षिप्त) ज १।८,३५,५१;४।४५,११०,
११४,१५६,२१३,२४२

संखित्तविउलतेयलेस्स (संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्य)
ज १।५ उ १।३

संखिय (शांखिक) ज २।६४; ३।३१,१८५

संखेज्ज (संख्येय) प १।१३,२०,२३,२६,२९,४०,
४८,१।४८।८,४०,५७;३।१८०;५।२,३,५,१२६,
१२७,१४२,१४३;६।३५ से ४१,६०,६१,६४,
६६,६८;१०।१६,१८ से २७,२९;११।५०,
७२;१२।३२,३३,३६;१५।८३,८४,८७,८९,

९१,९३ से ९९,१०३,१०४,११०,११२,१२२, १२३,१३० से १३२,१३५ से १३७,१३९, १४२,१४३;१८।१५,२० से २३,२८,३२ से ३५,४७,५० से ५२;३३।११,१५;३६।८,१४, १७ से २०,२२,२३,२५,३३,४४,७०,७२,७४ २।४,५८,१५७;५।७ सू १९।३०,३१

संखेज्जइभाग (संख्येयभाग) प ६।४३ ; २१।६५ से ७०;३६।७२

संखेज्जगुण (संख्येयगुण) प ३।४ २५,३७,३९,४३, ४४,४९,५३ से ५८,६०,६४ से ७१,८८ से ९५,९७,९९,१०६,११०,१२८ से १४०,१४४ से १५५,१७१ से १७४,१७७,१७९ से १८३; ५।५,१०,२०,३२,१२९,१३४,१५१;६।१२३; ८।५,७,९,११;१०।२६,२७ ; १५।१३,३१; १७।५६,६३,६४,६६ से ६८,७१ से ७३,७६, ७८,८० से ८३;२१।१०५;२८।७,५३; ३४।२५;३६।३५ से ४१,४८ से ५१ ज ७।१९७ सू १८।३७

संखेज्जजीविय (संख्येयजीवित) प १।४८।४१

संखेज्जतिभाग (संख्येयभाग) प १२।१६ ; १५।४१

संखेज्जपएसिय (संख्येयप्रदेशिक) प ५।१३४,१६२, १६३,१८१,१९६,१९७,२१७,२१८ ; १०।१४, १७,२६,२९

संखेज्जपदेसिय (संख्येयप्रदेशिक) प ३।१७९; ५।१२७,१३३,१८०,१८१;१०।१८,२१,२६

संखेज्जभाग (संख्येयभाग) प ५।५,१०,२०,३०, ३२,१२९,१३४

संखेज्जवासाउग (संख्येयवर्षायुष्क) प ६।७१

संखेज्जवासाउय (संख्येयवर्षायुष्क) प ६।७१,७२, ७९,९७,९८,११३,११६;२१।५३,५४,७२

संखेज्जसमयट्ठितीय (संख्येयसमयस्थितिक) प ३।१८१;५।१४८

संखेज्जसमयठितीय (संख्येयसमयस्थितिक) प ३।१८१

संखेव (संक्षेप) प १।१०१।१

संखेवरुचि (संक्षेपरुचि) प १।१०१।११

संखोहबहुल (संक्षोभबहुल) ज १।१८

संग (सङ्ग) ज २।७०

संगइय (साङ्गतिक) ज २।२९

संगंथ (संग्रन्थ) ज २।६९

संगत (सङ्गत) सू २०।७

संगय (सङ्गत) ज २।१४,१५ ; ३।१०९,१३८; ७।१७८

संगह (संग्रह) प १६।४६

संगहणिगाहा (संग्रहणीगाथा) प २।४७;२१।४७

संगहणी (संग्रहणी) ज १।१७;६।६।१;७।१६७ सू १९।१ उ ३।१७१ ; ४।२८;५।४५

संगहणीगाहा (संग्रहणीगाथा) प १०।५३

संगहिय (संगृहीत) ज ३।३५

संगाम (संग्राम) ज ३।९२,११९ उ १।१४,१५, २१,२२,२५,२६,१२६,१३७,१४०

संगामेमाण (सङ्ग्रामयत्) उ १।२२,२५,२६,१४०

संगेल्लि (दे०) ज ३।१७९

√**संगोव** (सं + गुप्) संगोवेंति ज २।४९,५६ संगोवेस्संति ज २।१५९

संगोविज्जमाण (संगोप्यमान) ज २।४९

संगोवेत्ता (संगोप्य) ज २।४९

संगोवेमाण (संगोपयत्) उ १।५७,५८,८२,८३

संघ (सङ्घ) प २।३०,३१,४१ ज १।३१ ; २।१३१ उ ५।५

√**संघट्ट** (सं + घट्) संघट्टेंति प ३६।६२

संघट्टा (संघट्टा) प १।४०।३ इस नाम की लता

संघबाहिर (संघबाह्य) सू २०।९।४

संघयण (संहनन) प २।३०,३१,४१,४९;२३।९८, १०५,१०७,१९० ज १।५,२।१६,४६,५८,८६, १२३,१२६,१२८,१४८,१५१,१५७,४।१०१, १७१ सू १।५

संघयणणाम (संहनननामन्) प २३।३८,४५ ९४ से ९७,९९,१००

संघयणपज्जव (संहननपर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३

संघरिससमुट्ठिय (संघर्षसमुत्थित) प १।२६
संघाइम (संघातिम) ज ३।२११
संघाड (संघाट) प १।४८।६२
संघाडय (संघाटक) उ ३।१००,१३३
√संघात (सं+घातय्) संघातेंति सू १।१८
संघाय (संघात) प १।४७।२,३ ज ७।१७८
√संघाय (सं+घातय्) संघाएंति प ३६।६२
संचय (संचय) ज २।१३; ३।१६७।१४
संचाय (सं+शक्) संचाएइ उ १।५२;३।१०६ संचाएज्जा प २०।१७,१८,३४ संचाएमि उ १।६५; ३।१२१ संचाएमो उ १।६६ संचाएहिइ उ ३।१३०
संचारिम (संचारिम) ज ३।११७
√संचिट्ठ (सं+स्था) संचिट्ठइ उ १।३८;३।५६ संचिट्ठंति उ १।८६;३।७६
संचिय (सञ्चित) प २३।१३ से २३ ज ३।२२१
संछण्ण (संछन्न) ज ४।३,२५
संजत (संयत) प ३।१०५;६।६७,६८;२१।७२; ३२।६।१
संजतासंजत (संयतासंयत) प ६।६८;२१।७२; ३२।१,३
संजतासंजय (संयतासंयत) प ३२।४
संजम (संयम) प १।१।७ ज १।५; २।८३;३।३२।१ उ १।२,३;३।२६,३१,६६,१३२;५।२६
संजय (संयत) प ३।११,१०५;६।६८; १७।२५, ३०,३३; १८।११,१८।८६;२१।७२; २८।१०६।१,२८।१२८; ३२।१ से ४,६ ६।१
संजयासंजय (संयतासंयत) प ३।१०५; ६।६७; १७।२३,२५,३०;१८।६१;२१।७२;२२।६२; २८।१३०; ३२।१,२,६
संजलण (संज्वलन) प १४।७; २३।३५
संजलणा (संज्वलना) प २३।१८४
संजाय (सञ्जात) ज ३।१११,१२५ उ १।८६
संजायकोउहल्ल (संजातकौतूहल) ज १।६
संजायसंसय (संजातसंशय) ज १।६
संजायसड्ढ (संजातश्रद्ध) ज १।६
संजुत्त (संयुक्त) प १५।५७
संजोग (संयोग) प २१।१।१ ज ५।५७;७।१३४।२,३
संजोय (संयोग) प १।८४; १६।१५
संजोयणाहिकरणिया (संयोजनाधिकरणिकी) प २२।३
संझब्भराग (सन्ध्याभ्रराग) प १७।१२६
संझा (सन्ध्या) प २।४०।११
संठाण (संस्थान) प १।४ से ६,४७।१; २।२० से २७,३०,३१,४१,४८ से ५०,५४,५८ से ६०, ६४,६४।१,४,५,६;१०।१५ से २४,२६ से ३०;१५।१।१,१५।२ से ६,१८,१६,२१,२६, ३०,३५;२१।१।१,२१।२१ से ३७,५६ से ६२, ७३,७८ से ८०,६४; २३।१००,१६०;३०।२५, २६; ३३।१।१,३३।२१ से २३;३६।८१ ज १।५, ७,८,१८,२०,२३,३५,५१;२।१६,२०,४७, ८६,१२३,१२८,१४८,१५१,१५७;३।३,६५, १५६;४।१,३६,४५,५५,५७,६२,६६,७४,८४, ८६,६१,६७,६८,१०१,१०२,१०३,१०८,११०, १६७,१७८,२१३,२४२,२४५; ७।३१,३२।१, ३३,३५,५५,१२७।१,१२६।१,१३३।३,१६७।१; १६८।२,१७६ चं ३।२ सू १।७।२,१।१४; १०।६; १३।१७;१८।८ उ १।३
संठाणओ (संस्थानतस्) प १।५ से ६
संठाणतो (संस्थानतस्) प १।७ से ६
संठाणणाम (संस्थाननामन्) प २३।३८,४६
संठाणपज्जव (संस्थानपर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,१६३
संठाणपरिणाम (संस्थानपरिणाम) प १३।२१,२४
संठाणा (दे०) सू १०।६,६२,६७,६८,७५,८३, १०३,१२०,१३१ से १३३; १२।२० मृगशिरा नक्षत्र
संठिइ (संस्थिति) ज ७।३१,३३,३५ चं २।१;३।१, ५।१ सू १।६।१,१।७।१,१।६।१
संठित (संस्थित) प २।२० से २७,३०,३१,४१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८ से ५०,५४,५६,६०,६४ सू १।२५;३।२; ४।२ से ४,६,७,९,३३,३६; १०।२७ से ३१, ३३,३४ से ४४,४६ से ५४;१८।८; १९।२,३, ६,९,१२,१३,१६,१७;२२।२,१५

संठिति (संस्थिति) ज २।४६ सू १।१५,१६,१७, २५;४।१ से ४,६,७,९;६।१; ८।१; ९।२; १३।१७

संठिय (संस्थित) प २।४८,६४; १५।२ से ६,१८, १९,२१,२९,३०,३५; २१।२१ से ३७,५६ से ६२,७३,७८ से ८१,८३; ३३।१९ से २६; ३६।८१ ज १।५,७,८,१८,२०,२३,३५,३७, ४८,५१; २।१५,१६,२०,४७,८६; ३।९,९४, ९५,१३३,१३५,१५८,१५९,१६७,२२२; ४।१, २३,३८,३९,४५,५५,५७,६२,६५,६६,७३,७४, ८६,९०,९१,९७,९८,१०३,१०८,११०,१२८; १६७।११,१६९,१७८,२१३,२४२,२४५; ५।४३;७।३१ से ३३,३५,५५,१३३,१६७, १७६,१७८ सू १।५,१४;४।६ उ १।३

संड (षण्ड) ज ३।११७,१८८

संडिल्ल (शाण्डिल्य) प १।९३।३

संणय (सन्नत) ज ३।१०९

संत (सत्) प १।४७।३ ज २।६४,६९ सू २०।९।२

संत (शान्त) ज २।६८

संत (श्रान्त) उ १।५२,७७

संतइभाव (संततिभाव) प ८।४,६

संततिभाव (सन्ततिभाव) प ८।८,१०

√संतप्प (सं+तप्) संतप्पंति सू ९।१

संतप्पमाण (संतप्यमान) सू ९।१

संतय (सन्तत) प ७।१

संतर (सान्तर) प ६।४७ से ५८; ११।७०,७१

संताणय (सन्तानक) सू २०।८

√संताव (सं+तापय्) संतावेंति सू ९।१

संतिकर (शान्तिकर) ज ३।८८

√संथर (सं+स्तृ) संथरइ ज ३।२०,३३,५४,६३, ७१,८४,१३७,१४३,१६६ संथरेंति ज ३।१११

संथरित्ता (संस्तृत्य, संस्तीर्य) ज ३।२०

संथरेत्ता (संस्तृत्य, संस्तीर्य) ज ३।१११

संथव (संस्तव) प १।१०१।२३

संथार (संस्तार) ज ३।११३

संथारग (संस्तारक) ज ३।१११

संथारय (संस्तारक) ज ३।१११

√संथुण (सं+स्तु) संथुणइ ज ५।५८

संथुणित्ता (संस्तुत्य) ज ५।५८

संथुय (संस्तुत) ज २।६९

संथुव्वमाण (संस्तूयमान) ज ३।१८,९३,१८०

संदमाणिया (स्यन्दमानिका) ज २।१२,३३

संधि (सन्धि) प १।४८।३९ ज २।१५,१३३;४।१३, २६

संधिकम्म (सन्धिकर्मन्) ज ३।३५

संधिवाल (सन्धिपाल) ज ३।९,७७,२२२ उ १।९२

√संधुक्क (सं+धुक्ष्) संधुक्केइ उ ३।५१

संधुक्केत्ता (संधुक्ष्य) उ ३।५१

√संधुक्ख (सं+धुक्ष्) संधुक्खंति ज ५।१६

संधुक्खित्ता (संधुक्ष्य) ज ५।१६

संनिक्खित्त (सन्निक्षिप्त) ज १।४०

संनिचित (सन्निचित) उ ५।५

संनिवडिय (संनिपतित) उ १।२३,९१

संनिविट्ठ (संनिविष्ट) ज ४।२७; ५।४

संनिसण्ण (संनिषण्ण) उ ३।९१

संपउत्त (संप्रयुक्त) ज ३।३५,८२,१०३,१७८, १८७,२१८

संपक्खालग (सम्प्रक्षालक) उ ३।५०

संपग्गहिय (सम्प्रगृहीत) ज ३।३५,१७८

संपट्ठिअ (सम्प्रस्थित) प १६।२२

संपट्ठिय (सम्प्रस्थित) ज ३।१७८,१७९,२०२, २१७; ५।४३

संपणदित्त (संप्रणदित) प २।३०,४१

संपणदिय (संप्रणदित) प २।३१

संपणादित (संप्रणादित) ज १।३१

संपण्ण (संपन्न) उ १।२; ३।१५९; ५।२६

संपत्त (सम्प्राप्त) ज ५।२१ सू २।३ उ १।४ से ८,६३,६३,१४२,१४३; २।१ से ३,१४,१५, २१;३।१ से ३,२०,२३,२६,८८,१२६;१५३, १५४,१६६,१६७,१७०;४।१ से ३,२७;५।१, ३,४४

संपत्ति (सम्प्राप्ति) उ १।४१,४३,४४

संपत्थिय (सम्प्रस्थित) उ ३।६३,६७,७०,७३

संपन्न (सम्पन्न) ज २।१६

√संपमज्ज (सं+प्र+मृज्) संपमज्जेज्जा ज ५।५, ७५ से ७९

संपया (संपदा) ज २।७४

संपराइयबंधग (साम्परायिकबन्धक) प २३।६३

संपराइयबंधय (साम्परायिक बन्धक) प २३।१७६

संपराय (सम्पराय) ज ३।१०३

संपरिक्खित्त (सम्परिक्षिप्त) ज १।७,६,२३,२५, २८,३२,३५; ४।१,३,६,१४,२५,३१,३६,४३, ४५,५७,६२,६८,७२,७६,७८,८६,६०,६५, १०३,१४१,१४३,१४८,१४६,१५२,१७४, १७६,१७८,१८३,२००,२१३,२१५,२३४, २४०,२४१,२४२,२४५; ५।३८ सू ३।१;१६।२, १२,२८,३२,३६ उ ५।८

संपरिवुड (सम्परिवृत) ज २।८८,६०; ३।६,१४, १८,२२,३०,३१,३६,४३,५१,६०,६८,७७, ७८,६३,१३०,१३६,१४०,१४६,१७२,१८०, १८६,२०४,२१४,२२१,२२२,२२४; ५।१,५, २२,४६,४७,५६,६७ उ १।२,१६,६२,६३,६७, ६८,१०५ से १०७,१२१,१२२,१२६ से १२८, १३३; ३।१११; ४।१८; ५।१६

संपलग्ग (सम्प्रलग्न) ज ३।१०७,१०६ उ १।१३८

संपलियंक (संपर्यङ्क) ज २।८८

संपाविउकाम (सम्प्राप्तुकाम) ज ५।२१

संपिंडिय (सम्पिण्डित) प १६।१५ ज २।१२

संपिणद्ध (संपिनद्ध) ज २।१३३; ३।२४

संपुच्छण (सम्प्रच्छन) ज ५।५

संपुण्ण (सम्पूर्ण) ज ३।२२१ उ १।३४

संपुण्णदोहल (सम्पूर्णदोहद) उ १।५०,७५

√संपेह (सं+प्र+ईक्ष्) संपेहेइ ज ३।२६,३६,४७ उ १।१७; ३।२६ संपेहेति ज ३।१८८ संपेहेमि उ १।७६

संपेहेत्ता (सम्प्रेक्ष्य) ज ३।२६ उ १।१७; ३।२६

संब (शम्ब) उ ५।१०

संबंधि (सम्बन्धिन्) ज ३।१८७ उ ३।५०,११०, १११; ४।१६,१८

संबद्ध (संबद्ध) ज २।२० से २७

संबद्धलेसाग (संबद्धलेश्याक) सू १६।११।२

संबररुहिर (शम्बररुधिर) प १७।१२६

संबाह (सम्बाध) ज २।२२;३।१८,३१,१८०,२२१ उ ३।१०१

संबुद्ध (सम्बुद्ध) उ ३।४५

संभंत (सम्भ्रान्त) उ १।२७

संभम (सम्भ्रम) ज ३।२०६;५।२२,२६

संभव (सम्भव) ज ७।११४

संभिन्न (सम्भिन्न) प ३३।१८

संभिय (श्लेष्मिक) उ ३।३५

संभूयग (सम्भूतक) उ ३।६८

संभोग (सम्भोग) उ १।२७,१४०

संमज्जग (सम्मज्जक) उ ३।५०

संमज्जण (सम्मार्जन) उ ३।५१,५६,७१,७६

संमज्जिय (सम्मार्जित) ज २।६५; ३।७,१८४; ५।५७

संमट्ठ (सम्मृष्ट) ज २।६; ३।७;५।५७

संमुच्छ (सं+मुर्च्छ्) संमुच्छंति सू ६।१ संमुच्छति सू २०।१

संमुच्छित्ता (सम्मूर्च्छ्य) सू २०।१

संमुच्छिय (सम्मूर्च्छित) सू ६।१

√सम्माण (सं+मानय्) सम्माणेइ उ १।१०६; ३।११० सम्माणेंति उ ५।३६ सम्माणेमि उ १।१७

संलवमाण (संलपत्) उ १।४७

संलाव (संलाप) ज २।१५;३।१३८ सू २०।७

संलेहणा (संलेखना) ज ३।२२४ उ २।१२;३।१४,
८३,१२०,१५०,१६१,१६९;५।२८,४३
संवच्छर (संवत्सर) प ४।९५,९७; २३।७४,१८७
ज २।४,६६,६९;७।२०,२५,२६,३७,१०३,
१०४,११२।२,३,११३,११४,१२६
चं २।३; ५।३ सू १।६।३; १।९,१३,१४,१६,
१७,२१,२४,२७;२।३; ६।१; ८।१;१०।१२४
से १२७,१२९।२,३,१३०,१३८ से १६१;
११।१ से ६; १२।१ से ६,१० से १३,१९ से
२८,३०; १३।२;२०।३ उ ३।१२९,१३४
संवच्छरण (संवत्सरण) सू १।६।३
संवच्छरिय (सांवत्सरिक) ज २।४;३।२१२,२१३,
२१९;७।११०,१२७ सू १०।१२२,१२३
संवट्टकप्प (संवर्तकल्प) उ १।१३९
संवट्टग (संवर्तक) ज २।१३१
संवट्टगवाय (संवर्तकवात) प १।२९ ज ५।५
√संवड्ढ (सं+वृध्) संवड्ढेइ उ १।५८ संवड्ढेमि
उ १।८३ संवड्ढेहि उ १।५७
संवड्ढमाण (संवर्धमान) उ १।५४
संवड्ढिज्जमाण (संवर्ध्यमान) उ ३।४९
संवत्त (संवृत्त) ज ३।१०९
संवड्ढिय (संवर्द्धित) ज ३।३५
संवर (शंवर) प १।६४ मृग की जाति
संवर (संवर) प १।१०१।२
संवाह (संवाह) प १।७४ ज २।२२
संविकिण्ण (संविकीर्ण) प २।४१ ज १।३१
संविगिण्ण (संविकीर्ण) प २।३०,३१
संविणद्ध (संविनद्ध) ज ३।३१
संवुक्क (दे०) प १।४९
संवुड (संवृत) प ९।२० से २३ सू २०।७
संवुडजोणिय (संवृतयोनिक) प ९।२५
संवुडवियड (संवृतविवृत) प ९।२० से २३
संवुडवियडजोणिय (संवृतविवृतयोनिक) प ९।२५
संवुत्त (संवृत्त) ज ४।१३
संवुय (संवृत्त) ज ३।२२२
संसयकरणी (संशयकरणी) प ११।३७।२
संसत्त (संसक्त) उ ३।१२०
संसत्तविहारि (संसक्तविहारिन्) उ ३।१२०
संसार (संसार) प २।६४,६४।१ ज २।७०
उ ३।११२
संसारअपरित्त (संसारापरीत) प १८।१०९,१११
संसारत्थ (संसारस्थ) प ३।१८३
संसारपरित्त (संसारपरीत) प १८।१०६,१०८
संसारपारगामि (संसारपारगामिन्) ज २।७०
संसारसमावण्ण (संसारसमापन्नक) प १।१०,१४,
१५,४९ से ५२,१३८
संसारसमावण्णग (संसारसमापन्नक) प ११।३९;
२२।८
संसिय (संश्रित) ज ३।८१ उ ३।५५
संहित (संहित) प १।४७।३
संहिय (संहित) ज २।१५
सकथा (सकथा) उ ३।५११।१
सकसाइ (सकषायिन्) प ३।९८,१८३; १८।६४;
२८।१३२
सकहा (दे०) ज २।११३
सकाइय (सकायिक) प ३।५० से ५३,६०;१८।२५;
३०,३१
सकिरिय (सक्रिय) प २२।७,८
सकोरंट (सकोरण्ट) ज ३।९,१८,७७,७८,९३,
१८०,२२२
सक्क (शक्य) प १।४८।५७ ज २।६।१
सक्क (शक्र) प २।५०,५१ ज १।३१; २।८९,९०,
९३,९५,९७,९९,१०१,१०३,१०५,१०७,१०९,
१११,११३,११८;३।११५,१२४,१२५;
४।१७२;,२२२,२२३।१,२३५,२४०,२४३;
५।१८,२० से २३,२७ से २९,३९,४१,४३,
४५ से ५०,६१,६२,६५ से ६९,७२,७३
उ ३।१२३,१५०
सक्करप्पभा (शर्कराप्रभा) प १।५३;२।१,२०,२२;
३।१२,२२,२३,१८३;४।७,८,९;६।११,७४,
७५;१०।१; २०।५१,५४;२१।६७; ३३।४,१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्करप्पभापुढविणेरइय (शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिक) प २०।५२,५५

सक्करा (शर्करा) प १।२०।१; १७।१३५ ज २।१७,६८;४।२५४

सक्कार (सत्कार) ज २।२५; ३।२१७ उ १।६२; ५।१७

√सक्कार (सत्कारय्) सक्कारेइ ज ३।६,२७,४०, ४८,५३,५७,६५,७३,६१,१२७,१३४,१३६, १४६,१५१,१५२,१८६,२१६ उ १।१०६; ३।११० सक्कारेंति उ ५।३६ सक्कारेज्ज ज २।६७ सक्कारेमि उ १।१७

सक्कारणिज्ज (सत्कारणीय) सू १८।२३

सक्कारवत्तिय (सत्कारप्रत्यय) ज ५।२७

सक्कारिय (सत्कारित) ज ३।८१

सक्कारेत्ता (सत्कार्य) ज ३।६ उ ३।५०

सक्कुलिकण्ण (शष्कुलिकर्ण) प १।८६

सक्कोस (सक्रोश) ज १।२३,३५

संखिखिणी (सकिंकिणी) ज ३।२६,३०,३६,४७, ५६,६४,७२,११३,१३३,१३८,१४५,१७८

सग (स्वक) प २१।६२,६३; ३३।१६,१७ ज २।१२०;३।८१,८६,१०२,१५६,१६२

सग (शक) प १।८६

सगंथ (सग्रन्थ) ज २।६६

सगड (शकट) ज २।१२,३३,७१; ७।३१

सगडवूह (शकटव्यूह) उ १।१३७

सगडुद्धिसंठिय (शकट 'उद्धि' संस्थित) सू १०।३७

सगडुद्धी (शकट 'उद्धि') ज ७।१३३।१

सगडुद्धीमुहसंठिय (शकट 'उद्धि' मुखसंस्थित) ज ७।३१,३३

सगडुद्धीसंठिय (शकट'उद्धि' संस्थित) ज ७।३२।१

सगल (शकल) प १।४७।२; २।३१ ज ७।१७८ सू ८।१; १३।३

सगोत (सगोत्र) सू १०।६२ से ११६

सचित्त (सचित्त) प ६।१३ से १७ ज २।६६

सचित्तकम्म (सचित्तकर्मन्) सू २०।७ उ २।८

सचित्तजोणि (सचित्तयोनि) प ६।१६

सचित्तजोणिय (सचित्तयोनिक) प ६।१६

सचित्ताहार (सचित्ताहार) प २८।१,२

सच्च (सत्य) प १।१०१।१० उ १।२४

सच्चभासग (सत्यभाषक) प ११।६०

सच्चमण (सत्यमनस्) प १६।१ से ३,७,८,१०, ११,१५,१८ से २१

सच्चमणजोग (सत्यमनोयोग) प ३६।८६

सच्चवइजोग (सत्यवाक्योग) प ३६।६०

सच्चा (सत्य) प ११।२,३,३२,३३,४२ से ४६,८२, ८४,८५,८८,८६

सच्चामोस (सत्यामृषा) प ११।२,३,३५,३६,४२, ४३,४५,४६,८२,८४,८५,८८,८६

सच्चामोसभासग (सत्यामृषाभाषक) प ११।६०

सच्चामोसमण (सत्यामृषामनस्) प १६।१,७

सच्चामोसमणजोग (सत्यामृषामनोयोग) प ३६।८६

सच्चामोसवइजोग (सत्यामृषावाक्योग) प ३६।६०

सच्चित्त (सचित्त) प २८।१।१

सच्छंद (स्वच्छन्द) प २।४१

सच्छंदमइ (स्वच्छन्दमति) उ ३।११६; ४।२२

सच्छीर (सक्षीर) प १।४८।३६

सजोगि (सयोगिन्) प ३।६६,१८३; १८।५५; २८।१३८;३६।६२

सजोगिकेवलि (सयोगिकेवलिन्) प १।१०८,१०६, १२१,१२२

सजोगिभवत्थकेवलि (सयोगिभवस्थकेवलिन्) प १८।१०१,१०२

सज्ज (सज्ज) ज ३।१७८

सज्जाय (सर्जक) प १।४८।४६ पीत शालवृक्ष

√सज्जाव (सज्जय्) सज्जावेंति उ १।१३५

सज्जावेत्ता (सज्जयित्वा) उ १।१३५

सज्झाय (स्वाध्याय) उ ३।३१

सट्ठ (षष्ठ) ज ३।१७८ सू १।२१

सट्ठाण (स्वस्थान) प २।१,२,४,५,७,८,१०,११; १३,१४,१६ से ३१,४६; ५।३५,४२,४६,५४, ५७,६०,६४,६६,७५,७६,६०,६४,६८,१०८,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२,११६,१२२,१५१,१६४,१६७,१९१;
१९४,१९८,२०१,२०४,२०८,२१२,२१५,
२१९,२२२,२२५,२४३,२४४;६।६३;
१५।१०२,१२१,१२२,१२७;३६।२०,२४,२६,
२७,४७
सट्ठि (षष्टि) प २।३३ ज १।२६ उ २।१२
सट्ठिग (षष्टिक) ज ३।११९
सट्ठिभाग (षष्टिभाग) ज ७।२१,२२,२५ सू १।१०
सट्ठिभाय (षष्टिभाग) ज ७।२४
सट्ठिय (षष्टिक) सू १।१८
√**सड** (शट्) सडइ उ १।५१
सड्ढइ (श्राद्धकिन्) उ ३।५०
सण (शण,सण) प १।३७।४,१।४५।२ ज २।३७;
३।७९,११६
सणंकुमार (सनत्कुमार) प १।१३५;२।४९,५२ से
५८,६३;३।३१,१८३;४।२३७ से २३९;
६।२९,५६,६५ ८५,११२;७।१०;१५।८८,
१३८;२१।७०,९१;२८।७७;३३।१६;३४।१६,
१८ उ २।२
सणंकुमारग (सनत्कुमारज) ६।९५ ज ५।४९
सणंकुमारवडेंसय (सनत्कुमारावतंसक) प २।५२
सणप्फद (सनखपद) प १।६२,६६
सणिक्खमण (सनिष्क्रमण) ज ४।२७७
सण्णिक्खित्त (संनिक्षिप्त) ज ७।१८५ सू १८।२३
सणिच्चरसंवच्छर (शनैश्चरसंवत्सर) ज ७।१३३
सणिच्चारि (शनैश्चारिन्) ज २।५०,१६४;
४।१०९,२०५
सणिच्छर (शनैश्चर) प २।४८ ज ७।१८६।१
सू १०।१३०;२०।८।१
सणिच्छरसंवच्छर (शनैश्चरसंवत्सर) ज ७।१०३,
११३ सू १०।१२५,१३०
सणिय (शनैस्) ज ३।२२४
सण्णज्झिउं (सन्नद्धु) ज ३।१२३
सण्णद्ध (सन्नद्ध) ज ३।१०७,१२४ उ १।१३८
सण्णय (सन्नत) ज ७।१७८
सण्णवणा (संज्ञपना) उ ३।१०९
√**सण्णवित्तए** (संज्ञपयितुम्) उ ३।१०९
सण्णा (संज्ञा) प १।१।४;८।१।३ ज १।१३३
सण्णासण्णि (संज्ञासंज्ञिन्) प ३१।६।१
√**सण्णाह** (सं+नाहय्) सण्णाहेह ज ३।१५,२१
३१,३४,७७,९१,१७३,१७५,१९९ उ १।१२३;
५।१८
सण्णि (संज्ञिन्) प १।१।७;३।१।२,११२;११।११
से २०;१८।१।२,१८।११९;२३।१७६,१७७,
१९५,१९६,१९९ से २०१;२८।१०६।१,
२८।११५,११६; ३१।१ से ३,५,६,६।१;
३६।९२
सण्णिकास (सन्निकाश) ज ३।२२३;४।८५
सण्णिखित्त (संनिक्षिप्त) ज ७।१८५
सण्णिचिय (सन्निचित) ज २।६
सण्णिणाद (संनिनाद) ज ३।३०,३१,४३,५१,६०,
६८,७८,१३०,१३६,१४०,१४९
सण्णिणाय (सन्निनाद) ज ३।१२,१४,१७२,१८०,
२०९,२२४;५।२२,२६;७।१२७।१
सण्णिभ (सन्निभ) ज ३।३,१७,१८,३१,८१,९१,
९३,१७७,१८०,१८३,२०१,२१४
सण्णिभूय (संज्ञिभूत) प १५।४८;१७।९;३५।१८
सण्णिवाइय (सन्निपातिक) उ ३।११२,१२८
सण्णिवात (सन्निपात) सू १०।२६
सण्णिवाय (सन्निपात) चं ५।१ सू १।९।१
सण्णिविट्ठ (सन्निविष्ट) ज १।३७;३।९९ से
१०१,१९३;४।९,३३,१२०,१४७,२१६,२४२;
५।३,२८,३३
सण्णिवेस (सन्निवेश) प १६।२२ ज २।२२;
३।३२,१८५,२०९ उ ३।१०१,१२५,१३२,
१३३,१४१,१४५;५।३६
सण्णिवेसमारी (सन्निवेशमारी) ज २।४३
सण्णिसण्ण (सन्निषण्ण) ज ३।६,२०४;५।२१,
४१,४७,६०
√**सण्णिसीय** (सं+नि+षद्) सण्णिसीयइ
ज ३।१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सण्णिसीयित्ता (संनिषद्य) ज ३।१२
सण्णिहिय (सन्निहित) प २।४७।२
सण्ह (श्लक्ष्ण) प १।१८,१६;२।३०,३१,४१,४८, ४६,५६,६३,६४ ज १।८,२३,३१,३५,५१; ३।१२,८८,१६४;४।२४,२५,२६.४६,६७, ८८,११०,१७८,२१३;४।१०;५।५८
सण्हमच्छ (श्लक्ष्णमत्स्य) प १।५६
सण्हसण्हिय (श्लक्ष्णश्लक्ष्णिक) ज २।६
सत (सत्) सू १३।२
सत (शत) प २।४१ से ४३,४६,४८ से ५२,५८ से ६४;४।१८६,१८८;६।३४,३६,६७; १८।१६,२४,४६,५४,६०,६१,११६;२०।१३; २१।६७,६८;२३।६३,६८,६६,७३,७५ से ७७,८१,८३,८५,८७,६०,६२,६६,६७,११२, ११४,११६,१२७,१६४,१६६;३६।१७,३४, ४१ सू १।१८ से २०,२४;२।३;३।१;६।१; ६।३;१०।१२७,१६५;१२।२ से ६,१२,१३, ३०;१३।१ से ३;१४।७;१५।२ से ४,१७ से १६,२२,२५ से २६,३१,३२,३४ से ३७; १८।१,४ से ६,१७,२०;१६।१,४,५।३,१६।७, ८,१०,१५।१,२,४,१६।१८ से २०;२१।४; १६।२२।३२
सतक्कतु (शतक्रतु) प २।५०
सतक्खुत्तो (शतकृत्वस्) सू० १२।१२
सतत (सतत) प ७।१
सतपोरग (शतपोरक) प १।४१।१
सतभिसत (शतभिषग्) सू १०।६४
सतभिसय (शतभिषग्) सू २०।२ से ६,६,२१,२३, ३०,५८,७५,८१,६५,१२०,१३१ से १३५; १२।२५
सतरा (सप्तति) सू १६।११।१
सतवच्छ (शतवत्स) प १।७६
सतवत्त (शतपत्र) प १।४८।४४
सतवाइया (शतपादिका) प १।५०
सतसहस्स (शतसहस्र) प १।२०,४६,५०,७५,७६, ८१;२।२० से २७,२७।२,२६ से ३३,३६ से ३६;४०।२;२।४१ से ४३,४८ से ५३,५४, ५६।१,२।६३,६४;४।१७१,१७३,१७७,१७६; ६।४१;२१।६३,६६,७० सू १५।२;१८।२५; १६।५।१,३;१६।८।१,३,१६।२१।१,८, १६।२२।६
सतहा (सप्तधा) ज ५।७२,७३
सता (सदा) सू १६।११
सतीणा (दे०) प १।४५।१
सतेरा (शतेरा) ज ५।१२
सत्त (सप्तन्) प १।४६ ज १।२० चं ३।३ सू १।७ उ ३।१०१
सत्त (सत्त्व) प २।६४;३६।६२,७७ ज २।१३२; ३।३;७।२१२ उ १।३;३।५१
सत्तंग (सप्ताङ्ग) उ ३।५१
सत्तग (सप्तक) ज ७।१३१।२
सत्तट्ठि (सप्तषष्टि) सू १०।२
सत्तट्ठिधा (सप्तषष्टिधा) सू १०।१५२ से १६०, १६२,१६३;११।२ से ६;१२।७,८,१६ से २८
सत्तट्ठिहा (सप्तषष्टिधा) सू ११।२
सत्तणउत्ति (सप्तनवति) सू १८।१
सत्तत्तरि (सप्तसप्तति) ज ३।२२५
सत्ततीस (सप्तत्रिंशत्) ज ४।५५
सत्तत्तीस (सप्तत्रिंशत्) ज ४।१४८।२
सत्तधणु (सप्तधनुष्) उ ५।२।१
सत्तपएसिय (सप्तप्रदेशिक) प १०।१२
सत्तपदेस (सप्तप्रदेशिक) प १०।१४।५
सत्तभाग (सप्तभाग) प २३।६१,६४,६८,७३,७५ से ७७,८१,८३ से ८५,८६,६०,६२,६६, १०१,१११ से ११४,११७,१२१,१२२,१३०, १३४,१३५,१४०,१४२,१४३,१५२,१५३, १५५,१६०,१६४,१६७,१७१ से १७३
सत्तम (सप्तम) प ६।८०।२;१०।१४।३;३६।८५, ८६ ज ७।६७ सू १०।७७;१२।१६;१३।१० उ २।२२
सत्तमी (सप्तमी) ज ७।१२५
सत्तर (सप्तदशन्) प १०।१४।४ से ६ ज ७।२०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरस (सप्तदशन्) प ४।१६ ज ३।७६ सू ८।१
सत्तरसविह (सप्तदशविध) प १६।३८
सत्तरि (सप्तति) प २।५३ ज ५।४६ सू १६।१४
सत्तविह (सप्तविध) प १।१६,५३;१६।२६,३२; २२।२१ से २३,८३,८४,८६,८७,६०; २४।२ से ८,१० से १३;२५।४,५;२६।२ से ६,८ से १०;२७।२,३;३६।७
सत्तसट्ठ (सप्तषष्टि) ज ४।६८
सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सू १०।२२
सत्तसिक्खावइय (सप्तशिक्षाव्रतिक) उ ३।७६
सत्तहत्तरि (सप्तसप्तति) ज २।४।२
सत्तहा (सप्तधा) ज ७।६५,६८,६६,७१,७२,७४, ७५,७७.७८;५।७२.७३
सत्ताणउइ (सप्तनवति) प २।४६
सत्ताणउत (सप्तनवति) प २।४८
सत्ताणउय (सप्तनवति) ज ७।१८ सू १।२७
सत्तातीस (सप्तत्रिंशत्) प ४।२७६
सत्तालीस (सप्तचत्वारिंशत्) सू १०।१५१
सत्तावण्ण (सप्तपञ्चाशत्) ज ४।६२;७।२१; सू २।३ उ १।१३
सत्तावीस (सप्तविंशति) प ४।२७६ ज १।७ सू १।१०
सत्तावीसइविह (सप्तविंशतिविध) प १७।१३६
सत्तासीय (सप्ताशीति) ज ७।७७
सत्ति (शक्ति) प २।४१ ज ३।३५,१७८
सत्तिवण्ण (सप्तपर्ण) प १।३६।३ उ ३।६४
सत्तिवण्णवडेंसय (सप्तपर्णावतंसक) प २।५०,५२
सत्तिवण्णवण (सप्तपर्णवन) ज २।६;४।११६
सत्तु (शत्रु) ज ३।३,३५,८८,१०६,१७५,२२१
सत्तुस्सेह (सप्तोत्सेध) ज १।५ सू १।५
सत्थ (शस्त्र) ज २।६।१;३।२०,३३,५४,६३,७१, ७७,८४,१०६,११५,१२४,१२५,१३७.१४३, १६७,१८२ उ ३।३८,४०
सत्थ (शास्त्र) उ ३।२८
सत्थवाह (सार्थवाह) प १६।४१ ज २।२५;३।६, १०,७७,८६,१७८,१८६.१८८,१८६,२०६, २१०,२१६,२१६,२२१,२२२ उ १।६२; ३।११,६६,६८,१००,१०१,१०६ से ११२; ५।१०,१७,१६,३६
सत्थवाही (सार्थवाही) उ ३।६८,१०१ से १०५, १०७.१०८,११० से ११३
सत्थीमुहसंठित (स्वस्तिमुखसंस्थित) सू ४।३,४,६,७
सदा (सदा) प २।३०,३१,४१
सदेवीय (सदेवीक) प २०।१२;३४।१५,१६
सद्द (शब्द) प २।३०,३१,४१;१५।३६,३६,४०; १६।४६;२३।१५.१६,१६,२०,३०,३१; ३४।१।२,३४।२३ ज १।१३,२६,३१;२।७, १२.६५;३।६,१२,१४,१८,३० से ३२,४३, ५१,६०,६८,७७,७८,८२,८८,८६,६३,१३०, १३६ १४०,१४६,१५५,१५६,१७२,१७८,१८०, १८५,१८७,२०६,२१२,२१३,२१८,२२२; ४।३,२५,८२;५।२२,२६,३८,५७,५८,७२,७३, ७।१७८ सू २०।७ उ १।६० से ६२,८५ से ८७; ५।१६,१७,२०,२५,२७
सद्दपरिणाम (शब्दपरिणाम) प १३।२१,३१
सद्दपरियारग (शब्दपरिचारक) प ३४।१८,२३,२५
सद्दपरियारणा (शब्दपरिचारणा) प ३४।१७,२३
सद्दव्वया (सद्द्रव्यता) ज ३।३
√सद्दह (श्रत्+धा) सद्दहइ प १।१०१।४,१२ सद्दहाइ प १।१०१।३ सद्दहामि उ ३।१०३; ४।१४;५।२० सद्दहेज्जा प २०।१७,१८,३४
सद्दहणा (श्रद्धान) प १।१०१।१३
√सद्दाव (शब्दय्) सद्दाविस्संति ज २।१४६ सद्दावेइ ज २।६७,१०५,१०७,१११;३।७, १२,१५,१८,२१,२८,३१,३४,४१,४६,५२, ५८,६१,६६,६६,७४,७६,७७,८३,६१,६६, १७०,१७३,१७५,१८०,१८३,१८८,१६१, १६६,२०७,२१२;५।२२,२८,५४,६१,६८,६६, ७२,१२८,१४१,१४७,१५१,१५४,१६४,१६८ उ १।१७;३।६१;४।१६;५।१५ सद्दावेंति ३।१०५,१०७,११३;५।३,१४ सद्दावेमि उ १।७६

सद्दावइ (शब्दापातिन्) ज ४।४२,५७,५८,६०,७१, ७४

सद्दावति (शब्दापातिन्) प १६।३०

सद्दावित्ता (शब्दयित्वा) ज २।१४६

सद्दावेत्ता (शब्दयित्वा) ज २।९७ उ १।१७;३।७; ४।१६;५।१५

सद्दुण्णइय (शब्दोन्नतिक) ज २।१२;४।३,२५

सद्ध (श्राद्ध) ज २।३०

सद्धा (श्रद्धा) सू २०।९।३

सद्धिं (सार्धम्) प ३४।१९,२१ से २४ ज २।६५, ८८,९०;३।९,२२,३६,७७,७८,१८६,२०४, २२२,२२४;५।१,५,४१,४४,४६,४७, ५६, ६७,१३४;७।१३५,१८४ सू १०।२ उ १।२; ३।९८;४।१८;५।१९ उ १।२;३।९८;४।१८; ५।१९

सन्नद्ध (सन्नद्ध) ज ३।७७

सन्निकास (सन्निकाश) ज ३।२४

सन्निभ (सन्निभ) प २।३१

सन्निवाइय (सान्निपातिक) उ ३।३५

सन्निहिय (सन्निहित) प २।४६,४७

सपक्ख (स्वपक्ष) उ १।२२,१४०

सपक्खि (स्वपक्षिन्) उ १।४६

सपक्खिं (सपक्षम्) प २।५२ से ५९,६१; १६।३०

सपज्जवसिय (सपर्यवसित) प १८।१३,२५,५५, ५९,६३,६४,६७,६८,७६,७७,७९,८३,८६, ९०,१०५,१११,१२२,१२६

सपडिदिसि (सप्रतिदिश्) प २।५२ से ५९,६१; १६।३० उ १।२२,४६,१४०

सपरिनिव्वाण (सपरिनिर्वाण) ज ४।२७७

सपरियार (सपरिचार) ३४।१५,१६

सपरिवार (सपरिवार) प २।३२,३३,३५,४३, ४८ से ५१ ज १।४४,४५;२।९०;४।५०,५९, १०२,११२,१३५,१४७,१५५,२२१,२२२, २२३।१,२२४।१;५।१,१९,४१,५०,५८

सपुव्वावर (सपूर्वापर) ज ४।२१,२५९ सू ३।१; १०।१२७;१८।१,२१

सप्प (सर्प) ज ७।१३०,१८६।३

सप्पदेवया (सर्पदेवता) सू १०।८३

सप्पभ (सप्रभ) प २।३१,४१,४९,५९,६३,६६ ज १।८,२३;५।३२

सप्पसुयंधा (सर्पसुगन्धा) प १।४८।३ धवलवरुआ

सप्पह (सप्रभ) प २।३० ज १।२१

सप्पुरिस (सत्पुरुष) प २।४५,४५।२

सप्फाय (दे०) प १।४८।५०

सबर (शबर) प १।८९

सबरी (शबरी) ज ३।११।२

सब्भितर (साभ्यन्तर) ज ३।७,१८४

सभा (सभा) ज २।६५,१२०;४।१२०,१२१,१२९, १३१,१४०;५।५,७,१८,२२,२३,५०;७।१८४, १८५ सू १८।२२,२३ उ ३।६,३६,९०,१५६, १६९;४।५;५।१५,१६

सभाव (स्वभाव) ज २।१५

सभावणग (सभावनाक) ज २।७२

सम (सम) प १।४८।१० से १९;१३।२२।१,२; १७।१।१;२१।१०२;२२।६९,७०;२३।१६७; २६।६,९;३६।८२।१ ज २।७१;३।३५,१३८, १५१,१७०,२११;४।३.२५,५७.६७,१८०; १८३;५।१८,४३;७।३७,३८,१३५।१,४,१६८, १७८

समइक्कंत (समतिक्रान्त) प २।३१

समइच्छमाण (समतिक्रामत्) ज २।६५;३।१८६, २०४

समंतओ (समन्ततस्) ज २।६५

समंता (समन्तात्) प १७।१०६ से १११ ज १।७, ९,२३,३२,३५;२।१३१;४।३,६,१४,२०,२१, २५,३१,४५,४७,५७,६८,७६,८६,१०३,१०७, १३१,१४३,१४८,१४९,१५२,२११,२१३, २१५,२३४,२४० से २४२,२४५;५।५,७,३८, ५७;७।५८ सू ३।१ उ ५।८

समकम्म (समकर्मन्) प १७।३,४,१५,१६

समकिरिय (समक्रिय) प १७।१।१,१७।१०,११,२१
समक्खेत्त (समक्षेत्र) सू १०।४,५
समग (समक) प १६।५२ ज १।२३,२५,३२; ३।७८;७।११२।२ सू १०।१२६।१,२
समग्ग (समग्र) ज ३।२२१;४।३५,३७,४२,७१, ७७,६०,६४,१७४,१८३,२६२;६।१६ से २२; सू २०।७
समचउक्कोणसंठित (समचतुष्कोणसंस्थित) सू १।२५;४।२
समचउरंस (समचतुरस्र) प २।३०;१५।१६,३५; २१।२६,३१,३२,३६,६१,७३;२३।४६ ज १।५; २।१६,४७,८६; ७।१६७ उ १।३
समचउरंससंठाणसंठिय (समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित) सू १।५,२५
समचउरंससंठित (समचतुरस्रसंस्थित) सू ४।२; १०।७४
समचक्कवालसंठित (समचक्रवालसंस्थित) सू १।२५;४।२;१६।३,१३,१७,१६,२३
समजस (समयशस्) प २।६०
समजोगि (समयोगिन्) ज ५।५८
समज्जुतीय (समद्युतिक) प २।६०
समट्ठ (समर्थ) प ११।११ से २०; १५।४४; १७।१,३,५.८,१०,१२,१४,१५,२४,१२३ से १२८,१३० से १३२,१३४,१३५;२०।२,३,१४ से १७,१६ से २५,२७ से ३०,३३,३४,४० से ४८,५२,५३,५६,६०;२२।७६,८०,८२,६२, ६४,६५;३०।२५;३६।८०,८१,८३,८८,६२ ज २।१७,१८,२१ से २३,२५,२८,३० से ३३, ३८ से ४०,४२,४३;४।१०७;७।१८४ सू १८।२२
समण (श्रमण) प २।३,६,६,१२,१५,२० से २७,६० से ६३;३।३६;१५।४३,४५;३६।७६,८१ ज १।५,६;२।१६,१६ से २१,२३,२५,२६, २८,३० से ३३,३६.३६ से ४३,४८,४६,५१, ५४,५६,६८,७२,७४,८२,१२१,१२६,१३०, १३८,१४०,१४६,१५४,१५६,१६०,१६३; ५।५८;७।१०१,१०२,१२६,२१४ च १० सू १।५;८।१;२०।७ उ १।२,४ से ८,१६, १७,१६ से २६,१४२,१४३; २।१ से ३.१०, १२,१४,१५,२१;३।१ से ३,७,८,१२,१६,२०, २२,२३,२६,३८,४०,४४,८७,८८,६१,६३, १५३,१५४,१६६ १६७,१७०;४।१ से ३,२७, ५।१ से ३,३७,४४
समणी (श्रमणी) ज ७।२१४ उ ३।१०२,११५, ११७,११८;४।२२
समणुगम्ममाण (समनुगम्यमान) ज २।६४
समणोवासग (श्रमणोपासक) ज २।७६ उ ३।८३
समणोवासय (श्रमणोपासक) उ १।२०;५।३४
समणोवासिया (श्रमणोपासिका) ज २।७७ उ १।२०; ३।१०५,१०६,१४४
समण्णागय (समन्वागत) ज ५।५ उ १।६३
समतल (समतल) ज ३।६५,१५६
समतिक्कंत (समतिक्रान्त) प २।६७
समत्त (समस्त) प २।६४।१५ ज ३।१७५ उ ३।६१
समत्त (समाप्त) ज ३।१६७;४।२००;५।५८; ७।१०१,१०२ सू १३।१०,१३,१४ से १६ उ १।१४८;३।६१
समत्थ (समर्थ) ज ३।१०६;५।५ सू २०।७
समपज्जवसिय (समपर्यवसित) सू १२।१० से १२
√समप्प (सं+अर्पय्) समप्पेइ ज ३।१३८;४।३५, ३७,४२,७१,७७,६०,१७४,१८३,१८६,२६२; ६।२१ से २४ समप्पेंति ज ३।१६७,१६१; ६।१६,२५,२६;४।६४ सू १०।५ समप्पेति सू १०।५
समबल (समबल) प २।६०,६३
समभिरूढ (समभिरूढ) प १६।४६ ज ३।१०६
समभिलोएमाण (समभिलोकमान) प १७।१०६ से १११
√समभिलोय (सं+अभि+लोक्)
समभिलोएज्जा प १७।१०७,१०६,१११
समय (समय) प १।१३,१०३,१०६,१०७,१०६,

११०,११३,११४,११६,११९,१२०,१२२, १२३;२।६४।५;६।१।१,६।१ से १८,२० से ४५,६० से ६४,६७,६८; १०।३०।१,२, १०।७०,७१; १२।२४,३३;१५।५८।१;१६।३४, ३७; १८।५६,६०,६२,६३,६७,८०,८१,८४, ८७,८९,९५,९८,१०२.१०४; २०।१।१,२०।९ से १३; २२।५४,५६,५८,५९,७६;२३।६३, १९३;३०।२५,२६;३६।८५,८७,९२ ज १।२, ४,५,१४;२।४,७१,८८,८९ ९१,१३१,१३४, १३८,१४१;३।१०३;५।१,६,८,९ से १३,१८, ४८,५० से ५२; ७।५७,६०,११२।१ चं ६।९, १० सू १।१,४,५; ६।१;८।१; ९।२;१०।१५२ से १६१; ११।२ से ६,१९ से २८,३०; १३।१,२; १७।१; १९।२५; २०।३,५,७ उ १।१ से ३,९,१६,२८,५१,६५,७६,१४४; २।४,१७;३।४ से ६,९,१२,२१,२४,२५,२७, ४८,५०,५५ से ५७,६४,६८,७१,७४,७९,८९, ९०,९५,९८,९९,१०६,१३१,१३२,१५५ से १५७,१५९,१६८,१६९;४।४ से ६,१०;५।४, १४,२१,२४,२६,३६,४०,४१

समय (समक) ज १।१४

समयक्खेत्त (समयक्षेत्र) सू १९।२०,२१

समयखेत्त (समयक्षेत्र) प २१।८९

समर (समर) ज ३।३,३५,१०३

समवण्ण (समवर्ण) प १७।५,६,१७

समवेदण (समवेदन) प १७।१।१,१७।८,९,१९,२०

समसरीर (समशरीर) प १७।१,२,२८,२९

समसोक्ख (समसौख्य) २।६०,६३

समा (समा) ज २।७ से १५,२१ से ४५,५० से ५९,८८,१२१ से १३३,१३८ से १४०,१४७ से १५०,१५२ से १६४;३।१३५।१;४।१८०, १८३;७।३७ सू ९।४;१८।२,३

समाउय (समायुष्क) प १७।१।१,१७।१२,१३

समागम (समागम) ज २।४,६

समाण (सत्) प १५।५१,५२;१७।११९; २८।१०५;३४।१९,२१ से २४;३६।६२,७७ ज २।६० से ६२,७१,१४२ से १४५;३।३,८, १३,१४,१९,२२,२५,२९,३०,३६,३८,४२, ४३,४६,५०,५१,५३,५९,६०,६२,६७,६८, ७०,७५,७७,८०,८२,८४,८९,९७,१००, १११,११८,१२५,१२६,१३२,१३६,१४२, १४८,१४९,१५६,१६१,१६५,१६९,१७८, १८१,१८९,१९२,२०२,२०८,२१२ से २१४, २१७,२१९;४।२३,२५,३५,३७,३८,४२,६५, ७१,७३,७७,९०,९१,९४,१७४,१८३,१८९, १९५,२६२;५।१५,२२,२४,२६,२९,४३.७० सू ९।१ उ १।१७,२३ से २६,३७,४०,४५, ५२,५५ से ५८,६०,६२,७४,७७,८० से ८३, ८५,९० से ९३,९९,१०७,१०८,११०,११८, १२७; ३।१३,१५,२९,५०,५५,७८,८२,८४, १०६,१०८,११२,१२१,१४७,१६०,१६२; ४।११,२०;५।१५,१७,३८

समाण (समान) ज ३।११७ सू २०।७ उ ३।१२८

√समाण (सं+आप्) समाणेइ ज ७।१०४ सू १०।१३० समाणेंति सू १०।१२६

समाणीत (समानीत) उ ३।४८,५०

समाणुभाव (समानुभाव) प २।६०,६३ ज २।१३१; ४।५६

√समादह (सं+आ+धा) समादहे उ ३।५१

समादीय (समादिक) सू १२।१० से १२

समायरित्तए (समाचरितुम्) उ ३।१०२

समारंभ (समारम्भ) उ १।२७,१४०

समारूढ (समारूढ) ज ३।१२१

√समालभ (सं+आ+लभ्) समालभइ उ ३।११४

समावण्णग (समापन्नक) ज ७।५५,५८

समास (समास) प ३।३८,३९ ज ७।१०१,१०२ सू १९।२२।१

समासओ (समासतस्) प १।४८।५४;१।४८ ज २।६९

समासतो (समासतस्) प १।४,२०,२३,२६,२९,

४६ से ५१,५३,६०,६६,७५,७६,८१,८८, १३१ से १३३,१३५,१३७,१३८
√**समासाद** (सं+आ+सादय्) समासादेति सू १५।८
समासादेत्ता (समासाद्य) सू १५।८ से १३
समासादेमाण (समासादयत्) सू २।३
√**समासास** (सं+आ+श्वासय्) समासासेइ उ १।४१
समासासेत्ता (समाश्वास्य) उ १।४१
समाहय (समाहत) ज ५।५
समाहार (समाहार) प १७।१,२,१४,२४,२५,२८, २९
समाहारा (समाहारा) ज ५।६।१;७।१२०।२ सू १०।८८।२
समाहि (समाधि) उ ३।१५०,१६१;५।२८,३६,४१
समाहिय (समाहित) ज ५।५८
समिइ(समिति) प १।१०१।१० ज २।४,६;३।२२१ उ १।९३
समिड्ढिय (समर्द्धिक) प २।६०,६३
समित (समित) सू ९।१
समिद्ध (समृद्ध) ज १।२,२६;२।१२;३।१,८१, १६७।१४,१७५ चं ६ सू १।१ उ १।१,९,२८; ३।१५७;५।६,२४
समिरीय (समरीचिक) प २।३०,३१,४१,४९,५९, ६३,६६ ज १।८,२३,३१
समिहा (समिध्) ज ५।१६
समिहाकट्ठ (समिध्काष्ठ) उ ३।५१
समीकर (समी+कृ) समीकरेहिंति ज २।१३१
समीकरण (समीकरण) ज ३।८८
समीकरणया (समीकरण) प ३६।८२।१
समुइय (समुदित) ज २।१४५,१४६
समुक्खित्त (समुत्क्षिप्त) उ १।१३८
समुग्गपक्खि (समुद्गपक्षिन्) प १।७७,८०
समुग्गय (समुद्गत) प ३६।८१
समुग्गयभूय (समुद्गतभूत) ज ३।१२१
समुग्घात (समुद्घात) प २।२१
समुग्घाय (समुद्घात) प १।१।७;२।१,२,४,५,७,८, १०,११,१३,१४,१६ से २०,२२ से ३१,४६; ३६।१,४ से ७,४७,५३ से ५८,८२,८३;८३।१ २;३६।८६,८८
समुज्जाय (समुद्वात) ज २।८८,८९;३।२२५
√**समुट्ठ** (सं+उत्+ष्ठा) समुट्ठेति प १।७४
समुत्त (समुक्त) ज ३।९,१७,२१,३४,१७७,२२२
समुत्तिण्ण (समुत्तीर्ण) ज ३।८१
समुदय (समुदय) ज २।४,६;३।३,१२,३१,७८, १८०,२०९;५।२२,२६,३८,६७ उ १।९२; ५।१७
समुदाण (समुदान) उ ३।१००,१३३
समुदीरेमाण (समुदीरयत्) प ३४।२३
समुद्द (समुद्र) प १।८४;२।१,४,७,१३,१६ से १९, २८,२९;१५।५५;२१।८७,९०,९१;३३।१० से १२,१५ से १७;३६।८१ ज १।७,४६,४८; २।९०,९७,९८;३।१,३६;४।५२;५।४४,५५; ६।१,२,४;७।४,६३,८७ सू १।१४,१६,१७, १९ से २२,२४,२७;२।३;३।१;४।४,७;६।१; ८।१;१०।१३२;१९।१ से ३,५,९ से १२; १९।२२।२६;१९।२८,२९ से ३२,३५,३६,३८ उ १।१३८
समुद्दय (समुद्रक) प १।७५,८०,८१
समुद्दलिक्खा (समुद्रलिक्षा) प १।४९
समुद्दवायस (समुद्रवायस) प १।७८
समुद्दविजय (समुद्रविजय) उ ५।१०,१७,१९
√**समुप्पज्ज** (सं+उत्+पद्) समुप्पज्जइ प २८।७५,१०५;३४।१९,२१ से २४ ज २।२७; २९,५६;४।१७७,१८१ समुप्पज्जंति ज ५।१ उ १।१११ समुप्पज्जति प २८।४,२५,२७,२९, ३८,४७,५०,७३,७४,९७;३४।२३ समुप्पज्जित्था ज २।५९,६३,१२४,१२५; ३।२,४,२६,३९,४७,५६,१२२,१३३,१४५, १८८;५।२२ समुप्पज्जिस्सइ ज २।१५९ समुप्पज्जिस्संति ज २।१५,२१,५३
समुप्पण्ण (समुत्पन्न) ज ३।१२३,२१९

समुप्पन्न (समुत्पन्न) ज २।७१,८५; ३।५
उ १।१११,११२
समुप्पन्नकोउहल्ल (समुत्पन्नकौतूहल) ज १।६
उ १।१११,११२
समुप्पन्नसंसय (समुत्पन्नसंशय) ज १।६
समुप्पन्नसड्ढ (समुत्पन्नश्रद्ध) ज १।६
समुब्भव (समुद्भव) ज ५।५,४६
समुल्लालिय (समुल्लालित) उ १।१३८
समुल्लावग (समुल्लापक) उ ३।६८
समुल्लावय (समुल्लापक) उ ३।६८
समुवगूढ (समुपगूढ) ज ४।६१,२७३
समुस्सासणिस्सास (समुच्छ्वासनिःश्वास) प १७।१,
२,२८,२९
समुस्सासणीसास (समुच्छ्वासनिःश्वास) प १७।२
समूसिय (समुच्छ्रित) ज ३।१७८; ५।४३
समोगाढ (समवगाढ) प २।६४।१० सू १९।२६
समोच्छण्ण (समवच्छन्न) ज ३।१२१
समोप्पणा (समर्पणा) ज ३।११७
समोयर (सं+अव+तृ) समोयरंति ज ७।९७
समोवण्णग (समोपपन्नक) प १७।१३
समोत्थढ (समवस्तृत) ज १।४ चं ६ सू १।४
उ ३।५,१२,२१,२४,२८,२९,८९,१५९;४।४;
५।३७
√समोसर (सं+अव+सृ) समोसरइ ज ५।५०
समोसरंति ज ५।४९
समोसरण (समवसरण) ज ५।५३ उ ३।२१; ४।१०
समोसरिय (समवसृत) ज ५।४८ उ १।१६; २।९३;
३।१५५,१६८; ५।१४
समोहणित्ता (समवहत्य) प ३६।५९,६६,७०,७३,
७४ ज ३।११५
√समोहण्ण (सं+अव+हन्) समोहण्णंति प
३६।८३ ज ३।११५,१९२,२०८; ५।५,७
समोहण्णति प ३६।८२
समोहत (समवहत) प ३।१७४
समोहय (समवहत) प ३।१७४; १५।४३; २१।८४

से ९३; ३६।३५ से ४१,४८ से ५२,५९,६५,
६६,७०,७३,७४,७९
सम्म (सम्यक्) सू १०।१२९।४
सम्मं (सम्यक्) ज २।६७; ३।१८५,१८९,२०९;
७।११२।३,४
सम्मट्ठरत्थंतरावणवीहिय
(संमृष्टरथ्यान्तरापणवीथिक) ज ५।५७
सम्मत (सम्मत) प ११।३३।१
सम्मतसच्च (सम्मतसत्य) प ११।३३
सम्मत्त (सम्यक्त्व) प १।१।५,१।१०१।६,७,१३;
३।१।१,१८।१।१; २०।३९; २३।१७४; ३४।१।२
ज २।१३३ उ ३।४७,८३
सम्मत्तवेदणिज्ज (सम्यक्त्ववेदनीय) प २३।१८१
सम्मत्तवेयणिज्ज (सम्यक्त्ववेदनीय) प २३।१७,३३,
६५,१३७
सम्मत्ताभिगमि (सम्यक्त्वाभिगमिन्) प ३४।१४
सम्मद्दंसणपरिणाम (सम्यक्दर्शनपरिणाम)
प १३।११
सम्मद्दिट्ठि (सम्यक्दृष्टि) प ३।१००; ६।९७,९८;
१३।१४,१७; १७।११,२३,२५; १८।७६; १९।१
से ५; २१।७२; २३।२००,२०१; २८।१२५,१३५
सम्मय (सम्मत) उ ३।१२८
सम्मा (सम्यक्) प १३।११
सम्माण (सं+मानय्) सम्माणेइ ज ३।६,२७,४०,
४८,५७,६५,७३,९१,१२७,१३३,१३९,१४६,
१५२,१८६,२१९ सम्माणेज्ज ज २।६७
सम्माणणिज्ज (सम्माननीय) सू १८।२३
सम्माणवत्तिय (सम्मानप्रत्यय) ज ५।२७
सम्माणियदोहद (समानीतदोहद) उ १।५०,७५
सम्माणेत्ता (सम्मान्य) ज ३।६ उ ३।५०
सम्मामिच्छत्त (सम्यक्मिथ्यात्व) प २३।१७४
सम्मामिच्छत्तवेदणिज्ज (सम्यक्मिथ्यात्ववेदनीय)
प २३।६७,१८१
सम्मामिच्छत्तवेयणिज्ज (सम्यक्मिथ्यात्ववेदनीय)
प २३।१७,३३,१३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मामिच्छत्ताभिगमि (सम्यक्मिथ्यात्वाभिगमिन्) प ३४।१४

सम्मामिच्छद्दिट्ठि (सम्यक्मिथ्यादृष्टि) प ६।९७; १३।१४,१७;१७।११,२३,२५;१८।७८;१९।१ से ५;२१।७२;२८।१२७,१३८

सम्मामिच्छादंसणपरिणाम (सम्यक्मिथ्यादर्शनपरिणाम) प १३।११

सम्मामिच्छादिट्ठि (सम्यक्मिथ्यादृष्टि) प ३।१००

√**सम्मुच्छ** (सं+मुर्च्छ्) सम्मुच्छंति प १।८४ सम्मुच्छति प १।८४

सम्मुच्छिम (संमूर्च्छिम्) प १।४९ से ५१,६०,६६, ७५,७६,८१ से ८४;३।१८३;४।१०७ से १०९,११६ से ११८,१२५ से १२७,१३४ से १३६,१४३ से १४५,१५२ से १५४,१६१; ६।२१,२३,६५,७१,७२,७४,८४,९४,९७,१००, १०२,१०८;९।६,१६,२२;१६।२८;१७।४२, ४६,६३ से ६५,६७,८९; २१।९,१०,१२,१३, १५ से १९,३०,३३,३५,३७,४३ से ४७; २१।४७।२,२१।४८,५३,५४,७२

सम्मुति (सन्मति) ज २।५९,६०

सय (शत) प २।४१ से ४३,४६,५५,५८,५९।२, ६२।१;२।६३,२।६४।६;१२।३६,३७;१८।३१, ३६,६०,११३;२१।६५;२२।४५;२३।७४,८६, ८८,८९,९५,९८,९९,१०१ से १०४,१११, ११३,११७,११८,१३०,१३१,१६४,१८३,१८७ ज १।७,९,१०,१८,२०,२३,२६,२७,३८,४०, ४८; २।४।३.१६,४८,५२,६४,७५,७७.७८, ८०,८६,१२८,१४८,१५७,१६१;३।१,१८.३१, ३५,९३,९५,९९ से १०१.१०४,१०५,१०९, १२६,१५९.१७८,१८०,१९३,२०६,२१०, २१९,२२१.२२२;४।९,१०,१२.१३,२३,२५, ३२,४९,५५,५७,६२,६५,६७,७२,७३,७५, ७६,८१,८६,९०,९१,९३,९५,९८,१०३,११०, १२०,१४१,१४२।१,२,१४३,१४७,१५४,१६३ से १६५,१६७,१६९,१७८,१८३,२००,२०५ से २०७,२१३ से २१६,२२१,२२६,२३४,२४०, २४१,२४५,२४८;५।३,४,२८,३३,५२,५३,५८; ६।७,६।११,१४,१५;७।१।१,७।२ से ४,१०, १२,१४ से २५,२७,३०,३२,३४,५४,६२ से ६४,६७ से ८१,८४;८६,८७,८८,९१ से ९६,९८ से १०२,११०,१२७,१३।१,१७१ से १७४, १९०,२०१ से २०७ सू १।८।२.१।१० से १२, १४,१९ से २४,२६ से ३१;२।१,३;४।४,५, ७,८,१०;६।१;८।१;१०।१३८ से १५१, १६२ से १६४,१६६ से १६९;१२।२,५; १३।४;१४।३;१८।१,१३,३०;१९।५।२, १९।८।१,२,१९।२१।५,१९।२२।६,९ उ १।२; ३।५५,९२;५।२८,४१

सय (स्वक) ज ३।७७,८४,१०२,१५३,१६२, १७८,१८३,१८६,२२४;५।१,६,८,१०,१३, २२.२६,४३,५९ उ १।३३,४२,४४,१०८, १२१,१२२,१२९; ३।११,४३,५३,१४८;४।१५

सय (शी,स्वप्) सयंति ज १।१३,३०,३३; २।७; ४।२,८७,२१५,२४७;६।८

सयं (स्वयं) प १।१०१।३; २३।१३ से २३ सू १९।११।३

सयंजय (शतञ्जय) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२

सयंपभ (स्वयंप्रभ) ज ४।२६०।१ सू ५।१;२०।८, २०।८।६

सयंबुद्ध (स्वयंबुद्ध) प १।१०५,१०६,११८,११९

सयंबुद्धसिद्ध (स्वयंबुद्धसिद्ध) प १।१२

सयंभुरमण (स्वयंभूरमण) प २१।८७,९०,९१

सयंभूरमण (स्वयम्भूरमण) प १५।५५,५५।२ सू १९।३८

सयंसंबुद्ध (स्वयंसंबुद्ध) ज ५।२१

सयक्कउ (शतक्रतु) ज ५।५८

सयग्घी (दे०) प २।३०,३१,४१

सयज्जल (शतज्वल) ज ४।२१०।१;

सयण (शयन) प ११।२५ ज ३।१०३ सू २०।४,७ उ ३।५०,११०,१११;४।१६,१८

सयण (स्वजन) ज २।६९

सयणिज्ज (शयनीय) ज ४।१३,३३,७६,९३,१३५,

१३६,१४०,१४७,१५३;५।१७ सू २०।७ उ १।४६;५।१३,२५,३१

सयधणु (शतधनुष्) उ ५।२।१

सयपत्त (शतपत्र) प १।४६ ज ४।३,२५

सयपत्तहत्थगय (हस्तगतशतपत्र) ज ३।१०

सयपाग (शतपाक) ज ५।१४

सयपुप्फा (शतपुष्पा) प १।४४।३ सौंफ

सयभिसया (शतभिषग्) ज ७।११३।१,१२८; १३४।२;१३५।२,१३६,१३६,१४२,१४६,१५७

सयमेव (स्वयमेव) प १।१०१।३ ज २।६५; ३।१०२,१६२,२२४ सू १३।५,६,१२,१३,१७ उ १।६५,६६,७१,८८,६४;३।८१,८२,११३; ४।२०

सयरिसह (शतवृषभ) सू १०।८४।३

सयरी (शतावरी) प १।३६।२

सयल (सकल) ज ३।३१ सू १६।२१।६

सयवत्त (शतपत्र) प २।३१,४८ ज ४।४६

सयवसह (शतवृषभ) ज ७।१२२।३

सयसहस्स (शतसहस्र) प १।२३,२६,२६,४८,४६, ५१,६०,६६,८४; २।२२,२५,२।२७।४,२।३०, ३३ से ३५,४०।३,४,२।४६,४६;१५।४१; ३६।८१ ज १।७; २।४,१८,६४,८७,८८; ३।१७८,१८५,२०६,२२१,२२५;४।२५६,२६२; ५।१८,२४,२५,२८,४४,४८,४६।२;६।८।१, २० से २६; ७।१।१,७।१४ से १६,७३,७४, ७८,६३,६४,६८ से १००,१८७,२०७ सू १।१४,२१,२७;२।३;३।१;६।१;८।१; १०।१६५,१७३;१२।६;१८।२७;१६।१।१, १६।४,८,११,१४,१५।४,१८,२०; २१।१,५ उ ३।१६

सयसाहस्सिय (शतसाहस्रिक) सू १६।२६

सयसाहस्सी (शतसाहस्री) ज ४।२१;६।८; ७।५८

सया (सदा) ज ७।१२६,१७० सू १०।७५,७७, १३६,१७३; १६।१,११,२१;२०।२

सयावरण (सदावरण) ज ३।१०६ मसहरी

सर (शर) प १।४१।१ ज ३।२४।१,२;३।२५,२६, ३१,३५,३८,३६,४६,४७,१३१।१,२,१३२, १३३,१३५,१७८ उ १।१३८

सर (सरस्) प २।४,१३,१६ से १६,२८; ११।७७

सर (स्वर) ज २।१२,१३३; ३।३;४।३,२५;५।२८; ७।१७८

सरंड (दे०) प १।७६

सरग (शरक) ज ५।१६ उ ३।५६

सरड (सरट) प १।७६

सरण (शरण) ज ३।१२५,१२६;५।२१

सरणदय (शरणदय) ज ५।२१

सरणागय (शरणागत) ज ३।८१ उ १।१२८

सरद (शरद्) सू १२।१४

सरपंतिया (सर:पंक्तिका) प २।४,१३,१६ से १६, २८;११।७७

सरभ (शरभ) प १।६४ ज १।३७; २।३५,१०१; ४।२७; ५।२८

सरय (शरक) उ ३।५१

सरय (शरद्) उ ५।२५

सरल (सरल) प १।४३।१,१।४७।१

सरलवण (सरलवन) ज २।६

सरस (सरस) प २।३०,३१,४१ ज २।६५,६६,६६, १००;३।७,६,१२,८२,८८,१८४,२११,२२२; ५।१४,१५,५५,५८

सरसर (सर:सरस्) ज ३।१०२,१५६,१६२

सरसरपंतिया (सर:सर:पंक्तिका) प २।४,१३,१६ से १६,२८; ११।७७

सराग (सराग) प १।१००,१०१,१११ से ११४; १७।३३

सरागसंजय (सरागसंयत) प १७।२५

सरासण (शरासन) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।३८

सरि (सदृक्) ज ३।१६७।१३ उ ३।१७१;४।२८

सरिच्छ (सदृक्ष) ज ३।१८,५२,६१,६६,१३१, १३६,१३७,१४१,१६४,१८०

सरिस (सदृश) प १।४८।३८; २।३१ से ३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज १।४१,४६;२।१५,१६;३।३,३५,७६,११६, १३५,१८८;४।५२,१०६,१६३,१७२,१७४, १७७,२००,२०४,२१०,२१२,२२६;७।१७८ सू १०।१६२;१६।३१,३५,३८ उ १।१४८; २।२२
सरिसय (सदृशक) ज १।४६
सरिसव (सर्षप) प १।४४।२,४५।२,१।४७।२ ज २।३७ उ ३।३७,३८
सरिसवय (सदृशवयस्) उ ३।३८
सरिसवय (सर्षपक) उ ३।३८
सरिसवसमुग्ग (सर्षपसमुद्ग) ज ५।५५
सरिसवा (सदृश्वयस्) उ ३।३८,४०,४२
सरीणामय (सदृग्नामक) ज १।४६
सरीर (शरीर) प १।११५,१।४७।२,३,१।४८।५३, ५७;११।३०;३०।२;१२।१;१४।५;१५।१०,२३; १६।२३;१७।११;२१।११;२१।३८,४० से ४२,४८,५३,५६,६१,६३ से ६६,६८ से ७१, ७४,८४ से ९३;२८।१।२,९८ से १०१; १०६।१;३६।५६,६६,७०,७४ ज २।४५,४७, ६०;३।८२,८५,१०९,१३८ सू २०।७ उ १।१६,३५,४२;३।८,२६,३५,१२७,१४१; ४।१२,१८
सरीरंगोवंगणाम (शरीराङ्गोपाङ्गनामन्) प २३।३८,४२,६२
सरीरग (शरीरक) ज २।९९,१००,१०३,१०४, १०७,१०८
सरीरणाम (शरीरनामन्) प २३।३८,४१,८९ से ९३,१४६,१७३,१७४
सरीरत्थ (शरीरस्थ) प ३६।८५
सरीरपज्जत्ति (शरीरपर्याप्ति) प २८।१४२,१४३ उ ३।१५,८४
सरीरबंधणणाम (शरीरबन्धननामन्) प २३।३८, ४३,६२
सरीरबाओसिया (शरीरबाकुशिका) उ ४।२१,२२, २८
सरीरय (शरीरक) प १२।२ से ५;२१।१,२१।६२
सरीरसंघातणाम (शरीरसंघातनामन्) प २३।४४
सरीरसंघायणाम (शरीरसंघातनामन्) प २३।३८, ४४,६३
सरूव (स्वरूप) ज ५।४३
सललिय (सललित) चं १।१
सलाइया (शलाकिका) ज ५।५
सलागा (शलाका) ज ३।११७;५।५
सलिंगसिद्ध (स्वलिङ्गसिद्ध) प १।१२
सलिंगि (स्वलिङ्गिन्) प २०।६१
सलिल (सलिल) ज ३।७९,१०९;४।३,२५,६४ सू ३।१
सलिलबिल (सलिलबिल) ज २।१३१
सलिला (सलिला) ज ३।७९,११६;४।३५,३७,४२, ७१,७७,९०,९४,१७४,१८३,२६२;६।६।११, ६।१९ से २६
सलिलावई (सलिलावती) ज ४।२१२,४।२१२।१
सलील (सलील) ज २।१५
सलेस (सलेश्य) प १८।६८;२८।१२२,१२३
सलेस्स (सलेश्य) प ३।९९,१७।२८,५६
सल्ल (दे०) प १।७६
सल्लई (सल्लकी) प १।३५।१,१।३७।१
सल्लगत्तण (शल्यकर्तन) ज ५।५८
सवंतीकरण (सवर्णीकरण) उ १।४६
सवण (श्रवण) ज २।१५;३।२२५;७।११३।१, १२८,१३०,१३६,१३८,१४१,१४९,१५६ सू १०।१ से ६,८,२०,२३,२८,५६,६३,७५, ७९,९३,१२०,१२२,१३० से १३५;१५।१९
सवणता (श्रवण) प २०।२८
सवणया (श्रवण) प २०।१७,१८,२२,२५,२९, ३४,४५ उ १।१७,३९,४०,४२,४३
सवहसावित (शपथशापित) उ १।५७,८२
सवालुइल्ल (सवालुक) ज ३।१०९
सविणय (सविनय) ज ३।८१
सवितु (सवितृ) ज ७।१३०,१८६
सवियादेवया (सवितृदेवता) सू १०।८३
सविलेवण (सविलेपन) प ३६।८१

सविसय (स्वविषय) प ११।६७,६८;२८।१७,१८, ६३,६४ ज ७।४६
सविसेस (सविशेष) ज २।६;४।१५६;७।७,६६, ६० सू १८।६ से १३
सवेद (सवेद) प २८।१४०
सवेदग (सवेदक) प ३।६७
सवेदय (सवेदक) प १८।५६
सवेयग (सवेदक) प ३।६७
सव्व (सर्व) प १।१।२ ज १।७ चं १।२ सू १।१० उ १।७०
सव्वओ (सर्वतस्) प १७।१०६ से १११;२८।१।१, २८।२१,६७ ज १।७,६,२३,३५;४।३,२१०, २१४,२४१,२४२ सू ३।१ उ ५।८
सव्वओभद्द (सर्वतोभद्र) ज ३।३२;५।४६।३
सव्वंग (सर्वाङ्ग) ज २।१५ उ १।२३,६१
सव्वकज्जवड्ढावय (सर्वकार्यवर्धापक) उ ३।११
सव्वकामसमिद्ध (सर्वकामसमृद्ध) ज ७।११७।१ सू १०।८६।१
सव्वकालतित्त (सर्वकालतृप्त) प २।६४।२०
सव्वक्खरसंनिवाइ (सर्वाक्षरसन्निपातिन्) ज २।७८
सव्वक्खरसंनिवाति (सर्वाक्षरसन्निपातिन्) ज १।५
सव्वखुड्डाय (सर्वक्षुद्रक) सू ११४
सव्वग्ग (सर्वाग्र) ज ४।६,१४,१४६,२५६;७।१६८, १६६,२०१,२०३,२०५,२०७
सव्वज्जुणसुवण्णमती (सर्वार्जुनस्वर्णमयी) प २।६४
सव्वट्ठ (सर्वार्थ) ज ७।१२२ सू १०।८४।३
सव्वट्ठगसिद्ध (सर्वार्थकसिद्ध) प ६।११०
सव्वट्ठसिद्ध (सर्वार्थसिद्ध) प १।१३८;२।६३; ६।५६,६२;२०।६१;२१।७७ उ ५।४१
सव्वट्ठसिद्धग (सर्वार्थसिद्धक) प ४।२६७ से २६६;६।४३;७।३०;१५।६०,६३,१०१,१०६, १०८,११४,११५,११७,१२०,१२१,१२३, १२५,१२८,१२६,१३२,१३६,१४३;२०।४६; २८।६७
सव्वण्णु (सर्वज्ञ) ज २।७१;५।२१
सव्वतो (सर्वतस्) प २।६४।१३;२८।२१,३३,६७; ज ४।१०७;५।५,७ सू १६।२,१२,२६,२८
सव्वत्थ (सर्वत्र) प २।३२;२१।३५,४२;२२।२५; ३६।४७ ज ३।१०६;४।५७,१८३;७।३७,१६७ सू १८।३७ उ २।२२
सव्वदरिसि (सर्वदर्शिन्) ज २।७१;५।२१
सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहा (सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा) प २।६४
सव्वप्पभा (सर्वप्रभा) ज ५।११।१
सव्वबल (सर्वबल) ज ३।१२,७८,१८०,२०६; ५।२२,२६
सव्वब्भंतराय (सर्वाभ्यंतरक) सू १।१४
सव्वभाव (सर्वभाव) ज २।७१
सव्वरयण (सर्वरत्न) ज ३।१६७,१७८
सव्वसिग्घगइ (सर्वशीघ्रगति) ज ७।१८०
सव्वसिग्घगइतराय (सर्वशीघ्रगतितरक) ज ७।१८०
सव्वसिद्धा (सर्वसिद्धा) ज ७।१२१ सू १०।६१
सव्वहेट्ठिम (सर्वाधस्तन) सू ६।३
सव्वाउय (सर्वायुष्क) ज २।८८;३।२२५
सव्वामयणासिणी (सर्वामयनाशिनी) ज ३।१३८
सव्विंदिय (सर्वेन्द्रिय) ज २।१८
सव्वोउय (सर्वर्तुक) ज २।१२;३।३०,३५,२२१;५।५ उ ५।१६
सव्वोहि (सर्वावधि) प ३३।३१ से ३३
ससंभम (ससम्भ्रम) ज ३।६;५।२१
ससक्कर (सशर्कर) ज ३।१०६
ससग (शशक) प १।६६ ज २।१३६
ससबिंदु (शशबिन्दु) प १।४०।५
ससय (शशक) प ११।२१
ससरीरि (सशरीरिन्) प २८।१४१
ससरुहिर (शशरुधिर) प १७।१२६
ससि (शशिन्) प २।३१ ज २।१५;३।६,१७,२१, २८,३४,४१,४६,६३,१०६,१३६,१५७,१६३, १६७।१२,१७७,२२२;७।११२।२;७।१६८।१ सू १०।७७,१२६।२;१६।८।२,१६।२२।३,२३, २६,२६,३१;२०।४

ससिया (शशिका) प ११।२३

सस्स (शस्य) गु १०।१२६।४

सस्सिरीय (सश्रीक) प २।३०,३१,४१,४८,४९, ५९,६३,६४ ज १।३१; २।६४,३।९,३५,११७, १८५,२०९,२२२;४।२७,४९;५।२८,५८ उ १।४१,४४

सह (सह) प २३।१५६,१६०,१६४,१७५ ज २।५०,१६४; ४।१०९,२०५;७।१३५।४ उ ३।३८

√**सह** (सह्) महइ ज २।६७

सहगत (सहगत) प २२।१७

सहगय (सहगत) प २२।८०

सहजायय (सहजातक) उ ३।३८

सहपंसुकीलियय (सहपांशुक्रीडितक) उ ३।३८

सहरिस (सहर्ष) ज ३।८१

सहवड्ढियय (सहवर्धितक) उ ३।३८

सहसम्मुइ (स्वसंस्मृति) प १।१०१।२

सहस्स (सहस्र) प २।२१ से २७,३० से ३६,४०।५, ४१ से ४३,४६,४९ से ५२,५५ से ५७,५९, ५९।१.३;२।६३,६४;४।१,३,४,६,२५,२७,२८, ३०,३१,३३,३४,३६,३७,३९,४०,४२,४३, ४५,४६,४८,४९,५१,५२,५४,५६,५८,६२,६४, ६५,६७,६९,७१,७९,८१,८५,८७,८८,९०,९४, १२५,१२७,१३४,१३६,१४३,१४५,१५२, १५४,१६५,१६७,१६८,१७०,१७४,१७६, १८०,१८२,१८३,१८५;६।४०;१२।९; १८।२, ६,९,१२,१६,२०,२८,३२,३४,३५,४७,५०, ५२,८५; २०।६३;२१।३८,४१,४३,४५,४७।१, २;२१।६५,६७,८७; २३।६० से ६२,६४,६६, ७८,८१,८४,९०.१११,१३३,१४७,१६७ से १६९,१७१ से १७३,१७५ से १७७,१८२; २८।२५,४०,४३,६९,७४ से ८७,९७;३६।६८, ८१ ज १।७।१,११६,१७,२०,२३,४६,४८; २।४।३,२।६,१६,५२,५६,६५,७१,७७ से ८२, ८८,१२६,१३०,१३४,१३८,१४०,१४९,१५४, १५९.१६१; ३।१४,१८,२२,३०,३१,३६,४३, ५१,५६,६०,६८,९३,९९:१०६,११७,१२०, १२२,१२६।३;३।१३०,१३६,१४०,१४५, १४६,१६३,१७२,१७५,१८०,१८५,१८६, १८८,१८९,२०९,२१०,२१४,२१५,२१९, २२१,२२४;४।१,२७,३५,३७,४२,४५,५२, ५५.५७,६२.६४,७१ ७७,८१,८६,८८,९०,९१, ९४,९८.१०३,१०८,११०,११४,११६.१५१११, १६५,१६७,१६९,१७४,१७८,१८३,२००, २०५,२१३,२१५,२३४,२४०,२५७ से २५९, २६२;५।२८,३२,४३,४८,४९।१,५०,५२।१, ५३,५५,५६;६।८।१.१९ से २६;७।१।१,७।८ से २५,३१,३३,३४,५४,६७ से ८४,९५,९६, १२७,१७०,१७८।१,२,१८३,१८८,१८९,२०७ गु १।१४,२० से २२,२६,२७;२।१,३;३।१; ४।३ से ८,१०;६।१;८।१;९।३;१०।१३५,१६४; १२।२ से ७,९; १८।१.४,२०,२१,२६,२८, २९; १९।१।१,१९।४,५।३,७,८।३,१०,११।१, ३,४;१९।१४,१५।१,३,४,१९।१८,१९, १९।२१।२,४,५,७.१९।२२।२८,३२,१९।३० उ १।१४,१५,२१,२२,२५,२६,१२१,१२६, १३२,१३३,१३६,१३७,१४०,१४७;३।७,९१, ११०,१११;४।१६,१८;५।१७,२७

सहस्सक्ख (सहस्राक्ष) प २।५० ज ५।८

सहस्सग्गसो (सहस्राग्रशस्) प १।२०,२३,२६,२९, ४८

सहस्सपत्त (सहस्रपत्र) प १।४६ ज ३।८६;४।३, २२,२५,३०,३४;५।५५

सहस्सपत्तहत्थगय (हस्तगतसहस्रपत्र) ज ३।१०

सहस्सपाग (सहस्रपाक) ज ५।१४

सहस्सरस्सि (सहस्ररश्मि) उ ३।४८,५०,५५,६३, ६७,७०,७३,१०६,११८

सहस्सवत्त (सहस्रपत्र) प १।४८।४४

सहस्सार (सहस्रार) प १।१३५; २।४९,५७,५८ ५९।१,६३;३।३६,१८३;४।२५२ से २५४; ६।३४,५६,६५,८९,९२,१०९; १५।८८; २०।५९,६१;२१।७०,९१;२८।८२;३४।१६,१८

ज ५।४६।२ उ २।२२

सहस्सारग (सहस्रारक) प ६।११२;७।१५; ३३।१६

सहस्सारवडेंसय (सहस्रारावतंसक) प २।५७

सहि (सखि) ज २।२६,६६

सहित (सहित) सू १६।२२।२५

सहिय (सहित) प २६।२१ ज २।१५;३।३१,६५, १५६;७।१८६।२ सू २०।८,२०।८।२

सहोयर (सहोदर) उ १।६५

साइ (स्वाति) ज ७।१२८,१३४।२,१३५।२,१३६, १४०,१४६,१६५,१७५

साइम (स्वाद्य) उ ३।५०,५५,१०१,११०,१३४; ४।१६

साइयार (सातिचार) प १।२६

साइरेग (सातिरेक) प १८।७६;२३।६५ ज १।३५, ४०,५२;२।१२८,१४८;४।६,१४ २३,३१,३८, ४१,६५,६८,७३,६०,६१,११६,११६,१२२, १३६,१४६,१४७,२१६,२४२;७।२५,१६६, २०७ सू ८।१;१८।३७

साउफल (स्वादुफल) ज २।१२

साएय (साकेत) प १।६३।२

सागर (सागर) प २।६८;३।३,७६,७६,८१,१०५, ११६,१२६।४,१२८,१५१,१७०,१८५,१८८, २०६,२२१;४।१६२।१,२३६;५।३२,५८ ज २।६८;३।३,७६,७६,८१,१०५,११६, १२६।४,१२८,१५१,१७०,१८५,१८८,२०६, २२१;४।१६२।१,२३८;५।३२,५८ सू १६।२१ उ २।१२;५।१०

सागरकूड (सागरकूट) ज ४।१६४

सागरचित्त (सागरचित्र) ज ४।२३८

सागरचित्तकूड (सागरचित्रकूट) ज ४।२३६

सागरोवम (सागरोपम) प ४।१,३,४,६,७,६,१०, १२,१३,१५,१६,१८,१६,२१,२२,२४,२५,२७, ३१,३३,३७,३६,२०७,२०६,२१३,२१५, २२५,२२७,२३७,२३६,२४०,२४२,२४३, २४५,२४६,२४८ २४६,२५१,२५२,२५४, २५५,२५७,२५८,२६०,२६१,२६३,२६४, २६६,२६७,२६६,२७०,२७२,२७३,२७५, २७६,२७८,२७६,२८१,२८२,२८४,२८५, २८७,२८८,२६०,२६१,२६३ २६४,२६६, २६७,२६६;१८।२,६ १६,१६,२४,२८,३१, ३६,४२,४४,४६,४८,४६,५४,६१,६६ से ७४, ७६,७६,८४,८५,८७,११२,११६;२३।६० से ६६,६८,६६,७३ से ७८,८१,८२ से ६०,६२, ६५ से ६६,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११६ से ११८,१२०,१२६ से १३१,१३३ से १३५,१३८,१४०,१४२,१४३ १५१,१५३,१५५ से १५७,१६०,१६४,१६६ से १६८,१७१ से १७३,१७५ से १७७,१८२,१८३,१८६,१८७, १६० ज २।५,५५,५८,६१,१२६,१५४, १६०,१६३ सू ६।१;८।१ उ १।२६,१४०; ३।१५०,१६४,१६६,१७१;५।२६,४२

सागार (साकार) प २८।४।२२;२३।१६५,१६६ से २०१;२६।११;३०।२६,२८

सागारपस्सि (साकारदर्शिन्) प ३०।१५ से १८, २०,२२,२३

सागारपासणता (साकारदर्शिता) प ३०।२७

सागारपासणया (साकारदर्शिता) प ३०।१,२,५,६, ८ से १२,१६,२१

सागाराणागारोवउत्त (साकारानाकारोपयुक्त) प २८।१३६

सागारोवउत्त (साकारोपयुक्त) प ३।१०६,१७४; १३।१४;१८।६३;२६।१६ से २१;३६।६२

सागारोवओग (साकारोपयोग) प २६।१,२,५,६, ८ ६,१२

सागारोवओगपरिणाम (साकारोपयोगपरिणाम) प १३।८

साडग (शाटक) ज ३।१२५,१२६

साडय (शाटक) ज १। ६,५२,७६,७७

साडिल्ल (शाटिक) ज १।२१,५२,७६,७७

साडय (शाटक) प १।४८ ज २।६६

सात (सात) प ३५।१।१,२,३५।८,६
सातावेदग (सातवेदक) प ३।१७४
सातावेदणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१५,२६,
१४६,१७६
सातावेयणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१५,३०,६३,
१३५
सातासात (सातासात) प ३५।८,६
सातासोक्ख (सातसौख्य) सू २०।७
साति (सादि) प २३।४६
साति (स्वाति) सू १०।२ से ६,१७,२३,४८,६२,
७२,७५,८३,११३,१३१ से १३४; १८।७
सातिरेग (सातिरेक) प ४।३१,३३,३७,३६,१६८,
२००,२०४,२०६,२२५,२२७,२२८,२३०,
२३१,२३३,२३४,२३६,२४०,२४२;७।२,६,
११;१५।४१;१८।१६,१६,३१,३६,४६,५४,
६१,७६,८५,८७,११३,११६; २१।३८,४१,
६३,६६ ८७;२८।२५,७६,७८; ३६।६८
सू २।३;६।३;१२।१५
सादि (सादि) प १५।३५
सादि (स्वाति) सू १०।१२०
सादिय (सादिक) प २।६४
सादीय (सादिक) प १८।७,१७,२६,५८,५६,६३,
६७,७५ से ७७,७६,८२,८३,८८,६०,६२,
१००,१०५,११२,११५,११८,१२१,१२४,१२७
√**साध** (साध्) साधेंति सू १०।१२० साधेति
सू १०।१२०
साभादिय (स्वाभाविक) ज ३।२०६;५।५६
साम (श्यामा) प १।३७।४
साम (सामन्) उ १।३१
सामंत (सामन्त) उ १।३,३।२६
सामग (श्यामक) प १।४५।२
सामण्ण (सामान्य) सू १०।७७
सामण्ण (श्रामण्य) उ २।१२;३।१४,२१,१२०,
१५०,१६१;४।२४;५।२८,३६,४१,४३
सामण्णओविणिवाइय (सामान्यतोविनिपातिक)
ज ५।५७
सामण्णपरियाय (श्रामण्यपर्याय) ज २।८८;
३।२२५
सामल (श्यामल) ज ३।१०६
सामलता (श्यामालता) प १।३६।१
सामलया (श्यामालता) ज २।११
सामली (शाल्मली) ज ४।२०८
सामा (श्यामा) प २।४७।६;१७।१२४
सामाइय (सामायिक) प १।१२४,१२५ उ २।१०,
१२;३।१४,१५०,१६१;५।२८,३६ ४१
सामाइयचरित्तपरिणाम (सामायिकचारित्रपरिणाम)
प १३।१२
सामाण (समान) प २।४६,४७,४७।२
सामाणिय (सामानिक) प २।३० से ३३,३५;
४७।५,४१,४३,४८ से ५६ ज १।४५;२।६०;
४।१७,११३,१५० १५६;५।१,५,६,२६,३६,४२,
४४,४५,४६,४६।२,५०,५१,५२।१,५३,५६,
६५,६७;७।५६,५६,१८५ सू १८।२३;१६।२४,
२७ उ ३।६,२५,६०,१५०,१५६,१६६; ४।५
सामि (स्वामिन्) १।४;३।८,१६,४३,६२,७०,७७,
८४,१००,१२६।२,१४२,१६५,१८१,१६२;
५।५५,५७,५८ चं ६ सू १।४ उ १।१६,३६,४०
४२,४५,६६,१०३,१०७,१०८,११० से ११२,
११४,११६,१२८,१३६;२।६,१८;३।५,२४,
८६ १५५,१६८;४।४
सामित्त (स्वामित्व) प २।३०,३१,४१,४६
ज १।४५;३।१८५,२०६,२२१;५।१६ उ ५।१०
सामिय (स्वामिक) ज ३।८१
सामुदाणिय (सामुदानिक) उ ३।१५ से १७
सायं (सायं) सू २।१;१०।५ १३६
सायावेदणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१५
सायावेयणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१४१
सार (सार) प १।७६ ज १।२६; २।६४,६६;
३।२,३,२४,३५ चं १।३ उ १।१०,२६,६६;
५।११
सायर (सागर) सू १६।२२।२४
सारइयबलाहक (शारदिकबलाहक) प १७।१२८

सारंग (सारङ्ग) प १।५१ ज ३।३
सारकल्लाण (सारकल्याण) प १।४३।१
√सारक्ख (सं+रक्ष्) सारक्खंति ज २।४६,५२, ५६ सारक्खिस्संति ज २।१५६,१६१
सारक्खमाण (संरक्षत्) उ १।५७,५८,८२,८३
सारक्खिज्जमाण (संरक्ष्यमान) उ ३।४६
सारक्खित्ता (संरक्ष्य) ज २।४६
सारय (शारद) ज ३।११७
सारस (सारस) प १।७६ ज २।१२ उ ४।५
सारहि (सारथि) ज ३।३५,१७८
सारिक्ख (सादृश्य) प २।६४।१८
सारीर (शारीर) प ३५।१।१;३५।६,७
सारीरमाणस (शारीरमानस) प ३५।६,७
साल (शाल) प १।३५।१,१।४३।१,१।४८।१४,२४ सू २०।८,२०।८।८
सालंबण (सालम्बन) ज ३।९९ से १०१
सालभंजिया (सालभञ्जिका) ज १।३७;५।३,२८
सालवण (शालवन) ज २।९
साला (दे०) प १।३५,३६,१।४८।३३,३७
सालि (शालि) प १।४५।१ ज २।३७;३।११९; ४।१३;७।१७८
सालिंगण (सालिंगन) सू २०।७
सालिपिट्ठरासि (शालिपिष्टराशि) प १७।१२८
सालिसच्छियामच्छ (शालिशाक्षिकामत्स्य) प १।५६
सालिसय (सदृशक) सू २०।७
सावइज्ज (स्वापतेय) ज २।२४,६४
सावगधम्म (श्रावकधर्म) उ ३।४५,७९,१०३,१०४; १४३;५।२०
सावण (श्रावण) ज २।१३८;७।१०४,११४,१२६ सू १०।१२४,१२६ उ ३।४०
सावतेय (स्वापतेय) ज २।६६
सावत्थी (श्रावस्ती) प १।९३।५ उ ३।९ से ११,२१
सावय (श्वापद) ज २।३६
सावय (श्रावक) ज ७।२१४
सावयबहुल (श्वापदबहुल) ज १।१८
साविट्ठी (श्राविष्ठी) ज ७।१३७,१३८,१४१, १४७,१५०,१५४ सू १०।७,८,२०,२३,२५,२६
साविया (श्राविका) ज ७।२१४
सावेंत (श्रावयत्) ज ३।१७८
सास (श्वास) ज २।४३
सास (सस्य,शस्य) ज ७।११२।४
सासग (सस्यक,शस्यक) प १।२०।२
सासग (शासक) ज ३।३५
सासण (शासन) ज ३।८१,१५१ उ १।१३९
सासत (शाश्वत) ३६।९४
सासय (शाश्वत) प २।६४,२।६४।२०,२२; ३६।९३,९४,९४।१ ज १।११,४७;३।२२६; ४।२२,३४,५४,६४,१०२,१०७,११३,१५९, १६१;७।२०८ से २१०
सासवसमुग्गयहत्थगय (हस्तगतसर्षपसमुद्गत) ज ३।११
सासेंत (शासत्) ज ३।१७८
√साह (साधय्) साहेइ उ ३।५१
साहट्टु (संहृत्य) ज ३।१२ उ १।२२
√साहर (सं + हृ) साहरइ ज २।९५;३।२६,३९, ४७,१३३;५।२१,५८ साहरंति ज २।९६; ५।१५,७०,९८,११० साहरइ ज २।९५,९७, १०९;५।१४,८९ साहराहि ज ५।६८
साहरिज्जमाण (संह्रियमाण) ज ४।१०७
साहरित्ता (संहृत्य) ज २।९५
साहस्सिय (साहस्रिक) सू १९।२३,२६ उ ३।९१
साहस्सी (साहस्री) प २।३० से ३३,३५,४१,४३, ४८ से ५९ ज १।४५;२।७४ से ७७,९०; ३।२२१;४।१७,१९,२०,११२,११३,१२९, १५०,१५१।८,१५९;५।१,५,६,१९,३९,४०, ४४ से ४६,४९ से ५३,५६,६५,६७;७।५५, १७८,१८५ सू १८।१४ से १७,२१,२३ उ ३।६,१२,२५,९० १५६,१६९;४।५;५।१०
साहारण (साधारण) प १।४८।५४,५५,६०
साहारणसरीर (साधारणशरीर) प १।३२,४८

साहारणसरीरणाम (साधारणशरीरनामन्) प २३।३८,१२१

साहाविय (स्वाभाविक) ज ५।५५

√साहि (कथय्) साहिज्जइ प १७।१२९ साहिज्जंति प १७।१२९ साहिज्जति प १७।१२९

साहिय (साधिक) प ४।२४० ज २।६६;३।७९, ११६,११८;७।१६४

साहीय (साधिक) प २।६४।८

साहु (साधु) चं १।२

साहेला (साधिला) उ ३।५१

सिउंढि (दे०) प १।४८।१

सिंग (शृङ्ग) ज ३।१०६;५।६३;७।१७८

सिंगग्ग (शृंगाग्र) ज ३।२४

सिंगबेर (शृंगबेर) प १।४८।२;१७।१३१

सिंगबेरचुण्ण (शृंगबेरचूर्ण) प ११।७६;१७।१३१

सिंगभूत (शृंगभूत) ज ३।१८६

सिंगभूय (शृंगभूत) ज ३।२१७

सिंगमाल (शृंगमाल) ज २।८

सिंगार (शृंगार) प ३४।१९,२१ ज २।१५ सू २०।७

सिंगारागार (शृंगारागार) ज ३।१३८

सिंगिरिड (शृंगिरीट) प १।५१।१

सिंघाडग (शृंगाटक) प १।४८।९ ज २।६५; ३।१८५,२१२,२१३;५।७२,७३ उ १।९८

सिंघाडय (दे०) सू २०।२ राहु का नाम

सिंघाण (सिंघाण,शिंघाण) प १।८४

सिंदुवार (सिन्दुवार) प १।३७।४,१।३८।१ ज २।१०;३।३५

सिंदुवारवरमल्लदाम (सिन्दुवारवरमाल्यदामन्) प १७।१२८

सिंदूर (सिन्दूर) ज २।३५

सिंधु (सिन्धु) ज १।१८,२०,४८;२।१३१,१३३, १३४;३।१,५१,५२,५४,६०,७६,७८,९७,९९, १११,११३,१२८;४।३७,१६०,१७४ से १७६, २७४;६।१९

सिंधुआवत्तणकूड (सिंधुआवर्तनकूट) ज ४।३७

सिंधुकुंड (सिन्धुकुण्ड) ज १।५१;४।१७४,१७५

सिंधुकूड (सिन्धुकूट) ज ४।४४

सिंधुगम (सिन्धुगम) ज ३।६४,१५१

सिंधुदेवी (सिन्धुदेवी) ज ३।५१,५२,५४,५६,५७, ५८

सिंधुद्दीप (सिन्धुद्वीप) ज ४।३७

सिंधुप्पवायकुंड (सिन्धुप्रपातकुण्ड) ज ४।३७

सिंधुसागरंत (सिन्धुसागरान्त) ज ३।८१

सिंधुसोवीर (सिन्धुसौवीर) प १।९३।४

सिंभिय (श्लैष्मिक) उ ३।११२,१२८

सिंहल (सिंहल) प १।८९

सिंहलय (सिंहलक) ज ३।८१

सिंहली (सिंहली) ज ३।११।१

सिंहासण (सिंहासन) ज १।४४

सिक्खा (शिक्षा) प ११।४६ उ १।२०

सिक्खिय (शिक्षित) ज ३।१७८;७।१७८ सू २०।९।३,५

सिग्घ (शीघ्र) ज २।९०;३।२६,३९,४७,५६,६४, ७२,१०९,११३,१२३,१३८,१४५;५।५,२८, ४४,४७,६७ सू २।३;१५।१,३७;१८।१८

सिग्घगइ (शीघ्रगति) ज ७।१८० चं २।४;४।२ सू १।६।४,१।८।२

सिग्घगामि (शीघ्रगामिन्) ज ३।३५,१०९

सिग्घया (शीघ्रता) ज ३।१०९

√सिज्झ (सिध्) सिज्झइ प ३६।८८ सिज्झई प २।६७।२,३ सिज्झंति प ६।५७,६७,११० ज १।२२,५०;२।५८,१२३,१२८,१४८; ४।१०१,१७३ सिज्झति प ३६।९२ सिज्झहिइ उ १।१४१;२।२०;३।१८;४।२६; ५।४३ सिज्झिहिंति ज २।१५१,१५७ उ २।१२;४।२८ सिज्झेज्जा प २०।१८

सिज्झणया (सेधन) प ६।२,४४

सिणेहभाव (स्नेहभाव) ज २।१४३
सित (सित) प २।३१
सित्त (सिक्त) ज २।६५;३।७,११९;५।५७
सिद्ध (सिद्ध) प १।१।१,१।१३;२।६४,२।६४।२ से ४,६ से १२,१४,१६,१८,२० से २२;३।३७ से ३९,१८३;५।३;६।४४,४६,५७,५९,६७,६९; ११।३९;१२।७,१०,२०;१६।२५,३०,३२,३३, ३५,३७;१८।७;१९।५;२२।८;२८।१०७,११०, ११३,११४,१२०,१२१,१२४,१२५,१३१, १३८,१३९,१४१;३३।६;३४।६;३६।९३,९४ ज २।८१,२।८२,८८,८९;३।२२५;४।१६२।१, १७२।१,२०४।१,२१०।१,२६३।१,२६९।१; ५।५८;७।११७ चं १।२
सिद्धकेवलि (सिद्धकेवलिन्) प १८।९८,१००
सिद्धगति (सिद्धगति) प ६।५
सिद्धत्थ (सिद्धार्थ) उ ५।२६,२८
सिद्धत्थग (सिद्धार्थक) ज ३।२०९;५।५५,५६
सिद्धत्थवण (सिद्धार्थवन) ज २।६५
सिद्धत्थिया (सिद्धार्थिका) प १७।१३५
सिद्धमणोरम (सिद्धमनोरम) ज ७।१९७।१ सू १०।८६।१
सिद्धायतणकूड (सिद्धायतनकूट) ज १।३४ से ३६, ४१;४।४४,४५,४८,७६,९६,१०५,१०६, १३६,१६२,१६७,१८६,१९२,१९८ २१०, २११,२३५,२३७,२४२,२६३
सिद्धायतण (सिद्धायतन) ज ४।१४७,१६३,१८० २१६,२१७,२२०,२३५,२३७,२४२
सिद्धाययणकूड (सिद्धायतनकूट) ज ४।२१२,२७५
सिद्धालय (सिद्धालय) प २।६४
सिद्धि (सिद्धि) प २।६४;३६।८३।२
सिद्धिगइ (सिद्धिगति) ज ५।२१
सिप्प (शिल्प) ज २।६४;३।१६७।७;५।५,७
सिप्पारिय (शिल्पार्य) प १।९२,९७
सिप्पिया (शुक्तिका) प १।४९।२
सिप्पिसंपुड (शुक्तिसंपुट) प १।४९
सिबिया (शिबिका) ज २।१०१,१०२
सिंभ (श्लेष्मन्) ज २।१३३
सिय (स्यात्) प १।४८;५।५,१०,२०,३०,३२, १०२,१२९,१३१,१३२,१३४,१६०,१७७, १९३,२१४,२२८;६।११५,११६;१०।७ से १३,१७,१९,२०,३१,३२,३४,३६,३८,४०, ४२,४४,४६,४८,५०,५२;११।२,३;१२।९, २४,३२,३३;१५।५३,५४,९१,१२२,१२३; १७।६४,६५,१०२ से १०४,११६,१५०,१५२; २१।६५,६८ से १००;२२।२६,२९,३०,३२, ३३,३८ से ४०,४२,५० से ५२,६७ से ६९, ७१,७४,९१,९३,९७,९९;२८।३१,१०६, १११,११५,११७,१२०,१२२,१२५,१२८, १२९,१३२,१४३;३६।१४,१७,१९,२२,२३, २५,२७,३३,३४,६२,६३,७७ ज ७।२०८,२०९
सिया (स्यात्) ज ५।७
सियाल (शृगाल) प १।६६;११।२१ ज २।३६, १३६
सियाली (शृगाली) प ११।२३
सिर (शिरस्) ज २।१३३;१८०,२२१
सिरय (शिरस्क) प २।४९ ज २।१५;३।६,१८, ९३,१८०,२२२
सिरसावत्त (शिरसावर्त) ज ३।५,६,८,१२,१६, २६,३९,४७,५३,५६,६२,६४,७०,७२,७४, ७७,८४,८८,९०,१००,११४,१२६,१३३, १३८,१४२,१४५,१५१,१५७,१६५,१८१, १८९,२०५,२०६,२०९;५।५,२१,४६,५८ उ १।३६,४५,५५,५८,८०,८३,९९,१०७, १०८,११६,११८,१२२;३।१०६,१३८;४।१५; ५।१७
सिरसिज (शिरसिज) ज ३।१३८
सिरि (श्री) ज २।८,९,१५;४।२।१,४।१७ से २०, २२;५।११।१,५।३८;७।२१३
सिरिकंता (श्रीकान्ता) ज ४।१५५।२,२२४।१
सिरिकंदलग (श्रीकन्दलक) प १।६३

सिरिकूड (श्रीकूट) ज ४।४४
सिरिघर (श्रीगृह) ज ३।२२०
सिरिचंदा (श्रीचन्द्रा) ज ४।१५५,२२४।१
सिरिणिलया (श्रीनिलया) ज ४।२२४।१
सिरिदाम (श्रीदामन्) ज ५।६७
सिरिदेविता (श्रीदेविता) उ ४।२४
सिरिदेवी (श्रीदेवी) उ ४।५
सिरिनिलया (श्रीनिलया) ज ४।१५५।२
सिरिमहिया (श्रीमहिता) ज ४।१५५।२,२२४।१
सिरिवडिंसय (श्रीअवतंसक) उ ४।५
सिरिवडेंसय (श्र्यवतंसक) उ ४।२४
सिरिवच्छ (श्रीवत्स) ज ३।३,३६,११३,१७८;
४।२८
सिरिवच्छा (श्रीवत्सा) ज ५।४६।३
सिरिसंभूया (श्रीसंभूता) ज ७।१२०।१
सू १०।८८।१
सिरिहिरिधिइकित्तिपरिवज्जिय (श्रीह्रीधृतिकीर्ति-
परिवर्जित) उ १।८६,११५,११६
सिरीय (श्रीक) [illegible] ३।७६
सिरीस ([illegible]) १।२३।२
सिरीसिव ([illegible]) [illegible] ६।८०।१
सिला ([illegible]) प १।२०।१;२।३१ ज २।२४,६४,
६६;३।२५,१३६,१६७।८;४।२४५,२४६
२२१,२२६
सिलिंध ([illegible]) प २।३१,२।४०।१०
सिलुच्चय ([illegible]) [illegible] ५।१
सिलेस ([illegible]) प १।४८।२
सिलोच्चय (शिलोच्चय) ज ७।२६०।१
सिव ([illegible]) प २।३०,३१,४१ ज २।६४;३।१८५,
२०१;५।५ २१,५८;७।११४।१ सू १०।१२४।१
११४१,४४;३।२।१,१७१
सिसिर (शिशिर) [illegible] ७।११०।१ सू १०।१२४।१
सिस्स (शिष्य) प ३।१६
सिस्सिणीभिक्खा ([illegible]) उ ४।१६
सिस्सिणी ([illegible]) [illegible]
सिस्सिणीभिक्खा (शिष्याभिक्षा) उ ४।१६
सिहंडि (शिखण्डिन्) ज ३।१७८
सिहर (शिखर) प २।४८ ज १।३७; ३।२४;
४।४६;५।४३ उ ५।५
सिहरतल (शिखरतल) ज १।३२,३३; ४।२४१
सिहरि (शिखरिन्) प २।१;१६।३० ज ३।१८६,
२१७;४।२७१,२७३,२७४,२७७
सिहरिकूड (शिखरिकूट) ज ४।२७५
सिहरिसंठाणसंठिय (शिखरिसंस्थानसंस्थित)
ज ४।२७६
सिहि (शिखिन्) ज २।१३७
सीउण्ह (शीतोष्ण) ज २।१३३;३।१३८
सीओदप्पवायकुंड (शीतोदाप्रपातकुण्ड) ज ४।६२
से ६४
सीओदा (शीतोदा) ज ४।६३,६४
सीओदाकूड (शीतोदाकूट) ज ४।६६
सीत (शीत) प १५,७ से ६;५।७,२११,२१२,
२१४,२१५,२१८,२२० से २२६;६।१ से ११;
२८।१०५;३४।१६;३५।१।१
सीतजोणिय (शीतयोनिक) प ६।१२
सीतल (शीतल) सू २०।२
सीता (शीता) प २।६४ सू २।३
सीताभिंद ([illegible]) सू २।३
सीतोदय (शीतोदक) प ३।२३
सीतोदा (शीतोदा) ज ४।६१,६२,६५,२१०।१,
२१२,२१५,२२६ से २३१;६।२२
सीतोदामुहवणसंड (शीतोदामुखवनषण्ड) ज ४।२१२
सीतोसिणजोणिय (शीतोष्णयोनिक) प ६।१२
सीतोसिण (शीतोष्ण) प ६।१ से ११; ३५।१ से ३
सीधु (सीधु) उ १।३४,४६,७४
सीभर (शीकर) उ १।६७
सीमंकर (सीमङ्कर) ज २।५९,६०
सीमंधर (सीमन्धर) ज २।५९,६०
सीमागार (सीमाकार) प १।५८
[illegible] सू १०।१३५

सीय (शीत) प १।४ से ६; ५।५,१२६,१५४, २१०,२१३ से २१५,२१७ से २१६,२२१; ११।५६,६०; १७।१३८; २८।२०,३२,६६, १०५; ३५।२,३ ज २।१३१,१३४ उ ३।१२८
सीयउरय (दे०) प १।३७।३
सीयल (शीतल) ज २।२०;४।३,२५
सीया (शिबिका) ज २।१२,३३,६४,६५,१०३,१०४ उ ३।११०,१११;४।१६,१८
सीया (शीता) ज १।१६;४।११०,१४१,१४३, १६२।१,१६७,१६६,१७२,१७४,१७७,१७८, १८०,१८१,१८३ से १८५,१८७,१८६ से १६१,१६३,१६६,१६७,१६६ से २०२,२१२, २१५,२२६,२२७,२३२,२३३,२६२,२६३।१; ५।१०।१;६।२२;७।२२
सीयामहाणई (शीतामहानदी) ज ४।२००
सीयामुहवण (शीतामुखवन) ज ४।१६६ से २०२
सीयालीस (सप्तचत्वारिंशत) ज ७।२० सू ४।१०
सीयोया (शीतोदा) ज ४।२०६,२०७,२०८,२१२, २२८
सीयोयामुह (शीतोदामुख) ज ४।२१२
सील (शील) प २०।१७,१८,२४ ज ३।३; ५।५८
सीवण्णी (श्रीपर्णी) प १।३५।३
सीस (शीर्ष) उ १।६७; ३।११४;४।२१
सीसपहेलियंग (शीर्षप्रहेलिकाङ्ग) ज २।४
सीसपहेलिया (शीर्षप्रहेलिका) ज २।४ सू ८।१
सीसय (सीसक) प १।२०।१
सीसवा (शिंशपा) प १।३५।३
सीसवेयणा (शीर्षवेदना) ज २।४३
सीसाखंड (सीसखण्ड) प ११।७४
सीसिणिभिक्खा (शिष्याभिक्षा) उ ३।११२
सीह (सिंह) प १।६६;२।३०,४६; ६।८०।१; ११।२१ ज २।१५,३६,१३६ उ १।३३;२।८ ५।१३,१५
सीह (शीघ्र) ज २।३६,१३६;३।२६,३६,४७,५६, ६४,७२,११३,१३३,१३८,१४५;५।५,४४,४७, ६७
सीहकण्ण (सिंहकर्ण) प १।८६
सीहकण्णी (सिंहकर्णी[1]) प १।४८।१
सीहगइ (शीघ्रगति) ज ७।१६८।२
सीहघोस (सिंहघोष) ज २।१६
सीहणाद (सिंहनाद) सू १६।२३
सीहणाय (सिंहनाद) ज ३।२२,३१,३६,७८,६३, ६६,१०६,१६३,१८०;५।२,५७;७।५५,१७८ उ १।१३८
सीहणिसाइ (सिंहनिषादिन्) ज ७।१३३।३
सीहणीसाइसंठिय (सिंहनिषादिसंस्थित) सू १०।५४
सीहनाय (सिंहनाद) उ १।१३८
सीहपुरा (सिंहपुरा) ज ४।२१२,२१२।२
सीहमुह (सिंहमुख) प १।८६
सीहरूवधारि (सिंहरूपधारिन्) ज ७।१७८ सू १८।१४ से १७
सीहस्सर (सिंहस्वर) ज २।१६
सीहसीया (सिंहस्रोता,शीघ्रस्रोता) ज ४।२१२
सीहासण (सिंहासन) ज ३।३,६,१२,२६,२८,३६, ४१,४७,४६,५८,६६,७४,१३३,१४५ १४७, १७८,१८८,१६७,२०४,२१४,२१६,२२२; ४।५०,५३,५६,११२,११६,१२३,१३५,१४७, १५७,२२३।१,२२४।१,२४८,२५० से २५२; ५।१३,१४,१८,२१,३६,३६ से ४१,४७,५०, ५५,६० सू १८।२३ उ १।४१;३।६,२५,६०, ६१,१३६,१५६;४।५
सीहासणहत्थगय (हस्तगतसिंहासन) ज ३।११
सीही (सिंही) प ११।२३
सु (सु) ज १।१३,३७;२।६,१२,१५;३।६,१२,२८, ३५,४१,४६,५८,६६,७४,११७,११६,१३८, १७८,२२२;४।१३,१०२,१२८,१४६,१५७, १७८,१८०,१८१,१८२,२०२,२०४,२११; ५।५,७,६,५३;७।१२०
सुइ (शुचि) २।१५;३।६,२२२;४।२६;५।५७
सुइग (शुचिक) ज २।६५;३।७
सुइभूय (शुचीभूत) ज ३।८२ उ ३।५१,५६

---
१. वनस्पति कोश में सिंहपर्णी शब्द मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुईभूय (शुचीभूत) उ ४।१६
सुउत्तार (सूत्तार) ज ४।३,२५
संकलितण (शूकरीतृण) प १।४२।२
सुंगा (शौङ्गा[1]) ज ७।१३२।३
सुंगायण (शौङ्गायन) ग १०।११४
सुंठ (शुण्ठी) प १।४२।२,१।४८।४६
सुंदर (सुन्दर) ज २।१५; ३।१३८;७।१७८
सुंदरी (सुन्दरी) ज २।१५,७५
सुंब (सुम्ब) प १।४१।१
सुंसुमार (शुंशुमार,शिशुमार) प १।५५,६०
सुकच्छ (सुकच्छ) ज ४।१७८,१८१ से १८३
सुकण्ह (सुकृष्ण) उ १।७
सुकत (सुकृत) प २।३१,४१
सुकय (सुकृत) प २।३१,४१ ज १।३७; ३।७,६, १८,२४,३५,६३,१०६,१७८,१८०,२२२; ७।१७८
सुकरण (सुकरण) ज ३।३५
सुकाल (सुकाल) उ १।७,१४६,१४७;२।१८,१६
सुकाली (सुकाली) उ १।१४५,१४६; २।१७,१८
सुकुमाल (सुकुमार) ज २।१५; ३।३,६,१०६, २०६,२११,२२२ उ १।१४६
सुकुल (सुकुल) ज ३।१०६
सुकुसल (सुकुशल) ज ३।११६
सुक्क (शुक्र) प १।८४,१३५;२।४८,६३ सू २०।८, २०।८।४ उ ३।२।१,३।२५,८३,८६
सुक्क (शुक्र) प १३।६
सुक्क (शुल्क) उ ३।१२८
सुक्क (शुष्क) उ ३।३५ से ३७,४०,४३
सुक्कपक्ख (शुक्लपक्ष) ज ७।११५,१२५ सू १६।२२।१८
सुक्कछिवाडिया (दे०) प १७।१२८
सुक्कलेस (शुक्ललेश्य) प १७।५८,१०४,१६८; २३।२००
सुक्कलेसट्ठाण (शुक्ललेश्यास्थान) प १७।१४६
सुक्कलेसा (शुक्ललेश्या) प १७।४७,१३६
सुक्कलेस्स (शुक्ललेश्य) प ३।१६६; १३।१८,२०; १७।३५,५६,५८,६३ से ६६,७१,७३,७६ से ८१,८३,८४,८६,८६,१०४,११३,१६७; १८।७४,२३।२०१; २८।१२३
सुक्कलेस्सट्ठाण (शुक्ललेश्यास्थान) प १७।१४६
सुक्कलेस्सा (शुक्ललेश्या) प १६।४६,५०; १७।३५, ३६,३८,४१,४३,५४,११४,११७ से १२२, १२६,१३५,१३७,१४० से १४५,१४७,१५३ से १६१
सुक्कलेस्सापरिणाम (शुक्ललेश्यापरिणाम) प १३।६
सुक्कवडिंसय (शुक्रावतंसक) उ ३।२५,८३
सुक्किल (शुक्ल) प १।४ से ६; ५।५,७,२०५; ११।५३,५४;१३।२६;२३।४७,१०१,१०६; १०६; २०।६,७,२६,३२,५३,६६ ज १।१३; २।७,१६४;३।२४,३१; ४।२६,११४ सू २०।२
सुक्किलपत्त (शुक्लपत्र) प १।५१
सुक्किलमत्तिया (शुक्लमृत्तिका) प १।१६
सुक्किलसुत्तय (शुक्लसूत्रक) प १७।११६
सुक्किलय (शुक्लक) प १७।१२६ सू २०।२
सुक्किल्ल (शुक्ल) प २८।५२
सुग (शुक) प १।७६
सुगइगामि (सुगतिगामिन्) प १७।१३८
सुगंध (सुगन्ध) प २।३०,३१,४१ ज २।१५,६५; ३।७,१२,८८,२११;५।७,५५ सू २०।७ उ ३।१३१
सुगंधि (सुगन्धिन्) ज २।१२
सुगंधिय (सुगन्धिक) प १।४६
सुगपत्त (शुकपत्र) ज ३।१०६
सुगूढ (सुगूढ) ज २।१५
सुघोसा (सुघोषा) ज ५।२२,२३,२४,४६
सुचक्क (सुचक्र) ज ३।३५
सुचरिय (सुचरित) ज २।७१
सुचिण्ण (सुचीर्ण) ज १।१३,३०,३३,३६; ४।२
सुजाणु (सुजानु) ज २।१५
सुजाय (सुजात) ज २।१४,१५;३।१०६;४।३,२५, १५७; ७।१७८

१. शौङ्गायन गोत्रस्य संक्षिप्त रूपम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुजाया (सुजाता) ज ४।१५७।२
सुजोइय (सुयोजित) ज ७।१७८
सुज्झ (दे०) ४।३,२५
सुट्ठिय (सुस्थित) ज ७।१७८
√सुण (श्रु) सुणंतु ज ३।२४।१,२,३।१३११,२
सुणह प २।६४।१८ सुणेइ प १५।३६
सुणेति प १५।३९,४०
सुणग (शुनक) प १।६६ ज २।३६,१३६
सुणक्खत्ता (सुनक्षत्रा) ज ७।१२०।१ सू १०।८८।१
सुणमिय (सुनत) ज ७।१७८
सुणय (शुनक) प ११।२१
सुणिम्मिय (सुनिर्मित) ज २।१५
सुणिरिक्खण (सुनिरीक्षण) ज ७।१७८
सुणिया (शुनिका) प ११।२३
सुणिवेसिय (सुनिवेशित) ज २।१२
सुण्हा (स्नुषा) ज २।२७,६९
सुत (णाण) (श्रुतज्ञान) प २९।१९
सुतअण्णाण (श्रुताज्ञान) प ५।७,१२,२०,५६;
२९।९,१२,१७,१९,२०
सुतअण्णाणि (श्रुताज्ञानिन्) प ३।१०२,१०३;
५।८०,११७;३०।२३
सुतणाण (श्रुतज्ञान) प ५।७,२०,२४,४१,४९,९७,
१११;२९।१७,२१;३०।६,११
सुतणाणि (श्रुतज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३;५।४३,
८०,९५,११३;२८।१३६
सुतिक्खण (सुतीक्ष्ण) ज २।६।१
सुतोवउत्त (श्रुतोपयुक्त) प २३।१९५,१९६ से २०१
सुत्त (सूत्र) प १।१०१।६;२१।३५
सुत्त (सुप्त) ज ३।१७४
सुत्त (श्रुत) प १।१०१।६
सुत्त (रुइ) (सूत्ररुचि) प १।१०१।१
सुत्तग (सूत्रक) ज ३।३९,१०९
सुत्तत्तय (सूत्रत्रय) प ४।५५
सुत्तरुइ (सूत्ररुचि) प १।१०१।६
सुत्तवेयालिय (सूत्रवैचारिक) प १।९६
सुत्तीमई (शुक्तिमती) प १।९३।४
सुदंसण (सुदर्शन) प २।६४;३।३०;४।१४६,
१४७,१५०,१५७,१५९,२०८,२६०।१;
७।२१३ ज २।६४;३।३०;४।१४७,१५०,
१५९,२०८,२६०।१;७।२१३ सू ५।१ उ ४।७
से ९,१६,१८
सुदंसणभद्दसालवण (सुदर्शनभद्रशालवन) ज ५।५५
सुदंसणा (सुदर्शना) ज ४।१५७।१,२
सुदिट्ठ (सुदृष्ट) प १।१०१।१३
सुदुल्लह (सुदुर्लभ) ज ३।११७।१
सुद्ध (शुद्ध) प १७।११४।१,१७।११६ सू २०।७
सुद्धदंत (शुद्धदन्त) प १।८६
सुद्धप्पावेस (शुद्धप्रावेश,शुद्धात्मवेश,शुद्धप्रावेश्य)
ज ३।८५ सू २०।७ उ १।१९
सुद्धवाय (शुद्धवात) प १।२९
सुद्धागणि (शुद्धाग्नि) प १।२६
सुद्धोदय (शुद्धोदक) प १।२३ ज ३।९,२२२
सुधम्म (सुधर्म) ज ४।१४०।१
सुधम्मा (सुधर्मा) ज ४।१३१ सू १८।२३
सुनिउण (सुनिपुण) ज ५।५,७
सुपइट्ठ (सुप्रतिष्ठ) ज ५।४३,५५ सू १०।१२४।१
उ ३।२१
सुपइट्ठग (सुप्रतिष्ठक) ज २।१५;३।११
सुपइट्ठिय (सुप्रतिष्ठित) ज २।१४;४।१४६;
५।४३
सुपतिट्ठ (सुप्रतिष्ठ) ज ४।१२८
सुपम्ह (सुपक्ष्मा) ज ४।२१२,२१२।१
सुपरक्कंत (सुपराक्रान्त) ज १।१३,३०,३३,३६;
४।२
सुपरिनिट्ठिय (सुपरिनिष्ठित) उ ३।२८
सुपव्वइय (सुप्रव्रजित) उ ३।८०,८१
सुपसत्थ (सुप्रशस्त) ज ३।११७
सुपिक्कखोयरस (सुपक्वक्षोदरस) प १७।१३४
सुपीय (सुपीत) ज ७।१२२।१ सू १०।८४।३
सुपुट्ठ (सुपुष्ट) ज ३।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुप्पइण्णा (सुप्रकीर्णा) ज ५।६।१
सुप्पबुद्धा (सुप्रबुद्धा) ज ४।१५७।१;५।६।१
सुप्पभा (सुप्रभा) ज ७।१७८
सुप्पमाण (सुप्रमाण) ज २।१५
सुप्पमाणतर (सुप्रमाणतर) ज ४।१०२
सुफुल्ल (सुफुल्ल) ज ३।१०९
सुबद्ध (सुबद्ध) ज २।१५;७।१७८
सुबहु (सुबहु) उ ३।५०,५५
सुब्भि (सु) प १३।२७,३१;२३।१०६
सुब्भिगंध (सुगन्ध) प १।४ से ६;५।५,७,२०५;
 ११।५६;१७।१२७;२८।२६,३२,६६
सुभ (शुभ) प २८।१०५ ज १।१३,३०,३३,३६;
 ३।२२३;४।२
√सुभ (शुभ्) सोभंति सू १९।११ सोभिंसु सू १९।५
 सोभिस्संति सू १९।१ सोभेंति सू १९।१
 सोभेंसु सू १९।१ सोभेस्संति सू १९।३८
सुभंकर (शुभंकर) ज ३।८८
सुभग (शुभग) प १।४८।४४,१।५० ज ४।३,२५;
 ५।६८;७।१७८ सू २०।४
सुभगणाम (शुभगनामन्) प २३।३८,१२४
सुभगत्त (शुभगत्व) प ३४।२०
सुभगा (शुभगा) प १।४०।२ ज ४।१६४;५।१।१
सुभणाम (शुभनामन्) प २३।१६,३८,१२३
सुभद्द (सुभद्र) उ २।२
सुभद्दा (सुभद्रा) ज २।७७;३।१३८;४।१५७।२
 उ ३।९७,९८,१०१ से १२०,१४६;४।२२
सुभय (शुभग) प १।४६
सुभय (शुभक) उ ५।५
सुभा (शुभा) ज ४।२०२।२
सुभोगा (सुभोगा) ज ४।१६४;५।१।१
सुमणदाम (सुमनोदामन्) ज ३।२११;५।५५,५८
सुमणसा (सुमनस्) प १।४०।३ मालतीपुष्पलता
सुमणा (सुमनस्) ज ४।१५७।२,२०३
सुमहग्घ (सुमहार्घ्य) ज ३।६,२२२
सुमहुर (सुमधुर) उ ३।६८
सुमिण (स्वप्न) उ १।३३;२।८;५।१३,२५,३१
सुमिणपाठग (स्वप्नपाठक) उ १।३३
सुमेहा (सुमेघा) ज ४।२३८;५।६।१
सुय (श्रुत) प १।१।२,३;१।१०१।६;१३।१०
 चं १।३
सुय (शुक) प १७।१२४
सुय (शुक) प १।४२।१ बालतृण
सुयअण्णाण (श्रुताज्ञान) प ५।५,१०,१४,१६,१८,
 ६३;२९।२,६,२१;३०।२,६,९,११,१६,२१
सुयअण्णाणपरिणाम (श्रुताज्ञानपरिणाम) प १३।१०
सुयअण्णाणि (श्रुताज्ञानिन्) प ५।६५,९९;१३।१४,
 १६,१७;१८।८३;२८।१३७;३०।१६
सुयक्खंध (श्रुतस्कन्ध) उ ५।४५
सुयणाण (श्रुतज्ञान) प १।१०१।८;५।५,७८,९३;
 १७।११२,११३;२०।१७,१८,३४;२९।२,६,
 १२;३०।२,२१
सुयणाणारिय (श्रुतज्ञानार्य) प १।९९
सुयणाणि (श्रुतज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३;१३।१४,
 १७;१८।८०;३०।१६,२३
सुयतोंड (शुकतोण्ड) ज ३।३५
सुयनाणपरिणाम (श्रुतज्ञानपरिणाम) प १३।९
सुयधम्म (श्रुतधर्म) प १।१०१।१२
सुयपुच्छ (शुकपिच्छ) प १७।१२४
सुयमुह (शुकमुख) ज ३।१८८
सुयविंट (शुकवृन्त) प १।५०
सुयविसिट्ठया (श्रुतविशिष्टता) ज २३।२१
सुयविहीणया (श्रुतविहीनता) ज २३।२२
सुयात (सुजात) ज ३।१०९
सुर (सुर) प २।६४।१५;३१।६।१ ज ३।११७
सुरइय (सुरचित) प २।४१
सुरट्ठ (सौराष्ट्र) प १।९३।३
सुरत्त (सुरक्त) ज ७।१७८
सुरप्पिय (सुरप्रिय) उ ५।७,८
सुरभि (सुरभि) प २।३१,४१;२३।४८ ज २।१२,
 १६;३।७,९,३०,८८,१०९,२०९,२११;५।५,
 ७,१४,२१,५६,५८;७।१७८ उ ३।१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरम्म (सुरम्य) ज २।१२;४।१३ सू २०।७
सुरवर (सुरवर) ज ५।७
सुरवरिंद (सुरवरेन्द्र) ज ३।१०६
सुरहि (सुरभि) प २।३० ज ३।६,१२,३५,८८, २२१,२२२
सुरा (सुरा) उ १।३४,४६,७४
सुरादेवी (सुरादेवी) ज ४।४४,२७५;५।१०।१ उ ४।२।१
सुरिंद (सुरेन्द्र) प २।५० ज २।६१;३।३५;५।१८, २१,४८,५२
सुरूया (सुरूपा) ज ५।१३
सुरूव (सुरूप) प २।३०,३१,४१,४५,४५।१,४८ ज ३।१०६,१३८;४।२६ सू २०।४ उ १।१२, १३,३१,५३,७८,९५;५।५,२२
सुलद्ध (सुलब्ध) उ १।३४;३।९८,१०१,१३१
सुलस (सुलस) ज ४।६४,२०७
सुलित्त (सुलिप्त) उ ३।१३०,१३१,१३४
सुवग्गु (सुवल्गु) उ ४।२१२,२१२।३
सुवच्छ (सुवत्स) प २।४७।२ ज ४।२०२।१
सुवच्छा (सुवत्सा) ज ४।२०४,२३८;५।६।१
सुवण्ण (सुपर्ण) प २।३०।१,४०।१,८,१०;५।३ ज ३।२४।१,२,१३१।१,२
सुवण्ण (सुवर्ण) प १।२०।१ ज २।२४,६४,६६; ३।६,२०,३३,५४,६३,७१,८४,९५,१०६, ११७,१३७,१४३,१५६,१६७।८,१८२,१८४, २२२;४।३,२५,२६;५।३८,५२,५५,६७,६८ उ ३।४०
सुवण्णकुमार (सुपर्णकुमार) प १।१३१;२।३७ से ४०;४।४६;६।१८
सुवण्णकुमारराय (सुपर्णकुमारराज) प २।३७ से ३९
सुवण्णकुमारिंद (सुपर्णकुमारेन्द्र) प २।३७,३९
सुवण्णकुमारी (सुपर्णकुमारी) प ४।५२
सुवण्णकूड (सुवर्णकूट) ज ४।२७५
सुवण्णकूला (सुवर्णकूला) ज ४।२७२,२७४,२७५; ६।२०
सुवण्णजूहिया (सुवर्णयूथिका) प १७।१२७ पीलीजूही
सुवण्णमय (सुवर्णमय) ज ४।२६;५।५५
सुवण्ण (वासा) (सुवर्णवर्षा) ज ५।५७
सुवण्णसिप्पि[1] (सुवर्णशुक्ति) प १७।१२७
सुवण्णिंद (सुपर्णेन्द्र) प २।३८
सुवप्प (सुवप्र) ज ४।२१२,२१२।३
सुवयण (सुवचन) उ १।१७
सुविण (स्वप्न) उ १।३३;५।२५
सुविभत्त (सुविभक्त) ज १।३७;२।१४,१५;३।३ सू २०।७
सुविरइय (सुविरचित) ज २।१५;३।२४;४।१३ सू २०।७
सुव्वत (सुव्रत) सू २०।८
सुव्वय (सुव्रत) सू २०।८।८
सुव्वया (सुव्रता) उ ३।९९,१००,१०६ से १०८, १११ से ११३,११५,११६,११८,१३२,१३३, १३६,१४१ से १४३,१४५,१४६,१४८,१५०
सुसंगोविय (सुसङ्गोपित) उ ३।१२८
सुसंठिय (सुसंस्थित) ज ७।१७८
सुसंपरिहिय (सुसंपरिहित) उ ३।१२८
सुसंवुय (सुसंवृत) ज ३।६,२२२
सुसज्ज (सुसज्ज) ज ५।४३
सुसद्द (सुशब्द) ज ७।१७८
सुसमण (सुशमन) ज २।५३,१६२
सुसमदुस्समा (सुषमदुष्षमा) ज २।२,३,६,७,५४,५६
सुसमसुसमा (सुषमसुषमा) ज २।२,३,६,७,५२ १६१,१६३,१६४;४।१०९
सुसमा (सुषमा) ज २।२,३,६,५१,५२,१६०,१६१; ४।८३
सुसमाहिय (सुसमाहित) ज ३।३५
सुसवण (सुश्रवण) ज २।१५
सुसारक्खिय (सुसंरक्षित) उ ३।१२८
सुसाहय (सुसंहत] ज २।१५

---

[1] हे० २।१३८ सिप्पि (शुक्ति)

सुसिणिद्ध (सुस्निग्ध) ज २।१५
सुसिलिट्ठ (सुश्लिष्ट) ज १।३७;३।६,१२,१७८, २२२;४।१२८;५।४३;७।१७८
सुसीमा (सुसीमा) ज ४।२०२।२
सुसीस (सुशिष्य) ज ३।१०६
सुसेण (सुषेण) ज ३।७६,७७,७८,८०,८२ से ६१, १०६ से १११,१२८,१५१ से १५७,१७०,१७१
सुस्सर (सुस्वर) ज २।१५;५।५२,५३
सुस्सूसमाण (शुश्रूषमाण) ज १।६; २।६०; ३।२०५, २०६;५।५८ उ १।१६
सुह (सुख) प २।४८,२।६४।१५,१६,२०;३५।१।२, ३५।१०,११;३६।६४।१ ज २।१२,२०,७१; ३।६,८१,६६,१००,१०१,११७।१,१२१,२२२; ४।२७,४८,१७७; ५।२६,२८ सू १६।२२।१३ उ १।११०,१२६,१३३
सुह (शुभ) प २।४६ ज २।१२,२०;३।६
सुहंसुह (सुखंसुख) ज २।१४६;३।१२१,१२७, २२४;५।६७ उ १।२,५०,७५
सुहणामा (शुभनामा) ज ७।१२१ सू १०।६१
सुहता (सुखता) प २३।१५
सुहत्त (सुखत्व) प २८।२४,२६
सुहत्थि (सुहस्तिन्) ज ४।२२५।१,२२८
सुहफास (सुखस्पर्श, शुभस्पर्श) ज ५।२८
सुहम्मा (सुधर्मा) ज २।१२०;४।१२०,१२१,१२६, १३८; ५।१८,२२,२३,५०; ७।१८४,१८५ सू १८।२२,२३ उ ३।६,६०,१५६,१६६; ४।५; ५।१५,१६
सुहया (सुखता) प २३।३०
सुहलेसा (शुभलेश्या) ज ७।५८
सुहलेस्सा (शुभलेश्या) सू १६।२२।३०
सुहावह (सुखावह) ज ४।२१२
सुहासण (सुखासन) ज ३।२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१३६,१४७,१८७,२१८
सुहि (सुखिन्) प २।६४।२०; ३६।६४।१ ज २।२६
सुहिरण्णियाकुसुम (सुहिरण्यिकाकुसुम) प १७।१२७
सुहुम (सूक्ष्म) प २।३,६,६,१२,१५,३१;३।१।२, ६१ से ७१,८५ से ६५,१११,१८३;४।५६ से ६१,६८,७५,८२,८३,६१;६।८३,१०२; १५।४३,४५;१८।१।२,३७ से ३६,११६; २१।४,५,२३ से २७,४०,४१,५०;२३।१२१; ३६।७६,८१,६२ चं १।३ ज २।६;७।१७८
सुहुमआउक्काइय (सूक्ष्मअप्कायिक) प १।२१,२२
सुहुमणाम (सूक्ष्मनामन्) प २३।३८,११८,१२०
सुहुमतेउक्काइय (सूक्ष्मतैजस्कायिक) प १।२४,२५
सुहुमवणस्सइकाइय (सूक्ष्मवनस्पतिकायिक) प १।३०,३१
सुहुमवाउक्काइय (सूक्ष्मवायुकायिक) प १।२७,२८
सुहुमसंपराय (सूक्ष्मसंपराय) प १।११२,११३, १२४,१२८; २३।१६१
सुहुमसंपरायचरित्तपरिणाम (सूक्ष्मसंपरायचरित्र-परिणाम) प १३।१२
सुहोतार (सुखावतार) ज ४।३,२५
सुहोदय (सुखोदक, शुभोदक) ज ३।६ २२२
सुहोवभोग (सुखोपभोग) ज २।१४५,१४६
सुइ (शुचि) ज ४।२६
सूईमुह (सूचीमुख) प १।४६
सुई (सूची) प १५।२६;२१।२५
सूणा (सूना) उ १।४४,४५
सूमाल (सुकुमार) ज ३।२११;५।५६;७।१७८ उ १।११ से १३,३० से ३२,५३,७८,६५, १४५;२।५,७,१६;३।६७;४।८;५।१२
सूमाला (सुकुमारा) ज ३।२२१;५।५८
सूय (शुक) ज ३।१७८,१८६,१८८,२०६,२१०, २१६,२१६,२२१
सूयलि (दे०) प १।८६
सूर (सूर) प १।१३३; २।२० से २७,४८; १५।५५।३ ज १।२४; २।६८; ३।३५,६५, ११७,१५६,१६७।१२,१८८,२०७,२१२; ५।५६; ७।१०२,१३५।१,४,१७७।२,१७८।१, १८०,१८१ सू १०।३,१२३,१३४,१४३ से १४७,१५० से १६१,१६६ से १६६,१७२,

१७३;११।२ से ६;१२।१९ से २८;१५।१,५,
७,११,१२,१३,१५,१८,२१,२४,२७,३०,३३,
३६ ; १८।१,१८,१९,३४,३७ ; १९।१।१,
१९।२२।४,१०,१५,२१,२३,२४,२७ से ३०,
३२;१९।३५; २०।२,३,५,६ उ २।१२;
३।२।१,२१,४८,५५,६३,६७,७०,७३,१०६,
११८
सूर (शूर) ज ३।१०३ ; ४।९४
सूरकंत (सूरकान्त) प १।२०।४
सूरकंतमणिणिस्सिय (सूरकान्तमणिनिश्रित)
प १।२६
सूरणकंद (सूरणकन्द, शूरणकंद) प १।४८।७
सूरत्थमण (सूरास्तमयन) ज २।१३४
सूरपण्णत्ति (सूरप्रज्ञप्ति) ज ७।१०१
सूरपव्वय (सूरपर्वत) ज ४।२१२
सूरप्पभा (सूरप्रभा) सू १८।२४
सूरमंडल (सूरमण्डल) ज ७।२ से १९,१७७
सूरलेस्सा (सूरलेश्या) सू १६।३,४
सूरवडंस (सूरावतंसक) सू १८।२४
सूरवर (सूरवर) सू १९।३५
सूरवरोभास (सूरवरावभास) सू १९।३५,३६
सूरवल्ली (सूरवल्ली) प १।४०।३
सूरविमाण (सूरविमान) प ४।१८३ से १८८
ज ७।१७३,१७४,१७९,१८९,१९० सू १८।१,
८,१०,१४,२९,३०
सूरसेण (शूरसेन) प १।९३।५
सूरादेवीकूड (सूरादेवीकूट) ज ४।४४
सूराभिमुह (सूराभिमुख) उ ३।५०
सूरिय (सूर्य) प २।४८ से ५१,६३ ज २।१३१;
७।१,१३,२० से ३१,३५ से ३९,५४,५८,९९,
१०१,१५६ से १६८,१८०,१८१,१९७
चं २।२,५ सू १।६।२,५;१।११,१२,१४,१६
से २४,२७;२।१ से ३;३।१,२;४।१,२,४,७,९,
१०;५।१;६।१ ; ७।१; ८।१;९।१ से ३;१०।६३
से ७४,१३२,१३४,१७१;१५।१,३ ; १७।१;
१८।२,३,१८,१९,३७;१९।१;५।२,१९।११,
१५।२,१९,२१।६,१९।२२।२३,२६ ; २०।१।७
उ ५।४१
सूरियगत (सूर्यगत) सू १।१९
सूरियपडिहि (सूर्यप्रतिधि) सू ९।३
सूरियाभ (सूर्याभ) ज ५।५५ उ ३।७,९० से ९२,
१५६ ; ५।२३
सूरियाभगम (सूर्याभगम) ज ५।४०
सूरियावत्त (सूर्यावर्त) ज ४।२६०।२ सू ५।१
सूरियावरण (सूर्यावरण) ज ४।२६०।२ सू ५।१
सूरुग्गमण (सूरोद्गमन) ज २।१३४
सूरोद (सूरोद) सू १९।३५
सूल (शूल) ज ३।३१,१७८
सूलपाणि (शूलपाणि) प २।५१ ज २।९१;५।४८,
६०
सूसर (सुस्वर) ज २।१६ ; ५।२२,२६
सूसरणाम (सुस्वरनामन्) प २३।३८,१२५
सूसरणिग्घोष (सुस्वरनिर्घोष) ज २।१६
सूसरा (सुस्वरा) उ ३।७,९१
से (दे०) प १।१० उ १।१५; ३।३३
सेउ (सेतु) ज २।१२
सेज्जंस (श्रेयांस) ज २।७६ सू १०।२४।१
सेज्जभंड (शय्याभाण्ड) उ ३।५१।१
सेज्जा (शय्या) प ३६।९१ उ ३।३६;४।२१
सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) प १६।४१ ज २।२५; ३।९,१०,
७७,८६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६,
२१९,२२१,२२२ उ १।९२;३।११,१३,१०१
सेडिय (दे०) प १।४२।१
सेडी (दे०) प १।७९ लोमपक्षी विशेष
सेढि (श्रेणि) प २।३१;१२।८,१२,१६,२७,३१,
३२,३६ से ३८ ; २१।९३ ज २।१३३,२२०;
४।१७२,२००;५।३२;६।६।१,१५
सेणगपट्ठसंठित (सेनकपृष्ठसंस्थित) सू ४।३
सेणा (सेना) ज ३।१५,१७,२१,३१,३४,७७,७८,
८८,१०९,१५९,१७३,१७५,१७७,१८०,
१९९ उ १।१२३,१२७,१२८;५।१८
सेणावइ (सेनापति) प १६।४१ ज २।१५;३।९,

१०,७६ से ७८,८० से ६१,१०६ से १११, १२८,१२६,१५१ से १५७,१७०,१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६,२१६,२२१,२२२ उ १।६२;३।११,१००;५।१०

सेणावइरयण (सेना पतिरत्न) ज ३।१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६ २२०,२२१;५।१६

सेणावइरयणत्त (सेनापतिरत्नत्व) प २०।५८

सेणावच्च (सैनापत्य) प २।३०,३१,४१,४६ ज २।४५;३।१८५,२०६,२२१;५।१६ उ ५।१०

सेणि (श्रेणि) ज ३।१२,१३,२८,२६,४१,४२,४६, ५०,५८,५६,६६,६७,७४,७५,१४७,१४८, १६८,१६६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१६, २१६,२२१

सेणिय (श्रेणिक) उ १।१०,१२,२६ से ३२,३४, ३६ से ४४,४६ से ४६,५७,५८,६१,६२,६५, ६६,६८,७२ से ७४,८२,८३,८६ से ६२,६५, ६६,१०३,१०६ से ११४,१४५;२।५,१७,२२; ३।४,२१,२४,८६,१५५,१६८;४।४

सेण्ण (सैन्य) ज ३।१५,२१,३१,३४,७७,७८,६१, ६५,१५६,१७३,१८५,१६६

सेण्हा (श्लक्ष्णका) प १।३५।३

सेत (श्वेत) प २।४७।३,२।६४ ज ३।१२,८८

सेत (श्वेतम्) सू १०।८४।१

सेतसप्प (श्वेतसर्प) प १।७०

सेय (श्वेत) प २।४६ ज १।१६,३८;३।१८,३१, ३५,६३,१८०;४।१०,८५,११५,१२१ १२५, २१७;५।६२;७।१७८ चं २।१ सू १।६ उ १।४४;५।२६

सेय (श्वेत) प १६।५४

सेय (श्रेयस्) प ३।१६३;१३८।१;७।१२२।१ उ १।५१ ५४,६६,७६,७६,६६,१०७,११६; ३।४८,५०,५५,१०६,११८

सेयंकर (श्रेयस्कर) ज २०।८,२०।८।७

सेयंस (श्रेयांस) ज ७।११४।१

सेयकणवीर (श्वेतकणवीर) प १७।१२८

सेयणग (सेचनक) उ १।६६,१०२ से ११६,१२७; १२८

सेयणगसंठिल (सेचनकसंस्थित) सू ४।३

सेयणय (सेचनक) उ १।६६ से ६६,१०३,१११, ११२

सेयता (श्वेतता) सू ४।१

सेयबंधुजीवय (श्वेतबन्धुजीवक) प १७।१२८

सेयमाल (श्वेतमाल) ज २।८

सेयविया (श्वेतविका) प १।६३।६

सेया (श्वेतता) चं ६ सू १।६।१

सेयाल (एष्यत्काल) प २८।२२,३४,३६,६८

सेयासोय (श्वेताशोक) प १७।१२८

सेरियय (सैरेयक) प १।३८।१

सेरिया (सेरिका) ज २।१०;४।१६६

सेरुतालवण (सेरुतालवन) ज २।६

सेल (शैल) प २।१;११।२५

सेलसिहर (शैलशिखर) ज २।८८

सेलु (शेलु) प १।३५।१

सेलेसि (शैलेशी) प ३६।६२

सेलेसिपडिवण्णग (शैलेशीप्रतिपन्नक) प ११।३६; २२।८

सेल्लार (दे० कुन्तकार) प १।६७ भाला बनाने वाला

सेवणा (सेवना) प १।१०१।१३

सेवाल (शैवाल) प १।३८।२,१।४६,१।४८।१, १।६२ ज २।१०

सेवालभक्खि (शैवालभक्षिन्) उ ३।५०

सेस (शेष) प १।१०१।११;२।३२,३४,३६ से ४०, ५१ से ५४,५८,६०,६२;३।१८२;५।६४, १५२,१५४,२०५,२४४;६।८१,८३,८४; १०।१४।६;१२।३८;१३।१५ से १८;१५।१८, १६,३४,७५,८२;१७।२३,२५,२७,२६,३४, ३५;२०।८,५६,६०;२२।४५,५५,८०; २३।५६,१५६,१५६,१६३,१८१,१६३,१६६; २४।८,६;२५।४;२८।२६,३८,४६,७४,१०१, १२३,१४५;३०।१४;३२।६।१;३४।२२ से २४;३५।१।२;३६।३३,६७ से ६६,७१,७३

ज १।४६ ; २।५२,८८,१६१ ; ३।१५०,१५३, १५७,१६१,१८३;४।३७,४१,५३,७०,६३, १०६,१४१,१४७,१५३,१५५,१५६,१६५, १७२,१७७,१८४,१८५,१८७ से १६१,२०३; ५।८,५१ ; ७।१३५।१ सू ८।१ ; ६।३;१०।२५, १५२ से १६१;११।२ से ६;१२।१६ से २८; १८।२४;१६।२२।२२ उ १।४८;२।६,२२; ३।७;४।२२,२८;५।१६,४५

सेसय (शेषक) प २३।१६०

सेसवई (शेषवती) ज ५।६।१

सेसिय (शेषित) ज ७।१४६

सेह (दे०) प १।७६

सोइंदिय (श्रोत्रेन्द्रिय) प १५।१,२,७,८,११ से १८, ४०; १५।५८ से ६७,६६,७०,१३३,१३४; २८।७१ उ ३।३३

सोइंदियत्त (श्रोत्रेन्द्रियत्व) प २८।२४;३४।२०

सोइंदियपरिणाम (श्रोत्रेन्द्रियपरिणाम) प १३।४

सोंड (शौण्ड) ज ७।१७८

सोंडमगर (शौण्डमकर) प १।५६

सोंडा (शुण्डा) उ १।६७

सोक्ख (सौख्य) प २।६४।१४,१८.२२

सोक्खुप्पाय (सौख्योत्पाद) सू २०।६।६

सोग (शोक) प २३।३६,७७.१४५ ज २।१५,७०; ३।१०५

सोगंधिय (सौगन्धिक) प १।२०।४,१।४८।४४ ज ३।१० ; ४।३,२५ ; ५।५

सोच्चा (श्रुत्वा) ज ३।६ उ १।२१;३।१३ ; ४।१४ ; ५।२०

सोणि (श्रोणि) ज २।१५

सोणिय (शोणित) प १।८४ ज ३।३६ उ १।५६, ६१,६२,८४,८६ ८७

सोणीक (श्रोणिक) ज ३।१०६।१

सोत्त (श्रोत्र) प १५।७७

सोत्तिय (शौक्तिक) प १।४६

सोत्तिय (सौत्रिक) प १।६६

सोत्थिय (स्वस्तिक) प २।६४ ज २।१५ ; ३।३, ३२,१७८;४।२८ ; ५।३२ सू २०।८,२०।८।६

सोत्थियसाय (स्वस्तिकशाक) प १।४४।२

सोदामिणी (सौदामिनी) ज ५।१२

√सोभ (शुभ्) सोभंति ज ७।१ सोभते ज २।१५; ३।२४।३,३७।१,४५।१,१३१।३ सोभिंसु ज ७।१ सोभिस्संति ज ७।१ सू १६।१ सोभेंति सू १६।१ सोभेंसु सू १६।१

सोभंत (शोभमान) ज २।१५

सोभग्ग (सौभाग्य) ज ५।६८,७०

सोभण (शोभन) ज ३।२०६

सोभमाण (शोभमान) ज ३।२४।३,३७।१,४५।१, १०६,१३१।३

सोभयंत (शोभमान) ज ७।१७८

सोभा (शोभा) ज ७।१

सोभावेंत (शोभयमान) ज ३।१७८

सोभिय (शोभित) ज ३।३५,२२१ ; ७।१७८

सोभेंत (शोभमान) ज ३।१७८

सोम (सोम) ज ४।२०३ ; ७।१३०,१८६।२ सू २०।८,२०।८।२ उ ३।५१,१५१,१५२

सोम (सौम्य) ज २।१५ सू २०।४ उ ५।५,२२

सोमंगलक (सौमङ्गलक) प १।४६

सोम(काइय) (सोमकायिक) ज १।३१

सोमणस (सौमनस) ज ४।२०३,२०४।१,२०५, २०८,२१५ ; ५।४६।३,५५ ; ७।११७।२ सू १०।८६।२

सोमणसवक्खार (सौमनसवक्षस्कार) ज ४।२०५

सोमणसवण (सौमनसवन) ज ४।२१४,२४०, २४१,२४३

सोमणसा (सौमनस्या) ज ४।१५७।१ ; ७।१२०।१ सू १०।८८।१

सोमणस्सिय (सौमनस्यित, सौमनस्यिक) ज ३।५, ६,८,१५,१६,३१,५३,६२,७०,७७,८४,६१, १०७,११४,१४२,१६५,१७३,१८१,१८६, १६६,२१३;४।२०३;५।२१,२७ उ १।२१,४२; ३।१२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमदंसण (सौम्यदर्शन) ज २।६८
सोमदेवया (सोमदेवता) सू १०।८३
सोमया (सोमता) ज ३।३
सोमरूव (सौम्यरूप) उ ५।२२
सोमा (सोमा) उ ३।१२६ से १३१,१३४ से १४४, १४७,१४८,१५०
सोमाण (सोपान) ज ५।४१,४२,४४,४५
सोमिल (सोमिल) उ ३।२८ से ३२,३५ से ४५, ४७,४८,५० से ६५,६७ से ८३
सोय (श्रोतस्) ज २।१३४
सोय (शोक) उ १।२३,६१,६३
सोयमाण (शोचत्) उ १।६२
सोयविण्णाणावरण (श्रोत्रविज्ञानावरण) प २३।१३
सोयामणी (सौदामिनी) ज ३।३५
सोयावरण (श्रोत्रावरण) प २३।१३
सोरिक (सौरिक) प १।६३।२
सोल (षोडश) प १०।१४।४ से ६ ज ४।१४२ सू २।३
सोल (षोडशन्) सू १६।१६
सोलस (षोडशन्) प २।२५ ज १।७ सू १।१४ उ ३।१२,१२६;५।१०
सोलसअंगुलजंघाक (षोडशांगुलजङ्घाक) ज ३।१०६
सोलसग (षोडशक) प २।२७।१,२
सोलसम (षोडश) सू १२।१७
सोलसमंडलचारि (षोडशमण्डलचारिन्) सू १३।५
सोलसविह (षोडशविध) प ११।८६;२३।३५
सोला (षोडशन्) सू १६।१६
सोल्ल (दे० पक्व) उ १।३४,४०,४६,७४
सोल्लिय (दे० पक्व) उ ३।५०
सोवक्कमाउय (सोपक्रमायुष्क) प ६।११५,११६
सोवचिय (सोपचित) ज २।७१
सोवच्छिय (सौवस्तिक) प १।५०
सोवण्णिय (सौवर्णिक) ज ३।१३५,२०६;४।१३; ५।५५,५६
सोवत्थिय (सौवस्तिक) ज ४।२१०।१;५।३२ सू २०।८,२०।८।६
सोवाण (सोपान) ज ३।१९५,२०४ से २०६, २१४ से २१६;४।४,५,२६,२७,८६,११८, १२८,१४४,२४६;५।३०,४१,४२
सोस (शोष) ज २।४३
सोहंत (शोभमान) प २।१
सोहग्ग (सौभाग्य) प ३४।२० ज २।६५;३।१८६, २०४
सोहम्म (सौधर्म) प १।१३५;२।४६ से ५२,५८, ६३;३।२६,१८३;४।२१३ से २२४;६।५६,६५, ८५,६५,१११;१०।२,३;१५।८७;२०।६१; २१।६१,७०,६०;२८।७५;३०।२६;३४।१६, १८ ज ५।१८,२४,२५,४४ उ २।१२,२२; ३।६०,१२०,१५६,१६१;४।५,२४,२८;५।४१
सोहम्मकप्प (सौधर्मकल्प) प ६।२७
सोहम्मकप्पवइ (सौधर्मकल्पपति) ज ५।२६
सोहम्मकप्पवासि (सौधर्मकल्पवासिन्) ज २।६० ५।१६,२६,४३
सोहम्मग (सौधर्मज) प २।५०,५१;७।८;१५।६६, १०८,११२,१२५;२०।४६;३३।१६,२४ ज ५।४६
सोहम्मगकप्पवासि (सौधर्मककल्पवासिन्) प २।५०
सोहम्मवडेंसय (सौधर्मावतंसक) प २।५६
सोहम्मवडेंसय (सौधर्मावतंसक) प २।५०,५४ ज ५।१८
सोहा (शोभा) ज ३।६,२२२
सोहिय (शोभित) ज २।१२

हं

हंत (हन्त) ज २।२४,२७,२६,३४ से ३७,४१,६४, ६६;४।२७३;५।६८ से ७०;७।३६,३७,१०१
हंता (हन्त) प ११।१;१५।४३;१७।१६६;२०।१०, २२;२८।३ उ ५।३२
हंदि (दे०) ज ३।२४।११,३१।१;५।२७,७२,७३
हंभो (दे०) उ १।११५,११६; ३।५८,६०,७६,७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंस (हंस) प १।२०।४,७९ ज २।१२,१५ उ ५।५
हंसगब्भ (हंसगर्भ) ज ५।५
हंसलक्खण (हंसलक्षण) ज २।९९
हंसस्सर (हंसस्वर) ज २।१६; ५।५२
हक्कार (हाकार) ज २।६०
√**हक्कार** (आ+कारय्) हक्कारेंति ज ५।५७
हट्ठ (हृष्ट) ज २।४,१४६;३।५,६,८,१३,१५,१९, २९,३१,४२,५०,५२,५३,५९,६१,६२,६७, ६९,७०,७५,८४,९१,१००,११४,१३७,१४१, १४२,१४८,१५०,१६५,१६९,१७३,१८१, १८९,१९२,१९९,२०८,२१३;५।५,१५,२१, २३,२७ से २९,४१,५५,५७,७० उ १।२१, ४२,४५,१०८;३।१३,१०१,१०३,११३,१३४, १३६,१४७,१६०;४।११,१४,२०;५।१५,३८
हडप्पग्गाह ('हडप्प'ग्राह) ज ३।१७८
हढ (हठ) प १।४६,१।४८।६,१।६२
हणमाण (घ्नत्) ३।१३०
हणुगा (हनुका) ज २।१५
हत्थ (हस्त) प २।३०,३१,४१,४९ ज २।६५; ३।६,२४।४,३७।२,४५।२,१०९,१३१।४,१८६, २०४;५।२१;७।१२८,१२९।१,१३३।२,१३६, १४०,१४९,१६४ सू १०।२ से ६,१६,२३, ४६,६२,७१,७५,८३,१११,१२०,१३१,१३२, १५९; १२।२४ उ १।८८,८९; ३।५१,५६,९८; ४।२१ से २३
हत्थग (हस्तक) ज ४।३०;५।५
हत्थगय (हस्तगत) ज ३।९,२१,३४,८५ से ८७; ५।८ से ११,५७
हत्थसंठिय (हस्तसंस्थित) सू १०।४६
हत्थि (हस्तिन्) प १।६५; ११।२१ ज २।३५, ६५;३।३१,९८,१६७,१७८; ५।५७ उ १।१२१, १३१; ५।१८
हत्थिखंध (हस्तिस्कन्ध) ज ३।१८,७८,९३,१८०, २१२,२१३
हत्थिणपुर (हस्तिनापुर) उ ३।१७१
हत्थिणाउर (हस्तिनापुर) उ ३।७१
हत्थिणिया (हस्तिनिका) प ११।२३
हत्थितावस (हस्तितापस) उ ३।५०
हत्थिमुह (हस्तिमुख) प १।८६
हत्थिरयण (हस्तिरत्न) ज ३।१५,१७,२०,३१,३३, ५४,६३,७१,७७,९१,९२,१४३,१५१,१६६, १७३,१७५,१७७,१७८,१८२,१८३,१८६, १९९,२०२,२०४,२१४,२१७,२२० उ १।१२३, १३१
हत्थिरयणत्त (हस्तिरत्नत्व) प २०।५९
हत्थिसोंड (हस्तिशौण्ड) प १।५०
हदमाण (हदमान) उ ३।१३०
हम्ममाण (हन्यमान) उ १।१३०
हम्मिय (हर्म्य) ज २।२०
हम्मियतलसंटित (हर्म्यतलसंस्थित) सू ४।२
हय (हय) प २।३०,४९ ज २।६५;३।३,१५,१७, २१,२२,३१,३४,३६,७७,७८,९१,१०८ से १११,१७३,१७५,१७७,१८५,१८७,१९९, २०९,२१८ उ १।१२३,१३८;५।१,७,१८
हय (हत) ज २।६० से ६२; ३।२२१; ७।१८४ उ १।२२,१४०;३।१२३,१२६
हयकण्ण (हयकर्ण) प १।८६
हयच्छाया (हयच्छाया) प १६।४७
हयपोसण (हयपोषण) ज ३।३
हयरूवधारि (हयरूपधारिन्) ज ७।१७८
हयलाला (हयलाला) ज ३।२११;५।५८
हयवत्ति (हयपति) ज ३।१२६।२
हयहेसिय (हयहेसित) ज ३।३१;५।५७;७।१७८
√**हर** (हृ) हरेज्जा ज २।६
हरओ (हरतस्) ज ४।१४०
हरडय (हरीतक) प १।३५।२
हरतणुय (हरतनुक) प १।२३,१।४८।६
हरि (हरित्) ज ३।३५;४।८४,९०;६।२१ सू २०।८,२०।८।४
हरिकंत (हरिकान्त) प २।४०।६
हरिकंतदीव (हरिकान्तद्वीप) ज ४।७६

हरिकंतप्पवायकुंड (हरिकान्ताप्रपातकुण्ड) ज ४।७५, ७६,७७

हरिकंता (हरिकान्ता) ज ४।७३ से ७५,७७,७८, ८४,९०,२६२,२६८;६।२१

हरिकंताकूड (हरिकान्ताकूट) ज ४।७९

हरिकूड (हरिकूट) ज ४।९६,२१०।१

हरिणेगमसि (हरिनैगमेषिन्) ज ५।२२,२३,४९

हरितग (हरितक) प १।४४।१

हरिता (हरितक) ज २।१४४,१४५

हरिमेला (हरिमेला) ज ३।१७८;७।१७८

हरिय (हरित) प १।९४।१ ज ३।२४ उ ३।५१,५३

हरियग (हरितक) उ ३।४९

हरिया (हरितक) प १।३३।१,१।४४ ज २।१४५, १४६

हरियाल (हरिताल) प १।२०।२;१७।१२७ ज ३।११

हरियालगुलिया (हरितालगुलिका) प १७।१२७

हरियालभेद (हरितालभेद) प १७।१२७

हरियालिया (हरितालिका) ज ५।१३

हरिवास (हरिवर्ष) प १।८७;१६।३०;१७।१६४ ज २।६;४।६२,७७,८१ से ८६,१०२,२६५; ६।९,२१

हरिवासकूड (हरिवर्षकूट) ज ४।७९,९६

हरिस (हर्ष) प २।२० से २७ ज ३।५,६,८,१५, १९,३१,५३,६२,७०,७७,८४,९१,१००,११४, १४२,१६५,१७३,१८१,१८९,१९९,२१३;५।२१ २७,४१ उ १।२१,४२,७१,७२;३।१३१;५।२२

हरिस्सह (हरिसह) २।४०।७ ज ४।१६२।१,१६५, २१०

हरिस्सहकूड (हरिसहकूट) ज ४।१६५,२३९

हलउलेमाण (दे०) उ ३।११४

हलधरवसण (हलधरवसन) प १७।१२४

हलिद्दपत्त (हरिद्रापत्र) प १।५१

हलिद्दा (हरिद्रा) प १।४८।२

हलिद्दी (हरिद्रा) ज ३।११९

हलिमच्छ (हलिमत्स्य) प १।५६

हलीमुह (हलीमुख) ज ३।३५

हलीसागर (हलीसागर) प १।५०

√हव (भू) हवइ प २।४७।२;३६।९४ ज ७।१३२।४,१७७।३ सू १९।२२।९ हवंति प १।३८।३,१।४८।५८,५९ ज ७।१७८।१,२ चं ३।३ सू १।७।३;१२।७१;१९।१।१, १९।२२।८,२१ हवति प १।३७।३;३५।१।१; ३६।९४ हवेज्ज प २।६४।४ हवेज्जा प २।६४।१६

हव्व (अर्वाच्) प ३६।८१ उ १।२२,७०,८९,१०७, १०८,११५ से ११७,११९,१२७,१२८

हव्व (हव्य) ज २।६,२४,३४,३५,३७;३।१०७, ११४;७।२० से २५,७९,८२,२०२,२०४,२०६ सू २।३;२०।७

√हस (हस्) हसंति ज २।७

हसंत (हसत्) ज ३।१७८

हसमाण (हसत्) उ ३।१३०

हसित (हसित) सू २०।७

हसिय (हसित) प २।४१ ज २।१५;३।१३८

हस्स (ह्रस्व) प २।६४।४;१३।२३

हस्सतर (ह्रस्वतर) ज ४।५४

हाण (मल्लिघ्राण) ज ३।१०९

हायमाणय (हीयमानक) प ३३।३५

हार (हार) प २।३०,३१,४१,४९,६४ ज ३।६,९, १८,२६,३५,९३,१८०,२११,२२२;४।२३, ३८,६५,७३,९०,९१;५।२१,३८,६७ उ १।९६,१०२ से ११७,११९

हारितग (हारितक) ज ३।११९

हारोस (दे० हारोष) प १।८९

हालाहल (हालाहल) प १।५०

हालिद्द (हारिद्र) प १।४ से ९;५।५,७,२०५; ११।५३;२३।१०२;२८।२६,३२,६६ ज ४।२९ सू २०।२

हालिद्दगुलिया (हारिद्रगुलिका) प १७।१२७

हालिद्दमत्तिया (हारिद्रमृत्तिका) प १।१९

हालिद्दय (हारिद्रक) प १७।१२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हालिद्दवण्णाभ (हारिद्रवर्णाभ) सू २०।२
हालिद्दसुत्तय (हारिद्रसूत्रक) प १७।११६
हालिद्दा (हरिद्रा) प १७।१२७
हालिद्दाभेद (हरिद्राभेद) प १७।१२७
हास (हास) प २।४१,२।४७।३;११।३४।१; २३।३६,७६,१४४ ज २।६६,७०
हासकारग (हासकारक) ज ३।१७८
हासणिस्सिया (हासनिश्रिता) प ११।३४
हासरइ (हासरति) प २।४७।३
हासा (हासा) ज ५।११।१
हाहाभूय (हाहाभूत) ज २।१३१,१३६
हिंगुरुक्ख (हिंगुरूक्ष) प १।४३।२
हिंगुलय (हिंगुलक) प १।२०।२ ज ३।११
हिंगुलुग (हिंगुलुक) ज ३।३५
हिट्टिम (अधस्तन) प २।२७।१
हिट्ठ (अधस्) प २।२४ से २७ रू १८।२,३; १६।२२।१७
हिट्ठि (अधस्) ज ७।१६८।१
हिट्ठिल (अधस्तन) ज ७।१७५
हिट्ठिलग (अधस्तन) ज ७।१७५
हिट्ठिल्ल (अधस्तन) सू १८।७
हितकर (हितकर) ज ३।८८
हिदय (हृदय) ज ३।१३८
हिमय (हिमक) प १।२३
हिमवंत (हिमवत्) ज १।२६;३।२,३५;४।१७७ उ१।१०,२६,६६;५।११
हिमवयकूड (हिमवत्कूट) ज ४।२३६
हिमसीतल (हिमशीतल) सू २०।२
हिय (हित) ज २।६४,७१;३।८८;५।२६
हियईसर (हृदयेश्वर) ज ३।१२६।३
हियकर (हितकर) ज ३।१६७
हियकारग (हितकारक) ज ५।५,४६
हियय (हृदय) ज ३।५,६,८,१५,१६,३१,३५, ५३,६२,७०,७७,८४,६१,१००,११४,१४२, १६५,१७३,१८१,१८५,१८६,१८६,१६६, २१३;५।२१,२७,४१,५८ सू २०।६।१ उ १।२१,४२;३।१३१
हिययगमणिज्ज (हृदयगमनीय) ज २।६४;३।१८५, २०६;५।५८
हिययपल्हायणिज्ज (हृदयप्रह्लादनीय) ज २।६४ ३।१८५,२०६;५।५८
हिययमाला (हृदयमाला) ज २।६५;३।१८६,२०४
हिययसूल (हृदयशूल) ज २।४३
हिरण्ण (हिरण्य) ज २।२४,६४,६६;४।२७३; ५।६८ से ७०
हिरण्णवय (हैरण्यवत) प १।८७
हिरण्णवास (हिरण्यवास) ज ३।१८४;५।५७
हिरण्णविहि (हिरण्यविधि) ज ५।५७
हिरि (ह्री) ज ४।६४;५।११।१ उ ४।२।१
हिरिकूड (ह्रीकूट) ज ४।७६
हिरिसिरिधीकित्तिधारक (ह्रीश्रीधीकीर्तिधारक) ज ३।१२६।१
हिरिसिरिपरिवज्जिय (ह्रीश्रीपरिवर्जित) ज ३।२६, ३६,४७,१०७,११४,१२२,१२४,१३३
हिलियमाण (अभिलीयमान) ज ३।१०६
हिल्लिय (दे०) प १।५०
हीण (हीन) प २।६४।४;५।५,१०,२०,३०,३२, १०२,१२६,१३१,१३२,१३४,१६०,१७७, १६३,२१४,२२८
हीणपुण्णचाउद्दस (हीनपुण्यचातुर्दश) ज ३।२६, ३६,४७,१०७,११४,१२२,१२४,१३३
हीणपुण्णचाउद्दसिय (हीनपुण्यचातुर्दशिक) उ १।८६, ११५,११६
हीणस्सरता (हीनस्वरता) प २३।२०
हीनस्सर (हीनस्वर) ज २।१३३
हीर (हीर) प १।४८।२० से २६
हीरमाण (ह्रियमाण) ज ७।३१,३३ सू ४।४,७
√हील (हेलय्) हीलेंति उ ३।११७
हीलिज्जमाण (हेल्यमान) उ ३।११८
√हु (भू) हुंति ज ११।१७;४।१४२।१;७।१२४।१,४; १७२।१ चं ४।३ सू १।८।३,१६।२२।४,५,१५,

२०,२३,२७,३१
हुंड (हुण्ड) प १५।१८,३०,३५;२१।२८ से ३३, ३५ से ३७,५८,५९;२३।४६
हुंबउट (दे०) उ ३।५०
हुडुक्क (हुडुक्क) ज ३।२०९
१ **हुण** (हु) हुणइ उ ३।५१
हुत (हुत) उ ३।४८,५०
हुतवह (हुतवह) ज ३।१०९
हुयवह (हुतवह) ज २।२१
हुहुय (हुहुक) ज २।४
हुहुयंग (हुहुकाङ्ग) ज २।४
हूण (हूण) प १।८९
हेउ (हेतु) प १।१०१।५ उ ३।९
हेट्ठ (अधस्) प २।२१ से २३,३० से ३६,४१ से ४३,४६;१२।३२;३६।६१ ज ३।१८३;४।१३४
हेट्ठा (अधस्) सू १२।३०;१७।१;२०।६
हेट्ठिम (अधस्तन) प २।६२।१;३३।१६
हेट्ठिमउवरिम (अधस्तनउपरितन) प २८।८९
हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जग (अधस्तनउपरितनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७३ से २७५;७।२२
हेट्ठिमग (अधस्तन) ज ७।१३६।१
हेट्ठिमगेवेज्ज (अधस्तनग्रैवेय) प ६।३९
हेट्ठिमगेवेज्जग (अधस्तनग्रैवेयक) प २।६० से ६२;३।१८३;६।५६
हेट्ठिममज्झिम (अधस्तनमध्यम) प ४।२७१; २८।८८
हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जग (अधस्तनमध्यमग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७०,२७२;७।१
हेट्ठिमहेट्ठिम (अधस्तनाधस्तन) प ४।२६८,२६९
हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग (अधस्तनाधस्तनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२६७;७।२०;२८।८७
हेट्ठिल्ल (अधस्तन) प १६।३४;२१।६०;३३।१६, १७ ज २।११३;४।२५३,२५४,२५७;७।१७४, २७५ सू १८।१
हेतु (हेतु) प ३०।२५,२६ सू १।१४,१९,२१,२४, २७;२।३;४।४,७;६।१
हेम (हेम) प २।५० ज ४।६१;५।१८
हेमंत (हेमन्त) ज २।७०,८८;७।१६० से १६३ सू ८।१;१०।६७ से ७०;१२।१४ उ ५।२५
हेमंती (हेमन्ती) सू १२।२४ से २८
हेमंतीय (हैमन्तीक) सू १२।१८
हेमजाल (हेमजाल) ज ३।४७
हेमव (हैमवत्) ज ७।११४।१ सू १०।१२४।२
हेमवय (हैमवत) प १।८७;१६।३०;१७।१६३ ज ३।१७८;४।१,४२,५३,५५,५६,५७,६१,६२, ७१,७९,१०२,२३८,२७१;६।९,२०
हेमवयकूड (हैमवतकूट) ज ४।४४,७९
हेमाभ (हेमाभ) उ १।२६,१४०
हेरण्णवय (हैरण्यवत) प १६।३० ज ४।१०२, २६४।१,२६८,२७१ से २७४;६।९,२०
हेरण्णवयकूड (हैरण्यवतकूट) ज ४।२६९,२७५
४ **√हो** (भू) होइ प १।४८।५२;१८।१ से १०,१२ से ३७,३९,४१ से ५१,५४ से ५९,६१ से ९०, ९२ से ११४,११६,११७,११९,१२०,१२२, १२३,१२५ से १२७ ज १।१६७।४,८;३।९, ११९;४।१४२।२;७।११२।१,१८२।२, १५१।२,१७७।१,२ सू १९।२२।६,७,१७,२८, २९;२०।८।८ उ ४।२।१ होई प १।१०१।८; २।२७।१ होउ उ १।६३;२।९ होंति प १।४७।२,१।४८।४७,४९,१।७५,७६, ८१।१;२।२७।३,२।४०।८ से ११ २।६४।९; २२।२५ ज १।१६।४।१५१।२;७।११२।१, १७२।१ सू १०।१२९।२,५;२०।८।३,२०।९ उ २।२२ होज्ज प २२।९०;२८।१०९ होज्जा प १६।१०,११,१३,१५,२१;१७।११२;२२।२३; २४।४,५,८,११,१२;२५।५;२६।४,६,९,१० ; २७।३ होति प १।४३।२,१।४८।३९,५०; २।४७।१,२।६४।६;१०।१४।१;१२।२२।१ १८।१।२,१८।५९ ज १।४७।१;७।१७२।१; सू १९।२२।१६ होत्था ज १।२;२।६६ चं ६ सू १।१ उ १।१;२।४;३।९;४।८;५।४
होतए (भवितुम्) उ ४।२२
होत्तिय (हौत्रिक) प १।४८।१ उ ३।५०
होमाण (भवत्) प १७।११२,११३
होरंभा (होरम्भा) ज ३।३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि पत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
		पण्णवणा	
६	१७	संठाओ	संठाणओ
४४	१६	कोलोभासा	कालोभासा
४५	२३	परममसुहं	परममसुहं
८१	२१	अभि०	आभि०
९०	२६	गब्भवक्कं०	गब्भवक्कं०
१२५	२०	बण्णादि	वण्णादि
१४२	२८	०देवेहतो	० देवेहिंतो
१५४	४	सोतोसिणा	सीतोसिणा
१७४	१२	पडुच्च	पडुच्च
१६६	६	परिमंडलस्य	परिमंडलस्स
१७९	१८	ओसपप्पि ०	ओसप्पि ०
१८०	२३	पडुप्पणं	पडुप्पण्णं
१८२	२५	वाणमंतरणं	वाणमंतराणं
१९५	८	एणठ्ठेणं	एणट्ठेणं
२००	१	पुविक्क०	पुढविक्क०
२००	२	पुच्छाए	पुच्छाए
२००	४	बद्धेलग०	बद्धेल्लग०
२०९	३२	जस्सस्थि	जस्सत्थि
२०२	१६	बा	वा
२०८	४	०सरीकाय०	०सरीरकाय०
२०८	१९	०मीससरीर०	०मीसासरीर०
२१०	१	०आहाग०	आहारग०
२१०	२२	०मीसारीर०	०मीसासरीर०
२२९	७	पुरिस	पुरिसे
२२९	१५	होज्चा	होज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३१	पा० ४	भवेतारुवे	भवेतारूवे
२३२	पं० २०	पोंडरिय०	पोंडरीय०
२४३	१७	इत्थवेदे	इत्थिवेदे
२५६	२	तिरिक्ख०	तिरिक्खजोणिय०
२५६	३	गब्भवक्क०	गब्भवक्क०
२८१	१५	छह्न्वि०	छव्वि०
२८५	१३	जाव	जहा
२८६	२३	पण्णत्ते	×
२९२	२४	व	य
२९७	१३	०सागरोव०	०सागरोवम०
३२४	४	सागारोव	०सागारोव०
३४१	६,१	सरीरा	सारीरा
३४१	१२	सरीर०	सारीर०
३४२	१६	समुग्घया	समुग्घाया
३४३	२	०उवण्णगा	०उववण्णगा

जंबुद्दीव

३५६	१०	०पह्मगोरे	०पम्हगोरे
३५६	१२	महावीस्स	महावीरस्स
३६६	१६	०कुडे	०कूडे
३६६	२०	०कुडे	०कूडे
३७६	६	मत्तंगाणाणं	मत्तंगाणामं
३७८	१५	मणम०	मणाम०
३८०	१६	वोवाह	वीवाह
३८०	२०	ना	वा
३८०	२४	इणट्टे	इणट्ठे
३८५	१०	अज्झावसत्ता	अज्झावसित्ता
३९५	१७	०दूसमणामं	०दूसमाणामं
३९९	अंतिम	अभिरमाणा	अभिरममाणा
४०८	१४	०निग्घोषणा०	०निग्घोसणा०
४१२	१८	मिसिमिस	मिसिमिसे
४१३	२८	खिप्पमेव	खिप्पामेव
४१४	२	महाहिमं	महामहिमं
४१५	२२	खिप्पमेव	खिप्पामेव
४१६	१७	०इंदणी०	०इंदणील०
४१८	१५	अणुप्पबाए	अणुप्पवाए
४२०	३३	अटटारस	अट्ठारस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२२	१७	०वामिण्णो	०वासिणी
४२२	२१	पीइदिणं	पीइदाणं
४२३	२	उस्सवक्कं	उस्सुक्कं
४२३	१०	पूरंतं	पूरेंतं
४२३	११	पव्वयभि०	पव्वयाभि०
४२३	अन्तिम	णेयवव्वो	णेयव्वो
४२५	३७	हृरि०	हिरि०
४३९	पा० ४	(स)	(स) ०अत्थमंतमेत्त (शा वृ पा)
४४२	पा० २	नं०	जं०
४४५	४	मपंड्डियं	संपड्डियं
४४५	८	त णं	तए णं
४४५	२३	सद्धावेत्ता	सद्दावेत्ता
४६०	पा० ६	०पीढं	०पीठं
४६३	१४	०फहिलहू०	०फलिहू०
४९३	६	धव०	धूव०
४९६	९	धण०	धणु
४९८	१०	जंव	जंबू
५६८	१	विहप्फइ	विहप्फई
५७०	८	पणत्ताओ	पण्णत्ताओ

सूरपण्णत्ति

६१५	९	जोयय०	जोयण०
६५९	७	मुहुता	मुहुत्ता
६६८	८	बावट्ठि०	बावट्ठि०
६८६	१२	ससुद्दं	समुद्दं
६९४	१३	वराभण०	वराभरण०
६९७	४	०विताए	०विताणए
६९७	७	धुम०	०धूम

उवंगा

७२३	५	मवंनीकरणेणं	सवण्णीकरणं
७२३	पा० ५	सवण्णीकरणं (क)	सवंतीकरणेणं (ग)
७३४	पं १९	०वंक०	०वंकं
७८०	४	पुडिवुद्धा	पडिबद्धा
७८१	७	पाबयणं	पावयणं
७८४	१७	०पारियाणं	परियाणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दकोश

क्रमांक	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१.		अउज्झ	अओज्झ
२.	अंगपरियारिया	(अंगपरिचारिका)	(अंगप्रतिचारिका)
३.		अगक्छमाण	अगच्छमाण
४.	अगरुयलहुयपज्जव	ज २।१६३	ज २।१६३
५.	अट्ठावण्ण	(अष्टपञ्चाशत)	(अष्टपञ्चाशत्)
६.		अधमत्थिकाय	अधम्मत्थिकाय
७.	अपज्जुवासणया	(अपर्युपासना)	(अपर्युपासन)
८.	अप्प	अप्प (अल्प) जवासा	अप्पा (अल्पा)
९.		अप्पिण	√अप्पिण
१०.	अप्फोड	(आ+स्फोट्य)	(आ+स्फोट्य)
११.		अब्भंग	√अब्भंग
१२.		अब्भंतरपुरक्खरद्ध	अब्भंतरपुक्खरद्ध
१३.		अब्भुक्ख	√अब्भुक्ख
१४.		अब्भुट्ठ	√अब्भुट्ठ
१५.		अभिणंद	√अभिणंद
१६.		अभिवुड्ढ	√अभिवुड्ढ
१७.	आगासथिग्गल	(आकाश थिग्गल)	(आकाश 'थिग्गल')
१८.	आहारगसरीरय	(आरारकशरीरक)	(आहारकशरीरक)
१९.	इच्छामण	(इच्छामनस)	(इच्छामनस्)
२०.	उज्झरबहुल	(निर्झरबहुल)	(उज्झरबहुल)
२१.	उत्तमपुरिस	(उत्तमपुरु)	(उत्तमपुरुष)
२२.		उत्पन्न	उप्पन्न
२३.	उवदंसित्तए	(उपदर्शयितुभ्)	(उपदर्शयितुम्)
२४.	ओघमेघ	(ओधमेघ)	(ओघमेघ)
२५.		ओलंग	√ओलंब
२६.		कक्खंत्तर	कक्खंतर
२७.	कच्छभी	(कछभी)	(कच्छपी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८.		कल (कल)	(कलम)
२९.	कलंबुया	(कदम्बक)	(कलम्बुका)
३०.		कहिंचि	कहिंचि
३१.		कहिय	कहिय
३२.		कालहेसि (कालहेसिन्)	×
३३.	कुंभिक्क	(कौम्भिक)	(कौम्भिक)
३३.	कुमुदा	(कुमुद)	(कुमुदा)
३५.		गरह	√गरह
३६.		गवेस	√गवेस
३७.		गा	√गा
३८.		गाह	√गाह
३९.		गिण्ह	√गिण्ह
४०.		√गुणड्ढ	गुणड्ढ
४१.		गेवज्ज	√गेवेज्ज
४२.	चउपएसिय	चःतु प्रदेशिक	(चतुःप्रदेशिक)
४३.		चय	√चय
४४.		चय	√चय
४५.		चर	√चर
४६.		चि	√चि
४७.		चिंत	√चिंत
४८.	चुल्लहिमवंत	(चुल्लहिमवत्)	(क्षुल्लहिमवत्)
४९.		छज्ज	√छज्ज
५०.	छायाछाया	(छायाछाया)	(छायाच्छाया)
५१.		छिंद	√छिंद
५२.	छिन्नसोय	(छिन्नस्रोतस)	(छिन्नस्रोतस्)
५३.		छेद	√छेद
५४.		छेय	√छेय
५५.	जटियायलय	(दे० जटिकायिलक)	(दे० जटिकायलक)
५६.		जा	√जा
५७.		जाणियत्व	जाणियव्व
५८.		जोयणसत्तपुहत्तिय	जोयणसतपुहत्तिय
५९.	णिवुड्ढत्ता	(निवर्ध्य)	(निवृध्य)
६०.	णिव्वत्त	(निवृंत्त)	(निवृत्त)
६१.		णिव्वाण	णिव्वाय
६२.	णेरइयअसण्णिआउय	(नैरयिकासंज्ञ्यायुप्)	(नेरयिकासंज्ञ्यायुष्क)
६३.	तउसी मिंजिया	(त्रपुसीमिञ्जिका)	(त्रपुसीमज्जिका)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४.		तंडव	√तंडव
६५.	तट्ठदेवया	(त्वष्ट्रदेवता)	(त्वष्टृदेवता)
६६.	तट्ठु	(त्वष्ट्र)	(त्वष्टृ)
६७.	तित्तीस	(त्रयस्त्रिंशत्) ज० ४।६८	×
६८.	तिरिक्खजोणियअसण्णिआउय	(तिर्यग्योनिकासंज्ञ्यायुष्)	(तिर्यग्योनिकासंज्ञ्यायुष्क)
६९.	तिरियाउय	(तिर्यगायुष्)	(तिर्यगायुष्क)
७०.	दलयित्ता	(दत्वा)	(दत्त्वा)
७१.	दाऊण	(दत्वा)	(दत्त्वा)
७२.	दुट्ठु	(दुष्टु)	(दुष्ठु)
७३.	दुरभि	(दुरभि)	(दुर्)
७४.	दुहट्ट	(दुधाट्ट)	(दुर्घट्ट)
७५.	देवअसण्णिआउय	(देवासंज्ञ्यायुष्)	(देवासंज्ञ्यायुष्क)
७६.	पंचसतर	पञ्जसप्तति	पञ्चसप्तति
७७.	पच्चोसक्कित्ता	प्रत्यवष्कष्क्य	प्रत्यवष्वष्क्य
७८.	पडिसेहित्तए	प्रतिषेध्दुभ्	प्रतिषेद्धुम्
७९.	पम्ह	(पद्म) २५१	(पद्म) ४।२५१
८०.		परिणित्वा	परिणिव्वा
८१.		परियाण	√परियाण
८२.		परिवय	√परिवय
८३.		परिहा	√परिहा
८४.	पल्हायणिज्ज	(प्रह्लदनीय)	(प्रह्लादनीय)
८५.		पिट्ठीय	पिट्ठि
८६.		पुक्खलाई	पुक्खलावई
८७.	पुप्फपडलग	(षुष्पपटलक)	(पुष्पपटलक)
८८.		पुस्वरत्त	पुव्वरत्त
८९.	पूइय	पूर्जित	पूजित
९०.	पेहुणमिंजिया	'पेहुण' मञ्जिका	पेहुणमज्जिका
९१.	पोट्ठवई	प्रौष्ठपदी	प्रोष्ठपदी
९२.	पोट्ठवती	प्रौष्ठपदी	प्रोष्ठपदी
९३.	भंत	प १३।१ से ३१	प १३।१ से १३,२१ से ३१
९४.	भणित	प १।४८।४७	प० १।४८।४१
९५.	भत्तिचित्त	ज० ३।३९; ५।५९	ज० ३।३,९,५।५८
९६.	भवोववायगति	(भवोवपघातगति)	(भवोवपपातगति)
९७.	भासग	प ३।१।२,………१०८	प ३।१।२,१०८
९८.	भूमिचवेउ	ज ५।७	ज ५।५७
९९.	मंडलवता	[illegible]	[illegible]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००.	माणवग	(माणवक)	(मानवक)
१०१.	मालवंतपरियाय	(माल्यवत्पर्याय)	(माल्यवत्पर्याय)
१०२.	मेहुणसण्णा	मैथुन संज्ञा	मैथुन संज्ञा
१०३.	रयण (वासा)	(रत्नवर्षा)	(रत्नवर्षा)
१०४.	रयणिय	(रत्निक)	(रत्निक)
१०५.	रिसह	(वृषभ)	(वृषभ)
१०६.	लोम	(लोमन)	(लोमन्)
१०७.		वरगंधधर	वरगंधधर
१०८.	वरदामतित्थाधिपति	(वरदामतीर्थधिपति)	(वरदामतीर्थाधिपति)
१०९.		वालिघाण	वालिधाण
११०.	वालुंक	कपिथ्य	कपित्थ
१११.	संवत्त	(संवृत्त)	(संवर्त)
११२.		सगोत	सगोत्त
११३.		सत्तणउत्ति	सत्तणउति
११४.		सम्माणियदोहद	सम्माणियदोहल
११५.		सय	√सय
११६.	सिलिंध	(सिलीन्ध्र)	(सिलीन्ध्र)
११७.	सुदुल्लह	(सुदर्लभ)	(सुदुर्लभ)
११८.		स्यपुच्छ	सुयपुच्छ
११९.		सुसमससमा	सुसमसुसमा
१२०.			अट्टरूसग (अटरूषक) प १।३७।४
१२१.			एरावण (ऐरावत) प १।३७।४
१२२.	कुहण	×	प १।४८।५०
१२३.		णल (नड) प० १।४१।१	×
१२४			पोवलड (दे०) प १।४८।३
१२५.			वेणु (वेणु) प १।४८।४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org